

مَن الْمُن الْمُنْ الْمُن الْمُن الْمُن الْمُن الْمُن الْمُن الْمُن الْمُن الْمُنْ الْمُنْ

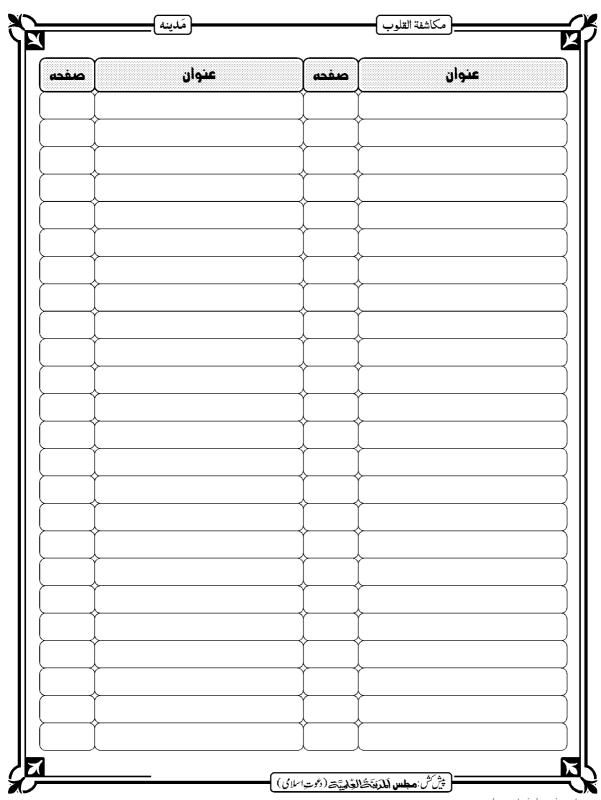
تَصَوُّف كِموضوع بِر إمام غُرَّالى عَلَيْه دَحْمَةُ اللهِ الوَالى كى كتاب" المُكاشفَةُ الْكُبُرىٰ " كاإخْتِصار





دورانِ مطالعه ضرورتاً اندُرلائن سيجيُّ إاشارات لكه كرصفي تمبرنوث فرما ليجيُّ ،ان شآء الله عَزَّوَجَلَّ علم مين ترقي بوكي.

| صفحه | عنوان عنوان | منده | عنوان |
|----------|-------------|-------------------|-------|
| | | | |
| | | \rightarrow | |
| | | | |
| | | | |
| | | \longrightarrow | |
| \ | | \longrightarrow | |
| \ | | \rightarrow | |
| \ | | | |
| \ | | | |
| | | \rightarrow | |
| | | | |
| | | | |
| | | \longrightarrow | |
| \ | | \rightarrow | |
| \ | | \rightarrow | |
| \ | | | |
| \ | | | |
| \ | | | |
| | | \uparrow | |



تَضَوُّف كِموضوع يرامام غَزَ الى عَلَيْه رَحْمَةُ اللهِ الوَالى كى كتاب" المُكاشفَةُ الْكُبري " كالْخِضار



مُرَرِم : مولا نامفتى تَقَدُّس على خان عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحُمَن بِيش صَلَى: مجلس المدينة العلمية



مكتبة المدينه فيضان مدينه باب المدينه كراچي

مكاشفة القلوب

الصلوة والسلام عليك يارسول الله وعلى ألك واصحا بك ياحبيب الله

نام كتاب : مُكاشَفَةُ القُلُوب

مترجم : مولا نامفتى تَقدُّس على خان عَلَيْهِ رَحْمَهُ الرَّحُمُن

پش ش : مجلس المدينة العلمية (شعبهٔ تخريج)

سن إشاعت : دَجَب الْمُرَجَّب ١٣٣٥ هـ ، ك 2014

ناشر : مكتبة المدينة فيضان مدينه محلّب وداكران يراني سنرى مندى باب المدينة كراجي

قیمت :

مكتبةُ المدينه كي شاخين

@..... كواچى : شهيرمىجد، كھارادر 🚓

37311679: ﴿ اتاور بار ماركيث، تَنْج بخش رودُ ﴿ ﴿ اللَّهُ وَلَّ اللَّهُ وَلَّ اللَّهُ اللَّا اللَّ

🖘 سردار آباد: (فيل آباد) مين يوربازار 💮

🖚 کشمیر : چوک شهیدال، میر پور 💮 💮 058274-37212

🖚 حيدر آباد: فيضانِ مدينه، آفندي ٹاؤن 💮

الله علمان : نزديليل والى مسجد، اندرون بو براً كيث 💮 تا 061-4511192

@ اوكاڙه : كالج رودُ بالقابل غوثيه مسجد، نز دخخصيل كونسل بال

😸 خان پور: دُراني چوک، نهر کناره 💮 - 5571686

@ نواب شاه : چکرابازار، نزد MCB هاب شاه : چکرابازار، نزد

🕸 سکھر: فيضان مدينه، بيراح رود 🛣 💮 071-5619195

🕏 پشاور: فیضانِ مدینه، گلبرگ نمبر 1،النوراسٹریٹ، صدر

E.mail:ilmia@dawateislami.net www.dawateislami.net

مدنی التجاء:کسی اورکویہ (تخریج شدہ)کتاب چھاپنے کی اجازت نھیں۔





| 45 | (کایت | 16 | اس کتاب کو پڑھنے کی نیتیں |
|-----|---|----|--|
| 46 | بابنمبر4 | 18 | ي پيش كَفْظ |
| 46 | رياضت وخواهشات نفساني | 21 | مُخْتَصَرَحالاتِ مُمَرَّحِم دَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْه |
| 46 | موى عَلَيْهِ السَّلَام كورُرود برِي صنح كاحكم | 23 | مُخْتَفَرُ حالاتِ غَزَ الى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي |
| 47 | حضرت ما لك بن ويناردَ حُمَةُ اللهِ عَلَيْه نِ إِنَّ جَيرِ كَهَا نَاحِإِمْ ا | 32 | بابنمبر1 |
| 47 | زندگی کی آخری گھڑی میں صَبْر | 32 | خوف وخَشِيْت |
| 49 | <i>ج</i> کای ت | 35 | بابنمبر2 |
| 49 | <i>ج</i> کای ت | 35 | خوف البي |
| 50 | بابنمبر5 | 35 | إ دِكايت |
| 50 | غلبه ُنَفْس وعَداوتِ شيطان | 36 | إ دِكايت |
| 50 | حكيما ندأقوال | 37 | حفزت عمر دَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ اورخَشِيَّتِ اللَّي |
| 51 | <i>چکایت</i> | 41 | بابنمبر3 |
| 51 | حضرت ابوالحُسَن رازى دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه نِه السِّي والد | 41 | صَبْرومَرض |
| 51 | کوخواب میں دیکھا | 41 | عَبْر کی قشمیں |
| 52 | عارفا نه بكنه | 41 | حکایت |
| 53 | حضورصَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشادِكرامي | 42 | حضرتِ زُكِرَ يَاعَلَيْهِ السَّلام كواُف كرنے كى ممانعت |
| 54 | بابنمبر6 | 42 | صُوفياء كَي نَظَر مِين مَصَا يَب كَي حقيقت |
| 54 | غفلت | 43 | مریض بندهٔ مومن کے گناه نہیں لکھے جاتے |
| 54 | سب سے بڑی حَشرت | 43 | ایک عبرت انگیز حکایت |
| 54 | دِ کایت | 45 | جب مسافر،مسافرت میں انتقال کرتاہے |
| l , | Į. J | | <u>J</u> |

مكاشفة القلوب

| | صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|-----|------|--|------|--|
| | 71 | جنابِشِلی سے محبت کا دعویٰ | 54 | موت کے پیا ثمبر |
| | 72 | بابنمبر10 | 56 | مخض دعویٰ برکار ہے |
| | 72 | رعشق ومحبت | 56 | إطاعت البي كاثمَره |
| | 72 | مُحَبَّت كى تعريف | 57 | حضرت حِسَن بَصَرى رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كاايك ولنشين خواب |
| | 72 | مَجْنُوں نے اپنانام لیلی بتایا مَجْنُوں نے اپنانام لیلی بتایا | 57 | الله كى عبادت يامخلوق كى عبادت |
| | 73 | محبت کی ابتداءاور اینهاء | 58 | انصیحت پرغلام کوآ زاد کردیا |
| | 73 | إشاره | 59 | بابنمبر7 |
| | 74 | چکای ت | 59 | فشق، نفأق اور خدا فراموشی |
| | 74 | <u>ج</u> کایت | 59 | مومن اور مُنافِق كافَرُق |
| | 75 | عاشِق کی پیجیان | 61 | جہنم کےسات دروازے |
| | 76 | دکای ت | 63 | روايت |
| | 78 | ایک بخیل مُنافق | 63 | مرنے کے بعدافسوں |
| | 78 | حضرت آسير دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا كالريمان | 64 | بابنمبر8 |
| | 80 | بابنمبر11 | 64 | ا توبہ |
| | 80 | اطاعتِ اللهي محبتِ الهي ومحبتِ رسول | 64 | فاسِق کی قِشمیں |
| | 80 | حضرت بِشْرِحا في دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كو بلندمقام كيسے عطا | 65 | حِکایت |
| | 80 | ہوا | 66 | ایک جوان کی شرمندگی |
| | 82 | الله كاد يوانه عاشق | 66 | حکایت |
| | 82 | چکای ت | 67 | عَثْبَهُ كَاعِجِبِ واقعه |
| | 83 | <i>چ</i> کا بیت | 69 | بابنمبرو |
| | 83 | حِکا بیت | 69 | محبت |
| | 85 | حضرت فُضَّيل بن عياض دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه سے ايك سوال | 69 | دُرودن بيجني والے سي حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كا إعراض |
| - 1 | | | | 1 |

| 7 | | | | |
|---|-----|--|-----|--|
| | | | | |
| | 106 | مومن کے لیے ضروری ہے کہ دوسروں کو نیکی کا حکم | 85 | دلِ بيار كاعلاج |
| | 106 | دیتے وفت خود بھی عمل کر ہے۔ | 86 | دوآ قا وَل کی خدمت |
| | 107 | ز مین پرشهٔ دَاءے بلندمر تبه مجامدین | 87 | حضرت ِموی عَلیْهِ السَّلام سے دوست کی فرمائش |
| | 110 | بابنمبر16 | 88 | بابنمبر12 |
| | 110 | عَداوتِ شيطان | 88 | شيطان اوراس كاعذاب |
| | 111 | شیطان کے وسوسے کا انجام | 89 | حکایت |
| | 112 | شیطان کا گُمراه کُن سوال | 89 | روایت |
| | 112 | انسانی قُلْب ایک قلعہ ہے | 90 | مختلف آسانوں پر شیطان کے نام |
| | 113 | كِشْتَى نُوْحَ عَلَيْهِ السَّلَامِ مِين شيطان كَى سُوارى | 91 | اولادِآ دم پرشیطان کاغلَب |
| | 113 | پیٹ بھر کر کھانا بھی انسان کو شیطان کے بھندے | 93 | بابنمبر13 |
| | 113 | میں پیفسا تاہے | 93 | امانت |
| | 116 | وَارُ النَّدُوهِ مِين شيطان كا قريش كومشوره | 94 | امانت کے معنی |
| | 119 | بيتِ صِد اين اكبرميل حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَا | 96 | قَرْض کے سواشہید کا ہر گناہ معاف ہوجا تاہے |
| | 119 | خلاف ِمعمول تشريف لا نا | 98 | بابِنبر1 |
| | 120 | سَفَرِ جِجرت میں زادِراہ | 98 | نَمَاز مِين خَشُوع وخُصُوْع |
| | 122 | حضورصَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِرِقْرِبان مِوناصد بق اكبر | 100 | حضرت عِلَى دَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَي ثَمَاز |
| | 122 | دَحِنِيَ اللَّهُ عَنْه كَل ولي <i>آرز وتقى</i> | 101 | ائماز میں چوری |
| | 125 | بابنمبر17 | 102 | ج <i>کایت</i> |
| | 125 | امانت اور توبه | 103 | بابنمبر15 |
| | 125 | فضیلت دُرودِ پاک | 103 | أَمْرٌ بِالْمَعرُوفِ وَ نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر |
| | 126 | آمانت کی تعریف | 105 | أخيرز مانے كے بارے ميں حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم |
| | 126 | آمانت کے بارے میں ارشادات ِ نبوی | 105 | كاارشاد |
| Į | | | | <u>l</u> |

| 7 | | | | |
|---|-----|---|-----|--|
| | | | | |
| | 143 | نماذ صحيح | 127 | ل توبه کاو جوب |
| | 144 | نمازا ندھیرے میں پڑھی جائے | 127 | توبہ کے بارے میں ارشاداتِ نبُویہ |
| | 145 | الله تعالیٰ اپنے بندے کی طرف متوجہ رہتا ہے | 129 | زندگی کے آخری سانس تک توبے قبول ہوگی |
| | 147 | بابنمبر20 | 130 | بابي تو بترجمي بندنېين ہوتا |
| | 147 | غيبت | 130 | توبه كے بارے ميں سَرُوَرِكُونين صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم |
| | 147 | غيبت پروعيد | 130 | کاارشادِگرامی |
| | 148 | كْبِغَل خور كاانجام | 133 | ایک در دانگیز توبه |
| | 149 | حکمت | 135 | بابنمبر18 |
| | 149 | کُیغَل خور کی سزا | 135 | فضيلت رحم |
| | 149 | جناب َ أَبُواللَّيْث بخارى رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهُ كاا يك واقعه | 135 | ارهم کی حقیقت |
| | 151 | غيبت كى بد بواب كيول محسوس نہيں ہوتى | 136 | رحم کے بارے میں ارشادات نبویہ |
| | 152 | غیبت زِ ناہے بھی بدتر ہے | 137 | إ جكايت |
| | 153 | بابنمبر21 | 138 | إحكايت |
| | 153 | ز کو ة | 138 | تخیالله کے قریب اور جہنم سے دور ہوتا ہے |
| | 153 | ز کو ۃ ادانہ کرنے پروعید | 140 | پابنمبر19 |
| | 154 | قیامت کے دن فُقرا اَغنیا کیلئے باعث ہلاکت ہوں گے | 140 | نَمَاز مِين خُشُوع وخُصَنُوع |
| | 154 | عجيب وغريب حكايت | 140 | درودشریف کی فضیلت |
| | 157 | بابنمبر22 | 140 | قیامت کے دن سب سے پہلے نماز کے بارے میں |
| | 157 | زنا | 140 | يو چھاجائے گا |
| | 158 | زِ نامیں چیھ صیبتیں ہیں | 141 | بدر ین شخص نماز کا چورہے |
| | 158 | أمْرُوا يك فتنه ب | 142 | نماز کس طرح ادا کی جائے |
| | 159 | قوم ِلُوط عَلَيْهِ السَّلام كا كيت تاجر كا واقعه | 143 | خضوع وخشوع سے نماز ادا کرنے والوں کی صِفات |
| | | l J | | J. J. |

| 190 | حضرت عبدالله بن مبارك كي نَصائح | 161 | بابنمبر23 |
|-----|--|-----|--|
| 192 | حضرت ِ داود کی حضرت ِ سلیمان کونصًا تُح | 161 | حقوق والدين اورصِلهُ رحي |
| 194 | بابنمبر28 | 162 | نى اكرم صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كارشاوات |
| 194 | <i>ذکرمرگ</i> | 167 | صِلهُ رحی کے بارے میں چنداَ حادیث مبارکہ |
| 194 | موت کو یا د کرنے والاشہیدوں کےساتھاُ ٹھایا | 171 | بابنمبر24 |
| 194 | جائے گا | 171 | والدين سے حُشنِ سُلوک |
| 196 | بُزرگانِ دین کےارشادات | 176 | تين نو جوان اور نيك اعمال |
| 197 | موت کے ذِکر پرغیسی عَلَیْهِ السَّلام کی حالت | 178 | بابنمبر55 |
| 198 | قبُور کے حسرت آگیں کَتَبات | 178 | ز كۈ ۋادرنجْل |
| 202 | بابنمبر29 | 178 | حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِي إِنَّ إِلَّو ل سے الله |
| 202 | آسانوں کا ذِ کُراور دوسرے مَباحِث | 178 | کی پناوه ما گلی |
| 202 | تخليق كائنات | 181 | ابلیسِ تعین جُنْ کو پسند کرتاہے |
| 203 | آسانوں کے نام اوران کے رنگ | 182 | بابنمبر26 |
| 203 | سات ستار بےاور ہرستارہ کا آسان | 182 | طولِ أمل |
| 204 | کلته | 182 | اُمیدون کاسهارااورفر مانِ نبوی |
| 205 | بابنمبر30 | 183 | الله تعالى ہے كماحَقُّهُ شرم كرو |
| 205 | عرش، کرسی ، فرشته گانِ مُقرَّب، رِزْق وتَوَ کُل | 183 | ارشادات ِ صَحَابِ دَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمُ |
| 206 | عُرْثُ الٰہی کی ساخت ۔ گ | 184 | حضرت عِيسىٰ عَلَيْهِ السَّلام كاايك واقعه |
| 207 | تۇڭل كى<ىقىقت ي | 185 | بابنبر27 |
| 207 | حضرت إبراتيم ادبم اور حضرت شَقِيق بَكَنَى دَحِمَهُ مَا اللَّهُ | 185 | عبادت گزاری وترک ِحرام |
| 207 | تَعَالَی کے درمیان سوال وجواب | 185 | طاعت کی حقیقت |
| 207 | تَوَكَّلْ حَقِقَى كياہے؟ | 185 | باطنی علم کیاہے؟ |

| | | | <u>9</u> 17 |
|-----|---|-----|---|
| 234 | بابنبر32 | 208 | تُوكُلُ حقیقی کی ایک مثال |
| 234 | مزمت دنیا | 209 | لَاحُولَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّه كَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَ |
| 235 | ایک زاہد کی ایک بادشاہ کوشیحتیں | 210 | باًبنبر31 |
| 235 | حضرت حسن بَصَرى دَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْه كارشادات | 210 | ترک د نیاو مزمت د نیا |
| 236 | مذمت دنیامیں ایک اور حدیث قدسی | 210 | ندمت د نیامیں چنداحادیث |
| 239 | حضرت عمر بن عبدالعز ريزدَ ضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَا خطبه | 211 | حضرت ابوبكر دَضِيَ اللَّهُ عَنْه كَى اشك بارى |
| 240 | اربابِطریقت کادنیا کے حصول میں طریق کار | 211 | ونیا کی ایک تَمثِیل |
| 241 | بابنمبر33 | 214 | حضرتِ آدم عَلَيْهِ السَّلام كي حيراني وسرَّرواني |
| 241 | فضيلت قناعت | 217 | يَرُورِكُونِين صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَا انْصار دَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ |
| 241 | انسان کے پیٹ کوقبر کی مٹی ہی بھرتی ہے | 217 | ے خطاب |
| 242 | دنیا کی بہت جنتجومت کرو | 218 | بے گورو کفن نعشیں |
| 244 | بهبترین دولت | 219 | حضرت ابوالدرداء دَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كامسلمانوں سے خطاب |
| 246 | حضرت عمردَ ضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كاارشاد | 220 | حضرت غيسى عَلَيْهِ السَّلَامِ كالبِك ناصحانه ارشاد |
| 247 | ايك حريص كوسبق | 221 | دنیا کی محبت سب سے بڑا گناہ ہے |
| 247 | حرص کی ہٰدمت | 222 | د نیاایک گهراسمٔنگدر ب |
| 248 | علم انسان کوحرص اور گُدَا ما نیه اِبْرَام ہے محفوظ رکھتا ہے | 223 | غالص سونے پرخز ف ریزے کورجی کس طرح ہو |
| 249 | بابنمبر34 | 223 | سکتی ہے |
| 249 | فقراء كى فضيلت | 227 | ونیائس صورت میں مزاحت کرتی ہے |
| 249 | بید نیااس کا گھرہے جس کا کوئی گھر نہ ہو | 227 | دنیا کاغم بڑھتاہے تو آخرت کاغم کم ہوجا تاہے |
| 249 | الله اپنے محبوب بندے کے دل سے دنیا کی محبت | 231 | دنيا سے محبت رکھنے والے کو آخرت نفع نہيں ديق |
| 249 | ن <i>ڪال ديتا ہ</i> | 231 | تركبِ دنيا وطلب ونيا |
| 250 | دىن دار شكارنه كرسكاا درد نيادار كوخوب شكار هوا | 232 | امام شافعى دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كَى اللهِ عَلَيْه كَى اللهِ عَلَيْه كَى اللهِ عَلَيْه كَى اللهِ عَلَيْه |
| 1 | | | |

| 7 | | | | |
|-----|-----|---|-----|---|
| | | | | |
| | 274 | بابنمبر37 | 253 | دنیا کے نامراد بندے کا قیامت میں اعز از |
| | 274 | مخلوق کے فیصلے | 254 | فقراءکے پاس دولت ہے |
| | 274 | مفلس کون ہے؟ | 255 | جنت کے بادشاہ |
| | 276 | معافی کاانعام | 255 | حضرت ِ فاطِمَه رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا كَاعًا لَمْ غُرُّ بِت |
| | 278 | نامهٔ اعمال کابرائیوں ہے بھرا ہونااوراس کا انجام | 256 | روپیہ جمع کرنے والے پر چار مصیبتوں کا نُزُول |
| | 279 | بابنمبر38 | 257 | حفزت ِ سَعید بن عامِ کی گِریه وزاری کاباعث |
| | 279 | مذمت مال ومنال | 257 | حضرت ِسُفیان تُوری کوفقراء سے بے پایاں محب تھی |
| | 279 | اموال،اولادتمہارے لیے آ زمائش ہیں | 258 | حفرت ِعا كَشْرَضِىَ اللَّهُ عَنْهَا كُوحْضُورَصَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ |
| | 281 | راہ خدامیں خرچ ہونے والا مال باقی رہتاہے | 258 | وَسَلَّم كَى وصيت |
| | 281 | گنهگار دولتمند نْلِ صِراط سے نہیں گز رسکے گا | 260 | قَاَعَت اور رضائے اللی |
| | 284 | حضرت عمر بن عبدالعز بيزدَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَا وَقَتِ مَرَّكَ | 261 | غَناء کیاہے؟ |
| | 285 | بابنمبر39 | 264 | بابنمبر35 |
| | 285 | اعمال،ميزان اورنارجهنم | 264 | الله كے سوائسي اور كوا پناؤلى بنا نا اور قيامت كا |
| | 285 | ٱخرت كى ياد ميں حضرتِ عائشه دَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا كى | 264 | ميدان |
| | 285 | اَشْكَ بارى | 264 | كُفَّارىسے مُيل مِلاپ نه رڪھو |
| | 286 | صَحَابِ كِرَامُ دَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمُ نِے ذِكْرِ قيامت برخوف | 265 | الله کے سواد وسروں کواپناولی بنا نا |
| | 286 | سے ہنسنا بند کر دیا | 268 | بابنمبر36 |
| | 287 | جہنم کے چندعذاب | 268 | لْغُخِ صُور، حَثْر اَجْساد و بَعْث بعد الموت |
| | 289 | ريا كاركاعذاب | 268 | الفخ صُور |
| | 290 | در جات جهنم | 270 | اَحوالِ قیامت کے بارے میں ارشادات نبویہ |
| | 290 | آتش دوزخ اورد نیاوی آگ | 271 | قیامت کےدن کی تین حالتیں |
| | 292 | دوز خیوں کی غذا | 271 | عرصة محشر کی کیفیت |
| - 1 | | L | | |

| ~ | | | | |
|---|-----|--|-----|---|
| | | | | |
| | 326 | ٱولُوالْٱلْبَابِ كون مِينِ؟ | 296 | دوزخیوں کی التجا ئیں رد کر دی جائیں گ |
| | 326 | ذاتِ باری میں غور وَفِکْر کی ممانعت | 299 | حضرت ِ داود عَلَيْهِ السَّلام كي بارگاهِ النِّي ميں التجا |
| | 328 | حضرت عِيسىٰ عَلَيْهِ السَّلَام كاحوار بوں كوجواب | 301 | بابنمبر40 |
| | 332 | بابنمبر44 | 301 | فضيلتِ اطاعَت |
| | 332 | شَدائِدِ مَرْگ | 302 | ونياوالول كوحضرت داود عَلَيْهِ السَّلام كى زبانى بيغام ِ البي |
| | 332 | ابعض شُدا ئِد مُرُك كَي تفصيل | 303 | ايك صديق پرالْهام كانزُ ول اورصد يقين كى صِفات |
| | 333 | انبياء عَلَيْهِمُ السَّلام برِموت بهت آسان كردى جاتى | 303 | مُشا قانِ خُداوندی کی صفات |
| | 333 | ے | 307 | مشآ قانِ خداوندی نقصان ہے محفوظ ہیں |
| | 336 | ایک کا سئة سرے حضرت عیسلی عَلَیْهِ السَّلام کی گفتگو | 307 | الله اوردنيا كى محبت دل ميں يكجانبيں ہوعتى |
| | 337 | محافظ فرشتول كالمشائده | 309 | بابنمبر41 |
| | 338 | بابنمبر45 | 309 | ا شکر |
| | 338 | حالات وسوالات قبر | 311 | حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كُشَّكُر كَرُارى |
| | 338 | ان <mark>د</mark> فن کی نِداء | 312 | ایک پقر کی گریدوزاری |
| | 339 | اعمال بھی میت ہے سوال کرتے ہیں | 313 | ادائ شكر كے طریقے |
| | 340 | مومن کی وفات پرِفرشتوں کی آمد | 313 | ابُزرگانِ سلف کاطریقهٔ شکرگزاری |
| | 343 | كافر پرعذاب | 315 | بابنمبر42 |
| | 345 | بابنمبر46 | 315 | مٰدمت عُبُب وَ مَكَبَرُ |
| | 345 | علمُ اليقين ،عَيْنُ اليقين اور سوالاتِ قيامت | 317 | تین شخصوں پرجہنم کامخصوص عذاب |
| | 345 | مَراتِبِ يقين كافرق | 317 | بهت ہی بڑا بندہ |
| | 347 | ٹھنڈا یانی بھی ایک نعمت ہے | 322 | جوانی پرفخرنہیں کرنا جا ہیے |
| | 348 | گوشت، کھجوراورسر دیانی کے متعلق قیامت میں | 325 | بابنمبر43 |
| | 348 | سوال ہوگا | 325 | زندگی کے بارے میں غور وَکِکر |

مكاشفة القلوب

| 1 | | | | |
|---|------|---|------|--|
| | صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
| | 381 | بابنمبر50 | 349 | بابنبر47 |
| | 381 | طبَقاتِ جہنم اوران کےعذاب | 349 | فضيلت ذِ كُرِالْهِي |
| | 381 | جہنم کا ہرطبقدا یک گروہ کے لیے مخصوص ہے | 351 | ذِ کُرِ خُدا ہے بڑھ کر کوئی عمل نہیں |
| | 382 | ہ تش جہنم کی ہولنا کیاں | 352 | بهترین عمل |
| | 384 | بابنمبر51 | 353 | ذِ کُرِ خُدا کے لیے جمع ہونے والوں پرانعام الٰہی |
| | 384 | عذاب جہنم | 354 | ذَكْر كرنے والوں پر رحمت الہيہ |
| | 385 | جُبُّ الْحُزْن كاع ن اب | 356 | بابنمبر48 |
| | 390 | جهنم کابد بودار یانی | 356 | فضائلِ صلوٰة |
| | 393 | بابنمبر52 | 356 | نماز گناہوں کا کَفّارہ ہے |
| | 393 | گناہوں سےخوفز دہ ہونے کی فضیلت | 357 | نماز کی تا کید میں ارشادات نبویہ |
| | 395 | فاروقِ اعظم ِ رَضِى اللَّهُ عَنْهِ اورخَشِيتَ ِ الْهِي | 360 | نماز کے بارے میں ارشاداتِ بزرگانِ دین |
| | 396 | عذابِ جہنم سے محفوظ دوآ نکھیں | 361 | بابنمبر49 |
| | 396 | خوف ِ الٰہی سے رونے والاجہنم سے آزاد ہے | 361 | تاركِنماز پرعذاب |
| | 397 | إِبنِ مَنَّاكِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ كَي اللَّبِ نَفْسَ كُوسَرَزَلِشْ | 361 | ترک صلوة پروعیدیں |
| | 397 | حضرت ِجَعْفَرُ رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُ كَلَّهِ بِعَتِينِ | 361 | صَحَامِ سِتَّهُ کی چنداَ حادیث |
| | 400 | بابنمبر53 | 367 | ضِياعِ صلوة كاكيامعنى ہے؟ |
| | 400 | فضائل توبه | 370 | قضاءِصلوة پروعيديں |
| | 402 | ایک خطا کاراوراس کی معافی | 374 | اَ مَر دِمومن کی نماز |
| | 403 | رسولِ اكرم صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَى حَضرتِ معا ذَرَضِيَ | 376 | صحیح وقت پرنماز کی ادائیگی الله کوسب سے زیادہ |
| | 403 | اللَّهُ عَنُهُ كُوصِيحَتِينِ | 376 | محبوب ہے |
| | 403 | تائب کا گناہ ہر جگہ سے مٹادیا جاتا ہے | 377 | نماز میں شستی پر مصائب |
| | 405 | ایکزانیه کی توبه | 380 | عداً نمازترک کرنے والا زانی سے بھی بدتر ہے |
| Ų | | Į. J | | Į. J |

| 7 | | | | |
|---|-----|---|-----|---|
| | | | | |
| | 432 | باب نمبر59 | 406 | قاتل ارادهٔ توبه کی بدولت نجات پا گیا |
| | 432 | َهُرَمَّتِ دنيا وَتَخوِيفِ دنيا | 409 | بابنمبر54 |
| | 435 | ايك عبرت انگيز واقعه | 409 | ممانعت ظلم |
| | 436 | ِ دِکایت | 411 | ایک بڑھیا پرظُلُم کے باعث ہلاکت |
| | 439 | بابنمبر60 | 412 | <i>ج</i> کایت |
| | 439 | فضياتِ مَدَقه | 413 | بابنمبر55 |
| | 439 | فضائلِ صَدَقات | 413 | يتيمول پرظلم سےممانعت |
| | 445 | بابنمبر61 | 416 | تیبیوں کا مال ناحق کھا نا اوراس کا بدلہ |
| | 445 | مسلمان کی حاجت برآ ری | 416 | شب معراج نبي اكرم صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كامال ناحق |
| | 448 | بابنمبر62 | 416 | کھانے والوں پرگزر |
| | 448 | فَضَائلِ وُضو | 417 | بابنمبر56 |
| | 451 | بإبنمبر63 | 417 | مْدِمت تَكْبُرُ |
| | 451 | فضياتِ نماز | 420 | ا حکایت |
| | 458 | باب نمبر64 | 421 | ارشادات ِ صحابه |
| | 458 | آفاتِ قيامت | 422 | بابنمبر57 |
| | 458 | صورِ إسرافيل كي حقيقت • | 422 | فَضْيَاتِ تَوَاضُع وقَنَاعَت |
| | 461 | باب ٽمبر65 ~ • | 423 | الله تعالى اپنے محبوب بندوں کو جار چیزیں عطافر ماتا |
| | 461 | جهنم ومیزان : | 423 | - |
| | 465 | باب تمبر 66 | 424 | فضائلِ قنَاعَت |
| | 465 | ئَدَمَّتِ تَكَبُّرُوخُود بِينِي ز | 428 | بابنمبر58 |
| | 469 | باب نمبر 67 سنتر بر أن سر ظلا ما ما الما | 428 | فریب ہائے دنیا |
| | 469 | یتیم سے بھلائی اوراس پرظلم سے احتر از | 429 | وانش مند کون ہے؟ |
| | | l l | | <u>l</u> |

| 7 | | | | |
|---|-----|--|-----|--|
| | | | | |
| | 530 | بابنمبر78 | 473 | بابنمبر68 |
| | 530 | مَدُمَّتِ غيبت وچُغَل خوري | 473 | مَدَمَّت ٱكلِّ حرام |
| | 533 | چُغَل خوری | 479 | بابنبر69 |
| | 535 | <u> ح</u> کایت | 479 | ممانعَتِ سُودخواري |
| | 537 | بابنمبر79 | 482 | اِزِنااورسُود کاعام ہوجاناعذابِالٰہی کودعوت دیتاہے |
| | 537 | عَداوَتِ شيطان | 486 | بابنمبر70 |
| | 541 | بابنمبر80 | 486 | حقوقُ البِعباد |
| | 541 | مَحَبِت ومُحاسَبِهُ نَفْس | 491 | بابنم بر71 |
| | 543 | محاسبه نفس | 491 | مَذَهَّتِ هَوائِ نَفْس ووَصْفِ زہد |
| | 547 | بابنمبر81 | 498 | بابنبر72 |
| | 547 | آ ميزشِ حَقَّ وباطل | 498 | جَنَّت اور مَراتِب اللِ جَنَّت |
| | 550 | بابنمبر82 | 505 | بابنمبر73 |
| | 550 | نماز باجماعت كى فضيلت | 505 | صَبْر، رضاا ورقَناعَت |
| | 552 | عپالیس نمازیں جماعت کے ساتھادا کرنے والے | 512 | بابنمبر4ٍ7 |
| | 552 | پرانعام الہی | 512 | نضيك تَوْكُل |
| | 553 | بابنمبر83 | 515 | بابنمبر75 |
| | 553 | فضيلت نمازتهجد | 515 | نضياتِ مسجد |
| | 559 | بابنمبر84 | 518 | بابنمبر76 |
| | 559 | عُقُو بتِ عُلما ئے سُو | 518 | رِ مِا حَت وفضياتِ أَصْحابِ كَرامَت |
| | 561 | يمل عالم كانجام | 524 | چکایت |
| | 564 | بابنمبر85 فَضِيات حُشن خُلْق | 525 | باب نمبر 77 تعریف ایمان وؤتم مُنا فقَت |
| | 564 | فَضِيلت حُسْنِ خُلق | 525 | تعريف ايمان وذَمٍّ مُنا فَقَت |

| 3 | | | |
|-----|---|-----|--|
| | | | |
| 598 | باب نمبر93 | 569 | ابنبر86 |
| 598 | فضائل جُعُه | 569 | څنره <i>وگر بي</i> زاري |
| 600 | جُمُعہ کے دن جہنم سے آزادی نصیب ہوتی ہے | 571 | الباس |
| 601 | بابنمبر94 | 573 | بابنمبر87 |
| 601 | خاوند پر بیوی کے حقوق | 573 | قرآن علم اورعلاء |
| 608 | بابنمبر95 | 574 | عِلْمُ اورعُلَاء کی فضیات |
| 608 | حقوقِ شوہر بذمهٔ زَن | 576 | بابنمبر88 |
| 610 | شو ہر کا مرتبہ | 576 | فَضيلتِ زكوة وصَلوة |
| 613 | بابنمبر96 | 576 | صَدَقَه كسودياجائي؟ |
| 613 | فضياتِ جهاد | 577 | حضرتِ ابن مبارك الشيخ عطيات صِرف عُلَاء كودية |
| 616 | بابنمبر97 | 579 | بابنمبر89 |
| 616 | فريب کاري شيطان | 579 | حقوق إولا دووالدين |
| 619 | بابنمبر98 | 581 | بيچ کا عَقِیْقَهٔ ساتویں روز کیا جائے |
| 619 | شاع | 585 | بابنمبر90 |
| 620 | جوازِ سَاع کے دلائل | 585 | حقوقِ ہمسابیاورمسا کین براحسان |
| 621 | ا بن مجامد کا سَمَاع پر زور | 587 | المسائے کے حقوق |
| 622 | حضرت امام عَشقلاني دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهُ كُوسَاعٌ كَاشُوق | 589 | بابنمبر91 |
| 624 | بابنمبر99 | 589 | شرابی پر عذاب |
| 624 | إِبَّاعِ خواهشات وبِدْعَت | 591 | قِصَّهُ ہاروت و ماروت |
| 626 | آلاتِ لَهُوولَعِبِ كَى مُدَمَّت | 594 | باب نمبر92 معراج شریف سِنْدَرَةُ الْمُنْتَهَٰیٰ کی کیفیت |
| 628 | بابنمبر100 | 594 | معراج شريف |
| 628 | فضائل ماورَ جنب | 596 | سِدْرَةُ المنتهَى كيفيت |
| | l | | |

| \ | Υ | | Y |
|---------|---|-----|---|
| <u></u> | | | |
| 651 | بابنمبر1ٍ07 | 629 | ا جا ي ت |
| 651 | فضيلت ِمهماني فقراء | 631 | بابنمبر101 |
| 654 | دعوت قبول کرناسُنَّتِ مُوَّلَدَہ ہے | 631 | فضائل شَعبانُ المبارك |
| 655 | بابنمبر108 | 631 | حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كامعمول |
| 655 | جنازه اورقبر | 635 | بابنبر102 ۗ |
| 656 | جنازے کے آ داب | 635 | فضائل دَمَضان المُعَظَّم |
| 656 | ایک گنهگار کا عجیب وغریب واقعه | 636 | <u> </u> |
| 660 | بابنمبر109 | 638 | روز ہ دار کے منہ کی بؤمشک سے بَرترَ ہے |
| 660 | عذاب جهنم كاخوف | 639 | بابنمبر103 |
| 663 | دوز خیوں پررونا مُسَلَّط کر دیا جائے گا | 639 | فضائل لَيلَةُ القَدْر |
| 664 | بابنمبر110 | 640 | لَيكَةُ القَدَر مين بِشارر حمتوں كانزُ ول |
| 664 | ميزان اور صراط | 642 | بابنمبر104 |
| 664 | حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم وتشكيري أمّنت كي ليح بُلْ | 642 | فضاكل عيدُ الْفِطْ |
| 664 | صراط پرتشریف فرماہوں گے | 642 | ا پہلی نمازعید ا |
| 665 | گاِنْ صراط جہنم کے اوپر رکھا جائے گا | 643 | حکایت |
| 667 | بابنمبر111 | 645 | بابنبر105 ۪ |
| 667 | حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كا وِصال مُبارك | 645 | فضائلِ عَشْرُهُ ذِي الْحِبْة |
| 667 | حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كوصِال كے بعد بھى الله | 646 | عار بسنديده مهي <u>ن</u> |
| 667 | تعالیٰ اُمَّتِ بحبیبِ کاوالی ہے | 647 | سب پرسبقت لے جانے والے |
| 669 | أنصار كااجتماع | | بابنمبر106 |
| 670 | أنصاركے بارے میں وصیت | 648 | باب نمبر106 فضياتِ عاشُوراء |
| 678 | ماخَذْ ومُرَاجْع | 648 | خُصُّوصِياتِ يومِ عَاشُورا |

ٱڵٚۜڂٙٮؙۮؙڽؚڐ۠؋ۯؾؚٵڵۼڵؠؽڹؘؘۘۅؘاڵڞۧڵٷڰؙۘۅٙٳڵۺۜڵٲؠؙۼٙڮڛٙؾۑٵڵؠؙۯڛٙڸؽڹ ٲڡۜٵڹۼؙۮؙڣٵۼؙۅؙۮؙۑٵٮڐ؋ڝٙٵڶۺؖؽڟڹٳڵڗڿٟؿڿڔؚ۠؋ۺۅٳٮڵ؋ٳڶڗۜٞڂؠڶڹٳڗڿؠڽؙڿ

"عَمَل كام وجذبه عطايا الهي" كيبس مُروف كي نسبت سے اس كتاب كو پڑھنے كى " 20 نتيس "

فر مانِ مصطفّل صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم: ''^{وح}ِ چى نيّت بن*دے کو جنَّت ميں داخِل کرويق ہے۔''* (الجامع الصغير ،الحديث: ٩٣٢٦، ص٧٥ ه، دارالکتب العلمية بيروت

> ﴿1 ﴾ بغیرا جھی نتیت کے سی جھی غیر الجھی اللہ کے سی جھی عملِ خیر کا ثواب نہیں ماتا۔ ﴿2 ﴾ جنتی الجھی نتیں زیادہ ، اُتنا ثواب بھی زیادہ۔

﴿ 1 ﴾ ہر بارحَمد و﴿ 2 ﴾ صلوٰ قاور ﴿ 3 ﴾ تعوُّ ذو ﴿ 4 ﴾ تسمِيه ہے آغاز كرول گا (اس مُفْحديراُوپردى موكى دوعر بي عبارات يڑھ لينے سے چاروں نتیوں بیٹل ہوجائے گا)﴿5﴾ الله عَزَّوَجَلَّ كى رضا كىلئے اس كتاب كااوّل تا آخِر مطالعه كروں گا﴿6﴾ حتى الامكان إس كاباؤ شُواور ﴿ 7﴾ قبله رُومُطالَعَه كرول گا﴿ 8﴾ قرآني آيات اور ﴿ 9﴾ أحاديثِ مبارَكه كي زيارت كرول گا﴿ 10 ﴾ جبال جَهال" الله "كانام ياك آئے گاوہاں عَزَّوَ جَلَّ اور ﴿11 ﴾ جَهال جَهال 'صركار' كالسَّم مبارَك آئے گاوہاں صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهِ وَسَلَّم يِرْهُول كَاهِ 12 ﴾ (اينة ذاتى نسخ ير) يا دداشت والصفحه يرضر ورى نكات ككهول كاه 13 ﴾ (اينة ذاتى نسخ ير) عندالضرورت (یعنی ضرورةً) خاص خاص مقامات برآنڈرلائن کروں گاھ14 ﴾ کتاب مکمَّل بڑھنے کے لیے برتیت مُصولِ علم دین روزانہ کم از کم چارصفحات پڑھ کرعلم دین حاصل کرنے کے ثواب کا حقدار بنوں گا﴿15﴾ دوسروں کو بیکتاب پڑھنے کی ترغیب ولاوَل كَا ﴿16﴾ السروايت "عِنْلَ ذِكُو الصَّالِحِينَ تَنزَّلُ الرَّحْمَةُ "(حلية الاولياء الحديث: ١٠٠٥ ، ج٧، ص ٣٣٥ ، دارالكتب العملية) یعنی نیک وگوں کے ذکر کے وقت رحمت نازل ہوتی ہے، بیٹمل کرتے ہوئے اس کتاب میں دیئے گئے بزرگان دین کے واقعات دوسروں کو سناكرذكرصالحين كى بركتيس لولول كاه 17 ﴾ اس حديثِ ياك" تهادو اتحابوا "ايدوسر كوتخددوآ پس ميس مجت بره على (مؤطا امام مالك، ج٢، ص٢٠، وقم: ١٧٣١، دارالمعرفة بيروت) يمل كى نيت سے (ايك ياحسب توفق تعداديس) يه كتاب خريد كردوسرول كوتحفةً دول گا﴿18﴾ جن كودول گاحتى الا مكان انہيں بير ہدف بھى دول گا كه آپ اتنے (مثلاً 63) دن كے اندراندر مكمل كركيں ﴿19﴾ اس كتاب كےمطالعے كاسارى اُمّت كوايصال ثواب كروں گا﴿20﴾ كتابت وغيره ميں شُرى غلطى لى تو ناشرين كوتحريري طورير مُطلع كرول گا(ناشِر بن ومصنف وغيره كو كتابول كي أغلاط صِرف زباني بتانا خاص مفيذنبين ہوتا) _ ٱڵڂؖٮؙۮۑٮؖ۠ۅؘڒؾؚٵڵۼڵؠؿڹؘۅٙالصَّلوَةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْ سَيِّدِالْمُ رُسَلِيْنَ آمَّابَعُدُ فَاعُودُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطِي الرَّجِيْمِ إِيسُواللَّهِ الرَّحْمُ بِالرَّحِيْمِ إِ

المدينة العلمية

از شخطریقت، امیرا ہاستت، بانی دعوت اسلامی حضرت علامہ ولا نا ابوبلال محمد الیاس عظار قادری رضوی ضیائی دَمَتُ برگاتُهُ الدَّیتُ اللهُ تَعَالَی عَلَیْهِ وَالِهِ وَسَلَّم تَبِیْغِ قَر آن وسقت کی عالممگیر غیرسیاس الْکُوتُ مَن اللهُ تَعَالَی عَلَیْهِ وَالِهِ وَسَلَّم تَبِیْغِ قَر آن وسقت کی عالممگیر غیرسیاس تحریک ' وعوت، إحیائے سنت اور اشاعت علم شریعت کو دنیا بھر میں عام کرنے کا عزم مصمم رکھتی ہے، إن تمام اُمورکو بحسن خوبی سرانجام دینے کے لئے متعدد مجالس کا قیام عمل میں لایا گیا ہے جن میں سے ایک مجلس ' المحدینة العلمیة ' بھی ہے جودعوتِ اسلامی کے علماء ومفتیانِ کرام کو کھڑ مُدُ اللهُ تعالی پر شمتل ہے، جس نے خالص علمی ، تحقیقی اور اشاعتی کام کا بیڑا اٹھایا ہے۔ اس کے مندرجہ ذیل چھ شعبے ہیں:

(۱) شعبهٔ کتب اعلی حضرت (۲) شعبهٔ تراجم کتب (۳) شعبهٔ دری کتب (۲) شعبهٔ اصلاحی کتب (۵) شعبهٔ تفتیش کتب (۶) شعبهٔ تخریج

"المدينة العلمية" كى اولين ترجيح سركاراعلى حضرت إمام المسنّت عظيم البركت عظيم المرتبت، پروانة همع رسالت مُحَدِّ ودين ومِلَّت ، حامى سنّت ، ماى بدعت ، عالم شَر يُعَت ، پير طريقت ، باعث خيْر وبُرَكت ، حضرت علّا مه مولا ناالحاج الحافظ القارى شاه امام اَحدرَ ضاخان عَليْهِ وَحَمَهُ الرَّحَمٰن كى گرال ما بينسانيف كوعصر حاضر كے تقاضول كے مطابق حتى الْوسع سَهُل اُسلوب ميں پيش كرنا ہے۔ تمام اسلامى بھائى اور اسلامى بہنیں اِس علمی ، تحقیق اور اشاعتی مَدَنی كام میں ہمكن تعاون فرما كیں اور دوسرول كو بھى مطائعہ فرما كیں اور دوسرول كو بھى مطائعہ فرما كیں اور دوسرول كو بھى اول كتب كاخود بھى مطائعہ فرما كیں اور دوسرول كو بھى

الله عَذَّوَجَلَّ "وعوت اسلامي" كي تمام مجالس بَشُمُول "المدينة العلمية" كودن گيار بهوي اور رات بار بهوي بن ترقی عطافر مائ اور بهارے اور بهارے مجمل خير كوزيور إخلاص سے آراسته فر ماكر دونوں جہال كى بھلائى كاسب بنائے بهميں زير گنبد خصراشهادت، جنت البقيع ميں مدفن اور جنت الفردوس ميں جگه نصيب فر مائے۔ المِيْن بِجَافِ النَّبِيّ الاَّمِيْن صَلَّى الله تعالى عليه واله وستَّم

رمضان السارك ١٣٢٥ ه

ٱڵڂٙڡ۫ۮۑٮؖٚڥۯؾؚٵڶؙۼڵؠؽڹؘۊٳڵڞۧڵۅؙڠؙۘۊٳڵۺۜڵٲؠؙۼڮڛۜؾۣڡؚٳڶڡؙۯڛٙڶؽڹ ٲڝۜۧٲڹڎؙۮؙڡؙٲۼؙۏؙۮؙؠٵٮٮڷ؋ؚ؈ؘٳڶۺۧؽڟڹٳڵڗۜڿؿڿڔۣ۠ڿۺڿٳٮڵ؋ٳڵڗؖڿڵ؈ٳٮڗڿڹڿ



یا نچویں صدی ہجری میں جو با کمال مشاہیرآ سان علم فضل کے روشن ستارے بن کر چیکے ان میں حُجَّهُ الْإِسْلام حضرت سیدناا مام غزالی عَلیّهِ رَحْمَهُ اللّهِ الْو الّهِ اللهِ اله تامه حاصل تھی ،تصوف وطریقت کی جامعیت ،نکته شجی ود قیقه رسی میں اپنی مثال آپ تھے۔وعظ و بیان کا ایسا ملکه رکھتے تھے کہ بڑے بڑے ناموراور جَیْرَعلما آپ کا بیان س کر جیران رہ جاتے اور آپ کی جَلالَتِ علمی کے مُعْتَر ف ہوتے ۔تقریر کے ساتھ ساتھ تحریر کا بھی ذوق تھا چنانچے مختلف موضوعات پر کثیر کتب تحریر فرما ئیں جن میں تصوف کے موضوع پر آپ کی كتبكوسب سے زياده شبرت ويذيرائي حاصل موئي رزيرنظركتاب" مكاشفة القلوب "بھى تصوف كےموضوع يرہے لیکن بیآ یک این تصنیف نہیں بلکہ آپ کی کتاب" المکاشفة الكبدئ "كا انتِصار بے (1)جس میں اصلاح اعمال كے حوالے سے کافی معلومات ہیں اورمختلف عنوانات کے تحت آیات ، اَحادیث ، اَقوال بُزُرگان دین اورمختلف واقعات و حکایات درج ہیں جن میں موت اور قبر وآخرت کی یاد کے بے شار مدنی چھول ہیں۔ حدیث یاک میں ہے بعقلمندوہ ہے جوایے نفس کا محاسبہ کرے اور موت کے بعد کے معاملات کے لیے تیاری کرے - (ترمذی، ۲۰۷/٤، الحدیث ۲٤٦٧) بزرگانِ دین رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين موت اوراس دنیا ہے کوچ کرجانے کو بہت کثرت سے بادکرتے اوراینی آخرت کی فکر کرتے۔ لہذا میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو! ہمیں بھی جاہیے کہان بزرگانِ دین کی مبارک مدنی فکر سے اکتسابِ فیض کرتے ہوئے موت اور آخرت کی تیاری کا ذہن بنا کیں اور اس عارضی و فانی دنیا پراعتماد واطمینان کے بجائے آخرت کی تیاری میں مشغول ہوجائیں ۔آخرت کی تیاری اور دیگراچھی اچھی نیتوں کے ساتھاس کتاب کواول تا آخر توجہ ہے بڑھئے الله **1**.....المنقذ من الضلال للغزالي (تحقيق الدكتور جميل صليبا والدكتور كامل عيادي، ص. ٤٠اكر" **مكاشفة القلوب" كا** كر **كانظرت** حائز ہ لیاجائے تومحسوں ہوگا کہ بدامام غزالی غلیْہ رُخمَهُ الله الوابی کی سی ایک کتاب کا اختصار نہیں ہے بلکداس کے لیے آپ کی اور آپ کے بعد دالوں کی کتب ہے بھی استفادہ کیا گیاہے کیونکہ اس میں منیۃ کمفتی ،زہرالریاض اورا بن القیم وغیر ہ کا ذکر ہےاوراس کتاب کا انداز بھی ۔ امام غزالی کے طرز تحریرے مختلف نظر آنا ہے بہر حال ترغیب وتر ہیب اور بند ونصائح کے حوالے سے اس کتاب میں کافی مواد ہے۔علمیہ

عَذَّوَجَلَّ نے جاہاتو آخرت کی فکر پیداہوگی جونیکیوں سے محبت اور گناہوں سے نفرت کا سبب بنے گی، نیزعمل پراستفامت پانے کے لیے دعوتِ اسلامی کے مدنی ماحول سے وابستہ رہیے اورامیر اہلسنت دَامَتْ بَرَ کَاتُهُمُ الْعَالِيَه کے مدنی انعامات کو اپنالیجئے اِنْ شَآءُ اللّٰه عَذَّوَجُلَّ آپ بھی اینے اندر مَدَ نی اِنقلاب بریا ہوتا محسوس کریں گے۔

اَلْحَدُدُ لِللهِ عَزَّوَجَلَّ البَلِيَّ قرآن وسنت كى عالمگيرغيرسياس تحريك" وعوت اسلامى "كى مركزى مجلس شورى ك گران صاحب كی خواهش برمجلس" المدينة العلمية "اس كتاب توتخ ترج كے ساتھ پیش كرنے كى سعادت حاصل كر رہى ہے جس میں عَشر حاضِر كے تقاضوں كوئر نُظَر ركھتے ہوئے كيے گئے كام كی تفصیل کچھاس طرح ہے:

ان تہ سے خوت کتب سے نخوت کی گئی ہے آخر میں ان تمام کی فہرست " مَا خَذُ وَمُرَاجِع " کے نام سے بنائی گئی ہے اوراس فہرست میں مصنفین ومو لفین کے نام مع سن وَ فات ، مطابع اور سن طباعت بھی ذکر کر دیئے گئے ہیں۔

﴾ کئی مقامات پرضرور تامفید حواشی کا بھی اہتمام کیا گیا ہے اور مُثرِجم اور علمیہ کے حواشی میں تفریق کے لیے علمیہ کے حاشیہ کے آخر میں " علمیه "لکھا گیا ہے۔

ہے۔۔۔۔۔جابجامشکل اورغیرمعروف الفاظ پراعراب بھی لگائے گئے ہیں۔اسی طرح اَعلام (یعنی بزرگانِ دین،روایت کرنے والوں یادیگر کے ناموں) پر بھی اعراب کا اہتمام کیا گیا ہے۔

۲۵ کے میں قرانی رسم الخط (خطعثانی) برقرار رکھنے کے لیے تمام آیات ایک مخصوص قرانی سافٹ وئیر سے Corel
 ۲۵ کے ذریعے پیسٹ کی گئی ہیں۔ اور متن وتر جمہ بطور سابق آ منے سامنے لکھا گیا ہے۔

﴿متن میں مترجم دَحْمَهُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ كَا ترجمه برقر ارركھتے ہوئے كنز الا يمان كا ذوق ركھنے والوں كيلئے حاشيه میں ترجمه كنز الا يمان بھى پیش كيا گيا ہے۔ آيات اور تراجم كا تقابل كنز الا يمان (مطبوعه مكتبة المدينه) سے دومرتبه كيا گيا ہے۔ حلا جہاں نبی اَ كرم صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم كے نام نامی يا آپ كے ذكر كے ساتھ درو و پاك لكھنے ہے رہ گيا تھا وہاں ورو و پاك لكھنے كا اہتمام كيا گيا ہے نيز صحابه كرام اور ديگر بزرگانِ و بن كناموں كے ساتھ بھى ترضيه (دَهِيَ اللهُ عَنْه) اور تَرَجُمْ (دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) لكھنے كی تركیب كی گئے ہے۔

العنی کامان (Punctuation Marks) یعنی کامان (Punctuation Marks) وغیره کا ضرورتاً امتمام کیا گیا ہے۔

﴿ Headings) ، قرآنی آیات ، بعض عبارات ، نمبرنگ اور باوڈ روغیرہ کی ترکیب ڈیز اُنگ سافٹ ویئر CorelDraw کے ذریعے کی گئی ہے۔

🖈دومرتبه بوری کتاب کی بُروف ریڈنگ کی گئی ہے۔

اَلْحَدُدُو لِللّه عَذَّوجَلَّ اس كتاب برشعبة خَرْتَ (المدينة العلمية) كه اِسلامی بھائيوں نے كام كرنے كى سعادت حاصل كى بالخصوص عنايت الله گوار وى عطارى مدنى اورا بوغتيق محمرنو يدرضا عطارى مَدَ نَى نے خوب كوشش كى ،الله عَذَّوجَلَّ ان كَ سعى قبول فر ماكر ذريع نجات بنائے ۔اس كام مِس آپ كوجو خوبياں نظر آئيں يقيناً وہالله عَذَّوجَلَّ كى عطا اوراس كے پيارے حبيب صَلَّى اللهُ تَعَالى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم كى عنايت سے بين نيزعالم ئے كرام دَجِمَهُ مَاللهُ السَّلام بالحضوص شخ طريقت بيارے حبيب صَلَّى اللهُ تَعَالى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم كى عنايت سے بين نيزعالم ئے كرام دَجِمَهُ مَاللهُ السَّلام بالحضوص شخ طريقت اميرا باسنّت بانى دعوتِ اسلامى حضرت علامه مولا نا ابو بلال محمد الياس عظار قادرى ضيائى مد طله العالى كے فيضان كا صدقہ ہے كہ اس انداز ميں بيكام مو پايا ۔اور باوجود احتياط كے جو خامياں رہ كئيں انہيں بمارى طرف سے نا دانستہ كوتا بى برخمول كيا جائے ۔قارئين خصوصاً علماء كرام دَامتُ فَيُوثُهُ هُ سے گزارش ہے اگركوئى خامى آپ محسوس فرما ئيں يا اپنى قيمتى آراء اور تجاويز دينا چاہيں تو بميں تحريرى طور پر مطلع فرما سيئے ۔الله عَذَّو جَلَّ ہميں اپنى رضا كے ليكام كرنے كى توفيق عطافر مائے اور دوتِ اسلامى كى مجلس "المدينة العلمية "اورد يگر مجالس كودن گيار موسي رات بارھويں ترقى عطافر مائے۔

أمين بجاه النبى الامين صلى الله تعالى عليه وسلم شعبه تخريج المدينة العلمية

مولانا مفتى تقدس على خان عليه رَحْمَهُ الرُحُسُ

یادگارِسَلَف، اِفْخَارِ خَلَف، اُستادُ العلَماء مولا نامُفَی نَقَدُّس علی خان بن سردار وَلی خان بن مولا نا ہادی علی خان بن مولا نا ہادی علی خان بن مولا نا رضاعلی خان (جدامجداعلی حضرت اِمام احمدرضاخان بریلوی) دَ جِمَهُمُ اللّهُ تعَالٰی کی ولا دت باسعادت رَجَبُ الْمُرجَّب مولا نارضاعلی خان (جدامجداعلی حضرت اِمام احمدرضاخان بریلی شریف، محلّه سوداگرال میں ہوئی۔ مولا ناحسن رضاخان عَلَيْهِ دَحُمَةُ الرَّحَمٰن نے آپ کا تاریخی نام تقدی علی خان ۱۳۲۵ھ اِستخراج فرمایا۔

آپِدَ حُمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْه كى إِبَدَ الْى تَعلَيْم وَرَبِيت نَامُوَراَسَا تَذَه كَى سَرِيتَ مِيْنَ مُولَى اورسَنَوْفراغَت آپ نے دارالعلوم مَنْظَرِ إسلام بریلی شریف سے حاصل كى۔ آپ کو مجدد وین وملت اَعلی حضرت اِمام احمد رضاخان ، مولا نا حامِد رضا خان ، مولا نا حامِد کہ اُللهِ خان ، صدر الشریعیہ مولا نا امجد علی اعظمی دَجِمَهُ مُ اللَّهُ تَعَالَیٰ جیسی نامُور بستیوں سے شَرْفِ بَلَمُّدُ حاصل ہے۔ آپ دَحُمَهُ اللَّهِ تَعَالَیٰ عَلَیْهُ عُلُوم وَنُون میں اینا ثانی نہیں رکھتے تھے۔

مولا نا تقدّ علی خان عَدَیه رَحْمَهُ الوَحْمِن اعلی حضرت امام اہلِ سنت مجدددین وملت مولا ناامام احمدرضا خان عَدیه وَحْمَهُ الوَحْمِن اعلی حضرت امام اہلِ سنت مجدددین وملت مولا نا عَدیه وَحْمَهُ الوَحْمِن سے سلسہ قادریہ میں بیعت ہوئے اور تمام سَلاسِل میں خلافت سے مشرف ہوئے ۔ نُجِیَّةُ الاسلام مولانا حامدرضا خان عَدیه وَحْمَهُ الوَّحْمِن نِے آپ کوخاندانِ قادِریہ کے اورادووَ ظائف کی اجازت مرحمت فرمائی۔

آ بِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْه وارالعلوم منظراسلام كے نائبُ مَهُ تَكُم اور كُجَّةُ الاسلام مولا نا حامدرضا خان عَلَيْهِ رَحْمَةُ

الو علامه ارشد القادرى دَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالَى آپ كهشهور كلام ويش يجيس سال بريلى شريف ميں تدريس اور ديگر علمى خدمات سرانجام ويت رہے پھر يا كتان تشريف لے آئے۔ يجھ عرصہ باب المدينہ كراچى ميں رہنے كے بعد پير جو گوٹھ (ضلع خَير پور مِيْرَس، باب الاسلام سندھ) تشريف لے گئے۔ وہاں مدرسہ قادِريكا إجراكيا پھر ١٩٥٢ء ميں جامعد داشد بيكا افتتاح توكيا اوراس جامعہ كے پہلے شخ الحديث مقرر ہوئے۔ اس وقت سے تازیشت حضرت مفتی تقدی علی خان عَلَيْه دَحْمَهُ الوَّحَمٰ جامعہ داشد به عداشد به ميں تدريسي فرائض انجام ويت رہے۔ ہزاروں آپ سے فيض ياب، بيشار راہ ياب اور سينكر وں تشفكانِ علم سيراب ہوئے۔ مولا نامحد ابراہيم خوشتر قادِرى رضوى محدثِ اعظم يا كتان مولا نامر داراحمد رضوى ، بحرالعلوم مفتی سير محمد افضل رضوى مونگيرى اور علامہ ارشد القادرى دَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالَىٰ آپ کے مشہور تكلم بيں۔

کلالا هیں حضرت مفتی تقدس علی خان عَدَیْهِ رَحْمَهُ الرَّحْمَن نے بغدادشریف، کربلائے معلی ونجف اَشرف وغیرہ میں حاضری دی اور ۱۳۹۸ هیں پہلا جج ہند ہے کیا۔ پھر پاکستان سے ۱۳۸۸ هیں آپ نے دوسرا اور ۱۳۹۲ هیں میں تیسرا حج کیا۔ ۱۳۹۵ هست آپ دَحْمَهُ اللّهِ تَعَالٰی عَدَیْهُ مسلسل ہرسال ماہِ رمضان میں عمرہ وزیارت کی سعادت سے بہرہ ورہوتے رہے۔

٣ رَجَبُ الْمُرَجَّبِ ٨٠٢] هِ مطابق 22 فروری 1988ء بروز پیردو پهر 12 بجکر 10 منٹ پر آپ نے وصال فرمایا۔ إِنَّالِيْلِهِ وَ إِنَّ ٓ اِلْدُيْهِ مِهِ عِنْوَ ۞ " پیر جو گوٹھ'' میں آپ کا مزار مَرجَعَ خَلائق ہے۔

آپ کاعرس مبارک 30 نومبر سے کیم دسمبر تک آپ کے مزار شریف'' پیر جو گوٹھ'' میں عقیدت واحترام کے ساتھ منایا جاتا ہے۔

الله عَزَّوَجَلَّ كَى ان بِرحمت بهواوران كِصدقع بهارى مغفرت بهو امِيْن بِجَاءِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم

حضرت سيدنا امام غزالى عليه رُحْمَةُ اللهِ الْوَالِي كُ

حُجَّةُ الْإِسُلَامِ حَضِرت سيدناامام غَرَّالى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي بِإِنْجِو ين صدى بجرى كى وه مشهور شخصيت بين جنهين البينة مُعاصرين مين ايك نما يال حيثيت اورمقام حاصل ہے بلكه حافظ ابوالفَّضْل عبدالرحيم عراقی عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِي اللهِ الْبَاقِي مَعاصرين مين ايك نما يال حيثيت اور مقام حاصل ہے بلكه حافظ ابوالفَّضْل عبدالرحيم عراقی عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي بانچوين (متونی ۱۰۸هـ) فرماتے ہیں: علمائے كرام رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام كنز ويك حضرت سيِّدُ ناامام غز الى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي بانچوين صدى بجرى كَ مُجِيِّد و بين _(1)

آپ کا نام نامی، اسم گرامی محمد بن محمد بن احمد طوی غزالی، کنیت ابوحا مداور لقب حُجَّهٔ اُلاِ سُلام ہے۔ ولادت باسعادت ۱۹۵۰ هطابران، شلع طوس، خُراسان میں ہوئی۔(2) خراسان مشرق میں واقع ایک وسیع صوبہ تھا، اب اس کا ایک بڑا حصہ تقسیم ہوکر کچھا فغانستان اور کچھ دیگرمما لک میں شامل ہو چکا ہے۔(3)

آپ کے والد ما جدحفرت سیدنا محر بن محمد عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ الصَّمَد دھا گے کا کاروبارکرتے تھے، اسی نبیت ہے آپ کا خاندان "غزالی" کہلاتا ہے۔علامہ تاج الدین سکی عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ القَوِی فرماتے ہیں کہ حضرت سیّدُ ناامام غزالی عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ ا

^{1}اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص ٣٥

^{2}اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٩

۹۰۷، ساردو دائره معارفِ اسلامیه، ج۸، ص۹۰۷

اسے وَاعِظ بنا۔الله عَزَّوَ جَلَّ نے ان کی بیدونوں دعائیں قبول فرمائیں۔(1)

۶۸۹ ه میں آپ دمشق پہنچاور کچھدن وہاں قیام فر مایا۔ایک عرصہ بیت اُئمقد سیں گزارا۔ پھر دوبارہ دمشق تشریف لائے اور جامع دمشق کے مغربی منارے پر ذِکر وَفَکراور مُرَاقِی مِیں مشغولیت اختیار کی۔ دمشق میں آپ کا زیادہ تر وقت حضرت سیّدُ نا شیخ نصر مَقْدُ می عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْوَلِی کی خانقاہ میں گزرتا تھا۔ ملک شام میں دس سال قیام فر مایا،اسی دوران" اِحْدیاءُ الْعُلُوْم "جواهِدُ الْقُوآن"، "یاقوْتُ التّاویْل" (جم جلدیں) اور "مِشْکَاةُ الْاَنْوَاد" وغیرہ مشہور کُتُ بِنَا تُعْدِی مِنْ مِن مِن مِن بِن کے علاوہ کی عُلوم وَنُون میں آپ کی تصانیف کی تعداد سینکڑوں میں ہے۔ پھر تجاز، بغدا داور کُتُ بِنَا تَعْدِی تَعْدَادُوں مِن سِنَا کُور اَنْ مِن اِنْ کے علاوہ کی عُلوم وَنُون میں آپ کی تصانیف کی تعداد سینکڑوں میں ہے۔ پھر تجاز، بغدا داور

الشافعية الكبرى، ج٦، ص٤٩ واتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٩.

^{2}المنتظم في تاريخ الملوك والامم ، ج٩، ص١٦٨

. نیشا پور کے درمیان سفر جاری رہااور بالآخراپنے آبائی شہرطوں واپس آکرعبادت وریاضت میں مصروف ہو گئے اور تادم آخروعظ ونصیحت،عبادت وریاضت اور دَرُسِ تَصَوُّف میں مشغول رہے۔⁽¹⁾

حضرت سبِّدُ ناامام غزالی عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي في دورِطالبِ علمي ميں حضرت سبِّدُ ناشِخ ابوعلى فَصْل بن محمد بن على فَا رُمَذِي طُوسي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي (متونى ٢٥٠هـ) كي ہاتھ پر (27سال كى عمر ميں) بيعت كى ۔ شخ موصوف بہت عالى مرتبت، فقد شافعى كے زبر دست عالم اور تذابِ بِ سَلَف سے باخبر تصاور حضرت سبِّدُ ناامام ابوالقاسم قُشَيْرى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِي (متونى ١١٥هـ) كے جليل القدر شاگر دول ميں سے ہيں ۔ (2)

حضرت سیّدُ ناامام محمد غزالی عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْوَالِی ایک بار مکه معظمه میں تھے۔حضرت سیّدُ ناعبد الرحمٰن طُوسی عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْوَالِی ایک بار مکه معظمه میں تھے۔حضرت سیّدُ ناعبد الرحمٰن طُوسی عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْقَوِی کی آپ سے ملاقات ہوئی۔ انہوں نے آپ کے نہایت سادہ اور معمولی لباس کود کی کر کہا: آپ کے پاس اس کے علاوہ اورکوئی لباس نہیں ہے! آپ امام وقت اور پیشوائے قوم ہیں ہزاروں لوگ آپ کے مرید ہیں! حضرت سیّدُ نا امام محمد غزالی عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْوَالِی نے جواب دیا: ایسے خص کالباس کیا دیکھتے ہوجواس دنیا میں ایک مسافری طرح مقیم ہواور جواس کا نئات کی رنگینیوں کو فانی اور وقتی جانتا ہو۔ جب والی دوجہاں ، رحمت عالمیاں صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَالِهِ وَسَلَّم اس دنیا میں مسافری طرح رہے اور کچھ مال وزرا کھانہ کیا تو میری کیا حیثیت اور حقیقت ہے۔ (3)

ایک بارآپ جامع مسجداً مُوی کے صحن میں تشریف فر ماتھے مفتیانِ کرام کی ایک جماعت بھی وہاں موجود تھی۔

^{1}اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٩-١١ و شذرات الذهب، ج٤، ص٤٤١

^{2}اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٢٦

^{3}مقدمه كيميائي سعادت (مترجم از مولانا محمد سعيد احمد نقشبندي) ، ص٣١

ایک دیباتی آیا اوران مفتیان کرام کی بارگاہ میں ایک مسئلہ عرض کیا جس کے جواب میں سب نے خاموثی اختیار فرمائی ،
امام غزالی بھی اس مسئلے میں غور فرمانے گئے، جب کسی نے بھی جواب نہ دیا تو دیباتی پریہ بات بہت گراں گزری ، یہ دیکھ کر آپ نے اسے اپنے پاس بلایا اور اس کے مسئلے کا جواب ارشاد فرما دیا لیکن وہ بجائے شکر یہا داکر نے کے ، آپ کا مذاق اُڑانے لگا اور بولا: جلیل القدر مفتیان کرام نے جس مسئلے کا جواب نہ دیا ایک عام فقیر اس مسئلے کا جواب کیسے دے سکتا ہے! جب وہ لوٹا تو ان مفتیان کرام نے اس سے پوچھا کہ کیا جواب بتایا اس نے عرض کر دیا ، یہ سب امام صاحب کے پاس آگئے اور جب تعارف ہواتو آپ سے درخواست کی کہ آپ ہمارے لئے ایک علمی شست منعقد فرمائیں! آپ نے انگلے دن کا فرما دیا مگر اسی رات وہاں سے سفر پر روانہ ہوگئے۔ (۱)

ایک باراتفا قاً حضرت سیِدُ ناامام غزالی عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْوَالِی وَمُثَّلَ کے مدرسه" اَمِینِیَّه " تشریف لے گئے، وہاں دیکھا کہ ایک استاذ کہد ہے تھے:قَالَ الْعَوَ الِی (امام غزالی فرماتے ہیں) یعنی وہ آپ کے کلام کے ساتھ تدریس کررہے تھے۔ یددیکھ کر آپ پرخود پیندی میں گرفتار ہونے کا خوف طاری ہوالہذا آپ نے دمشق چھوڑ دیا۔(2)

" شَدَرَاتُ الذَّهَب" میں" زَادُ السَّالِکِیُن" کے حوالے سے ذرکور ہے: حضرت سیِّدُ نا قاضی ابو بکر بن عَرَ بِی عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْوَلِی بیان کرتے ہیں کہ میں نے حضرت سیِّدُ ناامام غزالی عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْوَالِی کولوگوں کے درمیان اس حال میں پایا کہ آپ کے ہاتھ میں الصِّی ہی بیوند دارلباس زیب تن تھا اور کندھے سے پانی کا برتن لٹک رہا تھا اور میں دیکھا کرتا کہ بغداد میں آپ کے برُعِلُم سے مستفیض ہونے کے لیے بڑے بڑے بڑے جَیَّد عُلَا وَضَلاء آپ کی مجلس وَرُس میں حاضر ہوتے جن کی تعداد جارسوتک پہنچ جاتی۔(3)

2طبقات الشافعية الكبرى، ج٦، ص٩٩

^{3}شذرات الذهب، ج٤، ص١٤٦

حضرت سيّدُ ناعلامه اساعيل حقى عَليْه رَحْمَةُ الله الْقَوى تَفْسِير روحَ البيان، ج5 ، صفحه 374 ، سور هُ طر، آيت نمبر 18 كے تحت نقل فرماتے ہیں:حضرت سیّدُ ناامام رَاغِب اَصْفَهَا نی قُدِسَ سِوُّهُ النُّورَانِی نے مُحَاضَرات میں ذکرفر مایا کہ صاحب حِزْبُ البَحَرِ، عارِف بِاللَّه حضرت سيِّدُ ناا مام شاذ ليءَ مَنْ في وَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي فرمات بين بمَين مسجداقصي مين محوِخواب تقاء میں نے دیکھا کہ سجداقصلٰ کے صحن میں ایک تخت بچھا ہوا ہے اورلوگوں کا ایک جِّمْ غَفِیْر ہے۔میرے اِشتِفساریر بتایا گیا كه بير حضرات انبيائ كرام ورُسُل عظام عَلَيْهِمُ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام بين جوحضرت سبِّدُ ناحسين حَلَّا جَ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه سے ظاہر ہونے والی ایک بات بران کی سفارش کے لئے بارگا ورسالت میں حاضر ہوئے ہیں۔ پھر میں نے تخت کی طرف د يكها توحضور نبي كريم، رءُوف رحيم صلَّى اللهُ تعَالى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم اس يرجلوه كريس اورانبيائ كرام عَلَيْهِمُ الصَّلوةُ وَالسَّلام سامنے تشریف فرماہیں جن میں حضرت سبِّدُ ناابراہیم خلیل الله، حضرت سبّدُ نامویٰ کلیم الله، حضرت سبّدُ ناعیسی روح الله اور حضرت سيّدُ نا نوح تَحَى اللّه عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلَوةُ وَالسَّلَامَ بِهِي مِينِ مِينِ ان كي زيارت كرنے اوران كا كلام سننے لگا۔ اسى دوران حضرت سيّدُ نامويلُ عَلَيْهِ السَّلام نه بارگاهِ رسالت مين عرض كي: آب كافر مان ہے: " عُلَمَاءُ أُمَّتِي كَأنْبِياءِ بَنِيُ إِسْرَائِيْل لِعِين ميرى أمّت كِعلابني اسرائيل كِانبيا كي طرح بين-" لهذا مجصان مين سيكو في دكھائييں حضور نبي ياك، صاحب لولاك، سياح افلاك صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم فَ حَضرت سيَّدُ ناامام محمد غز الى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الوَالِي كَي طرف اشاره فرمايا حضرت سيّدُ ناموي عَلَيْهِ السَّلام في آب رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه على اللهِ تَعالى عَلَيْه عرض کئے حضرت سیدُ ناموی عَدنیهِ السَّلام نے فرمایا کہ سوال ایک کیا گیا اورتم نے دس جواب دیئے ، تو حضرت سیّدُ نا امام مُحرَّمُ الى عَلَيْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْوَالِي فَعُرْض كى: جب الله عزَّوجَلُ فَآبِ عَدِي جِمَاتُمَا " وَمَا تِلْكَ بِيبِينِكَ لِبُوْلِمِي ﴿(ب١٦، طه:١٧) توجمهٔ كنز الايمان: اورتير بردائخ باته مين كيا بهاب موكى يوا تناعرض كردينا كافي تهاكه پیمیراعصاہے، مگرآپ نے اس کی کئی خوبیاں بیان فر مائیں ۔⁽¹⁾

حضرات على اللهِ اللهِ اللهُ السَّلام فرمات مين كه كوياامام غزالى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي حضرت سيِّدُ نامويل

^{🕦} فتاوى رضويه، ج٨٦، ص ١٠٤، اشارةً

کلیم الله عَلَیْهِ السَّدَم کی بارگاہ میں عرض کررہے ہیں کہ جب آپ کا ہم کلام باری تعالیٰ تھا تو آپ نے وُفُورِ مَحَبَّت اور غَلَبَهُ شوق میں اپنے کلام کوطول دیا تا کہ زیادہ سے زیادہ ہم کلامی کا شرف حاصل ہو سکے اور اس وقت مجھے آپ سے ہم کلام ہونے کا موقع ملا ہے اور کلیم خُدا سے ُنفتگو کا شرف حاصل ہوا ہے اس لئے میں نے بھی شوق و محبت میں کلام کوطویل کیا ہے۔(1)

حضرت سبِّدُ ناامام ابوالحسن شاذ لى عَلَيْهِ وَحُمَةُ اللهِ الْوَالِي فرمات عِين: مين خواب مين زيارت رسول سے مشرف مواتو ديکھا كه حضور رحمت عالَم صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهِ وَسَلَّم حضرت سبِّدُ ناموى اور حضرت سبِّدُ ناموى عَلَيْهِ مَا الصَّلَوٰةُ وَاللهَ السَّلَام عَن اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهِ وَسَلَّم حضرت سبِّدُ ناموى مِين عَرَالى عَلَيْهِ وَحُمَةُ اللهِ الْوَالِي بِرِفْخُر كرتے ہوئے فرمار ہے ہيں: "كياته ارى اُمتوں مين عَرَالى جسل من حضرت سبِّدُ ناامام عَرالى عَلَيْهِ وَحُمَةُ اللهِ الْوَالِي بِرِفْخُر كرتے ہوئے فرمار ہے ہيں: "كياته ارى اُمتوں مين عَرَالى جسل عالى من حضرت سبِّدُ ناامام عَرالى عَلَيْهِ وَحُمَةُ اللهِ الْوَالِي بِرِفْخُر كرتے ہوئے فرمار ہے ہيں: "كياته ارى اُمتوں ميں عَرَالى عَليْهِ وَسُلْم عَلَيْهِ وَاللهِ وَسُولَا عَلَيْهِ وَاللهِ وَسَلَّم عَلَيْهِ وَاللهِ وَسَلَّم عَن اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ ا

عُمْرَکِآخری حصه میں اگر چه حضرت سیّدُ ناامام غُرَ الی عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْوَالِی کازیاده تروقت عبادت میں گزرتا اور شب وروز مجاہدات وریاضات میں بسر کرتے تھے مگر تصنیف و تالیف کا مشغلہ بالکل ترک نفر مایا۔اصول فقہ میں آپ کی اعلی درجہ کی تصنیف" ۴۰۵ھ کی تصنیف ہے۔اس کے ایک برس بعد آپ نے 55 سال کی عمر میں بروز پیری اجمادی الآخر ۵۰۵ھ میں طاہران (طوس) میں انتقال فر مایا اور و بیں مدفون ہوئے۔وراثت میں اس قدر مال چھوڑ الله جوآپ کے اہل وعیال کے لئے کافی تھا حالا نکہ آپ کو بہت زیادہ مال وزر پیش کیا گیا مگر آپ نے قبول نہ کیا اور بھی کسی کے آگے دَشتِ سُوال دراز نہ کیا۔اولا د میں صرف بیٹیاں ہی سوگوار چھوڑیں۔

حضرت سبِّدُ ناامام ابن جوزِى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (موفى ٥٥٥ه) في " اَلتُّبَاتُ عِنْدَ الْمَمَات " ميل آپ ك

^{1} كو ثرالخيرات، ص ٤٠

النبراس شرح شرح العقائد، ص٢٤٧ و اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص١٢ و تعريف الاحياء
 بفضائل الاحياء على هامش احياء علوم الدين، ج٥، ص٣٦٤

وصال کا واقعہ حضرت سیّدُ نااحم غَرَ الی عَلیْه رَحْمَهُ الله الوالی (متونی ۵۲۰ه و) کی زبانی بیکھا ہے کہ پیر کے دن حضرت سیّدُ ناامام غرالی عَلیْه رَحْمَهُ الله الوالی عَلیْه رَحْمَهُ الله الورجِ وقبله روکر کے پاؤل پھیلا دیتے ۔ لوگوں نے دیکھا توروح تَفْسَ میرے دب عَدِّو رَجَّی تھی ۔ (۱) عُصْمُ کی سے برواز کرچکی تھی۔ (۱)

الله عَزَّوجَلَّ كَ ان بررحت مواوران كصدقع مهارى مغفرت موامين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْكَمِيْنِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم

حضرت سيّدُ نا يَّحْ الْمُرمُحْي الدِّين ابن عربي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي (مَّوَىٰ ١٣٨هـ) ابني كتاب "رُوْحُ الْقُدُسُ فِي مُناصَحَةِ النَّهُ سُ " ميں حضرت سيّدُ ناابو عبد الله ابن زين يا يُرى إشبيلى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ القَوِى كحالات لكھتے ہوئے بيان فرماتے ہيں: آپ كاشاراولياءالله ميں ہوتا ہے۔ ايك رات حضرت سيّدُ ناامام غزالى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي كرد ميں ابوالقاسم بن حمدين كى لكھى ہوئى كتاب پڑھ رہے تھے كہ بينائى چلى گئى۔ آپ نے اسى وفت بارگا و خداوندى ميں سجدہ ريز ہوكر گريو زارى كى اور قسم كھائى كه آيندہ بھى بھى اس كتاب كونه پڑھوں گا اسے اپنے آپ سے دورر كھوں گا۔ اسى وفت بينائى واليس لوٹ آئى۔ يہ حضرت سيّدُ ناامام غزالى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي كى كرامت ہے جوان كے انقال كے ابى وفت بينائى واليس لوٹ آئى۔ يہ حضرت سيّدُ ناامام غزالى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي كى كرامت ہے جوان كے انقال كے بعد حضرت سيّدُ ناابو عبد الله ابن زين يا يُرى إشبيلى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى كے ذريع ظاہر ہوئى۔ (2)

حضرت سیّدُ نا تاج الدین عبد الو باب بن علی شکی عَلَیْهِ وَ حُمَهُ اللهِ الْقَوِی (متونی الا اللهِ الْقَوِی (متونی اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ

[•] الثبات عند الممات ، ص ۱۷۸ وطبقات الشافعية الكبرى للسبكي ، ج٦ ، ص ٢١١ واتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب ، ج١، ص ١٤ الكتاب ، ج١، ص ١٤ الكتاب ، ج١، ص ١٤

درس میں حاضر ہوا تو اس شخص کو ہَشَّاش رہنے اُس دیکھا مگر جب وہ وہاں سے نکلاتو گھر جاتے ہوئے راستے میں سواری سے گر گیااور زخمی حالت میں گھر پہنچااور سورج غُروب ہونے سے پہلے ہی مر گیا۔(1)

حضرت سیّدُ ناعارِف کبیر قطب ربانی احمرصیّا دیمَنی عَلیْهِ رَحْمَهُ اللّهِ الْعَنِی فرماتے ہیں کہ میں نے خواب میں آسان کے دروازے کھلے دیکھے۔آسان سے فرشتوں کی ایک جماعت مَنبُر حُلّے (یعیٰ جنتی لباس) اور سواری لئے اتری۔ وہ ایک قبر کے سربانے آکر کھڑے ہوگئے۔اس قبر والے کو باہر نکال کرحُلّہ پہنایا، سُواری پرسُوار کیا اورا یک ایک کرکے تمام آسانوں سے گزرتے گئے یہاں تک کہ اس شخص نے سَتَّ حجابات کو بھی عُبُور کر لیا۔ میں ان حجابات تک تو انہیں و کیھ سکا مگران کی انتہا کہاں تک تھے بیان سکا۔ پس جب ان کے متعلق پوچھا تو بتایا گیا: ''بیامام غزالی ہیں۔''(2)

تعریفی کلمات

﴿1﴾حفرت سِیِدُ نامحمہ بن کیجیٰ نبیثا بوری عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللّهِ الْوَلِی فرماتے ہیں: میرے استاذِ محترم حضرت سیِدُ ناامام غزالی عَلَیْهِ رَحْمَهُ اللّهِ الْوَالِی کے مقام ومرتبہ کوصرف کامل عقل والا ہی پہچان سکتا ہے۔(3)

﴿2﴾حضرت سيِّدُ ناامام ابوالسن شاذِلى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي كَ شَاكَرُ وعارف بالله الُوالَعَبَّاسِ مِرسى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي صِيِّرِيْقَيَّتِ عُظْمَى كَمقام بِرفائز تق (4) الْوَلِي فرمات بين كه حضرت سيِّدُ ناامام غزالى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي صِيِّرِيْقَيَّتِ عُظْمَى كَمقام برفائز تق (4)

^{1}اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص١٤ و طبقات الشافعية الكبري للسبكي، ج٦، ص٢١٩

ستعریف الاحیاء بفضائل الاحیاء علی هامش احیاء علوم الدین ، ج۵، ص۲۶ و طبقات الشافعیة الکبری للسبکی،
 ۳۲، ص۲۵۸

^{4}اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص١٣ وطبقات الشافعية الكبرى للسبكي، ج٦، ص٢٥٧

^{5}اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص١٣

- ﴿5﴾ حضرت سيِّدُ ناامام ابن عَسَا كِردَ حُمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه (متونى الهه هـ) فرمات مين: حضرت سيّدُ ناامام غز الى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه (متونى الهه اللهِ الوَالِي جبيبا فر مين وفطين آئكھول نے ديكھاندكانول نے سنا۔(2)
- ﴿ 6﴾سبِّدُ ناحافظاً بُوالْفَصْلَ عبدالرجيم عِراقى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِي (مَوَىٰ ١٠٨هـ) فرمات بين: علمائ كرام رَحِمَهُمُ اللهِ الْبَاقِي (مَوَىٰ ١٠٨هـ) فرمات بين علمائ كرام رَحِمَهُمُ اللهِ الوَالِي يا نجوين صدى جَرى كَ مُجَرِّد بين -(3)
- ﴿7﴾ حضرت سيِّدُ ناامام ابوالحسن شاذِ لى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي سِيمنقول ہے كہ جسے الله عَزَّوَجَلَّ سے كوئى حاجت موده امام غزالى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي كَ وَسِيلِے سے دعاكر ہے۔ (4)
- - فرر أت: الامام الجليل ابو حامد الغزالي حجة الاسلام ومحجة الدين جامع اشتات العلوم (5)
- ﴿9﴾ حضرت سِيِّدُ ناحافظ جلال الدين سُيُوطى شافعى عَلَيْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْكَافِي (مَوَىٰ ١١٩هـ) ان الفاظ يَّ تَذَكُره فرمات: الامام حجة الاسلام ولى الله ابى حامد الغزالى رضى الله عنه (6)
- ﴿10﴾ مُجَدِّدِ اَعْظَم فَقِيهِ اَفْحَم، امام المِسنَّت، اعلى حضرت امام احمدرضاخان عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحُمٰن (متوفى ١٣٨٥هـ) آيكا قول قال كرت بوك ان الفاظ سے يادفر ماتے بين: اَلاعِمَامُ حُجَّةُ الْإِسُلامَ حَكِيْمُ الْأُمَّة كَاشِفُ الْعُمَّة ابو حامد

محمد بن محمد بن محمد الغزالي (رَحْمَةُ اللّهِ تَعَالَى عَلَيْه) ـ⁽⁷⁾ (ماخوذاز" احياء العلوم" جلداوّل مطبوعه مكتبة المدينه)

الله عَزَّوَ جَلَّ كَى ان يررحمت بهواوران كے صدقے بهارى مغفرت بهو۔امِيْن بِجَادِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم

2تاریخ مدینة دمشق، ج٥٥، ص ٢٠٠

4مرآة الجنان وعبرة اليقظان، ج٣، ص ٢٤٩

- 3اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٣٥
- 5تشييد الاركان على هامش احياء علوم الدين، ج٥، ص ٣٧١
- ٢٥ س٠٤٥ المتقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٨



رسولِ آکرم، نورِجِسم، شاہ بی آدم صَلَّی اللهُ تَعَالَیْ عَلَیْهِ وَالِهِ وَسَلَّم کافر مانِ عالی شان ہے:

قیامت کے دن ایک ایسا شخص لا یا جائے گاجس کے ننا نوے دفایر (رجٹر) گنا ہوں سے بھرے

ہول گے اور ان کی لمبائی حدِ نظر تک ہوگی پھر الله عَزَّوجَلُّ اس سے فر مائے گا: کیا تو اس میں سے کسی

کا انکارکرتا ہے؟ کیا میر مے کافظ فرشتوں نے تچھ پر کوئی ظلم کیا ہے؟ وہ عرض کرے گانہیں مولا، پھر

رب ارشاد فر مائے گا: کیا تیرے پاس کوئی عذر ہے؟ وہ عرض کرے گا: اے میرے ربّ! میرے پاس

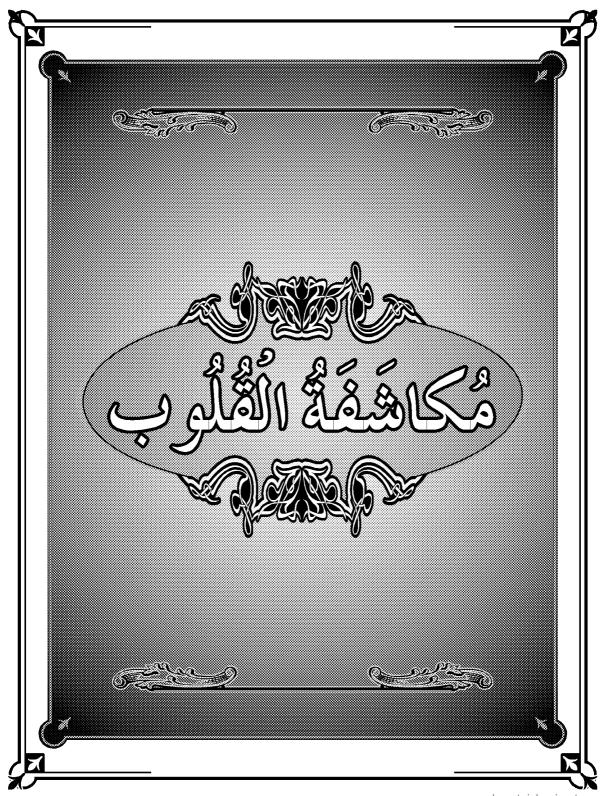
کوئی عذر بھی نہیں، پھر الله عَزَّوجَلُّ ارشاد فر مائے گا: کیوں نہیں!! تیری ایک نیکی ہمارے پاس موجود

ہے، اور آج تچھ پر کوئی ظلم نہیں کیا جائے گا اس وقت ایک پر چہ نکا لا جائے گا جس میں:

" اُشْھِ کَ اَنْ لَا اِللهُ اِلّٰ اللّٰهِ وَ اَشْھَ کَ اَنْ مُحمدًا عَبْدَهُ وَ وَسُولُهُ "

" اُشْھ کَ اَنْ لَا اِللّٰهِ اِلّٰ اللّٰہ وَ اَشْھَ کَ اَنْ مُحمدًا عَبْدَهُ وَ وَسُولُهُ "

کھاہوگا (جے اس نے خلوص دل کے ساتھ پڑھاہوگا) اس پر چہکومیزان میں رکھاجائے گا، وہ عرض کر بے گا: یااللہ عَرَّوَجَدًّ! ننا نو بے دفتر ، جو گناہوں سے پُر ہیں ان کے مقابلے میں اس ایک پر چے کی ہھلا کیا حقیقت ہے! اس پر الله عَرَّوجَدًّ ارشا دفر مائے گا: بے شک تجھ پرظلم نہیں کیا جائے گا پھروہ پر چہ ایک پلڑ بے میں اور ننا نو بے دفتر دوسر بے پلڑ بے میں رکھے جا کیں گے۔ تو یہ (پر چے والا) پلڑ ابھاری ہوجائے گا کیونکہ اللہ عَرَّوجَدًّ کے نام مبارک کے برابر کوئی چیز نہیں ہوسکتی ، وہ سب سے بھاری ہے۔ رسن الترمذی ، کتاب الایمان ، باب ماجاء فیمن یموت…الخ،الحدیث:۲۶،۲۶،۶۰ مصر ۲۹)



اب (1)

خوف و خشيت

آ قائے نامدار صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر مايا: الله مَّبَارَك وتعالی نے ایک فرشتہ پيدا کیا جس کے دونوں بازووں کا درمیانی فاصلہ شرق و مغرب کو گھیر ہے ہوئے ہے، اس کا سرز برعرش ہے اور دونوں پاؤں تختُ الثَّرِی میں ہیں، رُوئے زمین پر آ باد خُلُق کے برابراس کے پَر ہیں، میری اُمت میں سے جب کوئی مردیا عورت مجھ پر دُرود بھیجتا ہے تواس فرشتے کو اِذْنِ اللّٰی ہوتا ہے کہ وہ عرش کے نیچ بحرنور میں غوطہ زَن ہوتو وہ غوطہ لگا تا ہے، جب با ہرنکل کروہ اپنے بازو (پر) جھاڑتا ہے تو اس کے پروں سے قطرات ٹیکتے ہیں، ذاتِ باری تعالی ہر قطرے سے ایک فرشتہ پیدا کرتی ہے جو قیامت تک اس کے لئے دُعائے مغفرت کرتا ہے۔ ایک دانا کا قول ہے کہ جسم کی سلامتی کم کھانے میں ہے اور رُوح کی بقا کم گنا ہوں میں ہے اور اِیمان کی سلامتی حضور نبی کریم رَوَف رحیم صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم پُرصَافُو ہو سلام پڑھنے میں ہے۔

ارشادِخداوندی ہے:

اے ایمان والواللہ سے ڈرو۔

يَاكِيُّهَا الَّذِينَ امَنُوااتَّقُوااللهَ

یعن قلب میں خوف خدا پیدا کرواوراس کی اِطاعت وفر ما نبرداری کرو۔

اورانسان دیکھے کہ آئندہ کے لیے آ گے کیا بھیجا۔

وَلْتَنْظُرُنَفُسُمَّاقَتَّ مَثَالِغَبٍ (3)

مطلب بیہ کے روزِ جزاء کے لئے کیاعمل کیا۔مفہوم اس کا بیہ ہے کہ صدقہ کرواوراَ عمالِ صالحہ کروتا کہ رُسٹخیز کے دن ⁽⁴⁾ان کا اَجْر پا وَاورا پنے رب سے ڈرتے رہو،اللّٰہ تعالیٰ تمہاری ہراچھی اور بُری بات کوجا نتا ہے۔

قیامت کے دن فرشتے ، زمین ، فلگ ، رَوز وشب تمام گواہی دیں گے کہ آ دم زادے نے بیکا م بھلائی کا کیایا برائی کا ، اِطاعت و تابعداری کی یا نافر مانی حتی کہانسان کے اپنے اُعضاء بھی اس کے خلاف گواہی دیں گے ، ایمانداراور

^{1 ----} بشيرالقارى بشرح صحيح البخارى ، ص ١٥

الحشر: ۱۸: الحضر: ۱۸:

^{3}توجمهٔ كنز الايمان: اور برجان و كي كيكل ك ليكيا آ كي بيجا - (ب٢٨،الحشر: ١٨) 4 (رُـَن ـ ثـ ـ ـ ـ ـ ز) قيامت كون

مُثِقَى ویر ہیز گارانسان کے حق میں زمین گواہی دے گی ، چنانچہ زمین یوں کہے گی :اس انسان نے میری پیچھ پرنماز پڑھی ، رَوزه رکھا، حج کیا، جہاد کیا۔ بین کرزاہدو میں شخص شاداں وفرحاں ہوگااور کا فرونا فرمان کےخلاف زمین گواہی دیتے ہوئے یوں کیے گی:اس نے میری پیٹھ پرشرک کیا، زِ نا کیا،شراب بی اورحرام کھایااباس کے لئے ہلاکت وہریادی ہے،اگر أَدْحَمُ الرَّاحِمِين نے اس برکر امحاسبہ کیا۔ صاحب ایمان وہ ہے جوجسم کے تمام اعضاء کے ساتھ الله تعالی سے ڈرر کھتا موجبيها كه فقيه أبُواللَّيْث دَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه نِه فرمايا: سات باتوں ميں الله تعالىٰ كِخوف كابية چل جاتا ہے:

﴿ 1 ﴾....اس كى زبان غَلَط بياني ،غيبت ، چُغْلى ،تهمت اورفضول بولنے سے بچی ہواور الله تعالیٰ كا ذِكر كرنے ، تلاوت کلام پاک کرنے اور دینی علوم سکھنے میں لگی ہو۔

﴿2﴾اس کے دِل سے عَداوت، بہتان اور مسلمان بھائیوں کا حَسَد نکل جائے کیونکہ حَسَد نیکیوں کو جاتا ہے جبيها كفرمان مصطفوى ب: "ألْحَسَنُ يَأْحُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَأْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ ." حدنيكيول كوكهاجا تاب جيسة آ کٹری کو کھا جاتی ہے۔

جا ننا چاہئے کہ حسد دِل کی رَ ذِیلِ ترین ⁽²⁾ بیار بوں میں سے ایک بیاری ہےاور دل کی بیار بوں کا دَر ماں صرف علم عمل ہے ہی ہوسکتا ہے۔

﴿3﴾اس کی نَظَرِحرام کھانے پینے ہے اور حرام لباس وغیرہ ہے محفوظ رہے اور دنیا کی طرف لالح کی نظر سے نہ دیکھے بلکہ صرف عبرت پکڑنے کے لئے اس کی طرف دیکھے اور حرام پر تو بھی اس کی نگاہ بھی نہ بڑے جسیا کہ نبی کریم صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِفرمايا: "مَنْ مَّلاً عَيْنَهُ مِنَ الْحَرَام مَلاَّ اللهُ تَعَالَى يَوْمَ الْقِيلَةِ عَيْنَهُ مِنَ النَّارِ" (3)جس نا بَيْ آكھ حرام سے بھری الله تعالیٰ روزِ قیامت اس کی آئکھ کوآگ سے بھر دے گا۔

﴿4﴾اس كے پيٹ ميں حرام غذانہ جائے، بيكنا وكبيره ہے، حضور نبى كريم صَلَّى اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم في مايا:

" إِذَا وَقَعَتْ لُقْمَةٌ فِينَ الْحَرَامِ فِي بَطْنِ ابْنِ ادْمَ لَعَنَهٌ كُلُّ مَلَكٍ فِي الْكَرْضِ وَالسَّمَآءِ مَا دَامَتْ تِلْكَ الْلُقْمَةُ فِيْ بَطْنِهِ وَإِنْ مَّاتَ عَلَى تِلْكَ الْحَالَةِ فَمَأْوَاهُ جَهَنَّهُ." أَن جمه: بن آ دم كييك من جب حرام كالقمدير الوزمين و

2....انتنائی بری

1ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحسد، ٤٧٣/٤، الحديث ٢١٠٠

3 تذكرة الموضوعات للفتني، ص١٨٢

آسان کا ہر فرشتہ اس پرلعنت کریگا جب تک کہ وہ لقمہ اس کے پیٹ میں رہے گا اور اگر اس حالت میں مرے گا تو اس کا ٹھکا نہ جہنم ہوگا۔

﴿ 5﴾جانب حرام دَسْت دَراز نه کرے بلکه حَتَّى الْمَقْدُ وراس کا ہاتھ اِطاعت الٰہی کی طرف بڑھے۔

حضرت گفتِ الْاَحْبَاردَضِیَ اللَّهُ عَنْهُ ہے روایت ہے کہ اللَّه تعالیٰ نے سنرموتی (زَبَرَجَد) کامحل پیدافر مایا،اس میں سَرَّ ہنرار گھر ہیں سَرَّ ہنرار کمرے ہیں،اس میں وہی داخل ہوگا جس کے سامنے حرام پیش کیا جائے اور وہ صرف خوف اللّٰہی کی وجہ ہے اسے چھوڑ دے۔

﴿6﴾اس کا قدم الله تعالیٰ کی نافر مانی میں نہ چلے بلکہ صرف اسکی اِطاعت وخوشنودی میں رہے، عالموں اور نیکوں کی طرف حرکت کرے۔

﴿7﴾عبادت ومجائدَه ،انسان كوچائي كه خالص الله تعالى كے لئے عبادت كرے، ريا كارى ومنافقت سے بچتار ہے، اگراييا كيا توبيان لوگوں ميں شامل ہوگيا جن كے متعلق ارشاد خداوندى ہے:

اور تیرے رب کے نز دیک آخرت ڈرنے والوں کیلئے ہے۔

وَالْأَخِرَةُ عِنْكَ مَ بِكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۞

دوسری آیت میں بون ارشادہے:

بیشک میتی امن والےمقام میں ہوں گے۔

⁽²⁾ اِتَّالُمُتَّقِيُّنَ فِيُمَقَامِراً مِيْنٍ ۞

گویا خداوند تعالیٰ بیفر مار ہاہے کہ یہی لوگ (مُتِقی و پر ہیزگار) قیامت کے دن دوز خ سے چھٹکارا پائیں گے اور ایماندار آدمی کو چاہئے کہ وہ بیم ورّجاء کے درمیان رہے، وہی اللّه تعالیٰ کی رحمت کا امید وار ہوگا اور اس سے مایوس و ناامید نہیں رہے گا ،اللّٰہ تعالیٰ نے فر مایا:

الله تعالى كى رحمت سے نااميد نه ہو۔

لاتَقْنَطُوْامِنُ مَّ حُمَةِ اللهِ (3)

پس الله تعالی کی عبادت کرے، برائی کے کاموں سے مندموڑ لے اور الله تعالی کی طرف ہمیتن متوجہ ہو۔

☆.....☆.....☆.....☆

-ترجمهٔ کنز الایمان: اورآ خرت تمهار ررب کے پاس پر بیزگاروں کے لیے ہے۔ (به ۲۰۱ از حرف: ۵۰)
 - 2توجمه كنو الايمان: بشك وروال امان كى جلد مين بين (ب ٢٥، الد حان: ١٥)
 - الزمر: ۵۳) كارتمت سے نا أميدنه بورب ۲۶ الزمر: ۵۳) كارتمت سے نا أميدنه بورب ۲۶ الزمر: ۵۳)

[2]

خوفِ اللَّهِي }

حضرت عَلَّا مَمَ اَبُواللَّيْثُ رَحُمَهُ اللهِ عَلَيْه كَهِ بِين كَرِسَاتُو بِن آسَان بِرالله كَالِيه فِين كَرانبِين الله تعالى لله تعالى عنداب سے اِنتهائی خوفز دہ بین۔ قیامت كے دن جب فے جب سے بيدا كيا ہے، برابر سجدہ ميں بين اور الله تعالى كعذاب سے اِنتهائی خوفز دہ بین۔ قیامت كے دن جب وہ سجدہ سے سراٹھا كين گئو كہيں گے: " في الله تعالى كا عَبَدُنك مَا عَبَدُنك مَا عَبَدُنك مَا عَبَدُنك مَا عَبَدُنك مَا عَبَدُنك عَلى عَبِدَ الله تو ياك ہے، ہم تيرى كماحقه عبادت نہيں كرسے فرمان اللي ہے: (1)

وہ فرشتے اپنے رب سے ڈرتے ہیں اور جس چیز کا انہیں تھم دیا گیا ہے وہی کرتے ہیں اور ایک لمحہ بھی میری نافر مانی میں نہیں گز ارتے۔ يَخَافُونَ مَ بَيَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ

مَايُؤُمَرُونَ ﴿

رسولِ اكرم صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَ ارشا وفر ما يا: "إِذَا اقْشَعَرَ جَسَلُ الْعَبْدِي مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ تَعَالَى تَحَا تَتْ عَنْهُ وَوَدُونِ مَنْ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَا يَتَحَا تَتْ عَنْهُ وَوَدُونِ مَنْ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللَّهِ عَالَى تَحَا تَتْ عَنْهُ وَوَدُونِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَالَى تَحَالَى تَحَا تَتُ عَنْهُ وَوَدُونِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَالَى تَحَالَى تَحَالَى عَنْهُ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللَّهُ عَلَيْهِ وَمِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَمَا لَكُونُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَلَيْ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ وَلَوْلِهُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ وَلَا عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَلَا عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللللْمُعُلِي اللللْمُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّه

ایک نوجوان ایک عورت کی محبت میں مبتلا ہو گیا، وہ عورت کسی قافلہ کے ساتھ باہر کے سفر پر روانہ ہو گئی، جوان کو جب معلوم ہوا تو وہ بھی قافلہ کے ساتھ چل پڑا۔ جب قافلہ جنگل میں پہنچا تو رات ہو گئی، رات کو انہوں نے وہیں پڑاؤ
کیا، جب سب لوگ سو گئے تو وہ نوجوان جیکے سے اس عورت کے پاس پہنچا اور کہنے لگا: میں تجھ سے بے اِنہَا محبَّت کرتا
ہوں اور اس کئے میں قافلہ کے ساتھ آرہا ہوں عورت بولی: جا کر دیکھوکوئی جاگ تو نہیں رہا ہے؟ جوان نے فرطِ مَسَرَّت

- سبری بیت بحدہ ہے اور آبیت سجدہ پڑھنے یا سننے سے بحدہ واجب ہوجا تا ہے خواہ سنایا پڑھنا بالقصد ہویا بلاقصد اور اس طرح ترجمہ کا حکم ہے علمیدہ
 - 2توجمه کنز الایمان: ایناویراین رب (عزوجل) کا خوف کرتے ہیں اورونی کرتے ہیں جوانہیں حکم ہو۔ (ب ؟ ۱،النحل: ٥٠)
 - الحديث ٩١/١ بتغير
 الحديث ٩٠٣ بتغير

سے سارے قافلہ کا چکر لگایا اور واپس آ کر کھنے لگا کہ سب لوگ غافل پڑے سور ہے ہیں۔ عورت نے پوچھا: الله تعالی کے بارے میں تیراکیا خیال ہے؟ کیا وہ بھی سور ہاہے! جوان بولا: الله تونہ بھی سوتا ہے نہ بی اسے بھی اُونکھ آتی ہے۔ تب عورت بولی: لوگ سوگئے تو کیا ہوا! الله تو جا گ رہا ہے، ہیں دیکھ رہا ہے، اس سے ڈرنا ہم پر فرض ہے۔ جوان نے جو نہی یہ بات شنی ، خوف خدا سے لرزگیا اور بُرے اِرادے سے تائب ہو کر گھر واپس چلاگیا۔ کہتے ہیں کہ جب وہ جوان مُرا تو کسی نے اسے خواب میں دیکھ کر بوچھا: ساؤ! کیا گزری؟ جوان نے جو اب دیا: میں نے الله تعالی کے خوف سے ایک گناہ کوچھوڑ اتھا، الله تعالی نے اس سبب سے میرے تمام گناہوں کو بخش دیا۔

"مُجْمَعُ اللَّطاؤِف "میں ہے کہ بنی اِسرائیل میں ایک کثیر العیال عابدتھا، اسے تنگدتی نے گھیرلیا، جب بہت پریثان ہوا تو اپنی عورت سے کہا جاؤ! کس سے بچھ ما نگ کر لاؤ عورت نے ایک تاجر کے یہاں جا کر کھانے کا سوال کیا۔ تاجر نے کہا اگرتم میری آرز و پوری کر دو تو جو چا ہولے سکتی ہو عورت بیچاری چپ چاپ خالی ہاتھ گھر لوٹ آئی۔ بیک بچوں نے جب ماں کو خالی ہاتھ آتے و یکھا تو جموک سے چلانے لگے اور کہنے لگے: انّی! ہم بھوک سے مررہے ہیں بیس کچھ کھانے کو دو عورت دوبارہ اس تا جرکے ہاں لوٹ گئی اور کھانے کا سوال کیا، تاجر نے بھروہی بات کی جو پہلے بہد چکا تھا۔ عورت دوبارہ اس تاجر کے ہاں لوٹ گئی اور کھانے کا سوال کیا، تاجر نے بھروہی بات کی جو پہلے کہہ چکا تھا۔ عورت دوبارہ اس تاجر بولا جب تم اتن گرتی ہو؟ اس نے کہا: میں اس رَبِّ کم یزل کے خوف سے لرزاں ہوں جس نے ہمیں بیدا کیا۔ جب تا جر بولا جب تم اتن شکد سی اور عُشرَت میں بھی خوف خدار کھتی ہوتو مجھے بھی اللّٰہ کے عذا ب سے ڈرنا جا ہے ، یہ کہا اور عورت کو بہت سامال و منال دے کرعزت کے ساتھ دخصت کردیا۔

الله تعالی نے پغیروقت موسی عَلیْهِ السَّلام پروتی بھیجی کے فلاں بن فلاں کے پاس جاؤاورا سے میراسلام کہدو اور کہنا کہ میں نے اس کے تمام گناہوں کو معاف کردیا ہے۔ موسی عَلیْهِ السَّلام حَسْبِ عَمْم اللّٰہ اس تا جرکے پاس آئے اور پوچھا: کیا تم نے کوئی عظیم نیکی انجام دی ہے جس کی وجہ سے الله تعالی نے تمہار ہے تمام گناہوں کو معاف کردیا ہے۔ جواب میں تا جرنے نہ کورہ بالا سارا واقعہ کہ سنایا۔

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں: فرمانِ اللی ہے:''میں اپنے کسی بندہ پر دوخوف اور دواَمُن جَمْع نہیں کرتا، جو شخص د نیا میں میرے عذاب سے شخص د نیا میں میرے عذاب سے شخص د نیا میں اسے آخرت میں اسے آخرت میں خوفون کر دونگا کیکن جو د نیا میں میرے عذاب سے بہنوفون دہ کروں گا۔'' (اس پر عذاب نازل کرونگا)

الله تعالیٰ کاارشادہے:

تم لوگوں سے نہیں ، مجھ سے ڈرو۔

(2) فَلَاتَخُشُواالنَّاسَوَاخُشُونِ

ایک اورآیت میں ہے:

اگرتم مومن ہوتو لوگوں ہے ہیں، مجھ سے ڈرو۔

فَلَاتَخَافُوْهُمُوَخَافُوْنِ اِنُكُنْتُمُمُّوُّومِنِيْنَ ۞

حضرتِ عُمُردَضِیَ اللّٰهُ عَنُه جب قر آنِ مجید کی کوئی آیت سنتے تو خوف سے بیہوش ہوجاتے ،ایک دن ایک تکا ہاتھ میں لے کرکہا کاش! میں ایک تکا ہوتا! کوئی قابلِ ذکر چیز نہ ہوتا! کاش مجھے میری ماں نہ جنتی! اور خوف خداسے آپ اتنارویا کرتے تھے کہ آپ کے چیرے پر آنسوؤں کے بہنے کی وجہ سے دوسیاہ نشان پڑ گئے تھے۔

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نَے فرمایا: "لا يکام النَّار مَنْ بسلى مِنْ خَشْيَةِ اللهِ حَتَّى يَعُود اللَّبَ فِي الضَّرْعِ "⁽⁴⁾ ترجمہ: جو خض خوف خدا سے روتا ہے وہ جہنم میں ہر گر داخل نہیں ہوگا ای طرح جیسے کہ دود ھدد بارہ اپنے تشنوں میں نہیں جاتا۔

" دَقَائِقُ الْاَخْبَار" میں ہے کہ قیامت کے دن ایک خص کولا یا جائے گا، جب اس کے اعمال تو لے جائیں گے تو برائیوں کا پلڑ ابھاری ہوجائے گا چنا نچہ اسے جہنم میں ڈالنے کا تھم ملے گا، اس وقت اس کی بلکوں کا ایک بال الله کی بارگاہ میں عرض کرے گا کہ اے ربّ ذوالجلال! تیرے رسول صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا تھا جوالله تعالی کے خوف سے روتا ہے۔ الله تعالی اس پرجہنم کی آگرام کردیتا ہے اور میں تیرے خوف سے رویا تھا۔ الله تعالی کا دریائے رحمت جوش میں ہے۔ الله تعالی اس پرجہنم کی آگرام کردیتا ہے اور میں تیرے خوف سے رویا تھا۔ الله تعالی کا دریائے رحمت جوش میں

^{•} شعب الايمان ، الحادي عشرمن شعب الايمان ، باب في الخوف من الله تعالىٰ ، ٢/١ ، الحديث ٧٧٧

^{2}ترجمه كنز الايمان: تولوگول مغوف نه كرواور مجهسة رور (ب ، المائده : ٤٤)

^{3}تر جمه كنز الايمان: توان سے ندورواور محصے ورواگرايمان ركھتے ہو۔ (ب٤ ال عمران: ١٧٥)

^{4.....}ترمذي، كتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء في فضل الغبار...الخ، ٢٣٦/٣، الحديث ١٦٣٩

آئے گااوراس شخص کوایک اشکبار بال کے بدلے جہنم سے بچالیا جائے گا،اس وقت حضرتِ جبرائیل عَلیْهِ السَّلام پکاریں گے'' فلال بن فلال ایک بال کے بدلے نجات پا گیا۔''

"بِكَايَةُ الهِكَايَة " ميں ہے كہ قيامت كەن جب جہنم كولايا جائے گاتواس سے بيب ناك آوازين كليس گ جس كى وجہ سے لوگ اس پر سے گزرنے ميں گھبرائيں گے، فرمانِ الله ہے: ' وَقَدْ اِي كُلُّ أُصَّةٍ جَاثِيَةً مُسْكُلُ أُصَّةٍ تُكُنْ عَيَى الى كِتْجِمَاء ''(1)

جب اوگ جہنم کے قریب آئیں گے تواس سے خت گرمی اور خوفناک آوازیں سنیں گے جو پانچ سوسال کے سنرکی دوری سے سنائی ویت ہوں گی ، جب ہر نی فضی فسی اور حضور صَلَّی الله عَلَيْهِ وَسَلَّم اُمْتی اُمْتی کہدر ہے ہوں گے اس وقت جہنم سے ایک نہایت ہی بلند آگ باہر نکلے گی اور حضور صَلَّی الله عَلَيْهِ وَسَلَّم کی اُمت کی طرف بڑھے گی ، آپ کی اُمت اس کی مُدافعت میں کہے گی: ''اے آگ! مجھے نمازیوں ، صدقہ دینے والوں ، روزہ داروں اور خوف خدار کھنے والوں کا واسطہ ، والیس چلی جا!'' مگر آگ برابر بڑھتی چلی جائے گی ، جب حضر تے جبرائیل عَلَیْهِ السَّلام میہ کہتے ہوئے کہ جہنم کی آگ امت مُحد رصلًی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم ، کی طرف بڑھر ہی ہے ، آپ کی خدمت میں پانی کا ایک بیالہ پیش کریں گے اور عرض کریں گے: اے الله کے نبی ااس سے آگ پر چھینے ماریئے ۔ آپ آگ پر پانی کے چھینے ماریں گے: حضور! ورا مُحر کی ، اس وقت آپ صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم جبریل سے اس پانی کے متعلق ہو چھیں گے ، جرائیل کہیں گے : حضور! یہ خوف خدا سے رونے والے آپ کے گھارا مُعتوں کے آ نسو تھے ، مجھے تکم دیا گیا کہ میں یہ پانی آپ کی خدمت میں بیش کروں اور آپ اس سے جہنم کی آگ و بجھادیں۔ (2)

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم دعاما نگا کرتے تھے:اےالله! مجھےالیی آئکھیں عطافر ماجو تیرے خوف سے رونے (3) والی ہوں۔

السنتر جمه کنز الایمان: اورتم برگروه کودیکھو گےزانو کے بل گرے ہوئے برگروہ اپنے نامهٔ اعمال کی طرف بلایا جائے گا۔ دے ۲۰، الحاثیة: ۲۸،

^{2}روح البيان، الاعراف، تحت الآية: ٣٨٥/٣

^{3} جامع الاحاديث ، ١١٥/٦ ، الحديث ٤٨٢٣

اعینی هلا تبکیان علی ذنبی تناثر عمری من یدی و لا ادری

💨ا ہے میری دونوں آئکھوں! میرے گناہوں پر کیون نہیں روتی ہو؟ میری عمرضائع ہوگئی اور مجھے معلوم بھی نہ ہوا۔

حدیث شریف میں ہے:کوئی ایسا بندۂ مومن نہیں جس کی آئکھوں سے خوف خدا سے کھی کے پُر کے برابر آنسو بہے اوراس کی گرمی اس کے چہرے پر پہنچے اورا سے بھی جہنم کی آگ پُھوئے۔ (1)

حضرت محمد بن المُنذِردَ حُمَةُ اللَّهِ عَلَيْه جب خوف خدا سے روتے تواپنی داڑھی اور چرے پرآنسومکل کرتے اور کہتے، میں نے سنا ہے کہ وجود کے جس حصہ پرآنسولگ جائیں گے اسے جہنم کی آگنہیں چھوئے گی۔

ہرمون کے لئے ضروری ہے کہ وہ عذابِ الہی سے ڈرتار ہے اور اپنے آپ کوخواہشاتِ نفسانی سے روکتار ہے، ا

فرمانِ الہی ہے:

نْيَا ﴿ فَإِنَّ الْجَحِيْمُ لِي جَس سى نے نافر مانى كى اور دنيا كى زندگى كوسب كچرجانا اسكا

ٹھکانہ جہنم ہےاور جواینے رب کے سامنے (کھڑے رہنے) مقام سے

(2) ڈرااوراپے نفس کوخواہشات ہےروک دیا تو آسکی بناہ گاہ جنت ہے۔ فَامًا مَنْ طَغَى فَى وَاتْدَ الْحَلِوةَ الدُّنْيَا فَ فَإِنَّ الْجَحِيمَ

هِىَ الْهَ أَوٰى أَنْ وَ اَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى

النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰي أَفَ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاوِي ٥

جوانسان عذابِ الٰہی سے بچنا چاہے اور ثواب ورحمت کا امید وار ہو، اسے چاہئے کہ دنیاوی مصائب پرصَبْر کرے اللّٰہ کی عبادت کرتارہے اور گنا ہول سے بچتارہے۔

" زُهْرُ الرِّياض" میں ایک حدیث ہے کہ جب جنتی جنت میں داخل ہوں گے تو فر شتے ان کے سامنے طرح طرح کی نعمتیں پیش کریں گے، ان کے لئے فرش بچھا ئیں گے، منبرر کھے جا ئیں گے اور انہیں مختلف قسم کے کھانے اور پھل پیش کئے جا ئیں گے، اس وقت جنتی جیران بیٹھے ہوں گے، الله تعالی فرمائے گا: اے میرے بندو! جیران کیوں ہو؟ یہ بہشث جائے جیرت نہیں ہے، اس وقت مومن عرض کریں گے: بار الله! تو نے ایک وعدہ کیا تھا جس کا وقت آ پہنچا

^{1}ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحزن والبكاء ، ٤٦٧/٤ ، الحديث ٤١٩٧ (بتغير قليل)

ےتو جمه کنز الایمان: تو وہ جس نے سرکشی کی اور دنیا کی زندگی کوتر جیجے دی تو بے شک جہنم ہی اس کاٹھ کا نا ہے اور وہ جواپنے رب کے حضور کھڑے ہونے سے ڈرااورنفس کوخواہش سے رو کا تو بے شک جنت ہی ٹھ کا ناہے۔ (پ ۳۰ النازعات: ۳۷ - ۲۱)

^{3}زهر الرياض

ہے، تب فرشتوں کو حکم الہی ہوگا کہ ان کے چبروں سے پردے اٹھالو! فرشتے عرض کریں گے: یہ تیرادیدار کیسے کریں گے حالانکہ یہ کنہگار تھے۔اس دم فرمانِ الہی ہوگا: تم حجاب اٹھادو! یہ ذِکر کرنے والے، سجدہ کرنے والے اور میرے خوف سے رونے والے تھے اور میرے دیدار کے امید وار تھے۔اس وقت پردے اٹھادیئے جائیں گے اور جنتی اللہ کا دیدار ہوتے ہی سجدہ میں گرجائیں گے، فرمانِ الہی ہوگا: سراٹھالویہ جنت دار عمل نہیں دار جزاء ہے اور وہ اپنے رب کو بے کیف دیکھیں گے، رب فرمائے گا: "سکلام عکی تھی گھٹ دینے میں گے میں گے، در بفرمائی ہوں، کیا تم جھے دراضی ہو؟

جنتی عرض کریں گے:اہے ہمارے رب! ہم کیے راضی نہیں ہوں گے حالانکہ تو نے ہمیں وہ نعمتیں دیں جنہیں نہیں آ نکھ نے دیکھا، نہ کسی کان نے سُنا اور نہ ہی کسی دل میں ان کا تصور گزرااور یہی اس فرمانِ الله کامقصود ہے کہ اللّٰه ان سے راضی ہواور وہ اللّٰہ سے راضی ہوئے اور "سکلم ﷺ تَوْلَا قِنْ مَنْ بِسَرَّ حِیْمِ ہے"۔

.....☆.....☆......☆

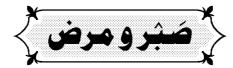
جنت میں گھو منے والا

حضرت سِيِّدُ ناامام مُسلِم بن حجاج قُشَير ي عليه وَخمةُ اللهِ القَوى صحيح مسلم مين تقل كرتے ہيں، تاجدار مدينه، قرار قلب وسينه، فيض تخيينه، صاحب مُعطَّر پسينه، باعث نزول سينه حَسلَى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّم كافر مانِ باقرينه ہے:" ميں نے ايک شخص كو جنت ميں گھومتے ہوئے ديكھا كہ جدھر جا ہتا ہے نكل جا تا ہے كيوں كه أس نے اس دنيا ميں ایک ایسے دَرَخت كوراستے سے كائ ديا تھا جو كہ لوگوں كو تكليف ديتا تھا۔"

(صَحِيح مُسلِم، ص ١٤١٠ الحديث٢٦١٧)

•ترجمه كنز الايمان: ان پرسلام جوگامبر بان رب كافر ما يا جوا- (ب ٢٠ ، سَن ٥٨)

(3 <u>-!</u>)



جو خص بیرچا ہتا ہے کہ وہ عذاب الہی سے جُھوٹ جائے ، تواب ورحت کو پالے اور جنتی ہوجائے اسے جاہے کہ وہ اپنے کہ وہ اپنی ہے:

کہ وہ اپنے آپ کو دنیوی خواہشات سے رو کے اور دنیا کے آلام ومصائب پر صَبْر کرے، چنا نچے فرمانِ الہی ہے:

وَاللّٰهُ يُرْجِبُ الصّٰٰ بِرِیْنَ ۞ (1)

اللّٰه صَبْر کرنے والوں کو محبوب رکھتا ہے۔

صَبْرِی کَیْ قَسْمیں ہیں:اللّٰہ کی اِطاعت پرِصَبْر کرنا،حرام چیزوں ہے رُک جانا، تکالیف پرصبر کرنااور پہلے صَدْمہ پرصَبْر کرناوغیبرہ۔

جو خص عبادت الله تعالی تین سوایس جو خص عبادت الله تعالی تین سوایس جو خص عبادت الله تعالی تین سوایس در جات عطا کرے گاجن میں ہر دَ رَجِد کا فاصِلَہ زمین و آسان کے فاصِلَہ کے برابر ہوگا، جوالله تعالی کی حرام کی ہوئی چیزوں سے صَبْر کرتا ہے اسے چھ سودرَ جات عطا ہوں گے جن میں ہر دَرَجِد کا فاصِلَہ ساتویں آسان سے ساتویں زمین کے فاصِلَہ کے برابر ہوگا، جو مصائب پر صَبْر کرتا ہے اس کوسات سو در جات عطا ہوں گے، ہر درجہ کا فاصلہ تحک الشّری سے عرشِ علی کے برابر ہوگا۔

حضرتِ زَكْرِ تَاعَلَيْهِ السَّلام جب يہود كے ملكى وجه سے شہر سے باہر نكلے كه يس روپوش ہوجا كيں اور يہودائن كے يتجھے بھا گے تو آپ نے قريب ايك درخت ديكھ كراس سے كہا: اے درخت! مجھے اپنے اندر چھپالے۔ درخت پر گيا اور آپ اس ميں رُوپوش ہو گئے۔ جب يہود وہاں پہنچ تو شيطان نے انہيں سارى بات بتلا كركہا: اس درخت كو آرى سے دوگلا ہے كردو، چنانچ انہوں نے ايساہى كيا اور بيصرف اس لئے ہوا كہ حضرتِ زكر ياعَلَيْهِ السَّلام نے ذاتِ بارى كى بجائے

1توجمه كنز الايمان: اورصروالالله كومحبوب بين - (ب٤٠ ال عمران: ١٤٦)

مظاہر قدرتِ باری سے پناہ طلب کی تھی، آپ نے اپنے وجود کومصیبت میں ڈالا اور آپ کے دوگئڑ ہے کرد یئے گئے۔
حدیث قُدشی میں ہے الله تعالیٰ فرما تا ہے جب میرا کوئی بندہ مصائب میں مجھ سے سوال کرتا ہے، میں اسے
ما تگنے سے پہلے دید ویتا ہوں اور اس کی دُعا کو مقبول کر لیتا ہوں، اور جو بندہ مصائب کے وقت میری (1) مخلوق سے مدد
ما نگتا ہے میں اس برآسانوں کے دروازے بند کردیتا ہوں۔ (2)

کہتے ہیں کہ جب آری حضرتِ ذِکَرِ تَاعَدُنهِ السَّلام کے دماغ تک پیچی تو آپ نے آہ کی ، اِرشادِ اللی ہوا: اے ذَکریا مصائب پر پہلے صَبْر کیوں نہیں کیا جو اَ ب فریاد کرتے ہو۔ اگر دوبارہ آہ منہ سے نکالی تو وَفْرِ صابِرین سے تہارا نام خارج (3) کردیا جائے گا تب حضرت نے اپنے ہونٹوں کو بند کرلیا، چِر کر دوٹکڑ ہے ہوگئے مگر پھراُ ف تک نہ کی۔ اسلئے ہم تقلمند کیلئے ضروری ہے کہ وہ مصائب پر صَبْر کرے اور حرف شکوہ زبان پر نہ لائے تاکہ دنیا اور آخرت کے عذاب سے نجات حاصل کرلے کیونکہ اس دنیا میں مصائب انبیاء عَلَیٰهِمُ السَّلام اور اولیا عاللہ ہی پرزیادہ واردہ وتے ہیں۔

حضرت ِجُنیَد بَغْدادی دَحْمَهُ اللهِ عَلیْه کا قول ہے: مَصابِب عارِفین کا چراغ، مریدین کی بیداری، مومن کی اِصلاح

اور غافلوں کے لئے ہلاکت ہیں، مومن مَصَابِب برِصَبْر کئے بغیرایمان کی حَلاوَت کو پانہیں سکتا۔ حدیث شریف میں ہے:

- 🚹 و نیا دار مخلوق سے یارب کو چھوڑ کرا پنے ماتحت سے اوراسی طرح کسی کوخدا سمجھ کر مدولیتا ہے۔
- و الله تعرب میں کوئی خوبی محبوب سے جدانہیں چاہتا، اسی طرح ماں باپ اپنے محبوب فرزندمریض کو تندرست و یکھنا پسند کرتے ہیں چنا نچہ دوا پلاتے وقت یا پر ہیز کرانے کے سلسلہ میں تکنی الفاظ سے کام لیتے ہیں، دھمکی بھی ویتے ہیں (مثلاً اگرنہ پے گا توہم پولنا بند کرویں گے وغیرہ)

 اسی طرح رب نے اپنے ولی (دوست) میں صبر کی خوبی شہاوت کے وصف کے ساتھ و یکھنا پسند فرمائی اور صبر کی تلقین میں تنمیہ برائے محبت فرمائی، دوسر سے رب نعالی کا ذکر یاعظیہ انسٹا دم سے بیفر مانا کہنا م خارج کردیا جائے گا، مشروط ہے، اس طرح حضور صلی الله عَلَیٰہوَ سَلّم فی اولاد کی نفی میں فرمایا کہ رب کا ولد ہوتا تو میں سب سے پہلے اس کی عبادت کرتا۔

 ت بھی بار ہا فرمایا، مثلاً حضور نے رب تعالیٰ کی اولاد کی نفی میں فرمایا کہ رب کا ولد ہوتا تو میں سب سے پہلے اس کی عبادت کرتا۔

 ت بھی بار ہا فرمایا، مثلاً حضور نے رب تعالیٰ کی اولاد کی نفی میں فرمایا کہ رب کا ولد ہوتا تو میں سب سے پہلے اس کی عبادت کرتا۔

 ت بھی بار ہا فرمایا، مثلاً حضور نے رب تعالیٰ کی اولاد کی نفی میں فرمایا کہ کامل اوصاف کا نبی نے پُنا یا معاد اللّه انبی کی کام کرتا۔
- اس کے آئندہ غیر منصب نبوۃ فعل سے بے علم رہا۔اس واقعہ کا تفصیلی حال'' اوراق غم' میں ملاحظہ فرما ہے۔

جو شخص رات بھر بیارر ہااور مَبْر کرکے الله تعالیٰ کی رضا کاطالب ہوا تو و دشخص گنا ہوں سے ایسے پاک ہوجائے گا جیسے کہ اپنی پیدائش کے وقت تھااس لئے جبتم بیار ہوجاؤ تو عافیت کی تمنا نہ کرو۔ ⁽¹⁾

حضرتِ ضَحَّا ک کہتے ہیں: جُوْحُف چالیس راتوں میں ایک رات میں بھی گرفتارِ رَنِی والم نہ ہوا ہو،الله تعالیٰ کے یہاں اس کے لئے کوئی خیر و بھلائی نہیں ہے۔

حضرتِ مُعَاذِ بن جَبَل دَضِیَ اللَّهُ عَنُه ہے مروی ہے: جب بندہُ مون کسی بیاری میں مبتلا ہوجا تا ہے تواس کے باکیں شانے والے سے کہاجا تا ہے اس کے باکیں شانے والے سے کہاجا تا ہے اس کے نامه والی میں وہ بہترین نیکیاں کھوجواُس سے سرز دہوئی ہیں۔ (2)

حدیث شریف میں ہے: جب کوئی بندہ بیار ہوجاتا ہے تواللہ تعالی اس کی طرف دوفر شتے بھیجتا ہے کہ جاکر دیکھومیر ابندہ کیا کہتا ہے؟ اگر بیار" الْحَدُدُ لِلّٰه "کہتا ہے تو فرشتے اللّٰه کی بارگاہ میں جاکراس کا قول عرض کرتے ہیں، ارشادِ اللّٰہی ہوتا ہے: اگر میں نے اس بندہ کواس بیاری میں موت دے دی تواسے جنت میں داخل کروں گا اور اگر صحت عطا کی تواسے بہتے بھی بہتر پرورش کرنے والا گوشت اورخون دوں گا اور اس کے گنا ہوں کو معاف کردوں گا۔

بنی إسرائیل میں ایک نہایت ہی فاسق و فاجرانسان تھاجوا پنی بدکر داریوں سے بھی بازنہ آتا تھا، اَبلِ شہر جب اس کی بدکاریوں سے بھی بازنہ آتا تھا، اَبلِ شہر جب اس کی بدکاریوں سے عاجز آگئے تواللہ تعالیٰ نے حضرتِ موئ عَدَیهِ السّاکہ می طرف و حی کی کہ بنی اسرائیل کے فلاں شہر میں ایک بدکار جوان رہتا ہے اسے شہر سے نکال دیجئے تاکہ اس کی بدکاریوں کی وجہ سے سارے شہر پر آگ نہ بر سے، حضرتِ موئی عَدَیهِ السّاکہ موہاں تشریف لے گئے اور اسے اس کی بدکاریوں کی وجہ سے سارے شہر پر آگ نہ بر سے، حضرتِ موئی عَدَیهِ السّاکہ موہاں تشریف لے گئے اور اسے اس کی بدکاریوں کی وجہ سے بی دوسری بستی میں چلاگیا۔ پھر فرمانِ اللی ہوا کہ اسے اس بستی سے بھی نکال دیجئے، جب کی بستی سے بھی نکال دیجئے، جب

- ١٦٧٦ الجزء الثالث ، الحديث ١٦٧٦ مطلق الامراض ، ٢٥/٢ ، الجزء الثالث ، الحديث ١٦٧٦
 - ٩٩٤٧ ، الحديث ٩٩٤٧ ، السبعون من شعب الايمان ، باب في الصب...الخ،١٨٨/٧ ، الحديث ٩٩٤٧
- 3 شعب الايمان ، السبعون من شعب الايمان ، باب في الصب...الخ، ١٨٧/٧ ، الحديث ٩٩٤١ بغير قليل)

حضرت ِموسیٰ عَلَیْهِ السَّلام نے اس کواس بستی ہے بھی نکال دیا تواس نے ایک ایسے غار برٹھ کانہ بنایا جہاں نہ کوئی انسان تھا اور نہ ہی کسی چرند پرند کا گزرتھا،قٹر ب وجُوار میں نہ کہیں آبادی تھی اور نہ دور دور تک سبز ے کا کوئی پیتہ تھا۔اس غار میں آ کر وہ جوان بیار ہو گیا،اس کی تیار داری کے لئے کوئی شخص بھی اس کے آس پاس موجود نہ تھا جواس کی خدمت کرتا،وہ ضعف و نا توانی سے زمین برگر برا اور کہنے لگا کاش!اس وفت اگر میری ماں میرے پاس موجود ہوتی تو مجھ پر شفقت کرتی اور میری اس بے سی اور بے بسی پرروتی ،اگرمیر اباب ہوتا تو میری نگہبانی ،نگہداشت اور مددکرتا ،اگرمیری بیوی ہوتی تو میری حِدائی یرروتی،اگرمیرے بیجاس وقت موجود ہوتے تو کہتے،اے ہمارے رب،عاجز، گنہگار، بد کاراور مسافر باپ کو بخش دے جے پہلے تو شہر بدر کیا گیااور پھر دوسری بستی ہے بھی نکال دیا گیا تھااوراب وہ غار میں بھی ہرایک چیز سے ناامید ہوکر دنیا ہے آخرت کی طرف چلاہے اور وہ میرے جنازہ کے بیچھے روتے ہوئے چلتے۔ پھروہ نوجوان کہنے لگا: اے اللہ او تو نے مجھے والدین اور بیوی بچوں سے تو دُور کیا ہے مگرایئے نضل وکرم سے دور نہ کرنا، تو نے میرا دل عزیز وں کی جدائی میں جلایا ہے،اب میرے سرایا کومیرے گناہوں کے سبب جہنم کی آگ میں نے جانا نا،اسی دم اللّٰہ تعالیٰ نے ایک فرشتہ اس کے باپ ہے ہم شکل بنا کر،ایک حورکواس کی ماں اورایک حورکواس کی ہیوی کی ہم شکل بنا کراورغلمانِ جنت کواس کے بچوں کے رُوپ میں بھیجے دیا، پیسباس کے قریب آ کر بیٹھ گئے اوراس کی شدت تکلیف پر تأسف (انسوس) اور آ ہوزاری کرنے لگے۔ جوان انہیں دیکھ کر بہت خوش ہوااوراسی مَسَرَّت میں اس کا انتقال ہو گیا،تبالله تعالیٰ نے حضرت ِموسیٰ عَدَیْهِ السَّادِم کی طرف وحی کی که فلال غار کی طرف جاؤ، و ہاں ہماراا یک دوست مر گیا ہے،تم اس کی تکفین وند فین کا انتظام کرو۔

علم الہی کے بھو جب حضرت موکی عَدَیْہِ السَّلام جب غار میں پہنچ تو انہوں نے وہاں اسی جوان کو مرا ہوا پایا جس کو انہوں نے پہلے شہراور پھر بستی سے نکالا تھا، اس کے گر دحوریں تعزیت کرنے والوں کی طرح بیٹھی ہوئی تھیں۔ موسی عَدَیْہِ السَّلام نے بارگا والہی میں عرض کی: اے ربّ العزت! بیتو وہی جوان ہے جسے میں نے تیرے حکم سے شہراور ابستی سے نکال دیا تھا۔ ربّ العزت نے فر مایا: اے موسی! میں نے اس کے بہت زیادہ رونے اور عزیز دل کے فراق میں ترجی کی وجہ سے اس پر دم کیا ہے اور فرشتہ کو اس کے باپ کی اور حور وغلمان کو اس کی ماں، بیوی اور بچوں کے ہم شکل بنا کر بھیجا ہے جوغر بت میں اس کی تکلیفوں پر روتے ہیں، جب بیئر اتو اس کی بیچار گی پر زمین و آسمان والے روئے اور میں اُد کے مُم الوّ اسے مین کی پھر کیوں نہ اس کے گنا ہوں کو معاف کرتا۔

جب کسی مسافر پرنزع کاعالم طاری ہوتا ہے تواللہ تعالی فرشتوں سے فرما تا ہے یہ بیچارہ مسافر ہے، اپنے اہل وعیال اور والدین وغیرہ کوچھوڑ چکا ہے، جب یہ مرے گا تواس پر کوئی تأسف (افسوس) کرنے والا بھی نہ ہوگا، تب الله تعالی فرشتوں کواس کے والدین، اولا داور خویش وا قارب کی شکل میں بھیجتا ہے، جب وہ انہیں اپنے قریب دیکھتا ہے تو ان کواپنے خویش وا قارب بمجھ کر حد درجہ مسر ورہوتا ہے اور اسی مسرت میں اس کی رُوح پر واز کر جاتی ہے، پھر وہ فرشتے پریشان مال ہوکراس کے جنازہ کے پیچھے چلتے ہیں اور قیامت تک اس کی مغفرت کی دعا کرتے رہے ہیں، فرمانِ اللہ ہے:

اللہ اکور اس کے جنازہ کے پیچھے چلتے ہیں اور قیامت تک اس کی مغفرت کی دعا کرتے رہے ہیں، فرمانِ اللی ہے:

اللہ ایک بندوں پر مہر بان ہے۔

ابن عطاء دَ حُمَةُ اللهِ عَليْه كَتِيْ بِين: انسان كاصِدُق وكِذُب، اس كى مصيبت اور شاد مانى كے وقت ظاہر ہوتا ہے، جو شخص شاد مانی وخوشحالی میں توالله تعالی كاشكراداكرتا ہے، مگر مصائب میں فریادو فُغال كرتا ہے وہ جھوٹا ہے۔ اگر كسى كودو عَلَمُ كَاعِلْم عَطاكر دیا جائے، پھراس پر مصائب كی بَلْغار ہواوروہ شكوہ وشكايت كرنے گے تو اسے اس كا بيلم وممل كوئى فائدہ نہيں دے گا۔ (بيلم بريارہ)

حدیث قدی ہے:اللّٰہ تعالیٰ ارشا وفر ما تا ہے: جومیری قضا پر راضی نہیں میری عطا پرشکرنہیں کرتاوہ میرے سوا کوئی اور رب تلاش کرے۔⁽²⁾

وَ ہِب بِن مُنَّبِہ کہتے ہیں الله کے ایک نبی نے بچپاس برس الله کی عبادت کی ، تب الله تعالیٰ نے اس نبی کی طرف یہ وہ بین مُنِید کہتے ہیں الله کے ایک نبی نے عرض کی اے الله ایمیں نے تو کوئی گناہ ہی نہیں کیا ، بخشا کس چیز کو گیا ؟ الله تعالیٰ نے ان کی ایک رَگ کو بند کر دیا جس کی وجہ سے وہ ساری رات نہ سو سکے ۔ شیخ کو جب ان کے پاس فرشتہ آیا تو انہوں نے رَگ بند ہوجانے کی شکایت کی ، تب فرشتہ بولا: الله تعالیٰ فرما تا ہے تیری بچپاس برس کی عبادت سے تیری یہ

ایک شکایت اَفزول ہے۔(اس عبادت پرتو نازاں تھا؟)

الشورى: ٩١)
 الشورى: ٩١)

2المعجم الكبير،٢٢٠/٢٢٠الحديث ٨٠٧

ابل)

رِياضَت و خواهشاتِ نفسانی ﴿

موسى عَلَيْهِ السَّلام كودُرود برِّ صفى كاحكم:

الله تعالی نے حضرت موسی عَلَیْهِ السَّلام پروی نازل فرمانی که اے موسی! اگرتم چاہتے ہو کہ میں تمہاری زبان پرتمہارے کا م سے ، تمہارے دل میں خیالات سے ، تمہارے بدن میں تمہاری رُوح سے ، تمہاری آ تکھوں میں نور بصارت سے اور تمہارے کا نوں میں قوت سے درود جھیجو!

اور تمہارے کا نوں میں قوت سے درود جھیجو!

الصَّلُو قُ وَالسَّلامُ عَلَیْکَ یَارَسُولَ الله

فرمانِ الهي ہے:

برنفس بدد کھے کہ اس نے قیامت کے لیے کیاعمل کئے ہیں۔

وَلْتَنْظُرْنَفْسُمَّاقَكَ مَتْلِغَوٍ (1)

تفسيراً بِي اللَّيْتُ دَحْمَةُ اللهِ عَليْه ميں ہے: جب كوئى بنده طلب آخرت كى وجه سے اپنى گذشته زندگى برغور وفكر كرتا ہے

-توجمه کنز الایمان: اور برجان دیکھے کہ کل کے لیے کیا آ گے بھیجا۔ (پ ۲۸ الحشر: ۱۸)
- الدخمة كنز الايمان: اورالله ئة روبي شك الله كوتمهار كامول كى خبر بـ (ب ٢٨، الحشر: ١٨)

مكاشفة القلوب

تو یہ نظراس کے دل کے لئے مسل کا کام دیتا ہے جسیا کہ فرمانِ نبوی ہے: ایک گھڑی کا تفکرُ سال بھر کی عبادت ہے بہتر ہے۔ (1)

لہذا ہر عقامند کے لئے ضروری ہے کہ اپنے گذشتہ گنا ہوں کی مغفرت طلب کرے، جن چیزوں کا اقر ارکر تا ہے ان میں
تفکر کرے اور قیامت کے دن کے لئے تو شہ بنائے ،امیدوں کو کم کرے، تو بہ میں جلدی کرے،اللہ تعالی کا ذکر کر تا رہے،
حرام چیزوں سے اعراض کرے اور نفس کو عبر پر آ مادہ کرے،خواہشات نفسانی کی ابتاع نہ کرے کیونکہ فس ایک بت کی طرح
ہے جونفس کی ابتاع کرتا ہے وہ گویابت کی عبادت کرتا ہے اور جواخلاص سے اللہ کی عبادت کرتا ہے،وہ اپنے فنس پر جبر کرتا ہے۔

حضرتِ مَالك بن دِینار نے اِنجیر کھانا جا ہا:]

حضرت مَا لک بن وِ یناردَ حُمَهُ اللهِ عَلَیْه ایک دن بھرہ کے ایک بازار سے گزرر ہے تھے کہ آپ کو انجیرنظر آئے ،
ول میں انہیں کھانے کی خواہش ہوئی ، دو کا ندار کے پاس پنچاور کہا: میر بان جوتوں کے عوض اِنجیر دے دو ، دو کا ندار سے کہا:
نے جوتوں کو پرانا دیکھ کر کہا: ان کے بدلہ میں پچھنیں مل سکتا ، آپ یہ جواب سن کرچل پڑے ، کسی نے دو کا ندار سے کہا:
جانتے ہویہ بزرگ کون تھے؟ وہ بولا: نہیں! اس نے کہا: یہ شہور بزرگ حضرت مَا لِک بن وِ بناردَ حُمَهُ اللهِ عَلَیٰه تھے۔
دو کا ندار نے جب یہ سنا تواپنے غلام کوایک ٹوکری اِنجیروں سے بھرکردی اور کہا: اگر حضرت مَا لِک بن وِ بناردَ حُمَهُ اللهِ عَلَیٰه تھے۔
تھے سے یہ ٹوکری قبول کرلیں تو اس خدمت کے بدلہ تو آزاد ہے۔غلام بھا گا بھا گا آپ کی خدمت میں آیا اور عرض کی:
حضور! یہ قبول فرما ہے؟! آپ نے کہا: میں نہیں لیتا ،غلام بولا: اگر آپ اسے قبول کرلیں تو میں آزاد ہوجاؤں گا ، آپ فرما یا خواب نے فرما یا کہ میں تیرے لئے تو آزادی ہے مگر میرے لئے ہلاکت ہے ، جب غلام نے اصرار کیا تو آپ نے فرما یا کہ میں نہیں اور کا ۔

زندگی کی آخری گھڑی میں صبر: ﴿

حضرت مَا لِک بن دِینار رَحْمَهُ اللهِ عَلَیْه کوم ضِ وفات میں اس بات کی خواہش ہوئی کہ میں گرم روٹی کا شِرَیْد بنا کر کھا وَں جس میں شہداور دو دھ شامل ہو، چنا نچہ آپ کے حکم سے خادم بیتمام چیزیں لے کر حاضر ہوا۔ آپ کچھ دیریان چیزوں کو دیکھتے رہے، پھر بولے: الے نَفْس! تو نے نمیں سال متواتر صبر کیا ہے، اب زندگی کی اس آخری گھڑی میں کیا حَبْرُ ہُم سِک کے اللہ کے نیک حَبْرُ ہُم سِک کے اللہ کے نیک کے اللہ کے نیک میں کہا اور پیالہ چھوڑ دیا اور اسی طرح حَبْرُ کرتے ہوئے واصل بحق ہوگئے۔ حقیقت یہ ہے کہ اللہ کے نیک

❶روح البيان، الحاثيه، تحت الآية:١٣، ٨/٠٤٠ و الجامع الصغير، ص٣٦٥ ، الحديث ٥٨٩٧ بلفظ ستين سنة

بندوں بعنی انبیاء،اولیاء،صدیقین اورزامدین کے حالات ایسے ہی تھے۔حضرت ِسلیمان عَلیْهِ السَّلام کا قول ہے کہ جس مخص نے اپنے نفٹس برقابو یا یاوہ اس شخص سے زیادہ طاقتور ہے جوتن تنہاا یک شہرکو فتح کر لیتا ہے۔

حضرت علی دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ کا قول ہے کہ میں اینے نفس کے ساتھ بکریوں کے رپوڑیرا پسے ایک جوان کی طرح ہوں کہ جب وہ ایک طرف انہیں اکٹھا کرتا ہے تو وہ دوسری طرف پھیل جاتی ہیں۔

جَوْخُص اینے نَفْس کوفنا کر دیتا ہے اسے رحمت کے کفن میں لیبیٹ کر کرامت کی زمین میں فن کیا جاتا ہے اور جو خض ا پیضمیر (قلب) کوختم کر دیتا ہےا سے لعنت کے گفن میں لپیٹ کرعذاب کی زمین میں وفن کیا جاتا ہے۔

حضرتِ يَجْيُل بن مُعاذِ رَازي دَحْمَةُ اللّهِ عَلَيْهِ كَهتِي مِين كهابيخِنْفس كاطاعت وبندگي كركےمقابله كرو!''رياضت'' شب بیداری قلیل گفتگو،لوگوں کی تکالیف برداشت کرنااور کم کھانے کا نام ہے۔کم سونے سے خیالات یا کیزہ ہوتے ا ہیں، کم بولنے سے انسان آفات سے محفوظ رہتا ہے، تکالیف برداشت کرنے سے درجات بلند ہوتے ہیں اور کم کھانے ہے شُہُوات نَفْسانی خَثْمُ ہوجاتی ہیں کیونکہ بہت کھا ناوِل کی سیاہی اورا ہے گرفتارِ ظلمت کرتا ہے، بھوک حکمت کا نور ہے اور سير موناالله تعالى عدوركرديتا بـفرمان ني صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ب:

نَوْرُواْ قُلُوبَكُم بِالْجُوْعِ وَجَهِدُواْ أَنْفُسَكُم بِالْجُوْعِ وَالْعَطْشِ وَادِيْمُواْ قَرْعَ بَابِ الْجَنَّةِ بِالْجُوْعِ فَإِلَّ ٱلْاَجْرَ فِيْ ذَلِكَ كَأَجْرِ الْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللهِ وَ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ عَمَلِ اَحَبَّ اللهِ اللهِ مِنْ جُوْعٍ وَّ عَطَش وَّ لَنْ يَّلِجَ مَلَكُوْتُ السَّمَاوِتِ مَنْ مَلاً بَطْنَهُ وَ فَقَدَ حَلاوَةَ الْعِبَادَةِ .(1)

ترجمہ: اپنے قلوب کو بھوک ہے مُتَوَّر کروایے نفس کا بھوک بیاس سے مقابلہ کرواور ہمیشہ بھوک کے تو سُمُّل ہے جنت کا دروازہ کھنگھٹاتے ر ہو، بھو کے رہنے والے کو مجاہد فی سبیل اللّٰہ کے ثواب کے برابر ثواب ماتا ہے اور اللّٰہ تعالیٰ کے نزدیک بھو کے پیاسے رہنے سے بہتر کوئی عمل نہیں، آسان کے فرشتے اس انسان کے پاس بالکل نہیں آتے جس نے اپنا پیٹ بھر کر عبادت کا مزہ کھودیا ہو۔

"مِنْهَاجُ العابدِين" مين حضرت ابوبكرصديق دَضِيَ اللهُ عَنْه كايقول مذكور مع كدمين جب سايمان لايابول بهي پیٹ بھر کر کھانانہیں کھایا تا کہ میں اپنے رب کی عبادت کا مزہ حاصل کرسکوں اور اپنے رب کے شوق دیدار کی وجہ ہے بھی سیر ہوکر یانی نہیں پیاہے اس لئے کہ بہت کھانے ہے عبادت میں کمی واقع ہوجاتی ہے کیونکہ جب انسان خوب سیر ہوکر کھا

يَيْنُ شَ : مطس المَدنينَ شَالعِلْهِ المِيَّة (دُوتِ اسلام)

1 ۱۷/۱ فتاوی حدیثیة، ۱۱۷/۱

لیتا ہے تواس کا جسم گراں اور آئکھیں نیند سے بوجھل ہوجاتی ہیں ،اس کے اعضائے بدن ڈھیلے پڑجاتے ہیں پھروہ باوجود
کوشش کے سوائے نیند کے بچھ بھی حاصل نہیں کر پاتا اور اس طرح وہ اس مردار کی مانند بن جاتا ہے جوراہ گزرمیں پڑا ہو۔
«مُنیّهُ الْمُفْتِی "میں ہے کہ حضرت لقمان حکیم نے اپنے بیٹے سے کہا: کھانا اور سونا کم کرو کیونکہ جو تحض زیادہ کھاتا اور زیادہ سوتا ہے وہ قیامت کے دن اُعمالِ صالحہ سے خالی ہاتھ ہوگا۔

فرمانِ نبی صَلَّی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے کہ اپنے دلوں کوزیادہ کھانے پینے سے ہلاک نہ کرو، جس طرح زیادہ پانی سے کھیتی تباہ ہوجاتی ہے، اسی طرح زیادہ کھانے پینے سے دل ہلاک ہوجاتا ہے۔ (1) نیک لوگوں نے معدہ کوالی ہانڈی سے تشبیہ دی ہے جوا بلتی رہتی ہے اور اس کے بخارات برابردل پر چہنچے رہتے ہیں، پھرانہی بخارات کی کثرت دل کوغلیظ اور کثیف بنادیت ہے زیادہ کھانے سے ملم وفکر میں کمی واقع ہوتی ہے اور شکم پُری، فطانت وذَکاوت کو برباد کردیت ہے۔

حضرت کی بن زَکرِ اَاعَلَیْهِ مَا السَّادم نے شیطان کود یکھاوہ بہت سے دام اٹھائے ہوئے تھا، آپ نے پوچھا: یہ کیا ہیں؟ شیطان نے کہا: یہ شہوات ہیں جن سے میں ابن آ دم کوقید کرتا ہوں۔ آپ نے فرمایا: میرے لئے بھی کوئی پھندہ ہے؟ شیطان بولا: نہیں! مگرایک رات آپ نے بیٹ بھر کر کھانا کھالیا تھا جس سے آپ کونماز میں سُستی پیدا ہوگئ تھی۔ تب حضرت یکی عَلَیْهِ السَّلام ہولے: آئندہ میں بھی بھی پیٹ بھر کر کھانا نہیں کھاؤں گا۔ شیطان بولا: اگریہ بات ہے تو میں بھی آئندہ کی کوفیے ہے نہیں کرونگا۔

ہے۔ اس مقدس ہستی کا حال ہے جس نے ساری عمر میں صرف ایک رات پیٹ بھر کر کھانا کھایا تھا ،اس شخص کا کیا حال ہوگا جوعمر بھر بھی بھو کانہیں رہتااور پیٹ بھر کر کھانا کھاتا ہے اور اس پروہ جا ہتا ہے کہ وہ عبادت گزار بن جائے۔

حضرتِ بیخی عَدَیْه السَّدَم نے ایک رات جو کی روٹی پیٹ بھر کر کھالی اور عبادت الہی میں حاضر نہ ہوئے ،اللّٰه تعالیٰ نے وحی کی: اے بیخی! کیا تو نے اس دنیا کوآخرت سے بہتر سمجھا ہے یا میرے جَوَارِ رحمت سے بہتر تو نے کوئی جَوَار پالیا ہے؟ مجھے عزت وجلال کی قتم! اگر تو جنت الفردوس کا نظارہ کر لے اور جہنم کود کھے لے تو آنسوؤں کے بدلے خون روئے اور اس مُرقَع (2) کی بجائے لوجے کا لباس بہنے۔

1 بريقة محمودية في شرح طريقة محمدية ، ٥٠/٥

عفقیرون کی گدری

(اب 5

غُلَبَهُ نفس وعداوتِ شيطان ﴿ }

ہر خقمند کے لئے ضروری ہے کہ وہ بھوکارہ کر شَہُوات کا قَلَع قَمْع کرے اس لئے کہ بھوک اس دِثمنِ خدا' دنفس' کے لئے قہر ہے۔ شیطان کا وسیلۂ ظفریہی خواہشات اور کھانا بینا ہے۔ فرمانِ نبی صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے کہ شیطان تمہارے جسم میں خون کی طرح گردش کرتا ہے۔ (1) اس کے ان راستوں کو بھوک سے بند کرو۔

بلاشبہ قیامت کے دن وہی شخص اللہ تعالی سے زیادہ قریب ہوگا جس نے بھوک پیاس برداشت کی ہوگی اور ابن آ دم کے لئے سب سے زیادہ بربادکر نے والی چیزیں پیٹ کی خواہشات ہیں، اس پیٹ کی برولت حضرتِ آ دم اور حوا عَلَيْهِمَا السَّلَام جنت سے ذِلَّت اور فَقَر وفاقہ کی زمین پراتارے گئے جبکہ رب کریم نے انہیں شجر (ممنومہ) کے کھانے سے منع کر دیا تو انہوں نے پیٹ کی خواہشات کی بنا پراسے کھالیا تھا، یہی پیٹ ہی حقیقت میں شَہُوات کامُنْع اور مرکز ہے۔

ایک دانا کا قول ہے: جس انسان پراس کانفس غالب آ جا تا ہے وہ شہوات کا قیدی ہوجا تا ہے اور بیہودگی کا تا بع بن جا تا ہے، اس کا دل تمام فوا کد سے محروم ہوجا تا ہے، جس کسی نے بھی اپنے اُعضاء کی زمین کوشہوات سے سیراب کیا اس نے اپنے دل میں ندامت کی کاشت کی ،اللّٰہ تعالیٰ نے مخلوق کوئین قسموں پر پیدا فرمایا ہے:

- ﴿1﴾....فرشتوں کو پیدافر مایا،ان میں عقل رکھی مگرانہیں شہوات سے پاک ومُنزَّ ہ رکھا۔
 - ﴿2﴾جانورول کو پیدا کیا،ان میں شہوت رکھی مگر عقل سے عاری کر دیا۔
 - ﴿3﴾.....انسان کوپیدا کیا،ان میں عقل اورشہوت دونوں ودیعت فر مائے۔

اب جس انسان کی عقل پراس کی شہوت غالب آ جاتی ہے، وہ جانوروں سے بدتر ہےاور جس مسلمان کی شہوات پراس کی عقل غالب آ جاتی وہ فرشتوں سے بھی بہتر ہے۔

1بخارى، كتاب الاعتكاف، باب هل يدرأ المعتكف...الخ، ١٠٧١، الحديث ٢٠٣٩

حضرت ابراہیم خُواْص دَحْمَهُ اللهِ عَلَیٰه کہتے ہیں میں لگام کے پہاڑ میں تھا، وہاں میں نے انارد کیھے اور میرے دل میں انہیں کھانے کی خواہش ہوئی چنانچہ میں نے ایک اناراٹھا کراسے دوٹلڑے کیا مگر وہ تُرش نکا للبذا میں نے اسے پھینک دیا اور چل پڑا چندقدم آ گے جاکر میں نے ایک ایسے خض کود یکھا جوز مین پر پڑا ہوا تھا اور اس پر پھڑ یں چہٹی ہوئی تھیں۔
میں نے اسے سلام کہا اور اس شخص نے میرانام کیکر سلام کا جواب دیا میں نے حیرت سے پوچھا: آپ مجھے کیسے میں بندہ خدانے جواب دیا جواب نے بیران سے کوئی چیز پوشیدہ نہیں رہتی۔ میں نے کہا: تب تو تمہارا بارگا و این دی میں بڑا مقام ہے، تم یہ دعا کیول نہیں کرتے کہ جو تمہیں چہٹی ہوئی ہیں تم سے دور ہو جا کیں۔

اس نے کہامیں جانتا ہوں اللہ کے ہاں تمہارا بھی بڑا مقام ہے، تم نے یہ دعا کیوں نہ ما گل کہ اللہ تعالیٰ تجھے انار کھانے کی خواہش سے بچالیتا کیونکہ بھوڑوں کی تکلیف دنیاوی عذاب ہے مگرانار کھانے کی پاداش اُخروی عذاب ہے، یہ بھوڑیں تو انسان کے جسم پر ڈستی ہیں مگر خواہشات انسان کے دل کوڈس لیتی ہیں۔ میں یہ نصیحت آ موز گفتگوس کر وہاں سے اپنی منزل کی طرف روانہ ہوگیا۔

شہوات، بادشاہوں کوفقیراور صبر فقیروں کو بادشاہ بنادیتا ہے۔ آپ نے حضرتِ یوسف عَلَیْهِ السَّلام اور زُلَیْخا کا قصہ نہیں بڑھا! یوسف عَلَیْهِ السَّلام صبر کی بدولت مصر کے بادشاہ ہوئے اور زُلَیْخا خواہشات کی وجہ سے عاجز اور رُسواہوئی اور بھا آت سے محروم بجوزہ (بُوھیا) بن گئی اس لئے کہ زینجانے حضرتِ یوسف عَلَیْهِ السَّلام کی محبت میں صبر نہیں کیا تھا۔

کے حضرت ابوالحسن رازی نے اپنے والد کوخواب میں دیکھا کی

حضرت ابوالحسن رازی دَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه کہتے ہیں کہ میں نے اپنے والدکوان کے انقال کے دوسال بعد خواب میں اس حال میں دیکھا کہ ان کے جسم پر جہنم کے قیر⁽¹⁾ کالباس تھا۔ میں نے پوچھا ابا جان! یہ کیا ہوا؟ میں آپ کوجہنم وں کے

يْشُ ش : مطس ألمَد فِيدَدُ الدِّه لِيَّة (وتوت اسلام)

🗗 تارکول

لباس میں دیکھر ماہوں!میرے والدنے فرمایا: اے فرزند! مجھے میرانفس جہنم میں لے گیا،اس کے دھوکہ میں کبھی نہ آنا!

انى ابتليت باربع ما سلطوا الا لشدة شقوتى وعنائى

ابليس والدنيا ونفسى والهوى كيف الخلاص وكلهم اعدائي

وارى الهوى تدعو اليه خواطرى في ظلمة الشهوات والاراء

﴿ 1 ﴾ میں ان چار دُشمنوں میں گھر اہوا ہوں جومیری بدبنتی اور کثر تِ گناہ کی وجہ ہے مجھ پر غالب آ گئے ہیں۔

- ﴿2﴾شیطان ،نفس ، دنیااورخواہشات ،ان سے کیسے رہائی مل سکتی ہے حالانکہ بیچاروں میرے جانی وشن ہیں۔
 - ﴿3﴾ میں دیکھتا ہوں کہ خود بنی اور شہوات کی ظلمت میں میرے دل کوخواہشات اپنی طرف بلاتی رہتی ہیں۔

حضرت حاتم اَصم دَ حُـمَهُ اللهِ عَليُه كاقول ہے كه نس ميرااَصطبل ہے، علم ميرا ہتھيار ہے، نااميدى ميرا گناہ ہے، شيطان ميرادثمن ہےاور ميں نفس كےساتھ فريب كرنے والا ہول (اس كوفريب ميں مبتلا كرنا ہوں)۔

ایک عارف بالله کاقول ہے کہ جہاد کی تین قسمیں ہیں:

﴿1﴾ كفار كے ساتھ جہاداور بيہ جہادِ ظاہرى ہے، فرمانِ اللي ہے:

يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيْلِ اللهِ (1)

﴿2﴾جموٹے لوگوں کے ساتھ علم اور دلائل سے جہاد ، فر مان الہی ہے:

وَجَادِنْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ ⁽²⁾

﴿3﴾ برائيوں كى طرف لے جانے والے سركش نفس سے جہاد ، فرمان الهي ہے:

وَالَّنِ يِن جَاهَدُوافِيْنَالَنَهُ دِينَّهُمُ سُبُلَنَا (3)

- 1 ترجمه كنز الايمان: الله كى راه مين الرسي كـ (ب٦٠ المائدة: ٤٥)
- 2ترجمه كنز الايمان: اوران ساس طريقه ربحث كروجوسب سي بهتر مور (ب٤١٠النحل: ١٢٥)
- 3توجمه کنز الایمان: اورجنهول نے ہماری راومیں کوشش کی ضرورہم انہیں اینے رائے وکھاویں گے۔ (پ۲۱ العنکبوت: ۲۹)

اور نی کریم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا فرمان ہے: أَفْضَلُ الْجِهَادِ جِهَادُ النَّفْسِ. (1) نَفْس كے ساتھ جہا و بہترين جہا و ہے ۔ صحابہ کرام دِخُوانُ اللهِ عَلَیْهِ عِب جہا دے واپس آتے تو كہتے: ہم جہا دِاَ صغرے جہا دِاَ كبر كی طرف لوٹ آئے ہیں اور صحابہ نے نفس، شیطان اور خواہشات سے جہا دكو كفار كے ساتھ جہا دكر نے سے اس لئے اكبر اور عظیم كہا كنفس سے جہاد ہمیشہ جارى رہتا ہے اور كفار كے ساتھ ہمى ہوتا ہے۔

دوسری وجہ بیہ ہے کہ کفار کے ساتھ جہاد میں غازی اپنے دشمن کوسا منے دیکھار ہتا ہے گرشیطان نظر نہیں آتا ہے اور دکھائی دینے والے دشمن سے لڑائی بنسبت جھپ کروار کرنے والے دشمن کے آسان ہوتی ہے۔

ایک وجہاور بھی ہے کہ کافر کے ساتھ عازی کی ہمدر دیاں قطعی نہیں ہوتیں جبکہ شیطان کے ساتھ جہاد کرنے میں نفس اورخواہشات شیطان کی حامی قوتوں میں ثار ہوتے ہیں اس لئے بیہ مقابلہ بخت ہوتا ہے۔

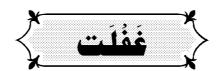
ایک بات اور بھی ہے کہ اگر غازی کا فر کوتل کردی تو مالِ غنیمت اور فتح حاصل کرتا ہے اور اگر شہید ہوجائے تو جنت کا مستحق بن جاتا ہے مگر اس جہادِ اکبر میں وہ شیطان کے قل پر قادر نہیں اور اگر اسے شیطان قتل کردیے یعنی راور است سے بھٹکا دیتو ہندہ عذا ہے الٰہی کا مستحق بن جاتا ہے۔

اسی لئے کہا گیا ہے کہ جنگ کے دن جس کا گھوڑا بھاگ پڑے وہ کا فروں کے ہاتھ آ جاتا ہے گرجس کا اِیمان بھاگ جائے وہ غضب الہی میں پھنس جاتا ہے اور جو کا فروں کے ہاتھ پھنس جاتا ہے اس کے ہاتھوں اور پاؤں میں ہماگ جائے وہ غضب الہی کامستی ہوجائے اس کا منہ ہمتھ ٹال اور بیڑیاں اور بیڑیاں ڈالی جاتیں، اسے بھوکا، پیاسا اور نگانہیں کیا جاتا گر جوغضب الہی کامستی ہوجائے اس کا منہ کا لاکیا جاتا ہے، اس کی مشکیس س کرزنجیریں ڈال دی جاتی ہیں۔ اس کے پیروں میں آگ کی بیڑیاں ڈالی جاتی ہیں۔ اس کے پیروں میں آگ کی بیڑیاں ڈالی جاتی ہیں۔ اس کا کھانا، پینا اور لباس سب جہنم کی آگ سے تیار ہوتا ہے۔

يين كش: مطس المربية تشالع لمية قد (وقوت اسلام)

^{1}كتاب الكسب للشيباني، ص ١٨٤ و كنز العمال، كتاب الجهاد، قسم الاقوال، الباب السادس في احكام القتلي...الخ،





غفلت ہے شرمندگی بڑھتی ہے اور نعمت زائل ہوتی ہے ، خدمت کا جذبہ ماند پڑ جاتا ہے ، حسد زیادہ ہوتا ہے اور ملامت ویشیمانی کی فراوانی ہوتی ہے۔

ایک نیک آ دمی نے اپنے اُستاد کوخواب میں دیکھا اور پوچھا: آپ کے نز دیک سب سے بڑی حسرت کونسی ہے؟ اُستاد نے جواب دیاغفلت کی حسرت سب سے بڑی ہے۔

روایت ہے کہ کسی محض نے حضرت فر والنون مر مشری دَ حَمَهُ اللهِ عَلَيْه کوخواب میں ویکھا اور سوال کیا کہ الله نے آپ کے ساتھ کیا سلوک کیا؟ تو انہوں نے جواب دیا کہ الله نے مجھا پنی بارگاہ میں کھڑا کیا اور فر مایا: اے جھوٹے دعویدار! تو نے میری محبت کا دعویٰ کیا اور پھر مجھے سے غافل رہا۔ (شعر)

انت في غفلة وقلبك ساهي ذهب العمر والذنوب كماهي

💨 تو غفلت میں مبتلا ہے اور تیرادل بھو لنے والا ہے، عمرختم ہوگئ اور گناہ ویسے کے ویسے ہی موجود ہیں۔

ایک صالح آ دمی نے اپنے باپ کوخواب میں دیکھ کر پوچھا: اے ابا جان! آپ کیسے ہیں اور کیا حال ہے؟ باپ نے جواب دیا: ہم نے زندگی غفلت میں گزاری اورغفلت ہی میں مرگئے۔

" زَهْرُ الرِّيَاض " ميں ہے كہ حضرت يعقوب عَلَيْهِ السَّلام كامُلك الموت سے بھائى چارہ تھا، ايك دن مُلك الموت حاضر ہوئ تو حضرت يعقوب عَلَيْهِ السَّلام نے بوچھاتم ملاقات كے لئے آئے ہويارُ وح قبض كرنے كو؟ عزرائيل نے كہاصرف ملاقات كے لئے آيا ہوں۔ آپ نے فرمایا: مجھا يک بات کہنی ہے۔ مُلک الموت بولے: كہنے كونى بات ہے؟

كأشفة القلوب

حضرت ِ یعقوب عَلیْہِ السَّدم نے فرمایا: جب میری موت قریب آجائے اور تم رُوح قبض کرنے کو آنے والے ہوتو مجھے کہا ہے۔ آگاہ کردینا۔ مَلک الموت نے کہا: بہتر! میں اپنی آمد سے پہلے آپ کے پاس دوتین قاصد جھیجوں گا۔ جب حضرتِ یعقوب عَلیْہِ السَّدم کا آخری وقت آیا اور مَلک الموت روح قبض کرنے کو پہنچ تو آپ نے کہا: تم نے تو وعدہ کیا تھا کہا بی آمد سے پہلے میری طرف قاصد جھیجو گے۔ عزرائیل نے کہا: میں نے ایسا ہی کیا تھا، پہلے تو آپ کے سیاہ بال سفید ہوئے، یہ پہلا قاصد تھا، پھر بدن کی چستی و تو انائی ختم ہوئی، یہ دوسرا قاصد تھا اور بعد میں آپ کا بدن جھک گیا، یہ تیسرا قاصد تھا۔ اے یعقوب! (عَلیْهِ السَّدم) ہرانسان کے پاس میرے یہی تین قاصد آتے ہیں۔ (شعر)

مضى الدهروالايام والذنب حاصل وجاء رسول الموت والقلب غافل

نعيمك في الدنيا غرور وحسرة وعيشك في الدنيا محال وباطل

﴿ 1 ﴾ زمانه گزر گیااور گنامول کوچھوڑ گیا،موت کا قاصد آپہنچااوردل (خداسے) عاقل ہی رہا۔

﴿2﴾ تیری دنیا وی تعتیں وهو که اور فریب ہیں اور دنیا میں تیراہمیشہ رہنا محال اور کذب محض ہے۔

شخ ابوعلی وَ قاق وَ حُمهُ اللهِ عَلیُه کہتے ہیں کہ میں ایک ایسے بیار مر دِصالح کی عیادت کو گیا جن کا شار مشارِ خُر کبار میں ہوتا تھا، میں نے اُن کے گرداُن کے شاگردوں کو بیٹھے ہوئے دیکھا، شخ ابوعلی دَ حُمهُ اللهِ عَلیْه فرماتے ہیں: وہ ہزرگ رور ہے تھے، میں نے کہا: اے شخ اکیا آپ دنیا پر رور ہے ہیں؟ انہوں نے فر مایا بنہیں، میں اپنی نمازوں کے قضا ہونے پر رور ہا ہوں، میں نے کہا: آپ تو عبادت گر ارشخص تھے پھر نمازیں کس طرح قضا ہو کیں؟ انہوں نے فر مایا: میں نے ہر مجدہ غفلت میں کیا اور ہر سجدہ سے غفلت میں سرا ٹھایا اور اب غفلت کی حالت میں مرر ہا ہوں پھر ایک آہ بھری اور بیا شعار پڑھے: _

تفكرت في حشرى ويوم قيامتي واصباح خدى في المقابر ثاويا

فريدا وحيدا بعد عز ورفعة رهينا بمجرمي والتراب وساديا

تفكرت في طول الحساب وعرضه وذل مقامي حين اعطى كتابيا

لكن رجائي فيك ربي وخالقي بانك تغفر ياالهي خطائيا

﴿1﴾ میں نے اینے حشر، قیامت کے دن اور قبر میں رہنے کے بارے میں سوجا۔

﴿2﴾.....جوعزت ووقاروالے وجود کے ساتھ مٹی کاربین ہوگا اور مٹی ہی اس کا تکیہ ہوگا۔

﴿3﴾ میں نے یوم حساب کی طوالت کے بارے میں سوچا اوراس وقت کی رسوائی کا خیال کیا جب نامہ اعمال مجھے دیا جائے گا۔

﴿4﴾ مگرا برب ذوالجلال! میری امیدین تیری رحت کے ساتھ ہیں ، تو ہی میرا خالق اور میرے گنا ہول کو بخشنے والا ہے۔

"عُيونُ الْكَخْبَادِ" ميں ہے حضرتِ شِقْق بِلَى دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه فرماتے ہيں: لوگ تين باتيں محض زبانی كرتے ہيں مرعمل اس كے خلاف كرتے ہيں ايك بير كروہ كہتے ہيں كہم الله تعالی كے بندے ہيں ليكن كام غلاموں جيسے ہيں كرتے بيك بلكه آزادوں كی طرح اپنی مرضی پر چلتے ہيں۔

دوسرے؛ یہ کہتے ہیں کہ الله تعالیٰ ہی ہمیں رزق دیتا ہے کیکن ان کے دل دنیا اور متاع دنیا جمع کئے بغیر مطمئن نہیں ہوتے اور بیان کے اقر ارکے سراسرخلاف ہے۔

تیسرے؛ کہتے ہیں کہ آخرہمیں مرجانا ہے مگر کام ایسے کرتے ہیں جیسے انہیں کبھی مرنا ہی نہیں۔

اے خاطب! ذراسوچ توسہی!الله کے سامنے تو کون سامنہ لے کر جائے گااورکونی زبان سے جواب دے گا؟ جب وہ تجھ سے ہرچھوٹی بڑی چیز کے متعلق سوال کرے گا۔ان سوالات کے لئے ابھی سے اچھا جواب تلاش کر لے (تا کہ اس وقت شرمندگی نداٹھانا پڑے)۔فرمانِ الہی ہے:

اورالله سے ڈرو بیشکتم جو کھر تے ہواللہ اس سے آگاہ ہے

وَاتَّقُوااللَّهَ ﴿ إِنَّاللَّهَ خَبِيْرٌ بِمَاتَعْمَلُونَ ۞ (1)

اورخبرر کھتاہے۔

پھر الله نے مومنوں کو سمجھایا کہ وہ اسکے احکامات کو نہ چھوڑیں اور ہر حالت میں اس کی وحدانیت کا اقر ارکرتے رہیں۔

حدیث شریف میں آیا ہے کہ عرشِ الٰہی کے پائے پرتخریہ ہے کہ جومیری اطاعت کرے گامیں اس کی بات مانوں گا، جو مجھ سے محبت کرے گامیں اسے اپنامحبوب بناؤں گا، جو مجھ سے مائکے گامیں اسے عطا کروز گااور جو بخشش کی طلب کرے گامیں اسے بخش دوں گا۔(2)

- ۱۸:سترجمه کنز الایمان: اورالله ی و رویشک الله و تهاری کامول کی خبر ب (پ۲۸ الحشر: ۱۸)
- ٢٥٦س...ستان الواعظين و رياض السامعين لابن الجوزى، ١٧ مجلس في قوله تعالى: ان الله وملائكته...الخ، ص٢٥٦

اس فرمانِ نبوی (صَلَّی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَّم) کی روشی میں ہرذی ہوش اور دانشمند کے لئے ضروری ہے کہ وہ خوف اور کھر پورخلوص کے ساتھ الله تعالی کی عباوت کرتارہے اور راضی بہ قضارہے ،اس کے نازل کر دہ مصائب پر صبر کرے ،اس کی نعمتوں کا شکر کرتے ہوئے کم وہیش پرقانع ہوجائے ،الله تعالی فرما تا ہے: جومیری قضا پر راضی ،مصائب پر صابر نہیں اور نعمتوں کا شکر نہیں ادا کرتا اور کم وہیش پرقناعت نہیں کرتا ،وہ میر سے سواکوئی اور رب تلاش کرلے۔

ایک شخص نے حضرت حسن بھری دَ حَمَهُ اللهِ عَلیْه سے کہا کہ تعجب ہے کہ میں عبادت میں لطف نہیں یا تا۔ آپ نے جواب دیا: شاید تو نے کسی ایسے خص کود کھ لیا ہے جوالله سے نہیں ڈرتا۔ حقّ بندگی میہ ہے کہ الله کی رضا کے لئے تمام چیزوں کوچھوڑ دیا جائے۔

کسی شخص نے حضرت ابی برید و حَمَهُ اللهِ عَلیْه سے کہا کہ میں عبادت میں کیف وسر ورنہیں یا تا؟ انہوں نے جواب دیا: بیاس کئے ہے کہ تو عبادت کی بندگی کرتا ہے، الله کی بندگی نہیں کرتا، توالله کی بندگی کر پھر دیکھ عبادت میں کیسامز ہ آتا ہے۔

ایک خفس نے نماز شروع کی ، جب " اِیّا اک تعبی " اس کول میں خیال آیا کہ میں خال آیا کہ میں خالت الله ایک کا حقیق الله ایک کا حقیق کی عبادت کرر ہا ہوں نے جب سے آواز آئی تو نے جبوٹ بولا ہے تو تو مخلوق کی عبادت کرتا ہے، تب اس نے مخلوق سے قطع تعلق کرلیا اور نماز شروع کی ، جب پھر اس آیت تک پہنچا تو وہی دل میں گزرا ، پھر ندا آئی تو اپنے مال کی عبادت کرتا ہے ، اس نے سارا مال راوخدا میں خرچ کر دیا اور نماز کی نیت کی ، جب اس آیت پر پہنچا تو پھر خیال آیا کہ میں دھیقہ الله کی عبادت کرنے والا ہوں ، ندا آئی تم جبوٹے ہو، تم اپنے کپڑوں کی عبادت کرتے ہواس وقت اس بندہ خدا نے بدن کے کپڑوں کے علاوہ سب کپڑے دراہِ خدا میں لٹا دیئے ، اب جو نماز میں اس آیت پر پہنچا تو آواز آئی کہ اب تم اپنے دعوے میں سے ہو۔ (2)

^{1}ترجمهٔ كنز الايمان: بمحجى كوليجيس - (ب١٠الفاتحة:٤)

علائق ونیا کے ساتھ نماز خالصةً لله ناممکن ہے۔

" رَوْق المجالس" میں ہے کہ ایک شخص کی عبائیں گم ہوگئیں اور یہ پیتنہیں چل رہاتھا کہ ان کو کون لے گیا، جب اس شخص نے نماز شروع کی تواسے یاد آ گیا جو نہی نماز سے فارغ ہوا غلام کو آواز دی کہ جاؤ فلاں آدمی سے عبائیں لے آؤ۔ غلام نے کہا آپ کو یہ کب یاد آیا ؟ اس نے کہا مجھے نماز میں یاد آیا ، غلام نے فوراً جواب دیا تب تو آپ نے نماز عبا کے لئے پڑھی ، اللّٰہ کے لئے نہیں ۔ بہ بات سنتے ہی اس شخص نے اس غلام کو آزاد کر دیا۔

چنانچہ ہرذی فہم کے لئے ضروری ہے کہ وہ دنیا کوترک کردے اور الله کی عبادت کرتار ہے، ستقبل کے بارے میں غور وفکر کرتار ہے اوراینی آخرت سنوار تارہے جبیبا کہ فرمانِ الہی ہے:

جو شخص آخرت کی کھیتی کی فکر کرتا ہے تو ہم اسکی کھیتی زیادہ کرتے ہیں اور جو شخص (2) و نیا کی کھیتی کا ارادہ کرتا ہے ہم اسے اس میں

ہے کچھ دیں گےاورآ خرت میںاس کا کچھ ھسنہیں۔

مَن كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْإِخِرَةِ تَزِدُلَدَ فِي حَرْثِهِ *

وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَانُؤْتِهِ مِنْهَاوَ

مَالَةُ فِي الْأَخِرَةِ مِنْ نَصِيْبٍ ۞ (1)

یعنی اس کے دل ہے آخرت کی محبت نکال دی جاتی ہے، اس لئے حضرت ابو بکر صدیق دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه نے حضورِ اکرم صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم کی ذات پر چالیس ہزار دینار علانیہ اور چالیس ہزار دینار پوشیدہ خرچ کر دیئے تھے یہاں تک کہان کے پاس کچھ بھی باتی ندر ہا۔

حضورِ اکرم صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اور آپ کے اہلِ بیت دنیا اور اس کی خواہش سے کمل پر ہیز کرتے تھے اس لئے حضرتِ فاطمہ دَضِیَ اللهُ عَنْها کا جہیز صرف مینڈ ھے کی ایک رنگی ہوئی کھال اور ایک چھڑے کا تکیے تھا جس میں تھجور کی چھال بھری ہوئی تھی۔

🗨 آخرت سے غافل ہو کر صرف دنیا ہی دنیا۔

ںتو جمهٔ کنز الایمان: جوآخرت کی بھتی چاہے ہم اس کے لئے اس کی بھتی بڑھائیں اور جودنیا کی بھتی چاہے ہم اسے اس میں سے پچھ ویں گے اور آخرت میں اس کا پچھ ھتے نہیں۔ (پ ۲۰ الشوری: ۲۰)

(7-!)

$\left\{ \underbrace{\overset{\mathbf{Y}}{\text{eulo}},\overset{\mathbf{u}}{\text{eulo}}}_{\mathbf{u}},\overset{\mathbf{u}}{\text{eulo}}\right\}$

ایک عورت حفرت حسن بھری دَئے مَهُ اللهِ عَلَيْه کے پاس حاضر ہوئی اور کہنے گئی: میری جوان بیٹی نوت ہوگئ ہے،
میں جا ہتی ہوں کہ اسے خواب میں دیکی لول، کوئی الیی دُعا بتلا ہے جس سے میری مُراد پوری ہوجائے، آپ نے اسے
ایک دعا سکھلائی، اس عورت نے رات میں وہ دعا پڑھی اورا پنی بیٹی کوخواب میں دیکھا تو اس کا حال بیتھا کہ اس نے
جہنم کے تارکول کا لباس پہن رکھا تھا، اس کے ہاتھوں میں زنچیریں اور پاؤں میں بیڑیاں تھیں عورت نے دوسرے
دن بیخواب آپ کوسنایا، آپ بہت مغموم ہوئے۔ پچھ کرصہ بعد حضرت حسن دَئے مَهُ اللهِ عَلَيْه نے اس لڑکی کو جنت میں
دیکھا، اس کے سر پرتاج تھا، وہ آپ سے کہنے گئی: آپ جھے بہجانتے ہیں، میں اسی خاتوں کی بیٹی ہوں جو آپ کے پاس
دیکھی اور میری تاہ حالت آپ کو بتلائی تھی۔ آپ نے اس سے پوچھا: تیری حالت میں بیرانقلاب کس طرح آیا؟ لڑک
نے کہا: قبرستان کے قریب سے ایک صالح شخص گزرااور اس نے حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَمْ پروُرود دِمِیجا، اس کے دُرود
پڑھنے کی برکت سے الله تعالیٰ نے ہم پانچ سوقبر والوں سے عذاب اُٹھالیا۔

کلتہ: غور کامقام ہے کہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم پرايک شخص كِ دُرود بَضِيخ كى بركت سے اسنے بہت سے لوگ بخشے گئے،
کیا وہ شخص جو بچاس سال سے حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم پر دُرود بَضِيح رہا ہو، قيامت ميں اس كى مغفرت نہيں ہوگى! فرمانِ
الله ہے: وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِيْنَ لَسُوا اللّه كَ اللّه كَ اَحْكامات كوچھوڑ ديا اور اس كے خلاف علنے لگے شہوات دنيا سے لطف اندوز ہونے لگے اور فریب کاری كی طرف مائل ہوگئے۔

مومن اور منافق کا فرق

ر سول الله صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے مومن اور منافق کے متعلق بوچھا گیا آپ نے فرمایا کہ مومن کی ہمت نماز اور روزے کی طرف رہتی ہے اور منافق کی ہمت جانوروں کی طرح کھانے پینے کی طرف رہتی ہے اور وہ نماز روزہ کی طرف

متوجہ ہی نہیں ہوتا۔ مومن الله کی راہ میں خرچ کرنے اور بخشش طلب کرنے میں مشغول رہتا ہے جبکہ منافق حرص وہوں میں مصروف رہتا ہے ہمومن الله تعالی کے سواتمام (1) مخلوق کی طرف میں مصروف رہتا ہے ہمومن دین کو مال سے مُقدَّم سمجھتا ہے اور منافق مال کو دین پرتر جیج دیتا ہے ،مومن الله کے سواکسی سے منہیں ڈرتا اور منافق الله کے سواہر چیز سے ڈرتا ہے ،مومن نیکی کرتا ہے اور الله کی بارگاہ میں روتا ہے ،منافق گناہ کرتا ہے اور خوش ہوتا ہے ،مومن خلوت و تنہائی کو پیند کرتا ہے ،منافق بھیڑ بھاڑ اور میل جول کو پیند کرتا ہے ،مومن بوتا ہے اور خوش ہوتا ہے ،مومن و ین کی تذہبر کے فصل کی بربادی سے ڈرتا رہتا ہے اور منافق فصل اُ جاڑ دینے کے بعد کا شنے کی تمنار کھتا ہے۔ مومن دین کی تذہبر کے ساتھ اچھائیوں کا حکم دیتا ہے ، برائیوں سے روکتا ہے اور اِصلاح کرتا ہے ،منافق اپنی ہیت اور سَطُوت کیلئے فتنہ وفساد ہرایکوں سے روکتا ہے اور اِصلاح کرتا ہے ،منافق اپنی ہیت اور سَطُوت کیلئے فتنہ وفساد ہرائیوں سے روکتا ہے اور اِصلاح کرتا ہے ،منافق اپنی ہیت اور سَطُوت کیلئے فتنہ وفساد

منافق مرداور عورتیں ایک دوسرے میں سے ہیں، نیکی سے روکتے اور برائیوں کا حکم دیتے ہیں اور اپنے ہاتھوں کو بندکرتے ہیں،
انہوں نے اللّٰه کو بھلا دیا اور اللّٰه نے انہیں بھلا دیا، بلاشہ منافق فاسق ہیں، اللّٰه تعالیٰ نے منافق مرداور منافق عورتوں کے لیے اور کفار
کے لیے جہنم کی آگ کا وعدہ کیا ہے بیانہیں کافی ہے اور اللّٰه نے ان پرلعنت کی ہے اور ان کے لیے ہمیشہ کاعذاب ہے۔

ایک اور جگدان کے بارے میں اس طرح ارشا دفر مایا ہے:

بینک الله تعالی تمام منافقوں اور کا فروں کوجہنم میں جمع کرنے والاہے۔ یعنی اگر دہ اینے کفراور نفاق پر مرجا کیں۔

ان کے لئے قائم رہنے والا عذاب ہے۔ (پ۱۰ التوبه: ٦٨،٦٧)

^{1} خدا کوچیوڑ کراس کے غیر سے رجوع کرتا ہے (مومن الله والوں سے اس معنی کر کے رجوع ہوتا ہے جس طرح کھندوں سے بیلی کی روثنی حاصل کرنا کہ روثنی کاتعلق بجلی گھر ہے ہی ہے ،اس کے بی فیض کو عام کرنے کے واسطے کھنیے نصب کئے گئے ہیں۔)

[•] سستوجمه کنز الایمان: منافق مرداورمنافق عورتیں ایک شیلی کے چٹے بٹے (ایک جیسے) ہیں برائی کا تھم دیں اور بھلائی ہے منع کریں اور اپنی مشخص بندر تھیں (خرج نہ کریں) وہاللہ نے منافق مردوں مشخص بندر تھیں (خرج نہ کریں) وہاللہ نے منافق مردوں اورمنافق عورتوں اور کافروں کو جہنم کی آگ کا وعدہ دیا ہے جس میں ہمیشہ رہیں گے وہ انہیں بس (کافی) ہے اور اللہ کی ان پرلعنت ہے اور

النساء: ۱۶۰ مین کنز الایمان: بیشک الله کافرول اور منافقول سب کوجنم میں اکٹھا کرےگا۔ (پ۵، انساء: ۱۶۰)

الله تعالیٰ نے اس اِرشاد میں اِبتداءً منافقوں کا ذِکر کیا ہے اس لئے کہ کفار سے بھی زیادہ بد بخت ہوتے ہیں اور الله نے ان سب کا ٹھکا ناجہنم قر اردیا ہے۔ فرمانِ الله ہے: بے شک منافق جہنم کے سب سے نچلے طبقہ میں ہوں گے اور آپ سی کوان کا مددگار نہیں یا ئیں گے۔ (1)

لفظِ منافق لغت میں " نَافِقًاءُ الیکربُوع " ہے مُشْقَق ہے، کہتے ہیں کہ جنگلی چوہے (بربوع) کے بل کے دوسوراخ ہوتا ہے ایک سوراخ سے ظاہر ہوتا ہے اور دوسر ہے ہوتے ہیں۔ ایک داخل ہونے کیلئے اور دوسر اسوراخ نکلنے کیلئے ہوتا ہے ایک سوراخ سے ظاہر ہوتا ہے اور دوسر ہے ہوا گئا ہے، منافق کو بھی اس لئے منافق کہتے ہیں کہ وہ ابظاہر تو مسلمانوں کی شکل میں ہوتا ہے مگر کفر کی طرف اتا ہے۔ حدیث شریف میں ہے: منافق کی مثال ایسی نو وار دبکری کی طرح ہے جودو ربوڑوں کے درمیان ہو، بھی وہ اس ربوڑ کی طرف دوڑتی ہے۔ (2)

یعنی کسی ایک ریوژ میں نہیں گھہرتی اسی طرح منافق بھی نہ تو کلیۂ مسلمانوں میں شامل ہوتا ہےاور نہ ہی کا فروں

بل _

حجبنم کےسات دروازے

الله تعالیٰ نے جہم کو پیدا کیا اور اس کے سات درواز ہے بنائے جیسا کے فرمانِ الہی ہے: لَھَاسَبْعَةُ اُبُوَا پِ (3)

اس کے درواز ہے لو ہے کے ہوں گے جن پر لعنت کی تہیں جی ہیں ،اس کا ظاہر تا نبے کا اور باطن سیسے کا ہے ،اس کی گہرائی میں عذاب اور اسکی او نچائی میں الله کی ناراضگی ہے ،اس کی زمین تا نبے ، شیشے ،لو ہے اور سیسے کی ہے ،اس میں رہنے والوں کے لئے او پر ، نیچے ، دائیں ، بائیں آگ ہی آگ ہے ،اس کے طبقات او پر سے نیچے کی طرف ہیں اور سب سے نجاط طبقہ منافقوں کے لئے ہے۔

حدیث شریف میں وارد ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے جبر میل سے جہنم کی تعریف اور گرمی کے بارے میں

النسان: جمه کنز الایمان: جینک منافق دوزخ کے سب سے نیچ طبقہ میں ہیں اور تو ہر گزان کا کوئی مددگار نہ پائےگا۔ (پ٥، النساء: ١٤٥)

^{2}مسلم، كتاب صفات المنافقين واحكامهم، ص ٩٤٨، الحديث٧١- (٢٧٨٤)

الحجر:٤٤)الحجر:٤٤)

دریافت فرمایا: جبریل نے جواب دیا:الله تعالی نے جہنم کو پیدا کیا اوراسے ہزارسال تک دہکایا تو وہ سُرخ ہوگیا، پھر ہزار سال دہکایا تو سفید ہوگیا۔اس رب کی شم جس سال دہکایا تو سفید ہوگیا۔اس رب کی شم جس نے آپ کو نبی برحق بنا کر بھیجا ہے اگر جہنمیوں کا ایک کپڑا بھی دنیا میں ظاہر ہوجائے تو تمام لوگ فنا ہوجا کیں،اگر جہنم کے پانی کا ایک ڈول دنیا کے پانیوں میں ملادیا جائے تو جو بھی چکھے، وہ مرجائے اور جہنم کی زنجیروں کا ایک ٹکڑا جس کا ذکر الله تعالیٰ نے یوں فرمایا ہے: فی سِلْسِکة ذِیْنُ مُهَاسَبْعُونَ فِرَبَاعًا (۱) ہر کر کو دیا جائے تو وہ پکھل جائے گا اور اگر کسی جہنمی کو جہنم سے کے برابر ہے،اگر اسے دنیا کے سی بڑے سے بڑے پہاڑ پر رکھ دیا جائے تو وہ پکھل جائے گا اور اگر کسی جہنمی کو جہنم سے نکال کر دنیا میں لایا جائے تو اس کی بد ہو سے تمام مخلوق فنا ہوجائے۔(2)

حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم نے جبریل سے کہا: پیہتلاؤ کہ جہنم کے درواز ہے کیا ہمارے درواز وں جیسے ہیں؟ جبریل نے عرض کی: نہیں حضور! وہ مختلف طبقات میں بنے ہوئے ہیں، پچھاو پراور پچھ نیچے ہیں اور ایک درواز ہے کا درمیانی فاصلہ ستر سال کا ہے، ہر درواز ہو پہلے درواز سے ستر گنازیادہ گرم ہے۔ آپ نے ان درواز وں میں رہنے والوں کے متعلق پوچھاتو جبریل نے جواب دیا: سب سے نچلے کانام" ھاُویکہ" ہے اور اس میں منافقین ہیں۔ جبیبا کہ فرمان الٰہی ہے:

اِتَّالُمُنْفِقِينَ فِالسَّمُ كِالْاَسْفَلِ مِنَ التَّامِ

دوسر کے طبق کا نام" جَرِیْم" ہے اور اس میں مشرک ہیں۔ تیسرے کا نام" سقر " ہے اور اس میں صابی ہیں چوتھے کا نام" لطلی " ہے اور اس میں اہلیس اور اس کے پیرو کار مجوسی ہیں، پانچویں کا نام" کھلے، " ہے اور اس میں اسلیس اور اس کے پیرو کار مجوسی ہیں، پانچویں کا نام" سیعید" ہے اور اس میں نصار کی ہیں، پھر جبریل خاموش ہوگئے۔ آپ نے پوچھا: اے جبریل! کیا تم مجھے ساتویں طبقے میں رہنے والوں کے متعلق نہیں بتاؤگے؟ جبریل نے عرض کی حضور مت پوچھئے، آپ نے کیا تم

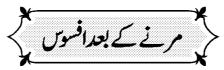
^{1}توجمه كنز الايمان: الي زنجريس جس كانا يستر باته عدر ١٩٠١ مالحاقّة: ٣٢)

التقديم و ۱۳۲۹ ، التاسع و الاربعون من شعب الايمان ، باب في طاعة...الخ، ۳۳/٦ ، الحديث ٧٤٢٠ بالتقديم و التاخير

^{3}ترجمه كنز الايمان: بشكمنافق دوزخ كسبس ينيطقه مين بين - (ب ٥،النساء: ٥٤١)

فر ما یا بتلا وُ توسہی ، تب جبر میل نے کہا: اس طبقے میں آپ کے وہ اُمتی ہیں جو گنا و کبیر ہ کے مرتکب ہوئے اور بغیر تو بہ کئے مرگئے۔ (1)

جب بيآيت " وَإِنْ مِّنْكُمُ إِلَّا وَابِ دُهَا " (2) نازل ہوئی حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم ا بِي اُمت كے بارے ميں اِنتہائی خوفز دہ ہوئے اور بہت زیادہ اَشکبار ہوئے۔ (3) لہذا جو خص بھی الله کی شخت گرفت کو اور اس کے قبر کو جانتا ہے اسے چاہئے کہ بہت ڈرتا رہے اور نفس کی لغز شوں پر روتا رہے قبل اس کے کہ ان مصائب کو جھیلے، اس وہشت ناک مقام کو دیکھے، اس کی پر دہ دَری کی جائے، اسٹینیم حقیقی کے سامنے پیش کیا جائے اور اسے جہنم میں جانے کا حکم ہو۔



کتنے ایسے بوڑھے ہیں جوجہنم میں فریادیں کرتے ہیں۔ کتنے جوان ہیں جوجوانی کے ضیاع کو یاد کر کے آہ و و کا کرتے ہیں۔ کتنے ایسے بوڑھے ہیں جو گذشتہ زندگی کی بدا عمالیوں کو یاد کر کے چلاتی ہیں درانحالیکہ (⁴⁾ ان کے اجسام اور چہرے سیاہ ہو چکے ہیں، ان کی کمریں ٹوٹ چکی ہیں، نہ ان کے بڑوں کی عزت کی جاتی ہے اور نہ ہی چھوٹوں پر دم کیا جاتا ہے اور نہ ان کی عور توں کی پردہ پوشی کی جاتی ہے۔

اے الله! ہمیں آگ، آگ کے عذاب اور ہراس کام سے بچاجو ہمیں آگ کی طرف لے جائے اورا پنی رحمت کے طفیل ہمیں نیکوں کے ساتھ جنت میں داخل فر ما۔ اے عزیز! اے عُفّار! اے الله! ہمارے عیبوں کو ڈھانپ لے ہمیں خوف سے بجات دے ہمیں لغزشوں سے بچااور اپنے سامنے شرمندگی سے محفوظ رکھ! یکا اُڑھ حمد الرّاحِیدُن وَصَلّی الله علی سیّدِنا مُحَمّدٍ وَعَلَی الله وَصَحْبهِ وَسَلّم۔

❶.....المعجم الاوسط ،٧٨/٢ ، الحديث ٢٥٨٣ و تاريخ مدينه دمشق ، ٣١٧/٣٥ ماخوذًا

استرجمه کنز الایمان: اورتم میل کوئی الیانهیں جس کا گزردوزخ پرندمو۔ (پ٦١، مریم: ٧١)

^{·····•}

^{4} در . آل ـ حالے - كه العنى ان كى حالت بيہ كه

اب 8



كنا هول سے توبہ ہرمسلمان مرداور عورت پرواجب ہے، فرمانِ اللي ہے:

اے ایمان والو!الله سے پختاتو به (توبة النصوح) کرو۔

يَا يُّهَا لَّذِينَ امَنُواتُوبُوَا إِلَى اللهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا (1)

ایک اورمقام پرارشادِ الهی ہے:

تم ان لوگوں کی طرح نہ ہوجاؤجنہوں نے اللہ کو بھلا دیا۔

وَلا تَكُوْنُوا كَالَّذِيثِنَ نَسُوااللهَ

اس کی بھیجی ہوئی کتابوں کو پس پشت ڈال دیا، گویاانہوں نے اپنے حال پررم نہیں کیا اور اپنے آپ کو گناہوں سے نہیں بچایا اور آخرت کے لئے کوئی نیکی نہیں کی فرمانِ نبوی ہے کہ جو شخص الله تعالی سے ملاقات پہند کرتا ہے الله تعالی اس سے ملاقات پہند فرما تا ہے۔ (3) تعالی اس سے ملاقات پہند فرما تا ہے۔ (4) فرمانِ الہی ہے:

یمی لوگ نافر مان، وعدہ شکن، رحمت و بخشش اور راہِ ہدایت سے

ٱولَيِكَهُمُ الْفُسِقُوْنَ ® (⁴⁾

دور ہیں۔

فاسق کی دوشمیں ہیں:﴿ ١﴾ فاسقِ کا فر ﴿ ٢﴾ فاسقِ کا فررہ ہے جواللّٰها دراس کے رسول پرایمان نہیں رکھتا ہدایت کوچھوڑ کر گمراہی کا طالب ہوتا ہے۔جیسا کہ

- النحريم: ٨) عنو الايمان: اے ايمان والوالله كى طرف ايسى توبدكروجوآ كے كوفيحت بوجائے (پ ٢٨) النحريم: ٨)
 - الدشوجمة كنز الايمان: اوران چين نهو جوالله (غزوجلً) كو يمول بيشے (پ٢٨ الحشر: ١٩)
 - 3 بخارى، كتاب الرقاق، باب من احب لقاء الله ... الخ ، ٢٤٩/٤، الحديث ٢٥٠٨
 - 4 ترجمه كنز الايمان: واى فاسق بيل (ب ٢٨، الحشر: ٩١)

فرمانِ الله ع: فَفَسَقَعَنَ أَمُرِمَ يَهِ

فاسق فاجروہ ہے: جوشراب بیتا ہے، مالی حرام کھا تا ہے، بدکاریاں کرتا ہے، عبادت کو چھوڑ کر گناہوں میں زندگی بسر کرتا ہے مگرالله تعالیٰ کو واحد مانتا ہے اور اس کے ساتھ شریک نہیں گھہرا تا۔ان دونوں میں فرق بیہ ہے کہ فاسق کا فرک بخشش موت سے پہلے کہ کہ شہادت اور تو ہے بغیر ناممکن ہے اور فاسق فاجر کی مغفرت موت سے پہلے تو ہاور بشیمانی کے ذریعی مکن ہے، اس کے کہ ہروہ گناہ جس کا تعلق خواہشات نفسانیہ سے ہے اس کی مغفرت ممکن ہے اور ہروہ گناہ جس کی بنیا دیکبراورخود بنی تھی۔ کی بنیا دیکبراورخود بنی سے محاس کی مغفرت ناممکن ہے۔شیطان کی نافر مانی کی وجہ بھی یہی تکبراورخود بنی تھی۔

پس اے انسان! تیرے لئے ضروری ہے کہ مرنے سے پہلے اپنے گنا ہوں سے توبہ کرلے شاید کہ اللہ تعالیٰ تیرے گنا ہوں کومعاف فر مادے جبیبا کہ فر مانِ الٰہی ہے:

اللهوه ہے جوابی بندول کی توبہ قبول کرتا ہے اور ان کے گنا ہوں

وَهُوَا لَّذِي كَيْقُبُلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِ ﴿ وَيَعْفُوا عَنِ

ہے ذرگز رفر ما تاہے۔

التَّيِّاتِ ⁽³⁾

حضور صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِے فرمایا ہے: گنا ہوں سے توبہ کرنے والا اس شخص کی طرح ہے جس سے کوئی گناہ سرز د نہ ہوا ہو۔ (4)

ایک جوان تھاوہ جب بھی کوئی گناہ کرتا تواہے اپنے دفتر میں لکھ لیتا تھا،ایک دفعہ اس نے کوئی گناہ کیا، جب لکھنے کیلئے دفتر کھولاتو دیکھااس میں اس آیت کے سوا کچھ بھی نہیں لکھا ہوا تھا:

الله تعالیٰ ان کی برائیوں کونیکیوں میں تبدیل کرتاہے۔

فَاُولِيِّكَ يُبَوِّلُ اللَّهُ سَيِّاتِهِمُ حَسَلَٰتٍ (5)

شرک کی جگہ ایمان، بدکاری کی جگہ بخشش، گناہ کی جگہ عصمت اور نیکوکاری لکھودی جاتی ہے۔

- 1توجمه كنز الايمان: توايغ رب كي كم سي فكل گيا (ب ١ ، الكهف: ٥٠)
- بہال تکبر سے مراوالله عُوَّوَجَلَّ پرایمان لانے سے تکبر کرنا ہے لین الله عَوْوَجَلَّ پرایمان ندلائے اوراپنے کفر پراڑار ہے۔علمیہ
- الشوری: ۲۰ الشوری:
 - 4ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر التوبة ، ١/٤ م ١ الحديث . ٢٥ ٤
 - الغرقان: ۷).



حضرت عِمردَضِیَاللّهٔ عَنه ایک مرتبه مدینه منوره کی ایک گلی سے گزرر ہے تھے، آپ نے ایک جوان کودیکھا جو کیڑوں کے یہے شراب کی بوتل چھیائے چلا آرہا تھا، آپ نے پوچھا: اے جوان! اس بوتل میں کیا لئے جار ہے ہو؟ جوان بہت شرمنده ہوا کہ میں کیسے کہوں اس بوتل میں شراب ہے؟ اس وقت اس جوان نے دِل ہی دِل میں دعاما گلی: اے اللّه! مجھے حضرت عِمر دَضِیَ اللّهُ عَنْه کِرُ وَبِروشِرمندگی اور رُسوائی ہے بچا! میر ے عیب کوڈھا نپ لے، میں پھر بھی شراب نہیں بیوں گا۔ جوان نے حضرت عِمر کوجواب دیا: امیر المؤمنین! بیسر کہ ہے، آپ نے فرمایا: مجھے دِکھا وُتو سہی! چنا نچر آپ نے دیکھا تو وہ سر کہ تھا۔ مصرت عمر کوجواب دیا: امیر المؤمنین! بیسر کہ ہے، آپ نے فرمایا: مجھے دِکھا وُتو سہی! چنا نچر آپ نے دیکھا تو وہ سر کہ تیں اے انسان! ذراغور کر، ایک بندہ بندے کے ڈرسے خلوصِ دل سے تا بہ ہوا تواللّه نے اس کی شراب کو سر کہ میں تبدیل کر دیا، اس طرح آگر کوئی گئہ گارا ہے گئا ہوں پر شرمندہ ہو کر تو بہ کر لیتا ہے تواللّه نعالی اس کی نافر مانیوں کی شراب کوفر مانبر داری کے سر کہ میں تبدیل کر دیتا ہے (جیسا کہ اس جوان کے معاملہ میں ہوا جوانی برائیاں اپنے دفتر میں لکھ لیتا تھا)۔ کوفر مانبر داری کے سر کہ میں تبدیل کر دیتا ہے (جیسا کہ اس جوان کے معاملہ میں ہوا جوانی بی برائیاں اپنے دفتر میں لکھ لیتا تھا)۔

حضرت ابو ہریرہ دَضِیَ اللهٔ عَنهُ فرمات ہیں کہ ایک رات میں حضور صَلَی اللهٔ عَلَیٰهِ وَسَلَم کے ساتھ نما نِعشاء پڑھ کر اہر نکلا، راستہ میں مجھے ایک عورت ملی، اس نے مجھے سے پوچھا: میں نے ایک گناہ کر لیا ہے، کیا میں تو بہر سکتی ہوں؟ میں نے بع چھاتو نے کونسا گناہ کیا ہے؟ عورت بولی: میں نے زنا کیا تھا اور جب اس نِنا سے بچہ پیدا ہوا تو میں نے اسے تل کر دیا۔ میں نے کہا: تو تباہ ہوگئ، تیرے لئے کوئی تو بنہیں ہے۔ وہ عورت بے ہوش ہوکر گر پڑی اور میں اپنی راہ چل دیا۔ تب میرے دل میں خیال آیا، میں نے دسول الله صَلَی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَم نے وَ جھے بغیر میہ بات کیوں کہددی۔ چنا نچہ میں آیا اور سارا واقعہ عرض کیا، حضور صَلَی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَم نے فرمایا: تم نے بہت برا کیا، کیا تم نے بہت برا کیا کیا کہ کیا تو بہت برا کیا کیا کے کہ کہ نے بہت برا کیا کہ کیا کہ کو کے کر برائی کیا کہ کیا کہ کو کے کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کو کے کہ کیا کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کو کے کہ کیا کے کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کو کے کہ کیا کہ کو کے کہ کو کہ کیا کہ کو کہ کیا کہ کو کہ کیا کہ کے کہ کیا کہ کو کے کہ کیا کیا کہ کی

اوروہ اوگ جزئیں یکارتے الله کے ساتھ کسی اور خدا کو الخ

وَالَّذِينَ لَا يَدُعُونَ مَعَ اللَّهِ إِللَّمَا الْخَرَ (1)

ابو ہر ریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کہتے ہیں: جونہی میں نے یہ بات سی میں اس عورت کی تلاش میں نکلا اور ہر کسی سے بوچھنے

1....توجمه كنز الايمان: اوروه جوالله كساته كس توسي دوسر معبود كونيس بوجة (ب ١ ١٠ الفرةان ١٨٠)

لگا: مجھے اس عورت کا پیتہ بتلا و جس نے مجھ سے مسلہ پوچھاتھا، یہاں تک کہ بچے مجھے پاگل سمجھنے گئے، بالآ خرمیں نے اس عورت کو تلاش کر ہی لیا اور اسے بیر آیت سنائی جب میں '' فَاُولِلَیْك یُبَابِّ لُاللّٰهُ اَللّٰهُ مُسَلِّیْا تَوْمُ حَسَلْتٍ '' '' تک سناچکا تو وہ خوشی سے دیوانی ہوگئی اور کہنے گئی: میں نے اپناباغ اللّٰہ اور رسول کے لئے بخش دیا۔ (2)

عتبه كاعجيب واقعه

ايا شابا لرب العرش عاصى اتدرى ماجزاء ذوى المعاصى سعير للعصاة لها زفير وغيظ يوم يؤخذ بالنواصى فان تصبر على النيران فاعصه والاكن عن العصيان قاصى وفيما قد كسبت من الخطايا رهنت النفس فاجهد فى الخلاصى

﴿1﴾....ا الله كنا فرمان جوان! جانتا ہےنا فرمانی كى سزا كياہے؟

- 1 وَالَّذِيْنَ لَا يَدُعُونَ مَعَ اللهِ الهَّا الحَوَسَ لَهُ لَهُ يَكِالُ اللهُ مَسَلَّةً عَسَلَتٍ عَلَى تَنْمُونَ آيات كاتر جمه يول ہے:

 تو جمه كنز الايمان: اوروہ جوالله كے ساتھ كى ووسر ہے معبود كونييں پوجة اوراس جان كوجس كى الله نے حرمت ركھى ناحق نہيں مارتے

 اور بدكارى نہيں كرتے اور جو يدكام كرے وہ سزا پائے گا بڑھا يا جائے گا اس پرعذاب قيامت كے دن اور ہميشہ اس ميں ذِلت سے رہے گا

 مگر جوتو بدكر ہے اورا يمان لائے اورا چھا كام كرے تو اليوں كى برائيوں كو الله بھلائيوں سے بدل دے گا۔ (پ٩١ ١٠ الفرقان: ٧)
 - 2 كتاب التوابين للمقدسي، ص٤٠١ و بحر العلوم لابي الليث السمرقندي، ٢/٢٥٥
 - 3ترجمه كنز الايمان: كياايمان والول كوابهي وه وقت نه آياكه ان كودل جهك جائين الله كي يادك لئے (پ٢٧، الحديد: ١٦:)

- ﴿2﴾ نافر مانوں کے لئے پُرشورجہم ہے اور حشر کے دن الله تعالیٰ کی سخت ناراضکی ہے۔
 - ﴿3﴾اگرتو نارِجَهُم برراضي ہےتو بےشک گناه کرتاره ، ورنه گناہوں سےرک جا۔
- ﴿4﴾ تونے اپنے گناہوں کے بدلے اپنی جان کور بمن رکھ دیا ہے، اس کوچھڑ انے کی کوشش کر۔

عتبہ نے پھر چیخ ماری اور بے ہوش ہوگیا، جب ہوش آیا تو کہنے لگا: اے ثیخ ! کیا مجھ جیسے بد بخت کی ربِ رحیم تو بہ قبول کر لے گا؟ آپ نے کہا: درگز رکر نیوالا رب ظالم بندے کی توبہ قبول فر مالیتا ہے، اس وقت عتبہ نے سراٹھا کر رب ہے۔ تین دعا ئیں کیں:

- ﴿1﴾ا الله اگرتونے میرے گناہوں کومعاف اور میری توبہ کو قبول کرلیا ہے توایسے حافظے اور عقل سے میری عزت افزائی فرما کہ میں قرآن مجیداور علوم وین میں سے جو کچھ بھی سنوں ، اُسے بھی فراموش نہ کروں۔
 - ﴿2﴾....ا حالله! مجھے الیم آ وازعنایت فرما کہ میری قر اُت کوسُن کرسخت سے سخت دل بھی موم ہوجائے۔
 - ﴿3﴾....اےالله مجھےرز قِ حلال عطافر مااورا یسے طریقے سے دیے جس کا میں تصور بھی نہ کرسکوں۔

الله نے عتب کی تینوں دعا ئیں قبول کرلیں، اس کا حافظ اور فہم وفر است بڑھ گئ اور جب وہ قرآن کی تلاوت کرتا تو ہر سننے والا گنا ہوں سے تائب ہوجاتا تھا اور اس کے گھر میں ہرروز ایک پیالہ شور بہ کا اور دوروٹیاں (رزقِ حلال سے) پہنچ جاتیں، اور کسی کو معلوم نہیں تھا کہ یہ کون رکھ جاتا ہے اور عتب غلام کی ساری زندگی ایسا ہی ہوتا رہا اور یہ اس شخص کا حال ہے جس نے الله تعالیٰ سے کو لگائی۔ إِنَّ اللّه لَا يُضِينُعُ اَجُورَ مَنُ اَحْسَنَ عَمَلًا بِئَک الله تعالیٰ نیک مل کر نے والوں کے اجرکو ضائع نہیں کرتا۔

سوال بنی عالم سے پوچھا گیا کہ جب بندہ تو بر کرتا ہے تو کیا اسے اپنی تو بہ کے مقبول یا غیر مقبول ہونے کا پیتہ چل جاتا ہے؟

جواب: عالم نے جواب دیا: ایسی کممل بات تو نہیں البتہ کچھ نشانیاں ہیں جن سے تو بہ کی قبولیت کا پیتہ چلتا ہے؛ وہ اپنے آپ کو گنا ہوں سے پاک رکھتا ہے، اس کے دل سے خوشی غائب ہوجاتی ہے، ہر دم اللّٰه کوموجود سیحے لگتا ہے، نیکوں کے قریب اور بُروں سے دور رہنے لگتا ہے، دنیا کی تھوڑی سی نعمت کو ظیم اور آخرت کے لئے کثیر نیکیوں کو بھی قلیل سمجھتا ہے، اپنے دل کو ہر وفت فرائض خداوندی میں مصروف اور اپنی زبان کو بندر کھتا ہے، ہمیشہ اپنے گذشتہ گنا ہوں پر غور وفکر کرتا رہتا ہوا ورغم اور پریشانی کو اپنے لئے لازم کر لیتا ہے۔





کہتے ہیں کہ ایک آ دمی نے جنگل میں ایک صورتِ بدکود کھے کر پوچھا: تو کون ہے؟ اس نے جواب دیا: میں تیرابُرا عمل ہوں ، اس آ دمی نے پوچھا: تو کون ہے؟ اس نے جواب دیا کہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّم کوئی صورت ہے؟ اس نے جواب دیا کہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّم کا فرمان ہے: میرے اوپر درود بل صراط کے لئے نور ہے، جو مجھ پر جمعہ کے دن استی مرتبہ درود بھیجتا ہے، الله تعالی اس کے استی سال کے گنا ہوں کو معاف کر دیتا ہے۔ (1)

درودنه بهيخ والے سے حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كا إعراض

ایک آ دمی حضور صَلَی اللهٔ عَلیْهِ وَ سَلَم پر درودشریف نہیں بھیجنا تھا، ایک رات اس نے خواب میں حضور صَلَی اللهٔ عَلیْهِ وَ سَلَم پر درودشریف نہیں بھیجنا تھا، ایک رات اس نے خواب میں حضور صَلَی عَلیْهِ وَ سَلَم کود یکھا، آپ نے اس کی طرف توجہ نہ فر مائی ، اس آ دمی نے عرض کیا کہ کیا حضور مجھے کسے نہیں ہی ہی نوجہ نہیں فرمائی ؟ آپ نے جواب دیا: نہیں! میں تہہیں بہچا نتا ہی نہیں ہوں، عرض کی گئی حضور مجھے کسے نہیں بہچا نتے مالانکہ علماء کہتے ہیں کہ آپ اپنا استوں کو ان کی ماں سے بھی زیادہ پہچا نتے ہیں۔ آپ نے فرمایا: علماء نے بھی کہا ہے میکن تو نے مجھے درود بھیج کراپنی یا دنہیں دلائی، میراکوئی امتی مجھ پر جتنا درود بھیجتا ہے میں اسے اتناہی بہچا نتا ہوں ، اس شخص کے دل میں بیات بیڑگئی اور اس نے روز اندا یک سوم تبددرود پڑھنا شروع کردیا، پھومدت بعد حضور صَلَی اللهٔ عَلَیٰهِ وَ سَلَم کو دیدار سے پھرخواب میں مشرف ہوا، آپ نے فرمایا: میں اب تجھے بہچا نتا ہوں اور میں تیری شفاعت کروں گا اس لئے کہ وہ رسول خداصًا کا للهٔ عَلَیٰهِ وَسَلَم کا محبّ بن گیا تھا۔ فرمان الہی ہے:

اے رسول ان سے کہد دیجئے کہ اگرتم اللہ کو دوست رکھتے ہوتو میری پیروی (اطاعت) کرواللہ تعالیٰتم کو دوست رکھے گا۔ قُلْ إِنْ كُنْتُمُ تُحِبُّونَ اللهَالآية

^{1}الجامع الصغير، ص ٢٠ ٣٢، الحديث ١٩١٥

^{🗨}تو جمهٔ کنز الایمان: اے محبوبتم فرمادو کہ لوگوا گرتم الله کودوست رکھتے ہوتو میر نے فرما نبردار ہوجا والله تمہیں دوست رکھے گا اور تمہارے گناہ بخش دے گا اور الله پخشفے والامہر بان ہے۔ (پ۴۰ل عصران: ۳۱)

اس آیت کاشانِ زول بیہ کہ جب حضور صلّی اللهٔ عَلیْهِ وَ سَلّم نے کعب بن اَشرف اوراس کے ساتھیوں کو دعوتِ اسلام دی تو وہ کہنے گئے: ہم توالله تعالیٰ کے بیٹوں کی طرح بیں اوراس سے بہت محبت کرتے ہیں۔ تب الله تعالیٰ نے اپنے نبی صلّی الله عَلیْهِ وَ سَلّم سے کہا: ''ان سے کہہ دیجئے اگرتم الله تعالیٰ سے مجبت رکھتے ہوتو میری ا تباع کرو۔'' میں الله کا رسول ہوں میں تمہاری طرف اس کا پیغام پہنچانے والا اور تمہارے لیے الله کی ججت بن کرآیا ہوں میری ا تباع کروگ تو" الله تمہیں محبوب بنائے گا اور تمہارے گنا ہوں کو معاف کردے گا وہ غفور اور دیم ہے۔''

مومنوں کی محبت اللہ کے ساتھ میہ ہے کہ وہ اس کے احکام پڑمل کریں ،اس کی عبادت کریں اور اس کی رضا کے طلبگار رہیں اور اللہ تعالیٰ کی مومنوں کے ساتھ محبت میہ ہے کہ وہ اُن کی تعریف کرے انہیں ثواب عطافر مائے ،ان کے گنا ہوں کومعاف کرے اور انہیں اپنی رحمت سے حسنِ توفیق ،عفت وعصمت عطافر مائے۔

ا ما مغز الى دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه احياء العلوم ميں فرماتے ہيں: جو خص چار چيزوں کے بغير چار چيزوں کا دعوی کرتا ہےوہ ...

﴿1﴾ جوجنت کی محبت کا دعویٰ کرتا ہے مگر نیکی نہیں کرتا۔

﴿2﴾ جَقْحُصْ نبي صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَي محبت كا دعوىٰ كرتا ہے مكر علماءا ورصلحاء كودوست نبيس ركھتا۔

﴿3﴾ جوآگ ہے ڈرنے کا دعویٰ کرتا ہے مگر گناہ نہیں چھوڑتا۔

﴿4﴾..... جو شخص الله کی محبت کا دعویٰ کرتا ہے مگر تکالیف کی شکایت کرتا ہے جیسا کہ

حضرت رابعہ فرماتی ہیں: _

تعصى الاله وانت تظهر حبه هذا لعمرى في القياس بديع

لو كان حبك صادقا لاطعته ان المحب لمن يحب مطيع

﴿1﴾.....توالله تعالیٰ کی نافر مانی کرتا ہے حالا تکہ بظاہرتو محبت خداوندی کا دعویدار ہے، مجھے زندگی کی قسم! بیانو کھی بات ہے۔

﴿2﴾اگرتیری محبت سچی ہوتی تو تواس کی اطاعت کرتا کیونکہ محبّ جس ہے محبت کرتا ہے اس کی اطاعت کرتا ہے۔

اورمحت کی علامت محبوب کی موافقت کرنے اوراس کے خلاف نہ کرنے میں ہے۔

حضرت بلى دُحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ مِهِ مُحبت كا وعوى كم

ایک جماعت حضرت بیلی دَخمَهُ اللهِ عَلیْه کے پاس آئی اوروہ لوگ کہنے گئے: ہم تم سے محبت کرتے ہیں، آپ نے انہیں و کیوکر پھر مارے تو وہ لوگ بھاگ کھڑے ہوئے، آپ نے پوچھا: اگرتم واقعی مجھ سے محبت کرتے تھے تو میری طرف سے دی گئی اتنی ہی تکلیف پر کیوں بھاگ گئے ہو؟ پھر بلی دَخمَهُ اللهِ عَلیْه نے فرمایا: اہلِ محبت نے الفت کا پیالہ پیا تو ان پر سے دی گئی اتنی ہی تکلیف پر کیوں بھاگ گئے ہو؟ پھر بلی دَخمَهُ اللهِ عَلیْه نے فرمایا: اہلِ محبت نے الفت کا بیالہ پیا تو ان پر سے وہ اس کی عظمت میں سرگر داں اور سے وہ سے دی گئی تنہوں نے محبت کا جام پیا اور اس کی الفت کے سمندر میں ڈوب گئے اور اس کی بارگاہ میں منا جات سے شیرنی حاصل کی، پھر آپ نے بیشعر پڑھا:۔

ذكرالمحبة يا مولاى أسكرني وهل رأيت محبا غير سكران

🖈ا مولا تیری محبت کی یاد نے مجھے مد ہوش کر دیا، کیا تونے کسی ایسے محب کود یکھا ہے جو مد ہوش نہ ہو۔

کہتے ہیں کہ اونٹ جب مست ہوجا تا ہے تو چالیس دن تک گھاس وغیرہ نہیں کھا تا اورا گراس پر پہلے سے دوگنا بوجھ لا ددیا جائے تب بھی اسے اٹھالیتا ہے اس لئے کہ جب اس کا دل محبوب کی یاد میں تر پتا ہوتو اسے نہ چارے کی خواہش ہوتی ہے نہ ہی وہ بھاری ہو جھا ٹھانے سے گھبرا تا ہے، جب اونٹ اپنے محبوب کی یاد میں اپنی خواہشات کو چھوڑ دیتا ہے اور بھاری ہو جھا ٹھالیتا ہے تو کیا تم نے بھی بھی اللّٰہ تعالیٰ کی رضا جوئی کے لئے اپنی نا جائز خواہشات کو چھوڑ ا ہے۔ بھی کھا نا پینا ہند کیا ہے؟ بھی اللّٰہ تعالیٰ کی رضا جوئی کے لئے اپنی نا جائز خواہشات کو چھوڑ ا ہے۔ بھی کھا نا پینا ہند کیا ہے؟ بھی اپنے وجود پر بارِگراں ڈالا ہے؟ اگرتم نے ان مذکورہ بالا امور میں سے کوئی کا منہیں کیا تو تمہارا دعویٰ حصور میں۔ حضور سے جو تہمیں نہ دنیا میں فائدہ دے گا نہ آخرت میں ، نہ خلوق کے زدیک فائدہ مند ہے نہ خالق کے حضور میں۔ حضرت علی کو جم آئی کو جم آئی کو جم آئی کی ، جو جہ آئی کے اس کے دارا اس نے نیکیوں میں جلدی کی ، جو جہ آئی سے ڈرااس

حضرت ابراہیم خواص دَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه مع محبت كے بارے ميں سوال كيا گيا تو آپ نے كہا: محبت نام ہے ارادوں كوثم كردينے ، تمام صفتوں اور حاجتوں كومردہ كردينے اوراينے وجودكوا شارات كے سمندر ميں غرق كردينے كا۔

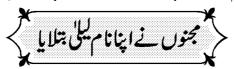
نے خود کو ناجا ئز خواہشات سے روک دیااور جسے موت کا یقین آگیااس نے لذاتِ دنیا کوختم کر دیا۔

اب ال



محبت نام ہے پیندیدہ چیزی طرف میلان طبع کا۔اگرید میلان شدت اختیار کرجائے تواسے عثق کہتے ہیں۔اس میں زیادتی ہوتی رہتی ہے یہاں تک کہ عاشق محبوب کا بندہ ہے وام بن جاتا ہے اور مال ودولت اس پر قربان کر دیتا ہے۔ زلیخا کی مثال لے لیجئے جس نے یوسف عَلیْه السَّلام کی محبت میں اپناحسن اور مال و دولت قربان کر دیا، زلیخا کے پاس ستر اونٹوں کے بوجھ کے برابر جواہر اور موتی تھے جوعثق یوسف میں نار کر دیئے، جب بھی کوئی ہے کہ ہد یتا کہ میں نے یوسف عَلیْهِ السَّلام کود یکھا ہے تو وہ اسے بیش قیمت ہار دے دیتی یہاں تک کہ پچھ بھی باتی ندر ہا،اس نے ہر چیز کانام یوسف رکھ جھوڑ انتھا اور فرطِ محبت میں یوسف عَلیْهِ السَّلام کے سواسب پچھ بھول گئی تھی، جب آسمان کی طرف دیکھتی تواسے ہرستارے میں یوسف عَلیْهِ السَّلام کے سواسب پچھ بھول گئی تھی، جب آسمان کی طرف دیکھتی تواسے ہرستارے میں یوسف عَلیْهِ السَّلام کے سواسب پچھ بھول گئی تھی، جب آسمان کی طرف دیکھتی تواسے ہرستارے میں یوسف عَلیْهِ السَّلام کی بانام نظر آتا تھا۔

کہتے ہیں کہ جب زلیخا ہمان لائی اور حضرت یوسف عَلیْهِ السَّلام کی زَوجِیَّت میں داخل ہوئی تو سوائے عبادت و ریاضت اور توجه الی الله کے اسے کوئی کام نہ تھا، اگر یوسف عَلیْهِ السَّلام اسے دن کواپنے پاس بلاتے تو کہتی رات کوآؤں گی اور رات کو بلاتے تو دن کا وعدہ کرتی ۔ یوسف عَلیْهِ السَّلام نے فرمایا: زلیخا! تو تو میری محبت میں دیوانی تھی! جواب دیا: یاس وقت کی بات ہے کہ جب میں آپ کی محبت کی ماہیت سے واقف نہتی ، اب میں آپ کی محبت کی حقیقت بہچان چی ہوں اس لئے اب میری محبت میں تہماری شرکت بھی گوار انہیں ۔ حضرت یوسف عَلیْهِ السَّلام نے فرمایا: محصالله نے اس بات کا حکم فرمایا ہے اور مجھے بتلایا ہے کہ تیرے بطن سے اللّه تعالی دو بیٹے بیدا کرے گا اور دونوں کو نبوت سے سر فرا ز فرمایا جائے گا، زلیخانے کہا: اگر حکم خداوندی ہے اور اس میں حکمتِ الٰہی ہے تو میں سرسلیم خم کرتی ہوں۔



مجنوں سے سی نے پوچھا: تیرانام کیاہے؟ بولا لیلا!ایک دن اُس سے سی نے کہا: کیا لیل مرگئ؟ مجنوں نے جواب

٧٣

دیا: کیلی نہیں مری وہ تو میرے دل میں ہے اور میں ہی کیلی ہوں ، ایک دن جب مجنوں کا کیلی کے گھر سے گزر ہوا تو وہ ستاروں کود کھتا ہوا گزرنے لگا ،کسی نے کہا: نیچے دیکھوشا پرتمہیں کیلی نظر آ جائے۔مجنوں بولا: میرے لئے کیلی کے گھر کے اویر جیکنے والے ستارے کی زیارت ہی کافی ہے۔

محبت کی ابتداءاورانتهاء *

جب حضرت منصور حلّاج کوقید میں اٹھارہ دن گزر گئے تو حضرت شبلی دَخمَهُ اللّٰهِ عَلَيْه نے ان کے پاس جا کر دریافت کیا: اے منصور! محبت کیا ہے؟ منصور نے جواب دیا: آج نہیں کل بیسوال پو چھنا۔ جب دوسرا دن ہوااوران کوقید سے نکال کرمُقْتُل کی طرف لے گئے تو وہاں منصور نے شبلی کود کیھرکر کہا شبلی! محبت کی ابتداء جلنا اور انتہا قبل ہوجانا ہے۔

" مُّنتُهُی" میں ہے کہ محبت کا صدق تین چیزوں میں ظاہر ہوتا ہے ، محبّ ، محبوب کی باتوں کوسب کی باتوں سے اچھا سے ، اس کی مجلس کو تمام مجالس سے بہتر سمجھتا ہے اور اس کی رضا کو اور وں کی رضا پرتر جیح دیتا ہے۔

کہتے ہیں کہ عشق پر دہ دری کرنے والا اور رازوں کا إفشاء کرنے والا ہے اور وَجد ذکر کی شیرینی کے وقت روح کا غلبہ شوق کا بارا ٹھانے سے عاجز ہوجا تا ہے یہاں تک کہ اگر وجد کی حالت میں انسان کا کوئی عضو بھی کاٹ لیا جائے تواسے محسوس تک نہیں ہوگا۔

ایک آدمی دریائے فرات میں نہار ہاتھا، اس نے سنا کہ کوئی شخص بیر آیت پڑھر ہاہے: وَافْتَازُواالْیَوْمَا یُنْھَالْلُهُ جُرِمُونَ ﴿ (1) الْمِنْوَمَا یُنْھِالْلُهُ جُرِمُونَ ﴿ (1) الْمِنْدِهِ بوجاؤ۔

ىيىنىتە ئى دەترىپ لگاادرد دب كرمر گىيا۔

محمد بن عبدالله بغدادی دَخمَهُ اللهِ عَلیه کہتے ہیں: میں نے بھرہ میں ایک بلندمقام پر کھڑے ہوئے ایک نوجوان کود یکھا جولوگوں سے کہدر ہاتھا کہ جوعاشقوں کی موت مرنا چاہے اسے اس طرح مرنا چاہئے (کیونکہ عشق میں موت کے بغیر کوئی لطف نہیں ہے) اتنا کہا اور وہ اس سے خود کوگرا دیا، لوگوں نے جب اسے اٹھایا تو وہ دم تو ڑ چکا تھا۔ حضرت جنید بغدادی دَخمَهُ اللهِ عَلیْه کا قول ہے کہ تصوف اپنی پیند کوڑک کردینے کا نام ہے۔

" زَهْرُ الرِّيكَاهِن " ميں ہے: حضرت ذُوالنون مصرى دَ حُـمَهُ اللهِ عَلَيْه كہتے ہيں: ايك دن ميں خانه كعبه ميں داخل ہو گيا، ميں نے وہاں ستون كے قريب ايك بر ہندنو جوان مريض كو پڑے ديكھا جس كے دل سے رونے كى آوازيں نكل رہى تھيں، ميں نے اس كے قريب ايك بر ہندنو جوان مريض كو پڑے ديكھا جس كے دل سے رونے كى آوازيں نكل رہى تھيں، ميں نے اس كے قريب جاكرا سے سلام كيا اور پوچھا: تم كون ہو؟ اس نے كہا: ميں ايك غريب الوطن عاشق ہول ۔ ميں اسكى بات مجھ گيا اور ميں نے كہا: ميں بھى تيرى طرح ہول، وہ رو پڑا، اس كارونا ديكھ كر مجھے بھى رونا آگيا۔ اس نے مجھے ديكھ كركہا: تم كيوں رور ہے ہو؟ ميں نے كہا: اس لئے كہ تيرا اور مير امرض ايك ہے۔ اس نے چيخ مارى اور اس نے مجھے ديكھ كيوں رور ہے ہو؟ ميں نے كہا: اس لئے كہ تيرا اور مير امرض ايك ہے۔ اس نے چيخ مارى اور

السسترجمة كنز الايمان: اورآج الگيست جاؤاك مجمور (ب ٢٣، يست ۹٠)

اس کی روح پرواز کرگئ ۔ میں نے اس پر اپنا کیٹر اڈالا اور کفن لینے چلا آیا۔ جب میں کفن لے کرواپس پہنچا تو وہ جوان وہان ہیں تھا۔ میرے منہ سے بےساختہ سبطن الله لکلا، تب میں نے ہا تف غیبی کی آ واز سُنی جو کہہ رہاتھا: اے ذوالنون! اس کی زندگی میں شیطان اسے ڈھونڈ تا تھا مگر نہ پاسکا، ما لکِ دوز خ نے اسے ڈھونڈ امگر نہ پاسکا، رضوانِ جنت اسے تلاش کے باوجود نہ یاسکا، میں نے یو چھاوہ پھر کہاں گیا؟ جواب آیا:

اپنے عشق، کثرت ِعبادت اور تغیل توبہ کی وجہسے وہ اپنے قادر

فَيُ مَقْعَدِ مِدُقٍ عِنْدَ مَلِيُكِ مُّقْتَدِي ﴿ (1)

رب العزت کے حضور پہنچ گیاہے۔



ایک شخ سے عاشق کے متعلق ہو چھا گیا اُنہوں نے کہا: عاشق میل ملاپ سے دور، تنہائی پسند، غور وفکر میں ڈوباہوا اور چپ چاپ رہتا ہے جب اسے دیکھا جائے وہ نظر نہیں آتا، جب بلایا جائے تو سنتانہیں، جب بات کی جائے تو سمجھتا نہیں اور جب اس پرکوئی مصیبت آجائے تو شمگین نہیں ہوتا، وہ بھوک کی پروااور بر بنگی کا احساس نہیں رکھتا ہے کی دھمکیوں سے مرعوب نہیں ہوتا، وہ تنہائی میں الله تعالی سے التجا کیں کرتا ہے، اس کی رحمت سے انس ومحبت رکھتا ہے، وہ دنیا کے لئے دنیا والوں سے نہیں جھڑتا۔

حضرت ابوتراب بخشى رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه فِي عَشَى كَى علامات مين مي چندشعر كم مين:

ولديه من تحف الحبيب وسائل

وسروره في كل ما هو فاعل

والفقر اكرام وبر عاجل

طوع الحبيب وان الح العاذل

والقلب فيه من الحبيب بلابل

لكلام من يخطى لديه السائل

لا تخدعن فللحبيب دلائل

منها تنعمه بمر بلائه

فالمنع منه عطية مقبولة

ومن الدلائل ان ترى في عزمه

ومن الدلائل ان يرى متبسما

ومن الدلائل ان يرى متفهما

1توجمه كنز الايمان: سيح كى مجلس مير عظيم قدرت والي بادشاه كحضور (٧٧٠ القمر ٥٥٠)

ومن الدلائل ان يرى متقشفا متحفظا من كل ما هو قائل

- ﴿ 1 ﴾ بقود هو كا ندو يكونكم مجوب كے ياس دلاكل اور عاشق كے ياس محبوب كے تحفول كے وسائل بيں۔
- ﴿2﴾ا یک علامت پیہے کہ وہ اپنی تلخ آز ماکش سے لطف اندوز ہوتا ہے اور محبوب جو کرتا ہے وہ اس پرخوش ہوتا ہے۔
 - ﴿3﴾اس كى طرف من كرنا بھى عطيه ہے اور فقراس كے لئے عزت افزائى اورايك فورى نيكى ہے۔
- ﴿4﴾ا یک علامت بیہے کہ وہ محبوب کی اطاعت کا پختہ ارادہ رکھتا ہے اگر جداسے ملامت کرنے والے ملامت کریں۔
- ﴿5﴾ا يك علامت بيرے كتم الے مسكرا تا ہوا ياؤ كاكر چاس كے ول ميں محبوب كى طرف سے آگ سلگ رہى ہوتى ہے۔
 - ﴿ 6﴾ایک علامت بیہے کہتم اسے خطا کاروں کی گفتگو بھتا ہوا یا وُ گے۔
 - ﴿7﴾اورا یک علامت بیہ کہتم اسے ہراس بات کا حفاظت کرنے والا یا وُگے، جسے وہ کہتا ہے۔

حضرت عیسیٰ علیّه السّده ایک جوان کے قریب سے گزرے جو باغ کو پانی دے رہاتھا، اس نے آپ سے کہا:اللّه سے دعا کیجے!اللّه تعالیٰ جھے ایک ذرّہ اسپزعشق کا عطافر مادے۔ آپ نے فرمایا: ایک ذرہ بہت بڑی چیز ہے تم اس کے تل کی استطاعت نہیں رکھتے ، کہنے لگا:اچھا! آ دھے ذرہ کا سوال کیجے! حضرت عیسیٰ علیّه السّدَام نے رب تعالیٰ سے سوال کیا:اے اللّه!اسے دھا ذرہ اسپوش کا عطافر مادے ، اس کے تن میں بیدعا کر کے آپ وہاں سے روانہ ہوگے۔
موال کیا:اے اللّه!اسے دھاذرہ اسپوش کا عطافر مادے ، اس کے تن میں بیدعا کر کے آپ وہاں سے روانہ ہوگے۔
کافی مدت کے بعد آپ پھراسی راستہ سے گزرے اور اس جوان کے متعلق سوال کیا۔لوگوں نے کہا: وہ تو دیوانہ ہوگیا ہے اور کہیں پہاڑوں کی طرف دیکھر اس تا ہے۔حضرت عیسیٰ علیّه السّد ہم نے رب سے دعا کی:اے اللّه! میری اُس جوان سے ملا قات کرادے ، پس آپ نے دیکھاوہ ایک چٹان پر کھڑ ا آسان کی طرف دیکھر ہاتھا۔ آپ نے اسسلام کی طرف کہا: مگروہ خاموش رہا۔ آپ نے کہا: مجھے اپنی عرب عالی دھاذرہ موجود ہووہ انسانوں کی بات کیسے سنے گا؟ مجھے اپنی عزت و جلال کی قتم !اگراسے آری سے دوگلڑ ہے تھی کردیا جائے اور اسے محسوس نہ ہوگا۔

جو خص تین باتوں کا دعویٰ کرتا ہے اور خودکوان تین چیزوں سے یا کنہیں رکھتا تواس کا دعویٰ باطل ہے:

﴿1﴾ جو شخص ذکرخدا کی حلاوت کو یانے کا دعویٰ کرتاہے مگر دنیا ہے بھی محبت رکھتا ہے۔

﴿2﴾ جواپنے اعمال میں إخلاص كا دعو كى كرتا ہے مگر لوگوں سے اپنى عزت افزائى كاخوا ہشمند ہے۔

﴿3﴾ جواینے خالق کی محبت کا دعویٰ کرتا ہے مگراپیے نفس کوذلیل نہیں کرتا۔

فرمانِ نبوی ہے کہ میری امت پر عنقریب ایساز مانہ آنے والا ہے، جب وہ پانچ چیز وں سے محبت کریں گے اور یانچ چیز وں کو بھول جائیں گے:

﴿1﴾ ونیاہے محبت رکھیں گے آخرت کو بھول جائیں گے۔

﴿2﴾ مال سے محبت رکھیں گے اور یوم حساب کو بھول جائیں گے۔

﴿3﴾ ... مخلوق ہے محبت رکھیں گے مگر خالق کو بھول جا کیں گے۔

﴿4﴾ گناموں سے محبت رکھیں گے مگر تو بہ کو بھول جائیں گے۔

﴿ 5﴾ مكانول سے محبت ركھيں گے اور قبر كو بھول جائيں گے۔

حضرت ِمنصور بن عمار دَحْمَهُ اللهِ عَدَيْه نے ایک جوان کونصیحت کرتے ہوئے کہا: اے جوان! تجھے تیری جوانی دھوکے میں نہ ڈالے، کتنے جوان ایسے تھے جنہوں نے تو بہ کومو خراورا پنی اُمیدوں کوطویل کر دیا، موت کو بھلا دیا اور یہ کہتے رہے کہاں تو بہ کرلیں گے، پرسوں تو بہ کرلیں گے یہاں تک کہاسی خفلت میں ملک الموت آگیا اور وہ اندھیری قبر میں جاسوئے، انہیں نہ مال نے ، نہ غلاموں نے ، نہ اولا دنے اور نہ بی ماں باپ نے کوئی فائدہ دیا۔

فرمانِ اللي ہے كه

اس دن اموال واولا دیجھ فائدہ نہ دیں گے۔

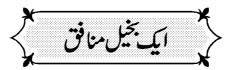
يَوْمَلايَنْفَعُمَالُوَّلاَبَنُوْنَ ﴿إِلَّامَنَ أَقَاللَّهَ

بِقَلْبِسَلِيُمٍ ۞ (1)

اے ربِ ذوالجلال! ہمیں موت سے پہلے تو بہ کی توقیق دے، ہمیں خوابِ غفلت سے ہوشیار فر مادے اور سیدالم سلین صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی شفاعت نصیب فر ما۔

1توجمه كنز الايمان: جس دن ندمال كام آئ كاند بيني مروه جوالله كحضور حاضر بواسلامت دل كر ر (ب ١٩٠٨ الشعراء: ٨٩٠٨٨)

مومن کی تعریف بیہے کہ وہ ہر گھڑی تو بہ کرتارہے اورا پنے گذشتہ گنا ہوں پر شرمندہ رہے،تھوڑی سی متاعِ دنیا پرراضی رہے، دنیاوی مشاغل کو بھول کرآ خرت کی فکر کرےاورخلوصِ قلب سے اللّٰہ تعالیٰ کی عبادت کرتارہے۔



ایک منافق انتہائی بخیل تھا،اس نے اپنی بیوی کوشم دی کہ اگر تو نے کسی کو پچھ دیا تو تچھ پر طلاق ہے۔ایک دن ایک سائل ادھر آ نکلا اور اس نے خدا کے نام پر سوال کیا ،عورت نے اسے تین روٹیاں دے دیں ، واپسی میں اسے وہی بخیل مل گیا اور پوچھا: مجھے دہوٹیاں کس نے دی ہیں؟ سائل نے اس کے گھر کے متعلق بتایا کہ مجھے وہاں سے ملی ہیں۔ بخیل تیز قدموں سے گھر کی طرف چل پڑا اور گھر بہنے کر بیوی سے بولا: میں نے بچھے شم نہیں دی تھی کہ کسی سائل کو پچھ نہیں دی تھی کہ کسی سائل کو پچھ نہیں دی تھی کہ کسی سائل کو پچھ نہیں دی تا بیوی بولی: سائل نے الله کے نام پر سوال کیا تھا لہٰذا میں ردنہ کرسکی۔

کنجوس نے جلدی سے تنور کھڑ کایا، جب تنور سرخ ہو گیا تو ہیوی سے کہا: اُٹھ اللّٰہ کے نام پر تنور میں داخل ہو جا! عورت کھڑی ہوگئی اور اپنے زیورات لے کر تنور کی طرف چل پڑی، کنجوس چلایا کہ زیورات تو یہیں چھوڑ جا۔عورت نے کہا: آج میر انحجوب سے ملاقات کا دن ہے، میں اس کی بارگاہ میں بن سنور کر جاؤں گی اور جلدی سے تنور میں گھس گئی۔ اس بد بخت نے تنور کو بند کر دیا۔ جب تین دن گزر گئے تو اس نے تنور کا ڈھکنا اٹھا کر اندر جھا نکا مگرید دیکھ کر حیران رہ گیا کہ عورت اللّٰہ تعالٰی کی قدرت سے اس میں سے وسالم بیٹھی ہوئی تھی۔ ہا تف نیبی نے آواز دی: کیا تجھے علم نہیں کہ آگ ہمارے دوستوں کؤہیں جلاتی۔

خرت آسي کاايمان

حضرتِ آسید دَضِیَ اللهٔ عَنها نے اپناایمان اپنے شوہر فرعون سے چھپایا تھا، جب فرعون کواس کا پیتہ چلا تواس نے علم دیا کہ اسے گونا گوں عذاب دیئے جائیں تا کہ حضرت آسیہ ایمان کوچھوڑ دیں لیکن حضرت آسیہ ثابت قدم رہیں، عبد فرعون نے میخیں منگوا ئیں اور ان کے جسم پر میخیں گڑوا دیں اور فرعون کہنے لگا: اب بھی وقت ہے ایمان کوچھوڑ دومگر حضرت آسیہ نے جواب دیا تو میرے وجود پر قادر ہے لیکن میرا دل میرے رب کی پناہ میں ہے، اگر تو میرا ہر عضو کاٹ

دے تب بھی میراعشق بڑھتا جائے گا۔

موسیٰ عَلَیْهِ السَّلام کاوبال سے گزر ہوا، آسید نے موسیٰ عَلَیْهِ السَّلام سے بوجیھا: میرارب مجھ سے راضی ہے یانہیں؟ حضرت ِموسیٰءَ مَیْهِ السَّلام نے فرمایا: اے آسیہ! آسان کے فرشتے تیرےا تنظار میں ہیں اوراللَّه تعالیٰ تیرے کارناموں پر فخر فر ما تاہے،سوال کرتیری ہر حاجت پوری ہوگی۔ آسیہ نے دعا مانگی :اے میرے رب میرے لئے اپنے جوارِ رحمت میں جنت میں مکان بناد ہے، مجھے فرعون ،اس کے مظالم اور ظالم لوگوں سے نجات عطافر ما۔

حضرت سلمان دَضِيَ اللّهُ عَنْهِ كَهِتِي بين: آسيه كودهوب مين عذاب دياجا تا تها، جب لوگ لوث جاتے تو فرشتے اينے پرول سے آپ پرسا پیکیا کرتے تھے اور وہ اپنے جنت والے گھر کودیکھتی رہتی تھیں۔

حضرت ِابو ہریر ہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کہتے ہیں کہ جب فرعون نے حضرتِ آسیہ کو دھوپ میں لٹا کر حیار میخیں ان کےجسم میں گڑوا ئیں اوران کے سینے پر چکی کے پاٹ رکھ دیئے گئے تو حضرت آ سیہ نے آ سان کی طرف نگاہ اٹھا کرعرض کی: رَبُّ ابْنِ لِيُ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ مَبِّ ابْنِ لِيُعِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ اےمیر بے رب میرے لیےایئے جوار رحمت میں جنت میں

مكان بنا (آخرتك)

حضرت حسن دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ كَهِتِ مِينِ الله تعالى نے اس دعا كے فيل آسيد كوفرعون سے باعزت رہائى عطافر مائى اوران کو جنت میں بلالیا جہاں وہ ذی حیات کی طرح کھاتی پیتی ہیں۔

اس حکایت سے بدیات واضح ہوگئی کہ مصائب اور تکالیف میں الله کی پناہ مانگنا،اس سے التجا کرنا اور رہائی کا سوال كرنامونين اورصالحين كاطريقه ہے۔

🚹 آيت مباركه يول ہے: ى بابن نى غِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْحِنَّةِ وَنَجِّفُ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَهَلِهِ وَنَجِّفُ مِنَ الْقُلْوِيلُكُ ﴾

ترجمه كنز الايمان: اے ميرے دب ميرے لئے اپنے پاس جنت ميں گھر بنااور مجھے فرعون اوراس كے كام سے نجات دےاور مجھے

(ابط)

اطاعتِ الْهي و محبت الْهي ومحبت رسول ﴿

فرمانِ الهی ہے:

قُلُ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللهَ فَاتَبِعُونِ نِي يُحْمِبُكُمُ

(1) عُمَّاناً

فرمادےانے نبی!اگرتم اللہ سے محبت رکھتے ہوتو میری اِ تباع کرو

الله تهبيل محبوب ركھ گا۔

الله تعالیٰتم پر دحم فرمائے اچھی طرح سمجھ لوکہ بندے کے لئے الله عَزُّوجَوَّ اوراس کے رسول صلّی الله عَدَیهِ وَسَلّم سے محبت ان کی اِطاعت اوران کے اُحکامات کی پیروی ہے اور الله نعالی کے لئے بندوں کی محبت رحمت اور بخشش کا نزول ہے۔ جب بندہ یہ بات سمجھ لیتا ہے کہ کما لات بھی حقیقت میں جب بندہ یہ بات سمجھ لیتا ہے کہ کما لات بھی حقیقت میں الله ہی کے کما لات بیں اور الله ہی کے کما لات بیں اور الله ہی کے کما لات بیں اور الله ہی کے عطا کردہ بیں تو اس کی محبت الله کے ساتھ اور الله کے لئے ہوجاتی ہے یہی چیز اس بات کا تقاضا کرتی ہے کہ بندہ الله کی اطاعت کر ہے اور جن باتوں کا وہ اقر ارکرتا ہے ان امور سے اس محبت میں اضافہ ہو ، اسی گئے مجب کو اطاعت کے ارادوں کا نام دیا گیا ہے اور اس کو اخلاص ، عبادت اور دسول الله صَلّی الله عَدَیهُ وَسَلّم کی اتباع کے ساتھ مشروط کیا گیا ہے۔

حضرت حسن دَ حُمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ كچھلوگوں نے حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے عرض كيا كہ ہم رب تعالى سے محبت كرتے ہيں، تب بير آيت كريمہ نازل ہوئى يعنی إطاعتِ رسول محبتِ الهى كامُ وْجِب ہے۔

مرت بشرحا في دَحْمَهُ اللهِ عَليْه كو بلندمقام كيسے عطا ہوا؟ م

حضرت بشرحا فی دَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه کہتے ہیں کہ میں نبی صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم كے دیدار بُہُجَتَ اَسرار سے خواب میں مشرف ہوا، آپ نے مجھ سے دریافت فرمایا: بشرحا فی اجانتے ہوالله نے تہمیں تمہارے بَمْعَصْروں سے بلندمقام کیوں

الله كودوست ركھتے ہوتو مير فرمان دار محبوبتم فرماد وكه لوگوا گرتم الله كودوست ركھتے ہوتو مير فرما نبردار ہوجا وَالله تهميس دوست ركھے گا۔ (پ۹۱ مال عصران ۲۱۰) دیاہے؟ میں نے عرض کی نہیں یاد سول الله! آپ نے فر مایا: اس کئے کہتم نیکوں کی خدمت کرتے ہو، دوستوں کوفسیحت کرتے ہو، میری سنت اور اہلِ سنت سے محبت رکھتے ہواور اپنے دوستوں سے حسنِ سلوک روار کھتے ہو۔

فر مانِ نبوی ہے: جس نے میری سنت کوزندہ کیااس نے مجھ سے محبت کی اور جس نے مجھ سے محبت کی وہ قیامت کے دن میرے ساتھ ہوگا۔ ⁽¹⁾

"شَرْعَةُ الْاِسْلَامِ" اور" آثارِ مشهوره " میں ہے کہ جب مذہب میں فتنے پیدا ہوجا کیں اور مخلوق میں پراگندگی رونما ہوجائے اس وقت حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کی سنت پڑل پیرا ہونے کا ثواب سو شہیدوں کے اجر کے برابر ہے۔ (2) حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: میری تمام اُمت جنت میں جائے گی مگر جس نے انکار کیا۔ عرض کی گئی حضور! انکار کس نے کیا؟ آپ نے فرمایا: جس نے میری انتاع کی وہ جنت میں جائے گا جس نے میری نافرمانی کی اس نے گویا انکار کیا۔ (3) ہروہ مل جومیر سے طریقے کے مطابق نہیں وہ گناہ ہے۔

ایک عارف باصفا کاارشاد ہے: اگر تو کسی شخ کو ہوا میں اڑتا ہوایا پانی پر چلتا ہوایا آگ وغیرہ کھاتا ہوا دیکھے لیکن وہ عملاً الله کے سی فرض یا نبی کی سی سنت کاتارک ہوتو وہ جھوٹا ہے۔اس کا دعوی محبت باطل ہے اور بیاس کی کرامت نہیں استدراج (4) ہے۔

حضرت جنید رَ حُمَةُ اللّهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ كوئى شخص بھى اللّه تك اس كى توفىق كے بغیر نہیں پہنچا اور اللّه تك پہنچنے كا راستہ محمد صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَى اقتداء وا تباع ہے۔

حضرت ِ احمد الحوارى دَحْمَهُ اللهِ عَلَيْهِ كَا قُول ہے كہا تباعِ سنت كے بغیر ہم ل باطل ہے۔ " شَرْحَةُ الْاِسْلَام" میں فرمانِ نبوی ہے كہ جس نے میری سنت كوضائع كيا اس پرمیری شفاعت حرام ہے۔

^{1} ترمذي، كتاب العلم، باب ماجاء في الاخذ بالسنة...الخ، ٤/٩/٤، الحديث ٢٦٨٧

^{2} روح البيان، البقرة ، تحت الآية: ٢٢١/١،١٢٣

^{3}بخارى، كتاب الاعتصام بالكتاب والسنة ، باب الاقتداء ...الخ، ٤٩٩/٤، الحديث ٧٢٨٠

^{•} خلاف عادت فعل اگر ولایت سے متصف کسی مخص سے ظاہر ہوتو اُسے کرامت کہتے ہیں اورا گر کسی شریعت کے مخالف سے ظاہر ہوتو اُسے استدراج کہتے ہیں۔(فاوی رضوبیہ ۲۳۱/۲) • استدراج کہتے ہیں۔(فاوی رضوبیہ ۲۳۱/۲)

ایک شخص نے ایک دیوانے سے ایک ایساعمل سرز دموتے دیکھا جوخلاف تو تع تھا وہ حضرت معروف کرخی دَ حُمهُ اللّٰهِ عَلَيْهِ کی خدمت میں پہنچا اور واقعہ کہ سنایا: آپ نے کہا: اللّٰه کے بہت سے عُشَّاق ہیں، کچھ جھوٹے ہیں کچھ بڑے، کچھ عَلَيْهِ کی خدمت میں اور کچھ دیوانے ہیں، جس شخص کوتم نے دیکھا ہے وہ اللّٰه کا عاشق دیوانہ ہے۔

حضرت جنید کہتے ہیں کہ ہمارے شخ سَرِی سَقَطی دَحْمَهُ اللّهِ عَلَیْه بیار ہوگئے ہمیں اُکی بیاری کے اَسباب کا پیتہیں چلی رہا تھا ہمیں نے ہمیں ایک حکیم حافِق کا پتہ بتلایا ہم ان کا قارورہ اس حکیم کے پاس لے گئے ،وہ حکیم کچھ دیر توجہ سے چلی رہا تھا ہمیں بیہوش ہوگیا اور بولل میرے ہاتھ سے گرگئ اسے دیکھتار ہا پھر بولا: یکسی عاشق کا قارورہ نظر آتا ہے۔ یہ سنتے ہی میں بیہوش ہوگیا اور بولل میرے ہاتھ سے گرگئ جب میں نے ہمری سقطی دَحْمَهُ اللّهِ عَلَیْهُ کو واپس آ کرواقعہ بتلایا تو انہوں نے بیسم فرمایا اور فرمایا: اسے الله سمجھ! اس نے یہ معلوم کرلیا؟ میں نے بوچھا: کیا مجب کے اُثر ات بیشاب میں بھی ظاہر ہوتے ہیں؟ آپ نے فرمایا: ہاں۔ مصرت فِضیل دَحْمَهُ اللّهِ عَلَیْهُ کا قول ہے: جب جھے سے بوچھا جائے تو اللّه سے محبت کرتا ہے تو چپ ہو جا کیونکہ اگر تو نفی میں جواب دے گا تو یہ کفر ہوگا اور اگر ہاں کہ گا تو تیرے اندرعا شقوں جیسی کوئی صفت ہی موجو دنہیں ہے (اس طرح توجو ناسمجھا جائے گا) پس خاموثی اختیار کرکے ناراضگی سے نے جا۔

حضرتِ سفیان دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے: جَوْحُض الله تعالیٰ کے دوست کو دوست رکھتا ہے وہ الله کو دوست رکھتا ہے، اور جو الله تعالیٰ کے احترام کرنے والے کا احترام کرتا ہے۔

حضرت بہل دَ حُمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے: حُبِ خداكى نشانى حُبِ قرآن ہے حب خدااور حب قرآن كى نشانى حب نبى كى نشانى أبى كى سنت سے محبت ہے اور حب سنت كى نشانى آخرت كى محبت ہے، آخرت كى محبت دنيا سے بخض كا نام ہے اور دنيا كے بخض كى نشانى معمولى مال دنيا پر راضى ہونا اور آخرت كے ليے دنيا كوخرج كرنا ہے۔ سے بغض كا نام ہے اور دنيا كى بخش كى نشانى معمولى مال دنيا پر راضى ہونا اور آخرت كے ليے دنيا كوخرج كرنا ہے۔ حضرت ابوالحن زنجانى دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے: عبادت كى بنيا دتين چيزيں ہيں: آئكھ، دل، زبان ۔ آئكھ عبرت

_ کے لئے ، دل غور وفکر کے لئے اور زبان سچائی کا گہوارہ اور ذکر تشبیح کے لئے ہو، چنانچے فر مانِ الہی ہے:

تم الله كابهت زياده ذكركرواور صبح وشام اس كي شبيح بيان كرو_

اذْكُرُوااللَّهَ ذِكْمًا كَثِيْرًا ﴿ وَّسَيِّحُولُا بُكُمَ لَا

(1) وَّاصِيلًا ﴿

حضرت عبدالله اوراحمد بن حرب رَجِهُ مَهُ الله ایک جگه گئے ، احمد بن حرب نے وہاں خشک گھاس کا ایک ٹکڑا کا ٹا،
حضرت عبدالله نے جناب احمد بن حرب سے کہا: تخصے پانچ چیزیں حاصل ہو گئیں، تیرے اس فعل سے تیرادل الله کی شیج
سے فافل ہوا، تو نے اپنے نفس کوالله کے ذکر کے ماسوا کا موں کی عادت ڈالی ، تو نے اپنے نفس کے لئے ایک راستہ بنادیا
جس میں وہ تیرے پیچھے پڑے گا، تو نے اسے الله کی شیج سے روکا اور قیامت کے لئے اپنے نفس کورب کے سامنے ایک
جمت دے دی۔

حضرت شخی سری تقطی دَحْمَهُ اللّهِ عَلَیْه کَهِتِ بین: میں نے شخ جرجانی دَحْمَهُ اللّهِ عَلَیْه کے پاس پِسے ہوئے ستو دیکھے،
میں نے پوچھا: آپ ستو کے علاوہ اور کچھ کیوں نہیں کھاتے؟ انہوں نے جواب دیا: میں نے کھانا چبانے اور ستوپینے میں
ستر 70 تسبیحوں کا اندازہ لگایا ہے، جپالیس سال ہوئے میں نے روٹی کھائی ہی نہیں تا کہ ان تسبیحوں کا وقت ضائع نہ ہو۔
حضرت سِبل بن عبد اللّه دَحْمَهُ اللّهِ عَلَیْه پندرہ دن میں صرف ایک مرتبہ کھاتے اور جب ماہ رمضان آتا تو مہینے
میں صرف ایک مرتبہ کھاتے ۔ بعض اوقات تو وہ ستر دنوں تک بھی کچھ نہ کھاتے، جب آپ کھانا کھاتے تو کمزور ہوجاتے
میں صرف ایک مرتبہ کھاتے۔ بعض اوقات تو وہ ستر دنوں تک بھی کچھ نہ کھاتے، جب آپ کھانا کھاتے تو کمزور ہوجاتے ہے۔
اور جب بھوکے رہتے تو قوکی ہوجاتے تھے۔

حضرتِ اَبُوحَمَّا داَلاَ مُوددَ حُمَهُ اللهِ عَلَيْة مِين برس كعبه كَ مُجاوِرر ہے مگر کسی نے انہیں کھاتے پیتے نہیں دیکھااور نہ ہی وہ ایک لمحہ اللہ کے ذکر سے غافل ہوئے۔



حضرت عمروبن عبيد رَحْمَةُ اللهِ عَليُه تين كامول كعلاوه بهي گھرسے باہر نه نكلتے نماز باجماعت كے لئے ،مريضوں

1ترجمه كنز الايمان: الله كوبهت باوكرواور صح وشام اس كى ياكى بولور (ب٢٠١١ حواب: ٤٢٠٤)

کی عیادت کے لئے اور جناز وں میں شرکت کے لئے ،اور وہ فر ماتے ہیں: میں نے لوگوں کو چوراور رہزن پایا ہے،عمرایک عمدہ جو ہرہے جس کی قیمت کا تصور نہیں کیا جاسکتا لہٰذااس سے آخرت کے لئے خزانہ تیار کرنا چاہئے اور آخرت کے طلبگار کے لئے ضروری ہے کہ وہ دنیا میں ریاضت کرے تا کہ اس کا ظاہراور باطن ایک ہوجائے ، ظاہر وباطن پر کممل اختیار حاصل کئے بغیر خزانے کا سنجالنا مشکل ہے۔

حضرت شِبلی دَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كه ابتدائے رياضت ميں جب مجھے نيند آتی تو ميں آئھوں ميں نمک كی سلائی لگاتا، جب نيندزيا دہ تنگ كرتی تو ميں گرم سلائی آئكھوں ميں پھير ليتا۔

حضرت ابرائیم بن حاکم دَ حُمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے: میرے والدِ محتر م كوجب نيندآ نے لگی تو وہ دريا كے اندرتشريف لے جاتے اور الله كی تبیج كرنے لگتے جسے س كر دريا كی محصلياں اللحص ہوجا تیں اور وہ بھی تبیج كرنے لگتیں۔

حضرتِ وَبْهِ بِن مُنَدِّةٍ دَحْمَةُ اللهِ عَليْه نے رب سے دعا مانگی: میری رات کی نینداڑا دےاللّٰہ نے ان کی دعا قبول کی اورانہیں جیالیس برس تک نیندنہ آئی ،اس طرح تمام راتیں انہوں نے عبادت میں بسرکیں۔

حضرتِ حَسَن حَلَّانْ وَحُسَةُ اللَّهِ عَلَيْه نِهِ السِينِجِسم كُمُخْنُول سے گھٹنوں تک تیرہ جگہوں سے بیر 'یوں میں جکڑ رکھا تھا اوراسی حالت میں وہ دن رات میں ایک ہزار رکعت نفل ادا کرتے تھے۔

حضرت ِ جبنید بغدادی دَ حُمَهُ اللهِ عَلیْه ابتدائے حال میں بازار میں جاتے اورا پنی دکان کھول کراس کے آگے پر دہ ڈال دیتے اور چپارسور کعت نفل ادا کر کے دکان بند کر کے گھر واپس آ جاتے۔

حضرت حبشى بن داؤ درّ حُمَهُ اللهِ عَلَيْه نے چالیس سال عشاء کے وضویے مبح کی نماز پڑھی۔

لہذا ہرمون کے لئے ضروری ہے کہ وہ باوضور ہے، جب بے وضوہ وجائے تو فوراً وضوکر کے دورکعت نفل ادا کر ہے، ہم جب میں قبلہ رو بیٹے ، حضور دل اور مراقبہ کیساتھ ریتصور کرے کہ وہ حضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم کے سامنے مواجهہ شریف میں بیٹے اے بخل اور بر دباری کواپنے اُفعال میں لازم رکھے، دکھ جھیلے مگر برائی کا بدلہ برائی سے نہ دے، گنا ہوں سے استغفار کرتا رہے، خود بنی اور ریا کے قریب نہ جائے کیونکہ خود بنی شیطان کی صفت ہے، اپنے آپ کو حقارت سے اور نیک لوگوں کواحتر ام کونہیں جانتا اللّه تعالی اسے ان کی صحبت سے محروم کر نیک لوگوں کواحتر ام سے دیکھے اس لئے کہ جو خص نیکوں کے احترام کونہیں جانتا اللّه تعالی اسے ان کی صحبت سے محروم کر

دیتا ہے اور جو شخص عبادت کی حرمت وعظمت کونہیں جانتااللہ تعالیٰ اس کے دل سے عبادت کی شیرینی نکال لیتا ہے۔

حضرت فضيل بن عياض رَحْمَةُ اللهِ عَليْه سے يو چھا گيا: اے ابوعلى ! آ دى نيك كب موتا ہے؟ فرمايا جب اس كى نيت میں نصیحت، دل میں خوف، زبان پرسچائی اوراس کے اعضاء سے اعمالِ صالحہ کا صدور ہوتا ہے۔

الله تعالى في شبِ معراج ني صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم عِفْر ما يا: احاحم ا (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) الرآب كوتمام لوكول سے زیادہ پر ہیز گار بننا پسند ہے تو دنیا ہے بے رغبتی اور آخرت میں رغبت کیجئے۔ آپ نے عرض کی اللہ الْعلم میں! دنیا سے بے رغبتی کیسے ہو؟ فرمانِ الٰہی ہوا: دنیا کے مال سے بفتر رضر ورت کھانے پینے اور پہننے کی چیزیں لے لیجئے اوربس! کل کے لئے ذخیرہ نہ کیجئے اور ہمیشہ میراذ کر کرتے رہے حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے دریافت فرمایا: ذکر پر دوام کیسے ہو؟ جواب ملالوگوں سے علیحد گی اختیار کیجئے ،نماز کواور بھوک کواپنی غذا بنایئے۔"

فر مانِ نبوی ہے: دنیا سے کنار ہ کشی جسم و جان کی تاز گی ہے اور دنیا کی رغبت میں غم واندوہ کی فراوانی ہے۔ ⁽²⁾ دنیا کی محبت ہر برائی کی جڑ ہے اور کنارہ کشی ہر خیر و برکت کی بنیاد ہے۔

ایک صالح شخص کاایک جماعت کے پاس ہے گز رہوا، وہاں ایک معالج بیاریوں اور دوائیوں کا ذکر کرر ہاتھا۔ صالح جوان نے یو جھا:ا ہےجسموں کے معالج! کیا تیرے یاس دلوں کا بھی علاج ہے؟ وہ بولا: ہاں بتاؤ! دل میں کیا بیاری ہے؟ صالح جوان نے کہا: گناہوں کی ظُلْمَت نے اسے تخت کر دیا ہے معالج نے کہا: اس کاعلاج صبح وشام گریہ وزاری ،استغفار ، ربغفور کی اطاعت میں سعی اوراینے گناہوں پرمعذرت طلی ہے، دواتو یہ ہے، شفاءرب کے پاس ہے، وہ صالح جوان ا تناسنتے ہی بے حال ہو گیااور کہنے لگا:تم واقعی ایک اچھے طبیب ہو ہتم نے لا جواب علاج بتلایا معالج نے کہا: یہ اس دل کا

2شعب الايمان ، الحادي و السبعو ن من شعب الايمان ، باب في الزهد . . . الخ٬ ٣٤٧/٧ ، الحديث ١٠٥٣٦ ، و ٣٢٣/٧ ،

يُشُ أَشْ : مطس أَلَكُرُنِيَةَ شُالعِيْهُ مِينَة (رعوت اللام)

الحديث ١٠٤٥٨

علاج ہے جوتائب ہوکراینے رب کے حضور آ گیا ہو۔

ایک شخص نے ایک غلام خریدا،غلام نے کہا: اے مالک! میری تین شرطیں ہیں:

﴿1﴾ جب نماز كاوفت آئ توجيهاس كاداكرني سے ندروكنا۔

﴿2﴾.....دن کومجھ سے جو حیا ہو کا م لومگر رات کونہیں۔

﴿3﴾ مجھےالیا کمرہ دوجس میں میرے سواکوئی نہ آئے۔

مالک نے تینوں شرطیں منظور کرتے ہوئے کہا: گھر میں رہنے کے لئے کوئی کمرہ پیند کرلو! غلام نے ایک خراب سا کمرہ پیند کرلیا، مالک بولا: تو نے خراب کمرہ کیوں پیند کیا؟ غلام نے جواب دیا: اے مالک! پیخراب کمرہ اللّٰہ کے یہاں چمن ہے چنانچے وہ دن کو مالک کی خدمت کرتا اور رات کواللّٰہ کی عبادت میں مشغول ہوجاتا۔

ایک رات اس کا مالک و مهاں سے گزرا تو اس نے دیکھا کمرہ منور ہے، غلام سجدہ میں ہے اور اس کے سرپرایک نورانی قندیل مُعَلَّق ہے اور وہ آہ وزاری کرتے ہوئے کہدر ہاہے: یااللی! تو نے مجھ پر مالک کی خدمت واجب کردی ہے اور مجھ پرییذ مدداری نہ ہوتی تو میں صبح وشام تیری عبادت میں مشغول رہتا، اے السلے! میراعذر قبول فرمالے مالک ساری رات اس کی عبادت دیکھار ہا یہاں تک کہ صبح ہوگئی، قندیل بُھ گئی اور کمرے کی حجیت حسب سابق ہموار ہوگئی وہ واپس لوٹا اور اپنی بیوی کوسار اماجر اسنایا۔

جب دوسری رات ہوئی تو وہ اپنی بیوی کوساتھ کیکر وہاں پہنچ گیا، وہاں دیکھا تو غلام سجدہ میں تھا اور نورانی قندیل روش تھی، وہ دونوں دروازے پر کھڑے ہوگئے، اورساری رات اسے دیکھ کرروتے رہے، جب سبح ہوئی تو انہوں نے غلام کو بلا کر کہا: ہم نے تجھے اللّٰہ کے نام پر آزاد کر دیا ہے تا کہ تو فراغت سے اس کی عبادت کر سکے، غلام نے اپنے ہاتھ آسان کی طرف اٹھائے اور کہا:

> ياصاحب السر ان السر قد ظهرا ولا اريد حيوتي بعد ما اشتهرا

المساحب راز! راز طاہر ہوگیا، اب میں اس اِ فشائے راز اور شہرت کے بعد زندگی نہیں جا ہتا۔

<u>پھر کہا:اےالٰہی! مجھے موت دے دے اور گر کر مرگیا۔</u>

واقعی صالح، عاشق اور طالب مولی لوگوں کے حالات ایسے ہی تھے۔

"زَهْرُالرِّياض" مِيْن ہے کہ موکی عَلَيْهِ السَّلام کا ایک عزیز دوست تھا، ایک دن آپ سے کہنے لگا: اے موکی! میرے لئے دعا کرد بچئے کہ اللّٰه تعالی مجھے اپنی معرفت عطافر مائے۔ آپ نے دعا کی ، اللّٰه تعالی نے آپ کی دعا قبول فر مائی اور وہ دوست آبادی سے کنارہ کش ہوکر پہاڑوں میں وُٹُوش کے ساتھ رہنے لگا۔

جب موسیٰ عَسَنِهِ والسَّلَام نے اسے نہ پایا تورب تعالی سے التجاکی: اللّٰہی! میراوہ دوست کہاں گیا؟ رب تعالی نے فرمایا اے موسیٰ! جو مجھے معنوں میں پہچان لیتا ہے وہ مخلوق کی دوستی بھی پسندنہیں کرتا (اس لئے اس نے تمہاری اور مخلوق کی دوستی کوترک کردیا ہے۔)

حدیث شریف میں ہے کہ حضرت عیسیٰ اور یجیٰ عَلَیْهِ مَا انسَّلام اکشے بازار میں جارہے تھے ایک عورت نے انہیں زور سے ہٹایا، حضرت بیجیٰ عَلَیْهِ السَّلام نے کہا: ربّ کی شم! مجھے اس کا پیتہ ہی نہیں چلا، حضرت عیسیٰ عَلَیْهِ السَّلام نے کہا: مسبحٰن الله ! آپ کا بدن تو میر سے ساتھ ہے مگر دل کہاں ہے؟ حضرت یجیٰ عَلیْهِ السَّلام نے جواب دیاا نے خالہ کے بیٹے! اگر میرا دل ایک لحے بھی غیر خدا سے متعلق ہوجائے تو میں سمجھتا ہوں میں نے اپنے رب کو پہچانا ہی نہیں۔ (۱) کہا گیا ہے تھی معرفت یہ ہے کہ انسان دنیا و آخرت کو جھوڑ کر الله تعالیٰ کا ہی ہوجائے اور شراب محبت کا ایسے جام

......☆.....☆......☆

یے کہ الله تعالی کا دیدار کئے بغیر ہوش میں نہ آئے ،ابیا شخص ہی ہدایت یاب ہے۔

باب 🛈

$\left\langle \stackrel{\star}{\text{mudl}} \right\rangle$ شیطان اور اس کا عذاب

نرمانِ ال<u>لی ہے</u>:

فَإِنْ تَوَلَّوُا فَإِنَّا اللهَ لَا يُحِبُّ الْكَفِرِينَ

یں اگرتم نے اللہ اوراس کے رسول کی اطاعت سے اعراض کیا

توالله تعالى تهبين نبيس بخشے گا، نه ہي تمهاري توبة قبول كرے گا۔

جیسے کفراور تکبر کی وجہ سے شیطان کی توبہ قبول نہ ہوئی اوراپنی غلطی کا إقر ارکرنے ، شرمندہ ہونے اوراپنے نفس کو ملامت کرنے کی وجہ سے آدم عَلیْهِ السَّلام کی توبہ الله تعالیٰ نے قبول فر مالی۔

مَ بَّنَاظَلَمْنَا ٱنْفُسَنَا ۖ وَإِنْ لَمْ تَغْفِرُلْنَاوَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخُسِرِينَ ﴿ (2) آ دم عَلَيْهِ السَّلَامِ ايْنِ عَلَطَى يرشرمسار ہوئے ،الله کی رحمت کے اُميدوار ہوئے اور توبہ میں جلدی کی جیسا کہ

فرمان الہی ہے: ''میری رحمت سے ناامید نہ ہو۔''⁽³⁾

لیکن شیطان نے اپنی غلطی کوشلیم نہ کیا، پشیمان نہ ہوا، اپنے نفس کو ملامت نہ کی، توبہ میں جلدی نہ کی اور تکبر کی وجہ سے رحمت خداوندی سے ناامید ہو گیا چنانچہ آج بھی جس کسی کی کیفیت ابلیس کی طرح ہوگی اس کی توبہ قبول نہیں ہوگی مگر

- ۳۲:الِ عمران: ٣٤ الإيمان: پيمرا گروه منه پيميرين توالله كوخوش نيين آت كافر (پ٣٠ الِ عمران: ٣٠)
- ستوجمه کنز الایمان: اے رب ہمارے ہم نے اپنا آپ بُر اکیا تو اگر تو ہمیں نہ بخشے اور ہم پر رحم نہ کرے تو ہم ضرور نقصان والوں میں ہوئے۔ (پ۸۱ لاعراف: ۲۲)
 - الزمر: ۵۳ ستر جمه کنز الایمان: الله کی رحمت سے ناامید نه و (پ؟ ۲ ، الزمر: ۵۳)

مكاشفة القلوب }

جوآ دم عَلَيْهِ السَّلام كى طرح كرے گااس كى توبةبول ہوجائيگى ، كيونكه ہروه گناه جس كاتعلق خواہشاتِ انسانى سے ہے،اس كى بخشش ممكن ہے اور جس گناه كاتعلق تكبروخود بني سے ہواس كى بخشش كى أميز ہيں كى جاسكتى ، شيطان كى غلطى يہى تھى اور آ دم عَلَيْهِ السَّلام كى خطاخوا ہشِ نفس سے تھى۔

(کایت: آ

ایک مرتبہ شیطان حضرتِ موسی علیٰہ السَّلام کے پاس آیا اور کہنے لگا: آپ کواللّٰہ تعالیٰ نے رسول بنایا ہے اور آپ سے کلام فرما تا ہے۔ آپ نے فرمایا: ہاں! مگرتم کون ہواور کیا کہنا چاہتے ہو؟ کہنے لگا: میں شیطان ہوں ،اللّٰہ تعالیٰ سے سوال سیجئے کہ تیری مخلوق تجھ سے تو بہ کی طالب ہے،اللّٰہ تعالیٰ نے موسی عَلیٰہِ السَّلام پروحی کی ،فرمایا: اس سے کہو کہ ہم نے تیری درخواست کو قبول کیا مگر ایک شرط کے ساتھ کہ آدم عَلیٰہِ السَّلام کی قبر پرجا کر سجدہ کر لو، جب تو سجدہ کر لے گا میں تیری تو بہول کرلوں گا اور تیرے گنا ہوں کو معاف کردوں گا۔

موسیٰ عَلَیْهِ السَّلام نے جب شیطان کو به بتلایا تو وہ غصہ سے سرخ ہو گیا اور ازراہِ کبر وغرور کہنے لگا: اے موسیٰ! میں نے تو آ دم کو جنت میں سجدہ نہیں کیا تو اب ان کی قبر کو کیسے سجدہ کرلوں؟

روایت: آ

شیطان کوجہنم میں شدید عذاب دے کر پوچھا جائے گا: تونے عذاب کوکیسا پایا؟ جواب دے گا: بہت سخت! اسے کہا جائے گا: آ دم ریاضِ جنت میں ہیں انہیں سجدہ کر لواور گذشتہ اعمال پر معذرت، تا کہ تیری بخشش ہوجائے ،گرشیطان سجدہ کرنے سے انکار کردے گا، پھراس پر عام جہنمیوں کی نسبت ستر ہزار گنازیا دہ عذاب بھیجا جائے گا۔

ایک روایت میں ہے کہ اللّٰہ تعالیٰ ہرلا کھسال بعد شیطان کوآگ سے نکال کراسے آ دم کوسجدہ کاحکم دے گا مگروہ برابر ا نکار کرتار ہے گا اوراسے بار بارجہنم میں ڈالا جاتار ہے گا۔ ⁽¹⁾

پس اگرتم ابلیس سے نجات حاصل کرنا چاہتے ہوتو ربِ کریم کے دامن رحمت سے چمٹ جاؤاوراسی سے پناہ مانگو۔ جب قیامت کا دن ہوگا، شیطان کے لئے آگ کی کرسی رکھی جائے گی، وہ اس پر بیٹھے گا،تمام شیطان اور کا فروہاں جمع ہو

1 نفسير روح البيان ، البقرة ، تحت الآية: ٢ ، ١ /٥٠١

۔ جائیں گے شیطان گدھے کی طرح جینے ہوئے کہے گا:اے جہنمیو!تم نے اپنے رب کے وعدہ کو کیسا پایا؟سب کہیں گے: بالکل سچ پایا۔ پھروہ کہے گا: میں آج کے دن اللّٰہ کی رحمت سے ناامید ہو گیا ہوں۔ تب اللّٰہ تعالیٰ کی طرف سے فرشتوں کو حکم ہوگا کہ اس پراس کی پیروی کرنے والوں پر آگ کے ڈنڈے برساؤ، پس وہ بھی بھی وہاں سے نکلنے کا حکم نہیں سنیں گے (ہمیشہ وہاں رہیں گے)۔

ایک روایت ہے: شیطان کو قیامت کے دن لا یاجائے گا اور اس کے گلے میں لعنت کا طوق پہنا کرآگ کی کرسی پر بٹھا یا جائے گا۔اللّٰہ تعالیٰ جہنم کے فرشتوں کو تھم دیگا: اس کی کرسی کو جہنم میں دھکیل دو مگر وہ کوشش کے باوجود ایسانہیں کر سکیں گے، تب جبرائیل عَلیْہِ السَّلام کو استی ہزار فرشتوں کے ساتھ اسے دھکینے کا تھم ملے گا مگر وہ بھی بہیں دھکیل سکیں گے۔ارشا دِ باری پھر اسرافیل پھرعز رائیل کو فرشتوں کی استی ہزار کی جماعت کے ساتھ تھم ملے گا مگر وہ بھی نہیں دھکیل سکیں گے۔ارشا دِ باری ہوگا: اگر میر سے بیدا کر دہ فرشتوں سے دگنے فرشتے بھی آ جا کیں تو بھی اسے نہیں ہلا سکیں گے کیونکہ اس کے گلے میں لعنت کا طوق پڑا ہوا ہے (اس کے بوجھ کے باعث یہ یہاں سے جنبش نہیں کرسکتا)۔

شیطان کانام پہلے آسان پرعابد، دوسرے پرزاہد، تیسرے پرعارف، چوتھے پرولی، پانچویں پرمثقی، چھٹے پرخازن، ساتویں پرعزازیل اورلوحِ محفوظ پراہلیس تھا، وہ اپنی عاقبت سے بےفکرتھا۔

جبات حضرتِ آدم کو تجدہ کرنے کا تھم ملاتو کہنے لگا: اے اللہ! تونے اسے بچھ پرفضیات دے دی حالا تکہ میں اس سے بہتر ہوں، تونے مجھے آگ سے اور اِسے مٹی سے بیدا کیا ہے، خدا وند تعالی نے فر مایا: میں جو چا ہتا ہوں وہ کرتا ہوں۔ شیطان نے اپنے آپ کو آدم علیٰ السّادم سے بہتر سمجھا اور ننگ و کبر کی وجہ سے آدم سے منہ پھیر کر کھڑ اہو گیا۔ جب فر شیح آدم علیٰ السّادم کو تجدہ کر کھڑ اہو گیا۔ جب فر شیطان نے تجدہ نہیں کیا تو وہ دوبارہ تجدہ شکر میں گر گئے لیکن شیطان ان سے بعلی کھڑ اربا اور اسے اپنے اس فعل پر کوئی پشیمانی نہ ہوئی، تب اللہ تعالی نے اس کی صورت سے کردی خزیر کی طرح لاکا ہوا منہ سراون سے کے سرکی طرح ، سینہ بڑے اون کی کو ہان جبیا ، ان کے درمیان چہرہ ایسے جیسے بندر کا چہرہ آتکھیں کھڑی، تضفے جام کے کوز سے جیسے علیہ ہوئے ، ہونٹ بیل کے ہونٹوں کی طرح لاکے ہوئے ، دانت خزیر کی طرح کھیں کھڑی نے اس کی طرح لاکھ ہوئے ، دانت خزیر کی طرح کو سے میں کھڑی ، دانت خزیر کی طرح کو سے میں کھڑی کو نامی کو نے ، دانت خزیر کی طرح کو سے میں کھڑی کو نامی کو کو نامی کو نامی کو نامی کو نامی کو کو کو نامی کو کی دانت خزیر کی طرح کی کو نامی کو نامی

۔ باہر نکلے ہوئے اور داڑھی میں صرف سات بال ،اسی صورت میں اسے جنت سے پنچے بھینک دیا گیا بلکہ آسان وزمین سے جزائر کی طرف بھینک دیا گیا بلکہ آسان وزمین سے جزائر کی طرف بھینک دیا گیا، وہ اب اپنے کفر کی وجہ سے زمین پر چھپے چھپے آتا ہے اور قیامت تک کے لئے لعنت کا مستحق بن گیا ہے۔ شیطان کتنا خوبصورت ،حسین ،کثیر العبادت ، ملائکہ کا سر دار ،مقربین کا سرخیل تھا مگر اسے کوئی چیز (۱) اللہ کے خضب سے نہ بچاسکی ، بیشک اس میں عقلمندول کے لئے عبرت ہے۔

ایک روایت میں ہے کہ جب الله تعالی نے شیطان کی گرفت کی تو جبرائیل ومیکائیل رونے گئے، ربّ نے فر مایا: کیوں روتے ہو؟ عرض کی: اےالله! تیری گرفت کے خوف سے روتے ہیں۔ارشاد ہوا: اسی طرح میری گرفت سے روتے رہنا۔ (2)

شیطان نے اللّٰہ سے کہا: اے اللّٰہ! تو نے جھے جنت سے نکالاتو آ دم کے سبب اب جھے اولا و آ دم پرغلبہ عطافر ما!

رب تعالیٰ نے فر مایا: ہیں نے مجھے انبیاء کے سوا، جن کی عصمت مسلّم ہے، آ دم کی اولا د پرغلبہ دیا۔ شیطان بولا پھواور!

رب نے فر مایا: جتنی آ دم کی اولا دہوگی اتنی ہی تیری اولا دہوگی۔ شیطان بولا: پھواور! خداوند کو نین نے فر مایا: ہیں نے ان کے سینوں کو تیرامسکن بنایا تو ان میں خون کی طرح گردش کرے گا۔ عرض کی: پچھاور! فر مانِ اللّٰہی ہوا: اپنے سوار اور پیادہ مددگاروں سے امداد ما تک کر انہیں مال حرام کی کمائی پر آ مادہ کرنا، انہیں ایام حض وغیرہ میں مجامعت سے اولا دحرام کا حقد اربنانا اور حرام کاری کے اسباب مہیا کرنا، انہیں مشرکانہ نام تعلیم کرنا جیسے عبد العزیٰ وغیرہ، انہیں گندی گفتگو، بُر کے افعال اور جھوٹے فرام بیا کہ فراہ کرنا، انہیں جھوٹی تسلیاں دینا جیسے معبود انِ باطلہ کی شفاعت، آ باء واجداد کی کرامتوں پرفنز، طویل امیدوں کے ذریعہ قربین تاخیر وغیرہ اور یہ سب پھے تہدید یہ کے طور پرتھا جیسا کہ فرمانِ اللّٰی ہے: کرامتوں پرفنز، طویل امیدوں کے ذریعہ تو بیس تاخیر وغیرہ اور یہ سب پھے تہدید یہ کے طور پرتھا جیسا کہ فرمانِ اللّٰی ہے: کرامتوں پرفنز، طویل امیدوں کے ذریعہ تو بیس تاخیر وغیرہ اور یہ سب پھے تہدید یہ کے طور پرتھا جیسا کہ فرمانِ اللّٰی ہے: کرامتوں پرفنز، طویل امیدوں کے ذریعہ تو بیس تاخیر وغیرہ اور یہ سب پھے تہدید یہ کے طور پرتھا جیسا کہ فرمانِ اللّٰی ہے: کرامتوں پرفنز، طویل امیدوں کے ذریعہ تو بیس تاخیر وغیرہ اور یہ سب بھے تھورہ کی میں کو کی اسباکہ کرنا کے کہ کو کی کی کھور کی ان اللّٰہ کو کہ کو کی اللّٰہ کو کرنا کے کہ کو کرنا کے کہ کو کی کہ کو کی کور کرنا کی کہ کور کی کے کہ کرنا ہو کی کور کی کور کی کور کی کور کی کور کور کرنا کی کور کرنا ہو کی کرنا ہو کرنا کے کور کور کرنا ہو کرنا کرنا ہو کرنا ہو کرنا ہو کی کور کور کی کور کرنا ہو کر

^{🚺} كَبْر، مُناظَره، حُجُت ، مُواحِدِيَّت

^{2} إنَّ بَطْشَ مَ بِيِّكَ لَشَو يُدُّ أَنْ (مترجم) توجمه كنز الايمان: بِشَك تير عرب كي گرفت بهت تخت م ـ (ب٣٠ ، البروج: ١٢)

^{3} ترجمه كنز الايمان: جور كي مين آئ كرو (ب ٢ ، حم السجدة: ٤)

آ دم عَلَيْهِ السَّلَام نے عرض کی: اے الله اتو نے میری اولا دیرابلیس کومُسَلَّط کردیا، اب اس سے رہائی تیری رحمت کے بغیر کیسے ہوگی! رب نے فرمایا: تیرے ہرایک فرزند کے ساتھ میں محافظ فر شتے بناؤں گا۔عرض کی: ابھی کچھاور! فرمانِ اللهی ہوا: ان کے تخری سانس تک فرمانِ اللهی ہوا: ان کے آخری سانس تک ان کی توبہ قبول کرونگا۔عرض کی کہ کچھاور عطافر ما! فرمان اللهی ہوا: ان کے لئے بخشش عام کردوں گا، میں بے نیاز ہوں، آ دم علیٰ السَّدہ ہولے: اے میرے رب! یہ کافی ہے۔

شیطان نے کہا:اےاللہ! تونے آ دم کی اولا دمیں نبی بنائے،ان پر کتابیں نازل کیں،میر بے رسول اور کتابیں کیا ہیں؟ جواب آیا: کا ہن تیر بے رسول اور گدی ہوئی کھالیں تیری کتابیں، تیری حدیثیں جھوٹ، تیرا قر آن شعر (1) تیر بے مؤذن باجے، تیری مسجد بازار، تیرا گھر حمام خانے، تیرا کھانا وہ جس پرمیرا⁽²⁾ نام نہ لیا گیا ہو، تیرا پینا شراب اور عور تیں تیرا جال ہیں۔

اچھا گمان عبادت ہے

قْرِ مَانِ مَصْطَفْ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّم : حُسُنُ الطَّنِّ مِنْ حُسُنِ الْعِبَادَةِ لِين صن طن عمره عباوت

ے ہے۔ (ابوداود، ٤/ ٣٨٨، الحديث ٩٩٦)

مفسرشهیر حکیم الامت حضرت مفتی احمد یارخان عَلیْه رَحْمَهُ الْحَنَّانِ اس حدیث پاک کے مختلف مطالب بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں: یعنی مسلمانوں سے اچھا گمان کرنا،ان پر بدگمانی نہ کرنا یہ بھی اچھی عبادات میں

الكعبادت موراة المناجيح شرح مشكاة المصابيح ، ٦/ ٦٢١)

میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو! آج کل بدگمانی کامرض عام ہےاس سے بچنا جا ہیےاورمسلمان کے بارے میں اچھا گمان کر کے ثواب کمانا جا ہے ۔اللّٰہ عَدُّوجَدُّ ہمیں بدگمانی سے بچنے کی تو فیق عطافر مائے۔ آمین

^{🕕} گندے، وابیات اوراسلام کی مخالفت میں اشعار۔

جس جانور پرذنگ کے وقت الله کانام نه لیاجائے۔





فرمان الہی ہے:

إِنَّاعَرَضْنَاالْ مَانَةَ عَلَى السَّلُوٰتِ وَالْاَثْمِضِ وَ

الْجِبَالِ فَآبَيْنَ آنَ يَّحْمِلْنَهَا (1)

الله نے آسانوں اور زمین اور بہاڑوں برامانت پیش کی وہ اسے

سنھالنے کے لیے آمادہ نہ ہوئے۔

انہیں خوف ہوا کہ وہ اس امانت کاحق ادانہ کرسکیں گےاورعذاب کے ستحق ہوں گے مانہیں خیانت کا خوف لاحق ہوا۔اس آیت کریمہ میں امانت کے معنی ایسی عبادت اور فرائض ہیں جن کی ادائیگی اور عدم ادائیگی ہے ثواب وعذاب وابسة اور متعلق ہے۔

قرطبی کا قول ہے: امانت دین کی تمام شرائط وعبادات کا نام ہے۔ یہ جمہور کا قول ہے اور قول صحیح ہے، اس کی تفصیل میں کچھا ختلاف ہے۔ابن مسعود رَضِیَ اللهُ عَنْه كا قول ہے: بيرمال كى امانت ہے جيسے امانت ركھا ہوا مال وغيره -ان سے بیبھی مروی ہے کہ فرائض میں سب سے اہم مال کی امانت ہے۔

ابوالدر داء رَضِيَ اللهُ عَنْه كا قول ہے كئسل جنابت أمانت ہے۔ ابن عمر رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كا قول ہے كہ سب سے یہلے الله تعالیٰ نے انسان کی شرمگاہ کو پیدا کیا اور فر مایا بیامانت ہے جومیں تجھے دے رہا ہوں ،اسے بے راہ روی سے بچانا، اگر تونے اس کی حفاظت کی تومیں تیری حفاظت کروں گا، لہذا شرمگاہ امانت ہے، کان امانت ہے، زبان امانت ہے، پیٹ امانت ہے، ہاتھ اور بیرا مانت ہیں اور جس میں امانت نہیں اس کا ایمان نہیں۔

حضرت حسن دَحْـمَةُ اللهِ عَلَيْهِ كا قول ہے: جب امانت آسانوں ، زمین اور پہاڑوں پرپیش کی گئی ، توبیتمام مظاہر کا ئنات اور جو کچھان میں ہے، سخت بے چین ہو گئے ۔اللّٰہ تعالیٰ نے ان سے فر مایا:اگرتم اچھے عمل کرو گے، تو تم کواجر ملے گا اورا گر بُر ہے کام کرو گے تو میں عذاب دوں گا توانہوں نے اس کےاٹھانے سےا نکار کر دیا۔

🕕توجمه كنز الايمان: بِشكبم نے امانت پیش فرمائی آسانوں اور زمین اور پہاڑوں پرتوانھوں نے اس کے اٹھانے سے انكاركيا۔ (پ ۲۲، الاحزاب: ۲۲)

مجامدرَ حُمَةُ اللهِ عَلَيْهُ كَا قول ہے كہ جب الله تعالى نے آوم عَلَيْهِ السَّدَهِ كو پيدا كيا اور اس پرامانت پيش كى اور يہى كہا گيا تو انہوں نے كہا: ميں اس باركوا تھا تا ہوں۔

یہ بات سمجھ لیجئے کہ زمین وآسان اور پہاڑوں کوامانت لینے نہ لینے کا اختیار دیا گیا تھا، انہیں مجبور نہیں کیا گیا تھا، اگران کے لئے ضروری قرار دیا گیا ہوتا تولامحالہ انہیں یہ بارِامانت اٹھانا پڑتا۔

قَفّا ل وغيره كاقول ہے كه اس آيت ميں " عَرَض " ہے ايك مثال دى گئى ہے كه زمين وآسان اور پہاڑوں پران كى جه كى به پناه جسامت كے باوجود شريعت مطہره كے احكامات كى ذمه دارى اگران پر ڈالى جاتى تو يه عذاب و ثواب كى وجه سے ان پر گرال گزرتى كيونكه يه تكليف بى اليى مُهُمَّم بِالشَّان ہے كه زمين وآسان اور پہاڑوں كا عاجز آجانا عين مكن ہے گراسے انسان نے قبول كرليا چنا نچ فرمان الهى ہے: " وَحَه لَهَا الْإِنْسَانُ " " (1) آدم عَلَيْهِ السَّلام پراس وقت بيامانت قبول بيش كى گئى جبكه ميثاق كے وقت ان كى اولا دكوان كى صُلْب ہے نظمی صورتوں میں نكالا گيا تو آدم نے يہ بارامانت قبول كرليا فرمانِ الهى ہے: " إِنَّهُ كَانَ ظَلْمُومًا جَهُولًا ﴿ " (2) انسان نے اس بارامانت كواٹھا كرا ہے آپ پرظم كيا اور وہ اس بارگران كا اندازه نہ كرسكا۔

حضرت ابن عباس رَضِى اللهُ عَنهُمَا كا قول ہے: بیامانت آ دم عَلَيْهِ السَّلام پر پیش کی گئ اور فر مان ہواات مکمل طور پر لے لو، اگرتم نے اطاعت کی تمہیں بخش دول گا، اگر نا فر مانی کی تو عذاب دول گا، آ دم عَلَيْهِ السَّلام نے عرض کیا: إله العلمین! میں نے اسے کمل طور پر قبول کیا اور اسی دن عصر سے رات تک کا وقت ہی گز را تھا کہ انہوں نے تجر ہُ (ممنوعہ) کو کھا لیا۔ الله تعالیٰ نے انہیں اپنی رحمت میں لے لیا۔ آدم عَلَیْهِ السَّلام نے تو بہی اور صراطِ منتقیم پر گامزن ہوگئے۔



امانت ایمان ہے مشتق ہے، جو شخص امانتِ خداوندی کی حفاظت کرتا ہے،اللّٰہ تعالیٰ اس کے ایمان کا محافظ ہوتا ہے، فر مانِ نبوی ہے:اس کا ایمان نہیں جس میں امانت نہیں اور اس کا دین نہیں جس میں عہد کی پاسداری نہیں۔⁽³⁾

- 1 ترجمه كنز الايمان: اورآ وى في الله الله الاحزاب: ٧٢)
- الاحزاب: ۲۷) مقد الايمان: بشك وه اني جان كومشقت ميس و الني والابرانا دان مـ (ب۲۲ ، الاحزاب: ۷۲)

ایک شاعر کہتاہے: _

تبالمن رضى الخيانة مهيعا وازور عن صون الامانة جانبه

رفض الديانة والمروة فاغتدى تترى عليه من الزمان مصائبه

﴿1﴾خدااس كوبلاك كرے جوخيانت كواپنى پناه گاه بنائے اورامانت كى حفاظت سے بہلوتهى كرے۔

﴿2﴾اس نے دیانت ومروت کوخیر باد کہد دیا تواس پرز مانہ کے بے در بےمصائب آنے گئے۔

دوسراشاعرکہتاہے: _

اخلق بمن رضى الخيانة شيمة ان لايرى الا صريع حوادث

مازالت الارزاء ينزل بؤسها ابدا بغادر ذمة اوناكث

﴿1﴾جوخیانت کواپنی عادت بنا لے وہ اس لائق ہے کہ حوادثِ زمانہ کا شکار ہوجائے۔

﴿2﴾ جۇخص بدعېدى ياعېدشكنى كرتا ہے،اس پرمسلسل مصائب نازل ہوتے رہتے ہيں۔

رسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فرمايا: ''ميرى امت اس وقت تك بھلائى پررہے گى، جب تك وہ امانت كومال غنيمت اور صدقه كوتا وان نه سمجھے۔''(1)

آپ کا فرمان ہے:'' جس نے مختجے امین بنایا اس کوامانت لوٹادے اور جس نے تیرے ساتھ خیانت کی اس کے ساتھ خیانت کی اس کے ساتھ خیانت نہ کر۔''(2)

بخاری وسلم نے اس کوروایت کیا ہے: منافق کی تین نشانیاں ہیں ؛ جب وہ بات کرتا ہے جھوٹ بولتا ہے، وعدہ کرتا ہے تو خان ہے، وعدہ کرتا ہے تو خان بنایا جائے تو خیانت کرتا ہے۔ (3) یعنی جب کوئی اسے سی بات کاراز دار بناتا ہے تو دوسر بے لوگوں کو بتلا دیتا ہے یاامانت کو تا ہے انکار کردیتا ہے یاامانت کا تحفظ نہیں کر پاتا یا اسے استعال میں لاتا ہے وغیرہ ۔ حفظ امانت مقرب فرشتوں ، انبیاء کرام اور نیک بندوں کی صفت ہے، فرمان اللی ہے:

❶كنز العمال، كتاب الاخلاق ، قسم الاقوال...الخ، ٢٠/٢، الجزء الثالث، الحديث ١٠٥٥

^{2}ابوداود، كتاب الاجارة، باب في الرجل ياخذ حقه...الخ، ٤٠٤/٣، الحديث ٣٥٣٤

^{3} بخارى ، كتاب الايمان، باب علامة المنافق، ٢٤/١ ، الحديث ٣٣

إِنَّا اللَّهَ يَامُرُكُمْ أَنْ تُؤدُّوا الْإِلَمْ لَمْ إِلَّى آهُلِهَا لا (1)

الله تعالی تهبیں حکم دیتا ہےتم امانیتیں ان کے مالکوں کولوٹا ؤ۔

مفسرین کرام کہتے ہیں: اس آیت کریمہ میں بہت سے احکامِ شرعی موجود ہیں اور اس کا خطاب عمومی طور پرتمام والیوں (حاکموں) سے ہے، اس لئے والیوں کے لئے ضروری ہے کہ مظلوم کے ساتھ انصاف کریں، اظہارِ حق سے نہ رکیس کیونکہ بیان کے پاس امانت ہے، عمومی طور پر تمام مسلمانوں اور خصوصی طور پر تمیبوں کے مال کی حفاظت کریں۔ علماء کے لئے لازم ہے کہ وہ لوگوں کو دینی احکامات کی تعلیم دیں کیونکہ علماء نے اس بارِ امانت کو اٹھانے کا عہد کیا ہے۔ باپ کے لئے لازم ہے کہ وہ اپنی اولاد کے ساتھ حسنِ سلوک کرے اور اسے اچھی تعلیم دے کیونکہ بیاس کے پاس امانت ہے۔ فرمانِ نبوی ہے:

" کلکھ داع و کلکھ مسئول عن رعیت ہ" (2) تم میں سے ہرایک حاکم ہے اور ہرایک اپنی رعایا کے بارے میں جوابدہ ہے۔ (پستم سے تہراری رعیت کے بارے میں سوال کیا جائے گا۔)

" زَهْرُ الرِّيَاضِ " ميں ہے قيامت كے دن ايك انسان كوالله تعالى كى بارگاہ ميں پيش كياجائے گا، خداوند عَرُّوَجَلَّ فرمائے گا: تو نے فلال شخص كى امانت واپس كى تھى؟ بندہ عرض كر ہے گا: نہيں! رب تعالى تھم دے گا اور فرشتہ اسے جہنم كى طرف لے جائے گا۔ وہ اس امانت كى طرف گرے گا اور ستر طرف لے جائے گا۔ وہ اس امانت كى طرف گرے گا اور ستر سال كے بعد وہ اللہ پہنچے گا، پھر وہ امانت اٹھا كر اوپر آئے گا، جب وہ جہنم كے كنار ہے پر پہنچے گا تو اس كا پاؤں پھسل جائے گا اور وہ پھر جہنم كى گہرائى ميں گر جائيگا۔ اسى طرح وہ گر تارہے گا اور چر ھتا رہے گا يہاں تك كه نبى كريم صلَّى الله عليه وسلَّم كى شفاعت سے اسے رہِ ذو الجلال كى رحمت حاصل ہوجائے گى اور امانت كاما لك اس سے راضى ہوجائے گا۔

خ قرض کے سواشہید کا ہر گناہ معاف ہوجا تاہے کے

حضرت سلمدرَضِيَ اللّهُ عَنه روايت كرتے بيل كهم نبى صَلَّى اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم كى خدمتِ والا ميں حاضر من كدا يك جنازه

•توجمهٔ كنو لايمان: بِشك الله تهمين عمويتا بكامانتين جن كي مين انهين سير دكرو (ب٥، النساء: ٥٨)

2بخارى كتاب الجمعة، باب الجمعة في القرى والمدن، ٩/١، ٣٠٩١، الحديث ٩٩، ملخصًا

لایا گیا تا کہ نمازادا کی جائے حضور صلّی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَم نے بوچھا:اس پرکوئی قرض ہے؟ عرض کیا گیا: ہاں یارسول الله علیٰهِ وَسَلَم ! آپ نے پھر بوچھا:اس نے پھے چھوڑا ہے؟ عرض کی گئ: تین دینار، تب آپ نے نماز پڑھائی۔ایک اور جنازہ لایا گیا، آپ نے نماز پڑھائی، پھر تیسراجنازہ جنازہ لایا گیا، آپ نے بوچھا: اس پرقرض ہے؟ عرض کیا: یارسول الله! نہیں، آپ نے نماز پڑھائی، پھر تیسراجنازہ لایا گیا آپ نے بوچھا: کیا اس پرقرض ہے؟ صحابہ کرام دَخِی الله عَنْهُم نے عرض کیا: بی ہاں یارسول الله! آپ نے فرمایا: اس نے پچھال بھی چھوڑا ہے؟ لوگوں نے عرض کیا: یارسول الله نہیں، اس وقت آپ نے صحابہ کرام دَخِی اللهٔ عَنْهُم سے اس کی نماز پڑھاو، کین آپ نے نہیں پڑھی۔ (1) حضر تے قنادہ دَخِی اللهُ عَنْهُ کہتے ہیں: ایک جوان نے نبی ارشاد فرمایا: تم اس کی نماز پڑھاو، کین آپ نے نہیں راہِ خدا میں شاکروصا بر، ایمان اورامید تو اب لے کر آگ بڑھتا ہوا شہید کر میم صَلَّی اللهُ عَنْهُ وَسَلَّم سے رخصت ہو گیا تو ہوجاؤں تو الله تعالی میر سے گنا ہوں کو معاف کرد ہے گا؟ آپ نے فرمایا: ہاں! جب وہ جوان خدمت سے رخصت ہو گیا تو ہو جاؤں تا ہوں کو معاف کرد ہے گا؟ آپ نے فرمایا: ہاں! جب وہ جوان خدمت سے رخصت ہو گیا تو ہو نے اسے بلا کرفرمایا: الله تعالی قرض کے سواشہید کے ہرگناہ کو معاف کردیتا ہے۔ (2)

مِل کرکھانے کی فضیلت

ایک ہی وَسترخوان پرمِل کرکھانے والوں کومُبارَک ہوکہ حضرتِ سیدُ نا اَنَس بن مالِک وَضِیَ اللهُ عَنْه سے روایت ہے کہ الله عَزَّوجَلَّ کویہ بات سب سے زیادہ پسندہ کہوہ بندہ مؤمن کو بیوی بچوں کے ساتھ دستر خوان پر بیٹھ کرکھا تا دیکھے، کیوں کہ جب سب دسترخوان پر جمع ہوتے ہیں تو اللّٰه عَزَّوَجَلَّ اُن کورَحمت کی نگاہ سے دیکھا ہے اور جُدا ہونے سے پہلے کہا اُن سب کو بخش دیتا ہے۔

(تنبيه الغافلين ،ص٣٤٣)

1بخارى، كتاب الحوالات، باب ان احال دين الميت...الخ، ٧٢/٢، الحديث ٢٨٩ (بالتقديم والتاخير)

2شرح السنة، كتاب البيوع ، باب التشديد في الدين، ٤/٥٥٠، الحديث ٢١٣٧ (راوى ابوقتاده)

وہ مومن نحات مائیں گے جواپنی نمازخشوع وخضوع کے ساتھ

(باب 🕩

$\left\langle \underbrace{\mathsf{tolight}}_{\mathsf{col}} \right\rangle$ نماز میں خشوع و خضوع

الله تعالی کاارشادہے:

قَدُا فَلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ﴿ الَّذِينَ هُمُ فِي صَلاتِهِمُ

ف)افك\الهوفِمون\النِين@همِينصلاعِ (1) خُشِعُهُنَ ﴿

ادا کرتے ہیں۔

علاء نے فرمایا ہے کہ خشوع دومعنوں میں مستعمل ہے: بعض علاء نے اسے اُفعالِ قلب میں شار کیا ہے جیسے ڈر، خوف، اِنبساط وغیرہ اور بعض نے اسے اعضائے ظاہری کے افعال میں شار کیا ہے جیسے اطمینان سے کھڑا ہونا، بے تو جہی اور بے پروائی سے بچناوغیرہ ۔خشوع کے معنی میں ایک بیجی اختلاف ہے کہ بینماز کے فرائض میں سے ہے یا فضائل میں سے، جواسے فرائض نماز سے مجھتے ہیں ان کی دلیل بیجدیث ہے:

" لَيْسَ لِعَبْدٍ مِنْ صَلُوتِهِ إِلَّا مَا عَقَلَ " ⁽²⁾ بندہ کے لئے نماز میں پھے ہے جے وہ اچھی طرح سمجھتا ہے۔اور فرمانِ الٰہی ہے: " وَأَقِيمِ الصَّلُوةَ لِذِي كُمِي ﴾ " (⁽³⁾ اور غفلت ذكر کے مخالف ہے جبیبا کے فرمانِ الٰہی ہے:

تم غافلين ميں سے نہ بنو۔

وَلَاتَكُنُمِّنَ الْعُفِلِيْنَ ۞

(اس دلیل کوانہوں نے فرائض نماز میں شار کیا ہے)

بیہ قی نے محمد بن سیرین دَحْمَةُ اللهِ عَلیْه سے بیروایت بقل کی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم جب نماز ادافر ماتے تو آسان کی طرف نظر فرماتے ، تب بیرآیت از ل ہوئی۔ (⁶⁾ عبدالرزاق نے اس روایت میں اتنا اضافہ کیا ہے کہ

-ترجمه كنز الايمان: بِتُنكم رادكو پنچ ايمان والے جواني نماز ميں گر گراتے ہيں۔ (ب٨١، المؤمنون: ٢٠١)
 - 2 فيض القدير شرح الجامع الصغير، حرف الرا ، ٢١/٤، تحت الحديث ٤٤٠٥
 - ان الایمان: اورمیری یاد کے لئے نماز قائم رکھ۔ (پ٦١، طه: ١٤)
 - 4ترجمه كنز الايمان: ما فلول مين شهونا (پ٩،١٤عراف: ٥٠)
- 5 يعنى باب كى ابتدامين و كركرده آيت: قَدْا فَلْتَ الْمُؤْمِنُونَ أَالَّذِيْنَ هُمْ فِي صَلاتِهِمْ خْشِعُونَ أَلْ (ب٨١، المؤمنون: ٢٠١)
 -6

آپ کوخشوع کا حکم دیا گیاچنانچاس کے بعد سے آپ نے اپنی چشم ہائے مقدس کو سجدہ گاہ پر مرکوز فر مادیا۔ (1)
حاکم اور بیہ فی نے حضرتِ ابو ہر یرہ رَضِی اللّٰه عَنْه سے روایت کی ہے کہ حضور صَدًی اللّٰه عَدَیْهِ وَسَدَّم جب نماز پڑھتے
تو آسان کی طرف نظر فر ماتے ، جس پر بیر آبیت نازل ہوئی ، تب آپ نے اپنے سرِ اقدس کو جھکالیا۔ (2)
حضرتِ حسن رَحْمَةُ اللّٰهِ عَدَیْه کہتے ہیں کہ نبی کر میم صَدِّی اللّٰهُ عَدَیْهِ وَسَدَّم کا فر مان ہے: پانچ نمازوں کی مثال ایس ہے
جسے تم میں سے سی کے گھر کے سامنے ایک بڑی نہر بہتی ہواوروہ اس میں روزانہ پانچ مرتبہ سل کرتا ہوتو کیا اس کے جسم

بیسے میں سے می کے گھر نے سامنے ایک بڑی نہر بہی ہواوروہ اس بیں روزانہ پاچ مرتبہ مل کرتا ہولو کیا اس کے جم پر میل رہے گا؟ (3) لہذا جب حضورِ قلب اورخشوع سے نماز پڑھی جائے تو انسان کبیرہ گنا ہوں کے علاوہ تمام گنا ہوں سے پاک ہوجا تا ہے، بغیرخشوع کے نماز روکر دی جاتی ہے۔ فرمانِ نبوی ہے: جس نے دور کعت نماز پڑھی اوراس کے دل میں کسی قسم کا دنیاوی خیال نہیں آیاتواس کے گذشتہ تمام گناہ بخش دیئے جاتے ہیں۔ (4) (حضورِ قلب سے اگر نماز اداکی) فرمانِ نبوی ہے: نماز کی فرمنیت، حج کا حکم ، طواف و مناسکِ حج کا حکم اللّٰہ تعالیٰ کے ذکر کے لئے دیا گیا ہے، اب

اگران کی ادائیگی کے وقت دل میں ذکرِ خدا کی عظمت وہیب نہ ہوتو اس عبادت کی کوئی قیمت نہیں۔ ⁽⁵⁾ فرمان نبوی ہے: جسےنماز نے فخش اور برے کا موں سے نہیں روکا وہاللّٰہ تعالیٰ سے دور ہی ہوتا جائے گا۔ ⁽⁶⁾

ر موبِ بون ہے ، سے ماری میں اللہ وَ کے مَاہُ اللهِ عَلَيْهِ كا قول ہے: اے انسان! اگر توایینے مالک کے حضور بغیرا ذن کے حاضر ہونا

اور بغیر کسی ترجمان کے گفتگو کرنا چاہتا ہے تواس کے دربار میں داخل ہوجا، پوچھا گیا: یہ کیسے ہوگا؟ انہوں نے جواب دیا:

وضوكوكمل كرلے، پھرمسجد ميں چلا جااب توالله كەربار ميں آگيا، اب بغير كسى ترجمان كے تفتگوكر_

[●] ٢٦٦٠ المصنف لعبد الرزاق ، كتاب الصلاة ، باب رفع الرجل بصره الى السماء، ١٦٥/٢ ، الحديث ٣٢٦٧

^{2}المستدرك للحاكم ، كتاب التفسير ، باب شرح معنى الخشوع ، ١٥٣/٣ ، الحديث ٣٥٣٥

^{3} مسلم ، كتاب المساحد...الخ، باب المشي الي الصلاة...الخ، ص ٣٣٦، الحديث٢٨٣ ـ (٦٦٧) و ٢٨٤ ـ (٦٦٨)

^{4} ان الفاظ كساتر بميں صديث بين ملى البتہ بخارى شريف كى ايك صديث بين تحية الوضو مے متعلق بيف بيان بهو كى ہے جس بين آپ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كافر مان ہے: مَنْ تَوَضَّا نَحُو وُضُوئِى هَذَا ، ثُمَّ صَلَّى رَكُعَتَيْنِ ، لاَيُحَدِّثُ فِيهِ مَا نَفُسَهُ ، غُفِر لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. (بحارى، كتاب الوضوء، باب الوضوء ثلاثًا ثلاثًا، ٧٨/١ الحديث ٩٥١)

^{5}ابوداود، كتاب المناسك، باب في الرمل، ٢ / ٢٠٠، الحديث ١٨٨٨ و قوت القلوب، ج٢،ص١٦٢

^{6}المعجم الكبير، ١١٠٢٥، الحديث ١١٠٢٥

حضرتِ عائشہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا کا ارشادہے: ہم اور حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم آپس میں باتیں کرتے تھے، جب نماز کا وقت آجا تا تواللّٰه تعالیٰ کی عظمت کی وجہ ہے ہم ایسے ہوجاتے جیسے ایک دوسرے کو پہچانتے بھی نہیں۔ (1)
فر مانِ نبوی ہے: اللّٰه تعالیٰ اس نماز کی طرف نہیں دیکھا جس میں انسان کا دل اس کے بدن کے ساتھ شاملِ عبادت نہیں ہوتا۔ (2)

حضرت ابراہیم عَلیْهِ السَّلَام جب نماز کے لئے کھڑے ہوتے تو کافی فاصلے سے ان کے دل کی دھڑکن سی جاتی ، حضرت ِ سعید تنوخی رَ لِے مَقَالِلَهِ عَلیْه جب نماز پڑھتے تو ان کے آنسوان کے چہرے اور داڑھی پرگرتے رہتے ۔ حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے ایک آدمی کود یکھا تو حالت نماز میں اپنی داڑھی سے کھیل رہا تھا۔ آپ نے فرمایا: اگراس کے دل میں خشوع ہوتا تو اس کے اعضاء پرسکون ہوتے۔ (3)

خِرْت على رَضِيَ اللهُ عَنْه كَي ثماز ﴿

جب نماز کاوفت آتا تو حضرتِ علی رَضِیَ اللهٔ عَنه کے چبرے کارنگ متغیر ہموجا تا اور آپ پرلرزہ طاری ہوجا تا، پوچھا گیا: اے امیر المومنین! آپ کو کیا ہو گیا ہے؟ آپ نے فر مایا: الله تعالیٰ کی اس امانت کی اوائیگی کا وفت آگیا جے الله تعالیٰ نے آسان وزمین اور بیہاڑوں پرپیش کیا تھا مگر انہوں نے معذوری ظاہر کر دی تھی اور میں نے اے اٹھالیا۔

روایت ہے کہ جب علی بن حسین رَضِیَ اللّهُ عَنهُ مَا وضوکر تے تو ان کارنگ متغیر ہموجا تا، گھر والے کہتے: آپ کو وضو کے وفت کیا تکلیف لاحق ہموجا تی ہوجا تی جواب دیتے: جانتے نہیں ہومیں کس کی بارگاہ میں حاضر ہمونے کی تیاری کر ماہوں۔

حضرت حاتم اصم سے ان کی نماز کے متعلق سوال کیا گیا ،انہوں نے کہا: جب نماز کا وقت آ جا تا ہے ، میں پوری

^{1} فيض القدير، حرف الهمزة ، ١١٤/٣، تحت الحديث ٢٨٢١

الترغيب والترهيب ، كتاب الصلاة، الترهيب من عدم اتمام الركوع ... الخ، ١/٤٤٦، الحديث ٧٧٣ و روح البيان،
 البقرة، تحت الآية: ٣٤، ١/٢٢١ و طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٢٩٤/٦

 ^{3} كنزالعمال ، كتاب الصلاة ، الباب الثاني ... الخ ، مكروهات متفرقة ، ٧/٤ ٩ ، الجزء الثامن ، الحديث ٥ ٢ ٥ ٢ ٢

طرح وضوکر کے اس جگد آ جاتا ہوں جہاں میں نماز پڑھنا چاہتا ہوں، جب میر بے اعضاء پرسکون ہوجاتے ہیں تو میں نماز کے لئے کھڑا ہوتا ہوں۔اس وقت کعبہ کو اپنے سامنے، بل صراط کو قدموں کے نیچے، جنت کو دائیں، دوزخ کو بائیں، ملک الموت کو پیچھے اور اس نماز کو اپنی آخری نماز سمجھ کرخوف وامید کے درمیان کھڑا ہوجا تا ہوں دل سے تصدیق کرتے ہوئے تکبیر کہتا ہوں، ٹھہر کھہر کر تلاوت کرتا ہوں، تواضع کے ساتھ ڈکوع کرتا ہوں، خشوع کے ساتھ سجدہ کرتا ہوں، بائیں دیرکو بچھا تا اور دائیں کو کھڑا کرتا ہوں اور سرایا خلوص بن جاتا ہوں مگرین ہیں جانتا کہ میری نماز قبول ہوئی یانہیں۔

حضرت ابن عباس رَضِي اللهُ عَنْهُمَا كا قول ہے: خضوع وخشوع كى دوركعتيں سياه دل والے كى سارى رات كى عبادت سے بہتر ہيں۔

فر مانِ نبوی ہے: اخیر زمانہ میں میری امت کے کچھا بیسے لوگ ہوں گے جومسجدوں میں حلقہ بنا کر بیٹھیں گے، دنیا اور دنیا کی محبت کا ذکر کرتے رہیں گے، ان کی مجالس میں نہ بیٹھنا الله تعالیٰ کوان کی کوئی ضرورت نہیں ہے۔(1)

منازيين چوري

حضرت حسن دَضِیَ اللّهُ عَنُه کہتے ہیں، نبی کریم صَلّی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے ارشاد فرمایا: کیا میں تم کو بدترین چور بتا وَں؟ صحابۂ کرام دَضِیَ اللّهُ عَنْهُم نے عرض کیا: حضوروہ کون ہیں؟ آپ نے فرمایا: وہ نماز پُڑانے والے ہیں۔عرض کیا گیا: حضور نماز میں چوری کیسے ہوتی ہے؟ آپ نے فرمایا: وہ رکوع اور سجدہ صحیح طور پرنہیں کریں گے۔(2)

فرمانِ نبوی ہے: قیامت کے دن سب سے پہلے نماز کے متعلق پوچھاجائے گا، اگر نمازیں پوری ہونگی توحساب آسان ہوجائے گا، اگر نمازیں کچھ کم ہونگی تواللہ تعالی فرشتوں سے فرمائے گا: اگر میرے بندے کے پچھ نوافل ہوں تو ان سے ان نمازوں کو بورا کردو۔(3)

^{1}المعجم الكبير، ١٩٩/١، الحديث ١٠٤٥٢

^{2} مسند احمد، مسند الانصار، حديث ابي قتادة الانصاري، ٣٨٦/٨، الحديث ٢٢٧٠٥ (عن ابي قتاده)

الحديث ١٦٤ (بتغير قليل و ملخصًا)الحديث ٨٦٤ (بتغير قليل و ملخصًا)

مكاشفة القلوب }

فرمانِ نبوی ہے: بند کے لئے دور کعت نماز پڑھنے کی تو فیق سے بہتر کوئی اور انعام نہیں ہے۔ (1)
حضرتِ عمر فاروق اعظم دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ جب نماز پڑھنے کا اِرادہ کرتے تو آپ کا جسم کا پنے لگتا اور دانت بجنے
لگتے۔ آپ سے اس بارے میں پوچھا گیا تو آپ نے کہا: امانت کی ادائیگی اور فرض پورا کرنے کا وقت قریب
آگیا ہے اور میں نہیں جانتا کہ اسے کیسے اداکروں گا۔

رکایت 🏿

حضرتِ خَلَف بن آثیوب رَ حُمَةُ اللّهِ عَلَيْه نماز میں سے کہ آنہیں کسی جانور نے کاٹ لیا اورخون بہنے لگا مگر آنہیں محسوس نہ ہوا یہاں تک کہ ابن سعید باہر آئے اور انہوں نے آپ کو بتایا اورخون آلود کپڑ ادھویا، پوچھا گیا: آپ کو جانور نے کاٹ لیا اورخون بھی بہا مگر آپ کومسوس نہ ہوا؟ آپ نے جواب دیا: اسے کیسے محسوس ہوگا جوال لئے دُوالْہ جَلال کے سامنے کھڑ اہو، اس کے پیچھے ملک الموت ہو، بائیں طرف جہنم اور قدموں کے نیچے بل صراط ہو۔

حضرت عمروبن ذررَ حُمَةُ اللّهِ عَلَيْه جليل القدر عابداور زابد تقى ان كے ہاتھ ميں ايك ايساز تم پڑگيا كه اَطِبَّاء نے كہا: آپ كورسيوں سے جکڑے بغير ايسا كرنا ناممكن ہے، كہا: آپ كورسيوں سے جکڑے بغير ايسا كرنا ناممكن ہے، آپ نے كہا: الله نامكن ہے، آپ نے كہا: الله نامكر و بلكہ جب ميں نماز شروع كروں ، تب كاٹ لينا چنا نچہ جب آپ نے نماز شروع كى تو آپ كا ہاتھ كاٹ ليا گيا مگر آپ كومسوں بھى نه ہوا۔

☆.....☆.....☆

1المعجم الكبير ، ١/١٥١، الحديث ٢٦٥٦

اب 15)

﴿ اَمُرِبِا لُمَعُرُونَ وَنَهْى عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ

(نیکی کرنے اور برائی سے بیخے کا حکم)

حضرت انس بن ما لک رَضِیَ اللهُ عَنْه کہتے ہیں: حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے ارشاد فر مایا کہ جب کوئی بندہ مجھ پر
ایک مرتبہ درود بھیجنا ہے تواللہ تعالیٰ اس کی سانسوں سے ایک سفید با دل پیدا کرتا ہے، پھراس با دل کو بحرحت سے
استیفادہ کرنے کا حکم ملتا ہے، اس کے بعدا سے برسنے کا حکم ملتا ہے، اس کا جوقطرہ زمین پر پڑتا ہے اس سے الله تعالیٰ
سونا، جو پہاڑوں پر پڑتا ہے اس سے جاندی بیدا کرتا ہے اور جوقطرہ کسی کا فر پر پڑتا ہے اسے ایمان کی دولت عطا ہوتی
ہے۔ (1)

فرمانِ الهي ہے:

كُنْتُمُ خَيْرَ أُمَّةٍ ٱخْرِجَتُ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُ وْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُوْمِنُونَ بِاللَّهِ (2)

حضرت کلبی رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه کا قول ہے کہ اس آیت میں امتِ محمد صَلَّى الله علیه وسلَّم کی تمام دوسری امتوں پر فضیلت کا بیان ہے اور امت اسلامی عَلَی الاِطلاق تمام اُمَمْ ہے بہتر ہے اور دیگر امتوں کی بہنست اس کی ابتداء وانتہاء دونوں بہتر ہیں اگر چہذاتی طور پر پچھ ہستیاں بہت زیادہ فضیلت و کمال کی ما لکتھیں جیسے صحابہ کرام دِحُوانُ اللهِ عَلَیْهِمُ اَجْمَعِیْنَ کے متعلق احادیث موجود ہیں۔

اُ خُوجَتْ كامعنى ہے: جمیع اوقات میں لوگوں کے نفع اور خیر خواہی کے لئے متاز حیثیت دے کر انہیں بھیجا گیا۔ فرمانِ باری ہے: ' تَأَمُّرُوْنَ بِالْمَعَرُّ وَفِ وَتَنْهَدُونَ عَنِ الْمُنْكَرِوَتُوْ وَتُوْمِنُونَ بِاللهِ '' جمله مُتا زِهَه ہے، اس

....**①**

ورالله عدان بتم بهتر جوان سب امتول میں جولوگول میں ظاہر ہوئیں ، بھلائی کا تھم دیتے ہواور برائی سے منع کرتے ہواور الله برایمان رکھتے ہو۔ (پ ۱۰۶ کا عدران: ۱۱۰) میں به بیان کیا گیاہے کہ امت اسلامیہ کی فضیلت اس لئے ہے کہ وہ نیکی کا حکم دیتے ہیں، برائی سے رو کتے ہیں اور الله پر ایمان رکھتے ہیں، اگر وہ اس راستے سے ہٹ جا ئیں تو ان کی فضیلت باقی نہیں رہے گی، وہ کا فروں سے جہاد کرتے ہیں تا کہ وہ اسلام لے آئیں، اس لئے انہیں غیروں پرتر جیجے دی گئی، فرمانِ نبوی ہے:''بہترین انسان وہ ہے جولوگوں کو فقع پہنچا تا ہے اور بدترین انسان وہ ہے جولوگوں کو نقصان پہنچا تا ہے۔(1)

'' تُوَّمِئُوْنَ بِاللهِ ''وهالله کی توحید کی تصدیق کرتے ہیں اور اس پر ثابت قدم رہتے ہیں اور محمد صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کی نبوت کا اقر ارکرتے ہیں کیونکہ جس نے حضور صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کی نبوت کو نبه مانا ، اس نے الله تعالی کونہیں مانا ، اس لئے کہ وہ حضور کو عطا کر دہ مجز و بیاں آیات کو الله کی طرف سے نہیں سمجھتا ہے۔

فرمانِ نبوی ہے: تم میں سے جوکوئی کسی برائی کودیکھے اسے چاہئے کہ توت بازو سے مٹادے اگراس کی طاقت نہ ہوتو زبان سے، اگر یہ بھی نہ کر سکے تو اسے دل میں بُر اسمجھے اور یہ کمزور ترین ایمان ہے۔''(2) یعنی بیا بمان والوں کا کمزور ترین فعل ہے۔

بعض نے بیکہاہے: ہاتھوں سے برائی کاختم کرنا حاکموں کے لئے ، زبان سے برائی کےخلاف جہاد کرناعلاء کے لئے اور دل میں بُر آسمجھناعوام کے لئے ہے۔

بعض کا قول ہے: جو شخص جس قوت کا مالک ہواہے وہی قوت اس کے مٹانے میں صرف کرنی جاہے اور برائی کو مٹانا جاہے نے فرمانِ الٰہی ہے:

وَتَعَاوَنُوْاعَلَى الْبِرِوَ الشَّقُولى "وَلَا تَعَاوَنُوْاعَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدُوانِ (3)

یہاں" تعکاوَ نُوا"سے مرادنیکی کی ترغیب دینا، نیکی کے راستوں کوآسان کرنا اور شروفساد کو حسبِ طاقت بند کرنے کی کوشش کرنا ہے۔

[•] العمال ، كتاب المواعظ والرقائق...الخ ، قسم الاقوال...الخ، ٥/٨ ٥ ، الجزء السادس عشر، الحديث ١٤١ ٤ ٤ و الموطاء لامام مالك ، ٤/٢ ، ٤ ، الحديث ١٧١٩

^{2}مسلم ، كتاب الايمان، باب بيان كون النهي عن ...الخ، ص ٤٤، الحديث ٧٨ ـ (٤٩)

الایمان: اورنیک اور پر بیزگاری پرایک دوسرے کی مدد کرواور گناه اورزیا دقی پر باہم مدوندو۔ (پ۲، المائدة: ۲)

ایک حدیث شریف میں ارشاہ ہوا: جس نے کسی خلاف سنت بات پیدا کرنے والے کو جھڑک دیا الله تعالی اس کے دل کوایمان واطمینان سے بھرد سے گا اور جوایشے خص کی تو بین (1) کرتا ہے الله تعالی اسے قیامت کے دن بے خوف کرد سے گا اور جس نے نیکی کا تھم دیا اور برائیوں سے روکاوہ زمین پرالله تعالی ، اس کی کتاب اور اس کے رسول صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا خلیفہ ہے۔ (2)

حضرت ِ حذیفه رَضِیَ اللهٔ عَنه کا قول ہے: عنقریب ایک ایساوقت آنے والا ہے کہلوگوں کو نیکی کا حکم دینے والے اور برائیوں سے روکنے والے مؤمن سے ،گدھے کالاشہ زیادہ پسندیدہ ہوگا۔

حضرتِ موسی عَدَیهِ السَّلام نے عرض کیا: اے ربّ! اس شخص کا''بدلہ'' کیا ہوگا جس (3) نے اپنے بھائی کو بلایا، اسے نیکی کا تھم دیا اور برائی ہے روکا؟ ربّ نے فرمایا: اس کے ہرکلمہ کے بدلے سال کی عبادت لکھ دی جاتی ہے اور میری رحمت کوا ہے جہنم میں جلاتے ہوئے شرم آتی ہے۔

حدیث قدس ہے: رب تعالی فرما تا ہے: اے انسان! اس جیسا نہ بن جوتو بہ میں تاخیر کرتا ہے، امیدیں طویل رکھتا ہے اور بغیر کسی عمل کے آخرت کی طرف لوٹتا ہے، باتیں نیکوں کی کرتا ہے، عمل منافقوں جیسا کرتا ہے، اگراہے دیا جائے تو قناعت نہیں کرتا، اگر نہ دیا جائے تو صبر نہیں کرتا، وہ دوسروں کو برائیوں سے روکتا ہے مگر خوذ نہیں رُکتا۔ (4)

م اخیرز مانے کے بارے میں حضور کاارشاد کے

اس جگدایک حدیث بیان کرنامناسب ہے، حدیث بیان کرنے سے پہلے اس کے راوی حفزت علی رَضِیَ اللهُ عَنْه فَيْ اللهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْه فَيْ اللهُ عَنْهُ عَنْهُ وَلَا اللهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ اللهُ عَنْهُ عَنْهُ اللهُ عَنْهُ وَلَيْ عَنْهُ عَنْهُ اللهُ الل

- الله عليه وَسَلْم كَاتُو مِين فَرْج بِ كَابِاني يا پيرو ہو، حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلْم كَاتُو مِين خودكر به يا تو مِين كر نيوالوں كا پيرو ہو۔
 طرح ديگر گرام يوں كا بانى ہو يا پيرو ہو۔
- 2 يكام علماء اورائل علم كاب جائل كانبيل كنز العمال، كتاب الاخلاق ... الخ، قسم الاقوال ... الخ، ٢٨/٢ الجزء الثالث، الحديث ٩٦/٢ و و فردوس الاخبار ، ٢٩٨/٢ و و فردوس الاخبار ، ٢٩٨/٢ و الحديث ٣١٨/١ و الحديث ٣٢٤٣
- 4كنز العمال، كتاب المواعظ والرقائق...الخ، قسم الاقوال...الخ، ٨٦/٨، الجزء السادس عشر، الحديث: ٢٢٢٤ و فيه هذا قول على رضى الله عنه

کرنابہت مشکل ہے، پھر حدیث بیان فرمائی: میں نے حضورانور صَلَّی الله علیه وسلّم کو یفرماتے ہوئے سُنا ہے کہ اخیر زمانے میں نوعمراور کم سمجھ لوگوں کی ایک جماعت (1) نکلے گی، باتیں بظاہرا تھی کہیں گے لیکن ایمان ان کے طق سے نیخ نہیں اتر ب گا، وہ دین سے ایسے نکل جا تا ہے، پس تم انہیں جہاں یا ناقش کر دینا کہ قیامت کے دن ان کے لئے بڑا اجروثواب ہے۔ (2) ربحاری، ج۲، ص ۲۲٪)

ر مومن کے لئے ضروری ہے کہ دوسروں کو نیکی کا حکم دیتے وقت خود بھی عمل کر ہے گا

فرمانِ نبوی ہے کہ میں نے معراج کی رات ایسے آدمی دیکھے جن کے ہونٹ آگ کی قینچیوں سے کاٹے جارہے سے، میں نے جبریل سے پوچھا: یہ کون لوگ ہیں؟ انہوں نے کہا ہی آپ کی امت کے خطیب ہیں جولوگوں کو نیکی کا تھم کرتے ہیں گراپے آپ کو بھول جاتے ہیں۔ (3) فرمانِ الہی ہے:

کیاتم نیکی کالوگوں کو حکم دیتے ہواور اپنے آپ کو بھلاتے ہو حالانکہ تم قرآن پڑھتے ہوکیاتم عقل نہیں رکھتے۔ ٵؾؙٲؙڡؙڒؙۏڹٳڶؖؾۜٳڶؠڗؚۅؾؘؽؗڛٛۏڹٲؽؙ۠ڝؙۘڬؙؠٝۉٵؽؙؾؙؠ ؾؘؿؙڒؙؿٵڶڮۺ٦ؗٵؘڡؘؘڵٳؾۼۊؚڵۏڽ۞⁽⁴⁾

لہذامومنوں کیلئے ضروری ہے کہ وہ نیکی کا حکم دیں برائیوں سے روکیس مگراپنے آپ کوبھی نہ بھولیں جیسا کہ فرمانِ الہی ہے:

مومن مر داورمون عورتیں ایک دوسرے کے رفیق ہیں نیکی کا تعلق میں اور برائی سے روکتے ہیں اور نماز اداکرتے ہیں

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنْتُ بَعْضُهُمُ اَوْلِيَا عُبَعْضٍ مُ يَاْمُرُونَ بِالْمَعْرُ وْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِو

يُقِيمُونَ الصَّلوةَ (5)

- ںایسی جماعت سے بچناچاہئے جن کی نشانی ناسمجھ لوگ اوران کے ہمراہ نو جوان بھی ہوں گے اور تبلیغ کے نام پرگشت کرتے ہوں گے ،اس جماعت کی علامہ ارشد القاور کی (رَحْمَهُ اللهِ عَلیْهِ) نے اپنی کتاب " تبلیغی جماعت "کے آخر میں ۵احدیثوں کی روشنی میں نشاند ہی فرمائی ہے۔
 - 2 بخارى، كتاب استتابة المرتدين...الخ ، باب قتل الخوارج...الخ، ٢٨٠/٤ الحديث ٢٩٣٠
 - 3 مسند امام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك بن النضر، ٢٦١/٤، الحديث ١٣٤٢٠
 - ستر جمهٔ کنز الایمان : کیالوگوں کو بھلائی کا تھم دیتے ہواوراپنی جانوں کو بھولتے ہوحالانکہ تم کتاب پڑھتے ہوتو کیا تمہیں عقل نہیں۔ (ب\البقرة: ٤٤)
- 5تو جمه کنز الایمان :اورمسلمان مرداورمسلمان عورتیں ایک دوسرے کے رفیق ہیں۔ بھلائی کا حکم دیں اور برائی ہے منع کریں اورنماز قائم کھیں۔(پ ۱۰ اللتو بة ۷۱)

اس آیت میں اللہ نے مومنوں کی بیصفت بیان کی وہ نیکی کا حکم دیتے ہیں۔اب جو نیکی کا حکم دینا بند کردےوہ اس مدوح جماعت میں سے نہیں ہیں اور اللہ تعالیٰ نے ان قوموں کی مذمت کی ہے جنہوں نے امر بالمعروف کوچھوڑ دیا تھا چنانچے فرمانِ الہی ہے:

كَانُوْالاَيَتَنَاهَوْنَعَنْمُّنْكَرٍ فَعَلُوْلًا لَبِشْسَمَا كَانُوْايَفْعَلُوْنَ ۞

حضرت ابوالدرداء رضی الله عنه سے مروی ہے انہوں نے کہا: نیکی کا تھم دیتے رہنا اور برائی سے روکتے رہنا نہیں توالله تعالیٰتم پراییا حاکم مقرر کردیگا جوتہارے بزرگوں کا احتر امنہیں کرے گائتہارے بچوں پر جمنہیں کرے گائتہارے بوٹ سے مگران کی مدونہیں کی جائیگی اور وہ بخشش بڑے بلائیں گے لیکن انکی بات نہیں مانی جائے گی ، وہ مددگار طلب کریں گے مگران کی مدونہیں کی جائیگی اور وہ بخشش طلب کریں گے مگرانہیں نہیں بخشا جائے گا۔ (2)

ام المؤمنین حضرتِ عائشہ رَضِیَ اللهٔ عَنْها سے مروی ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا:الله تعالی نے قرید والوں پر عذاب بھیجا،ان میں استی ہزارا یسے بھی تھے جنہوں نے انبیاء کی طرح نیک عمل کئے تھے، پوچھا گیا: یہ کسے ہوا؟ آپ نے فر مایا: وہ الله کے لئے (الله کی نافر مانی کے سلسلہ میں) کسی کو بُر انہیں شجھتے تھے اور نہ ہی وہ نیکی کا حکم دیتے اور برائیوں سے روکتے تھے۔(3)

خرزمین پرشهداء سے بلندمر تنه مجاہدین

حضرتِ اَلُووْ رَغِفَّارِی رَضِیَ اللهٔ عَنه کہتے ہیں کہ حضرتِ ابو بکرصدین رَضِیَ اللهٔ عَنه نے حضور صَلَّی اللهٔ عَلیه وَسَلَّم الله عَلیه الله عَلیه الله عَلیه الله عَلیه الله عَلیه وَسَلَم الله عَلیه و سَلَم الله و سَلَم الله عَلیه و سَلَم الله عَلیه و سَلَم الله و

-توجمه كنز الايمان: آليس ميس ايك دوسر كوندروكة ، ضرور بهت بى بُر كام كرتے تقے (ب ٢٠ المائدة : ٧٩)
 - 2الكشف والبيان ، ٢٣/٣ و بريقة محمودية في شرح طريقة محمدية ،٢٤٨/٣٠
- ٣٢١/٦ وطبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٦٠١، ٢٠١٢ وطبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٣٢١/٦

صدیقِ اکبر رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ نے پوچھاحضوروہ کون لوگ ہیں؟ آپ نے فر مایاوہ نیکی کا حکم کرنے والے، برائیوں سے رو کئے والے، اللّٰه کے لئے دشمنی اور اللّٰه کے لئے محبت کرنے والے ہیں۔

پھرفر مایا: مجھے اس ذات کی قسم! جس کے قبضۂ قدرت میں میری جان ہے، ایسا شخص جنت میں تمام بالا خانوں سے اوپر، یہاں تک کہ شُہداء کے بالا خانوں سے بھی اوپرایک بالا خانے میں ہوگا ہر بالا خانے کے تین دروازے ہوں گے، یا قوت اور سبز زُمُرُّد کے، ہر دروازے پروشنی ہوگی۔ تین سو پاکدامن حوروں سے ان کی شادی کی جائے گی، جب وہ کسی ایک حور کی طرف متوجہ ہوگا، وہ کہے گی: تہمیں وہ دن یا دہے جبتم نے نیکی کا حکم دیا تھا اور بُر ائی سے روکا تھا؟ دوسری کہے گی: آ پووہ جگہ یا دہے جہال آ پ نے نھی عن المنکر اور امر بالمعدوف کیا تھا؟ (1)

روایت ہے کہ اللہ تعالی نے موسی عَلیْهِ السَّلام سے فر مایا: تم نے بھی میرے لئے بھی عمل کیا ہے؟ موسی عَلیْهِ السَّلام نے عرض کیا: یاالله! میں نے تیرے لئے نمازیں پڑھیں، روزے رکھے، صدقات دیئے، تیرے آگے جدے کئے، تیری حدی، تیری کتاب کو پڑھا اور تیراذ کر کرتا رہا۔

رب تعالیٰ نے فرمایا: اے موکیٰ! نماز تیری دلیل، روزہ تیرے لئے ڈھال، صدقہ تیرے لئے سایہ ہیج تیرے لئے جنت میں حوروقصوراور میراذ کر تیرانور ہے۔ بتا تونے میرے لئے کئے جنت میں حوروقصوراور میراذ کر تیرانور ہے۔ بتا تونے میرے لئے کیا عمل کیا ہے؟

موسی عَلَيْهِ السَّلام نے عرض کی: اے ربِ ذوالجلال! مجھے بتا! وہ کونساعمل ہے جوہیں تیرے لئے کروں؟ رب نے فرمایا: تو نے بھی میری وجہ سے کسی سے محبت کی؟ تو نے میری وجہ سے بھی کسی سے دشتنی رکھی؟ تب موسی عَلَیْهِ السَّلام سمجھ گئے کہ سب سے اچھاعمل الله کے لئے محبت اور الله کے لئے دشتنی (2) رکھنا ہے۔

حضرت ابوعُبَيده بن الجَرَّاح رَضِى اللهُ عَنُه كہتے ہيں: ميں نے سركار رسالت مآب صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے بوچھا: يارسول الله! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) الله كى بارگاه ميں كون سے شہيدكى زياده عزت ہے؟ آپ نے فرمايا: وه جوان جو ظالم حاكم كے سامنے گيا اور اسے نيكى كاحكم ديا اور برائى سے روكا اور اسى پاداش ميں اسے قل كرديا گيا اور اگر اسے قل نہيں كيا

^{1}احياء علوم الدين، ٢/٢ م و طبقات الشافية الكبرى، ٣٢١/٦

^{2}الله اوراس كے حبيب صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كے دوست سے دوئتی اوران كے گستاخ سے دشنی بهترين ممل ہے۔

گیا تووہ جب تک زندہ رہے گا اس کے گناہ نہیں لکھے جائیں گے۔⁽¹⁾

حضرت حسن بصری دَحْمَةُ اللهِ عَلَیْه کہتے ہیں ؛حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: میری امت میں سب سے افضل شہید و شخص ہے جو ظالم حاکم کے پاس گیا، اسے نیکی کا حکم دیا اور برائی سے روکا اور اسی وجہ سے اسے تل کر دیا گیا، ایسے شہید کا ٹھکا نہ جنت میں حضرت جمزہ اور حضرت جعفر دَضِیَ اللهُ عَنْهُ مَا کے درمیان ہوگا۔ (2)

الله تعالی نے حضرتِ یُوشَع بن بُون عَلَیْهِ السَّلام کی طرف وحی کی که میں تنہاری امت کے جپالیس ہزار نیکوں اور ساٹھ ہزار بُروں کو ہلاک کر نیوالا ہوں ۔حضرت یُوشَع عَلَیْهِ السَّلام نے عرض کی: نیکوں کا کیا قصور ہے؟ ربّ نے فر مایا: انہوں نے میرے دشمنوں کودشمن نہیں شمجھا اور بیہ باہم میل ملاپ سے رہنے رہے۔

حضرت الله عَنه كہتے ہيں ہم نے كہا: پارسول الله! كيا ہميں نيكى كا،اس وقت حكم كرنا چاہئے جب ہم مكمل طور پر نيكيوں پر عمل كريں اور برائيوں سے كناره ش ہوجا كيں؟ طور پر نيكيوں پر عمل كريں اور برائيوں سے اس وقت روكنا چاہئے جب ہم مكمل طور پر برائيوں سے كناره ش ہوجا كيں؟ حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم نے فرمایا: تم نيكيوں كا حكم ديتے رہوا كرچة تم مكمل طور پر عمل نه كرسكوتم برائيوں سے روكتے رہوا اگر چة تم بتام وكمال اس سے كناره كش نه ہوسكے ہو۔ (3)

ایک صالح شخص نے اپنے بیٹوں کونصیحت کی کہ جبتم میں سے کوئی نیکی کا تھم دینا چاہے تواسے چاہئے کہ اپنے نفس کو صبر کا عادی بنائے اور الله سے تواب کی اُمیدر کھے کیونکہ جو شخص الله پر اعتماد کرتا ہے وہ بھی تکالیف میں مبتلانہیں ہوتا۔

☆.....☆.....☆

^{2}جامع الاحاديث، ٢٧/٢، الحديث ٣٩٤١، ملخصًا

^{3}المعجم الاوسط ، ٥/٧٧، الحديث ٦٦٢٨

اب 16)

عداوتِ شيطان ﴿

ہرمومن کے لئے ضروری ہے کہ وہ عُلَا اور صُلَحا ہے محبت رکھے، اُن کی محفلوں میں بیٹھتار ہے، جو کچھ نہ جا نتا ہووہ اُن سے بوچھتار ہے، اُن کی نصائح سے بہراً ندوز ہوتار ہے برے کا موں سے گریزاں رہے اور شیطان کواپنادشمن سمجھے جبیبا کہ فرمانِ الٰہی ہے:

بے شک شیطان تمہاراد ثمن ہےاسے دشمن ہی بناؤ (یعنی الله کی

إِنَّ الشَّيْظِنَ لَكُمْ عَنُوٌّ فَاتَّخِنُّ وَلَا عَنُوًّا السَّيْظِنَ لَكُمْ عَنُوًّا اللَّهِ (1)

عبادت کرکے)۔

یعنی الله تعالی کی عبادت کر کے اس سے دشمنی رکھواور الله تعالی کی نافر مانی میں اس کی پیروی نہ کرواور صدقِ دل سے ہمیشہ اپنے عقائد واعمال کا اس سے تحفظ کرو، جب تم کوئی کام کروتو اچھی طرح سمجھلو کیونکہ بسا اُوقات اَعمال میں ریا داخل ہوجا تا ہے اور برائیاں اچھی نظر آتی ہیں، یہ سب شیطان کی وجہ سے ہوتا ہے لہٰذا اس کے خلاف الله سے مدوطلب کرتے رہو۔

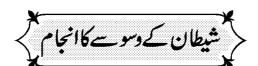
حضرت عبدالله بن مسعود دَضِى الله عَنه كہتے ہيں :حضور صَلَّى الله عَليْهِ وَسَلَّم نے ہمارے سامنے ایک کیر کھینچی اور فر مایا:
ہیالله كاراستہ ہے، پھر آپ نے اُس کیبر کے دائیں بائیں کچھاور کیبریں کھینچیں اور فر مایا: پیشیطان کے راہتے ہیں جن
کے لئے وہ لوگوں کو بلاتار ہتا ہے اور آپ نے ہی آئی کریمہ تلاوت کی:

وَ ٱنَّاهٰنَاصِرَاعِيُ مُسْتَقِيْمًا قَالَّبِعُوهُ ۚ وَلاَ تَتَّبِعُواالسُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۗ

حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نِي جمار ب لئي شيطان كي كثير راستول كوبيان فرمايا (تاكه بم اس كفريب ميس نه آئيس)-

- ۱۰۰۰۰ تو جمه کنو الایمان: بشک شیطان تبهارادشمن به توتم بھی اے دشمن مجھو۔ (پ۲۲ مفاطر: ۲)
- استوجمهٔ کنزالایمان: اور بیک بید ہے میراسیدهاراستة تواس پرچلواوراً ورراییں نه چلوکتهبیں اس کی راہ سے جدا کردیں گی۔

(پ٨،الانعام:٥٠١)مسند احمد ، مسند عبدالله بن مسعود، ٢/٣٢/٢ ، الحديث ٢٤٢٤



حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم عصم وى بى كه بني اسرائيل كايك زابد كوشيطان نے راوراست سے ہٹانے كے لئے یہ جال چلی کہا بک لڑی کو پیٹ کی بیاری میں مبتلا کردیا اوراس کے گھر والوں کے دلوں میں خیال ڈال دیا کہاس بیاری کاعلاج زامد کے سواکہیں بھی ممکن نہیں ہے چنانچہ وہ لوگ زامد کے پاس آئے مگراس نے لڑکی کواییے ساتھ رکھنے ہے اٹکار کردیالیکن ان کی بار بار کی گزارشات براس کا دل پسیج گیا اوراس نے لڑکی کوعلاج کے لئے اپنے پاس تھہرالیا، جب بھی وہلڑ کی زاہد کے پاس جاتی ،شیطان اے انتہائی خوش نماانداز میں پیش کرتا یہاں تک کہزاہد کے قدم ڈگمگا گئے اوراس نےلڑی سےمباشرت کی جس سےلڑ کی کوحمل رہ گیا۔اب شیطان نے اس کے دل میں وسوسہ پیدا کیا کہ بیتو بہت بُری بات ہوئی، میرے زہدوا تقاء برحرف آگیالہذاا سے قل کر کے دفن کر دینا چاہئے، جب اس کے گھر والے یو چھنے کو آئیں گے تو کہدونگا وہ مرگئ ہے چنانچے شیطان کے بہکاوے میں آ کرزاہد نے اس لڑکی کوتل کر کے وفن کردیا، ادھرلڑکی کے گھر والوں کے دلوں میں شیطان نے بیرخیال ڈال دیا کہ اسے زاہدنے قتل کر کے دفن کر دیالہذاوہ زاہد کے باس آئے اورلڑ کی کے متعلق یو چھ کچھ کی ، زامد نے کہا: وہ مرگئی ہے کیکن ان لوگوں نے اپنے وسوسے کے مطابق زامد برسختی کی اور اس سے اقر ارکرالیا کہاس نے لڑکی گوتل کیا ہے،انہوں نے اسے پکڑلیااور قصاص میں قتل کرنے لگے۔تب شیطان ظاہر موااورزاہدے بولا: میں نے اسے بیٹ کی بیاری میں مبتلا کیا تھااور میں نے ہی اس کے گھر والوں کے دلوں میں تیرے جرم کا خیال ڈالاتھا،اب تومیرا کہنامان لے، میں تجھے بحالول گا۔زامدنے یو چھا: کیا کروں؟ شیطان بولا: مجھے دو سجدے کر لے، چنانچہزامدنے جان بچانے کے لئے شیطان کو بحدہ کرلیا،اب شیطان پیکہتا ہواوہاں ہے چل دیا کہ میں تیرے اس فعل ہے بَری ہوں،جیسا کے فرمانِ الٰہی ہے کہ

شیطان کی طرح جس نے انسان سے کہا کفر کر جب اس نے کفر کیا تو شیطان نے کہا میں تجھ سے بری ہوں۔ كَمَثَلِ الشَّيْطِنِ إِذْقَالَ لِلْإِنْسَانِ الْفُرُ ۚ فَلَتَّا كَفَرَقَالَ اِنِّى بَرِيْءٌ مِّنْكَ (1)

•ترجمه كنزالايمان: شيطان كى كهاوت جب اس في آوى سے كها كفركر پيرجب اس في كفركرليا بولا بيس تخصص الگ بول (ب٨٠ الحشر: ١٦) شعب الايمان ، الباب السابع و الثلاثون ... الخ، باب في تحريم الفروج ، ٢٧٢/٤، الحديث ٩٤٤٥ و الدر المنثور، ب ٢٨٠ الحشر، تحت الاية ٥١، ١٨/٨ ابتغير قليل



کی شیطان کا گمراه کن سوال

شیطان نے امامِ شافعی دَخمَهُ اللهِ عَلَیْه سے پوچھا: تیرااس ذات کے متعلق کیا خیال ہے جس نے مجھے جیسے چاہا پیدا

کیا اور جو چاہا مجھ سے کرایا ، اس کے بعدوہ مجھے چا ہے تو جنت میں بھیج دے اور چا ہے تو جہنم میں بھیج دے ، کیا ایسا کرنے
والاعادل ہے یا ظالم ؟ امامِ شافعی دَحمَهُ اللهِ عَلَیْه نے کچھتو قف کے بعد جواب دیا: اے شخص! اگر اس نے تجھے تیری منشا
کے مطابق پیدا کیا تو واقعی تو مظلوم ہے اور اگر اس نے تجھے اپنے اراد ہ قدرت کے تحت پیدا کیا تو پھر اس کی مرضی ہے
جوکرے ، شیطان شرم سے پانی پانی ہوگیا اور کہنے لگا: یہی سوال کر کے میں نے ستر ہزار عابدوں کو ضلالت و گمراہی کے عاریس دھکیل دیا ہے۔

﴿ إِنَّهَا فِي قَلْبِ الْكِ قَلْعِهِ ﴾

انسانی قلب کی مثال ایک قلعہ جیسی ہے اور شیطان ایک وشمن ہے جوقلعہ پرحملہ کر کے اس پر قبضہ جمانا چاہتا ہے قلعہ کی حفاظت درواز وں کو بند کئے بغیراور تمام راستوں اور رخنوں کی نگرانی کے بغیر ناممکن ہے اور بیفر بیضہ وہی سرانجام دے سکتا ہے جوان راستوں سے اچھی طرح واقف ہولہذا دل کو شیطانی وساوس کی بلغار سے محفوظ رکھنا ہر عقامند کے لئے ضروری ہی نہیں بلکہ ایک فرضِ عین ہے چونکہ شیطان کی بلغار کا مقابلہ اس وقت تک ناممکن ہے، جب تک اس کی تمام گزرگا ہوں سے واقفیت اولین ضرورت ہے اور بیگزرگا ہیں انسان ہی کی بیدا کردہ ہوتی ہیں جیسے غصہ اور شہوت کیونکہ غصہ عقل کوختم کردیتا ہے لہذا جب عقل ماند پڑجاتی ہے تو شیطانی لشکر انسان پرزبر دست محملہ کردیتا ہے لہذا جب عقل ماند پڑجاتی ہے تو شیطانی لشکر انسان پرزبر دست محملہ کردیتا ہے۔

ایک بندہ خدانے شیطان سے پوچھا: یہ بتلا تو انسان پر کیسے قابو پالیتا ہے؟ شیطان نے کہا میں اسے غصہ اور شہوت کے وقت زیر کرتا ہوں۔

شیطان کے راستوں میں ایک راستہ حص اور حسد کا بھی ہے کیونکہ حص انسان کو اندھااور بہرہ کردیتی ہے لہذا شیطان اس فرصت کوغنیمت سمجھتے ہوئے تمام برائیوں کو حریص کے سامنے حسین انداز میں پیش کرتا ہے اور وہ اسے خوبیاں سمجھ کر قبول کرتا چلاجا تا ہے۔

کر کشتی نوح میں شیطان کی سواری کے

روایت ہے کہ جب حضرت نوح عَلیْہ السَّلام نے بحکم خداوندی پہلے ہرجنس کا ایک ایک جوڑا کشتی میں سوار کیا اور خود بھی سوار ہوئے تو آپ نے ایک اجنبی بوڑھے کو دیکھ کر بوچھا تہہیں کس نے کشتی میں سوار کیا ہے؟ اس نے کہا: میں اس لئے آیا ہوں کہ آپ کے ساتھوں کے دلوں پر قبضہ کرلوں ، اس وقت ان کے دل میر سے ساتھوا وربدن آپ کے ساتھ ہوں گے۔

حضرت نوح عَلَيْهِ السَّلَام نے فرمایا: اے اللّٰه کوشن! اے ملعون! نکل جا! بلیس بولا: اے نوح! پانچ چیزیں ایس بیں جن سے میں لوگوں کو گراہی میں ڈالتا ہوں ، تین تہ ہیں بتلاؤں گا اور دونہیں بتلاؤں گا۔ اللّٰه تعالیٰ نے حضرت نوح عَلَیْهِ السَّلام کی طرف وی کی ، آپ کہیں کہ مجھے تین سے آگاہی کی ضرورت نہیں تو مجھے صرف وہی دو بتلادے۔ شیطان بولا وہ دوایس ہیں جو مجھے بھی جھوٹا نہیں کر تیں اور نہ ہی بھی ناکام لوٹاتی ہیں اور انہیں سے میں لوگوں کو تباہی کے دہانے پرلا کھڑا کرتا ہوں۔ ان میں سے ایک حسد ہے اور دوسری حرص ہے ، اسی حسد کی وجہ سے تو میں راندہ درگاہ اور ملعون ہوا ہوں اور حرص کے باعث آدم عَلَیْهِ السَّلام کومنوعہ چیز کی خواہش پیدا ہوئی اور میری آرز و پوری ہوگئی۔

شیطان کا ایک راسته انسان کا پیٹ بھرا ہونا ہے اگر چہوہ رزقِ حلال سے ہی بھرا گیا ہو کیونکہ پیٹ کا بھر جانا شہوتوں کو برا گیختہ کرتا ہے اور شیطان کا بہی ہتھیا رہے۔

کی پید جر کر کھانا بھی انسان کوشیطان کے پھندے میں پھنسا تاہے کم

روایت ہے کہ حضرتِ بیکی علیّہ السَّلام نے ایک مرتبہ شیطان کودیکھاوہ بہت سے پھندے اٹھائے ہوئے تھا آپ نے پوچھا: نے پوچھا: نے پوچھان نے جواب دیا: یہ وہ پھندے ہیں جن سے میں انسان کو پھانستا ہوں۔ آپ نے پوچھا: کبھی مجھ پر بھی تو نے پھندا ڈالا ہے؟ شیطان نے کہا: آپ جب بھی سیر ہوکر کھالیتے ہیں میں آپ کو ذکرونماز سے مست کردیتا ہوں۔ آپ نے پوچھا: اور پچھ؟ کہا: بس! تب آپ نے تشم کھائی کہ میں آئندہ بھی سیر ہوکر نہیں کھاؤں گا، شیطان نے بھی جواباً قسم کھائی ، میں بھی آئندہ کسی مسلمان کو شیحت نہیں کروں گا۔ (1)

1 شعب الايمان ، التاسع والثلاثون . . . الخ ، الفصل الثاني في ذم كثرة الاكل ، ٥/١٥ ، الحديث ٥٧٠ (بتغير قليل)

شیطان کا ایک راسته مال و متاع و نیا پرفر یفتگی ہے کیونکہ شیطان جب انسان کا دل ان چیز وں کی طرف مائل دیکھتا ہے تو آنہیں اور زیادہ حسین انداز میں اس کے سامنے پیش کرتا ہے اور انسان کو ہمیشہ مکانات کی تغمیر، سَقَف و دَروبام کی آرائش و زیبائش میں الجھائے رکھتا ہے اور اسے خوبصورت لباس، اچھی اچھی سوار یوں اور طویل عمر کی جھوٹی امیدوں میں مبتلا کر دیتا ہے اور جب کوئی انسان اس منزل پر پہنچ جاتا ہے تو پھر اس کی راہِ خدا پر واپسی و شوار ہوجاتی ہے کیونکہ وہ ایک امید کے بعد دوسری امید بڑھاتا چلا جاتا ہے یہاں تک کہ اس کا وقت مقرر آ جاتا ہے اور وہ اسی شیطانی راستے پر گامزن رہے اور خواہشات کی تعمیل کرتے ہوئے اس نا یا ئیدار د نیا سے اٹھ جاتا ہے۔ (نَعُودُ فُرِاللّٰہ)

شیطان کے غلبے کا ایک راستہ لوگوں سے امیدیں رکھنا ہے، حضرتِ صَفُوان بن سُکیَم دَ حُمَهُ اللهِ عَلَیْه فرماتے ہیں که شیطان حضرت عبدالله بن خظلہ دَ حُمَهُ اللهِ عَلَیْه کے سامنے آیا اور کہنے لگا: میں تم کوایک بات بتا تا ہوں ، اسے یا در کھنا انہوں نے کہا: مجھے تیری کسی نصیحت کی ضرورت نہیں ہے، شیطان نے کہا: تم سنوتو سہی! اگر انچھی بات ہوتو یا در کھنا ورنہ چھوڑ دینا، بات بیہ ہے کہ الله تعالی کے سواکسی انسان سے اپنی آرز ووک کا سوال نہ کرنا اور بید کھنا کہ غصہ میں تمہاری کیا حالت ہوتی ہے کیونکہ میں غصہ کی حالت میں ہی انسان پر قابو پا تا ہوں۔

شیطان کا ایک راسته ثابت قدمی کا انسان میں فقد ان اور جلد بازی کی طرف اس کا میلان ہے، فرمانِ نبوی ہے: جلد بازی شیطانی فعل ہے اور تخل اور بُرْد باری الله کا عطیہ ہے۔

جلد بازی میں انسان کوشیطان ایسے طریقے سے برائی پر مائل کرتا ہے کہ انسان محسوس ہی نہیں کرتا۔ روایت ہے کہ جب حضرت عیسیٰ عَلَیْہِ السَّلام کی ولا دت ہوئی توشیطان کے تمام شاگر داس کے یہاں جمع ہوئے اور کہنے لگے: آج تمام بت سرنگوں ہوگئے ہیں، شیطان نے کہا: معلوم ہوتا ہے کہ کوئی عظیم حادثہ رونما ہوا ہے، تم یہیں گھہر و میں معلوم کرتا ہوں، چنا نچہ اس نے مشرق ومغرب کا چکرلگایا مگر کچھ بھی پتہ نہ چلا، یہاں تک کہ وہ حضرت عیسیٰ عَلَیْہِ السَّلام کی جائے ولا دت پر پہنچا اور یہ و کچھر ان رہ گیا کہ ملائکہ حضرت عیسیٰ عَلَیْہِ السَّلام کو گھیر ہے ہوئے ہیں، وہ واپس اپنے شاگر دوں کے پاس پہنچا اور کہنے لگا کہ گذشتہ شب ایک نبی کی ولا دت ہوئی ہے، میں ہر بچہ کی ولا دت کے وقت موجود ہوتا ہوں مگر مجھے ان کی پیدائش کا قطعی علم نہیں ہوالہذا اس رات کے بعد بتوں کی عبادت ختم ہوجا نیگی اس لئے اب انسان پر جلد بازی

1شعب الايمان ، الثالث والثلاثون ... الخ ، ٤/٩/٤ ، الحديث ٤٣٦٧

اورلا بروائی کے وقت جملہ کرو(ان ہتھیاروں سے کام لو)۔

ایک راسته زراورز مین کا ہے کیونکہ جو چیز انسان کی حاجت سے زائدہوہ ہشیطان کامُسکُن بن جاتی ہے۔حضرتِ عَا بِت البُنانی دَعِنی الله عَنْهِ وَسَلَم الله عَنْه وَسَلَم الله عَنْهِ وَسَلَم الله عَنْه وَسَلَم الله الله عَنْه وَسَلَم عَنْه وَسَلَم الله عَنْه وَسَلَم الله عَنْه وَسَلَم الله الله الله الله الله الله عَنْه وَسَلَم عَنْه وَسَلَم عَنْه الله عَنْه وَسَلَم عَنْه الله عَنْه وَسَلَم عَنْه وَسَلَم الله الله الله الله الله عَنْه وَسَلَم عَنْه عَنْه وَلَم عَنْه عَلَم عَنْه عَلَم عَنْه عَلَم عَنْه وَلَم عَنْه عَلَم عَلَم عَنْه عَلَم عَلَم عَلَم عَنْه عَلَم عَل

روایت ہے کہ حضرت عیسیٰ عَلَیْهِ السَّلام ایک دن پھر سے ٹیک لگائے ہوئے تھے، شیطان کا وہاں سے گزر ہوا،اس نے کہا:اے میسیٰ! (عَلَیْهِ السَّلام) تم نے دنیا کوم غوب سمجھا ہے؟ عیسیٰ عَلَیْهِ السَّلام نے اسے پکڑلیا اوراس کی گُدی میں مُگا رسید کر کے فرمایا: بیدلے جا، بیتیرے لئے دنیا ہے۔

ایک راستہ فقروفاقہ کا ڈراور بخیلی ہے کیونکہ یہ چیزیں انسان کوراہ خدا میں خرج کرنے سے روکتی ہیں اوراسے مال ودولت جامل ودولت جامع کرنے اور عذا ہے الیم کی دعوت دیتی ہیں۔ بخل کا سب سے بڑا نقصان یہ ہوتا ہے کہ بخیل مال ودولت حاصل کرنے کے لئے بازاروں کے چیر لگا تار ہتا ہے جو کہ شیطان کی آ ماجگا ہیں ہیں (شیطان انہی جگہوں پر گھات لگا کے بیٹا ہوتا ہے)۔

ایک راسته مذہب سے نفرت،خواہشات کی پیروی، اپنے مخالفین سے بغض وحسد اور انہیں حقارت سے دیکھنا ہے اور بیرچیز خواہ وہ عابد ہویا فاسق سب کو ہلاک کردیتی ہے۔حضرتِ حسن دَضِیَ اللّٰه عَنهُ کا ارشاد ہے کہ شیطان نے کہا: میں نے امتِ محمد صَلّٰی اللّٰہ عَلَیْهِ وَسَلّٰہ کو گنا ہوں کی بھول بھیلیوں میں بھٹکا یا مگر انہوں نے استغفار سے مجھے شکست دے دی،

تب میں انہیں ایسے گنا ہوں کی طرف لے گیا جن کے لئے وہ بھی استغفار نہیں کرتے اور وہ ان کی ناجا ئزخواہشات ہیں اور ملعون کی بیر بات حقیقتاً صدافت پر بہنی ہے کیونکہ عام طور پرلوگ بینیں سمجھ سکتے کہ بیخواہشات ہی اصل میں گنا ہوں کی طرف راغب کرتی ہیں لہذاوہ اللہ سے استغفار کریں۔

ایک راسته مسلمانوں کے بارے میں بدگمانی کا ہے لہذااس سے اور بد بختوں کی تہتوں سے بچنا چاہئے ،اگر آپ کبھی کسی ایسے انسان کودیکھیں جولوگوں کے عیب ڈھونڈھتا ہے اور بدگمانیاں پھیلا تا ہے تو سمجھ لیجئے کہ وہ شخص خود ہی بدباطن ہے اور یہامراس کی بدباطنی کے اظہار کا ایک طریقہ ہے لہذا ہر مسلمان کے لئے ضروری ہے کہ وہ شیطان کے داخلے کے ان تمام راستوں کو مسدود کر دے اور اللہ تعالی کی یاد سے اپنے دل کو ایک محفوظ قلعہ بنالے۔

رارالندوه میں شیطان کا قریش کومشوره کم

ابن آملی دَخمةُ اللهِ عَلَيْه کی روایت ہے کہ جب قریش مکہ نے حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم کے صحابہ کرام (دِضُوانُ اللهِ عَلَيْهِ مُ اَجُمَعِين) کو ہجرت کرتے اور متعدد قبائل کے لوگول کو مسلمان ہوتے دیکھا تو اُنہیں بیخ طرہ لاحق ہوا کہ کہیں حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم بھی ہجرت نہ کرجائیں اور وہاں ایک زبر دست جماعت اپنی جمایت میں تیار کر کے ہمیں شکست نہ دے دیں چنا نچہ بیلوگ وَ ارُّ التَّدُوَ ہُ میں جُع ہوئے ، وَ ارُّ التَّدُو ہُ قصی بن کلاب کا مکان تھا بید وَ ارُّ التَّدُوَ ہُ اس لئے کہلاتا تھا کہ یہاں قریش ایخ ہم امور سرانجام دیتے اور منصوبے تیار کرتے تھے ، اس وَ ارُ التَّدُوَ ہُ میں چالیس سالہ قریش کے علاوہ کو کی اور شخص یا کم عمر قریش والیس سالہ قریش کے علاوہ کو کی اور شخص یا کم عمر قریش داخل نہیں ہوسکتا تھا۔

یرسب لوگ ابوجهل کے ساتھ ہفتہ کے روز جمع ہوئے اس لئے ہفتہ کو دھو کے اور فریب کا دن کہا گیا ہے، ان لوگوں کے ساتھ ابلیس بھی شریکِ مشاورت ہوتا تھا، اس ملعون کے شامل ہونے کا واقعہ یوں ہے کہ جب قریشِ ملّہ دارالندوہ کے ساتھ ابلیس بھی شریکِ مشاورت ہوتا تھا، اس ملعون کے شامل اوڑھے کھڑا ہے۔ ایک روایت یہ ہے کہ طیلسان کے دروازہ پر پہنچے تو انہوں نے دیکھا کہ ایک باوقار بوڑھا کھر دَراسا کمبل اوڑھے کھڑا ہے۔ ایک روایت یہ ہے کہ طیلسان کی ریشمی چا دراوڑھے ہوئے تھا، انہوں نے بوچھا: آپ کون ہیں؟ کہنے لگا: میں شُخِ نجدی ہوں ،تم نے جوارادہ کیا ہے میں نے وہ سُن لیا ہے اور میں اس لئے آیا کہ تمہاری گفتگوسنوں اور مشورے اور شیحیتیں کروں۔

چنانچہ بیسب لوگ اندر داخل ہو گئے اور باہم مشورہ ہونے لگا۔ ایک روایت ہے کہ سوآ دی تھے اور دوسری روایت

میں ہے کہ پندرہ آ دمی تھے۔ابوالہختر کی (جوغزوہ بدر کے دن مارا گیاتھا) نے مشورہ دیا جمہ صَلَی الله عَلَیْهِ وَسَلَم کولو ہے کے ایک قلعہ میں بند کر دواوراس وقت کا انتظار کروجب ان کا انجام بھی پہلے شعراء جیسا ہوجائے۔ شخ نجدی نے کہا: یہ بات غلط ہے، بخدا! اگرتم انہیں ہہنی درواز ہے کے بیچھے بھی بند کر دوتو وہ وہ ہاں سے نکل کراپنا اسحاب کے ہاں پہنچ جا نمیں گے۔ ابوالا سؤدر بیچہ بن عُروالعامری نے رائے دی کہ محمد صَلَی اللّه عَلَیْهِ وَسَلَم کوجلا وطن کر دو، یہ جہاں بھی جائے ہمیں کوئی پروانہیں، بس ہمار ہے شہروں میں ندر ہے۔ شخ نجدی نے اس رائے کومستر دکرتے ہوئے کہا: کیاتم نے محمد (صَلَی الله عَلَیْهِ وَسَلَم) کی اچھی با تیں، ان کی شیر بی بیانی اور لوگوں کا ان پر پروانہ وار ثار ہونا نہیں و یکھا؟ اگرتم ان کوجلا وطن کر کے مطمئن ہو گئے تو بیتمہاری سب سے بڑی غلطی ہوگی، وہ کسی اور قبیلہ میں چلے جائیں گے اور اپنی سحر بیانی سے لوگوں کو اپنا فریخہ بنا لے گا اور اپنی سحر بیانی سے لوگوں کو اپنا فریغتہ بنالے گا اور اپنی سے بیٹری عظمی جمعیت کے ساتھ تم پرغلبہ حاصل کر لے گا بتمہاری میشان و شوکت حرف غلط کی طرح مٹ جائیگی اور وہ تمہارے ساتھ جو چاہیں گے کریں گے ،کوئی اور رائے دو۔

ابوجہل نے کہا: میرے ذہن میں ایک ایسی رائے ہے جو کسی نے بھی نہیں دی، وہ یہ ہے کہ ہر قبیلہ سے ایک صاحب حسب ونسب بہا در لیا جائے اور یہ سب ل کر یکبار گی محمد صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم پر تلواروں سے بھر پوروار کریں اوران کو تل حسب ونسب بہا در لیا جائے اور بیوعبد مناف تمام قبائل کا مقابلہ کرنے سے تورہے وہ صرف دِیت لے لیس کے جسے تمام قبائل باہم ادا کر دیں گے، شخ نجدی ملعون اس رائے پر بھڑک اٹھا اور کہنے لگا: اب ہوئی بات!

چنانچ متفقه طور پریدرائے مان کی گی اورسب لوگ گھروں کوچل دیئے ،ادھر حضرت جبریل عَلَیْهِ السَّلام حضور صَلَی الله عَلیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کی: اے الله کے نبی! آ باس بستر پر استر احت نه فرما کیں جس پر آ پ ہمیشہ آ رام فرماتے ہیں۔ جب رات ہوئی تو قریش کے جوان کا شانۂ نبوت کے گردمنڈ لانے گئے اور اس وقت کا انتظار کرنے گئے کہ آ ب باہر آ کیں اوروہ یک بارگی جملہ کردیں ،حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم نے حضرت عِلی دَضِی الله عَنْهُ وَ الله عَنْهُ وَ مَعْد اور عیدین کے موقعوں بستر پر اس شب سُلایا اور ان پر سبز رنگ کی ایک جا در ڈال دی جو بعد میں حضرت علی دَضِی الله عَنْهُ وَسَلَّم کی حفاظت کی براوڑ ھا کرتے تھے۔ حضرت علی دَضِی الله عَنْهُ وَسَلَّم کی حفاظت کی براوڑ ھا کرتے تھے۔ حضرت علی دَضِی الله عَنْهُ وَسَلَّم کی حفاظت کی براوڑ ھا کرتے تھے۔ حضرت علی دَضِی الله عَنْهُ وَسَلَّم کی حفاظت کی بیاضی کو جنہوں نے جان بھی کر حضور صَلَّی الله عَنْهُ وَسَلَّم کی حفاظت کی بیاضی کو جنہوں نے حاسات کا اظہار کیا ہے:

﴿ 1 ﴾ میں نے اپنی جان کے بدلے اس خیرِ طلق صلّی الله عَلَيْهِ وَسَلّم كا حفاظت كى جوالله كى زمين برسب سے بہتر ہے اورجو مرطواف

کرنے والے، تجرِ اسودکو چو منے والے سے بہترین ہے۔

﴿2﴾رسول الله صلّى الله عَلَيْهِ وَسلَّم كوقريش مَم كفريب كاانديشه بواتوان كورب ذُو الْمَجَلال نان كفريب سے بجاليا۔

﴿3﴾اوررسولِ خدانے غاربین نہایت سکون کے ساتھ الله کی حفاظت میں رات بسر کی۔

﴿4﴾جبكه مين قريش مكه كروبروسويا مواتها اوراس طرح مين خودكواية قل وقيد موني برآ ماده كئے موئے تھا۔

(ترجمه اشعار حضرت على كَرَّمَ اللَّهُ وَجُهَهُ الْكُويُمِ)

الله تعالى نے قریش کے ان نوجوانوں کواندھا کردیااور نبی کریم صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم قریش کے جیالوں پرمٹی ڈالتے ہوئے، یہ آیت تلاوت کرتے ہوئے باہرنکل گئے: " فَاغْشَیْنَهُمْ فَهُمْ لایٹیجِسُ وْنَ ۞ " (1)

اس حال میں ایک شخص وہاں آیا اور اس نے ان لوگوں سے بوچھا: یہاں کیا کرر ہے ہو؟ انہوں نے کہا: ہم محمد (صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم) کے منتظر ہیں ، اس نے کہا: خداکی قتم ! وہ تمہار ہے ہو؟ اب جوائنہوں نے ہوئنگل گئے ہیں اور الله تعالیٰ نے تمہیں ذکیل ورسوا کیا ہے ، اب تم یہاں کھڑے کیا کررہے ہو؟ اب جوائنہوں نے اپنے سروں کوہاتھ لگایا تو سب تعالیٰ نے تمہیں ذکیل ورسوا کیا ہے ، اب تم یہاں کھڑے کیا کررہے ہو؟ اب جوائنہوں نے اپنے سروں کوہاتھ لگایا تو سب کے سروں میں مٹی بڑی ہوئی تھی اور وہ حضر سے علی دَضِیَ الله عَنْهُ وَصَلَّم الله عَلَيْهِ وَسَلَّم کی جوائی اور حضر سے علی دوسرے سے یہی کہتے رہے کہ خدا کی قسم! بی تحدر صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم) سور ہے ہیں ، یہاں تک کہ جوگئی اور حضر سے علی دَضِیَ الله عَنْهُ بستر سے الله عَنْهُ ان کود کھی کر بیلوگ بہت شرمندہ ہوئے اور کہنے لگے: اس شخص نے واقعی سے کہا تھا ، اسی واقعہ کر بید آیت نازل ہوئی:

اور جب کفار مکہ آپ کے ساتھ فریب کرر ہے تھے کہ وہ آپ کو سخت زخی یا قتل کر دیں۔ وَ اِذْيَهُكُمُ بِكَ الَّذِيثَ كَفَرُو اليُثُبِتُوكَ اَوْ يَقْتُكُوُكَ (2)

لا تجزعن فبعد العسر تيسر وكل شيء له وقت وتقدير وللمقدر في احوالنا نظر و فوق تدبيرنا لله تدبير

- 🗨تو جمهٔ کنز الایمان :اورانهیں اوپر سے ڈھا تک دیا توانهیں کچھنیں سوجھتا۔ (پ۲۲، یس:۹)
- ستوجمه کنز الایمان: اورا مے مجوب یا دکرو جب کا فرتمہار سے ساتھ مکر کرتے تھے کہتمہیں بند (قید) کرلیں یا شہید کرویں۔

(پ٩٠الانفال: ٣٠).....السيرة النبوية لابن هشام، هجرة الرسول،ص ١٩١ - ١٩٣ بتغير قليل

﴿ 1 ﴾ گھبراؤنہیں، ہرمشکل کے بعد آسانی ہوتی ہےاور ہر چیزایک وقت مقررتک رہتی ہے۔

﴿2﴾ مقدرہم سے زیادہ باخبر ہے اور ہماری تدبیروں پر الله کی تدبیر غالب رہتی ہے۔

حضرت ابن عباس دَضِى الله عَنْهُمَا فِي مان بارى:

(1) وَقُلُنَّ بِّ اَدْخِلْنِی مُلْ خَلَصِلْ قِوَّ اَخْدِجْنِی مُخْرَجَ صِلْ قِوَّ اَجْعَلْ لِیْ مِنْ لَّکُ اُنْکَ سُلْطُنَّا نَّصِدُ وَا اَخْدِجْنِی مُخْرَجَ کِی اَجَازت مرحمت فر مائی اور حضرتِ جبریل نے آپ سے کہا کہ آپ حضرتِ ابو بکر دَخِی الله عَنْدُوا بِی ہجرت کا ساتھی منتخب کریں۔

حاکم کی روایت ہے: حضرت علی دَضِی الله عَنه کہتے ہیں کہ حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم نے (حضرت) جبریل سے بوچھا: میر ہے ساتھ کو ن ہجرت کرے؟ تو اُنہوں نے کہا: حضرت ابو بکر صدیق (2) (دَضِیَ الله عَنهُ) حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم نے حضرت علی دَضِیَ الله عَنه کو ہجرت کے متعلق بتلایا اور فرمایا: تم میرے بعدیہیں رہنا اور لوگوں کی امانیتی واپس کرے آنا۔ (3)

﴿ بِيتِ صِدِيقِ الْمِرِمِينِ حَضُورِ صَلَّى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَا خَلَا فَ مَعْمُولَ تَشْرِيفِ لَا تَأ ﴿ بِيتِ صِدِيقِ الْمُرِمِينِ حَضُورِ صَلَّى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَا خَلَا فَ مَعْمُولَ تَشْرِيفِ لَا تَأ

حضرت عائشہ دَضِیَ الله عَنهُ وَسَلَم مروی ہے کہ ہم گھر میں بیٹھے ہوئے تھا وردو پہر کا وقت تھا، اور طبر انی نے حضرت اساء کی روایت نقل کی ہے کہ حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَ سَلَّم مکہ میں دومرت بیٹے ہوئے اور شام ہمارے گھر تشریف لایا کرتے تھے مگر اس دن زوال کے وقت تشریف لائے ، میں نے اپنے والد ابو بکر دَضِی الله عَنهُ ہے جاکر کہا: ابا جان! نبی کریم صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم آج خلاف معمول چہرے پر کپڑ البیٹے تشریف لائے ہیں۔ حضرت ابو بکر دَضِیَ الله عَنهُ نے کہا: بخدا! حضور کی اہم کام کے لئے اس وقت تشریف لائے ہیں، حضرت عائشہ دَضِیَ الله عَنْها کہتی ہیں کہ حضور اجازت لے کراندرتشریف لائے۔ حضرت ابو بکر دَضِیَ الله عَنهُ نے جا کہ خالی کردی۔ جب حضور تشریف فرما ہو گئے تو آپ نے فرما یا: ان حوز سی کو با ہر بھیج دیا جائے۔ صدیق اکبر دَضِیَ الله عَنْه نے عرض کی: حضور اجماع استا وراساء آپ ہی کا گھر انا ہے۔ ایک دونوں کو با ہر بھیج دیا جائے۔ صدیق اکبر دَضِیَ الله عَنْه نے عرض کی: حضور اجماع کے اس اس اس کے ایک کے ایک اس کو با ہر بھیج دیا جائے۔ صدیق اکبر دَضِیَ الله عَنْه نے عرض کی: حضور اجماع کے ایک کہ دیا جائے۔ صدیق اکبر دَضِیَ الله عَنْه نے عرض کی: حضور اجماع کا کو انا ہے۔ ایک

- 🕕تو جمه کنز الایمان: اور بول عرض کروکدا ہے میر سے رب مجھے بچی طرح داخل کراور بچی طرح باہر لے جااور مجھے اپنی طرف سے مددگار غلبودے۔ (پ۵۱، بنی اسوائیل ۸۰۰)
 - 2المستدرك للحاكم، كتاب الهجرة ، باب هجرة ابي بكر...الخ،٣٨/٣٥، الحديث ٥٣٨٠
 - ١٩٤٥٠٠٠٠١السيرة النبوية لابن هشام، ص ١٩٤٥

روایت سے کہانہوں نے کہا:حضور مطمئن رہیں، یہ میری بیٹیاں ہیں حضور صلّی اللّه علیّه وَسَلّم نے فرمایا مجھے رب دُوالْجَلال میں حضور صلّی اللّه عَنه یہ بات نے ہجرت کی اجازت دی ہے اور تم میرے ساتھ دہوگے۔ عاکشہ صدیقہ دَضِی اللّه عَنه یہ بیت ایک سواری پیند فرما لیجئے۔ آپ نے سنتے ہی شدت ِ جذبات سے رو پڑے اور عرض کی حضور! میری ان سواریوں میں سے ایک سواری پیند فرما لیجئے۔ آپ نے فرمایا میں قیمتاً اول گا۔ (1)

ایک روایت میں ہے آپ نے فرمایا چا ہوتو ایک میرے ہاتھ نے دو۔ (2) آپ نے قیمت دے کراس لئے سواری حاصل کی تاکہ آپ کو ہجرت کی مکمل فضیلت حاصل ہوجائے اور جان و مال کی قربانی سے اس کی ابتداء ہو۔ حضرتِ عائشہ دَضِیَ اللّٰه عَنْها فرماتی ہیں: ہم نے جلدی جلدی جلدی سامانِ سفر درست کیا۔ (3) ایک روایت ہے ہم نے حضور صَلّٰی اللّٰه عَنْه کے لئے بہترین سامانِ سفر باندھااور اسے ایک تھیلے میں ڈالا۔ (4) عَلَیْهِ وَسَلّْم اور صدیق اکْر دَضِیَ اللّٰه عَنْه کے لئے بہترین سامانِ سفر باندھااور اسے ایک تھیلے میں ڈالا۔ (4)

وَاقدی کی روایت ہے کہ زادِراہ میں ایک بھٹی ہوئی بکری تھی ،حضرتِ اَساء نے اپنی کمر کا پڑکا بھاڑ ااوراس سے تھلے کا منہ باندھ دیااسی لئے حضرتِ اَساءکو' زات البطاقین'' کہتے ہیں۔⁽⁵⁾

حضرت عائشه دَضِى الله عَنه الله عَنه الله عَنه وَصَلَى الله عَليه وَسَلَّم اور حضرت ابو بكر صديق دَضِى الله عَنه نے تين راتيں غارتور ميں گزاريں، (6) اس غار ميں چونکہ توربن عبد منات آ کر ظهر اتھا، اس لئے اسے غارِ تورکہا جاتا ہے۔

روایت ہے کہ حضور صَلَّى الله عَلیْهِ وَسَلَّم اور صدیقِ اکبر دَضِی الله عَنه رات کے وقت مکان کی پچھیلی کھڑکی سے نکل کرغار کی طرف روانہ ہوئے تھے، راستہ میں ابوجہل آر ہا تھا مگر الله نے اسے اندھا کردیا اور آیے خیریت سے گزرگئے۔

- الحديث ١٩٠٥ ملتقاً ملخصا و المجعم النبي و اصحابه ...الخ، ١/٢ ٥٥ الحديث ٢٩٠٥ ملتقاً ملخصا و المجعم الكبير، ٢٨٤ ١٠١٠ الحديث ٢٨٤ بتغير
 - 2 المجعم الكبير، ٢٨٤، ١٠٦/١، الحديث ٢٨٤ بتغير
 - الخ، ۲/۳۴، الحديث ۱۹۰۰، ملحصاً النبي و اصحابه ... الخ، ۹۳/۲، الحديث ۹۹، ملحصاً
 - 4 مسند احمد ١٠٦/١، الحديث: ٢٥٦٨٤
 - الحديث ۲۹۷۹. (ملخصا)
 بخارى ، كتاب الجهادو السير، باب حمل الزاد في الغزو، ۲/٤، ۳۰ الحديث ۲۹۷۹. (ملخصا)
- **⑥**.....بخاري ، كتاب مناقب الانصار، باب هجرة النبي صلى الله عليه و سلم... الخ، ٩٣/٢ ٥، الحديث ٣٩٠٥ ، ملخصاً

 $\overline{}$

اً ساء بنت ابو بكر دَضِىَ اللّه عَنْها كهتى بين ُ حضرتِ ابو بكريا خج ہزار درہم ساتھ لے كر گئے تھے۔ ⁽¹⁾

صبح جب قریش نے حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کونه پایا تو انہوں نے مکہ کے جاروں طرف تلاش کیا اور ہر طرف سراغ رسال دوڑائے، جولوگ غارِ توری طرف جارہے تھے، انہوں نے آپ کے نشانِ قدم تلاش کر لئے اور غارِ توری طرف چل بیٹرے تو نشان ختم ہوگئے، قریش حضور کی ہجرت سے بہت خفاتھے اور انہوں نے حضور صَلَی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کوتلاش کرنے والے کے لئے سواونٹ کا انعام مقرر کر دیا تھا۔ (2)

حضرتِ قاضى عياض دَّخْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهُ مِي مروى ہے كہ جبلِ ثبير نے حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم مِي وَلَى آ بِ ميرى بيئے ميران بيئے سے اتر جائيں، مجھے ڈرہے كہ کہيں لوگ آ پ كوشهيد نہ كرديں اور مجھے عذاب نہ ديا جائے ، غارِ حرانے التجاكی حضور (صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم) ميرے يہال تشريف لائيے۔ (3)

روایت ہے کہ جونہی حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم حضرتِ الویکر دَضِیَ الله عَنْه کی معیت میں غارِثور میں داخل ہوئے،
الله تعالیٰ نے غارے دروازے پرایک جھاڑی پیدا کردی جس نے ان حضرات کو کفار کی نظروں سے اوجھل کر دیا جھم خداوندی سے مکڑے نے غارے دَہانے پر جالاتن دیا اور جنگلی کبوتروں نے اپنا گھونسلہ بنادیا۔ (4) بیسب پچھ کفارِ مکہ کو خداوندی سے مکڑے نے غارے دَہانے کر میں غار کی تلاثی سے بازر کھنے کے لئے کیا گیا، ان دوجنگلی کبوتروں کوالله تعالیٰ نے ایس بے مثال جزادی کہ آج تک حرم میں عارکی تلاثی سے بازر کھنے کے لئے کیا گیا، ان دوجنگلی کبوتروں کوالله تعالیٰ نے ایس ہوا نہی دوکی اولا دہیں، جیسے انہوں نے الله کے نبی کی حفاظت کی تھی ویسے ہی الله تعالیٰ نے بھی حرم میں ان کے شکار پریا بندی عاکد کردی ہے۔

قریش کے نوجوان ڈنڈے، لاٹھیاں اور تلواریں سنجالے جاروں طرف پھیل گئے جن میں سے پچھ غاری طرف جانکے، انہوں نے وہاں کبوتروں کا گھونسلا اور اس میں انڈے دیکھے تو واپس لوٹ گئے اور کہنے لگے ہم نے غار کے دہانے پر کبوتروں کا گھونسلا اور اس میں انڈے رکھے دیکھے ہیں، اگروہاں کوئی واخل ہوتا تو لامحالہ کبوتر اڑجاتے ، حضور صَلَّی الله عَلَیْهُ وَسَلَّم نے اِن کی یہ باتیں سنیں اور سمجھ گئے کہ الله تعالی نے مشرکین کونا کا م لوٹایا ہے، سی نے کہا: غار میں جا کردیکھو

السيرة النبوة لابن هشام ، باب هجرة الرسول صلى الله عليه وسلم ، ص ١٩٤، ١٩٥ ملتقتا والخصائص الكبرى،
 باب ما وقع في الهجرة...الخ، ٥٠/١

^{€}الشفاء بتعريف حقوق المصطفى، الباب الرابع...الخ، فصل ومثل هذا...الخ، ٢٠٢/١

^{4}الطبقات الكبرى لابن سعد ، ذكر خروج رسول الله...الخ، ١٧٧/١

مكاشفة القلوب 🚤 💎 🔪

توسہی! جواب میں اُمی بین خلف نے کہا: غار میں گھنے کی کوئی ضرورت نہیں ہے، تمہیں غار کے منہ پر مکڑی کا جو جالا نظر
آتا ہے وہ تو محمد (صَلَّی الله عَلَیْه وَسَلَّم) کی پیدائش سے بھی پہلے کا ہے، اگر وہ اس میں داخل ہوتے تو بیجالا اور انڈیٹوٹ
جاتے۔ (1) پیحقیقت میں قوم قریش کو مقابلہ میں شکست دینے سے بھی بڑا مجز ہ تھا۔ غور کیجئے مطلوب کیسے کا میاب اور تلاش
کرنے والے کیسے گمراہ ہوئے۔ مکڑی نے جبتی کا دروازہ بند کردیا اور غار کا دہانہ ایسا بن گیا کہ سراغ رسانوں کے قدم
لڑکھڑ اگئے اور ناکام واپس لوٹے اور مکڑی کولاز وال سعادت میسر آئی ، ابن نقیب نے خوب کہا ہے: (اشعار)
﴿ 1 ﴾ ریشم کے کیڑوں نے ایساریشم بنا جو حسن میں بکتا ہے۔

﴿2﴾.....مگر مکڑی ان سے لاکھوں درجہ بہتر ہےاسلئے کہاس نے غارِثور میں حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم کے اُوپر غار کے دَہانے پر جالا بُنا تھا۔

بخاری و مسلم میں حضرتِ اَنس دَضِیَ الله عَنْه سے مروی ہے: حضرتِ الوبکر دَضِیَ الله عَنْه نے فرمایا: جب ہم غارمیں عظم میں حضرتِ الله عَنْه عَنْهِ وَسَلَّم سے عرض کی: حضور! اگریدا پنے قدموں کی طرف دیکھیں تو یقیناً ہمیں دیکھ

لیں گے۔ آپ نے فرمایا: ابوبکر! تمہاراان دو کے بارے میں کیا خیال ہے جن کے ساتھ تیسرا خداہے۔ ⁽²⁾

بعض سیرت نگاروں نے لکھا ہے کہ جب ابو بمرصدیق دَضِیَ اللّٰه عَنُه نے بیخدشہ ظاہر کیا تو آپ نے فرمایا: اگر بیہ لوگ ادھر سے داخل ہوں گے تو ہم ادھر سے نکل جائیں گے،صدیقِ اکبر دَضِیَ اللّٰه عَنُه نے غار میں نگاہ کی تو دوسری طرف ایک دروازہ نظر آیا جس کے ساتھ ایک بحرِ ناپیدا کنار بہدر ہاتھا اور اس غار کے دروازہ پرایک شتی بندھی ہوئی تھی۔ (3)

حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم برِقر بإن هونا صديق اكبر دَضِىَ الله عَنْه كى دِلى آرز وَتَقى: ﴿

حضرت حسن بھری دَضِیَ اللّه عَنُه فرماتے ہیں مجھے یہ خبر پہنچی ہے کہ جب ابو بکر صدیق دَضِیَ اللّه عَنُه حضور صَلَّی اللّه عَنَهُ وَ صَلَّم کے ساتھ عَاری طرف جارہے تھے تو حضرتِ ابو بکر بھی حضور (صَلَّی اللّه عَلَيْهِ وَسَلَّم) کے آگے چلتے اور بھی پیچھے علیْه وَسَلَّم کے ساتھ عاری کا خیال آتا ہے تو میں چلتے ،حضور نے بوچھا: ایسا کیوں کرتے ہو؟ انہوں نے جواب دیا: جب مجھے تلاش کرنے والوں کا خیال آتا ہے تو میں آپ کے پیچھے ہوجا تا ہوں اور جب گھات میں بیٹھے ہوئے دشمنوں کا خیال آتا ہے تو آگے جلنے لگتا ہوں، مبادا

^{1}المرجع السابق والسيرة الحلبية ، باب عرض رسول الله... الخ، ١/٢ ٥

^{2}بخاري كتاب فضائل اصحاب النبي صلى الله عليه و سلم، باب مناقب المهاجرين و فضلهم ١٧/٢ ٥، الحديث ٣٦٥٣

^{3}البداية والنهاية ، باب هجرة رسول الله...الخ ، ٢/٢ ٥

M

آپ کوکوئی تکلیف پنچے حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: کیاتم خطرہ کی صورت میں میرے آگے مرنا پسند کرتے ہو؟ عرض کی: رب دُوالْجَلال کی قسم! میری یہی آرزوہے۔(1) (سبحان الله! سبحان الله!)

جب غار کے قریب کہنچاتو حضرت ابوبکر دَضِی الله عَنه نے کہا: حضور طبہ سے! میں غارکوصاف کرتا ہوں اورا ندر بہنچ کے کہا جضور طبہ سے بھاں کہ بیں کوئی سوراخ نظر آتا وہاں کیڑا کھا ٹرکراس کو بند کر دیتے کہاں تک کہ سارا کیڑا ختم ہو گیا اورا یک سوراخ باتی رہ گیا ، وہاں آپ نے اپنے پاؤں کا انگو ٹھار کھ دیا تا کہ کوئی چیز حضور صلّی الله عَلَیٰهِ وَسلّہ کو تکلیف نہ دے حضور صلّی الله عَلَیٰهِ وَسلّہ موے اورا بو بکر دَضِی الله عَلَیٰهِ وَسلّہ کو تکلیف نہ دے حضور صلّی الله عَلیٰهِ وَسلّہ علیٰہِ وَسلّہ کو بین نہ دی کہ مباداحضور صلّی الله عَلیٰهِ وَسلّہ کی اسلام کی اسلام کی اسلام کی اسلام کی جا ہے اور آپ کی نیند میں خلل پڑے ۔ شدت ِ تکلیف سے آپ کے آنسو حضور صلّی الله عَلیٰهِ وَسلّم کی جہرے کی آئی کھل جائے اور آپ کی نیند میں خلل پڑے ۔ شدت ِ تکلیف سے آپ کے آنسو حضور صلّی الله عَلیْهِ وَسلّم کے جہرے کی توحضور کی آئی کھل گئی ، بوچھا: ابوبکر! کیابات ہے؟ عرض کی : حضور! سانپ نے ڈس لیا ہے ، حضور صلّی الله عَلَیْهِ وَسلّم نے نوا تار ہا۔ (2)

حضرت حسان بن ثابت دَضِى الله عنه في كيا خوب كهام: (اشعار)

ریشم کے کیڑوں سے ریشم حاصل کر کے عمد قتم کا لباس تیار کیا جا تا ہے کیکن مکڑی کواس بارے میں زیادہ فخر ومباہات حاصل ہے کیونکہ اس نے حضور صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم کے واسطے غایر ثور برجالا بنا تھا۔ (3)

❶دلائل النبوة للبيهقي، باب خروج النبي...الخ ، ٢/٢٧٤، ٧٧٤ (بتغير قليل و بلا حسن).

🗨مشكاةالمصابيح، كتابالمناقب،باب مناقب ابي بكر رضى الله عنه، ٢/٧١٦ ،الحديث ٢٠٣٤ و تاريخ مدينة دمشق ، ٨٠/٣٠

جارے پیش نظر" مکاشفة القلوب" کے دومطبوعوں میں اس مقام پر بیاشعارین.

و ثاني اثنين في الغار المنيف و قد طاف العدو به اذ صاعد الجبلا

و كان حب رسول الله قد علموا من الخلائق لم يعدل به بدلا

﴿1﴾....اس بامقدر غارمين حضور صَلَى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كَساته صرف صديق اكبر دَضِيَ اللهُ عَنْه تصح جب دَثَّمَن بِها الربر جرُّ هد ہے تھے۔

2 الله عَلَيْه وَسَلَم عَنَهُم بيجانة تنظى كه حفرت سيرناابو بكرصد الآدضِ الله عَدُورول الله صَلَى الله عَلَيْه وَسَلَم حَصُوب بين اورآپ صَلَى الله عَلَيْه وَسَلَم كَ عَبُوب بين اورآپ صَلَى الله عَلَيْه وَسَلَم كَ مُوبِ مِين اوراس عَلَى الله عَلَيْه عَلِيْه عَلَيْه عَلَيْهُ عَلَيْه عَلَيْه عَلَيْه عَلَيْه عَلَيْه عَلَيْه عَي

ان اشعار ہے متعلق ابن عسا کر کی ایک روایت میں ہے کہ ایک مرتبر ہر کار دوعالم صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے حضرت حسان بن ثابت دَضِيَ =

N

حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے جمعرات کے دن مکہ ہے ہجرت کی ، تین را تیں غارِثور میں گزار کر کیم رہیج الا وَّل شب دوشنبہ کو وہاں سے روانہ ہوئے اور ۱۲ ارہیج الا وَّل کو مدینہ طیب ہنچے۔

''زکریا''نام کاایک مشہورزابدگرزاہے،شدید بیاری کے بعد جب اس پرسکرات کاعالم طاری ہواتواس کے دوست نے اسے کلمہ کی تلقین کی لیکن اس نے ادھر سے ادھر منہ کھیرلیا۔ جب اس نے تیسری مرتبہ تلقین کی تین اس نے ادھر سے ادھر منہ کھیرلیا۔ جب اس نے تیسری مرتبہ تلقین کی تو اس زاہد نے کہا: میں نہیں کہتا ، دوست بیسنتے ہی بیہوش ہوگیا۔ کچھ دیر بعد جب زاہد کو کچھا فاقد ہوا، اس نے آئکھیں کھولیں اور پوچھا بتے ہے کھھ سے کچھ کہا تھا؟ انہوں نے کہا: ہاں، میں نے تم کو کلمہ کی تلقین کی تھی گرتم نے دومرتبہ منہ کھیرلیا اور تیسری مرتبہ کہا: '' میں نہیں کہتا' زاہد نے کہا: بات بیہ ہے کہ میرے پاس شیطان پانی کا بیالہ لے کر آیا اور دائیں طرف کھڑا ہو کر مجھوہ وہ پانی دکھاتے ہوئے کہنے لگا تمہیں پانی کی ضرورت ہے؟ میں نے کہا: ہاں! کہنے لگا تہ ہوا کہا: ہوا عیسیٰ اللہ کے بیٹے ہیں۔ میں نے منہ کھیرلیا تو دوسر سے رخ کی طرف سے آکر کہنے لگا ، اس میں نہیں کہتا ، اس میں نہیں کہتا ، اس کے بیٹے اور پھر کلمہ شہادت میں نہیں کا بیالہ زمین پر بٹن کر بھاگ گیا۔ میں نے تو پیلفظ شیطان سے کہے تھے ہم سے تو نہیں کہا تھیں کہتا ، اس کو اور پھر کلمہ شہادت کو بالیہ کی بیالہ نہیں کہا تھاں سے کہا تھے ہم سے تو نہیں کہا تھا ور پھر کلمہ شہادت کی دور کر کر کر کر کے لگا۔

حضرت عمر بن عبد العزیز دَضِیَ الله عَنه ہے مروی ہے کہ کسی نے الله تعالیٰ ہے سوال کیا: مجھے انسانی ول میں شیطان کی جگہ دکھا دے، خواب میں اس نے شیشہ کی طرح صاف شفاف ایک انسانی جسم دیکھا جواندر باہر سے یکساں نظر آر ہاتھا، شیطان کو دیکھا وہ اس انسان کے بائیں کندھے اور کان کے درمیان مینڈک کی صورت میں بیٹھا ہوا تھا اور اپنی طویل سونڈ سے اس کے دل میں وسوسے ڈال رہاتھا۔ جب وہ انسان الله کا ذکر کرتا تو وہ فور آبی پیچھے ہے جاتا۔

ا دربِذوالجلال! ختم المرسلين صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كَطْفِيل بَمين شيطانِ مروووك تسلط سے بچا، بمين حاسد زبان سے نجات بخش اور اپنے ذكر وشكر كى توفيق عنايت فرما - (آمين بجاهِ سَيِّد الْمُوسَلِيْن صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم)

= اللهُ عَنُه سے فرمایا: کیاتم نے ابو بکر کی شان میں بھی بچھ کھا ہے؟ انہوں نے عرض کیا: باں یار سول الله ، حضور صلّی الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: سنا وَتو حضرت حسان دَضِیَ اللهُ عَنُه نے بھی اشعار عرض کیے۔ حضور صلّی الله عَلَيْهِ وَسَلَّم من کراس قدر مسکرائے کہ دندانِ مبارک ظاہر ہوئے اورار شادفر مایا: حسان تم نے بچ کہا، وہ ایسے ہی ہیں جیسے تم کہتے ہو۔

(تاريخ مدينه دمشق لابن عساكر، ج ٢٠٠٠ ٩١) علميه



امانت اور توبه

حضرت محمد بن مُثَكَدِ ردَحُ مَةُ اللَّهِ عَلَيْهُ ابِينِي والديروايت كرتے ہيں كه حضرت سُفيان تُو ري دَحُ مَةُ اللَّهِ عَلَيْهُ نِي طوافِ کعبہ کرتے ہوئے ایک ایسے جوان کو دیکھا جوقدم قدم پر درود شریف پڑھ رہا تھا۔ شفیان توری کہتے ہیں: میں نے کہا: اے جوان! تم تشییج تہلیل چھوڑ کرصرف درود شریف ہی پڑھ رہے ہو کیا اس کی کوئی خاص وجہ ہے؟ جوان نے یو چھا: آ پکون ہیں؟ میں نے جواب دیا: مُفیان تُوری!اس نے کہا:اگرآ پکاشارالله متعالیٰ کے نیک بندوں میں نہ ہوتا تو میں بھی آ پ کو بیراز نہ ہتا تا!ہُوایوں کہ میں اپنے باپ کے ہمراہ حج کے ارادہ سے نکلا، راستہ میں ایک جگہ میرابای سخت بیار ہوگیا، میں نے بہت کوشش کی مگراہے موت سے نہ بچاسکا،موت کے بعدان کا چہرہ سیاہ ہوگیا، میں ن إنَّا لِللهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون " يرص كران كاچره و هك ديا، اسي عم كى كيفيت ميں ميرى آئى تعين بوجهل موكسي اور مجھے نیندآ گئی۔خواب میں میں نے ایک ایسے حسین کو دیکھا جوحسن میں بے مثال تھا، اس کا لباس نَفَاسَت کا آئینہ دارتھا اوراس کے وجو دِمسعود سے خوشبوکی لیپٹیں اٹھ رہی تھیں، وہ نازک نِزامی کے ساتھ آیا اور میرے باپ کے چبرے سے کیٹرا ہٹا کر ہاتھ سے چہرے کی طرف اشارہ کیا میرے باپ کا چہرہ سفید ہوگیا جب وہ واپس تشریف کیجانے گگے تو میں نے دامن تھام کرعرض کی ،الله تعالی نے آپ کے فیل اس غریب الوطنی میں میرے باپ کی آبرور کھ لی ، آپ کون بين؟ انهول نے فرمایا جم مجھنہیں بیجانے؟ میں صاحب قرآن الله کانبی محد بن عبدالله مول (صَلَى الله عَلَيْه وَسَلَم) تیراباب اگرچہ بہت گنہگارتھا مگر مجھ پر کثرت سے درود بھیجاتھا، جب اس پرمصیبت نازل ہوگئ تواس نے مجھ سے مدد طلب کی اور میں ہراس شخص کا جو مجھ برکثر ت سے درود بھیجتا ہے، فریا درس ہوں۔ جوان نے کہا: اس کے بعدا جانک میری آئھ کھل گئی، میں نے دیکھامیرے باپ کا چېره سفید ہو چکا تھا۔⁽¹⁾

^{1} روح البيان ، پ ٢٢، الاحزاب تحت الاية ٥٦ ، ٢٢٥/٧

177

حضرت عَمْروبن وینار دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ابوجعفر دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه سے روایت کرتے ہیں کہ حضور صَلَّی الله عَلَیْه وَسَلَّم نے فرمایا: جومجھ پر درود بھیجنا بھول گیا،اس نے جنت کاراستہ کھودیا۔

''امانت''امن سے ماخوذ ہے اور کوئی شخص حق کوچھوڑ کر مامون نہیں رہتا، امانت کی ضد خیانت ہے جوخون سے مشتق ہے جس کامعنی ہے کم کرنا، کیونکہ جبتم کسی چیز میں خیانت کرو گے تواس میں کمی واقع ہوجائے گی۔

حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشاد ہے كه دھوكه، فريب اور خيانت، جہنميوں كاشيوه ہے۔

مزیدارشادفر مایا کہ جس نے لوگوں کے ساتھ معاملات میں ظلم نہیں کیا اور ان سے جھوٹی باتیں نہیں کہیں ،اس کی مرادیں کمل ہوگئیں ،عدالت ظاہر ہوگئی اور اس سے بھائی چارہ رکھنا ضروری ہوگیا۔⁽³⁾

ایک اعرابی ، قوم کی تعریف میں کہتا ہے: وہ امین ہیں کسی کے ساتھ دھو کہ نہیں کرتے ، کسی مسلمان کی حرمت کو پامال نہیں کرتے اوران کے ذمہ کسی کاحق باقی نہیں ہے، وہ بہترین قوم ہیں۔

اعرابی کے ممدومین گزر چکے ہیں،اب توانسانی لباس میں بھڑ نئے پھرتے ہیں،جیسے کسی نے کہاہے:

بمن يثق الانسان فيما ينوبه ومن اين للحرالكريم صحاب

وقدصارهذا الناس الااقلهم ذئابا على اجسادهن ثياب

﴿1﴾اس شخص کے لئے جوانسان پراس کی انا بتوں کے باوجود بھرو سے کرتا ہے تو چھرعزت دار آزاد خص کے لئے ٹھکا نا کہاں رہے گا۔

﴿2﴾ چندلوگوں کوچھوڑ کر ہاقی سب انسانی لباس میں بھیڑ یئے ہیں۔

ایک اور شاعر کہتا ہے: _

ذهب الذين يقال عند فراقهم ليت البلاد وما بها تتصدع

🛣و ولوگ چلے گئے جن کے فراق میں کہا جاتا تھا، کاش! پیشہرو ریان ہوجاتے اور قیامت آجاتی۔

- ❶ ابن ماجه ، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم ، ١/٩٠٠، الحديث ٩٠٨
 - 2المستدرك للحاكم كتاب الاهوال ، باب تحشرهذه الامة...الخ، ٨٣٣/٥ ، الحديث ٨٨٣١
 - 3فردوس الاخبار، ۲۷۳/۲، الحديث ٤٥٩٥

K

حضرت عُذَ يُقِهُ دَضِىَ اللهُ عَنُهُ سِيمروى ہے، حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِي فرما يا كَ يَخْفَريب امانت الله الى جائے گ، لوگ باہم تجارت كريں گے مگرامين كوئى نہيں ہوگا يہاں تك كه كہا جائے گا: فلاں قبيله ميں فلاں آ دمی امين ہے، (1) يعنی امين آ دمی ڈھونڈ نے سے بھی نہيں ملے گا۔

توبه كاوجوب آيات قر آنى اوراحاديث سے ثابت ہے، فرمانِ الله ہے:

(2) ۞ تَوْبُوۤ الِكَ اللهِ جَبِيعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُقْلِحُونَ

اس آیت میں الله تعالی نے مومنوں کو تکم دیاہے کہ وہ تو بہ کریں تا کہ ان کوفلاح میسّر ہو۔ دوسری آیت میں ہے: نیَا یُٹھا الَّذِیْنُ اَمَنُوا اُتُو بُوَّا اِلَیا اللهِ تَدُوبَةً اَعْدُوجًا اللهِ اللهِ تَدُوبَةً اللهِ عَلَ

لفظِ نَصُوح ' ' منصح '' سے ماخوذ ہے جس کے معنی ہیں خالصةُ الله کے لئے تو بہ کرنا جوتمام عیوب سے پاک ہو۔ تو بہ کی فضیلت الله تعالیٰ کے اس فر مان سے ثابت ہوتی ہے:

بے شک اللّٰہ تعالیٰ تو بہرنے والوں اور پاک رہنے والوں کو

اِنَّاللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّا بِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ (⁴⁾

محبوب رکھتاہے۔

اور فرمانِ نبی صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے، تو بہر نبوالاالله کا دوست ہے، اور تو بہر نے والا اس انسان کی طرح ہے جس نے کوئی گناہ نہ کیا ہو۔ (5)

فرمانِ نبوی ہے کہ رحمتِ خداوندی کواس انسان کی توبہ سے زیادہ مَسَّرت ہوتی ہے جو ہلاکت خیز زمین میں اپنی

- 2ترجمه كنز الايمان: اورالله كي طرف توبكروا مسلمانوسب كسب اس اميد يركتم فلاح ياؤ- (ب١٨ النور: ٣١)
 - التحریم، ۸ کنو الایمان: اے ایمان والو!الله کی طرف ایسی توبکروجوآ گے وضیحت بوجائے (ب۲۰ التحریم، ۸)
- البقرة ۲۲۱)
 بهت توبكرنے والوں كواور پيندر كھتا ہے بہت توبكرنے والوں كواور پيندر كھتا ہے تھرول كو (پ٢، البقرة ٢٢٢)
- ٣٤٩/٢ الله عليه وسلم، ٢٠٩/١ الحديث ٢٠٥٦١ ونوادر الأصول في أحاديث الرسول صلى الله عليه وسلم، ٣٤٩/٢

سواری پر کھانے پینے کا سامان لا دے سفر کررہا ہواور وہاں آرام کی غرض ہے رک جائے، وہ سرر کھے تو اسے نیند آجائے، جب سوکرا مطح تو اس کی سامان کے غائب ہواور وہ اس کی جبتو میں نکلے یہاں تک کہ شدتِ گرمی اور پیاس سے بدحال ہوکراسی جگہ واپس آجائے جہاں وہ پہلے سویا تھا اور موت کے انتظار میں اپنے بازو کا تکیہ بنا کر لیٹ جائے، اب جووہ جاگا تو اس نے دیکھا اس کی سواری مع سامان اس کے قریب موجود ہے۔اللہ تعالی کو بندہ کی تو بہ سے اس سواری والے شخص سے بھی زیادہ خوشی ہوتی ہے جس کا سامان جاگئے کے بعداس کول گیا ہے۔(1)

حضرت حسن دَضِعَ الله عَنهُ عِيم وی ہے کہ جب الله تعالی نے حضرت آدم عَلیْهِ السَّادِم کی توبہ قبول فرمائی تو فرشتوں نے آئہیں مبارک باد پیش کی ، جبریل ومیکا ئیل علیه ماالسلام حاضر ہوئے اور کہا: اے آدم! آپ نے توبہ کر کے اپنی آئکھوں کو شنڈ اکر لیا۔ آدم عَلیْهِ السَّلام نے فرمایا: اگراس توبہ کی قبولیت کے بعدر ب سے پھرسوال کرنا پڑاتو کیا ہوگا؟ الله تعالی نے آدم عَلیْهِ السَّلام پروی نازل فرمائی کہا ہے آدم! تو نے اپنی اولا دکو محت اور دکھ تکلیف کا وارث بنایا اور ہم نے آئہیں توبہ بخشی ، جو بھی مجھے پکارے گامیں تیری طرح اس کی پکارکوسنوں گا ، جو مجھ سے مغفرت کا سوال کرے گامیں اسے ناامید نہیں کرونگا کیونکہ میں قریب ہوں ، دعاؤں کو قبول کرنے والا ہوں ، میں توبہ کرنے والوں کوان کی قبروں سے اس طرح اشاؤں گاکہ وہ جنتے مسکراتے ہوئے آئیں گے ، ان کی دعائیں مقبول ہوئی۔

فرمانِ نبوی ہے:الله تعالیٰ کا دستِ رحمت رات کے گنبگاروں کے لئے سبح تک اور دن کے گنبگاروں کے لئے رات تک دراز رہتا ہے اس وقت تک کہ جب مغرب سے سورج طلوع ہوگا اور توبہ کا دروازہ بند ہوجائے گا⁽²⁾ (یعنی قیامت تک الله تعالیٰ بندوں کی توبہ تبول فرمائے گا۔)

رسول خداصَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشا دِكرا می ہے كه اگرتم نے آسان كے برابر گناه كر لئے اور پھر شرمنده ہوكرتو به كرلى توالله تعالىٰ تمہارى توبة قبول كرلے گا۔ (3)

فر مانِ نبوی ہے، آ دمی گناہ کرتا ہے پھراسی گناہ کے سبب جنت میں داخل ہوتا ہے بوچھا گیاحضوروہ کیسے؟ آ پ

❶مسلم كتاب التوبة، باب في الحض...الخ، ص ١٤٦٨، الحديث ٣_ (٢٧٤٤)ملخصاً

^{2}مسلم كتاب، التوبة، باب قبول التوبة...الخ، ص ١٤٧٥، الحديث ٣١_ (٢٧٥٩)

^{3}ابن ماجه، كتاب الزهد، با ب ذكر التوبة، ٤ / ٩٠٠ ناحديث ، ٤ ٢٤٨ ، بتغير قليل

نے فرمایا گناہ کے بعد فوراً اس کی آئیس بارگاہ رب العزت میں اشکبار ہوجاتی ہیں۔ (1)

فرمانِ حضور صَلَى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے كہ ندامت گناموں كا كفارہ ہے۔

رمائِ مورصهی الله عَلَيُهِ وَسَلَم كارشاوِگرامی ہے: گناہوں سے توبر نے والا ایسا ہے جیسے اس نے کوئی گناہ نہ کیاہو۔ (3) حضور صَلَّی الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كارشاوِگرامی ہے: گناہوں سے توبر کے والا ایسا ہے جیسے اس نے کوئی گناہ نہ کیاہو۔ (3) حضور صَلَّی الله اِ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں ایک جبشی حاضر ہوا اور عرض کی : یارسول الله اِ میں خطا کیں کرتا ہوں ، کیا میری تو بہ تبول ہوگی ؟ آپ نے فرمایا: ہاں! وہ کچھ دور جاکرواپس لوٹ آیا اور دریافت کیا کہ جب میں گناہ کرتا ہوں تو الله تعالی دی جسے ہی آیک چیخ ماری اور اس کی روح پرواز کرگئ۔ (4) الله تعالی دی جسے ہے؟ آپ نے ارشا وفرمایا: ہاں! جبشی نے اتنا سنتے ہی ایک چیخ ماری اور اس کی روح پرواز کرگئ۔ (4)

روایت ہے کہ جب الله تعالی نے ابلیس کو ملعون قرار دیا تواس نے قیامت تک کے لئے مہلت مانگی ،الله نے اسے مہلت دے دی تو وہ کہنے لگا: مجھے تیرے عزت وجلال کی قتم! جب تک انسان کی زندگی کا پرشتہ قائم رہے گا میں اسے گنا ہوں پرا کسا تار ہوں گا۔ رب العزت نے فر مایا: مجھے اپنے عزت وجلال کی قتم! میں انکی زندگی کی آخری سانسوں تک ان کے گنا ہوں پر تو بہ کا پر دہ ڈ التار ہوں گا۔ (5)

فرمانِ رسول الله صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے: نيكياں گنا ہوں كواس طرح دور لے جاتى ہيں جيسے پانی ميل كو بہالے جاتا ہے (دوركر ديتا ہے)۔

حضرت سعید بن مُسبِّب رَضِیَ الله عَنه ہے مروی ہے کہ یہ آیت: فَاِنَّهُ کَانَ لِلْاَ وَّالِیْنَ غَفُوْمًا ﴿ (7) الشَّخْص کے بارے میں نازل ہوئی جو گناہ کرتا چرکیتا پھر گناہ کرتا اور پھر توبہ کر لیتا تھا۔

^{🚹} كتاب الزهد لابن المبارك ، باب ماجاء في الخشوع والخوف، ص ٢ ٥، الحديث ٢٦٢

^{2} شعب الايمان ، السابع والاربعون من...الخ ، باب في معالجة...الخ، ٥/٣٨٨، الحديث ٧٠٣٩

^{3}ابن ماجه ، كتاب الزهد ، باب ذكر التوبة ، ٤١١٤ ، الحديث ، ٤٢٥

^{4}طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٦/٦ ٥٥ و احياء علوم الدين، ١٧/٤

^{5.....}شعب الايمان ، السابع و الاربعون ... الخ، باب في معالجة كل ذنب ... الخ، ٩٩٩٥، الحديث ٧٠٧٠

٣٥٦/٦، والفتوحات المكية، ١٩٦/١ وطبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٦٦٦ وطبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٦٦٦ والفتوحات المكية، ١٦/٨ وطبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٢٥٦/٦ والفتوحات المكية، ١٦/٨ وطبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٢٥٦/٦ والفتوحات المكية، ١٦/٨ وطبقات الشافية الكبرى السبكي، ٢٥٦/٦ والفتوحات المكية، ١٦/٨ وطبقات الشافية الكبرى السبكي، ١٦/٨ وطبقات المكية، ١١٥٠ وطبقات الشافية الكبرى السبكي، ١٦/٨ وطبقات المكية، ١٥٠ والفتوحات المكية، ١٦/٨ وطبقات الشافية الكبرى السبكي، ١٦/٨ وطبقات الشافية الكبرى السبكي، ١١٥٠ والفتوحات المكية، ١٦/٨ وطبقات الشافية الكبرى السبكي، ١٦/٨ وطبقات الشافية الكبرى السبكي، ١٦/٨ وطبقات المكية، ١٦/٨ وطبقات الشافية الكبرى السبكي، ١٦/٨ وطبقات المكية، ١٥٠ وطبقات الشافية الكبرى السبكي، ١٦/٨ وطبقات المكية، ١٥٠ وطبقات المكية، ١٥٠

⁷.....ترجمه كنز الايمان: توبيشك ووتوبه كرنے والول كو بخشے والا ب_ (پ٥١، بني اسرائيل: ٢٥)

حضرت فضيل دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهُ كَا قُول ہے؛ رَبِّ ذُوالُجَلال كاارشاد ہے: گنهگاروں كو بشارت دے دو،اگر وہ تو به كريں تو ميں قبول كرلوں گا،صديقين كومتنبه كرد يجئے اگر ميں نے اعمال كاوزن كيا تو انہيں عذاب سے كوئى نہيں بچاسكتا۔ حضرت عبدالله بن عمر دَضِىَ الله عَنْهُمَا كاارشاد ہے: جو گنا ہوں كى ياد ميں پشيمان ہو گيا اوراس كاول خوف خداسے كانپ گيا،اس كے گنا ہوں كو گوكر ديا جاتا ہے۔

حضرت ابن مسعود رَضِیَ اللّه عَنْه سے ایک شخص نے دریافت کیا: میں گناہ کر کے انتہائی شرمندہ ہوں ، میرے لئے تو بہے؟ آپ نے منہ پھیرلیا، جب دوبارہ اس شخص کی طرف دیکھا تو آپ کی آ تکھوں ہے آ نسورواں تھے، فرمایا: جنت کے آٹھ دروازے ہیں، کھولے بھی جاتے ہیں اور بند بھی کئے جاتے ہیں سوائے باب توبہ کے، وہ بھی بھی بند نہیں ہوتا اوراسی کام کے لئے اُس پرایک فرشتہ مامور ہے عمل کرتارہ اور رب کی رحمت سے ناامید نہ ہو۔

روایت ہے کہ بنی اسرائیل میں سے ایک جوان شخص نے بیں سال متوا تراللہ تعالیٰ کی عبادت کی ، پھر بیں سال گناہوں میں بسر کئے ، ایک مرتبہ آئینہ دیکھا تو اسے داڑھی میں بڑھا ہے گے آثار نظر آئے ، وہ بہت جمگین ہوا اور بارگا و رب العزت میں گزارش کی: اے رب دُور اُبحکلا! میں نے بیس سال تیری عبادت کی ، پھر بیس سال گناہوں میں بسر کئے ، اب اگر میں تیری طرف لوٹ آؤں تو مجھے قبول کرلے گا؟ اس نے ہا تعنب غیبی کی آواز سنی ، وہ کہدر ہاتھا: تو نے ہم سے محبت کی ، ہم نے مجھے جبوب بنایا، تو نے ہمیں چھوڑ دیا ، تو نے گناہ کئے ہم نے مہلت دے دی ، اب اگر تو ہماری بارگاہ میں لوٹے گا تو ہم مجھے شرف قبولیت بخشیں گے۔ (1)

حضرت ابن عباس دَضِیَ الله عَنهُ ما ہے مروی ہے کہ حضور صَلَی الله عَلیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا جب بندہ تو بہ کرتا ہے ، الله تعالیٰ اس کی تو بہ قبول کر لیتا ہے ، محافظ فرشتے اس کے ماضی کے گنا ہوں کو بھول جاتے ہیں ، اس کے اعضائے جسمانی اس کی خطاؤں کو بھول جاتے ہیں ، زمین کا وہ گلڑا جس پراس نے گناہ کیا ہے اور آسمان کا وہ حصہ جس کے بنچ اس نے گناہ کیا ہے اس کے گناہوں کو بھول جاتے ہیں ، جب وہ قیامت کے دن آئے گا تو اس کے گناہوں کو بھول جاتے ہیں ، جب وہ قیامت کے دن آئے گا تو اس کے گناہوں پر گواہی دینے والا

€روح البيان ، پ ، ١ ، التوبة ، تحت الاية ٦، ٣٨٩/٣

کوئی نہیں ہوگا۔⁽¹⁾

حضرت علی تکرَّمَ اللَّهُ وَجُهَه ہے مروی ہے حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرما يا كَمِحْلُوق كى پيدائش سے جار ہزار برس قبل عرش كے جاروں طرف لكھوديا گياتھا كه

جس نے توبہ کی اور ایمان لایا اور نیک عمل کئے میں اسے بخشنے

وَ إِنَّى لَغَفَّامٌ لِّبَنْ تَابَوَ امْنَ وَعَبِلَ صَالِحًاثُمَّ

والاجول ـ

(2) اهْتَلاي

صغيره اوركبيره تمام گناموں سے توبفرض عين ہے كيونكه صغيره گناموں پراصرارانہيں كبيره گناه بناويتا ہے۔ فرمانِ الله ہے: (3) وَالَّن بْنُ إِذَا فَعَدُواْ فَاحِشَةً أَوْظَلُوْاْ أَنْفُسَهُمْ

توبه نصوح یہ ہے کہ انسان ظاہر و باطن سے توبہ کرے اور آئندہ گناہ نہ کرنے کاعزم صمیم کرے، جو محض ظاہری طور پر توبہ کرتا ہے اس کی مثال ایسے مردار کی ہے جس پرریشم و کخواب کی چا دریں ڈال دی گئی ہوں اورلوگ اسے حیرت واست فجاب سے دیکھ رہے ہوں، جب اس سے چا دریں ہٹالی جائیں تو لوگ منہ پھیر کرچل دیں، اسی طرح لوگ عبادتِ ریا کی کرنے والوں کو تعجب کی نگاہ سے دیکھتے رہتے ہیں لیکن قیامت کا دن ہوگا توان کے فریب کا پر دہ چاک کر دیا جائے گا اور فرشتے منہ پھیر کرچل دیں گئی ہوں اور توں کو نہیں دیں گے چنا نچے رسولِ اکرم صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم نے ارشا و فر مایا: الله تعالی تمہاری صور توں کو نہیں دیں گے دیا تھے رسے اس کے دیا تھا ہے۔ (4)

❶كنز العمال، كتاب التوبة ، قسم الاقوال...الخ ، ٨٧/٢، الجزء الرابع، الحديث ١٠١٧٥ ماخوذا

^{2}تو جمه كنز الايمان: اور بے شك ميں بهت بخشے والا ہوں اسے جس نے توبد كى اورا يمان لايا اورا چھا كام كيا پھر ہدايت پر رہا۔ (پ٦٠، طه: ٨٠/٢)..... فر دوس الا خيار، ٣٤٠/٢، الحديث ٨٠٠٨

^{3} تو جمه كنز الايمان: اوروه كه جبكوكى بحيائى يا بي جانول برظلم كرين - (ب٤٠١ إن عمران: ١٣٥)

^{4}مسلم، كتاب البروالصلة والأداب، باب تحريم ظلم المسلم...الخ،ص ١٣٨٧، الحديث ٣٣_ (٢٥٦٤)

الحديث ٩٧١٧٩ عبد الايمان ، السابع والاربعون من شعب الايمان باب في معالجة كل ذنب...الخ، ٤٣٦/٥ ، الحديث ٩٧١٧٩

جواز کے سلسلہ میں جو کام انہوں نے کئے ہیں اوران سے طلب مغفرت میں انہوں نے کوئی اہتمام نہیں کیا اوران کے لئے یہ بات آ سان ہے کہ الله تعالیٰ اس ہے راضی ہو جائے ۔ گنا ہوں کو بھول جانا بہت خطرنا ک بات ہے، ہر تقلمند کے لئے ضروری ہے کہ وہ اینے نفس کا مُحاسّبہ کرتار ہے اور اپنے گنا ہوں کو نہ بھولے۔

> ياايها المذنب المحصى جرائمه لاتنس ذنبك واذكر منه ماسلفا وتب الى اللّه قبل الموت وانزجوا ياعاصيا واعترف ان كنت معترفا

﴿1﴾اے گناہوں کوشار کرنے والے مجرم اپنے گناہوں کومت بھول اور گزشته غلطيوں کو يا د کرتارہ۔

﴿2﴾....موت ہے بہلے اللّٰہ تعالیٰ کی طرف رجوع کر لے، گنا ہوں ہے رک حااورغلطیوں کااعتراف کر لے۔

فقيدا بوالليث ذَحْمَةُ اللهِ عَليُه يهم وي ب :حضرت عمر دَضِيَ الله عَنه أيك مرتبه حضور صَلَّى الله عَليه وَسَلَّم كي خدمت میں روتے ہوئے حاضر ہوئے ، آپ نے دریافت فر مایا کہاہے عمر! کیوں روتے ہو؟ عرض کی:حضور! دروازے بر کھڑے ہوئے جوان کی گریدوزاری نے میرا جگر جلا دیا ہے۔ آپ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: اسے اندر بلاؤ! جب جوان حاضِر خدمت ہواتو آپ (صَلَى الله عَلَيْهِ وَسَلَم) نے يو جھا: اے جوان! تم کس لئے رور ہے ہو؟ عرض کی :حضور میں ایخ گناہوں کی کشرت اورربی دوالجلال کی ناراضگی کے خوف سے رور ہا ہوں۔ آپ نے پوچھا: کیا تو نے شرک کیا ہے؟ کہا جہیں يارسول الله! (صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم)، كيا تون صَكى كوناحق قُل كيا ہے؟ آ ب نے دوبارہ يو جھا عرض كيا بنيس يارسول الله! (صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم) _ آب نے ارشا وفر مایا: اگر تیرے گناہ سانوں آسانوں، زمینوں اور پہاڑوں کے برابر ہوں تب بھیاللہ تعالیٰ اپنی رحمت سے بخش دے گا۔

جوان بولا: پارسول الله! میرا گناه ان ہے بھی بڑاہے، آپ نے فرمایا: تیرا گناہ بڑاہے یا کرسی؟ عرض کی: میرا گناہ، آپ نے فرمایا: تیرا گناه بڑا ہے یاعرشِ الہی؟ عرض کی: میرا گناه ، آپ نے فرمایا تیرا گناه بڑا ہے یارتِ دوالحدال! عرض كى ربّ ذوالجلال بهت عظيم ہے۔حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: بلاشبہہ جر معظیم کوربِعظیم ہی معاف فر ما تاہے۔ پھرآ پ نے فرمایا:تم مجھےاپنا گناہ تو بتلاؤ،عرض کی:حضور مجھےآ پ کےسامنےعرض کرتے ہوئے شرم آتی ہے،آپ نے فر مایا: کوئی بات نہیں تم ہتلا وًا عرض کی:حضور میں سات سال ہے کفن چوری کرر ماہوں ،انصار کی ایک لڑکی فوت ہوگئی تو میں اس کا گفن چرانے جا پہنچا، میں نے قبر کھود کر گفن لے لیااور چل بڑا، کچھ ہی دور گیاتھا کہ مجھ برشیطان غالب آ گیا

اور میں النے قدم واپس پہنچا اور لڑی سے بدکاری کی۔ میں گناہ کر کے ابھی چندہی قدم چلاتھا کہ لڑی کھڑی ہوگئی اور کہنے گئی: اے جوان خدا تجھے غارت کرے تجھے اس نگہبان کا خوف نہیں آیا جو ہر مظلوم کو ظالم سے اس کا حق دلاتا ہے، تو نے مجھے مُردوں کی جماعت سے ہر ہنہ کر دیا اور در بار خدا وندی میں ناپاک کر دیا ہے، حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم نے جب بیسنا تو فر مایا: دور ہوجا اے بد بخت! تو نارِجہنم کا مستحق ہے۔

جوان وہاں سے روتا ہوا اور الله تعالی سے اِسْتِعفار کرتا ہوا نکل گیا۔ جب اسے اسی حالت میں چالیس دن گزرگئے تو اس نے آسان کی طرف نگاہ کی اور کہا: اے محمد وآدم وابرا ہیم (عَلَیْهِمُ السَّلام) کے رب! اگر تونے میرے گناہ کو بخش دیا ہے تو حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم اور آپ کے صحابہ کو مطلع فر ما وگر نہ آسان سے آگ بھیج کر مجھے جلادے اور جہنم کے عذا بسے بچالے۔ اسی وقت حضر سے جبریل عَلَیْهِ السَّلام آپ کی خدمت میں حاضر ہوئے اور کہا: آپ کا رب آپ کوسلام کہتا ہے اور بچ چھا ہے کہ خلوق کو آگئے واللہ نے بیدا کیا ہے اور اسی نے اور بچ چھا ہے کہ خلوق کو آللہ نے بیدا کیا ہے اور اسی نے رزق دیا ہے، تب جبریل نے کہا: الله تعالی فرما تا ہے میں نے جوان کی تو بہول کرلی ہے۔ بیں حضور صَلَّی الله عَلَیْهُ وَسَلَّم نے جوان کو بلاکرا ہے تو بہی قبولیت کا مثر دہ سایا۔ (1)

حضرت موسی عَلَیْهِ السَّده کے زمانہ میں ایک شخص ایساتھا جواپنی تو بہ پر بھی قائم نہیں رہتاتھا، جب بھی وہ تو بہ کرتا اسے توڑد بتا یہاں تک کہ اسے اس حال میں بیس سال گزرگئے۔الله تعالی نے حضرت موسی عَلیْهِ السَّده کی طرف وحی کی ،میرے اس بندے کو کہہ دو میں تجھ سے سخت ناراض ہوں ، جب حضرت موسیٰ عَلیْهِ السَّده نے اس آدمی کو اللّٰه کا پیغام دیا تو وہ بہت عملین ہوا اور بیابانوں کی طرف نکل گیا، وہاں جاکر بارگاہِ رب العزت میں عرض کی: اے ربّ ذوالجلال! تیری رحمت جاتی رہی یا میرے گنا ہوں نے تخفے دکھ دیا؟ تیری بخشش کے خزانے ختم ہوگئے یا بندوں پر تیری نگاہ کرم نہیں رہی؟ تیرے عفو و درگزر سے کونسا گناہ بڑا ہے؟ تو کریم ہے ، میں بخیل ہوں ،کیا میر الجن تیرے کرم پر غالب آگیا ہے؟ اگر تو نے انہیں راندہ درگاہ کر دیا تو

1الكشف والبيان للثعلبي، ٢٣٣/٨

وہ کہاں جائیں گے؟ اے رب قادر و قہار! اگر تیری بخشش جاتی رہی اور میرے لئے عذاب ہی رہ گیا ہے تو تمام گناہگاروں کاعذاب مجھے دیدے، میں ان پراپنی جان قربان کرتا ہوں۔الله تعالیٰ نے موسیٰ عَلَیْهِ السَّلَام سے فرمایا: جاؤ اور میرے بندے سے کہد و کہ تونے میرے کمالِ قدرت اور عفوو درگزر کی حقیقت کو مجھ لیا ہے،اگر تیرے گنا ہوں سے زمین پُر ہوجائے تب بھی میں بخش دوں گا۔

رسول کریم صَلَّى الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کا ارشاد ہے کہ الله تعالی کو گنهگار توبہ کرنے والے کی آواز سے زیادہ محبوب اور کوئی آواز نہیں ہے، جب وہ الله عَلیْهِ کہ کر بلاتا ہے تورب تعالی فرما تا ہے: میں موجود ہوں، جو چاہے مانگ! میری بارگاہ میں تیرا رہبہ میں میں میں تیرے دائیں، بائیں، اوپر ہوں اور تیری دھر کن سے زیادہ قریب ہوں، اسے میش میں نے اسے بخش دیا ہے۔ (1)

حضرت ِ ذوالنون مصری دَ حَمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ نَ لَهَا ہِن اللّه اقعالیٰ کے بہت سے ایسے بندے ہیں جنہوں نے خطاؤں کے پود ہے لگائے ، انہیں تو ہکا پانی دیا اور حسرت و ندامت کا پیشل کھایا، وہ دیوا تی کہلائے اور بغیر کی مشخت کے لذتیں حاصل کیں، بیلوگ الله اور اس کے رسول (صَلَّی اللّه عَلَیْهِ وَسَلَّم) کی معرفت رکھنے والے فضیح و بلیخ حضرات ہیں اور عدیم النظیر ہیں، انہوں نے محبت کے جام پٹے اور مصائب پرصبر کرنے کی دولت سے مالا مال ہوئے پھر عالم ملکوت میں ان کے دل غز دہ ہوگئے اور عالم جروت کے جابات کی سیر نے ان کے افکار کوچلا بخشی، انہوں نے مجب کہ جا میں مشغول ہوگئے، یہاں تک کہ وہ اپنی نظامت کے خیموں میں بسیرا کیا، اپنی خطاؤں کے حیفوں کو پڑھا اور گریہ وز اری میں مشغول ہوگئے، یہاں تک کہ وہ اپنی نزم جانا تا آ نکہ انہوں نے راہِ نجات اور سلامتی کی بنیا دول کو پالیا، انکی ارواح کو بہشت کے باغوں میں جگہ ملی اور انہائی نزم جانا تا آ نکہ انہوں نے راہِ نجات اور سلامتی کی بنیا دول کو پالیا، انکی ارواح کو بہشت کے باغوں میں جگہ ملی اور ایک کہ دو گار کے مالک بن گئے ہوئے اور عکمت و دانائی کے تالاب سے سیراب ہوئے، وہ فہم وفر است کی کشتیوں میں سوار جو کے ، انہوں نے سلامتی کے دریا میں نجات کی دولت سے قلعے بنائے اور راحت کے باغات اور عزت و کرامت کے خوانوں کے مالک بن گئے۔

❶كنز العمال، كتاب التوبة، قسم الاقوال...الخ٢/٥٩، الجزء الرابع، الحديث٢٧٦ ماخوذا





رسولِ اکرم صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کا ارشاد ہے: جنت میں رحم کرنے والا ہی داخل ہوگا ، صحابہ کر ام نے کہا: ہم سب رحم کرنے والے ہیں ، آپ نے فر مایا: رحیم وہ نہیں جواپنے آپ پر رحم کرے بلکہ رحیم وہ ہے جواپنے آپ پر اور دوسروں پر رحم کرے بلکہ رحیم وہ ہے جواپنے آپ پر اور دوسروں پر رحم کرے۔ (1)

اپنے آپ پررخم کرنے کا مطلب بیہ ہے کہ خلوصِ دل سے عبادت کرکے گنا ہوں سے کنارہ کش ہوکر اور تو بہ کرکے اپنے وجودکواﷲ کے عذاب سے بچائے ، دوسروں پررخم بیہ ہے کہ سی مسلمان کو تکلیف نہ دے۔

فرمانِ حضورِ انورصَلَّى اللَّه عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے: مسلمان وہ ہے جس کے ہاتھ اور زبان سے لوگ محفوظ رہیں (²⁾ اوروہ جانوروں پررحم کرے، ان سے ان کی طاقت کے مطابق کام لے۔

حضور صَلَى الله عَلَيْهِ وَسَلَم كَافر مان ہے: ایک شخص سفر میں جار ہاتھا کہ اسے راستہ میں سخت پیاں گی ، اسے قریب ہی ایک کنواں نظر آیا، جب کنوئیں سے پانی پی کر چلاتو دیکھا ایک کتا پیاس کے مارے زبان باہر نکالے پڑا ہے، اسے خیال آیا کہ اسے بھی میری طرح پیاس گی ہوگی ، وہ واپس گیا، منہ میں پانی بھر کرکتے کے پاس آیا اور اسے بلا دیا، اللہ نعالی نے محض اسی رحم کی بدولت اس کے گنا ہوں کو معاف کر دیا۔

صحابہ کرام نے سوال کیا: یارسول الله! (صَلَّى الله عَلَیْهِ وَسَلَّم) جانوروں پر شفقت کرنے سے بھی ہمیں ثواب ماتا ہے؟ آپ نے فرمایا: ہرذی روح پر شفقت کا اجرماتا ہے۔(3)

حضرت أنس بن ما لك رَضِى الله عَنه ہے مروى ہے: ايك رات حضرت عمر دَضِى الله عَنهُ شت لگار ہے تھے كه آپ

- 1 ١٠٠٩ الخامس والسبعون...الخ، باب في رحم الصغير ...الخ ٧٨/٧، الحديث ١١٠٥٩
 - 2 مسلم، كتاب الايمان، باب بيان تفاضل الاسلام...الخ، ص ٤١ الحديث ٦٥ ـ (٤١)
 - 3بخارى، كتاب المظالم والغصب،باب الإبارعلى الطرق...الخ ،١٣٣/٢ ،الحديث ٢٤٦٦

کاگزرایک قافلہ ہے ہوا، آپ کواندیشہ لاحق ہوا کہیں کوئی ان کا سامان نہ چرالے، راستے میں انہیں حضرتِ عبدالرحمٰن بن عوف دَضِیَ اللّٰه عَنْه علے اور انہوں نے پوچھا: امیر المؤمنین! اس وقت کہاں تشریف لے جارہے ہیں؟ آپ نے فرمایا:

ایک قافلہ قریب اتر اہے، مجھے ڈرہے کہیں کوئی چوراُن کا سامان نہ لیجائے، چلوان کی تگہبانی کریں، یہ دونوں حضرات قافلہ کے قریب جا کر ہیڑھ گئے اور ساری رات پہرہ دیتے رہے یہاں تک کہ جسم ہوگئی، حضرتِ عمر دَضِیَ اللّٰه عَنْهُ نِے آواز دی اے قافلہ کے اللّٰہ اللّٰہ کے اللّٰہ کے اللّٰہ کے اللّٰہ کہ اللّٰہ کے اللّٰہ کو اللّٰہ کے اللّ

پس ہمارے لئے ضروری ہے کہ ہم صحابہ کرام کے نقشِ قدم پر چلیں ،الله تعالیٰ نے ان کی تعریف میں ارشاد فرمایا: " ٹُ حَمَّاءُ بَیْدَائِمْ مُنْ " (1) وہ مسلمانوں پر بلکہ تمام مخلوق پررتم کرنے والے ہیں یہاں تک کہ ذمی کا فربھی ان کی نگاہ شفقت سے محروم ندر ہے۔

حضرت عمر دَضِیَ اللّٰه عَنُه نے ایک بوڑھے ذمی کولوگوں کے دروازوں پر بھیک ما تگتے ہوئے دیکھا تو فر مایا ہم نے تیرے ساتھ انصاف نہیں کیا، جوانی میں تجھ سے جزیہ لیتے رہے اور بڑھا بے میں تجھے در بدر ٹھوکریں کھانے کوچھوڑ دیا، آپ نے اسی وقت بیت المال سے اس کا وظیفہ مقرر کر دیا۔

حضرت علی حَرَّمَ اللَّهُ وَجُهَه ہے مروی ہے: میں نے ایک صبح حضرت عمر دَضِی اللَّه عَنْهُ کود یکھا ایک وادی میں اونٹ پر سوار چلے جارہے ہیں، میں نے پوچھا: امیر المؤمنین! کہاں جارہے ہیں؟ آپ نے فر مایا: صدقہ کے اونٹوں میں سے ایک اونٹ کم ہوگیا ہے۔ اسے تلاش کررہا ہوں، میں نے کہا آپ نے بعد میں آنے والے خلفاء کومشکل میں ڈالدیا ہے، حضرت عمر دَضِیَ اللّٰه عَنْه نے جواب میں کہا: اے ابوالحن! (دَضِیَ اللّٰه عَنْه) مجھے ملامت نہ کرو، رب ذوالحجلال کی قتم! جس نے محمد صلّی اللّٰه عَنْه نے جواب میں کہا: اے ابوالحن ! (دَضِیَ اللّٰه عَنْه) مجھے ملامت نہ کرو، رب ذوالحجلال کی قتم! جس نے محمد صلّی اللّٰه عَنْه وَسَلّہ کونی برحق بنا کر بھیجا، اگر دریائے فرات کے کنارے ایک سالہ بھیڑکا بچہ بھی مرجائے تو قیامت کے دن اس کے بارے میں مواخذہ ہوگا کیونکہ اس امیر کی کوئی عزت نہیں جس نے مسلمانوں کو ہلاک کر دیا اور نہیں اس بد بخت کا کوئی مقام ہے جس نے مسلمانوں کوخوف زدہ کیا۔

فرمانِ مصطفیٰ صَلَّی اللّٰه عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے: میری امت کے لوگ جنت میں نماز روز وں کی کثرت سے نہیں بلکہ دلوں

1توجمه كنو الايمان: آپس ميس زم ول - (پ٢٦ ،الفتح: ٢٩)

کی سلامتی ، سخاوت اور مسلمانوں بررحم کرنیکی بدولت داخل ہوں گے۔ ⁽¹⁾

حضورانورصَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشاد ہے: رحم كرنے والوں پر الله تعالیٰ رحم كرتا ہے تم زمین والوں پر رحم كروآ سان والاتم پر رحم فر مائے گا۔ (2)

فر مانِ نی کریم صَلَّی اللَّه عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے: جو کسی پررخم نہیں کرتا ،اس پررخم نہیں کیا جاتا جو کسی کونہیں بخشا جاتا۔

حضرت ما لک بن اَنُس دَضِیَ الله عَنهُ سے مروی ہے :حضور صَلَّی الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر مایا : تم پرمسلمانوں کے جارحقوق بیں اپنے محسن کی امداد کروگنا ہمگار کے لئے مغفرت طلب کرومریض کی عیادت کرواور تو بہر نے والے کودوست رکھو۔ (4)

روایت ہے کہ حضرت موسیٰ عَلَیْهِ السَّلام نے الله تعالیٰ سے سوال کیا: اے الله ! تو نے مجھے کس وجہ سے صفی بنایا ہے؟
ربّ تعالیٰ نے فر مایا : مخلوق پر تیرے رحم کرنیکی وجہ سے۔

حضرتِ ابوالدَّر داء دَضِىَ اللهُ عَنْه بِحِول سے چِڑیاں خرید کرانہیں چھوڑ دیتے اور فرماتے جاؤ آزادی کی زندگی بسر کرو۔ فرمانِ نبوی ہے کہ رحمت، شفقت اور محبت میں تمام مسلمان ایک جسم کی طرح ہیں، جب جسم کا کوئی عضو تکلیف میں مبتلا ہوجا تا ہے تو ساراجسم اس در داور تکلیف میں مبتلا ہوجا تا ہے۔ (⁵⁾

بنی اسرائیل پرسخت قحط کا زمانہ تھا، ایک عابد کا ریت کے ٹیلے سے گزر ہوا تو اس کے دل میں خیال آیا کاش یہ ریت کا ٹیلہ آٹے کا ٹیلہ ہوتا اور میں اس سے بنی اسرائیل کے پیٹ بھروا تا، اللہ تعالی نے بنی اسرائیل کے نبی کی طرف وی جیجی، میرے اس بندہ سے کہدوکہ تجھے اِس ٹیلے کے برابر بنی اسرائیل کو آٹا کھلانے سے جتنا ثو اب ملتاہم نے تمہاری

❶شعب الايمان ، الرابع والسبعون...الخ ، باب في الجود والسخاء ،٧٩٣٩/ الحديث ١٠٨٩٣ ، ١٠٨٩٣

^{2}ترمذي، كتاب البروالصلة ، باب ماجاء في رحمة المسلمين ،٣٧١/٣، الحديث ١٩٣١

١٩٢٦٤ مسند احمد، مسندالكوفين، ٧/١٧، الحديث ٤٦٦٦

^{4}فردوس الاخبار، ١٥/١، الحديث ١٥٠٢ بتغير قليل (عن انس بن مالك)

الحديث ٦٦ (٢٥٨٦)

اس نیت کی بدولت ہی اتنا تواب دے دیاہے، اسی لئے فر مانِ نبوی ہے، مومن کی نیت اُس کے مل سے بہتر ہے۔

حضرت عیسی عَلیْهِ السَّلام ایک مرتب کہیں جارہے تھے، آپ نے شیطان کودیکھا ایک ہاتھ میں شہداوردوسرے میں راکھ لئے چلا جارہا تھا، آپ نے پوچھا: اے دشمن خدا! یہ شہداور راکھ تیرے س کام آتی ہے؟ شیطان نے کہا: شہر غیبت کرنے والوں کے ہونٹوں پرلگا تا ہوں تا کہ وہ اور آگے بڑھیں ، راکھ تیب وں کے چہروں پرملتا ہوں تا کہ لوگ ان سے نفرت کریں۔ حضور صَلَّى الله عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جب بیتیم کودکھ دیا جا تا ہے تواس کے رونے سے الله تعالیٰ کاعرش کا نہ جا تا ہے، اور رب دوالجلال فرما تا ہے: اے فرشتو! اس بیتیم کو جس کا باپ منوں مٹی تلے فن ہوچکا ہے، س نے رالایا ہے؟ (2) حضور انور صَلَّى الله عَلیْهِ وَسَلَّم کا ارشاد ہے کہ جس نے بیتیم کے لباس وطعام کی ذمہ داری لے لی ، الله تعالیٰ نے اس کے لئے جنت کو واجب کر دیا۔ (3)

" رُوْضَةُ الْعُلَمَاء " میں ہے کہ حضرت ابراہیم عَلَیْهِ انسَّلام کھانے سے پہلے میل دومیل کا چکرلگا کرمہمانوں کو تلاش کیا کرتے تھے۔ایک مرتبہ حضرت علی حَدَّمَ اللّٰهُ وَجُهَه روپڑے، پوچھا گیا: آپ کیوں روئے؟ آپ نے فرمایا: ایک ہفتہ ہوگیا، میرے ہاں کوئی مہمان نہیں آیا، شایدالله تعالی مجھ سے خوش نہیں ہے۔

فرمانِ نبوی ہے: جوکسی بھو کے کوفی سبیل الله کھانا کھلاتا ہے اس کے لئے جنت واجب ہوجاتی ہے '' اورجس نے کسی بھو کے سے کھانار وک لیاالله تعالیٰ قیامت کے دن اس شخص سے اپنافضل وکرم روک لے گااور عذاب دے گا۔''

فر مانِ نبوی ہے بیخی الله تعالی ، جنت اور لوگوں کے قریب ہوتا ہے اور جہنم سے دور ہوتا ہے بخیل الله تعالی ، جنت

- ❶.....شعب الايمان، الخامس والاربعون...الخ، باب في اخلاص العمل...الخ، ٣٤٣/٥، الحديث ٩٥٨٥.
 - 2فردوس الاخبار، ٧/٢ ٥، الحديث: ٥٥٥٧
 - 3 شرح السنة، كتاب البروالصلة ، باب ثواب كا فل اليتيم ، ٢/٦ ه ٤ ، الحديث ٣٣٥١. ملخصا
 - 4ابن عساكر ۲۷/۱۲ و كنز العمال، ۹۷/۱۲ الحديث ٤٤٢٧٢ بتغيير الالفاظ
 -6

اورلوگوں سے دور ہوتا ہے اور جہنم سے قریب ہوتا ہے،

فرمانِ نبوی ہے کہ جاہل شخی ،الله تعالی کوعا بریخیل سے زیادہ پسند ہے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ قیامت کے دن چار شخص بلاحساب جنت میں داخل ہوں گے، عالم باعمل، حاجی جس نے جج کے بعد موت تک گنا ہوں کا ارتکاب نہ کیا، شہید جواللہ کے کلمہ کو بلند کرنے کے لئے میدانِ جنگ میں مارا گیا بخی جس نے مالِ حلال کمایا اور اللہ کی رضا جوئی میں خرج کر دیا، یہ لوگ ایک دوسرے سے اس بات پر جھگڑیں گے کہ جنت میں پہلے کون داخل ہوتا ہے۔

(8)

حضرت ابن عباس دَضِیَ اللّه عَنه هما ہے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللّه عَلیْه وَسَلَّم نے فر مایا: اللّه نے اپنے بعض بندوں کو مال و دولت سے مالا مال کردیا تا کہ وہ لوگوں کو فائدہ پہنچاتے رہیں جو شخص فائدہ پہنچانے میں پس ویدیش کرتا ہے، اللّه تعالیٰ اس کی دولت کسی اور کودے دیتا ہے۔ (4)

فرمانِ نبوی ہے: سخاوت بہشت کا ایک درخت ہے جس کی شاخیں زمین پرجُھکی ہوئی ہیں جس نے اس کی کسی شاخ کوتھام لیاوہ اسے جنت میں لے جائے گی۔⁽⁵⁾

حضرت جابر دَضِیَ الله عَنه سے مروی ہے: حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم سے بوچھا گیا کہ کونساعمل افضل ہے؟ آپ نے فرمایا: صبراور سخاوت ۔ (6)

حضرتِ مِقْدام بن شُرْح کَدَ حُمَهُ اللهِ عَلَيْه اپنے والداور اپنے جدسے روایت کرتے ہیں، ان کے دادانے حضور کی خدمت میں عرض کی کہ مجھے ایسا عمل بتلا یئے جو مجھے جنت کا مکین بنادے۔ آپ نے فر مایا: مغفرت کے اسباب میں سے کھانا کھلانا، سلام کرنا اور خوش اخلاقی ہے۔ (7)

- ❶شعب الايمان، الرابع والسبعون...الخ، باب في الجودو السخاء، ٢٨/٧، الحديث١٠٨٤٨
- € روح البيان،الانفال، تحت الآية: ٤، ٣١٤/٣

- 2المرجع السابق
- 4المعجم الاوسط ، ٤٦/٤ ، الحديث ١٦٢ ٥
- 5شعب الايمان الرابع والسبعون...الخ، باب في الجودو السخاء ٤٣٤/٧، الحديث ١٠٨٧٥
- 6 شعب الايمان ، السبعون من شعب الايمان، باب في الصبر على المصائب ، ٢٢/٧ الحديث ١٢٢٠٠
 - 7المعجم الكبير ٢٢/١٨٠، الحديث ٤٦٩ و ٤٧٠

اب 19

$\left\langle \underbrace{}$ نماز میں خشوع وخضوع $\left\langle \right\rangle$

حدیث شریف میں ہے: ایک دن جریل اَ مین حضور صَلَّی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور کہا: میں نے آ سانوں پرایک ایسافرشتہ دیکھا جو تخت شین تھا اور ستر ہزار فرشتے صف بستہ اس کی خدمت میں حاضر سے ، اس کے ہرسانس سے الله تعالی ایک فرشتہ بیدا فرما تا ہے، ابھی ابھی میں نے اسے شکستہ پروں کے ساتھ کو وقاف میں روتے ہوئے دیکھا ہے، جب اس نے مجھے دیکھا تو کہا تم الله تعالی کے حضور میری سفارش کرو میں نے پوچھا: تیرا جرم کیا ہے؟ اُس نے کہا: معراج کی رات جب محمد صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کی سواری گزری تو میں تخت پر بیٹھار ہا، تعظیم کے لئے کھڑ انہیں ہوا، اس لئے الله تعالی نے مجھے اس جگہ اِس عذاب میں مبتلا کر دیا ہے۔ جبریل امین نے کہا: میں نے الله تعالی کی بارگاہ میں روروکراً س کی سفارش کی ، الله تعالی نے مجھے سے فرمایا: تم اس سے کہو کہ یہ محمد صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم پردرود بھے، چنا نچہ اس فرشتہ نے آ پر پردرود بھیجا تو الله تعالی نے اس کی اس لغزش کو معاف کر دیا اور اس کے نئے پر بھی پیرا فرما دیئے۔ (1)

﴿ قیامت کے دن سب سے پہلے نماز کے بارے میں پوچھا جائے گا ﴿

روایت ہے کہ قیامت کے دن سب سے پہلے بندے کی نمازیں دیکھی جائیں گی، اگرائس کی نمازیں کہ کس ہوئیں تو نماز وں سمیت اُس کے تمام اَعمال رَدِّ کردیئے جائیں گے۔ (2) حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا فرمان ہے: فرض نماز تراز وکی طرح ہے، جس نے انہیں پوراکیا وہ کا میاب رہا۔ (3) حضرتِ یَزیکُ الرَّقَاشی دَطِی اللهُ عَنْه کہتے ہیں، حضور صَلَّی اللهُ عَنْه وَسَلَّم کی نماز اِس طرح

^{.....}

^{2....}المعجم الاوسط، ٤/١ . ٥، الحديث ١٨٥٩ ماخوذاً

^{3}الزهد لابن المبارك ، ص ١٩٩ ، الحديث ١١٩٠

برابر ہوتی تھی جیسے وہ ٹکی ہوئی ہو_۔ ⁽¹⁾

فرمان نبوی ہے: میری اُمت کے دوآ دمی نماز پڑھیں گے، اُن کے رکوع ، بچودا یک جیسے ہوں گے مگر اُن کی نماز وں میں زمین آسان کا فرق ہوگا ، ایک میں خشوع ہوگا اور دوسری بغیر خشوع ہوگی ۔ ⁽²⁾

فرمانِ نبوی ہے:الله تعالیٰ قیامت کے دن اُس بندے پر نظر رحمت نہیں ڈالے گاجس نے رُکوع اور سجدہ کے درمیان اپنی پیٹھ کوسیدھانہیں کیا۔(3)

فرمانِ نبوی ہے: جس نے وقت پرنماز پڑھی، وضوجے کیا اور رُکوع و جودکو خشوع وخضوع سے پایئے تعمیل تک پہنچایا اس کی نماز سفیداور بڑاق صورت میں آسانوں کی طرف جاتی ہے اور کہتی ہے: اے بندے! جیسے تونے میری مُحافظت کی اِسی طرح الله تعالی مجھے مخفوظ رکھ کیکن جس نے نماز وفت پرنہ پڑھی نہ وضوجے کیا اور اپنے رُکوع و جودکو خشوع سے آراستہ نہ کیا، اس کی نماز کالی سیاہ شکل میں اُوپر جاتی ہے اور کہتی ہے جیسے تونے مجھے خراب کیاالله تعالی مجھے بھی خراب کراس کے منہ پر ماراجا تا ہے۔ (4)

فرمانِ نبوی: ''برترین آ دمی نماز کا چورہے۔''(5)

حضرت إبن مسعود رَضِیَ اللّهُ عَنْهُ كا قول ہے: نماز ایک پیانہ ہے جس نے اسے پورا کر دیاوہ كامیاب ہوااور جس نے اسے پورا کر دیاوہ كامیاب ہوااور جس نے اس میں كمی كی اس کے لئے عذا ب ہے ۔ بعض علماء كا قول ہے نمازی تا جركی طرح ہے تا جركواسی مال سے نفع ملتا ہے جو خالص ہو، اسی طرح نمازی كی عبادت بھی فرائض كوا دا كئے بغیر سود مندنہیں ہوتی ۔

حضرت ابو بكر رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ نماز كے وقت فرماتے: لوگو!الله تعالى نے تمہارے لئے جوآ گ جلائی ہے اٹھوا سے

نماز کے ذریعہ بجھا دو۔

- 1 .-- المرجع السابق ، باب ماجاء في فضل العبادة، ص ٣٤، الحديث ١٠٣
 - 2 كشف الحفاء، حاتمة يختم بها الكتاب، ٣٧٦/٢
 - 3 مسند احمد ، مسند ابي هريرة ٦١٧/٣ ، الحديث ١٠٨٠٣
- 4 شعب الايمان باب الحادي والعشرين... الخ، تحسين الصلاة... الخ ٢/٣٤١، الحديث ٢١٤٠ اليس بتمام
 - 5مسند احمد، مسند الانصار، حدیث ابی قتاده انصاری ۸/۸ ۳۸، الحدیث ۲۲۷۰۵

فرمانِ نبوی ہے: نماز سکون اور تواضع کے ساتھ ہے، ⁽¹⁾ جواپنی نماز کے باعث فخش اور برے کاموں سے نہر کا، الله تعالیٰ سے اس کی دوری بڑھتی جاتی ہے ⁽²⁾ پس غافل کی نماز اُسے برائیوں سے نہیں روکتی ہے۔

فرمانِ نبوی ہے: بہت سے نمازی ایسے ہیں جن کونمازوں سے دکھاور تکلیف کے بغیر کچھ حاصل نہیں ہوتا۔ (3)
حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کاارشاد ہے: بندہ کا نماز میں وہی حصہ ہے جسے وہ کامل توجہ سے پڑھتا ہے۔
اہلِ معرفت کہتے ہیں: نماز چار چیزوں کا نام ہے، علم سے آغاز، حیا کے ساتھ قیام، تعظیم سے اوائیگی اور خوفِ خدا کے ساتھ اس کا اختتام۔ بعض مشاکخ کا قول ہے: جس کا دل نماز کی حقیقت کونہ بھتا ہواس کی نماز فاسد ہے۔

فر مانِ رسولِ مقبول صَدِّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَدَّم ہے: جنت میں " اَفْیَح "نام کی ایک نبر ہے جس میں زعفران سے پیدا کی ہوئی حوریں موتیوں کے ساتھ دل بہلاتی رہتی ہیں اور ستر ہزار زبانوں میں الله تعالی کی شیج کرتی رہتی ہیں ،ان کی آ وازیں حضرت داؤد عَلَيْهِ السَّلَام کے کُن سے زیادہ شیریں ہیں ،وہ کہتی ہیں ہم ان کے لئے ہیں جوخضوع وخشوع سے نمازیں پڑھتے ہیں ،اللّٰه تعالیٰ فرما تا ہے: میں ایسے نمازی کواپنے جوارِ رحمت میں جگد دورگا اور اسے شرف دیدار بخشوں گا جوخضوع وخشوع سے نمازیں اوا کرتا ہے۔ (5)

الله تعالی نے حضرت موسیٰ عَلَیْهِ السَّلام کی طرف وحی کی: اےموسیٰ! جب تو دل شکتہ ہوکر مجھے یا دکر تا ہے تو میں تجھے یا دکرتا ہوں ، کامل اطمینان اور خشوع سے میرا ذکر کیا کر، اپنی زبان کو دل کامطیع بنا، میری بارگاہ میں عبد ذلیل کی طرح حاضری دے ، خوف زدہ دل سے مجھے پکار اور سچائی کی زبان سے مجھے بلاتارہ۔

الله تعالی نے حضرت موسی عَلیه السَّلام بروحی نازل فرمائی که اپنی امت کے گنهگاروں سے کہد و!میراذ کرنہ کریں

^{1} سنن الترمذي ، ابواب الصلاة ، باب ما جاء في التخشع في الصلاة ، ١ / ٣٩ م الحديث ٣٨٥

^{2}المعجم الكبير ١١/٢٦، الحديث ١١٠٢٥

ابن ماجه ، كتاب الصيام ، باب ماجاء في الغيبة ... الخ، ٢/ ٣٢٠ ، الحديث ١٦٩٠ ماخوذًا وملخصًا

^{4}طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٢/٤ ٢ و المغنى عن حمل الاسفار للعراقي ١٦٧/١، الحديث ٢٧٤.

^{.....6}

میں نے اپنی ذات کی قتم کھائی ہے کہ جو مجھے یاد کرے گا، میں اسے یاد کروں گا، یہ جب مجھے یاد کرتے ہیں تو میں ان پر لعت کرتا ہوں۔

اے اَر بابِ ہوش! بہتوان لوگوں کا حال ہے جو گنہگار ہیں مگریا دِخداسے غافل نہیں ،ان لوگوں کا کیا حال ہوگا جو بدکار بھی ہیں اوریا دِخداسے بھی غافل ہیں۔

بعض صحابہ دَخِبیَ اللّٰهُ عَنْهُم کا قول ہے: انسان نماز میں جس قدرسکون واطمینان اورلذت وسرور حاصل کرتا ہے، اسی قدر قیامت کے دن وہ پرسکون ہوگا۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِهِ الكِيْحُض كود يكهاوه نماز ميں اپني داڑھى سے كھيل رہاتھا، آپ نے فرمايا: اگر إس كے دل ميں خشوع ہوتا تو إس كے اعضاء ميں اُس كاظہور ہوتا (داڑھى سے اس طرح شغل كرنے سے ظاہر ہے كہ اس كے دل ميں خشوع نہيں ہے) آپ نے فرمايا: جس كے دل ميں خشوع نہيں اس كى نماز رائيگال ہے۔ (2)

الله تعالى نے نماز ميں خشوع وخضوع رکھنے والوں كى تعريف متعدد آيات ميں كى ہے، فرمانِ الله عالى ہے: فِي صَلا تِهِمْ خَشِعُونَ ۞ (3) على صَلا تِهِمْ يُحَافِظُونَ ۞ على صَلا تِهِمْ دَآيِمُونَ ۞ (5)

کسی نےخوب کہا ہے:''نمازی تو بہت ہیں مگرخشوع سے نمازادا کرنے والے کم ہیں،حاجی بہت ہیں کیکن نیک سیرت کم ہیں، پرندے بہت ہیں مگر بلبلیں کم ہیں اور عالم بہت ہیں مگر عامل کم ہیں۔''

دو صیح نماز' خشوع وخضوع اور اِنکساری کا نام ہے اور یہی قبولیت نماز کی علامت ہے کیونکہ جیسے جوازِ نماز کی

- 1 كنز العمال ، كتاب الصلوة ، مكروهات متفرقه ، ٤/٤ ، الجزء الثامن ، الحديث : ٢٢٥٢٥
- س....ریحدیث جمین نبیل ملی البت حضرت سیرناسفیان توری دَحمَهُ اللهِ عَلَیْه کاایک قول یول ہے: "من لم یخشع فسدت صلاته" (قوت القلوب، علی میں الله علی الله علی میں الله علی الله
 - 4ترجمه كنز الايمان: اين نماز كي حفاظت كرت بين _ (ب٧١الانعام: ٩٠)
 - **5**.....توجمه كنز الايمان: اين تمازك يابندين (ب٢٩، المعارج: ٢٣)

شرا ئط ہیں اِسی طرح قبولیت نماز کی بھی شرا ئط ہیں ، جواز کی شرا ئط فرائض کاا دا کرنااور قبولیت نماز کی شرا ئط میں خشوع اور تقوی مر فہرست ہیں جنانچدارشادِر بانی ہے:

قَدُا فَلَحَ الْمُؤْمِنُونَ أَلَا لَيْنَهُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَشِعُونَ أَنَّ اللَّهِ مَا اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّ

تقوى كے متعلق ارشادِ الهي ہے:

(2) إِنَّهَايَتَقَبَّلُ اللهُ مِنَ الْمُثَّقِيْنَ ۞

فرمان نبوی ہے: جس نے کامل خشوع سے دور کعت نماز اداکی، وہ گناہوں سے ایبا یاک ہوجاتا ہے جیسے پیدائش کےدن یاک تھا۔⁽³⁾

حقیقت پیہے کہ نماز میں دل خیالات فاسدہ کی وجہ سے صحیح معنوں میں نماز کی طرف متوجہ نہیں ہویا تالہذاان خیالات سے نجات حاصل کرنا ضروری ہے۔نجات کے کئی طریقے ہیں ایک بیھی ہے کہاندھیرے میں نماز پڑھی جائے یا ایسی جگه نمازیرهی جائے جہاں کامل سکوت ہو، نیچے رنگین فرش نہ ہواور نمازی منقش کیڑے نہ پہنے ہو کیونکہ ان چیزوں ير جو نهي نظر بير تي ہے انسان ادھر متوجہ ہوتا ہے، چنانچہ حدیث شریف میں ہے، حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے حضرت ابوجَهُم دَحْهَةُ اللهِ عَلَيْهِ كَ بِصِيحِ بِهو ئِمُنْقُشَ كُرتِ مِينِ نماز برُهي اورنماز كِفوراً بعدا تاركروا بِس بهيج ديا اورفر مايا: اس نے ابھی مجھےنماز میں اپنی طرف متوجہ کر دیا۔ (4)

ایک مرتبہ نے جوتے پہن کرآ بے نے نماز پڑھی، نماز کے بعد آپ نے اسے اتار دیا اور وہی پرانے جوتے پین لئے اورفر مایا میں نماز میں اس کی طرف دیکھ کرمشغول ہو گیا۔⁽⁵⁾

المؤمنون: ۲۰۱) مرادكو ينج ايمان والے جواني نماز ميں گرگراتے ہيں۔ (ب۸۱، المؤمنون: ۲۰۱)

^{2}تو جمه كنز الإيمان:الله اسى عقبول كرتائ جي ورب مالمائدة :٢٧)

^{3}المعجم الاوسط، ٣٧٩/٤، الحديث ٦٣٠٦

^{4}بخارى كتاب الصلاة ، باب اذا صلى في ثوب له...الخ ، ١٤٩/١ ، الحديث ٣٧٣

⁵الزهد لابن مبارك ، باب فضل المشي...الخ، ص ١٣٥ ، الحديث ٢٠٤

مردول کے لئے سونے کے زیورات کی حرمت سے پہلے آپ ایک دن سونے کی آنگھوٹھی پہن کر منبر پرتشریف فرما تھے، آپ نے اسے اتار کر پھینک دیا اور فرمایا یہ مجھے اپنی طرف متوجہ کرتی ہے۔ (1)

حضرتِ ابوطلحه رَضِى اللهُ عَنهُ نے ایک مرتبا پنیاغ میں نماز پڑھی، اجپانک ایک پرندہ اڑا اور وہ درختوں سے نکلنے کی راہ تلاش کرنے لگا۔ حضرتِ ابوطلحه دَضِیَ الله عَنهُ نے تعجب سے بیہ نظر دیکھا تو وہ اداشدہ رکعتوں کی تعداد بھول گئے، آپ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کی بارگاہ میں حاضر ہوئے اور اس آز مائش کا ذکر کرتے ہوئے کہنے لگے: اے الله کے رسول صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم الله کی راہ میں دے دیا ہے، اب آپ جیسے چاہیں اسے خرج کریں۔ (2)

ایک اور شخص نے حضرتِ عثمان دَضِیَ اللهٔ عَنه کے عہدِ خلافت میں اپنے اس باغ میں جو کھجوروں سے لدا ہوا تھا، نماز پڑھی تو اس کی نظر کھجوروں کے پھل دیکھنے میں ایسی الجھی کہ اُسے رکعتوں کی تعدادیا دندرہی ، نمازختم کر کے وہ حضرتِ عثمان دَضِیَ اللّٰه عَنه کے پاس آیا اور کہنے لگا: میں نے اس باغ کواللّٰہ کے نام پر بخش دیا ہے، اسے اللّٰہ کے راستہ میں خرچ کرد ہے کے حضرتِ عثمان دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه نے وہ باغ بچاس ہزاررو پے میں فروخت کردیا۔

اَسلاف کرام میں ہے بعض حضرات کاارشاد ہے کہ نماز میں جار چیزیں انتہائی بُری ہیں ،کسی دوسری طرف متوجہ ہونا،منہ پر ہاتھ پھیرنا،کنگریاں صاف کرنااورگز رگاہ پرنماز شروع کردینا۔

فرمانِ نبوی ہے کہ الله تعالیٰ اپنے بندے کی طرف متوجہ رہتا ہے جب تک وہ اپنی توجہ نماز سے نہیں ہٹا تا۔⁽³⁾ حضرتِ ابو بکر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ جب نماز میں کھڑے ہوتے تو ایسامعلوم ہوتا تھا جیسے کوئی میخ گڑی ہوئی ہے۔ بعض حضرات اتنے سکون سے رُکوع کرتے کہ پرندے انہیں پھر سمجھ کراُن کی بیٹھ پر بیٹھ جاتے۔

ذوقِ سلیم بھی اس بات کا تقاضا کرتا ہے کہ جب دنیاوی شان وشوکت والے انسانوں کے حضور لوگ انتہا کی تعظیم سے حاضر ہوتے ہیں تو اس بادشا ہوں کے بادشاہ کے حضور تو بطریقِ اُولیٰ تعظیم و تکریم سے حاضر ہونا چاہئے۔

ييشُ ش : مطس المَلرَنينَةُ العِيْدُمينَة (وعوت اسلام)

¹ ٢٤٠٨ ، المعجم الكبير، ٣٢/١٢ ، الحديث ١٢٤٠٨

^{2}السنن الكبرى للبيقى ، كتاب الصلوة ، باب من نظر في صلاته...الخ،٢/٢ ؟ ، الحديث ٣٨٧٣

^{3}ابوداود، كتاب الصلاة، باب الالتفات في الصلاة، ٣٤٤/١، الحديث ٩٠٩

'' تورا ق'' میں مرقوم ہے: اےانسان! میری بارگاہ میں روتے ہوئے حاضری دینے سے نہ گھبرا میں (تیراخدا) تیرے دل سے بھی زیادہ قریب ہوں اور ہرجگہ میرانورجلوہ گئن ہے۔

روایت ہے: حضرت ِعمر دَضِیَ اللّهُ عَنْه نے منبر پرفر مایا: حالت اسلام میں انسان بوڑھا ہوجا تا ہے مگراس کی نماز کامل نہیں ہوتی۔ پوچھا گیا: وہ کیسے؟ فر مایا: ول میں خشوع نہ آیا، اکساری پیدا نہ ہوئی اور نماز میں الله تعالیٰ کی طرف ہمہ تن متوجہ نہ بنا۔ (تو پھر نماز کیسے کامل ہوئی؟)

ابوالعاليه دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ عَالِيهِ اللهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهِ عَلَيْ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَي

حضرت حسن دَحْـمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ بيار شا دِالٰہی اس شخص كے بارے میں ہے جونما زكو بھول جاتا ہے يہاں تک كه اس كاوفت ختم ہوجاتا ہے۔

نبی کریم صَلَّى اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کاارشاو ہے،الله تعالی فرما تا ہے کہ میرے بندے فرائض کوادا کئے بغیر مجھ سے رہائی نہیں پاسکیں گے۔ (1)

اولا دکوکم عقلی سے بچانے کانسخہ

الله عَزَّوَجَلَّ کے محبوب، دانا کے عُنُوب، مُنزَّه عَنِ الْعُيُّوب صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كافر مانِ حفاظت نشان ہے: " جو شخص دستر خوان سے کھانے کے گرے ہوئے مگڑوں کواٹھا کر کھائے وہ فراخی کی زندگی گزار تا ہےاوراس کی اولا داوراولا دکی اولا دکم عقلی سے محفوظ رہتی ہے۔"

(كنزالعمال ١١/١٥ ١١لحديث ٤٠٨١)

الزهد لابن المبارك ، باب فضل ذكر الله عزوجل ، ص ٣٦٥، الحديث ١٠٣٢



خيبت وچغلى ﴿

خداوند قد وس نے قرآنِ مجید میں غیبت کی مدمت کرتے ہوئے غیبت کرنے والوں کومر دار کا گوشت کھانے والے کہا چنانچے فرمانِ الٰہی ہے:

ایک دوسرے کی غیبت نہ کروکیاتم میں سے کوئی اپنے مردہ بھائی

کا گوشت کھا نالیند کرتاہے۔

وَلايغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۖ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمُ أَنْ

يَّا كُل لَحْمَ اَخِيْدِمَ يْتًا فَكْرِهْتُمُوْدُ ۖ

فرمانِ نی کریم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے کہ ہر مسلمان پر دوسر ہے مسلمان کا خون ، مال اور عزت حرام ہے۔

ارشا دِ نبوی ہے کہ اپنے آپ کوغیبت سے بچاؤ کیونکہ غیبت زنا سے بدتر ہے ، کیونکہ زانی گناہ کے بعد تو بہ کرتا ہے تواللہ تعالی قبول کر لیتا ہے مگر غیبت کا گناہ اس وقت تک معاف نہیں ہوتا جب تک کہ جس کی غیبت کی جائے وہ معاف نہ کردے۔

(3)

کہتے ہیں: غیبت کرنے والے کی مثال اس شخص جیسی ہے جس نے ایک منجنیق لگائی اور وہ اس منجنیق کے ذریعے وائیں بائیں نیکیاں بھینک رہاہے۔

رسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشاد ہے: جو كسى مسلمان بھائى كى برائى جا ہتے ہوئے غيبت كرتا ہے،الله تعالى

استوجمه کنز الایمان: اورایک دوسرے کی فیبت نه کروکیاتم میں کوئی پیندر کھے گا کہا پیٹے مرے بھائی کا گوشت کھائے تو بیتمہیں گوارانہ
 ہوگا۔ (پ۲۶،الحجرات: ۱۲)

^{2} مسلم ، كتاب البر والصلةو الاداب ، باب تحريم ظلم المسلم...الخ، ص ١٣٨٦، الحديث ٣٢_(٢٥٦٤)

^{3} شعب الايمان ، الرابع والاربعون... الخ ، باب في تحريم اعراض الناس، ٥/٦٠، الحديث ٦٧٤١ و جامع الاحاديث ،٣٠٦/ ٣٩ ، الحديث ٩٣١٠

اسے یوم قیامت جہنم کے ملِ براس وقت تک کھڑ اکریگا کہ جو پچھاس نے کہا تھا،نگل جائے۔⁽¹⁾

یہ بیات اسپول کریم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے: غیبت بیہ ہے کہ تواپنے بھائی کی اُس چیز کا ذکر کرے جےوہ ناپہند کرتا ہے (²⁾ خواہ اس کے بدن کا کوئی عیب ہو، نسب کا عیب ہو، اس کے قول وفعل یا دین و دنیا کا عیب ہو یہاں تک کہ اُس کے کپڑوں اور سواری میں بھی کوئی عیب نکالے گا تو یغیبت ہوگی۔

بعض متقد مین کا قول ہے: یہ کہنا بھی کہ فلاں کا کپڑ المبایا جھوٹا ہے، غیبت ہے چہ جائیکہ اس کی ذات کے نقص گنے جائیں۔(تواس غیبت کا کیا ٹھکانا)

ایک جیموٹے قد کی عورت کسی کام کے لئے حضور صَدًی اللهُ عَلَیْهِ وَسَدَّم کی خدمت میں حاضر ہوئی، جب وہ واپس چلی اللهُ عَلَیْهِ وَسَدَّم اللهُ عَنَهُ اللهُ عَنَهُ اللهُ عَنَهُ اللهُ عَنَهُ اللهُ عَنَهُ اللهُ عَنَهُ اللهُ عَنهُ اللهُ عَنهُ اللهُ عَنهُ اللهُ عَنهُ اللهُ عَنهُ وَسَدِّم اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِّم اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِّم اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِّم اللهُ عَلیْهِ وَسَدِّم اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِّم اللهُ عَلیْهِ وَسَدِّم اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِی اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِّم اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِی اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِّم اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِی اللهُ عَلَیْهِ و اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِی اللهُ عَلَیْه وَسَدِی اللهُ عَلَیْه وَسَدِی اللهُ عَلَیْه وَسَدِی اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِی اللهُ عَامِی اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِی اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِی اللهُ عَلَیْ

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ارشا وفر ماتے ہیں کہ قیامت کے دن بدترین آ دمی دو چبروں والا چغلخو رہوگا جو آپ کے پاس اور چبرہ لے کر جاتا ہے (⁵⁾ اور فر مایا جو دنیا میں چغلخو ری کرتا ہے قیامت کے دن اس کے منہ سے آگ کی دوز بانیں نظر آئیں گی۔ (⁶⁾

^{1}ابوداود، كتاب الادب، باب من ردعن مسلم غيبة، ٤/٤ ٣٥، الحديث ٤٨٨٣

^{2} مسلم ، كتاب البروالصلة والاداب، باب تحريم الغيبة، ص ١٣٩٧، الحديث ٧٠، (٢٥٨٩)

١٠٦٥ : ١٠٣٥ : ١٠٣٥ : الحديث ١٠٣٥ وشعب الايمان، الرابع والاربعون...الخ، باب ١٣/٥ الحديث ٦٧٦٧

^{.....4}

^{5}بخارى، كتاب الادب، باب ما قيل في ذي الوجهين، ٤/٥١، الحديث ٢٠٥٨

^{6}ابوداود، كتاب الادب، باب في ذي الوجهين، ٢/٤ ٣٥، الحديث ٤٨٧٣

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشاد ہے: چِغل خور جنت میں نہیں جائے گا۔ (1)

الله تعالی نے تمام جانوروں کے منہ میں زبان پیدا کی ہے گرمچھلی کو زبان نہیں دی گئی،اس کی وجہ بیہ کہ جب حکم خداوندی سے فرشتوں نے آدم عَلَیْهِ السَّلام کو تجدہ کیا اور ابلیس، رجیم ہوکر مسخ شدہ صورت میں زمین پر پھینک دیا گیا تو وہ سمندروں کی طرف گیا تو اسے سب سے پہلے مچھلی نظر آئی جسے اس نے آدم عَلَیْهِ السَّلام کی تخلیق کا قصہ سنایا اور بی بھی بتلایا کہ وہ بحروبر کے جانوروں کا شکار کرے گا،تو مچھلی نے تمام دریائی جانوروں تک حضرت آدم کی کہانی کہہ سنائی بایں وجہ اسے الله تعالی نے زبان کے شرف سے محروم کردیا۔

حضرت عَمُروبن دینار ذَخَهَ اُللَهِ عَلَيْه کَهِ بِین که مدینظیبه میں ایک شخص رہتا تھا جس کی بہن مدینہ کے نواح میں رہتی تھی، وہ بیار ہوگئی تو پینے خص اس کی تجہیز و تکفین کا انتظام کیا، آخر جب اسے فن کر کے واپس آیا تواسے یاد آیا کہ وہ رقم کی ایک تھیلی قبر میں بھول آیا ہے۔ اس نے اپنے ایک دوست سے مدد طلب کی دونوں نے جاکراس کی قبر کھود کرتھیلی نکال لی ۔ تواس نے دوست سے کہا: ذرا بٹنا! میں دیکھوں تو سہی میری بہن کس حال میں ہے؟ اس نے لحد میں جھا نک کرد یکھا تو وہ آگ سے بھڑک رہی تھی، وہ واپس چپ چاپ چلا آیا اور بہن کس حال میں ہے؟ اس نے لحد میں جھا نک کرد یکھا تو وہ آگ سے بھڑک رہی تھی، وہ واپس چپ چاپ چلا آیا اور میں سے بو چھا: میری بہن میں کیا کوئی خراب عادت تھی؟ ماں نے کہا: تیری بہن کی عادت تھی وہ ہمسایوں کے درواز وں سے بو چھا: میری بہن میں کیا کوئی خراب عادت تھی؟ ماں نے کہا: تیری بہن کی عادت تھی وہ ہمسایوں کے درواز وں جے کان لگا کراُن کی با تیں سنتی تھی اور چفلخوری کیا کرتی تھی ۔ پس اس شخص کو معلوم ہوگیا کہ عذا ب کا سبب کیا ہے، پس جو خضی عذا ب قبر سے بچنا چا ہتا ہے اسے چا ہئے کہ وہ غیبت اور چفلخوری سے پر ہیز کرے۔

حضرت ابواللیث بخاری دَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه حج کے لئے گھر سے روانہ ہوئے اور دودینار جیب میں ڈال لئے ، روانہ

1 مسلم ، كتاب الايمان، باب بيان غلظ تحريم النميمة ، ص ٦٦، الحديث ١٦٨ ـ (١٠٥)

T

ہوتے وقت قتم کھائی کہ اگر میں نے مکہ کرمہ کوجاتے یا گھر واپس آتے ہوئے کسی کی غیبت کی توبید دورینار اللہ کے نام پر صدقہ کر دوں گا۔ آپ مکہ شریف تک گئے اور گھر واپس آئے مگر ویناراسی طرح ان کی جیب میں محفوظ رہے، ان سے غیبت کے متعلق پوچھا گیا تو انہوں نے جواب دیا: میں ایک مرتبہ کی غیبت کوسومر تبہ کے زنا سے بدترین سمجھتا ہوں۔ حضرت ابوحف اللہ علیٰہ کا قول ہے کہ میں کسی انسان کی غیبت کرنے کو ماہ رمضان کے روزے نہ رکھنے سے بدتر سمجھتا ہوں، پھر فر مایا: جس نے کسی عالم کی غیبت کی تو قیامت کے دن اس کے چہرے پر لکھا ہوا ہوگا، یہ الله کی رحمت سے ناامید ہے۔

فرمانِ نبوی ہے:معراج کی رات میراالیی قوم پرگزر ہوا جواپنے ناخنوں سے اپنے چبروں کوچھیل رہے تھے اور مردار کھارہے تھے، میں نے جبریل امین سے پوچھا: کہ بیکون لوگ ہیں؟ جبریل نے کہا: بیدہ لوگ ہیں جود نیامیں لوگوں کا گوشت کھاتے رہے ہیں۔⁽¹⁾ (یعنی غیبت کرتے رہے ہیں)

حضرت حسن دَضِیَ اللهٔ عَنه کا قول ہے: ربِ دوالجلال کی شم! غیبت لقمہ کے پیٹ میں پہنچنے سے بھی جلدتر ،مومن کے دین میں رخنہ ڈال دیتی ہے۔

حضرت سلمان فارسی، حضرت ابوبکر وعمر رضی الله عنه کے ہم سفر تصاوران کے لئے کھانا تیار کرتے تھے، ایک مرتبہ ایبا تفاق ہوا کہ حضرت سلمان رضی الله عنه نے کھانے کی کوئی چیز نہ پائی جسے تیار کر کے وہ کھا عکیں ، حضرت ابوبکر وعمر دَضِیَ الله عنه مانے انہیں حضور کی خدمت میں بھیجا کہ جاکر دیکھو وہاں کچھ موجود ہے؟ انہوں نے واپس آکر بتلایا کہ وہاں کچھ موجود ہے، اس پر انھوں نے کہا: اگر تم فلال کنوئیں کی طرف جاتے تو اس کا پانی بھی خشک ہوجا تا، تب یہ کہ وہاں برانھوں نے کہا: اگر تم فلال کنوئیں کی طرف جاتے تو اس کا پانی بھی خشک ہوجا تا، تب یہ آیت نازل ہوئی:

یعنی ایک دوسرے کی غیبت نہ کرو۔

وَلا يَغْتَبُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا (2)

حضرت ابو ہر ریرہ رَضِیَ اللهُ عَنه سے مروی ہے:حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: ''جود نیامیں اپنے بھائی کا گوشت

^{1}ابوداود، كتاب الادب، باب في الغيبة ، ٤ ٣٥٣/ ، الحديث ٤٨٧٨

^{2} ترجمه كنز الايمان: اورايك دوسركى نيبت ندكرو- (ب٢٦ الحجرات: ١٢)

101

کھا تاہے قیامت کے دن اس کے سامنے مردہ بھائی کا گوشت رکھا جائے گا اور کہا جائے گا: جسے تو زندہ کھا تا تھا اب مردہ کو بھی کھا اور وہ اسے کھائے گا'' پھر آپ نے بیآ بیت پڑھی :

کیاتم میں ہے کوئی یہ پہند کرتا ہے کہا پنے مردہ بھائی کا گوشت

اَيُحِبُّا حَدُكُمُ اَنْ يَّاكُلُ لَحُمَا خِيْدِمَ يُتَا (1)

کھائے۔

حضرت جاہر بن عبداللہ انصاری رَضِی الله عنه سے مروی ہے چونکہ حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کے عہد مبارک میں غیبت بہت کم کی جاتی تھی اس کے بد بوآتی تھی مگراب غیبت اتنی عام ہوگئی کہ مشام اس کی بد بو کے عادی ہوگئے عبیب کہ وہ اِسے محسوس ہی نہیں کر سکتے ۔اس کی مثال الی ہے جیسے کوئی شخص چر رے سکنے والوں کے گھر میں داخل ہوتو وہ اس کی بد بوسے ایک لمح بھی نہیں ملم رسکے گا مگر وہ لوگ و ہیں کھاتے پیتے ہیں اور انہیں بومحسوس ہی نہیں ہوتی کیونکہ ان کے مشام (ناک) اس قسم کی بوکے عادی ہو چکے ہیں اور یہی حال اب اس غیبت کی بد بوکا ہے۔

حضرت ِ کعب دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے: میں نے کسی کتاب میں پڑھاہے، جو تحض غیبت سے تو بہ کر کے مراوہ جنت میں سب سے آخر میں داخل ہوگااور جوغیبت کرتے کرتے مرگیاوہ جہنم میں سب سے پہلے جائے گا،فر مانِ الٰہی ہے:

ہر پیٹھ بیچھے برائیاں کرنے والےاور تیری موجودگی میں برائیاں

وَيُلُّ لِّكُلِّ هُبَزَ قٍ لُّبَرَقِ لِ ⁽²⁾

كرنے والے كے ليے جہنم كا كڑھاہے۔

یہ آیت ولید بن مغیرہ کے حق میں نازل ہوئی جومسلمانوں کے سامنے حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم اور مسلمانوں کی برائیاں کیا کرتا تھا،اس آیت کا شان بزول تو خاص ہے مگراس کی وعید عام ہے۔

1ترجمه كنز الايمان: كياتم مين كوئي پندر كھے گاكما پنے مرے بھائى كا گوشت كھائے۔

(ب٢٦،الحجرات:١٢)المعجم الاوسط، ١/٠٠٥،الحديث ٢٥٦، ليس ذكر الآية

2توجمه كنز الايمان: خرابي ہاس كے لئے جولوگول كمند برعيب كرے بيٹير پيچے بدى كرے - (ب٠٠،الهُمزة:١)

حاصل ہو۔

رسول مقبول صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ارشا وفر ماتے ہیں کہ اپنے آپ کوغیبت سے بچاؤ، بیزنا سے بھی بدتر ہے، پوچھا گیا: بیزنا سے کیسے بدتر ہے؟ تو آپ نے فر مایا: آ دی زنا کر کے تو بہ کر لیتا ہے، اللّٰه تعالیٰ اس کی تو بہ قبول فر ما تا ہے مگر غیبت کرنے والے وجب تک وہ خص جس کی غیبت کی تئی ہو، معاف نہ کرے، اس کی تو بہ قبول نہیں ہوتی۔ (۱) فیبت کرنے والے وجب تک وہ خص وری ہے کہ وہ اللّٰه تعالیٰ کے حضور شرمندہ ہوکر تو بہ کرے تا کہ اللّٰه کے کرم سے فیض بیاب ہوکر پھر اس محض سے معذرت کرے جس کی اس نے غیبت کی تھی تا کہ غیبت کے اندھیاروں سے رہائی

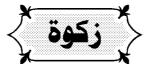
فرمانِ نبوی ہے کہ جواپیے مسلمان بھائی کی غیبت کرتا ہے اللّٰہ تعالیٰ قیامت کے دن اُس کا منہ دُبر کی طرف پھیر دےگا، ⁽²⁾

☆.....☆.....☆.....☆

^{◘}المعجم الاوسط للطبراني، ٥/٦٦، الحديث ٩٥٠ و جامع الاحاديث ، ٣٩٠/٣ ، الحديث ٩٣١٠

^{2} كنز العمال ٢٣٥/٣٠، الحديث ٨٠٣٦

(21) -!



فرمانِ الهي ہے:

اوروہ لوگ جوز کواۃ ادا کرنے والے ہیں۔

وَالَّذِينَ هُمُلِلزَّكُوةِ فَعِلُوْنَ ۞ (1)

حضرت ابو ہر ریرہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے: حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فرمایا: جُو خُض ،اپنے مال ودولت کا حق ادانہیں کرتا قیامت کے دن اس کے پہلواور پیٹے جہنم کے سخت گرم پھروں سے داغی جائے گی اور اس کا جسم وسیع کردیا جائے گا اور جب بھی اسکی حرارت میں کی آئے گی اس کو بڑھا دیا جائے گا اور دن اس کے لیے طویل کر دیا جائے گا عرد با جائے گا اور دن اس کے لیے طویل کر دیا جائے گا جس کی مقدار بچپاس ہزارسال ہوگی یہاں تک کہ بندوں کے اعمال کا فیصلہ ہوگا پھروہ جنت کی طرف اپناراستہ اختیار کرے گا، (2)

فرمانِ الهي ہے:

اور جولوگ سونا چاندی جمع کرتے ہیں اور اسے راوِ خدا میں خرج خ نہیں کرتے انہیں عذاب الیم کی خوشخبری دے دوجس دن ان کے مال کوجہنم کی آگ میں تپایا جائے گا اور اس سے ان کے پہلوؤں، پیشانیوں اور پیٹھوں کو داغا جائے گا کہ یہ ہے جو پچھتم نے جمع کیا تھا اب اسے جمع کردہ مال کا مزہ چکھو۔ وَالَّذِيْنَ يَكُنِزُوْنَ النَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللهِ فَبَشِّرُهُمُ إِعَذَابِ اللهِ صَلَّ يَّوْمَ يُحْلَى فَي سَبِيلِ اللهِ فَبَشِّرُهُمُ إِعَذَابِ اللهِ صَلَّى اللهِ فَبَرُونَهُمُ عَلَيْهَا فِي ثَالِي جَهَنَّمَ فَتُكُول فِي عَلَيْهَا فِي مَاهُهُمُ وَجُنُونُهُمُ وَتُكُونُهُمُ وَقُلُهُونُ مُهُمُ اللهُ فَالمَا كَنَوْتُهُم لِا نَفْسِكُمُ فَكُونُونُهُمُ وَقُلُهُونُ مُهُمُ اللهُ فَالمَا كَنَوْتُهُم لِا نَفْسِكُمُ فَكُونُونُهُم اللهُ فَالمَا كَنَوْتُهُم لِا نَفْسِكُمُ فَكُونُونُ وَلَا اللهُ عَلَى اللهُ فَالْمَا كَنَوْتُهُم اللهُ فَالمَا كَنوْتُهُمُ اللهُ فَالْمَا كَنَوْتُهُمُ اللهُ فَالْمُونُ مُنْ وَلَيْنُ اللّهُ عَلَى اللهُ اللّهُ اللهُ الله

- 1ترجمه كنز الايمان: اوروه كرزكوة ويخ كاكام كرتے يين (پ١٨ ١ ١١مومنون: ٤)
- 2 مسلم كتاب الزكاة، باب اتم مانع الزكاة ، ص ٤٨١ ، الحديث ٢٤ _ (٩٨٧)
- الله (عَرَّوَجَلَّ) كى راه ميس خور كرر كھتے ہيں سونا اور چاندى اورائے الله (عَرَّوَجَلَّ) كى راه ميس خرج نہيں كرتے انہيں خوشخرى سناؤ =

﴿ قِيامت كِدن " فقرا " أغنيا كے لئے باعث ہلاكت ہوں گے ﴿

فرمانِ نبوی ہے کہ قیامت کے دن فُقراء، اَ غنیا کے لئے ہلاکت کا سبب بنیں گے، جب وہ الله تعالیٰ کی بارگاہ میں عرض کریں گے: اے الله انہوں نے ہمارے حقوق غصب کر کے ہم پرظلم کیا تھا۔ رب فرمائے گا: مجھے اپنی عزت وجلال کی قتم ! آج میں تمہیں اپنے جوارِ رحمت میں جگہ دول گا اور انہیں اپنی رحمت سے دور کردول گا، پھر آپ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے بیآیہ نے بیانہ میں جگہ دول گا اور انہیں اپنی رحمت سے دور کردول گا، پھر آپ صَلَّم اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَم نے بیآیہ بیٹر الله عَلیْهِ

وَالَّذِينَ فِنَ أَمُوالِهِمْ حَقَّ مَعْلُوْمٌ شُّ لِلسَّآلِلِ اعْنَا عَمَالَ مِن سَائَل اورفقير كَاليك عين حق ب-وَالْيَحُرُومِ شُّ (1)

فر مانِ نبوی ہے: معراج کی رات میرا گذرایک الیی قوم پر ہوا جنہوں نے آگے پیچھے چیتھڑ ہے لگائے ہوئے سے اور جہنم کا تھو ہڑ ،ایلوااور بد بودارگھاس جانوروں کی طرح کھار ہے تھے۔ میں نے پوچھا: جریل یہ کون ہیں؟ جریل نے عرض کی:حضور یہوہ لوگ ہیں جوابینے مال کا صدقہ (زکوۃ) نہیں دیتے تھے۔اللہ تعالی نے نہیں بلکہ انہوں نے خود ہی اپنے آپ برظم کیا ہے۔

تابعین دَضِیَ اللَّهُ عَنْهُمُ کی ایک جماعت حضرتِ آبی سِنَان دَضِیَ اللَّهُ عَنْهُ کی زیارت کے لئے آئی ، جب ان لوگول کو وہاں بیٹھے کچھ دریہ وگئی تو حضرت آبی سِنَان دَضِیَ اللَّهُ عَنْه نے کہا: ہمارا ایک ہمسایہ فوت ہو گیا ہے، چلوتعزیت کے لئے اس

= در دناک عذاب کی جس دن وہ تپایا جائے گاجہنم کی آگ میں پھراس سے داغیں گےان کی پییثانیاں اور کروٹیس اور پیٹھیں ہیہے وہ جو تم نے اپنے لیے جوڑ کررکھا تھااب چکھومزااس جوڑنے کا - (ب۱۰ انتوبة: ۳۵،۳۶)

- ۔۔۔۔تو جمه کنز الایمان: اوروہ جن کے مال میں ایک معلوم حق ہے اس کے لیے جو مائلے اور جو ما نگ بھی نہ سے تو محروم رہے۔ (پ۲۹، المعارج: ۲۵،۲۶) ۔۔۔۔۔المعجم الاو سط، ۳۶۹/۳، الحدیث ۴۸۱۳
- التذكرة للقرطبي،
 الكبيرة السابعة والثامنة والعشرون بعد المائة، ترك الزكاة، ٢٥/١ والتذكرة للقرطبي،
 باب مايكون منه عذاب القبر...الخ، فصل قال علماؤنا، باب منه، ص٤٣١

کے بھائی کے پاس چلیں جمہ بن یوسف الفر یا بی کہتے ہیں: ہم آپ کے ساتھ روانہ ہو گئے اوراس کے بھائی کے پاس پہنچ تو دیکھا وہ بہت آہ و بکا کررہا تھا۔ ہم نے اسے کافی تسلیاں دیں، صبر کی تلقین کی مگر اس کی گرید وزاری برابر جاری رہی ہم نے کہا کیا تہ ہمیں معلوم نہیں کہ ہر شخص کو آخر مرجانا ہے؟ وہ کہنے لگا: یہنچ ہے مگر میں اپنے بھائی کے عذاب پر روتا ہوں۔ ہم نے بوچھا: کیااللہ تعالی نے تہ ہیں غیب سے تہارے بھائی کے عذاب کی خبر دی ہے؟ کہنے لگا: نہیں بلکہ ہوایوں کہ جب سب لوگ میرے بھائی کوفن کر کے چل دیئے تو میں وہیں بیٹھارہا، میں نے اس کی قبر سے آ واز سنی وہ کہدرہا تھا آہ! وہ مجھے تہا چھوڑ گئے اور میں عذاب میں مبتلا ہوں، میری نمازیں اور روزے کہاں گئے؟ مجھ سے برداشت نہ ہو سکا میں نے اس کی قبر کھودنا شروع کر دی تا کہ دیکھوں میرا بھائی کس حال میں ہے؟ جو نہی قبر کھی! میں نے دیکھا اس کی قبر میں آگ کا طوق پڑا ہوا ہے مگر میں محبت میں دیوانہ وار نے دیکھا اس کی قبر میں آگ کا طوق پڑا ہوا ہے مگر میں محبت میں دیوانہ وار آگے بڑھا اوراس طوق کو اتارنا چاہا، جس کو ہاتھ لگا تے ہی میرا سے ہاتھا نگلیوں سمیت جل گیا ہے۔

ہم نے دیکھا واقعی اس کا ہاتھ بالکل سیاہ ہو چکا تھا، اس نے سلسلۂ کلام جاری رکھتے ہوئے کہا: میں نے اس کی قبر پرمٹی ڈالی اور واپس لوٹ آیا۔ اب اگر میں نہ روؤں تو اور کون روئے گا؟ ہم نے پوچھا: تیرے بھائی کا کوئی ایسا کام بھی تھا جس کے باعث اسے میسزاملی؟ اس نے کہا: وہ اپنے مال کی زکو قانبیں دیتا تھا۔ ہم بےساختہ پکاراٹھے کہ میاس فرمان الہی کی تصدیق ہے:

اور جولوگ ہمار نے قضل سے عطا کر دہ مال میں بخل کرتے ہیں وہ اسے اپنے لیے بہتر نہ بمجھیں بلکہ بیان کے لیے مصیبت ہے عنقریب قیامت کے دن انہیں طوق پہنایا جائے گا۔ وَلاَ يَحْسَبَنَّ الَّذِيْ يَنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَا اللهُ مُاللهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَخَيْرًا لَّهُمْ لَبِلُ هُوَشَرُّلَهُمْ لَسَيُطَوَّقُوْنَ مَابَخِلُوابِهِ يَوْمَ الْقِلِمَةِ لَا (1)

تیرے بھائی کو قیامت سے پہلے ہی عذاب دے دیا گیا۔

حضرت محمد بن بوسف الفر يا في كهته بين: هم ومال سے رسول الله صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كے صحافي حضرت ابوذ ررَضِيَ

ستوجمهٔ کنز الایمان: اورجو بخل کرتے ہیں اس چیز میں جوالله نے انہیں اپنے فعنل سے دی ہرگز اے اپنے لیے اچھانہ مجھیں بلکہ وہ ان
 کے لیے براہے ۔ عنقریب وہ جس میں بخل کیا تھا قیامت کے دن ان کے گلے کا طوق ہوگا۔ (پ٤٠١ یا عمران: ۱۸٠)

الله عنه کی خدمت میں آئے اوراُنہیں سارا ماجراسنا کر دریافت کیا کہ یہودونصالا میں میں مگران کے ساتھ بھی ایسا اتفاق نہیں دیکھا گیا،اس کی کیا وجہ ہے؟ انہوں نے فرمایا: اِس میں کوئی شک نہیں کہ وہ دائمی عذاب میں ہیں مگر الله تعالیٰ تمہیں عبرت حاصل کرنے کے لئے مسلمانوں کی بیرحالتیں دکھا تاہے۔

فرمانِ اللي ہے:

(1) فَتَنُ أَبْصَى فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ عَبِي فَعَلَيْهَا وَمَا أَنَاعَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ @

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشاد ہے: زكوة نددينے والے الله تعالى كے يہاں يہودونصارى كى طرح ہيں ،عُشر نددينے والے الله عَلَيْهِ وَسَلَّم اور فرشتوں كى زبان سے ملعون نددينے والے مجوں كى طرح اور جولوگ زكوة اور عشر نددين نبى كريم صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اور فرشتوں كى زبان سے ملعون قرار پائے اوران كى گواہى نامقبول ہے۔ (2)

اور فرمایا: اس شخص کے لئے خوشخری ہے جس نے زکو ۃ اور عشر اداکیا اور اس کیلئے بھی خوشخری ہے جس پر قیامت اور زکو ۃ کاعذاب نہیں ہے۔ جس شخص نے اپنے مال کی زکو ۃ اداکی الله د تعالی نے اس سے عذاب قبر کواٹھالیا، اس پر جہنم کو حرام کردیا، اس کے لئے بغیر حساب کے جنت واجب کردی اور اسے قیامت کے دن پیاس نہیں لگے گی۔ (3)

تنین سودرجات کی بلندی

حدیث مبارک میں ہے: "جس نے مصیبت پرصبر کیا یہاں تک کداس (مصیبت) کوا چھے صبر کے ساتھ لوٹا دیا، الله بَارَکَ وَتَعَالَى اس کے لئے تین سوور جات لکھے گا، ہرایک ورجہ کے مابین (یعنی درمیان) زمین و آسان کا فاصلہ ہوگا۔" (الحامع الصغیر للسیوطی، ص ۳۱۷، الحدیث ۱۳۷ه)

•تر جمه کنز الایمان: توجس نے دیکھا توایخ بھلے کواور جواندھا ہوا توایخ برے کواور میں تم پرنگہان نہیں۔ (پ۷، الانعام: ١٠٤)

•

·····3





فرمانِ الهی ہے:

وہ حرام اور بدکار بول سے اپنی شرم گا ہوں کی حفاظت کرتے ہیں۔

وَالَّذِيْنَ هُمُلِفُرُو جِهِمُ خِفِظُونَ ۞

ایک اورآیت میں ارشادِر بانی ہے:

یعنی چھوٹے بڑے ظاہر پوشیدہ کسی بھی گناہ کے قریب مت جاؤ۔

وَلاتَقُرُبُواالْفَوَاحِشَ مَاظَهَرَ مِنْهَاوَمَابَطَنَ (2)

یعنی نه ہی کسی بڑی بے حیائی کا اِر تکاب کر وجیسا کہ زنااور نہ چیوٹی کا جیسا کہ غیرمحرم کو چیونا، دیکھناوغیرہ کہ حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کاارشادِمبارک ہے، ہاتھ زنا کرتے ہیں، پیرزنا کرتے ہیںاورآ ٹکھیں زنا کرتی ہیں،فر مانِ الٰہی ہے:

مومنوں سے کہدد بیجئے اپنی آئیسیں بند کرلیں اوراپنی شرم گاہوں

قُلْ لِلنُّوُّمِنِيْنَ يَغُضُّوامِنَ أَبْصَارِهِمُ وَيَحْفَظُوا

کی حفاظت کریں۔

فُرُوْجُهُمُ ذٰلِكَ آزُلُى لَهُمْ (3)

الله تعالی نے مسلمان مردوں اور عور توں کو تکم دیا ہے کہ وہ حرام کی طرف نہ دیکھیں اوراپنی شرمگا ہوں کو ارتکا ب حرام ہے محفوظ رکھیں۔

الله تعالى ف مُتعَدّد آيات مين زناكي حُرمت بيان فرمائي ب، ايك جكدار شادِر باني ب:

جو چخص زنا کرتا ہےا سے اثام میں ڈالا جائے گا۔ . وَمَنْ يَّفُعَلُ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا اللهِ

- السقر جمه كنز الايمان: اوروه جوا پنی شرمگا مول كی حفاظت كرتے بیں (ب۸۱ السؤمنون: ٥)
- **2**.....تر جمه کنز الایمان: اور بحیائیوں کے پاس نہ جاؤجوان میں کھلی ہیں اور جوچیسی ۔ (ب۱۰۱۷ نعام: ۱۰۱)
- ۔۔۔۔۔ تو جمهٔ کنز الایمان: مسلمان مردول کو کلم دوا پنی نگا ہیں کچھ نیجی رکھیں اورا پنی شرمگا ہوں کی حفاظت کریں بیان کے لیے بہت سخرا ہے۔ (پ۸۱ النور:۳۰)
 - الفرقان: ١٥ م الفرقان: ١٥ م م م ايائ گا-(ب ١٩ الفرقان: ٦٨)

اَ ثام کے متعلق کہا گیا ہے کہ جہنم کی ایک وادی ہے۔ بعض علماء نے کہا ہے کہ وہ جہنم کا ایک غارہے، جب اس کا منہ کھولا جائے گا تواس کی شدید بدیو سے جہنمی چیخ آٹھیں گے۔

بعض صحابہ کرام رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم سے مروی ہے: نِ ناسے بچو!اس میں چھ صیبتیں ہیں جن میں سے تین کا تعلق دنیا سے ہے اور تین کا آخرت سے ۔ دنیا میں رزق کم ہوجا تا ہے، زندگی مخضر ہوجاتی ہے اور چبرہ سنح ہوجا تا ہے، آخرت میں خداکی ناراضگی، سخت رُسِش اور جہنم میں داخل ہونا ہے۔

روایت ہے کہ حضرتِ موکیٰ عَلَیْہِ انسَادہ نے زانی کی سزاکے بارے میں پوچھاتورب تعالیٰ نے فرمایا: میں اسے آگری ہوجائے۔ کہتے آگر بہت بڑے پہاڑ پررکھ دی جائے تووہ بھی ریزہ ہوجائے۔ کہتے ہیں: ابلیس کو ہزار بدکار مردوں سے ایک بدکار عورت زیادہ پسند ہوتی ہے۔

"مصابیح" میں ارشا دِرسول اکرم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے: جب بندہ زِنا کرتا ہے تواس کا ایمان نکل کراس کے سر پرچستری کی طرح معلق رہتا ہے اور جب وہ اس گناہ سے فارغ ہوجا تا ہے تواس کا ایمان پھر لوٹ آتا ہے۔

کتاب اقناع میں فرمانِ حضور پُر نور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم ہے: الله تعالیٰ کے زویک نظفہ کو حرام کاری میں صرف کرنے سے بڑا کوئی گناہ نہیں ہے (2) اور لواطت زِنا سے بھی بدتر ہے، جیسا کہ حضر سے انس بن مالک رَضِی اللهُ عَنْه سے مروی ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ جنت کی خوشبو پانچ سوسال کے سفر کی دوری سے آئے گی مگر لوطی اس سے محروم رہے گا۔ (3)

حضرت عبدالله بن عمر دَضِيَ اللهُ عَنْهُ مَا كُفرے باہر بیٹھے تھے کہ ایک حسین لڑ کا (اَمرد) آتا ہوا نظر آیا آپ دوڑ کر

^{■}ترمذي، كتاب الايمان، باب ماجاء لا يزني الزاني...الخ، ٢٨٣/٤، الحديث ٢٦٣٤ و مشكاة المصابيح، ١/٣٣، الحديث.٦

موسوعة ابن ابى الدنيا، كتاب الورع ، باب الورع فى الفرج، ٢١٩/١ ، الحديث ١٣٧

^{3}اللآلي المصنوعة في الأحاديث الموضوعة للسيوطي، ١٦٨/٢

گھر میں گھس گئے اور دروازہ بند کر لیا، کچھ دیر بعد پوچھا: فتنہ چلا گیا یانہیں؟ لوگوں نے کہا: چلا گیا۔ تب آپ باہر تشریف لائے اور فرمایا: فرمانِ نبوی ہے: ان کی طرف دیکھنا، گفتگو کرنا اوران کے پاس بیٹھنا حرام ہے۔ ⁽¹⁾ حضرت قاضی امام _دَئے مَدُّاللَٰہِ عَلَیٰہ کا قول ہے: میں نے بعض مشائخ سے سنا ہے کہ عورت کے ساتھ ایک شیطان اور حسین کڑے کے ساتھ اُٹھارہ شیطان ہوتے ہیں۔

روایت ہے کہ جس نے شہوت کے ساتھ لڑکے کو بوسہ دیا وہ پانچ سوسال جہنم میں جلے گا (2) اور جس نے کسی عورت کا بوسہ لیااس نے گویا سُرِّ عورت کا بوسہ لیااس نے گویا سُرِّ باکرہ خواتین کے ساتھ زنا کیا اور جس نے کسی باکرہ عورت سے زنا کیااس نے گویا سُر ہزار شادی شدہ عورتوں سے زنا کیا۔

"رونق التفاسير" ميں كلبى رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه سے منقول ہے: سب سے پہلے لواطَت ابليس نے شروع كى ، وہ لوط عَلَيْهِ السَّلَام كى قوم ميں ايك حسين وجميل لڑكے كى صورت ميں آيا اور لوگوں كو اپنى طرف مائل كيا يہاں تك كه لواطت ان لوگوں كى عادت بن گئى ، جو بھى مسافر آتا وہ اس سے برفعلى كرتے حضرت لوط عَلَيْهِ السَّلَام في السَّلام في السَّلام في الله كى طرف بلايا اور عذا وندى سے ڈرايا تو وہ كہنے لگے: اگرتم سے ہوتو جا وَعذا ب لے آوَ! حضرت لوط عَلَيْهِ السَّلام في الله رب العزت سے دعا مائلى: جس كے جواب ميں ان پر پھروں كى بارش ہوئى ، ہر پھر پر ايك آدى كانا م لكھا ہوا تھا اور وہ اس آدى كو آكر كى الله تعالى كافر مان ہے:

مُسَوَّمَةً عِنْكَ رَبِكَ (3)

حضرت لوطءَ ليُهِ السَّلام كي قوم كاايك تاجر مكه ميں بغرض تجارت آيااس كے نام كا پيھرو ہيں پہنچ گيا مگر فرشتوں نے

^{1}بریقة محمودیة فی شرح طریقة محمدیة ، ۲٦/٤

س... بعینه ان الفاظ کے ساتھ ہمیں حدیث نہیں ملی البتة "الله لی المصنوعة "کی ایک روایت میں پانچ سوسال کی جگہ ہزارسال کے عذاب کا تذکرہ ہے، جس میں الفاظ یوں ہیں: من قبل غلاماً بشہوة عذبه الله فی الغار ألف سنة (الله لی المصنوعة للسيوطی، ۱۸۸۲) اوراماً مسیوطی نے اسے موضوع کہا ہے۔والله تعالی اعلم

^{3}توجمه كنز الايمان: جونشان كئي بوئ تير رب كي ياس بي - (ب١٠، هود: ٨٥)

یہ کہ کرروک دیا کہ یہ اللہ کاحرم ہے چنانچہ چالیس دن یہ پھر حرم کے باہر زمین وآسان کے درمیان معلق رہا یہ ہاں تک کہ وہ تخص تجارت سے فارغ ہوکر مکہ معظمہ سے باہر نکلا اور وہ پھر اسے جالگا جس سے وہ ہلاک ہوگیا۔ حضر تِ لوط عَلَيْهِ السّالام اپنے تمام اہلِ خانہ کو لے کرستی سے نکل گئے ، اور فر مایا: کوئی مڑکر نہ دیکھے۔ جب قوم پر عذاب نازل ہوا تو ان کی بوی نے آوازیں شکر پیچھے دیکھا اور کہا: ہائے میری قوم! جس کی پاداش میں اسے ایک پھر لگا اور وہ ہلاک ہوگئی۔ مجاہد کہتے ہیں جب شبح قریب ہوئی تو حضر تے جریل نے ان بستیوں کو پروں پراٹھا لیا اور اتنی بلندی تک لے گئے کہ آسان کے فرشتوں نے ان کے کول کو بھونکتا اور مرغوں کی بانگوں کو سن لیا، اس وقت یہ بستیاں الٹ دی گئیں، سب سے پہلے ان کے مکانات گرے ، پھر وہ خوداوند ھے منہ زمین پر آر ہے اور ان پر پھر برسائے گئے۔

کہتے ہیں کہ یہ پانچ شہر تھے جن میں سب سے بڑا سدوم کا شہرتھا ،ان شہروں کی آبادی چارلا کھتھی ،اللّٰہ تعالیٰ نے انہیں سور و براءة میں موَ تفاکات کے نام سے یاد کیا ہے۔

مَذاق أرُّانے كاعذاب

جب کسی مسلمان کا ندان اُڑانے کو جی جا ہے تو خدارا اِس روایت پرغور فر مالیا کیجئے جس میں سرکار نامدار، مذہبت کے تا جدار، رسولوں کے سالار، نبیوں کے سردار، شہنشاہ آبرار، سرکار والا تبار، ہم غریبوں کے مگسار، ہم منہ ہے کہ سول کے مددگار، صاحب بسینہ خوشبودار، شفح روز شار جنا ب احمد مختار صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کا فر مانِ عبرت نشان ہے: " قیامت کے روز لوگوں کا مُذاق اڑانے والے کے سامنے جنت کا ایک دروازہ کھولا جائے گا اور کہا جائے گا کہ آؤ! آؤ! تو وہ بہت ہی بے چینی اورغم میں ڈوبا ہوا اُس دورازے کے سامنے آئے گا مگر جیسے ہی دروازے کے پاس بہنچ گا وہ دروازہ بند ہوجائے گا۔ پھر جنت کا ایک دوسرا دروازہ کھلے گا اور اس کو پکارا جائے گا کہ آؤ! چنا نچہ یہ بے چینی اور رہے فیم میں ڈوبا ہوا اُس دروازے کے پاس جائے گا تو وہ دروازہ بھی جائے گا کہ وہ بہوا اُس دروازے کے پاس جائے گا تو وہ دروازہ بھی بند ہوجائے گا۔ ہم اس عبائے گا اور پکار پڑے گی بند ہوجائے گا۔ ہم اس عبائے گا اور پکار پڑے گی تو وہ نہیں جائے گا۔ اِس طرح اس کیساتھ مُعامَلہ ہوتا رہے گا یہاں تک کہ جب دروازہ کھلے گا اور پکار پڑے گی تو وہ نہیں جائے گا۔ (موسوعة ابن اہی الدنیا ، کتاب الصمت ، ۱۸۳۷۷ ، رقم ۲۸۷٪)

اب 23)

$\left\langle \stackrel{}{c}$ حقوق والدين اور صلهٔ رحمى

فرمانِ الہی ہے:

وَاتَّقُوااللَّهَ الَّذِي كُسَّاءً لُوْنَ بِهِ وَالْاَسُحَامَ لَا اللَّهِ الْآسُحَامَ لَ

فرمانِ اللي ہے:

فَهَلُ عَسَيْتُمُ إِنْ تَوَلَّيْتُمُ اَنُ تُفْسِدُ وَافِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوَ اَ اَرْحَامَكُمْ ﴿ اُولِلِكَ الَّذِيثَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَاصَبَّهُمُ وَاعْلَى اَبْصَارَهُمْ ﴿ (2)

الله سے ڈروجس کے نام پر ما کگتے ہواور رشتوں کا لحاظ ر کھو۔

تو کیاتمہارے یہ ڈھنگ نظر آتے ہیں کہ اگر تمہیں حکومت ملے تو تم زمین پرفتنہ وفساد پھیلا و اوراپنے رشتے قطع کر دو۔ یہ وہ لوگ ہیں جن پراللہ تعالیٰ نے لعنت فرمائی جنہیں حق کے سننے سے بہرااور حق کے دیکھنے سے اندھا کر دیا۔

فرمانِ اللي ہے:

الَّذِيْنَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا اَمَرَاللهُ بِهَ اَنْ يُوْصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَثْرِضِ اللهِ لِللهِ اللهِ الله

جوالله سے کئے ہوئے وعدہ کوتوڑتے ہیں اورجس چیز کے ملانے کارب نے علم دیا ہے اس سے قطع تعلق کرتے ہیں اور زمین میں فساد محیاتے ہیں وہ نقصان میں ہیں۔

فر مانِ اللی ہے: جولوگ عہد خداوندی کوتوڑتے ہیں اورجس چیز کے ملانے کارب تعالیٰ نے عکم دیاہے اس سے قطع تعلق کرتے

- 1ترجمه كنز الايمان: اورالله عوروجس كنام يرما تكتي بواوررشتول كالحاظر كوو (ب٤٠١١نساء:١)
- و۔۔۔۔۔ تو جمهُ کنز الایمان: تو کیاتمہارے بیچھن (انداز)نظرآتے ہیں کہا گرتہمیں حکومت ملے توزمین میں فساد پھیلا وَاوراپنے رشتے کاٹ دوبہ ہیں وہلوگ جن براللہ نےلعت کی اورانہیں حق ہے بہرا کر دیااوران کی آئکھیں بھوڑ دیں۔(پ۲۲،محمد:۲۲، ۲۲)
- 3ترجمه کنز الایمان: وہ جواللہ کے عبد کوتوڑ دیتے ہیں پکا ہونے کے بعد اور کاشتے ہیں اس چیز کوجس کے جوڑنے کا خدانے تھم دیا اور زمین میں فساد پھیلاتے ہیں وہی نقصان میں ہیں۔ (ب۱۰البقرة: ۲۷)

(1) ہیںان کے لیالعنت خداوندی اور بڑاٹھکا نہ ہے۔

صحیحین میں حضرت ابو ہر ہر ہور ضب الله عنه سے مروی ہے: رسول الله صَلّی الله عَلَيْهِ وَسَلّم نے فر مایا: جب الله تعالیٰ نے مخلوق کی پیدائش سے فارغ ہوگیا تو قرابت نے کھڑے ہوکرع ض کیا: میں تجھ سے قطع حمی کی پناہ جا ہتی ہوں، رب تعالیٰ نے فر مایا: کیا تو اس بات پر راضی ہے کہ جس نے تجھ سے تعلق جوڑا، میں اس سے تعلق جوڑوں گا اور جس نے تجھ سے قطع کر لیا میں اس سے قطع کر دول گا اور جس نے تجھ سے قطع کر لیا میں اسے قطع کر دول گا اس نے کہا: میں راضی ہول ۔ پھر حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فَیْنَ مَنْ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فَیْنَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر مایا کہ بغاوت اور قطع حمی دوا ایسے گناہ ہیں جن پر دنیا اور آخرت میں عذا ب دیاجا تا ہے۔ (3)

صَحِیحَیْن میں ہے کہ قطع رحی کرنے والا جنت میں نہیں جائے گا۔⁽⁴⁾

مندِ احمد میں ہے:انسانوں کے اعمال ہر جمعرات کو پیش کئے جاتے ہیں مگر قطع رحمی کرنے والے کا کوئی عمل مقبول نہیں ہوتا۔ ⁽⁵⁾

بیہ قی سے روایت ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: جبر مِل عَلَیْهِ السَّلام بیندر ہویں شعبان کی رات کومیر بے باس آئے اور کہا: آج کی رات اللّه تعالی بَنوگلب کی بکریوں کے بالوں کے برابر گنهگاروں کو بخش دیتا ہے مگر مشرک، کینه پرور، قاطع رحم، تکبر سے اپنے تبہند کو تھسیٹ کر چلنے والا، والدین کا نافر مان اور شرانی کونہیں بخشا جاتا۔ (6)

- ں ۔۔۔۔۔ تسر جمعہ کننز الایعمان:وہ جواللّٰہ کاعہداس کے پکتے ہونے کے بعدتو ڑتے اور جس کے جوڑنے کواللّٰہ نے فر مایا اسے قطع کرتے اور زمین میں فساد پھیلاتے ہیں ان کا حصالعت ہی ہے اور اُن کا نصیبہ بُر اگھر۔ (پ۲۰ الرعد:۲۰)
 - 2مسلم، كتاب البر والصلة والاداب ، باب صلة الرحم...الخ، ص ١٣٨٣ ، الحديث ١٦ _ (٥٥٤)
 - 3ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب۷۰، ۹/۲، الحدیث ۲۰۱۹ عن ابی بکره
 - 4بخارى، كتاب الادب ، باب اثم القاطع، ٤ / ٩٧، الحديث ٩٨٤ ٥
 - 5مسند احمد، مسند ابي هريرة، ٢/٢٣، الحديث ٢٧٦، ١
 - شعب الايمان، الباب الثالث والعشرون، باب في الصيام...الخ، ما جاء في ليلة النصف من شعبان...الخ، ٣٨٤/٣،

الحديث ٣٨٣٧

ابن حبان سے مروی ہے: تین آ دمی جنت میں نہیں جائیں گے: شرابی ، قاطع رحم، جادوگر۔ ⁽¹⁾

منداحد، ابن ابی الدنیا اور بیہ قی ہے مروی ہے: اس اُمت کے پچھ لوگ کھانے پینے اور لہوولعب میں راتیں گزاریں گے، جب صبح ہو گی تو ان کی صورتیں سنح ہو جائیں گی، انہیں زمین میں دھنسا دیا جائے گا، صبح کولوگ ایک دوسرے سے کہ، جب صبح ہو گی تو ان کی صورتیں سنح ہو جائیں گی، انہیں زمین میں دھنسا دیا جائے گا، صبح کولوگ ایک دوسرے سے کہیں گے: فلاں خاندان زمین میں دھنس گیا ہے، فلال معزز اپنے گھر کے ساتھ زمین میں غرق ہو گیا ہے، ان کی شراب نوشی، سودخوری، قطع رحی، ناچ گانے پر فریفتگی اور رہیٹی لباس پہننے کی دجہ سے ان پر قوم لوط کی طرح پھروں کی بارش ہوگی

اورقومِ عاد کی طرح ان پر ہلا کت خیز آندھیاں بھیجی جائیگی جن سے وہ اپنے قبائل سمیت ہلاک ہوجائیں گے۔ ⁽²⁾

طبرانی نے اوسط میں حضرتِ جابر دَضِیَ اللهٔ عَنه سے روایت کی ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا شاخهُ نبوت سے باہر تشریف لائے ،ہم لوگ اسم علی حضے بیٹے ہوئے تھے، آپ نے ہمیں دیکھ کرفر مایا: اے مسلمانو!الله سے ڈرواور صلد رحی کرو کیونکہ اس کی گرفت بہت جلد ہوتی ہے، والدین کی نافر مانی کیونکہ اس کی گرفت بہت جلد ہوتی ہے، والدین کی نافر مانی سے بچو، جنت کی خوشبو ہزار سال کے فاصلہ سے آئیگی مگروالدین کا نافر مان اس سے محروم رہیں گے۔ (3)

بوڑ ھازانی اور تکبر سے ازار گھیٹے والا، اس سے محروم رہیں گے۔ (3)

اصبهانی سے مروی ہے: ہم رسول الله عَلَيْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں بیٹے ہوئے تھے، آپ نے فرمایا: قاطع رحم ہماری مجلس میں نہ بیٹے ہم سول الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں بیٹے ہوئے تھے، آپ نے فرمایا: قاطع رحم ہماری مجلس میں نہ بیٹے ہم سے ایک جوان اٹھ کرخالہ کے ہاں چلا گیا، ان کے درمیان کوئی تنازعة تعاجس کی اس نے معافی ما نگی دونوں نے ایک دوسر کے کومعاف کردیا اور وہ دوبارہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی مجلس میں بیٹھ گیا، آپ نے فرمایا: اس قوم پر رحمتِ خداوندی کا نزول نہیں ہوتا جس میں قاطع رحم موجود ہو۔ (4)

اس کی تائیداس روایت سے ہوتی ہے جس میں مروی ہے: حضرتِ ابو ہریرہ دَضِی اللّٰهُ عَنْهُ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی احادیث سنار ہے تھے۔ آپ نے کہا کہ ہرقاطع رحم ہماری محفل سے اٹھ جائے۔ایک جوان اٹھ کراپنی خالہ کے ہاں

^{1} صحيح ابن حبان، كتاب الاشربة، باب اداب الشرب، فصل في الاشربة، ٥٣٢٥، الجزء السابع، الحديث ٣٢٢٥

^{2} شعب الايمان، التاسع والثلاثون...الخ، باب في المطاعم والمشارب، ١٦/٥ الحديث ٢١٤٥

^{3}المجعم الاوسط، ١٨٧/٤، الحديث ٢٦٢٥

^{4}تاریخ مدینه دمشق، ۲۹۲/۲۰

گیا جس سے اُس کا دوسال پرانا جھگڑا تھا، جب دونوں ایک دوسرے سے راضی ہو گئے تو اس جوان سے خالہ نے کہا: تم جا کراس کا سبب پوچھو، آخرابیا کیوں ہوا؟ حضرتِ ابو ہر بر ہورَ حِنسیَ اللّٰهُ عَنٰه نے کہا کہ میں نے حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے سنا ہے، آپ نے فرمایا: جس قوم میں قاطع رحم ہو، اس پراللّٰہ کی رحمت کا نزول نہیں ہوتا۔ (1)

طبرانی میں اَعمش کی روایت ہے: حضرتِ ابن مسعود رَضِیَ اللّهُ عَنْه ایک صبح محفل میں بیٹھے ہوئے تھے، انہوں نے کہا: میں قاطع رحم کو اللّه کی قتم دیتا ہوں کہ وہ یہاں سے اٹھ جائے تا کہ ہم اللّه تعالیٰ سے مغفرت کی دعا کریں کیونکہ قاطع رحم پرآسان کے دروازے بندر ہتے ہیں۔(2) (اگروہ یہاں موجودر ہے گا تو ہماری دعا قبول نہیں ہوگی)

صحیحیُن میں ہے: قرابت اوررشتہ داری عرشِ خدا سے مُعَلَّق ہے اور کہتی ہے: جس نے مجھے ملایااللہ اسے ملائے اور جس نے مجھ سے قطع تعلق کیااللہ تعالیٰ اس سے قطع تعلق کرے۔ ⁽³⁾

حضرت عبدالرحمٰن بن عوف رَضِیَ اللهُ عَنُه کہتے ہیں: میں نے حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم سے سنا آپ فر مارہے تھے: الله تعالیٰ فر ما تا ہے: میں الله ہوں، میں رحمٰن ہوں، میں نے رحم کو پیدا کیا اور اسے اپنے نام سے مُشْتَقَ کیا، جس نے صلہ رحمی کی میں اسے اپنی رحمت سے ملاؤں گا اور جس نے قطع رحمی کی میں اسے اپنی رحمت سے دور کردوں گا۔ (4)

منداحر میں روایت ہے کہ سب سے بڑا سود مسلمان کے مال کو ناحق کھانا ہے اور قرابت وصلہ رحی اللّٰہ تعالیٰ کے نام کی ایک شاخ ہے، جس نے صلہ رحمی نہ کی اللّٰہ تعالیٰ اس پر جنت حرام کردیتا ہے۔ (5)

صحیح ابن حبان میں ہے: رحم رب ذوالجلال کی ایک عطاہے، رحم نے اللّٰہ اتعالیٰ کی بارگاہ میں عرض کی: اے رب! مجھ پرظلم ہوا، مجھے بُرا کہا گیا، مجھے قطع کیا گیا، رب تعالیٰ نے فرمایا: جو تحقیے ملائے گا میں اسے اپنی رحمت سے ملاؤں گا، جو تحقیے کاٹے گامیں اسے اپنی رحمت سے دور کردوں گا۔ (6)

- 1الادب المفرد، ص ٢٦، الحديث ٢٦_٦٣
- 2المعجم الكبير، ٩/٨٥١، الحديث ٨٧٩٣
- - 4.....ترمذي ، كتاب البر والصلة، باب ماجاء في قطيعة الرحم ، ٣٦٣/٣ ، الحديث ١٩١٤
- التاخير
 التقديم و التاخير

بَرُّ ارنے روایت کی ہے: رحم (قرابت ورشتہ داری) عرشِ خداسے چیٹی ہوئی عرض کرتی ہے: اےاللہ! جس نے مجھے مِلا یا تواہے مِلا ،جس نے مجھے کا ٹا تواس ہے تعلق منقطع فرما! رب تعالیٰ نے فرمایا: میں نے تیرا نام اپنے نام رحمٰن اور رحیم ہے مُشتَق کیاہے جس نے تجھے مِلا یامیں اسے اپنی رحت سے مِلا وَں گا، جس نے تجھ سے تعلق منقطع کیا میں اس سے رحمت كومنقطع كرلول گا_(1)

بَرُّ ارکی روایت ہے: تین چیزیں عرشِ خدا سے لکی ہوئی ہیں ،قرابت کہتی ہے:اےالله! میں تیرے ساتھ ہوں ، تبھی تچھ سے جدانہ ہوں گی ،امانت کہتی ہے:ا بےاللہ! میں تیرے ساتھ ہوں ، میں تیری رحمت سے بھی جدانہ ہوں گی ، نعت کہتی ہے:اےالله! میں تیری رحت سے جدائی نہیں جا ہتی،میراا نکارنہ کیا جائے۔

بہقی کی روایت ہے: طَلَّت یاسَرشْت عرش کے دروازوں سے مُعلَّق ہے جبکہ رحم میں تشکیک واقع ہوجائے اور گناہوں پڑمل بڑھ جائے اورا حکام الہیہ پڑمل نہ کرنے پر جرأت پیدا ہوجائے تواللہ تعالیٰ سَرشْت کو بھیجتا ہے جواس کے قلب برحاوی ہوجاتی ہےاوراس کے بعداس کو گناہوں کاشعور باقی نہیں رہتا۔⁽³⁾

صَحِيحَيْن ميں ہے:حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جو خض الله اور قیامت برایمان رکھتا ہے وہ اینے مہمان کی عزت کرے،صلدرحی کرے اور اچھی بات کرے یا چپ رہے۔ایک اور روایت ہے: جو تخص طویل عمر اور فراخی رزق کی تمنارکھتا ہےاسے حاہیے وہ صلدحی کرے۔(4)

حضرت ِابو ہریر ہدَ ضِی اللّٰهُ عَنُه ہے مروی ہے: میں نے رسولِ اکرم صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کوفر ماتے سنا:''جوشخص فراخی رز ق اورعمرطویل کو پیند کرتا ہے وہ صلہ رخمی کرے۔⁽⁵⁾

مزید فرمایا: اپنانسب یا دکروتا که رشته دارول کو پیچان سکو،اس لئے که رشته داروں سے میل مِلا پ میں خاندان کی

^{1}البحر الزخار المعروف بمسند البزار، ١٦/١٣ ١ ، الحديث ٦٤٩٥

^{2}البحرالزخار المعروف بمسند البزار، حديث ثوبان ، ١١٧/١٠ الحديث: ١٨١٤

^{€}شعب الايمان، السابع والاربعون...الخ، فصل في الطبع...الخ،٥/٤٤٪، الحديث ٢٢١٤_٧٢١٧

الخ، عارى، كتاب الادب، باب اكرام الضيف...الخ، ٤/٣٦/١ الحديث ٦١٣٨، وباب من بسط له...الخ، ص ٩٧،

^{5}بخارى، كتاب الادب، باب من بسط له...الخ ،٤ /٩٧/ الحديث ٥٩٨٥

مكاشفة القلوب

محبت بڑھتی ہے، مال ودولت زیادہ ہوتی ہےاور عمر طویل ہوجاتی ہے۔

بزاراور حاکم کی روایت ہے: جو شخص بیتمنار کھتا ہو کہاس کی عمر طویل ہو، رزق میں کشاد گی ہواور بری موت سے پچ جائے وہاللہ سے ڈرےاور صلہ رحمی کرے۔ ⁽²⁾

حاکم اور بزار کی روایت ہے: فر مانِ نبوی ہے،تو را ۃ میں مرقوم ہے کہ جوعُمرطویل اور زیاد تِی رزق کا خواہشمند ہو وہ صلہ رحمی کرے۔ ⁽³⁾

ابوئعلی نے بَنْ فَعْمُ کے ایک شخص سے روایت کی ہے؛ اس نے کہا: میں حضور صَلَّى اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں حاضر ہوا، آپ اس وقت صحابہ کرام کے ساتھ تشریف فرما تھے، میں نے بوچھا: آپ نے رسولِ خدا ہونے کا دعویٰ کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: ہاں! میں نے بوچھا: اے نبی الله! مجھے بتا یئے کونساعمل الله تعالیٰ کوزیادہ پیند ہے؟ آپ نے فرمایا: الله کے ساتھ ایمان لا نامیں نے بوچھا: اور کونساعمل الله تعالیٰ کوسب سے زیادہ ناپیند ہے؟ آپ نے فرمایا: الله تعالیٰ کے ساتھ کسی کو شریک ٹھرانا۔ میں نے بوچھا: اس کے بعد؟ فرمایا: قطع حمی! میں نے بوچھا: پھر؟ آپ نے فرمایا: برائیوں کی ترغیب دینا اور نیکی سے روکنا۔ (4)

بخاری و مسلم کی روایت ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم او نُٹی پر سوار صحابہ کرام کے ساتھ سفر میں جارہے تھے کہ ایک بکروی نے آ کرآپ کی اور نہنم سے دور کردے۔
بکوی نے آ کرآپ کی اور نہنی کی مُہار پکڑلی اور کہا: حضور! مجھے ایسا عمل بتلا ہے جو جنت سے قریب اور جہنم سے دور کردے۔
آپٹھہر گئے اور صحابہ کرام کی طرف د کی کے کر فر مایا: یشخص ہدایت یاب ہو گیا۔ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیٰهِ وَسَلَّم نے بَدَوی سے فر مایا کہ اپناسوال دہراؤ، اس کے دہرانے پرآپ نے ارشا دفر مایا: الله تعالی کو و حَدی اور کہ کہ اس کی عبادت کر،
نماز پڑھ، ذکو ق دے اور صلہ رحی کر اور اب میری اونٹنی کی مہار چھوڑ دے۔ جب بدوی چلاگیا تو آپ نے ارشا دفر مایا: اگریان باتوں پڑل کرتار ہاتو جنت میں جائے گا۔ (5)

- 1ترمذي، كتاب البر والصلة ، باب ماجاء في تعليم النسب ، ٣٩٤/٣، الحديث ١٩٨٦
- 2المستدرك للحاكم، كتاب البر والصلة ، باب احاديث صلة الرحم، ٢٢٢٥، الحديث ٧٣٦٢
 - 3المرجع السابق، الحديث ٧٣٦١ ملخصا
 - 4مسند ابي يعلي، حديث رجل من خثعم، ٦/٥٥،الحديث ٢٨٠٤
- الحديث ١٤ ـ (١٣) و ١٢ ـ (١٣) لذى يدخل...الخ، ص ٢٦، الحديث ١٤ ـ (١٣) و ١٢ ـ (١٣)

طبرانی کی روایت ہے؛ آپ نے فر مایا: ایک قوم ایسی ہے کہ اللہ تعالیٰ اس کے شہروں کوآ باد کرتا ہے، اس کے مال کو بڑھا تا ہے اور جب سے انہیں پیدا کیا ہے بھی ناراضگی کی نگاہ سے انہیں نہیں دیکھا۔ پوچھا گیا: وہ کیوں؟ آپ نے فر مایا: اس قوم کی صلد رحمی کی وجہ سے۔(1) (یعنی وہ قوم صلد رحمی کرتی ہے)

''منداحد'' کی روایت ہے: جسے زمی دی گئی اسے دین و دنیا کی بھلائی سے حصہ دیا گیا، اچھی ہمسائیگی اور حسنِ خُلق کا نتیجہ شہروں کی آبادی اور عمروں کی درازی ہے۔ (2)

ابوالشیخ ، ابن حبان اور بیہ قی کی روایت ہے: یارسول الله اسب سے بہتر انسان کونسا ہے؟ صحابہ کرام نے سوال کیا: آپ نے فرمایا: رب سے زیادہ ڈرنے والا ، زیادہ صلہ رحمی کرنے والا اور نیکیوں کا حکم دینے والا ، برائیوں سے روکنے والا۔(3)

طبرانی کی روایت ہے: حضرت ابوذر رَضِیَ اللّهٔ عَنه کہتے ہیں کہ مجھے میر ہے حبیب صَلَّی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے چنداحی علی جیزوں کی وصیت فر مائی ہے اور وہ یہ ہیں: میں اپنے سے اوپر والے کونہیں بلکہ نیچے والے کو دیکھوں، میں بتیبوں سے محبت رکھوں اور ان سے قریب رہوں، میں صلد رحمی کروں اگر چدر شتہ دار بیٹھ پھیر جائیں،اللّه تعالیٰ کے معاملہ میں کسی سے نہ ڈروں، کی بات اگر چہ کانچ ہو میں کہتار ہوں، لاَحوُلَ وَ لَاقُوَّةَ إِلَّا بِاللّه کثر ت سے پڑھتار ہوں کیونکہ یہ جنت کا خزانہ ہے۔

(4)

' وصحیحین' کی روایت ہے: ام المؤمنین حضرتِ میموندرَضِیَ اللهٔ عَنهٔ النے حضور صَلَّی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے دریافت کے بغیرا پنی لونڈی آزادکردی۔ جب حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم ان کے بیمال تشریف لائے تو انہوں نے کہا: یارسول الله ! آپ کومعلوم ہے میں نے اپنی لونڈی کو آزادکردیا ہے؟ آپ نے فرمایا: واقعی ؟ عرض کی: جی ہاں! آپ نے فرمایا:

¹ ٢٥٥٦ ، الحديث ٢٥/١٢ ، الحديث

^{2} مسند احمد، مسند السيدة عائشة رضى الله عنها، ٩/٩ . ٥، الحديث ٢٥٣١ ملخصا

الحديث ٠ ٩٥ مكرر
 الحديث ٠ ٥ ٩٧ مكرر

^{4.....} صحيح ابن حبان، كتاب البروالاحسان ، باب صلة الرحم وقطعها، ٣٣٧/١ الحديث ٥٠ المساكين مكان اليتمي

اگرتم وه لونڈی اپنے خالہ زاد کودے دیتیں تو تہہیں بہت زیادہ ثواب ملتا۔

" 'ابن حبان 'اور ' حاکم' کی روایت ہے کہ حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کی بارگاہ میں ایک شخص حاضر ہوااور کہا کہ میں نے بہت بڑا گناہ کیا ہے، تو بہ کی کوئی صورت بتلایتے! آپ صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم نے بچو چھا: تیری ماں زندہ ہے؟ کہا: ' دنہیں۔ ' آپ نے بھر بچو چھا: تمہاری خالہ زندہ ہے؟ عرض کی: ہاں یارسول الله افر مایا: ' جاوً! اوراس کی خدمت کرو۔ ' (کہی صلدحی ہے)

بخاری وغیرہ میں ہے: صلد رحی بینہیں کہ ملنے جلنے والے رشتہ داروں سے میل ملاپ برقر ارر کھے بلکہ صلد رحی بیہ ہے کہ جورشتہ دار تعلقات منقطع کر چکے ہوں ان سے بھی میل ملاپ برقر ارر کھے۔ (3)

تر ذری کی روایت ہے: ان لوگوں سے نہ بنوجو کہتے ہیں اگر لوگ ہمارے ساتھ بھلائی کریں گے تو ہم بھی بھلائی کریں گے اور اگروہ ہم پرزیادتی کریں گے تو ہم بھی زیادتی کرینگے بلکہ تم اس بات کے عادی بنوکہ اگر لوگ تمہارے ساتھ بھلائی کریں تو بھلائی کرواور اگروہ زیادتی کریں تو تم زیادتی نہ کرو۔(4)

مسلم کی روایت ہے ایک شخص نے حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں عرض کی: میں رشتہ داروں سے علق جوڑتا ہوں مگر وہ مجھ سے تعلق تو ڑتے ہیں، میں ان سے بھلائی کرتا ہوں، وہ میری برائی کرتے ہیں، میں ان سے علم و برد باری کا سلوک کرتا ہوں، وہ مجھے خاطر میں نہیں لاتے، آپ نے فرمایا: اگر تیری باتیں تچی ہیں تو تو نے ایک دُور دَراز راستے کو طے کرلیا اور جب تک تو اس عادت برقائم رہے گالله تعالی تیراحامی و ناصر ہوگا۔ (5)

طبرانی، ابن خزیمہ اور حاکم کی روایت ہے کہ سب سے بہترین صدقہ کینہ پر وررشتہ دار کو پچھودینا ہے، (⁶⁾ حضور

^{1}بخارى، كتاب الهبة... الخ، باب هبة المرأة لغير زوجها...الخ، ١٧٣/٢، الحديث ٢٥٩٢

^{2} صحيح ابن حبان ، كتاب البرو الاحسان، باب حق الوالدين... الخ ، ١ / ٣٣٠ الحديث ٤٣٦

^{3}بخارى، كتاب الادب، باب ليس الواصل بالمكافىء، ٩٨/٤، الحديث ٩٩٥،

^{4....}ترمذي، كتاب البروالصلة، باب ماجاء في الاحسان والعفو،٣/٥٠٤، الحديث ٢٠١٤

^{5}مسلم كتاب البروالصلة والآداب، باب صلة الرحم... الخ، ص ١٣٨٤، الحديث ٢٦_ (٢٥٥٨)

^{6}المعجم الكبير، ٤ /١٣٨، الحديث ٣٩٢٣

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَاس فرمان كابھى يہى مطلب ہے كه وَ تَصِلُ مَنْ قَطَعَ كَ جورشة دار تجھ سے تعلق منقطع كرلے تواس سے تعلق جوڑ۔ (1)

بَرُّاز، حاکم اورطبرانی کی روایت ہے کہ جس میں بیتین صفات پائی جائیں گی اس کا حساب اِنتہائی آسان ہوگا، صحابہ نے عرض کی: حضور وہ کونسی ہیں؟ فر مایا: جو تحقیے محروم رکھے تواسے دیتارہ، جوتعلق توڑے اس سے تعلق جوڑتارہ اور جوتجھ پرظلم کرے تواسے معاف کرتارہ، تیراٹھ کانہ جنت میں ہوگا۔ (2)

احمد کی روایت ہے، حضرت عُقبہ بن عامِر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ کہتے ہیں کہ میں حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں حاضر ہوا اور آپ کا دست اَ قدس تھام کرعرض کیا: یارسول اللّٰه! مجھے بہترین اعمال بتلایئے۔ آپ نے فرمایا: ''عُقبہ! قطع تعلق کرنے والے سے صلد حی کر، جو تجھے محروم کرے اُسے عطا کراور جو تجھ پرظلم کرے اُسے معاف کردے۔''(3) حاکم کی روایت میں ہے، جو درازی عمراور فراخی رزق کی آرز ورکھتا ہو، وہ صلد حی کرے۔(4)

طبرانی کی روایت ہے: حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: لوگو! میں تم کودنیا اور آخرت کی بہترین عادتیں بتلاتا ہوں ، تم تعلقات منقطع کرنے والے رشتہ داروں سے صلدرخی کرتے رہو، جوتم کومحروم رکھے، اُسے دیتے رہواور جو زیادتی کرے اُسے معاف کرتے رہو۔ (5)

طبرانی کی روایت ہے: آپ نے فرمایا: قطع تعلق کر نیوالوں سے صلد رحی کر مجروم کر نیوا لے کوعطا کراور جس نے تجھے گالیاں دیں اس سے درگز رکر۔ (6)

المعجم الكبير ، ١٨٨/٢ ، الحديث ١٣ ٤ والترغيب والترهيب ، كتاب البروالصلة وغيرهما، الترهيب في صلة
 الرحم...الخ ،٣/٤/٣ ، الحديث ٣٨٥٨

^{2} المعجم الاوسط ، ٤/٨ ، الحديث ٢٤ . ٥

الترفيب والترهيب، كتاب البروالصلة وغيرهما، الترغيب في صلة الرحم...الخ ٢٧٤/٣، الحديث ٢٨٦٠

^{4}المستدرك للحاكم، كتاب البروالصلة ، باب احاديث صلة الرحم ٢٢٤/٥ ، الحديث ٧٣٦٧

المعجم الكبير، ٢٦٩/١٧، الحديث ٧٣٩ بتغير قليل

^{6}المعجم الكبير، ، ١٨٨/٢، الحديث ٤١٣

بَرُّاز کی روایت ہے: نبی کریم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: میں تہہیں وہ باتیں نہ بتلاؤں جن سے درجات بلند ہوتے ہیں۔ طبرانی کی روایت میں ہے، میں تہہیں اس چیز کی خبر نہ دوں جس سے اللّٰه تعالیٰ عزت دیتا ہے اور درجات بلند کرتا ہے؟ صحابہ کرام نے عرض کیا: ضرور بتلا ہے تیارسول الله! (صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم) آپ نے فرمایا: جوتم سے اعراض کرے اُس سے درگز رکرو، جس نے تم پرظم کیا اسے معاف کردو، جس نے تم کومروم کیا اسے عطا کرواور جس نے تعلقات ختم کیے اس سے تعلقات اُسْ کے اس سے تعلقات اُسْ تعلقات اُسْ تعلقات اُسْ کے اس سے تعلقات اُسْ تعلقات اُسْ کے اس سے تعلقات اُسْ تو ارکرو۔ (1)

ابن ماجه ⁽²⁾ کی روایت ہے کہ سب اعمال سے جلدی اجرپانے والی چیز احسان اور صلد رحمی ہے یعنی احسان اور صلد رحمی ہے است اعمال سے جلدی عذاب لانے والی چیز ظلم وزیادتی اور قطع رحمی صلد رحمی ہے۔ ⁽³⁾ ہے۔ (3)

طبرانی کی روایت ہے: جھوٹ قطع رحی اور خیانت کا مرتکب اس لائق ہوتا ہے کہ اللّٰہ تعالیٰ اسے دنیا میں بھی عذا ب دے اور آخرت میں بھی سزا کا مستحق گر دانے اور سب اعمال سے جلدی اجر صلد رحی کا ملتا ہے اگر چہ اس گھر کے لوگ گنہگار ہوتے ہیں مگر صلد رحی کی وجہ سے ان کا مال بھی خوب بڑھتا ہے اور ان کی اولا دبھی بکثر ہے ہوتی ہے۔ (4)

غصہ پینے والے کے لیجنتی حور

ابوداددشریف کی حدیث میں ہے: "جس نے غصے کو ضبط کرلیا حالا نکہ وہ اسے نافذ کرنے پر قادر تھا تواللہ عَذَوَ جَلَّ بروزِ قِیامت اُس کوتمام مخلوق کے سامنے بلائے گااور اختیار دے گا کہ جس حور کو جا ہے لے

لے-" (ابوداود،٤/٥/٤، الحديث٤٧٧٧)

❶.....الترغيب والترهيب ، كتاب البروالصلة وغيرهما ، الترغيب في صلة الرحم...الخ ٢٧٥/٣، الحديث ٣٨٦٣

و۔۔۔۔۔ صحاح ستہ میں سے ایک صحیح کا نام جس کے جامع "ابن ماجہ" ہیں اور انہی کے نام سے اس کوسنن ابن ماجہ کہا جاتا ہے، پورا نام محمد بن بزید بن ماجہ ہے،متوفی ۲۷۳ ہے۔

3ابن ماجه، كتاب الزهد، باب البغي، ٤٧٤/٤، الحديث: ٢١٦٤

4....كنزالعمال ، كتاب الاخلاق، الباب الاول...الخ ، صلة الرحم...الخ، ٢/٥٠، الجزء الثالث ، الحديث ٦٩٨٣

اب 24

﴿ والدین سے دسن سُلوک ﴿

'دو صحیحیْن' میں حضرتِ عبدالله بن مسعود رَضِی اللهٔ عنه سے مروی ہے: میں نے رسولِ اکرم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے بوچھا: الله تعالی کوکونساعمل زیادہ محبوب ہے؟ فر مایا: نمازکواس کے وقت پراداکرنا، میں نے کہا: اس کے بعد! آپ نے فر مایا: والدین سے حسن سلوک، میں نے بوچھا: پھرکونساعمل محبوب ہے؟ آپ نے فر مایا: جہاد فی سیبل الله۔ (1) مسلم' کی روایت ہے: آپ نے فر مایا: بیٹا باپ کاحق ادانہیں کرسکتا یہاں تک کہ وہ باپ کوغلام پائے اور اسے خرید کرآ زاد کردے۔ (جب بھی وہ قِن اَبُونِ شاوانیس کرسکتا) (2)

دومسلم' کی روایت ہے: ایک شخص نے آپ کی خدمت میں حاضر ہوکرعرض کیا: میں آپکے ہاتھ پرالی کی رضا جوئی میں ہجرت اور جہاد کی بیعت کرتا ہوں ، آپ نے بوچھا: تیرے والدین میں سے کوئی زندہ ہے؟ عرض کی: دونوں زندہ ہیں ، آپ نے فرمایا: جااور والدین کی خدمت کر!⁽³⁾

ابویعلی اورطبرانی کی روایت ہے: ایک آدمی آپ کی خدمت میں آیا اور کہا: میں جہاد کی تمنار کھتا ہوں مگر چند مجبوریوں کی بنا پر معذور ہوں۔ آپ نے فرمایا: تمہارے والدین میں سے کوئی زندہ ہے؟ عرض کی: میری ماں زندہ ہے۔ آپ نے فرمایا:الله سے توفیق مانگ کرماں سے حسن سلوک کرتارہ ، تجھے جج ، عمرہ اور جہاد فی سبیل اللہ کا ثواب ملے گا۔ (4)

طبرانی میں ہے: ایک آ دمی نے جہاد کی تمنا ظاہر کی تو آپ نے بوچھا: تیری ماں زندہ ہے؟ اُس نے کہا: میری ماں زندہ ہے، آپ نے فر مایا: ماں کے قدموں کو پکڑ، جنت پالےگا۔ (⁵⁾

ابن ماجه كى روايت ہے: رسول الله صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے دریافت كيا گيا كه اولا د پروالدین کے كياحقوق بيں؟

^{1} مسلم كتاب الايمان، باب بيان كون الايمان...الخ، ص ٥٨، الحديث ١٣٧ ـ (٨٥)

^{2}مسلم، كتاب العتق، باب فضل عتق الوالد، ص ٨١٢، الحديث ٢٥_ (١٥١٠)

^{3} مسلم، كتاب البروالصلة والاداب، باب برالوالدين...الخ، ص ١٣٨٠، الحديث ٦ ـ (٢٥٤٩)

^{5}المعجم الكبير، ١/٨ ٣١، الحديث ١٦٢ ٨

^{4}المعجم الاوسط، ٢/١٧٠ الحديث ٩١٥

آپ نے فرمایا: وہ تیری جنت اور جہنم ہیں۔⁽¹⁾

ابن ماجہ، نسائی (2) اور حاکم کی روایت ہے: ایک آ دمی نے آپ کی خدمت میں حاضر ہوکر عرض کی: میراجہا دکرنے کا ارادہ ہے، آپ سے مشورہ لینے آیا ہوں۔ آپ نے فرمایا: تیری ماں زندہ ہے؟ عرض کی: ہاں یارسول الله! (صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم) آپ نے فرمایا: ماں سے حسنِ سلوک کر، جنت ماں کے قدموں کے پاس ہے۔ (3)

ایک روایت میں ہے کہ آپ نے پوچھا: تیرے والدین ہیں؟ اس نے کہا: ہاں۔ آپ نے فر مایا: ان کی خدمت کر، جنت ان کے قدموں میں ہے۔ (4)

تر فدی میں ہے: حضرتِ ابوالدرداء رَضِیَ اللّٰهُ عَنهُ ہے ایک شخص نے آ کرکہا: میری ماں مجھے بیوی کوطلاق دینے کا کہتی ہے، آپ نے فرمایا: میں نے حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلیْهِ وَسَلَّم ہے سنا ہے: آپ نے فرمایا: والدین جنت کا درمیانی وروازہ ہے، کہتی ہے، آپ نے ضائع کردے اور جیا ہے تو اس کی حفاظت کر۔ (5)

ابن حبان کی روایت ہے: ایک آدمی نے حضرتِ ابوالدرداء رَضِی اللهٔ عَنه ہے شکایت کی کہ میراباپ پہلے تو مجھے شادی کرنے کو کہتار ہا اور اب کہتا ہے کہ اپنی بیوی کو طلاق دیدو، آپ نے فر مایا: نہ میں تجھے والدین کی نافر مانی کیلئے کہتا ہوں اور نہ ہی بیوی کو طلاق دینے کے لئے کہتا ہوں ، میں تمہیں حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے نی ہوئی حدیث سنا تا ہوں ، میں تمہیں حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے نی ہوئی حدیث سنا تا ہوں ، میں تمہیں حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے ، اسکی حفاظت کریا اسے چھوڑ دے۔ (۵) میں اربعہ (۲) ابن حبان اور ترمذی نے کہا: یہ حدیث حسن صحیح ہے، حضر سے عبد الله ابن عمر وَضِی الله عَنهُ مَا کہتے ہیں بہت پیند کرتا تھا مگر میراباپ اسے اچھانہیں سمجھتا تھا، میرے باپ نے ہیں: میرے ناچ میں بہت پیند کرتا تھا مگر میراباپ اسے اچھانہیں سمجھتا تھا، میرے باپ نے

^{1}ابن ماجه، كتاب الادب، باب برالوالدين، ١٨٦/٤، الحديث ٣٦٦٢

امام نسائی کانام احمد بن شعیب ہے، متوفی سن چھے جوایے جامع کے نام پر مشہور ہے، امام نسائی کانام احمد بن شعیب ہے، متوفی سن چھے۔

٣١٠١ ناسائي، كتاب الجهاد، باب الرخصة في التخلف لمن له والدة، ص ٤٠٥، الحديث ٢١٠١

^{4}المعجم الكبير، ٢٨٩/٢، الحديث ٢٢٠٢

^{5}ترمذي ، كتاب البروالصلة ، باب ماجاء من الفصل في رضا الوالدين، ٩/٣ ٥٥، الحديث ١٩٠٦

^{6}صحيح ابن حبان ، كتاب البر و الاحسان، باب حق الوالدين، ١/٣٢٦/ الحديث ٢٦٦

^{🕡}احادیث کے وہ حیار مجموعے جوسنن کے نام ہے مشہور ہیں یعنی ابوداؤ د، ابن ماجہ، نسائی اورسنن تر مذی۔

کہا:اسے طلاق دے دوتو میں نے انکار کر دیا،میرے باپ نے حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں جا کروا قعہ سنایا تو حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے مجھ سے فر مایا کہ بیوی کوطلاق دے دو۔ ⁽¹⁾

منداحمہ میں روایت ہے کہ جو درازی عمراور فراخی رزق کی تمنار کھتا ہو وہ والدین کے ساتھ حسن سلوک کرےاور صلہ رحمی کرے۔ ⁽²⁾

ابویعلی اور حاکم کی روایت ہے: آپ نے فرمایا: جس نے والدین سے حسن سلوک کیاا سے مبارک ہوکہ الله تعالیٰ فرمایا: جس نے والدین سے حسن سلوک کیاا سے مبارک ہوکہ الله تعالیٰ نے اس کی عمر بڑھادی۔ (3)

ابن ماجه، ابن حبان اور حاکم کی روایت ہے: آپ نے فر مایا: آ دمی گنا ہوں کے سبب رزق سے محروم ہوجا تا ہے، دعا تقدیر کولوٹا دیتی ہے اور حُشنِ عُلق عمر کو درازی عطا کرتا ہے۔

تر مذی کی ایک روایت ہے: دعا قضا کولوٹا دیتی ہے اور حسنِ سلوک عمر کو دراز کر دیتا ہے۔ ⁽⁵⁾

حاکم کی روایت ہے: دوسر بےلوگوں کی عورتوں ہے درگز رکروہ تمہاری عورتوں سے درگز رکیا جائے گا،اپنے والدین سے حسن سلوک کروتمہاری اولا دتم سے حسن سلوک کرے گی ۔ (⁶⁾

طبرانی کی روایت ہے:اپنے والدین ہے حسن سلوک کرو، تمہاری اولا دتم سے حسن سلوک کرے گی اور تم درگزر کروتمہاری عورتیں بھی درگزر کریں گی۔⁽⁷⁾

مسلم شریف کی روایت ہے: حضور صَدَّی اللَّهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: اُس کی ناک غبار آلود ہواُس کی ناک غبار آلود ہو، اُس کی ناک غبار آلود ہو، عرض کیا گیا: کس کی یارسول الله: آپ نے فرمایا: جس نے والدین کو یاکسی ایک کو بڑھا پے

- سنترمذي، كتاب الطلاق واللعان ، باب ماجاء في الرجل يسأله...الخ، ٣/٢ . ٤ ، الحديث ١ ٩ و صحيح ابن حبان، كتاب البر والاحسان ، باب حق الوالدين، ٢٧/١،الحديث ٤٢٨
 - 2 مسند احمد ، مسند انس بن مالك بن النضر ، ٤٥٨/٤ ،الحديث ، ١٣٤٠
 - المستدرك للحاكم، كتاب البروالصلة، باب من بر والديه...الخ، ٢١٣٥، الحديث ٧٣٣٩
 - 4ابن ماجه، كتاب الفتن ، باب العقوبات، ٤ / ٣٦٩ الحديث ٢٢ . ٤ باالتقديم و التاخير
 - 5ترمذی، كتاب القدر، باب ماجاء لا يرد القدر الا الدعاء، ٤/٥٥، الحديث ٢١٤٦
 - €المستدرك للحاكم كتاب البروالصلة ، باب بروا آباء كم...الخ، ٢١٣/٥ ، الحديث ٧٣٤٠
 - 7 المعجم الاوسط، ١٠٨٥/١ الحديث ١٠٠٢

_ [2]

میں پایااور جنت میں نہ گیایاانہوں نے اسے جنت میں داخل نہ کیا۔(والدین کوحس سلوک ہے راضی نہ کیا)⁽¹⁾

طبرانی کی حدیث ہے:حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ایک مرتبه منبر پرتشریف فرما ہوئے اور فرمایا: "آمین آمین آمین ' می عرفر مایا: جبریل آئے اور انہوں نے عرض کی: یارسول اللہ! جس نے اپنے والدین میں سے سی ایک کو یا یا اور اس سے

حسن سلوک نہ کیا اور مرگیا تو وہ جہنم میں گیا،الله اسے دور کرے، آپ آمین کہیں! تومیں نے آمین کہی، پھر جبریل نے

عرض كى: يارسول الله اجس نے ماورمضان كو پايا اور گناه بخشوائے بغير مركبيا تووہ جہنم ميں گيا،الله نے اسے دوركر ديا، آپ

آ مین کہیں! تومیں نے آمین کہی، پھر جبریل نے عرض کی: مارسول الله اجس شخص کے سامنے آپ کا ذکر ہوااوراس نے

آپ پر درودنه بھیجااور مرگیا تووه جہنم میں گیا،الله نے اسے اپنی رحمت سے دور کر دیا، کہئے! آمین،تومیں نے آمین کہی۔(2)

ابنِ حبان کی روایت کے الفاظ ہیں: جس نے اپنے ماں باپ یا ان میں سے کسی ایک کو پایا اور ان سے حسنِ سلوک نہ کیا اور وہ مرگیا تو جہنم میں گیا،اللّٰہ اسے اپنی رحمت سے دور کرے، میں نے آمین کہی۔⁽³⁾

حاکم وغیرہ کی روایت کے آخر میں ہے کہ وہ رحمت سے دور ہو گیا جس نے اپنے والدین یاان میں سے کسی ایک کو بڑھایے کی حالت میں پایا اور انہوں نے اسے جنت میں نہیں پہنچایا، میں نے آمین کہی۔⁽⁴⁾

طبرانی کی ایک روایت میہ ہے کہ جس نے اپنے والدین ماان میں سے سی ایک کو پایا اوران سے حسنِ سلوک نہ کیا وہ الله کی رحمت سے دور ہوا اورغُضَب خدا کا مستحق بنا، میں نے آمین کہی ۔ ⁽⁵⁾

احمد کی روایت ہے، جس نے کسی غلام مسلمان کو آزاد کیا، وہ جہنم سے آزاد ہو گیا اور جس نے اپنے والدین میں سے کسی ایک کو پایا پھر بھی اس کی بخشش نہ ہوئی ،اللہ اسے رحمت سے دور کر دے۔ (6)

19.59

^{1}مسلم، كتاب البروالصلة والاداب، باب رغم من أدرك...الخ، ص ١٣٨١، الحديث ٩_ (٢٥٥١)

^{2}المعجم الكبير، ٢٤٣/٢، الحديث ٢٠٢٢ و ٢/٥٦، الحديث ١٢٥٥١

^{3}صحيح ابن حبان، كتاب البروالاحسان، باب حق الوالدين، ١/٥/١، الحديث ٤١٠

 ^{4....}المستدرك للحاكم ، كتاب البروالصلة ، باب لعن الله العاق...الخ ٢١٣/٥ ٢ ١٠الحديث ٧٣٣٨

^{5}المعجم الكبير، ٢ / ٦٦/١ الحديث ١ ٥٥٥ ١

^{6}مسند احمد ، مسند الكوفيين ، حديث ابي بن مالك و مالك بن عمرو القشيري ، ٢٨/٧، الحديث ٢٩٠٥ و و

' ' وصحیحیْن ' کی روایت ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے دریافت کیا گیا: یارسول الله الوگوں میں کون محبت کرنے کے زیادہ لائق ہے؟ آپ نے فرمایا: ماں! پوچھا: پھرکون؟ فرمایا: ماں! بوچھا گیا: پھرکون؟ فرمایا: ماں! جب چوشی بار پوچھا گیا: تو آپ نے فرمایا: باپ! (1)

صحیحین میں حضرت آشاء بنت افی بکر دَضِی الله عَنهما ہے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے عہد مبارک میں میری مشرکہ مال میرے پاس آئی تو میں نے رسول الله صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے عرض کیا کہ میری ہے دین مال آئی ہے! میں اس سے کیا سلوک کروں؟ آپ نے فر مایا: حسن سلوک کرو۔ (2)

ابن حبان اور حاکم کی روایت ہے: آپ نے فر مایا:الله کی رضا والد کی رضا میں ہے یا والدین کی رضامیں ہے اور الله کی ناراضگی میں ہے۔(3)

طبرانی کی ایک روایت ہے:والدیاوالدین کی اطاعت میں الله کی اطاعت ہے اور والدیاوالدین کی نافر مانی میں الله کی نافر مانی ہے۔ (⁴⁾

بزاز کی ایک روایت ہے، آپ نے فر مایا: والدین کی رضامیں رب کی رضاہے اور والدین کی ناراضگی میں الله کی ناراضگی میں الله کی ناراضگی میں الله کی ناراضگی ہے۔ (⁵⁾

تر ندی، ابن حبان اور حاکم سے مروی ہے کہ ایک شخص نے حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے عُرْض کی کہ میں نے بہت بڑا گناہ کیا ہے، میرے لئے توبہ ہے؟ آپ نے فر مایا: تیری ماں ہے؟ عُرْض کی: نہیں! پھر آپ نے فر مایا: تیری خالہ ہے؟ عُرْض کی: ہاں! فر مایا: جاؤ! اور خالہ سے حسن سلوک کرو! (6)

ابوداؤ داورابن ماجه میں مروی ہے کہ ایک شخص نے بوچھانیارسول الله! والدین کی موت کے بعدان سے نیکی کرنے

- الحديث ١ ـ (١٥٤٨) باب بر الوالدين...الخ، ص ١٣٧٨، الحديث ١ ـ (١٥٤٨)
 - 2بخارى، كتاب الهبة...الخ، باب الهدية للمشركين ١٨٢/٢، الحديث ٢٦٢٠
- ۱۳۲۸ و مستدرك، ۱۰/۵ تاب البروالاحسان، باب حق الوالدين، ۱/۳۲۸ الحديث ٤٣٠ و مستدرك، ۱/٥ ٢١ الحديث ٧٣٢١
 - ۲۲۵۵ الحديث ۲۲۵۵ الحديث ۲۲۵۵
 - 5البحرالزخار المعروف بمسند البزار، ٦/٦٧٦، الحديث ٢٣٩٤ بذكر الوالد مكان الوالدين
 - 6ترمذي، كتاب البرو الصلة ، باب في برالخالة، ٣٦٢/٣، الحديث ١٩١١

کی کوئی صورت ہے؟ آپ نے فر مایا:ان کے لئے دعائے مغفرت کرو،ان کے وعدوں کو پورا کرو،ان کے رشتہ داروں سے تعلق رکھواوران کے دوستوں کی عزت کرو۔⁽¹⁾

ابن حبان کی روایت میں اتنااضا فہ ہے کہ اس جوان نے کہا: یہ تنی عمدہ اور جامع بات ہے، آپ نے فر مایا: جاؤ اوراس پڑمل کرو۔ ⁽²⁾

امام سلم سے روایت ہے کہ حضرت عبدالله بن عمر دَضِیَ الله عَنهُ مَا مکہ کی طرف جارہے تھے، راستے میں انھیں بَدَوِی مِلا ، آپ نے اسے اپنے گدھے پرسوار کیا اور اپنی پگڑی اتار کراسے دے دی۔ ابن دینار نے کہا: الله تعالیٰ آپ پررحم کرے یہ بدوی لوگ تو معمولی می عطاسے خوش ہوجاتے ہیں ، آپ نے فرمایا: اس کا باپ میرے باپ کا دوست تھا اور میں نے رسول الله صَلَّى اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے سناہے کہ آپ نے فرمایا: بہترین نیکی بیٹے کا اپنے باپ کے دوستوں کو عزیز رکھنا ہے۔

صحیح ابن حبان میں حضرت ابو بردہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے کہ میں مدینہ میں آیا تو عبدالله بن عمر رَضِیَ اللّٰه عَنْهُ میں مدینہ میں آیا تو عبدالله بن عمر رَضِیَ اللّٰه عَنْهُ مَا میرے یہاں تشریف لائے اور فرمایا: جانتے ہو میں تمہارے پاس کیوں آیا ہوں؟ میں نے کہا: نہیں ۔ انہوں نے فرمایا: میں نے حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کوفر ماتے ہوئے سنا ہے کہ جو خص قبر میں سوئے ہوئے باپ سے نیکی جیا ہتا ہے وہ اس کے دوستوں سے حسنِ سلوک کرے، میرے باپ عمر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اور تمہارے باپ میں بھائی جیارہ تھا میں اس لئے حاضر ہوا ہوں۔ (4)

تصحیحین اور دوسری کتب احادیث میں مروی ہے کہ اگلے وقتوں میں تین آ دمی تلاشِ معاش کے لئے سفر میں نکلے، راستے میں انہیں بارش نے آلیا اور وہ بھاگ کرایک غارمیں حجیب گئے، اچا نک ایک چٹان کُڑ تھک کرغار کے منہ پر آ کر

^{1}ابوداود، كتاب الادب، باب في برالوالدين ، ٤ / ٤٣٤ ، الحديث ٢٤ ١٥

^{2}صحيح ابن حبان كتاب البروالاحسان، باب حق الوالدين ، ٢١/١، الحديث ١٩ ٤

الحديث ١١ ـ (٢٥٥٢)
 الحديث ١١ ـ (٢٥٥٢)

^{4} صحيح ابن حبان كتاب البروالاحسان، باب حق الوالدين، ٩/١، الحديث ٤٣٣

رُک گی اور غار کا منہ بند ہوگیا، انہوں نے آپس میں بیطے کیا کہ ہرایک اپنے اچھے اعمال کو یا وکر کے دعاما تھے تاکہ بید چٹان ہٹ جائے، ایک اور روایت کے لفظ بیہ ہیں؛ انہوں نے ایک دوسر ہے ہے ہا: ذراسو چواور کوئی الیا عمل یا دکروجو تم نے الله کی رضاجوئی میں کیا ہواور اس عمل کو واسطہ بنا کر اس چٹان سے نجات کی دعاما نگو، ایک اور روایت کے الفاظ ہیں: چٹان گرنے کی وجہ سے غار کا نشان مٹ گیا، الله تعالی کے سواکوئی نہیں جانتا ہم کہاں ہیں، الله تعالی سے اپنے بہترین عمل کوسا منے رکھتے ہوئے دعا کریں، تب ان میں سے ایک نے کہا: الله العالمین! میرے والدین بوڑھے تھے، میں ان سے پہلے شام کو کسی بچکے کو دود دھ نہیں پلایا کرتا تھا۔ ایک مرتبہ ایسا اتفاق ہوا، میں کسی کام سے چلا گیا، جب میں واپس آیا تو وہ سو چکے تھے، میں نے دود دھ دو ہا اور ساری رات دود دھ کیکر سر ہانے کھڑار ہا یہاں تک کہ سے ہوگئی اور میرے بیکا ساری رات بھو کے سوتے رہے، اے رب ذوالجلال! میں نے یہ سب بچھ تیری رضا جوئی کے لئے کیا تھا، اب تو یہ چٹان سے ہم سے ہٹا دے اس دعا کے بعد چٹان اتنی ہے گئی کہ سورج کی روشی اندر آنے گئی۔ (1)

ایک روایت کے الفاظ ہیں: میرے چھوٹے بیچے تھے، میں جب بکریاں چرا کرواپس آتا تو دودھ دوہ کر پہلے والدین کو بلاتا پھر بچول کو دیتا۔ایک مرتبہ مجھے ضروری کام کے لئے جانا ہوا، واپسی اس وقت ہوئی جب میرے والدین سو چکے تھے، میں نے حسب معمول دودھ ذکالا اور لیکر والدین کے سر ہانے کھڑا ہو گیا اور بیچے میرے قدموں میں پڑے دودھ طلب کرتے رہے مگر میں نے والدین کو دودھ بلائے بغیر انہیں دودھ دینا مناسب نہ سمجھا یہاں تک کہ شبح ہوگئی۔ اے الله اگر میرا بیٹل تیری رضا جوئی میں تھا تو اس چٹان کو ہٹا دے کہ ہم آسان کو دیکھ سکیں، چٹان اتن ہٹ گئی کہ انہیں آسان نظر آنے لگا۔دوسرے نے چھازاد بہن سے زناسے بازر ہے کاذکر کیا اور تیسرے نے مزدور کی اجرت کی امانت داری کاذکر کیا یہاں تک کہ چٹان کمل طور پر ہٹ گئی اور وہ باہر نکل گئے۔ (2)

اسبخاری، کتاب الاجارة ، باب من استاجر اجیرا...الخ، ۲۲۲۲، الحدیث ۲۲۲۲، و مسلم کتاب الرقاق ، باب قصة
 اصحاب الغار...الخ، ص ۲۶۵، الحدیث ۲۰۰ ـ (۲۷٤۳) ملخصًا

^{2}المرجع السابق



خُ زكوة اور بُخل ﴿

ز مانِ ال<u>ہی ہے</u>:

جولوگ الله تعالی کے عطا کردہ مال میں بخل کرتے ہیں وہ اسے اپنے لیے بہتر نتہ جھیں بلکہ بیان کے لیے مصیبت ہے عنقریب بخل کردہ مال سے قیامت کے دن ان کوطوق پہنائے جائیں گے۔

فرمانِ اللي ہے:

ان مشرکین کے لیے ہلا کت ہے جوز کو ہنہیں ادا کرتے۔

إسآييت كريمه مين الله تعالى نے زكوة نه دينے والوں كومشرك كهاہے۔

فرمانِ نبوی ہے: جو شخص اپنے مال کی زکو ۃ ادانہیں کرتا ، قیامت کے دن اس کا مال گنجے سانپ کی شکل میں اس کی گردن میں جھول رہا ہوگا۔ ⁽³⁾

معنور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نِي إِنْ إِلَى إِلْتُول عِيدالله كى بِناه ما كُلَّى كَلِّي

فرمانِ نبوی ہے: اے گروہ مہاجرین! پانچ بلائیں ایس ہیں جن کے متعلق میں الله تعالی ہے تمہارے لئے پناہ مانگا ہوں: جب کسی قوم میں تھلم کھلا بدکاریاں ہوتی ہیں توالله تعالی ان پرایسے مروبات نازل کرتا ہے جو پہلے کسی پرنازل نہیں ہوتے ۔ جب کوئی قوم ناپ تول میں کمی کرتی ہے تو ان پر تنگدستی ، قبط سالی اور ظالم حاکم مسلط کر دیا جاتا ہے ، جب کوئی قوم اپنے مالوں کی زکو ہ نہیں دیتی انہیں خشک سالی کھیر لیتی ہے ، اگرز مین پرچو یائے نہوں تو بھی ان پر بارش نہ برسے۔

- اتو جمهُ کنز الایمان: اور جو بخل کرتے ہیں اس چیز میں جواللہ نے انہیں اپنے فضل ہے دی، ہرگز اسے اپنے لیے اچھانہ بھیں بلکہ وہ ان کے لیے بُر اسے عنقریب وہ جس میں بخل کیا تھا قیامت کے دن ان کے گلے کا طوق ہوگا۔ (ب٤٠ ال عمران: ١٨٠)
 - **2**.....ترجمه كنز الايمان: اورخرابي ميشرك والول كو، وه جوز كوة نهيس دية ررب ٢٠، خم السحده: ٧٠٦)
 - 3ابن ماجه، كتاب الزكاة، باب جاء في منع الزكاة، ٣٦٩/٢، الحديث ١٧٨٤

مكاشفة القلوب 🖊 🔻

جب کوئی قوم الله اوراس کے رسول کے عہد کوتوڑ دیتی ہے تواس پراس کے دشمن مسلط ہوجاتے ہیں جوان سے ان کا مال و دولت چھین لیتے ہیں اور جس قوم کے فرمانروا کتاب الله سے فیصلنہیں کرتے ، ان کے دلوں میں ایک دوسرے سے خوف پیدا ہوجا تا ہے۔ (1)

> فرمانِ نبوی ہے: ''الله تعالیٰ بخیل کی زندگی اور بخی کی موت کونا پیند فرما تا ہے۔''⁽²⁾ فرمانِ نبوی ہے:'' دوعادتیں مومن میں جمع نہیں ہوسکتیں ، بُخُل اور بدخُلْقی۔'⁽³⁾ فرمانِ نبوی ہے:''الله تعالیٰ نے شم کھائی ہے کہ بخیل کو جنت میں نہیں جیجے گا۔''⁽⁴⁾

فرمانِ نبوی ہے:'' بخل سے بچو! جس قوم میں بخل آ جا تا ہے وہ لوگ ز کو ۃ نہیں دیتے ،صلہ رحی نہیں کرتے اور ناحق خون ریزیاں کرتے ہیں۔''⁽⁵⁾

فر مانِ نبوی ہے:اللّٰه تعالیٰ نے رکا کت اور شعلہ پن کو پیدا کیا اور اسے مال اور بخل سے ڈھانپ دیا۔ (6)
حضرتِ حسن دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے بخل کے متعلق بوچھا گیا؛ آپ نے فر مایا: بخل بیہ ہے کہ انسان راہ خدا میں خرچ کرنے
کو مال کا ضیاع اور مال جمع کرنے کوخو بی سمجھے ، بخل کی بنیا د، اولا داور مال کی محبت ، فقر وفاقہ کا خوف اور طولِ اَمَل ہے۔
حدیث شریف میں ہے: بیشک اولا دبز دل اور بخیل بنادینے والی ہے۔ (7)

بعض آ دمی ایسے ہیں جواپنے مال کی زکو ۃ کی ادائیگی اوراپنے اہل وعیال پرخرچ کرنے کواچھانہیں ہمجھتے ان کی محبت روپیہ جمع کرنے اور اسے سنجال کرر کھنے میں ہوتی ہے حالانکہ وہ جانتے ہیں کہ انہیں ایک دن مرجانا ہے۔ ان

- ❶شعب الايمان، باب الثاني والعشرين...الخ، باب في الزكاة ، ٩٧/٣ ١ ،الحديث ٢٣١٤ ٣٣١٠
- 2 كنزالعمال، كتاب الاخلاق، الباب الثاني في الأخلاق والأفعال...الخ، ١٨٠/٢، الجزء الثالث ،الحديث ٧٣٧٣
 - 3ترمذى ، كتاب البروالصلة ، باب ماجاء في البخل، ٣٨٧/٣، الحديث ٩٦٩
 - 4 سستاریخ مدینه دمشق، ۳۷۳/۵۷
 - 5 كنز العمال ، كتاب الاخلاق، ٢/٢ ، ١٨٢/١ ، الجزء الثالث، الحديث ٧٤٠١
 - 6المرجع السابق ، ص ١٨٣ ، الحديث ٧٤٠٧
- ر الله الكوريث بهال كيف سيره كُنُّ هُيُ مَكاشفة القلوب "(عربي) مين اس مقام پر بيرهديث موجود ب: "إنَّ الْوَلَدَ مَجْبَنَةٌ مَبُخَلَةٌ " (مسند احمد، حديث يعلى بن مرة الثقفي، ١٧٨/٦، الحديث: ١٧٥٧٣) للهذاكتابت كي فلطى پرمحمول كرتے ہوئے ہم نے اس حديث كاتر جمہ يہال كلي ويا ہے علميه

بخیلوں کے بارے میں ایک شاعر کا قول ہے:۔

ااخي ان من الرجال بهيمة في صورة الرجل اللبيب المبصر

فطن بكل مصيبة في ماله فاذااصيب بدينه لم يشعر

﴿ 1 ﴾....ا بِها ئي! بَعْقَلِندلوگول كي شكل ميں بہت ہے جانور بھی ہوتے ہیں۔

﴿2﴾.....جواییخ مال کی ہراونج نیج کوجانتے ہیں لیکن اگران کا دین چلاجائے تو انہیں محسوں بھی نہیں ہوتا۔

ایک اورشاعر کہتا ہے: 🏻

مروءة ولا عقل ولا دين البخل داء دوى لايليق بذى

فقد لعمرى اضحى وهو مغبون من اثر البخل عن وفر وعن جدة

فباء دنياه بعد الدين بالدون يابوس من منع الدارين حقهما

﴿1﴾ بخل ایسی بیاری ہے جو کسی با مروت بخقلمنداور دیندار کے لائق نہیں۔

﴿2﴾....جس نے مال ودولت حاصل کر کے بخل کیا مجھے زندگی کی قتم وہ دھو کے میں رہا۔

﴿3﴾ ہائے افسوس! جس نے دنیاوآخرت کے حقوق ادانہ کئے اس نے حقیر چیز کے بدلے اپنے دین کے بعد دنیا بھی ﷺ ڈالی۔

ایک اورشاعر کہتا ہے:

اذا المال لم ينفع صديقا ولم يصب قريبا ولم يجبر به حال معدم

فعقباه ان تحتازه كف وارث وللباخل المورث عقبي التندم

﴿ 1 ﴾.....جب مال کسی دوست کونفع نه پینچائے ،کسی عزیز کے کام نه آئے اور کسی تنگدست کی حاجت روائی نه کرے۔

﴿2﴾..... تو أنجام يه بوگا كه مال تو وارث كے بتقے چڑھے گا اور بخيل قيامت كى شرمندگى اپنے ساتھ لے جائے گا۔

حضرت بِشْر کا قول ہے کہ بخیل کی ملا قات مُوجِب مَلال اوراہے دیکھناول کی شکینی میں اضافہ کرتا ہے،عرب ایک

دوسرے کو مجنل اور بز دلی پرشرم دلایا کرتے تھے۔شاعر کہتاہے: ہے

انفق و لا تخش اقلا لا فقد قسمت على العباد من الرحمن ارزاق

لاينفع البخل مع دنيا مولية ولايضر مع الاقبال انفاق

﴿1﴾خرچ كرتاره اوركى كاخوف نهكر الله تعالى نے بندوں كے رزق بانٹ ويج ہيں۔

﴿2﴾..... دنیا ہے جاتے ہوئے بخل کوئی فائدہ نہ دے گااور سخاوت کوئی نقصان نہ پہنچا ئیگی۔

ایک اور شاعر کا قول ہے: _

ارى الناس خلان الجواد فلا ارى بخيلا له في العالمين خليل

وانبي رايت البخل يزرى باهله فاكرمت نفسي ان يقال بخيل

﴿1﴾ میں نے لوگوں کواہلِ سخا کا دوست پایا ہے مگر دوعالم میں بخیل کاکسی کو دوست نہیں دیکھا۔

﴿2﴾ میں نے دیکھاہے کہ بخل بخیلوں کوذلیل وخوار کرتا ہے الہٰذامیں نے بخل سے کنارہ کشی کرلی۔

بخیل کی ذلت کے لئے اتناہی کافی ہے کہ وہ دوسرے کے لئے مال جمع کرتا ہے،خرچ کرنے سے تکلیف محسوس .

كرتا ہے اوراس كى فراوانى سے لطف اندوز نہيں ہوتا ایسے آ دميوں كے لئے حضرت وكيع كا قول ہے: _

لئيم لايزال يلم وقرا لوارثه ويدفع عن حماه

ككلب الصيد يمسك وهو طاو فريسته ليا كلها سواه

﴿1 ﴾.....بخیل ہمیشداس کے دارثوں کے لئے مال اکٹھا کرتا ہے ادراس کی حفاظت کرتا ہے۔

﴿2﴾ شکاری کتے کی طرح ہے جو بھوکا ہونے کے باوجود شکار کی حفاظت کرتا ہے تا کہ اسے دوسرے کھائیں۔

ایک ضرب المثل ہے کہ بخیل کے مال کی آنے والے وارث کوخوشخری و بے دو۔ امام ابوحنیفہ دَ طِی اللهُ عَنْه کا قول ہے: میں بخیل کا فیصلہ نہیں کرسکتا کیونکہ وہ اپنے بخل کی وجہ سے اپنے حق سے زیادہ لینے کی کوشش کرتا ہے اور ایسا آدمی امانت دارنہیں ہوتا۔

حضرتِ یجی عَدَیه السَّلام نے پوچھا: تجھے کونسا آ دمی پیند، کونسا نا پیندہے؟ ابلیس نے کہا: مجھے مومن بخیل پیندہ کونسا نا پیندہے؟ ابلیس نے کہا: مجھے مومن بخیل پیندہے مگر گئہ گارتنی پینزہیں؟ آپ نے پوچھا: وہ کیوں؟ ابلیس نے کہا: اس کئے کہ بخیل کوتو اس کا بخل ہی لے ڈو بے گا مگر فاسق سخی کے متعلق مجھے یہ خطرہ ہے کہ کہیں اللہ تعالی اس کے گنا ہوں کو اسکی سخاوت کے باعث معاف نہ فر مادے۔ پھر ابلیس جاتے ہوئے کہتا گیا کہ اگر آپ بیخی بنی بنیم برنہ ہوتے تو میں (راز کی یہ باتیں) کبھی نہ بتلا تا۔

اب 26



فرمانِ نبوی ہے کہ میں تم پر دو چیز وں کے تسلط سے ڈرتا ہوں، طُولِ اَمَل یعنی کمبی امیدیں اورخواہشات کی پیروی، ب بے شبطویل امیدیں آخرت کی یاد بھلادی تی ہیں اورخواہشات کی پیروی حق وصداقت سے روک دیتی ہے۔ (1) فرمانِ نبوی ہے کہ میں تین شخصوں کے لئے تین چیز وں کا ضامن ہوں: دنیا میں ہمہ تن غرق دنیا کے حریص اور بخیل کے لئے دائمی فقر، دائمی مشغولیت اور دائمی غم مقدر کیا گیا ہے۔ (2)

حضرت ابوالدرداء رَضِى اللهُ عَنْه نَهْ عَنْه نَ حَمْص والوں سے کہا: تہہیں شرم نہیں آتی تم ایسے مکانات بناتے ہوجن میں تہہیں نہیں رہنا، الیی اُمیدیں رکھتے ہوجنہیں نہیں پاسکتے اور ایسا سامان جمع کرتے ہو جسے اپنے مصرف میں نہیں لاتے ہم سے پہلی امتوں نے عالیشان عمارتیں ہنوائیں، بہت مال ودولت جمع کیا اور طویل ترین امیدیں رکھیں مگران کی امیدیں فریب نکلیں اور ان کا جمع کردہ مال برباداور ان کی عمارتیں قبریں بن گئیں۔ (3)

حضرت علی _{دَضِی} اللّٰهُ عَنُه نے حضرت عِمر دَضِی اللّٰهُ عَنُه سے کہا: اگرتم اپنے دوست سے آرز وئے ملا قات رکھتے ہو تو پیوندلگا کپڑ اپہنو، پرانا جو تااستعال کرو،امیدیں کم کرواور پیٹ بھر کرنہ کھاؤ۔

حضرت آدم عَلَيْهِ السَّدَه في البِيْ عِينِي السَّدَه كو پائ الله تعالى في اور فرمايا: اپن اولادكوبهى يهى وصيت كى اور فرمايا: اپن اولادكوبهى يهى وصيت كرنا، عارضى دنيا پر عظمئن نه مونا! ميں جَاوِدا فى جنت ميں عظمئن تھا، الله تعالى نے مجھے وہاں سے ذكال ديا عور توں كى خواہشات پر كام نه كرنا! ميں نے اپنى بيوى كى خواہش پر شجر ممنوعہ كھاليا اور شرمندگى اٹھائى ۔ ہرايك كام كرنے سے پہلے اس كا انجام سوچ لو! اگر ميں انجام سوچ ليتا تو جنت سے نه ذكالا جاتا ۔ جس كام سے تمہارا دل مطمئن نه ہواس كام كونه كروكيونكه جب ميں نے شجر ممنوعه كھايا تو مير اول مطمئن نهيں تھا مگر ميں اس كے كھانے سے بازندر ہا۔ كام كرنے سے

❶.....شعب الايمان، الحادي و السبعون من شعب الإيمان، فصل فيما بلغنا عن الصحابة...الخ ،٣٦٩/٧، الحديث٢١٣٦

^{3}تاریخ مدینه دمشق ۱۳۳/٤۷۰

^{2}فردوس الاخبار، ١/٥٤، الحديث١٣٣

پہلے مشورہ کرلیا کرو کیونکہ اگر میں فرشتوں ہے مشورہ کر لیتا تو مجھے یہ نکلیف نداٹھانی پڑتی۔

مجاہدرَ حُمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے: مجھ سے عبدالله بن عمردَ ضِیَ اللهٔ عَنْهُمَا نے فر مایا کہ صبح کوشام کی فکر نہ کرواور شام کو دوسری صبح کی فکر نہ کرو، موت سے پہلے زندگی کو، بیاری سے پہلے تندرسی کوئیمت سمجھو کیونکہ پتانہیں کل تمہارا کیا حال ہوگا۔

حضور صَدِّى اللهُ عَدَيْهِ وَسَدَّم فِ صَحاب كرام سے فرمایا: كیاتم سب جنت میں جانے کی تمنار کھتے ہو؟ انہوں نے عرض کی: ہاں! آپ نے فرمایا: امیدیں کم کرواور الله تعالی سے کما حقہ شرم کرو۔ صحابہ کرام نے عرض کی: یارسول الله! ہم الله سے شرم کرتے ہیں۔ آپ نے فرمایا: حیاوہ نہیں جوتم سجھتے ہو، حیابہ ہے کہ تم قبروں اوران کی تکالیف کو یا دکرو، پیٹ کو حرام سے محفوظ رکھو، دماغ کو ہر بے خیالات کی آ ماجگاہ نہ بناؤ اور جو شخص آخرت کی عزت جا ہتا ہے وہ دنیاوی زینتوں کو ترک کردے، یہی حقیقی شرم ہے اوراسی سے بندہ الله تعالیٰ کا قرب حاصل کرتا ہے۔ (1)

فر مانِ نبوی ہے:اس امت کی اولین نیکی زمداور یقین ہے اوراسکی ہلا کت کا آخری سبب بخل اور جھوٹی امیدیں بں۔

حضرتِ أُمِّمُنْذِر رَضِیَ اللهٔ عَنهٔ سے مروی ہے: ایک مرتبہ حضور صَلَی الله عَلیْهِ وَسَلَّمرات کولوگوں کے پاس آئے اور فر مایا: اے لوگو!الله سے شرم کرو: صحابہ کرام نے عرض کیا: کس طرح یارسول الله! آپ نے فر مایا: تم وہ بھے جمع کرتے ہوجو کھاتے نہیں، وہ امیدیں رکھتے ہوجو پانہیں سکتے اور ایسے مکانات بناتے ہوجن میں تمہیں ہمیشہ نہیں رہنا ہے۔ (3) حضرتِ ابوسعید خُدری رَضِیَ اللهُ عَنه سے مروی ہے: حضرتِ اسامہ بن زید دَضِیَ اللهُ عَنه نے ایک ماہ کے قرض پر ایک سود ینار میں لونڈی خریدی۔ جب حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے ساتو فر مایا: تمہیں تعجب نہیں ہوا! اسامہ نے ایک ماہ کے ایک ماہ ایک سود ینار میں لونڈی خریدی۔ جب حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے ساتو فر مایا: تمہیں تعجب نہیں ہوا! اسامہ نے ایک ماہ

^{●}الزهد لابن المبارك، باب العرب من الخطايا والذنوب، ص ١٠٧، الحديث ٣١٧

^{2} كنزالعمال ، كتاب الاخلاق، ٢/١٨١، الجزء الثالث، الحديث ٧٣٨٠

١٠٥٦٢ الحديث ٢٥٥٢، الحديث و السبعون من شعب الإيمان، ٢٥٤/٧، الحديث ٢٠٥٦٢

X

کے قرض پرلونڈی خریدی ہے، اس کی امیدیں بہت طویل ہیں۔ ربِ ذوالجدلال کی قتم! میں آئکھیں کھولتا ہوں تو مجھے اتن امید نہیں ہوتی کہ پلکیں ایک دوسر سے سملیں گی یااللہ قعالی اس سے پہلے میری روح قبض فر مالے گا، میں تو نگاہ اٹھانے کے بعد نگاہ کی واپسی کی امید نہیں رکھتا بھر ارشا دفر مایا:
'' اے لوگو! اگرتم عقلمند ہوتو اپنے آپ کومردوں میں شامل مجھو، ربِ ذوالجدل کی شم! جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے تم پرایک وقت مقرر (موت) آئے گا جس کوتم ٹال نہیں سکو گے۔ (1)

حضرت ابن عباس رَضِى اللهُ عَنْهُمَا سے مروى ہے: حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مُّى سِمْ صَ فرماليت ، ميں عرض كرتا حضور يانى قريب ہے آپ فرماتے كيا خبر ميں يانى تك پہنچ سكول يان پہنچ سكول يان قريب ہے آپ فرماتے كيا خبر ميں يانى تك پہنچ سكول يان پہنچ سكول ـ (2)

روایت ہے کہ حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے تین لکڑیاں لیس، ایک کوسامنے، دوسری کو پہلومیں اور تیسری کودور نصب فرمایا اور فرمایا: جانے ہو! یہ کیا ہے؟ صحابہ نے عرض کی: الله اور اس کارسول (صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم) بہتر جانتا ہے۔ فرمایا: ''یہ انسان ہے، یہ موت ہے اور وہ انسان کی امیدیں ہیں، آدمی امیدوں کے پیچھے بھا گتا ہے مگر راستہ میں اسے موت آلیتی ہے۔ (3)

مروی ہے کہ حضرت عیسیٰ عَدَیْدِ السَّادِم بیٹھے ہوئے تھے اور ایک بوڑھا پھاؤڑے سے زمین کھودر ہاتھا، آپ نے اللّٰہ تعالیٰ سے دعامانگی: اے اللّٰہ اس سے زندگی کی امید چھین لے۔ بوڑھے نے پھاؤڑ ارکھ دیا اور لیٹ گیا، جب کچھ دیر گرز رگئ تو آپ نے اللّٰہ تعالیٰ سے دعا کی کہ اسے اس کی امیدیں لوٹا دے۔ بوڑھا کھڑا ہو گیا اور پھاؤڑے سے زمین کھود نے لگا تو آپ نے اس کا سبب پوچھا: تو وہ کہنے لگا: کام کرتے ہوئے میرے دل میں خیال آیا کہ میں اب بوڑھا ہوگیا ہوں، کب تک میر کام کرتارہوں گالہذا میں نے پھاؤڑ ارکھ دیا اور لیٹ گیا، پچھ دیر بعد میرے دل میں خیال آیا گھے ذندگی گزار نے کے لئے ضرور پچھ نہ بچھ کرنا چا ہے چنانچے میں بھاؤڑ استعال کر پھر کھڑا ہوگیا اور کام کرنے لگا۔

- 1تاریخ مدینه دمشق، ۸ / ۷۵
- 2مسند احمد، مسند عبدالله بن العباس... الخ، ١٨/١، الحديث ٢٦١٤
 - 3مسند احمد ، مسند ابي سعيد الخدري، ٢٧/٤، الحديث ١١١٣٢

اب 27

🕇 عبادت گزاری و ترکِ حرام

طاعت کے معنی: فرائض کی ادائیگی ،حرام چیزوں سے پر ہیز اور صدو دِشرع پر کاربند ہونا ہے۔حضرتِ مجاہد دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهُ فرمانِ اللهِ : قران اللهِ عَلَيْهُ فرمانِ اللهِ : قران اللهِ عَلَيْهُ فرمانِ اللهِ : قران اللهِ عَلَيْهُ فرمانِ اللهِ عَلَيْهُ فرمانِ اللهِ : قران اللهِ عَلَيْهُ فرمانِ اللهِ عَلَيْهُ فرمانِ اللهِ عَلَيْهُ فَرمانِ اللهِ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ اللهِ عَلَيْهُ فَرمانِ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ الل

طاعت کی حقیقت الله تعالی کی معرفت، خوف خدا، الله تعالی سے امید ہمہ وقت الله تعالی کی طرف رجوع ہونا ہے، وہ بندہ جو اِن اُوصاف سے خالی ہوتا ہے وہ ایمان کی حقیقت کونہیں پاسکتا لہٰذا اطاعت اس وقت تک صحیح نہیں ہوتی جب تک کہ بندہ الله کی معرفت اور اس بے مثل، بے مثال قا دروخالق ربِ دوالجلال کی تمام صفتوں پر ایمان نہیں لاتا۔

ایک بَدَ وِی نے حضرت محمد بن علی بن حسین دَ خِی الله عَنْهُمُ سے عرض کی کہ تم نے الله کو دیکھا ہے اس کی عبادت کرتے ہو! آپ نے فر مایا: وہ آئکھوں کے نور سے نہیں دل کے ہو! آپ نے فر مایا: وہ آئکھوں کے نور سے نہیں دل کے اور اک سے دیکھا جا تا ہے، بے انداز ہ اوصاف سے اور اک سے دیکھا جا تا ہے، اسے حواس نہیں پاسکتے، وہ اپنی لا تعداد نشانیوں سے بہچانا جا تا ہے، بے انداز ہ اوصاف سے موصوف ہے، وہ کسی برظلم نہیں کرتا، وہ آسان وز مین کا ما لک ہے اور اس کے سواکوئی معبود نہیں ہے۔ بدوی بے ساختہ

ایک عارف سے باطنی علم کے متعلق بوچھا گیا: انہوں نے کہا: وہالله تعالیٰ کاراز ہے جسےوہ اپنے دوستوں کے دلوں میں ڈال دیتا ہے اورکسی فرشتے اورانسان کواس کی خبر تک نہیں ہوتی۔

حضرت كعب احبار رَضِيَ اللهُ عَنه سے مروى ہے؛ انہوں نے كہا: اگر انسان ایک دانے کے برابر الله تعالی كی عظمت

1ترجمه كنز الايمان: اوردنيايس اپناصة رند بهول (پ ۲۰ القصص: ۷۷)

کہداٹھا:اللّٰہ جانتا ہے کدا ہے کس گھر انے میں اپنارسول بھیجنا ہے۔

پریفین حاصل کریے تو وہ ہوا پراُڑےاور پانی پر چلے، پاک ہے وہ ذات جس نے اپنی معرفت کے ادراک پرانسان کے اقر ارِ عاجزانہ کوایمان قر اردیا اورعطا کر دہ نعمتوں پرانسان کے شکر نہ کر سکنے کے اعتراف کوشکر قر اردیا ہے۔

حضرت محمود الوَرَّاق كاشعار بين:

اذا كان شكرى نعمة الله نعمة على له في مثلها يجب الشكر

فكيف بلوغ الشكر الا بفضله وان طالت الايام واتصل العمر

اذا مس بالسراء عم سرورها وان مس بالضراء اعقبها الاجر

وما منهما الاله فيه نعمة تضيق لها الاوهام والبرو البحر

﴿ 1 ﴾.....جبكه الله تعالى كى نعمتوں پر ميراشكر كرنا بھى الله كى ايك نعمت ہے جس پرشكرواجب ہے۔

﴿2﴾پس میں کیسے اس کے کرم کے بغیر شکر بیادا کرسکتا ہوں اگر چہ مجھے بہت طویل زندگی بھی دے دی جائے۔

﴿3﴾ جب انسان کوخوشی ملتی ہے قو مسرتیں عام ہوجاتی ہیں اور جب کوئی دکھ پہنچتا ہے تو اس کے بعد اسے بہترین اجرملتا ہے۔

﴿4﴾ ہرخوشی اور تحمی میں اللہ تعالی کی الیمی نعمت پوشیدہ ہے جو بحرو برمین نہیں ساسکتی۔

جب معرفت خداوندی حاصل ہوجائے تو بندگی کا اقر ار لازمی ہے اور جب ایمان دل میں جاگزیں ہوجائے، رب تعالیٰ کی طاعت واجب ہوجاتی ہے۔

ایمان کی دوقشمیں ہیں: ظاہراور باطن، زبان سے اقرار کو ظاہراور دل سے تصدیق کو باطن کہتے ہیں۔قرُبِ خداوندی اورعبادت واطاعت میں مومنوں کے مختلف درجات ہیں مگرایمان میں سب برابر کے شریک ہیں۔ جومومن نوّ گُل، اخلاص اور الله کی رضا جو کی میں جتنا حصد رکھتا ہے اسی قدراس کا مرتبہ بلند ہوتا ہے۔

اخلاص یہ ہے کہ بندہ الله تعالی سے اپنے اعمال کے آجر کا طالب نہ ہو، اس کئے کہ جو محض ثو اب کی اُمید اور عذا ب کے خوف سے عبادت کرتا ہے اس کا اخلاص مکمل نہیں ہوتا کیونکہ اس نے تو اپنی بھلائی کے لئے عبادت کی ہے، حضور صَدِّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَدَّم کا فرمان ہے کہ بُرے کئے کی طرح نہ بنو جوڈ رکے مارے کام کرتا ہے، نہ ہی برے مزدور کی طرح بنوجواجرت کے بغیر کام ہی نہیں کرتا۔

^{1}حلية الاولياء، ٤/٣٥، الحديث ٤٧٣١ (بالعبد مكان الكلب)

فرمانِ اللي ہے:

اوربعض لوگول سےوہ ہے جو کنارے پراللہ کی عبادت کرتاہے اگر

اسے بھلائی ملے تو وہ مطمئن ہوجا تا ہے اورا گراہے آز ماکش پڑے

توایخ منہ واپس ملیٹ جائے و نیااور آخرت کوخسارے میں ویا۔

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَّعُبُكُ اللَّهَ عَلَى حَرْفٍ قَوَانَ أَصَابَهُ

خَيْرُ الطَّانَّ بِهِ ۚ وَإِنَّ أَصَابَتُهُ فِتُنَةً انْقَلَبَ عَلَى

وَجُهِهٍ ۚ خَسِرَالتُّ نَيَاوَالْأَخِرَةَ ۗ (1)

اگرالله تعالیٰ اعمال پراجر خددیتا تب بھی اس کے إحسانات اور اِنعامات اتنے ہیں کہ ہم پراس کی عبادت اوراطاعت ضروری تھی چہ جائیکہ اس کا حکم بھی ہواور اَجر کا وعدہ بھی ہو۔

" تَوَكُّل "یہ ہے کہ انسان حاجت مندی کے وقت الله تعالی پراعتا دکر ہے ،ضرورت کے وقت اسی کی طرف رجوع کرے اور مصائب کے نزول میں اطمینانِ قلب اور کامل سکون کا ثبوت فراہم کرے کیونکہ متوکل آ دمی خوب جانتا ہے کہ مصائب کا ورود الله ہی کی طرف سے ہے ، وہ خیر وشر کے ہر کام کو باپ بیٹے ، مال ودولت کی طرف سے نہیں خالت کا گنات کی طرف سے بھے تیں اور کسی بھی حالت میں الله تعالی کے سواکسی اور پراعتا وزمین کرتے چنا نچو فر مانِ اللی ہے:

وَمَنْ يَّنَهُ وَكُلُّ عَلَى اللهِ وَهُوَ کَدُنُهُ اللهِ وَهُو کَدُنُهُ اللهِ اللهُ اللهِ ال

''رضا'' کامعنی بیہے کہ انسان الله کے جاری کردہ اُمورکومسکراتے ہوئے قبول کرے۔

بعض علماء کا قول ہے کہ الله کی بارگاہ میں سب سے زیادہ قریب وہ مخص ہے جواس کی رضا پر راضی ہے، حکماء کا قول

ہے کہ بہت ہی مُسَرَّتیں بیاری ہوتی ہیں اور بہت ہی بیاریاں شفاء ہوتی ہیں کسی شاعر کا قول ہے:

مطوية

لک بین انیاب النوائب

و مسرة قد اقبلت من حيث ترتقب المصائب

فاصبر على حدثان دهرك فالامور لها عواقب

ولكل كرب فرجة ولكل خالصة شوائب

•تو جمهٔ کنز الایمان: اور کچھ آ ومی الله کی بندگی ایک کناره پر کرتے ہیں پھرا گرانہیں کوئی بھلائی بن گئی جب تو چین ہے ہیں اور جب کوئی علاقے آئے ہیں کہ منہ کے بل یلٹ گئے د نیااور آخرت دونوں کا گھاٹا۔ (پ۷۱،الحجہ: ۲۱)

ترجمه كنز الايمان: اورجوالله يرجم وسهكر نووه است كافى ب- (پ٨٦ الطلاق: ٣)

نعمة

﴿1﴾ کتنی نعتیں الی ہیں جومصائب ہے گھری ہوئی ہیں۔

﴿2﴾اوركتني مسرتين ايسي بين جومصائب كي طرح نازل ہوئين _

﴿3﴾.....خوشی اوغم دونوں میں صبر کر کیونکہ ہر کام کا ایک انجام ہوتا ہے۔

﴿4﴾ برغم ك بعد خوشى باور برخو بى مين براكى پوشيده ب_

ہارے لئے بیارشادِر بانی کافی ہے کہ

" تم کسی چیز کونا پیند کرتے ہو حالا نکہ وہ تمہارے لیے بہتر ہوتی ہے۔"(1) بندہ کی عبادت اور طاعت حب دنیا ترک کئے بغیر نامکمل رہتی ہے۔

ایک دانشور کا قول ہے کہ بہترین نصیحت وہ ہے جودل پر کوئی حجاب نہ رہنے دے اور بیر حجابات دنیاوی تعلقات ہیں (یعنی اس نصیحت ہے مام دنیاوی تعلقات دل ہے منقطع ہوجائیں۔) ایک اور حکیمانے مقولہ ہے کہ دنیا ایک لمحہ ہے، اسے طاعت و بندگی میں گزار دے۔ آبُوالُولِیْدالبَاجی کا قول ہے:۔

اذاكنت اعلم علما يقينا بان جميع حياتي كساعة

فلم لا اكون ضنينا بها واجعلها في صلاح وطاعة

﴿1﴾.....جبتم خوب المجھی طرح جانتے ہو کہ تمہاری زندگی ایک ساعت سے زیادہ نہیں۔

(2) ﴿2﴾..... توتم اسےاحتیاط سے کیوں خرچ نہیں کرتے اسے طاعت وعبادت میں کیوں بسزہیں کرتے۔

ا يك شخص في حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مِن عُرض كَى: يارسول الله! مين موت كونا بسند كرتا مول - آب في مايا:

تیرا مال وغیرہ ہے؟ عرض کی:جی ہاں۔آپ نے فر مایا: مال کو پہلے بھیج دو کہ آ دمی اپنے مال کے ساتھ ہوگا۔ ⁽³⁾

•ترجمه كنز الايمان: اورقريب ي كركوني بات تهبيل برك كالااوروه تبهار حتى مين بهتر مور (ب٢، البقرة: ٢١)

2ان اشعار کاتر جمه یوں ہونا جا ہے:

﴿1﴾ جب میں خوب اچھی طرح جانتا ہوں کہ میری زندگی ایک ساعت سے زیادہ نہیں۔

﴿2﴾ تومیں اے احتیاط ہے کیوں خرچ نہیں کر تا اسے طاعت وعبادت میں کیوں بسرنہیں کر تا۔

بوسكتا بمترجم رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه ك ياس مكاشفة القلوب كاجونسخ بواس ميس بياشعار حاضر كصيغة كساته بوول والله تعالى اعلم علميه

3الزهد لابن مبارك، باب في طلب الحلال، ص ٢٢٤، الحديث ٢٣٤

حضرت عیسلی عَلَیْهِ السَّلام کا اِرشاد ہے کہ تین چیز ول میں بھلائی ہے: بولنے، دیکھنے اور چیپ رہنے میں۔ جس کا بولناذ کرِ خدانہیں وہ بولنا ' لغو' ہے،

جس کادیکیناعبرت کی نگاہ سے نہیں وہ دیکھنا ''سہوونسیان' سے اور

جس کی خاموثی اینے انجام پرغور کرنے کے لئے نہیں اس کی خاموثی ''بیکار'' ہے کیونکہ'' تفکر''ہی سے دنیاوی میلان ختم ہوتا ہے، پیندیدہ چیزوں کی تمنامر جھاجاتی ہے اور انسان غور وفکر کاعادی ہوجا تا ہے۔

انسان کوحرام چیزوں کی طرف نگاہ نہیں ڈالنی جائے کیونکہ نظر ایک ایسا تیر ہے جو خطانہیں ہوتا اور یہ ایک زبردست قوت ہے۔

فرمانِ نبوی ہے: نظر شیطان کے تیروں میں سے ایک تیر ہے، جس نے خوف خدا کی وجہ سے اسے حرام سے بچا لیا،اللّٰہ تعالیٰ اسے ایساایمان عطا کرے گا جس کی لذت وہ اپنے دل کی گہرائیوں میں محسوس کریگا۔ ⁽¹⁾

حکماء کا قول ہے: جس نے اپنی نگاہ کو آ وارہ چھوڑ دیااس نے بے انتہا شرمندگی اٹھائی، یہ آ زادنگاہی انسان کو بے نقاب کردیتی ہے، اپنی نظر کی ہے اور جہنم میں طویل مدت تک رہنے کواس پر واجب کردیتی ہے، اپنی نظر کی حفاظت کر! اگر تو نے اسے آ وارہ چھوڑ دیا تو برائیوں میں گھر جائیگا اور اگر تو نے اس پر قابو پالیا تو تمام اعضائے بدن تیرے مطبع ہوجائیں گے۔

افلاطون سے بوچھا گیا کہ دل کے لئے زیادہ نقصان پہنچانے والی چیز کان ہے یا آ نکھ؟اس نے کہا: یہ دونوں دل کے لئے زیادہ نقصان پہنچانے والی چیز کان ہے یا آ نکھ؟اس نے کہا: یہ دونوں دل کے لئے پرندے کے دو پروں کی طرح ہیں، وہ انہیں کی قوت سے اڑتا ہے، جب ان میں سے کوئی پَر ٹوٹ جاتا ہے تو وہ اڑنے میں بہت دشواری محسوس کرتا ہے۔

حضرت محمد بن ضوء کا قول ہے کہ الله تعالی نے ہر ذی عقل کے لئے یہ سزار کھدی ہے کہ وہ ہراس چیز کے دیکھنے پر مجبور ہوتا ہے جس سے وہ نفرت کرتا ہے۔

ایک زاہد نے کسی شخص کود یکھا، وہ ایک لڑ کے ہے بنسی مٰداق کرر ہاتھا، زاہد نے اس ہے کہا: اے عقل کے اندھے! تجھے کراماً کا تبین اور محافظ فرشتوں ہے بھی شرم نہیں آتی جو تیرے اعمال لکھے کرانہیں محفوظ کرتے جارہے ہیں اور تیری ان

●المستدرك للحاكم، كتاب الرقاق، باب الزهد في الدنيا... الخ ،٥ / ٤٤ ، الحديث ٥ ٤ ٧٩

برائیوں کے گواہ بن رہے ہیں اور تیری الیی پوشیدہ برائیوں سے واقفیت حاصل کررہے ہیں جن کوتو لوگوں کے سامنے کرنے سے گھبرا تاہے۔

قاضى الارجاني كہتے ہيں:

🖈ا میری دوآ تکھو!تم نے غلط نگاہی ہے کا ملیکر میرے دل کو بہت بری جگہ پر لا کھڑا کیا ہے۔

🖈ا ہے میری آئکھو! میرے دل کو گمراہ کرنے ہے رک جاؤ ،تم دو ہوکرایک قبل کرنے کی کوشش کررہے ہو۔

حضرت علی رَضِیَ اللهُ عَنه کا فرمان ہے کہ آئکھیں شیطان کا جال ہیں آئکھ سرِ نِیعُ الَاثِرَ عُضُو ہے اور بہت ہی جلد شکست کھا جاتا ہے، جس کسی نے اپنے اعضائے بدن کوالله تعالی کی عبادت میں استعال کیا، اس کی امید بَر آئی، اور جس نے اپنے اعضائے بدن کونواہشات کے پیچھے لگادیا، اس کے اعمال باطل ہوگئے۔

حضرت عبدالله بن مبارک رَحْمَهُ اللهِ عَليْه نے کہا ہے: ایمان کی حقیقت رسولوں کی لائی ہوئی کتابوں کی تصدیق کو کہا جا تا ہے جوقر آن کی تصدیق کرتا ہے اس کے احکامات پڑمل کرتا ہے اسے جہنم سے نجات ل گئی۔

جوحرام کردہ چیزوں سے کنارہ کش ہوا وہ تو بہ پر مائل ہوا، جس نے رزقِ حلال کھایا وہ متقی بن گیا، جس نے فرائض کوانجام دیاس کا اسلام کمل ہوگیا، جس نے زبان کوراست گو بنایا وہ ہلاکت سے نے گیا، جس نے ظلم کونالپند کیا وہ قصاص سے نے گیا، جس نے سنن کوادا کیا، اس کے اعمال پاکیزہ ہوگئے اور جس نے خلوص سے اللّٰہ کی عبادت کی اس کے اعمال مقبول ہوگئے۔

حضرت ابوالدرداء رضی اللهٔ عَنه سے مروی ہے؛ انہوں نے حضور صَلَى الله عَليْهِ وَسَلَّم سے عرض كيا: مجھے وصیت فرمائي : ' بي كيزه منراختيار كر، نيك عمل كر، الله تعالى سے مردن كارزق طلب كرتاره اورا بيخ آپ كو مردوں ميں شاركر ۔ (1)

اور ہرانسان کے لئے ضروری ہے کہ وہ اپنے نیک اعمال پر نہ اتر ائے کیونکہ بیا عمال کے لئے ایک عظیم ہلاکت ہے، ایسا آ دمی عمل کر کے اللہ تعالیٰ پراحسان دھر تا ہے حالانکہ اسے میلم نہیں ہوتا کہ اس کاعمل مقبول ہوایا نہیں ، ایسے گناہ

¹ سادب الدنيا و الدين ١٤٨/١٠ ملخصًا

جن کے بعد ندامت اور پشیمانی ہواس عبادت سے اچھے ہیں جس میں مکبراورر ماشامل ہو۔

فرمانِ الهي ہے:

وَبَكَالَهُمُ مِّنَ اللهِ مَالَمُ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۞ (1)

بعض مفسرین کا قول ہے کہ اس آیت کا مطلب سے ہے کہ وہ نیک عمل کر کے اتر ایا کرتے تھے، آخرت میں ان کی وہ نیکیاں برائیوں کی شکل میں ظاہر ہوں گی۔ایک بزرگ جب بیآ بیت پڑھتے تو فر مایا کرتے کہ دکھاوے کی عبادت

كرنے والوں كے لئے ہلاكت ہےاور فرمانِ الهي:

"الله كى عبادت مين كسى كوشريك نهكر"

ہے بھی بعض علماء نے رِیا کی شرکت مراد لی ہے۔

حضرت ابن مسعود رَضِيَ اللهُ عَنْه عدمروى بي كسب سي آخر مين قر آن مجيد كي بيرآيت نازل بوكي:

اورڈ رواس دن سے جس میں تم الله کی طرف لوٹائے جاؤگے پھر منفس کواپنے اعمال کا پورابدلہ دیا جائے گا اور کسی پرظلم نہیں ہوگا۔ وَاتَّقُوْايَوْمَاتُرُجَعُوْنَ فِيُهِ اللَّاللَّهِ ۚ ثُمَّتُوَفَّ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمُ لايُظْلَمُوْنَ ۞ (3)

محمد بن بشير دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه فرمات بين:

ويو مك هذا بالفعال شهيد

فثن باحسان وانت حميد

لعل غدا يأتى وانت فقيد

مضى امسك الادنى شهيدا معدلا

فان تك بالامس اقترفت اساءة

ولا ترج فعل الخير منك الى غد

﴿ 1﴾..... تیراکثیر دفت گزر چکا،اس بقیه تھوڑ ہے کو کام میں لا اس طرح کہ تو عادل گواہ ہواور تیرے بیا فعال تیری نیک خصلتوں کی

شہادت دیں گے۔

- الزمر:٧٤) الزمر: ١٥ اورائيس الله كى طرف عوه بات ظاهر موئى جوان ك خيال ميس ندهى (ب٤٢ مالزمر:٧٤)
 - 2 توجمه كنز الايمان: اورايخ رب كى بنرگى مين كى كوشريك نه كرك (ب ١٦٠ الكهف: ١١٠)
- الله على الله عل

يوگار (ب٣٠ البقرة: ٢٨١)

كأشفة القلوب

﴿2﴾اگرتونے گزشته دنوں میں برائیاں اکٹھی کرلی ہیں تواب نیکیاں کر، تو نیک بخت ہوجائے گا۔

﴿3﴾احیمی بات کوکل پر ندا ال ، شایدکل آئے اور تو ند ہو۔

تعجل الذنب بما تشتهى وتامل التوبة فى قابل والموت ياتى بعد ذا غفلة ما ذلك فعل الحازم العاقل

﴿1﴾برى خوابشات كوجلد بوراكرتا ہےاورتوبه كوكل برؤال ويتاہے۔

﴿2﴾اسى غفلت ميں موت آجائيگى ، يعقلمندوں كا كامنہيں ہے۔

حضرتِ داوُدعَ لَيْهِ السَّلَام نے حضرتِ سليمان عَلَيْهِ السَّلَام سے فرمايا: تين چيزيں مومن کی پر ہيزگاری پر دلالت کر تي ہيں: ''نه پانے کی صورت میں بہترین رضا''اور' ختم ہوجانے کی صورت میں بہترین صبر''۔

ایک حکیم کا قول ہے کہ جس نے مصائب برصبر کیااس نے مقصود کو پالیا۔ شاعر کہتا ہے: _

عليك بالصبر ان نابتك نائبة من الزمان ولا تركن الى الجزع

وان تعرضت الدنيا بزينتها فالصبر عنها دليل الخير والورع

فجاهد النفس قسرا فيهما ابدا تلق الذي ترتجيه غير ممتنع

﴿1﴾ا گر تجھ پرز مانه کوئی مصیبت نازل کرے توصبر کر ، آ ہ وفغال نہ کر۔

﴿2﴾اگردنیااین تمام ترحس کے باوجود جھے منہ پھیر لے تو صبر کر کیونکہ تقوی اور نیکی کی نشانی ہے۔

﴿3﴾ا پنفس كوصبر اور تقوى برمجبور كر چرنو ہراس فضيات كو پالے گاجسكى تو تمنار كھتا ہے۔

دوسراشاعر کہتاہے: _

مكأشفة القلوب

ولم يزل دائما يعين الصبر مفتاح مايرجي

فربما ساعد الحزون فاصبر وان طالت الليالي

ماقيل هيهات لايكون وربما نيل باصطبار

﴿1﴾ صبر حصول مقصود كى كليد باورايك دائى مدد كار بـ

﴿2﴾اگردُ كھكى رات طويل ہوجائے توصبر كر كيونكدا كثر ديكھا گياہے كددُ كھكا انجام مُسَرَّت ہوتاہے۔

﴿3﴾اوربسا اَوْ قات صبر كرنے والے كومبر كرنے كے بعد بچيتا نائبيں براتا۔

ایک اور شاعر کہتا ہے: _

ومجنة من نزغه الشيطان الصبر اوثق عروة الايمان

والطيش فيه عواقب الخسران الصبر فيه عواقب محمودة

وكذاك فينا عادة الازمان فاذالقيت من الزمان ملمة

ان التصبر رائد الرضوان فتدرع الصبر الجميل تيقنا

﴿1﴾ صبرایمان کی مضبوط رسی اور شیطانی وساوس کے لئے ڈھال ہے۔

﴿2﴾ صبر کاانجام بہترین اور غصے کاانجام بدترین ہوتا ہے۔

﴿3﴾اگر تحقیز مانه کوئی د کھ دی توسمجھ لے کہ شروع ہی ہے ایسا ہوتا ہے۔

﴿4﴾اس يقين محكم كماته صبر كيزره بين لي كه صبر خوشنودي خدا كاباعث ہے۔

اورصبر کی کئی اُ قسام ہیں، یابندی سے فرائض خداوندی کا ادا کرنا اوران کے بہترین اوقات کا خیال رکھنا،عباوت پرصبر، دوستوں اور ہمسائیوں کی زیاد نتوں پرصبر،مرض پرصبر،فقر پرصبر، گناہوں، ناجائز خواہشات،شیطانی وساوس اور اعضائے جسمانی کوغیرضروری کاموں میں استعال کرنے سےصبروغیرہ۔

اب 28)



فرمانِ بی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے: كَثِرُو ا مِنُ ذِكْرِ هَاذِمِ اللَّذَاتُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے: كَثِرُو ا مِنُ ذِكْرِ هَاذِمِ اللَّذَات اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے: كَثِرُو ا مِنُ ذِكْرِ هَاذِمِ اللَّذَات اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ہوجائے تا كہاسے بارگاؤر بُوبيت اس فرمان ميں بيراشارہ ہے كہانسان موت كوياد كركے دنياوى لذتوں سے كنارہ كش ہوجائے تا كہاسے بارگاؤر بُوبيت ميں مقبوليت حاصل ہو۔

کے موت کو یا دکرنے والاشہیدوں کے ساتھ اٹھایا جائے گا کے

فرمانِ نبوی ہے: اگرتمہاری طرح جانورموت کو جان لیتے توان میں کوئی موٹا جانور کھانے کو نہ ملتا۔ (2) حضرتِ عائشہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَانے بوچھا: یارسول الله! کسی کا حشر شہیدوں کے ساتھ بھی ہوگا؟ آپ نے فرمایا: ہاں! جو شخص دن رات میں بیس مرتبہ موت کو یا دکرتا ہے وہ شہید کے ساتھ اٹھا یا جائے گا۔ (3)

اِس فضیلت کا سبب بیہ ہے کہ موت کی یا دونیا سے دل اُچاہ کردیتی ہے اور آخرت کی تیاری پراُ کساتی ہے کیکن موت کو بھول جانا انسان کو دنیاوی خواہشات میں منہمک کردیتا ہے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ''موت مومن کے لئے ایک تخفہ ہے''⁽⁴⁾اس لئے کہ مومن دنیا میں قید خانے جیسی زندگی بسر کرتا ہے،اسے اپنی خواہشاتِ نفسانی کی اور شیطان کی مدافعت کرنا پڑتی ہے اور بیہ چیز کسی مومن کے لئے عذاب سے کم نہیں مگر موت اسے ان مصائب سے نجات دلاتی ہے لہٰذا بیاس کے لئے تخفہ ہے۔

فر مانِ نبوی ہے کہ موت مسلمان کے لئے کفارہ ہے۔ ⁽⁵⁾ مسلمان سے مرادوہ مومن کامل ہے جس کے ہاتھ اور

- 1 ترمذی، کتاب الزهد ، باب ماجاء فی ذکر الموت، ۱۳۸/۶ ، الحدیث ۲۳۱۶
- 2 شعب الايمان، الحادي والسبعون من...الخ، باب في الزهدو قصرالامل ، ٣٥٣/٧، الحديث ١٠٥٥٧
- 3بريقة محمودية في شرح طريقة محمدية ، ٢/٢ ١ ١ و المغنى عن حمل الأسفار، ٢/ ١٠٠ و قوت القلوب، ٤٣/٢
 - 4 شعب الايمان، السبعون من شعب الايمان، فصل في ذكر ما في الاو جاع...الخ، ٧/١٧،الحديث ٩٨٨٤
 - 5المرجع السابق، الحديث ٩٨٨٦

زبان سے دوسرے مسلمان محفوظ رہیں۔اس میں مومنوں کے اخلاقِ حسنہ پائے جائیں اور وہ ہر کبیرہ گناہ سے بچتا ہو، ایسے خص کی موت اس کے صغیرہ گنا ہوں کا کفارہ ہوجاتی ہے اور فرائض کی ادائیگی اسے گنا ہوں سے منزہ و پاک کردیتی ہے۔

حضرت عَطاءِ خُراسانی رَ حُمَهُ اللهِ عَلیْه سے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم ایک الیی مجلس سے گزرے جس میں لوگ زورزور سے ہنس رہے تھے۔ آپ نے فرمایا: اپنی مجلس میں لذتوں کوفنا کردینے والی چیز کا ذکر کرو! پوچھا گیا: حضوروہ کیا ہے؟ آپ نے اِرشاد فرمایا: ' وہ موت ہے۔' (1)

حضرت اُنُس رَضِیَ اللّٰهُ عَنُه سے مروی ہے؛ حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فرمایا: ''موت کوکش ت سے یا دکرو،اس سے گناہ ختم ہوجاتے ہیں اور دنیا سے بے رغبتی بڑھتی ہے۔''(2)

فرمانِ نبوی ہے کہ موت جدائی ڈالنے کے لئے کافی ہے۔

آپ نے مزید ارشا دفر مایا کہ موت سب سے بڑا ناصح ہے۔

ایک مرتبہ حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم مسجد کی طرف تشریف لے جارہے تھے کہ آپ نے الیی جماعت کو دیکھا جو ہنس ہنس کر باتیں کررہے تھے۔ آپ نے فر مایا: موت کو یا دکرو! رہِ دوالجلال کی قسم! جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے، جومیں جانتا ہوں اگروہ تہہیں معلوم ہوجائے تو کم ہنسوا ورزیا دہ روؤ۔ (5)

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَمْ مُحفَل مِين ايك مرتبه ايك شخص كى بهت تعريف كى گئی۔ آپ نے فرمایا: کیاوہ موت کو یا دکر تا ہے؟ عرض کیا گیا کہ ہم نے کہیں نہیں سنا۔ تب آپ نے فرمایا کہ پھروہ ایسانہیں ہے جیساتم خیال کرتے ہو۔ ⁽⁶⁾

❶ كتاب ذكر الموت لابن أبي الدنيا ، ٥/٣٢٤، الحديث ٩٥ و المغنى عن حمل الاسفار للعراقي، ١٦٧/١، الحديث ٢٧٤٠

^{2} كنزالعمال، كتاب الموت، الباب الاول في ذكر الموت وفضائله ، ٢٣١/٨ ، الجزء الخامس عشر، الحديث ٤٢٠٩١

المرجع السابق، ص٢٣٣،الحديث ٢١٠٨ ملخصاً

^{4} شعب الايمان ، الحادي والسبعون...الخ، باب في الزهد...الخ ٣٥٣/٧، الحديث ١٠٥٥٦

سكتاب ذكر الموت لابن أبي الدنيا، ٥ / ٣ ٢ ٤ ، الحديث ٩ و المطالب العالية للعسقلاني، ٧ ٤ / ٧ ٥ ، الحديث ٩ ٦ ١ و المطالب العالية للعسقلاني، ٧ ٤ / ٧ ٥ ، الحديث ٩ ٦ ٦ ١ و المطالب العالية للعسقلاني، ٧ ٤ / ٧ ٥ ، الحديث ٩ ٦ ٦ ١ و المطالب العالية للعسقلاني، ٧ ٤ / ٧ ٥ ، الحديث ١ ٥ ٢ و المطالب العالية للعسقلاني، ٧ ٤ / ٧ ٥ ، الحديث ١ ٥ ٥ و المطالب العالية للعسقلاني، ٧ ٤ / ٧ ٥ ، الحديث ١ ٥ و المطالب العالية للعسقلاني، ٧ و المطالب العالية للعسقلاني، ١ و المطالب العالية للعالية العالية العا

^{6}الزهد لابن المبارك، باب ذكر الموت، ص ٩٠ الحديث ٢٦٥

حضرتِ عبدالله بن عمر رَضِيَ اللهُ عَنهُمَا عدم وى ہے كہ ميں دسوال خض تفاجو (ايك دن) حضور صَلَّى اللهُ عَليهِ وَسَلَّم كَم حضرتِ عبدالله بن عمر رَضِيَ اللهُ عَنهُمَا عدم وى ہے كہ ميں دسوال خص تعابی الله علیه وسیار کون ہے؟ آپ نے كم مجلس میں حاضر تھا، ایک انصاری جوان نے بوجھا: یارسول الله! سب سے زیادہ باعزت اور ہوشیار ہے اور ایسے ہی لوگ دنیا اور آخرت فرمایا: جوموت کو بہت یادکرتا ہے اور اسے کے لئے زبر دست تیاری کرتا ہے وہ ہوشیار ہے اور ایسے ہی لوگ دنیا اور آخرت میں باعزت ہوتے ہیں۔ (1)

حضرت حسن رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ موت نے دنیا كوذ كيل كر دیا ہے اس میں كسى عقامند كے لئے مسرت ہى نہيں ہے۔حضرت رہجے بن غیثم كا قول ہے كہ مومن كے لئے موت كا انتظار سب انتظار وں سے بہتر ہے۔ مزید فرمایا كه ایک دانا نے اپنے دوست كو كھا: ''اے بھائى! اس جگہ جانے سے پہلے جہاں آرز و كے باوجود بھى موت نہيں آئے گى (اس جگہ) موت سے ڈراور نیک عمل كر۔''

امام اِبن سیرین کی محفل میں جب موت کا تذکرہ کیا جاتا توان کا ہر عضوین ہوجاتا تھا۔حضرت عمر بن عبدالعزیز دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا دستورتھا ہررات علماء کو جمع کرتے ،موت ، قیامت اور آخرت کا ذکر کرتے ہوئے اتناروتے کے معلوم ہوتا جیسے جنازہ سامنے رکھا ہے۔

حضرت ابراجیم التیمی دَخمهٔ اللهِ عَلَیه کا قول ہے کہ مجھے موت اور الله کے حضور حاضری کی یاونے دنیا کی لذتوں سے ناآشنا کردیا ہے۔ حضرتِ کعب دَضِی اللهُ عَنه کا قول ہے کہ جس نے موت کو پہچان لیااس سے تمام دنیا کے وُ کھ، درد ختم ہوگئے۔

حضرت مُطِرِّف دَ حُمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ كا قول ہے كہ ميں نے خواب ميں ديكھا: كوئی شخص بھر ہ كى مىجد كے وسط ميں كھڑا كہہ رہاتھا كەموت كى ياد نے خوف ِ خدار كھنے والوں كے جگر گلڑ ہے گلڑ ہے كر ديئے، رب كی قتم!تم انہيں ہروقت بے چين پاؤ گے۔

حضرت اَشعث رَضِيَ اللَّهُ عَنْه سےمروى بيهم جب بھى حضرت حسن رَضِيَ اللهُ عَنْه كى خدمت ميں حاضر ہوتے،

^{1}المعجم الاوسط، ٥/١٣، الحديث ٦٤٨٨

ومال جہنم، قیامت اورموت کا ذکر سنتے۔

حضرتِ اُمِّ المؤمنين صفيه رَضِيَ اللَّهُ عَنُهَا ہے مروی ہے کہ ایک عورت نے حضرت عائشہ رَضِیَ اللَّهُ عَنُهَا ہے اپنی سنگدلی کی شکایت کی تو اُنہوں نے کہا: موت کو یا دکیا کرو، تہارا دل نرم ہوجائے گا،اس نے ابساہی کیا اور اس کا دل نرم ہوجائے گا،اس نے ابساہی کیا اور اس کا دل نرم ہوگیا، وہ حضرتِ عائشہ دَضِیَ اللَّهُ عَنُهَا کی خدمت میں حاضر ہوئی اور آپ کاشکریہ ادا کیا۔

حضرت عیسی عَلَیْهِ السَّلام جب موت کا ذکر سنتے تو ان کے جسم سےخون کے قطرے گرنے لگتے۔حضرت واؤد عَلَیْهِ السَّلام جب موت اور قیامت کا ذکر کرتے تو ان کی سانس اکھڑ جاتی اور بدن پرلرزہ طاری ہوجا تا، جب رحمت کا ذکر کرتے تو ان کی سانس اکھڑ جاتی اور بدن پرلرزہ طاری ہوجا تا، جب رحمت کا ذکر کرتے تو ان کی حالت سنجل جاتی۔حضرت حسن دَخِتَ اللَّهُ عَنْه کا قول ہے: میں نے جس عقلمند کو دیکھا اس کوموت سے لرزاں اور عملین پایا۔

حضرت عمر بن عبدالعزیز رَضِیَ اللهٔ عَنه نے ایک عالم سے کہا: مجھے نصیحت کرو، اُنہوں نے کہا: ''تم خلیفہ ہونے کے باوجود موت سے نہیں نے سکتے ،تمہارے آباء واَجداد میں آ دم عَلیْهِ السَّلام سے لے کر آج تک ہرکسی نے موت کا جام پیا ہے، اب تمہاری باری ہے۔ حضرت عمر بن عبدالعزیز رَضِیَ اللهٔ عَنه نے بیسنا تو بہت دیں تک روتے رہے۔

حضرتِ رَبِّ بِن عَيْمُ رَضِيَ اللَّهُ عَنُهُ نِهِ البِيْ گھر کے ایک گوشے میں قبر کھودر کھی تھی اور دن میں کئی مرتبہاں میں جا کرسوتے اور ہمیشہ موت کا ذکر کرتے ہوئے کہتے: اگر میں ایک لمحہ بھی موت کی یا دسے عافل ہوجاؤں تو سارا کا م بگڑ جائے۔

حضرتِ مُطرِّف بن عبد الله بن الشِبِّيْدُ رَحُمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے: اس موت نے دنیا داروں سے ان كى دنیا چھین لى ہے۔ اس الله تعالیٰ ہے ایس نعمتوں كاسوال كروجودائمي ہیں۔

حضرت ِعمر بن عبدالعزیز َ طِبِیَ اللهُ عَنْهُ نِے عَنْبَسَه ہے کہا:''موت کوا کثریا کرو!اگرتم فراخ دست ہوتو بیتم کو تنگدست کردیگی اوراگرتم تنگدست ہوتو بیتم کو ہمیشہ کی فراخ دستی عطا کردے گی۔''

حضرت ابوسلیمان الدارانی دَحُمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے: میں نے اُم ّہارون سے یو چھا کہ تجھےموت سے محبت ہے؟

أشفة القلوب ۗ

وہ بولی: نہیں! میں نے بوچھا: کیوں؟ تواُس نے کہا: میں جس شخص کی نافر مانی کرتی ہوں اس سے ملاقات کی تمنا کبھی نہیں کرتی ،موت کے لئے میں نے کوئی کامنہیں کیالہذاا سے کیسے محبوب سمجھوں۔

حضرت ابوموی تمیمی کہتے ہیں کہ مشہور شاعر فَرُزُ دَق کی بیوی کا انتقال ہو گیا تو اس کے جنازہ میں بھرہ کی مقتدر ہستیاں شریک ہو تیں جن میں حضرت ِ حسن دَ ضِیَ اللّٰه عَنْه بھی موجود تھے، آپ نے فر مایا: اے ابوفراس! تو نے اس دن کے لئے کیا تیاری کی ہے؟ اس نے کہا: ساٹھ سال سے متواتر اللّٰہ تعالیٰ کی وحدانیت کا اقر ارکر رہا ہوں، جب اسے فن کر دیا گیا تو فرز دق نے اس کی قبر پر کھڑے ہوکر کہا: _

اخاف وراء القبر ان لم تعافنى اسد من القبر التهابا و اضيقا اذا جاء نى يوم القيامة قائد عنيف وسواق يسوق الفرزدقا لقد خاب من اولاد ادم من مشى الى النار مغلول القلادة ارزقا

﴿1﴾ا الله! اگرتو مجھے معاف کردے، میں قبر کے فشار اور شعلوں سے خاکف ہوں۔

﴿2﴾ جب قیامت کادن آئے گا توالک سنگدل ہیب ناک فرشت فَرَ (وَق کو ہرکائے گا۔

﴿3﴾ بلاشبه نسل آ دم كاوى شخص رسوا مواجيطوق بيبنا كرجهنم مين بهيجا گيا۔

اہلِ قبور کے لئے بعض شعراء نے کچھ عبرت آگیں اشعار کیے ہیں:

قف بالقبور وقل على ساحاتها من منكم المغمور في ظلماتها

ومن المكرم منكم في قعرها قد ذاق برد الامن من روعاتها

اما السكون لذى العيون فواحد لا يستبين الفضل في درجاتها

لو جاوبوك لاخبروك بالسن تصف الحقائق بعد من حالاتها

اما المطيع فنازل في روضة يفضى الى ما شاء من دوحاتها

والمجرم الطاغي بها متلقب في حضرة ياوى الى حياتها

وعقارب تسعى اليه فروحه في شدة التعذيب من لدغاتها

_____ مكاشفة القل

﴿ 1 ﴾.....قبرول کے صحنوں (قبرستان) میں کھڑا ہوکران سے پوچیتم میں سے کون تاریکی میں ڈوبا ہواہے۔

﴿2﴾اورکون اس کی گہرائی میں باعزت طور پرامن وسکون میں ہے۔

﴿3﴾آ نکھوالول کے لئے ایک ہی سکون ہےاور مراتب کا تفاوت دکھائی نہیں دیتا۔

﴿4﴾اگروه تحقیح جواب دیں توانی زبانِ حال سے حالات کی حقیقت یوں بیان کریں گے۔

﴿5﴾ جومطیع اور فرما نبر دار تھا وہ جنت کے باغوں میں جہاں جا ہتا ہے سیر کرتا ہے۔

﴿6﴾اور بدبخت مجرم سانپول کے مسکن والے ایک گڑھے میں تڑپ رہاہے۔

﴿7﴾اس كى طرف يچھودور دور كر برمور ہے ہيں اوراس كى روح ان كى وجہ سے تخت عذاب ميں ہے۔

حضرت ما لک بن دینار دَحْمَةُ الله عَلَيْه فر ماتے ہیں کہ میں قبرستان سے پیشعر پڑھتا ہوا گزرا:

اتيت القبور فناديتها فاين المعظم والمحتقر

واين المدل بسلطانه واين المزكى اذا ماافتخر

﴿1﴾ میں نے قبرستان میں آکر بکارا کہ عزت داراور فقیر کہاں ہے؟

﴿2﴾.....ا پنی پا کدامنی پرفخر کرنے والا اور با دشاہِ وفت کہاں ہے؟

حضرت ما لك بن ويناردَ حُمَةُ اللهِ عَليُه فرمات مين كه مير مصوالات كا قبرون سے ميرجواب آيا: _

تفانوا جميعا فما مخبر وماتوا جميعا ومات الخبر

تروح وتغدو بنات الثرى فتمحوا محاسن تلك الصور

فیاسائلی عن اناس مضوا اما لک فیما تری معتبر

﴿ 1 ﴾ سب فنا ہو گئے ، كوئى خبر دينے والانبيس ر باسب كے سب مر كئے ان كے نشان بھى مث كئے ۔

﴿2﴾ عبح ہوتی ہے اور شام ہوتی ہے اور ان کی حسین صور تیں مٹی بگاڑتی چلی جاتی ہے۔

﴿3﴾ا عَرْر بهووَل مِح متعلق يو چينه والے! كيا تونے ان قبرول ہے عبرت حاصل كى ہے؟

ایک اورقبر پرلکھا ہوا تھا: _

مكاشفة القلوب

تناجيك احداث وهن صموت وسكانها تحت التراب خفوت

ايا جامع الدنيا لغير بلاغه لمن تجمع الدنيا وانت تموت

﴿1﴾.....وہ قبریں جن کے رہنے والے منوں مٹی کے نیچے خاموش پڑے ہیں، زبانِ حال سے تجھے یہ کہہ رہے ہیں۔

﴿2﴾ا _ الوگوں کے لئے ونیاجمع کرنے والے! تخصے تو مرجانا ہے پھرید دنیا تو کس کے لئے جمع کرتا ہے؟

ابن ساك دَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ كُتِتْ بِين كه مِين قبرستان سِيرَّز راءايك قبر بريكها تها: _

يمر اقاربي جنبات قبرى كان اقاربي لم يعرفوني

ذووالميراث يقتسمون مالي وما يالون ان جحدوا ديوني

وقد اخذوا سهامهم وعاشوا فيا لله اسوع مانسوني

﴿1﴾میرے رشتہ دارمیری قبر کے پہلوسے انجان بن کر گز رجاتے ہیں۔(1)

﴿2﴾انہوں نے میرامال تو تقسیم کرلیا مگر میرا قرض نه اتارا۔

﴿3﴾ا ين اين حص لكروه خوش بين، مائ افسوس! وه مجه كتني جلدى بعول كئ بين!

ایک اور قبریرید کھاتھا۔

ان الحبيب من الاحباب مختلس

فكيف تبفرح ببالبدنييا ولذتها

اصبحت ياغافلا في النقص منغمسا

لايرحم المو ذاجهل لغرته

كم اخرس الموت في قبر وقفت به

قد كان قصرك معمورا له شرف

عن الجواب لسانا ما به خرس فقبرك اليوم في الاجداث مندرس

لايمنع الموت بواب ولاحوس

يامن يعبد عليه اللفظ والنفس

وانت دهرك في اللذات منغمس

و لاالذي كان منه العلم يقتبس

﴿ 1 ﴾.....موت نے دوست کودوستوں کی محفل ہے اُ جیک لیااور کوئی دربان، چوکیداراُ ہے نہ بچاسکا۔

﴿2﴾وه دنیاوی آسائشوں سے کیسے خوش ہوسکتا ہے جس کی ہربات اور ہرسانس کو گِنا جائے۔

﴿3﴾ا عنافل! تو نقصان میں سرگرم ہے اور تیری زندگی خواہشات میں ڈونی ہوئی ہے۔

وَباکے قبر میں سب چل دیئے دعانہ سلام فرراسی دیر میں کیا ہو گیا زیانے کو

مكاشفة القلوب

﴿4﴾.....موت کسی جاہل پر جہالت کے باعث اور کسی عالم برعلم کے سبب رحمنہیں کرتی ۔

﴿5﴾....موت نے کتنے بولنے والوں کوقبروں میں گوزگا بنادیاوہ جواب ہی نہیں دے سکتے ۔

﴿ 6 ﴾ کل تیرامحلءزت سے معمورتھااور آج تیری قبر کا نشان بھی مٹ گیا ہے۔

ایک اورقبر پرلکھاتھا: _

﴿ 1 ﴾..... جب میرے دوستوں کی قبریں اونٹ کی کو ہانوں کی طرح بلنداور برابر ہو گئیں تو مجھے معلوم ہوا۔

﴿2﴾اگرچه میں رویا اور میرے آنسو بہنے لگے مگران کی آئکھیں اسی طرح تھبری رہیں (انہوں نے آنونیس بہائے)۔

ایک طبیب کی قبریرلکھا ہوا تھا: _

قد صار لقمان الي رمسه قد قلت لما قال لى قائل

و حذقه في الماء مع جسه فاین من یو صف من طبه

من كان لايد فع عن نفسه هيهات لايد فع عن غيره

﴿ 1 ﴾.... جب کسی نے مجھ سے یو جھا تو میں نے کہا کہ قمان جبیبا طبیب ودانشمند بھی اپنی قبر میں جاسویا۔

﴿2﴾ کہاں ہے وہ جس کی طب میں شخصیت مسلّم تھی اوراس جبیبا کو کی ماہر نہ تھا۔

﴿3﴾جوایخ آپ سے موت کونہ ٹال سکاوہ دوسروں سے موت کو کیسے ٹالتا۔

ایک اور قبر پر لکھا ہوا تھا: _

قصر ہے، عن بلوغه الاجل ياايها الناس كان لى امل

فليتق الله ربه رجل امكنه في حياته العمل

كل الى مثله سينتقل ما انا و *حدی* نقلت حیث تر ی

﴿ 1 ﴾....ا بوگو! میری بہت ی تمنا ئیں تھیں مگرموت نے انہیں پورا کرنے کی مہلت نہ دی۔

۵ گاسسالله سے ڈراورا نی زندگی میں نک عمل کر۔

﴿3﴾ میں اکیلایہان نہیں آیا بلکہ ہرکسی کو یہاں آنا ہے۔

اب 29

ر کے ایک انکر اور دوسریے مباحث کے

روایت ہے کہ الله تعالی نے سب سے پہلے جو ہرکو پیدا کیا، جب اس پر ہیب کی نگاہ ڈالی تو وہ پیکھل گیا اورخون خدا سے کا نیا جس سے وہ پانی بن گیا، پھر الله اتعالی نے اس پر نگاہ رحمت ڈالی تو آ دھا پانی جم گیا جس سے عرش بنایا گیا، عرش کا پینے لگا تو اس پر لا إلله الله مُحَمدٌ رَّسُولُ الله لکھ دیا جس سے وہ ساکن ہوگیا مگر پانی کو اس طرح چھوڑ دیا گیا جو قیا مت تک موجز ن رہے گا۔ فرمانِ الہی ہے:

الله كاعرش يانى پرتھا۔

(1) وَّكَانَعَرُشُهُ عَلَى الْبَآءِ

پیر جب پانی میں تلاظم خیز موجیس پیدا ہوئیں جن سے تہ بہ تہ دھوئیں کے بادل اٹھے اور جھاگ پیدا ہوئی اور اس سے زمین وآسان بنائے گئے جوایک دوسرے سے جڑے ہوئے تھے پیران دونوں کے درمیان الله تعالیٰ نے ہوا کو پیدا کیا جس کے دباؤ سے زمین وآسان کے بق ایک دوسرے سے علیحدہ ہوگئے (2) چنانچہ فرمانِ الہی ہے:

ثُمَّالْسَتَوَى إِلَى السَّبَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ

اہلِ حکمت کہتے ہیں :الله تعالی نے آسانوں کودھوئیں ہے اس لئے پیدافر مایا کہ دُھواں باہم پیوست ہوتا ہے اور بلندیوں پر جا کر تھہرتا ہے، بخارات سے اس لئے پیدانہیں فر مایا کہ وہ واپس لوٹ جاتے ہیں، یہ الله تعالیٰ کے علم وحکمت

- ۱۲ مود:۷)
 - 2تفسير روح البيان ، الانبياء تحت الآية: ٠ ٣ ، ٥ / ٤٧١
- السيعة عنو الإيمان: پيمرآ سان كى طرف قصد فرمايا اوروه دهوال تفا- (ب٢٤، خمّ السيعة : ١١)

كا أد في كرشمه ہے، چھر إرشادِ نبوى كے مطابق الله تعالى نے يانى كى طرف نظرر حت كى تووہ جم گيا۔

زمین اور آسانِ دنیا کا اور ہر آسانِ دنیا سے دوسرے آسان کا بُغداور مسافت پانچ سوسال کے سفر کی دوری کے برابر ہے اور اسی طرح ہر آسان کا اپنا اپنا تجم ہے، کہتے ہیں کہ پہلا آسان دودھ سے بھی زیادہ سفید ہے مگر کوہِ قاف کی سبزی کی وجہ سے بیہ ہرانظر آتا ہے، اس آسان کا نام رقیعہ ہے۔

..... دوسرے آسان کا نام فیدوم یا ماعون ہے اور وہ ایسے لوہے کا ہے جس سے روشنی کی شعاعیں پھوٹی بڑتی

.... تیسرے آسان کا نام ملکوت یا ہاریون ہے اور وہ تانبے کا ہے۔

..... چو تھے آسان کا نام زَاہرہ ہے اوروہ آسکھول میں خیرگی پیدا کرنے والی سفید چاندی سے بناہے۔

..... پانچوین آسان کانام مزینه یامسهره ہےاوروه سرخ سونے کا ہے۔

الله التوالي آسان كانام لا بيه يا دامعه ہے ، وہ سرخ يا قوت كا ہے اوراسي ميں بيت المعمور ہے۔

بَیْتُ الْمُعْمُور کے جارستون ہیں: ایک سرخ یا قوت کا، دوسراسبز زَبَرْجَد کا تیسراسفید جا ندی کا اور چوتھا سرخ سونے کا ہے۔ بَیْتُ الْمُعْمُور کی عمارت سرخ عقیق کی ہے ہر روز وہاں ستر ہزار فرشتے داخل ہوتے ہیں اور ایک مرتبہ داخل ہوجاتے ہیں پھر قیامت تک انہیں دوبارہ داخلے کا موقع نہیں ملے گا۔

قولِ معتبر یہ ہے کہ زمین آسمان سے افضل ہے کیونکہ بیا نبیاء کا مَوْلَد ویْدُنَّن ہے اور زمین کےسب طَبقات میں بہتر او پر والاطَبق ہے جس پر خَلْقِ خدا آبا واور نفع اندوز ہوتی ہے۔

حضرت ابن عباس رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا سے مروى ہے كه آسانوں ميں سب سے زياده افضل كرى ہے جس كى حجيت

1تفسير روح البيان ، الانبياء تحت الآية: ٣٠ ، ٣٠ ٤٧١/٥

K

- اسس '' (حل' 'جوشنبہ کے دن کا ستارہ ہے، ساتویں آسان میں ہے۔
 - - السسسشنبكاسياره مريخ "يانچوين آسان ميں ہے۔
 - الله عنه کاسیاره (منس 'چوتھ آسان میں ہے۔
 - است چهارشنبه کاسیاره ' عطارهٔ ' دوسرے آسان میں ہے۔
 - الرودوشنبه كاسياره وقمز كيهلي سان ميس ہے۔



الله تعالی کی قدرتِ کاملہ نے آسان وزمین کی صنعت میں بے اِنتها عجائبات وَدِ اَیْت کئے ہیں حالانکہ سارے آسان وُھوئیں سے بنائے گئے ہیں مگر کسی میں ایک دوسرے کی مشابہت نہیں پائی جاتی ، آسان سے پانی برسایا ، اس سے مختلف سبز یاں اور کھل اُ گائے جن کے ذائعے اور رنگ جدا جدا ہیں ، حکمتِ اللّٰہ کے بموجب وہ ایک دوسرے سے بڑھ چڑھ کرلذیذ ہیں ، آ دم عَدَنیهِ انستَادم کی اولا دہیں مختلف اُ قسام بنا ئیں ، کوئی سفید ہے کوئی سیاہ ، کوئی خوش اور کوئی اُ داس ، کوئی مون کوئی کا فر، کوئی عالم اور کوئی جاہل ہے حالانکہ سب آدم عَدَنیهِ انستَادم کی نسل سے تعلق رکھتے ہیں۔

☆.....☆.....☆

اب 30

و عرش، کرسی، فرشتگان مقرب، رزق و توکل

الله تعالى ارشا دفر ما تاہے:

اس کی کرسی آسانوں اور زمین کوا حاطہ کئے ہوئے ہے۔

وَسِعَ كُمْ سِيُّهُ السَّلُوتِ وَالْآثُنَ صُ

کرسی سے مرادعلم الہی ہے یامُلکِ خداوندی یا پھرمشہور آسان کا نام ہے۔

حضرت على رَضِيَ اللهُ عَنهُ معمروى ہے كهرس ايك موتى ہے جس كى لمبائى الله تعالى كے سواكوئى نہيں جانتا، حديث

میں ہے کہ ساتوں آسان اور زمین کرسی کے سامنے ایسے ہیں جیسے وسیع صحرامیں ایک حلقہ پڑا ہو۔ ⁽²⁾

مزید فرمایا که آسان کرس میں ہیں اور کرسی عرشِ البی کے سامنے ہے۔

حضرت عکرمہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ہے مروی ہے، سورج کرسی کے نور کاستر واں حصہ ہے اور عرشِ اللّٰی حجاباتِ اللّٰہی کے نور کاستر وال حصہ ہے۔ (4)

مروی ہے کہ عرش اور کرسی کے اٹھانے والے فرشتوں کے مابین ستر ہزار نور کے اور ستر ہزار ظلمت کے پردے حاکل بیں، ہریردہ پانچے سوسال کا سفر ہے، اگریہ پردے نہ ہوتے تو حاملین کرسی حاملین عرش کے نور سے جل جاتے۔ (⁵⁾ عرش ایک نورانی شے ہے جو کرسی سے اوپر ہے اورایک علیحدہ وجو در کھتا ہے مگر اس قول سے حضرت حسن بھری

-ترجمه كنز الايمان: ال كى كرى يس سائي موئى بين آسان اورز مين (ب٣،البقرة: ٥٠٥)
- البيان ، الدرر في تناسب الآيات والسور لبرهان الدين ١/٦٠ ٥ و البداية والنهاية لابن كثير ٣٩/١ و تفسير روح البيان ،
 البقرة تحت الآية:٥٥ ٢ ، ٢٠٤/١ ٤
 - ١٩/١ والصفات للبيهقي، باب ما جاء في العرش والكرسي، ص٣٧٥ والبداية والنهاية، ١٣٩/١
- اللدر المنثور ، تحت الآية: ۲۰ ، ۸ / ۲۰ و الكتاب العظمة للاصبهاني ، ذكر عرش الرب تبارك وتعالى وكرسيه...الخ ،
 ص ۹۷، الحديث ۲۰۲
- 5تاریخ مدینه دمشق ، ۲/۷۱ ، ۳٤٤،۳٤٦ و الکتاب العظمة للاصبهانی ، ذکر حملة العرش...الخ ، ص ۱۷۲ ، الحدیث ۴۸٥

رَضِيَ اللَّهُ عَنُه كُوا خَتْلًا ف ہے۔

عرشِ اللی کی بناوٹ کے متعلق مختلف روایتیں ہیں بعض کہتے ہیں:سرخ یاقوت کا ہے یا سبز موتی کا ہے بعض کی رائے ہے کہ سفید موتی سے بنایا گیا ہے ،الله تعالیٰ ہی اس کی حقیقت کو بہتر جانتا ہے۔

فلکیات کے ماہرین اسے نواں آسان، فلکِ اعلیٰ، فلکُ الاَ فلاک اور فلکِ اَطْلس کہتے ہیں۔اس میں کوئی ستارہ وغیر نہیں ہے، قدیم ہیئٹ دانوں کے بقول تمام ستارے آٹھویں آسان میں ہیں جس کووہ فلک الْبُروُجُ اور اہلِ شرع گرسی کہتے ہیں۔

عرشِ الٰہی مخلوقات کی حصِت ہے، کوئی چیز اس کے دائر ہ سے باہر نہیں نکل سکتی، وہ بندوں کے علم وادراک اور مطلوب کی اِنتِهَا ہے،اللّٰہ تعالیٰ نے اسے ^{دعظی}م' قرار دیا ہے چنانچیہ

فرمانِ الہی ہے:

بس اگروہ پھرجائیں تو کہئے کہ جھے اللہ کافی ہے اس کے سواکوئی

معبودنہیں اسی پرمیرا بھروسہ ہےاوروہ عرش عظیم کا مالک ہے۔

فَإِنْ تَوَلَّوْ اَفَقُلْ حَسْمِي اللَّهُ أَلِا إِللهَ إِلَّاهُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ مَرَبُّ الْعُرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿ (1)

حضور صَدِّی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَّم کانامِ نامی توریت میں مُتُوکِّل تھااور کیوں نہ ہوتا، آپ سے بڑھ کرمعرفت خداوندی کا شناسااور کون ہے؟ آپ مُوَقِّدِین کے سرداراور عارفینِ کاملین کے رہنما ہیں، تَوَکُّل کی حقیقت آپ پرروزِ روثن کی طرح عیاں تھی۔

تَوَكَّل كامطلب بنہیں ہے كہ اسباب سے قطِع نظر كرليا جائے جيسا كہ کچھلوگوں كا خيال ہے بلكہ تؤكُّل اسباب كے ساتھ ساتھ موتا ہے، حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے ايك بَدُوى نے بوچھا: ميں اونٹ كاپير باندھ كر، يا كھلاچھوڑ كرتؤگُّل

•تو جمهٔ کنز الایمان: پھراگروه منه پھیریں توتم فر مادو کہ مجھے اللّٰه کافی ہے،اس کے سواکسی کی بندگی نہیں، میں نے اس پر بھروسہ کیا اوروہ بڑے عرش کا مالک ہے۔ (پ ۱۱، النوبه: ۲۶۱) كرون؟ آپ نے فر مايا: اونٹ كا پاؤں با ندھ دے اور تؤگُل كر الله بر۔ ⁽¹⁾

فرمان نبوی ہے کہ اگرتم ،الله پرتو گل کرنے کی حقیقت کو پالیتے توالله تعالی تمہیں پرندوں کی طرح رزق دیتا جوسج بھو کے اٹھتے ہیں اور شام کو پیٹ بھرے ہوتے ہیں۔(2)

حضرتِ ابراہیم بن آؤہم اور حضرتِ شَقِی بَخُی دَجِ مَهُ مَا اللّهُ تَعَالَیٰ کی مکه معظمہ میں ملاقات ہوئی ،ابراہیم نے پوچھا:
اے شقیق بلی اتم نے یہ بلند مرتبہ کسے پایا ؟ حضرت شقیق نے جواب دیا کہ ایک مرتبہ میراایک بیابان سے گزرہوا، وہاں
میں نے ایک ایبا پرندہ پڑاد یکھا جس کے دونوں بازوٹوٹ گئے تھے۔ میر بے دل میں یہ وسوسہ پیدا ہوا کہ دیکھوں تو سہی
اسے کیسے رزق ماتا ہے، میں وہاں بیٹھ گیا، کچھ دیر بعد ایک پرندہ آیا جس کی چونچ میں ایک ٹِڈی تھی اوراس نے وہ پرندہ
کے منہ میں ڈال دی۔ میں نے دل میں سوچا کہ وہ رازق کا مُنات ایک پرندے کے ذریعے دوسرے پرندے کارزق پہنچا
دیتا ہے، میرارزق بھی مجھے ہر حالت میں پہنچا سکتا ہے لہذا میں نے سب کاروبار چھوڑ دیکے اور عبادت میں مصروف ہوگیا۔
حضرت ابراہیم بن ادہم دَخمَةُ اللّهِ عَلَيْهُ نے کہا: اے شقیق! تم نے مجبور ومعذور پرندہ بننا لیند کیا اور تندرست پرندہ
بننا لیند نہ کیا کہ تم کو مقام بلند نصیب ہوتا، کیا تم نے یہ فرمانِ نبوی نہیں سنا کہ اوپر والا ہاتھ نیچ والے ہاتھ سے بہتر
بنا لیند نہ کیا کہ تم کو مقام بلند نصیب ہوتا، کیا تم نے یہ فرمانِ نبوی نہیں سنا کہ اوپر والا ہاتھ نیچ والے ہاتھ سے بہتر

حضرت شقیق دَحْمَةُ اللّهِ عَلَيْه نے بیر سنتے ہی حضرت ابراہیم دَحْمَةُ اللّهِ عَلَيْه کے ہاتھوں کو چو مااور کہا: بیشک آپ میرے اُستاد ہیں۔

جب انسان رزق کے حصول کے اُسباب مہیا کر لے تو اُسباب کی بجائے اپنانصب العین اس خالقِ کا مُنات کو

- 1ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ۲۰، ۲۳۲/٤، الحدیث ۲۰۲۵
- 2ترمذي، كتاب الزهد، باب في التوكل على الله، ٤/٤ ٥ ١ ،الحديث ٢٣٥١
- 3بخارى ، كتاب الزكاة، باب لاصدقة الا...الخ، ٢/١٨)، الحديث ١٤٢٧

يين كش: مطس ألمد فيدَّ شَالعِنه لميَّة ورووت اسلام)

بنائے جوحقیقت میں روزی رَساں ہے، سائل جو کشکول کیکر گدا گری کرتار ہتا ہے وہ کشکول کونہیں بلکہ ہمیشہ دینے والے سخی کی طرف متوجہ رہتا ہے۔

فرمانِ نبوی ہے:'' جو شخص اپنے آپ کوسب سے زیادہ غنی بنانا جا ہتا ہے وہ اپنے مال سے زیادہ انعامِ خداوندی پر نظرر کھے۔''(1)

حضرت عُذَا يَفْهِ مُؤَتَى دَخَمَةُ اللّهِ عَلَيْه نَے كُلُ سال تك حضرت ابراہیم بن اَ دہم دَخَمَةُ اللّهِ عَلَيْه كَي خدمت كي تقى ۔ ایک مرتبہ لوگوں نے ان سے بوچھا کہتم حضرت ابراہیم دَحُمَةُ اللّهِ عَلَيْه كی صحبت كاكوئی عجیب واقعہ سنا وَ انہوں نے کہا کہ ایک بارہم مكم معظمہ كی طرف جارہے تھے، راستہ میں ہمارا زادِ راہ ختم ہوگیا ہم كوفه كی ایک ویران مسجد میں اقامت گزیں ہوئے، حضرت ابراہیم نے مجھے دیكھ كرفر مایا: تم بھوک سے نڈھال نظر آتے ہو، میں نے کہا: ہاں، مجھے شدت كی بھوک لگرائے ہو، میں نے کہا: ہاں، مجھے شدت كی بھوک لگرائے ہوں ہے۔ آپ نے مجھے سے قلم دوات منگوائی اور كاغذیر' بسم الله'' كے بعد لكھا ہم حالت میں اے ربّ دوالجلال!

انا حامد انا شاکر انا ذاکر انا جائع انا ضائع انا عاری

هي ستة و انا و الضمين لنصفها فكن الضمين لنصفها يا بارى

مدحي لغيرك لهب نار حضنتها فاجر عبيدك من دخول النار

﴿ 1 ﴾ ميس تيري حمد كرينيوالا ، شكر كرينيوالا اور ذكر كرينيوالا مهول ، ميس مجموكا ، خسته حال اور بر مهنه موں _

﴿2﴾ا كالله! تين باتول كاميس ضامن مول اور بقيه تين كي صانت تو قبول فرما لــــ

﴿3﴾ تير يسواكس اوركى ثنامير ي لئي آگ سيم نبيس ب، اپني بند يكواس آگ سي بچاك_

اور مجھ سے فرمایا: دل میں کسی غیر کا خیال نہ لا نا، جوآ دمی تہمیں سب سے پہلے نظر آئے بیر قعہ دے دینا۔سب سے پہلا

^{1}مستدرك للحاكم، كتاب الادب، ٥/ ٣٨٤، الحديث ٧٧٧٩ و مسند الشهاب للقضاعي، ٢٣٤/١، الحديث ٣٦٨ و السماد للعالم والحكم لابن رجب، تحت الحديث الحادي والثلاثون ص٣٦٦ و تاريخ مدينه دمشق، ٥ ٥/ ٣٣١

شخص جو مجھے ملاوہ ایک خچرسوارتھا، میں نے وہ رقعہ اس کو دے دیا، اس نے پڑھا اور رونے لگا، پھر پوچھا: اس رقعہ کا کا تب کہاں ہے؟ میں نے کہا: فلاں ویران مسجد میں بیٹھا ہے۔ یہ سنتے ہی اس نے مجھے ایک تھیلی دی جس میں چھسو دینار تھے، بعد میں مجھے ایک اور شخص ملا، میں نے اس سے خچرسوار کے بارے میں پوچھا: تو اس نے کہا کہ وہ نصرانی تھا، میں نے واپس آ کر حضرت ابراہیم بن ادہم دَنے مَدُّاللَّهِ عَلَنے کوساراوا قعہ سنایا۔ آپ نے فرمایا: ذرائھہر ووہ ابھی آ جائے گا۔ بچھ دیر کے بعد وہ نصرانی آ گیا اور حضرت ابراہیم کے سرکو چو منے لگا اور مسلمان ہوگیا۔

حضرتِ ابن عباس رَضِيَ اللهُ عَنهُمَا سے مروی ہے کہ الله تعالی نے حاملین عرش (فرشتوں) کو پیدا فر مایا اور انہیں عرش کواٹھانے کا حکم دیا مگروہ نہ اٹھا سکے، الله تعالی نے ہر فرشتہ کے ساتھ سات آسانوں کے برابر فرشتے پیدا کئے، پھر انہیں عرش کواٹھانے کا حکم دیا مگروہ نہ اٹھا سکے، پھر الله تعالی نے ہر فرشتہ کے ساتھ ساتوں آسانوں اور زمینوں کے فرشتوں کے برابر فرشتے پیدا فرمائے اور انہیں عرش اٹھانے کا حکم دیا مگروہ پھر بھی نہ اٹھا سکے، تب الله تعالی نے فرمایا: تم لاحمؤل و لاقو قا آلابِ الله کہوں نے بیکہا تو عرش اللی کواٹھا لیا مگر ان کے قدم ساتویں زمین میں ہوا پر جم گئے۔ جب انہوں نے محسوں کیا کہ ہمارے قدم ہوا پر جیں اور نینچ کوئی ٹھوس چیز موجود نہیں ہے تو اُنہوں نے عرش اللی کومضبوطی سے تھام لیا اور لاحمؤل و لاقو آ آلابِ الله پڑھنے میں محوجہ و گئے تا کہ وہ انتہائی پستیوں پر گرنے سے محفوظ رہیں اب وہ عرش کواٹھائے ہوئے ہیں اور عرشِ اللی انہیں تھا ہے ہوئے ہے بلکہ ان تمام کوقد رہ اللی سنجالے موئے ہے۔

ایک روایت میں ہے کہ اس کے دنیاوآ خرت کے تمام کام پورے ہوجاتے ہیں۔

^{1}ابوداود، كتاب الادب، باب ما يقول اذا أصبح، ٢٦/٤، الحديث ٨١٥.

(باب 31)

$\left\langle \overset{}{}_{}$ ترکِ دنیا و مذمتِ دنیا $\left\langle \overset{}{}_{}\right\rangle$

قرآنِ مجید میں دنیا کی مذمت اور دنیا سے توجہ ہٹا کرآخرت کی جانب ماکل کرنے کے لئے بے شارآیات ہیں بلکہ انبیاءِ کرام عَلَيْهِمُ السَّلام کی بعثت کا سبب یہی چیزتھی ،قرآنِ مجید کی آیات اتن مشہور ہیں کہ یہاں ان کے ذکر سے صرف نظر کر کے صرف بعض احادیث کے ذکر پرہی اکتفا کرتا ہوں۔

مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا ایک مردہ بکری کے پاس سے گزرہوا۔ آپ نے فرمایا: کیا بیہ بکری اپنے مالک کو پیند ہے؟ صحابہ کرام نے عرض کی: اس کی بد بوہی کی وجہ سے تو یہاں پھینک دیا گیا ہے۔ آپ نے فرمایا: بخدا! دنیاالله تعالیٰ کے ہاں اس مردہ بکری سے بھی زیادہ بے وقار ہے، اگر الله تعالیٰ کے ہاں دنیا کا مقام مچھر کے پر کے برابر بھی ہوتا تو کوئی کا فراس دنیا سے ایک گھونٹ بھی یانی نہ پی سکتا۔ (1)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: دنیامون کے لئے قیدخانداور کا فرکے لئے جنت ہے۔ (2) مزید فرمایا: دنیاملعون ہے،اس کی ہروہ چیزملعون ہے جواللہ کیلئے نہ ہو۔ (3)

حضرت ابوموی اشعری رَضِیَ اللهٔ عَنه ہے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جس نے دنیا سے محبت کی اس نے دنیا کو دَرخَورِ اعْتِنا نہ مجھا ہم فانی دنیا پر محبت کی اس نے دنیا کو دَرخَورِ اعْتِنا نہ مجھا ہم فانی دنیا پر مجبول کی اس نے دنیا کو دَرخَورِ اعْتِنا نہ مجھا ہم فانی دنیا پر اللہ میں معبول کے دو۔ (4)

: فرمانِ نبوی ہے کہ دنیا کی محبت ہر برائی کی بنیاد ہے۔

- 1 ١١٠٤١١٠ الحديث ١١٠٤١٠٠٠
 - 2مسلم، كتاب الزهد والرقاق ، ص ١٥٨٢، الحديث ١_ (٢٩٥٦)
- 3 شعب الايمان، الحادي والسبعون...الخ، باب في الزهد...الخ ٢/٧ ٣٤٢، الحديث ١٠٥١٢
 - 4 مسند احمد، مسند الكوفيين ، حديث ابي موسىٰ الاشعرى، ٧/٥٦، الحديث ١٩٧١٧
- الحديث ١٠٥٠١ الحديث والسبعون...الخ ،باب في الزهد...الخ ،٣٣٨/٧، الحديث ١٠٥٠١

حضرت نید بن اَدَّهُ رَضِیَ اللَّهُ عَنْه ہے مروی ہے کہ ہم حضرت ابو بکر صدیق رَضِی اللَّهُ عَنْه کے مکان پر بیٹھے ہوئے سخے اور نے بانی منگوایا تو پانی اور شہد حاضر کیا گیا ، آپ جب اسے منہ کے قریب لے گئے تو بے اختیار رونے لگے ، پھو دیر بعد آپ نے پھر پینے کا ارادہ فر مایا مگر شہد اور پانی یہاں تک کہ پاس بیٹھے ہوئے سب صحابہ کرام بھی رونے گئے ، پچھ دیر بعد آپ نے پھر پینے کا ارادہ فر مایا مگر شہد اور پانی د کیھے کر دوبارہ رونے لگ گئے یہاں تک کہ صحابہ کرام نے خیال کیا کہ شاید ہم اس گرید کی وجہ دریافت نہیں کر سکی رحب آپ نے اپنے آنسوصاف کئے تو صحابہ کرام نے عرض کیا: اے خلیفة الرسول! آپ کے رونے کا باعث کیا تھا؟ آپ نے فر مایا: ایک مرتبہ مجھے رسولِ خداصًا گئی اللّٰه عَلَیْهِ وَسَلّٰم کی ہمرائی کا شرف نصیب ہوا، آپ اپنے جسم مبارک سے کی نظر نہ آنے والی چیز کو رفع فر مارہ ہے تھے ، میں نے عرض کیا: حضور! آپ کس چیز کو ہٹار ہے ہیں؟ آپ نے فر مایا: میرے پاس ابھی دنیا آئی تھی ، میں نے اسے کہا: مجھ سے دور رہو! وہ لوٹ گئی ہے اور یہ کہہ گئی ہے کہ آپ نے مجھ سے میرے پاس ابھی دنیا آئی تھی ، میں نے اسے کہا: مجھ سے دور رہو! وہ لوٹ گئی ہے اور یہ کہہ گئی ہے کہ آپ نے مجھ سے کنارہ شی فر مالی ہے گر بعد میں آنے والے ایسانہیں کر سکیس گے۔ (۱)

فر مانِ نبوی ہے کہ ایسے انسان پر انتہائی تعجب ہے جوبہشت پر ایمان رکھتے ہوئے دنیا کے حصول میں سرگرم ہے۔

مروی ہے: حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ایک نزیلہ (کوڑے کے ڈھیر) کے قریب کھڑ ہے ہوئے اور فر مایا: دنیا کی طرف آئے، آپ نے ایک پرانا چیتھڑ ااور بوسیدہ ہڑی دست مبارک میں لے کر فر مایا: بید نیا ہے۔ (3) اس تمثیل سے اس امر کی طرف اشارہ تھا کہ دنیا کی زینت اس چیتھڑ ہے کی طرح پرانی ہوجائے گی اور چلتے پھرتے انسان کی ہڈیاں اس ہڈی کی طرح بوسیدہ ہوجائیں گی۔

آئی ہے بے حیام اایمان اوٹے دنیا کھڑی ہے دولت دنیا گئے ہوئے

..... شعب الايمان، الحادي والسبعون...الخ ، باب في الزهد...الخ ،٣٤٣/٧، الحديث ١٠٥١٨

2شعب الايمان، الحادي والسبعون...الخ ، باب في الزهد...الخ ، ٧/ ٣٤٨، الحديث ١٠٥٣٩

الحديث ١٠٤٧١، الحادى والسبعون...الخ، باب في الزهد...الخ، ٧/ ٣٢٧، الحديث ١٠٤٧١

فرمانِ نبوی ہے: دنیاسبز (خوش آئند) اورشیریں ہے، الله تعالی نے تہمیں اپناخلیفہ بنا کر بھیجا ہے اور وہ تمہارے اعمال سے باخبر ہے۔ بنی اسرائیل پر جب دنیا فراخ کردی گئی تو انہوں نے اپنی تمام تر کوششیں زیورات، کپڑوں، عورتوں اور عطریات کے لئے وقف کردی تھیں (اوران کا انجام تم نے دیکھ لیا)۔ (1)

حضرت عیسیٰ عَلیُه السَّلام کا فرمان ہے کہ دنیا کو معبود بنا کراس کے ہندے نہ بن جاؤ ، اپناخز انداس ذات کے یہاں جمع کرو جوکسی کی کمائی کوضائع نہیں کرتا ، دنیاوی خز انوں کے لئے تو خوف ہلاکت ہوتا ہے مگر جس کے خزانے خداکے یہاں جمع ہوں وہ بھی تباہ نہیں ہوں گے۔

آپ نے مزید فرمایا: اے میرے حواریو! میں نے دنیا کو اوند ہے منہ ڈالدیا ہے تم میرے بعد کہیں اسے گلے نہ لگالینا، دنیا کی سب سے بڑی بڑائی یہ ہے کہ اس میں آ دمی الله کا نافر مان بن جاتا ہے اور اسے چھوڑے بغیر آخرت کی بھلائی ناممکن ہے دنیا میں دلچین نہ لو، اسے عبرت کی نگاہ سے دیکھواور باخبرر ہو، دنیا کی محبت ہر برائی کی اصل ہے اور ایک لحمد کی خواہشِ نفسانی اپنے پیچھے طویل پشیمانی چھوڑ جاتی ہے اور فرمایا کہ دنیا تمہارے لئے سواری بنائی گئی اور تم اس کی بشت پر سوار ہو گئے تو اب بادشاہ اور عور تیں تمہیں اس سے نہاتار دیں، رہابا دشاہ وں کا معاملہ تو ان سے دنیا کی وجہ سے مت جھڑو، وہ وہ تمہاری دنیا اور تمہاری پسماندہ چیزوں کو تمہیں واپس نہ کریں گے، رہی عور تیں تو ان کے صوم وصلو ہ سے ہوشیار رہو۔

مزید فرمایا: دنیاطالب بھی ہے اور مطلوب بھی ہے، جوخوشنو دی خدا کا طالب ہوتا ہے دنیااس کی طالب رہتی ہے اور اسے رزق بہم پہنچاتی ہے اور جو دنیا کا طالب ہوتا ہے اسے آخرت طلب کرتی ہے اور موت اسے گدی سے پکڑ کر لے جاتی ہے۔

حضرت مُوی بن یَبار رَضِیَ اللهٔ عَنُه ہے مروی ہے: حضور صَلَّی اللهٔ عَنَهِ وَسَلَّم نے فر مایا کہ الله تعالی کواپی مخلوق میں سب سے زیادہ ناپبندیمی و نیا ہے ،الله نے اسے جب سے پیدا فر مایا ہے بھی نظرِ رحمت سے نہیں ویکھا۔ (2) میں سب سے زیادہ ناپبندیمی و نیا ہے ،الله نے اسے جب سے بیدا فر مایا ہے بھی نظرِ رحمت سے نہیں ویکھا۔ (2) میں سب سے دوایت ہے کہ حضرت سلیمان بن داؤد عَلَیْهِ مَا انسّادہ ایک مرتبہ اپنے تخت پر کہیں جارہے تھے، پرندے آپ پرسایہ

^{1}موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذم الدنيا ،٥/٨٠، الحديث ٢٠

^{2} شعب الايمان ، الحادي والسبعون ... الخ، باب في الزهد ... الخ، ٣٣٨/٧ الحديث ٥٠٥٠

کررہے تھے،انسان اور جنات آپ کے دائیں بائیں بیٹھے تھے، بنی اسرائیل کے ایک عابد نے دیکھ کر کہا:اے سلیمان! بخدا!الله نے آپ کوملک عظیم دیا ہے۔آپ نے بین کر فر مایا کہ بندہ مومن کے نامہ اعمال میں درج صرف ایک شبیح میری تمام سلطنت سے بہتر ہے کیونکہ بیسب فانی ہے مگر شبیح باقی رہنے والی ہے۔

فرمانِ نبوی ہے بتمہیں مال کی کثرت نے مشغول رکھا ہے، انسان کہتا ہے میرا مال میرا مال، مگراپنے مال میں، جو تو نے کھایا وہ ختم ہوگیا، جو پہناوہ پرانا ہوگیا، جوراہِ خدامیں خرچ کیا وہ کیا انہا

فر مانِ نبوی ہے:'' دنیاس کا گھر ہے جس کا کوئی گھر نہ ہو،اس کا مال ہے جس کا کوئی مال نہ ہو، ہیوتو ف ہی اسے جع کرتا ہے، بینلم ہی اس کے لئے جھگڑتا ہے ناسمجھ ہی اس کے لئے دشمنی اور حسد کرتا ہے اور بے یقین ہی اس کے حصول کی کوشش کرتا ہے۔''(2)

فرمانِ نبوی ہے: جس کی سب سے بڑی تمنا حصولِ ونیا ہے، الله تعالیٰ کے یہاں اس کا کوئی حصنہیں ہے، الله تعالیٰ ایسے کے دل پرچار چیز ول کو مسلط کردیتا ہے، دائی مشغولیت، دائی فقر اور بھی نہ پوری ہونے والی آرز و کیں۔ (3) حضرت ابو ہر پرورَحِی الله عنه سے مروی ہے: مجھ سے حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم میرا ہاتھ پکڑ کر مجھے مدینہ کی ایک وادی میں لے دکھلا وک ؟ میں نے عرض کی: ہاں یارسول الله! آپ ہے صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم میرا ہاتھ پکڑ کر مجھے مدینہ کی ایک وادی میں لے گئے جہال کوڑ اپڑا تھا اور اس میں گندگی ، چیتھڑ ہے اور انسان کے سرکی بوسیدہ ہڈیاں تھیں۔ آپ صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: '' اے ابو ہر پرہ! بیسر بھی تمہارے سرول کی طرح حریص تھے اور ان میں تمہاری طرح بہت آرز و میں تھی مگر آج یہ غالی ہڈیاں بن چی ہیں جن پر کھال بھی نہیں رہی اور عنقریب بیٹی ہوجا کیں گے، یہ گندگی ان کے کھانوں کے رنگ ہیں جنہیں انہوں نے کما کما کر کھایا، آج لوگ ان سے منہ پھیر کرگز رتے ہیں، یہ پر انے چیتھڑ ہے جو بھی ان کے ملبوسات جنہیں اٹرائے پھرتی ہے اور بیان کی سوار یوں کی ہڈیاں ہیں جن پر سوار ہوکروہ شہر شہر گھو ماکرتے تھے، جو اس در دناک انجام پر رونا پیند کرتا ہوا سے رونا چا ہے '' حضرت ابو ہر یہ وَجِنی انله عَنْهُ فرماتے ہیں: پھر میں اور حضور صَلَّی در دناک انجام پر رونا پیند کرتا ہوا سے رونا چا ہے '' حضرت ابو ہر یہ وَجِنی انله عَنْهُ فرماتے ہیں: پھر میں اور حضور صَلَّی در دناک انجام پر رونا پیند کرتا ہوا سے رونا چا ہے '' حضرت ابو ہر یہ وَجِنی انله عَنْهُ فرماتے ہیں: پھر میں اور حضور صَلَّی

❶مسلم، كتاب الزهد والرقاق، ص ١٥٨٢، الحديث٣_ (٢٩٥٨) والورع لابن حنبل، باب ذكر النعيم، ص١٨٨٠

^{2} شعب الايمان ، الحادي والسبعون .. الخ ، باب في الزهد .. الخ ٧/٣٧٥، الحديث ١٠٦٣٨

^{3} كنز العمال، كتاب الاخلاق، باب الزهد، ٢/٢ الجزء الثالث، الحديث ٦٢٦٩

(1) اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بَهِت روتے _

روایت ہے کہ جب آ دم عَلیْهِ السَّلام کوز مین پراتارا گیا توالله تعالی نے فرمایا: تابی کے لئے عمارتیں بناؤاورموت کے لئے بیرا کرو۔

حضرتِ داوُ دبن ہلال دَّ حَمَّةُ اللّهِ عَلَيْه سے مروی ہے کہ حضرتِ ابراہیم عَلَيْهِ السَّلام کے حیفوں میں مَرْقُوم ہے کہ اے دنیا! تو '' نیکوکاروں'' کی نظر میں اپنی تمام تر زیب وزینت کے باوجود بے وقار ہے، میں نے ان کے دلوں میں تیری عداوت اور تجھ سے بنو بھی رکھ دی ہے، میں نے تیجھ جیسی بے وقار کوئی اور چیز نہیں پیدا کی ، تیری ہرا دا جھوٹی اور فائی ہے، میں نے تیری پیدائش کے وقت فیصلہ فر ما دیا تھا کہ نہ تو کسی کے پاس ہمیشہ رہے گی اور نہ ہی وہ ہمیشہ رہے گا، فائی ہے، میں نے تیری پیدائش کے وقت فیصلہ فر ما دیا تھا کہ نہ تو کسی کے پاس ہمیشہ رہے گی اور نہ ہی وہ ہمیشہ رہے گا، اگر چہ تجھے پانے والا کتنا ہی بخل کرتا رہے ، نیکوکاروں کے لئے میری بشارت ہے ، جن کے دل میری رضا پر راضی ہیں اور جن کے دل صدق واستقامت کا گہوارہ ہیں ، ان کے لئے خوشخری ہے کہ جب وہ قبروں سے گروہ دُرگر وہ اٹھیں گے تو میں انہیں میہ جزاووں گا کہ ان کے آگور ہوگا اور فر شتے انہیں گھیرے ہوئے ان کی تمناوک کے مرکز یعنی بہشت میں پہنچا ئیں گے۔

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كافر مان ہے: دنیا زمین وآسان كے درمیان مُعَلَّق ہے۔ اسے الله تعالیٰ نے جب سے پیدا فر مایا ہے بھی نَظَرِر حمت سے نہیں دیکھا، قیامت كے دن دنیا بارگا و خداوندی میں عرض كر ہے گی: مجھے اپنے دوستوں كے مقدر میں لكھ دے۔ رب فر مائے گا: میں دنیا میں اس ملاپ كونا ببند كرتا تھا اور آج بھی اسے نا ببند كرتا ہوں۔ (2)

مروی ہے کہ جب حضرتِ آ دم عَدَیْدِ السَّلام نے ممنوع شجر سے کھالیا تو انہیں پیٹ میں گرانی محسوس ہوئی حالانکہ جنت کی نعمتوں میں یہ بات نہیں ہے۔حضرتِ آ دم عَدَیْهِ السَّلام قضائے حاجت کے لئے چاروں طرف جیران پھررہے سے کہ اللّٰہ تعالیٰ کے تھم سے فرشتہ حاضر ہوااور کہنے لگا: آ دم! جیران کیوں پھررہے ہو؟ آپ نے فرمایا: میں اپنے پیٹ

^{●}المستطرف لشهاب الدين،الباب الثالث والثمانون فيذكرالدنيا واحوالها...الخ ،٢/٢ والبحر المديد لابن عجيبة ، ٢٣٧/٤

^{2}قوت القلوب ، ٧/١، و طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٣٤٥/٦ مختصرا

کی گرانی ختم کرنا چاہتا ہوں،فرشتہ بولا:اس گرانی کوکہاں ڈالو گے؟ جنت کے فرش پر بختوں پر، درختوں کے سابی میں، جنت کی نہروں کے کناروں پر؟ جنت میں ان چیزوں کی کوئی جگہنہیں ہے،آ پ دنیا میں چلے جا کیں۔

فرمانِ نبی صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے کہ قیامت کے دن ایسے لوگ آئیں گے جن کے اعمالِ حَسَنهَ تبامَہ کے بہاڑوں کے برابر ہوں گے ، مگر انہیں جہنم کی طرف لیجایا جائے گا۔ صحابہ کرام عَلَیْهِمُ الرِّصْوَان نے بوچھا: وہ نمازروزہ اداکرنے والے ہوں گے ، مگر اور وہ دنیا کے دِلْدادہ ہوں ہوں گے ؟ فرمایا: ہاں! وہ روزہ داراور رات کا ایک حصی عبادت میں گزارنے والے ہوں گے مگر وہ دنیا کے دِلْدادہ ہوں گے ۔ (1)

فرمانِ نبی صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے: بندہ مومن دوخوفوں کے درمیان رہتا ہے، اعمالِ گزشتہ برفکر مندر ہتا ہے اور آنے والے وقت کے لئے پریثان رہتا ہے کہ الله تعالیٰ کی قضاء وقد رمیں میرے لئے کیا مرقوم ہے۔ بندہ اپنی زندگی سے اپنے لئے بھلائی پیدا کرے، اپنی دنیا سے آخرت کو سنوارے، حیات سے موت کو اور جوانی سے بڑھا پے کو آراستہ کرے کیونکہ دنیا تمہارے لئے اور تم آخرت کے لئے بنائے گئے ہو، رہِ ذوالحدل کی قشم! جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے، موت کے بعد بندہ کے لئے اور کوئی تکلیف دہ چیز نہیں ہے اور دنیا کے بعد بہشت یا دوز خ کے سواکوئی اور ٹھکانانہیں ہے۔ (2)

حضرت ِعیسیٰ عَلَیْهِ السَّلام کا فرمان ہے کہ جس طرح ایک برتن میں آ گاور پانی جمع نہیں ہو سکتے اسی طرح ایک دل میں دنیااور آخرت کی محبت جمع نہیں ہوسکتی۔

مروی ہے کہ حضرتِ جبریل عَلیْهِ السَّلام نے نوح عَلیْهِ السَّلام سے پوچھا کہ آپ نے تو بہت طویل عمر پائی ہے، میفر ماکیں کہ آپ نے دودروازے ہیں، ایک دروازے میں کہ آپ نے دوازے سے داخل ہوااوردوسرے دروازے سے میں نکل گیا۔''

حضرتِ عِيسى عَلَيْهِ السَّلام سے كہا كياكة باين رہائش كے لئے گھركيون بيس بناتے؟ آپ نے فرمايا: كرشته

الحديث ١٣١ وحلية الاولياء، ١٨٥٥ ، الحديث ١٨٧٥ و الزهد وصفت الزاهدين لابن عربي، ١٩/١ ، الحديث ١٣١ وحلية الاولياء،
 سالم مولى ابي حذيفة ، ٢٣٣/١ ، الحديث ٥٧٥

2 شعب الايمان ، الحادي والسبعون...الخ، باب في الزهد...الخ ، ٢٦٠/٧، الحديث ١٠٥٨١

لوگوں کے بیر پرانے مکان میری رہائش کے لئے بہت ہیں۔

فر مانِ نبوی ہے کہ دنیا سے ڈرو، یہ ہاروت و ماروت سے بھی زیادہ جادوگر ہے۔ ⁽¹⁾

حضرت حسن دخی الله عنه سے مروی ہے کہ حضور صلّی الله عَلیه وَسَلَم صحابہ کرام میں تشریف لائے اور فرمایا: کون ہے جوال کے بعد اللہ تعالی سے اندھے بن کانہیں بلکہ بصارت کا سوال کرتا ہے؟ با خبر ہوجا وًا جود نیا کی طرف ماکل ہوگیا اور اس سے جوال کہ تعالی سے انتہا امید میں رکھنے لگا اس کا دل اندھا ہوگیا اور جس نے دنیا سے کنارہ کشی کرلی اور اس سے کوئی مخصوص امید میں نہر کھیں ،الله تعالی نے اسے نو ربصیرت عطافر ما دیا، وہ تعلیم کے بغیر علم اور تلاش کے بغیر مدایت یاب ہوگیا۔ تمہارے بعد ایک قوم آئے گی جن کی سلطنت کی بنیا قبل اور جورو جفا پر ہوگی، جن کی امیری وَحُولُ بُل وَتَكْبر سے بھر پور ہوگی اور نفسانی خواہشات کے سوا نہیں کسی چیز سے محبت نہیں ہوگی ۔ خبر دارتم میں سے کوئی اگر وہ وقت پائے اور مالداری کی قوت رکھتے ہوئے فقر پر راضی ہوجائے ، محبت پاسکنے کے باو جودان سے عداوت پر راضی رہے اور رضائے الہی میں عزت حاصل کر سکنے کے باوجود تواضع سے زندگی بسر کر سے تواللہ تعالی اسے بچاس صدیقوں کا درجہ دےگا۔ (2)

مروی ہے کہ ایک مرتبہ حضرت عیسیٰ عَلَیْہِ السَّلام سخت بارش میں گھر گئے، آپ کو پناہ تلاش کرتے ہوئے ایک خیمہ نظر آیا، جب قریب پہنچ تو دیکھا کہ اس میں ایک عورت بیٹھی ہوئی ہے، واپس لوٹے تو پہاڑ کا ایک غار نظر آیا، وہاں جاکر دیکھا تو ایک شیر کھڑا تھا۔ آپ نے اس پر ہاتھ رکھا اور عرض کی: اے ربِ دوالہ جلال! تو نے ہر چیز کا ٹھکا نا بنایا ہے، مگر میر اکوئی ٹھکا نا نہیں ہے۔ رب تعالی نے فر مایا: تیرا ٹھکا نا میر کی رحمت ہے، میں قیامت کے دن اپنے وَشتِ قدرت سے بیدا کردہ سوحوروں سے تیرا عقد کروں گا اور تیری دعوت ولیمہ چار ہزار سال جاری رہے گی، ہر سال کے دن دنیا کی زندگی کے برابر ہوں گے اور ندا کرنے والا میر نے فر مان سے ندا کرے گا: اے دنیا سے کنارہ کشی کرنے والو! آؤاور زاہدا عظم عیسیٰ بن مریم (عَلَیْہِ السَّلام) کی شادی دیکھو۔

حضرت عیسیٰ عَلیُه السَّلام کا فرمان ہے کہ طالب دنیا کے لئے ہلاکت ہو، وہ دنیا کو کیسے چھوڑ کرمریگا جس کی ساری توجہ، اعتماداور بھروسہ اسی دنیا پر ہے، بیلوگ اپنی نالپندیدہ چیز (موت) کا کیسے مقابلہ کریں گے جو آنہیں محبوب چیزوں

^{🚹} شعب الايمان ، الحادي والسبعون .. . الخ، باب في الزهد . . . الخ ، ٣٣٩/٧، الحديث ٤٠٥٠٤

^{2} شعب الايمان ، الحادي والسبعون...الخ، باب في الزهد...الخ ،٧/ ٣٦٠ الحديث ١٠٥٨٢

سے جدا کر دے گی اور جس کے بارے میں ان کو پہلے سے ہی بتادیا گیا تھا، ہلاک ہووہ شخص جس کی تمام تر کوششیں حصولِ دنیا کے لئے ہیں، جس کے اعمال گنا ہوں پر مشتمل ہیں وہ کل قیامت کے دن اپنے گنا ہوں سے کیسے رہائی یائے گا؟

الله تعالی نے حضرت موسی عَلیْهِ السَّادم کی طرف وحی کی: اے موسی ! تمہارا ظالموں کے گھر سے کیا تعلق؟ تم اپنی توجہا ورتعلق اس دنیا سے جو بہت برا گھر ہے، ہٹالو، بیصرف اسی کے لئے اچھی ہے جواس میں رہ کراپنے خالق کوراضی کر لیتا ہے، اے موسیٰ! میں ہر مظلوم کو ظالم سے اس کاحق دلاؤ نگا۔

مروی ہے: حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے حضرتِ ابوعُبَيدَه بن جَرَّاح دَضِى الله عَنْه کو بحرین بھیجا، وہ وہاں ہے مال ودولت لے کرآئے، جب انصار کوان کی آمد کی اطلاع ملی تو وہ سب ضبح کی نماز میں حاضر ہوئے، نماز سے فارغ ہوکر حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے انہیں دیکھا تو حضور نے مسکر اکر فر مایا: شاید تہمیں ابوعبیدہ کے مال لے کرآنے کی خبر مل گئ ہے۔ انہوں نے عرض کی: جی ہاں! آپ نے فر مایا: 'دختہمیں مبارک ہو! رہ دوالہ حدل کی قشم! مجھے تمہارے بارے میں فقر و فاقہ کا خوف نہیں ہے بلکہ میں اس وقت سے ڈرتا ہوں جب تم پر پہلی اُمتوں کی طرح دنیا فراخ ہوجائے گی اور تم اس میں پہلی امتوں کی طرح مشغول ہوکر ہلاک ہوجاؤگے۔ (۱)

حضرت ابوسعید خُدْرِی رَضِی اللهُ عَنْه سے مروی ہے: حضور صَلَی اللهُ عَلَیْه وَسَلَّم نے فرمایا: ''میں اکثر اس بات کا اندیشہ کرتا ہوں جب الله تعالیٰ تم پرید دنیا اپنی تمام فتنہ سامانیوں کے ساتھ فراخ کردےگا۔''(2)

فرمانِ نبوی ہے: اپنے دلوں کو دنیا کی یاد میں نہ لگاؤ۔⁽³⁾ آپ نے دنیا کی یاد سے منع کر دیا ہے چہ جائیکہ انسان اپنی تمام تر توجہاتی پر مرکوز کردے۔

^{1}بخارى، كتاب الجزية والموادعة ، باب الجزية والموادعة...الخ ٣٦٣/٢، الحديث ٣١٥٨

^{2}بخارى، كتاب الرقاق، باب مايحذرمن ...الخ، ٢٢٦/٤ الحديث ٦٤٢٧

^{3} عب الايمان، الحادي والسبعون...الخ، باب في الزهد...الخ ٧/ ٣٦١/١ الحديث ١٠٥٨٤

حضرت عَمَّار بن سَعِيُد دَضِيَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے کہ حضرت عِيسلى عَلَيْهِ السَّلام کا ايک اليي بستى ہے گز رہوا جس کے مكين مختلف اطراف اور راستوں برمردہ بڑے ہوئے تھے۔آپ نے اپنے حوار بول سے فرمایا: بیلوگ الله تعالیٰ کی ناراضکی کا شکار ہیں ورنہانہیں ضرور دفن کیا جا تا۔حوار یوں نے عرض کی: ہم جا ہتے ہیں کہ ہمیں ان کے حالات کا پیۃ چل جائے، حضرت عيسلى عَلَيْهِ السَّلام نے رب تعالیٰ سے دعا مانگی تو ربّ ذوالجلال نے فر مایا: جب رات آ جائے تو ان سے یو چھنا، بیر ا بني بلاكت كاسبب بتائيس كـ جبرات موئى توحضرت عيسى عَليه السَّكام في كها: السِّستى والو! ايك آواز آئى: لَبَّيْك يئا دُوْحُ الله ! آپ نے بوچھا جمہاری بیرحالت کیوں ہے اوراس عذاب کے نزول کا باعث کیا ہے؟ جواب آیا: ہم نے عافیت کی زندگی گزاری اورجہنم کے مستحق قراریائے ،اس لئے کہ ہم دنیا سے محبت رکھتے تھے اور گنہ گاروں کی پیروی کیا كرتے تھے۔ آپ نے یوچھا جمہیں دنیا سے کیسی محبت تھی؟ جواب آیا جیسے ماں کو بحبہ سے محبت ہوتی ہے، جب ہمارے یاس دنیا آ جاتی ہم نہایت مسرور ہوتے اور جب دنیا چلی جاتی تو ہم نہایت عملین ہوجاتے _ آ پ نے فر مایا: کیا وجہ ہے کے صرف تو ہی جواب دے رہاہے اور تیرے باقی ساتھی خاموش ہیں؟ جواب ملا: طاقتور پُر ہیب فرشتوں نے ان کوآگ کی لگامیں ڈالی ہوئی ہیں۔آپ نے فر مایا: پھرتو کیسے جواب دے رہاہے؟ جواب ملا: میں ان میں رہتا ضرورتھا مگران جیسی بدا عمالیان نہیں کرتا تھا، جب عذابِ الٰہی آیا تو میں بھی اس کی لیسٹ میں آگیا، اب میں جہنم کے کنارے پر لاکا ہوا ہوں، کیاخبراس سے نجات یا تاہوں یااس میں گرجا تاہوں ۔حضرت عیسلی عَلَیْہِ السَّلام نے حواریوں کوفر مایا: نمک سے بھو کی روٹی کھانا، پھٹا پرانا کپڑا پہننااورکوڑے کے ڈھیر پرسوجانا، دنیااورآ خرت کی بھلائی کے لئے بہت عمدہ ہے۔ حضرت انس رَضِي الله عنه عدم وى بك حضور صلى الله عكيه وسلم كعضيانا مى اولان هي جوتيز رفارى ميل ب سے عدہ تھی ،ایک دفعہ ایک بَدوی کی اونٹنی اس ہے آ گے نکل گئی جس کی وجہ سے صحابہ کو بہت افسوس ہوا ، آ ب نے فر مایا: بیرقانون فندرت ہے کہ ہر کمال کوز وال نصیب ہوتا ہے۔⁽¹⁾

حضرت عيسى عَلَيْهِ السَّلام في فرمايا: ' كون ہے جوسمندركي البرول برعمارت بنائے! بيدونيا اسى طرح ہے تم اسے

^{1}بخارى، كتاب الرقاق، باب التواضع، ٤ /٢٤٨، الحديث ٢٥٠١

مكاشفة القلوب }

جائے قرار نہ بناؤ۔

حضرتِ عِيسلى عَلَيْهِ السَّلام سے کہا گیا: ہمیں ایک ایسی چیز بتلایئے جس کے سبب اللّٰہ تعالیٰ ہمیں محبوب بنالے، فرمایا: تم دنیا سے عداوت رکھو، اللّٰہ تعالیٰ تمہیں محبوب رکھے گا۔

حضرتِ ابوالدرداء َ وَضِیَ اللّٰهُ عَنُه ہے مروی ہے؛ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جو کچھ میں جانتا ہوں اگرتم جانتے تو کم بینتے اور زیادہ روتے اور دنیا پر آخرت کوتر جیج دیتے۔ ⁽¹⁾

حضرت ابوالدر داءرَ ضِيَ اللهُ عَنْه كامسلمانوں سے خطاب: 🎖

حضرت ابوالدرداءرَضِیَ اللهٔ عَنهُ نے فر مایا: اے لوگو! جو پھے میں جانتا ہوں اگرتم جانتے تو آبادی چھوڑ کرویران ٹیلوں کی طرف نکل جاتے اوراپنے کوریاضت میں مشغول کرتے، گریدوزاری کرتے اور ضروری سامان کے علاوہ تمام مال ومتاع چھوڑ دیتے ، لیکن دنیا تمہارے اعمال کی مالک بن گئی ہے اور دنیا کی امیدوں نے تمہارے دل سے آخرت کی یادمٹا کررکھ دی ہے اور تم (اس کے لئے) جاہلوں کی طرح سرگرداں ہو، تم میں ہے بعض لوگ جانوروں سے بھی بدتر ہیں، جواپنی خواہشات میں اندھے بن کرانجام کی فکرنہیں کرتے ، تم سب" دینی بھائی" ہوتے ہوئے ایک دوسرے سے محبت نہیں کرتے ہو، تمہارے ذبی بطان نے تمہارے راستے جداکر دیئے ہیں، اگرتم صراطِ مستقیم پر چلتے تو ضرور با ہم محبت کرتے ، تم دنیاوی المور میں تو با ہم مشورے کرتے ہو گرآ خرت کے المور میں قرابیں کرتے اور تم ہیں دکتے اور تمہیں آخرت کی بھلائی کی طرف لیجانا مشورہ نہیں کرتے اور تم ہیں ذات سے محبت نہیں رکھتے جو تمہیں محبوب رکھتا ہے اور تمہیں آخرت کی بھلائی کی طرف لیجانا علی ہیں ہوتے ہو ہو ہیں تو بات ہے۔

یہ سباس لئے ہے کہ تمہارے دلوں میں ایمان کمزور پڑچکا ہے، اگرتم آخرت کی بھلائی اور برائی پریفین رکھتے جیسے دنیاوی اون پخ نیچ پریفین رکھتے ہوتو تم دنیا پر آخرت کوتر جیج دیتے کیونکہ آخرت تمہارے اعمال کی مالک ہے۔ اگرتم میکوکہ ہم پر دنیا کی محبت غالب ہے تو بہتمہارا عُذرِ آنگ ہے کیونکہ تم مقررہ میعاد پر آنے والی آخرت پر اس دنیا کوتر جیج دے رہے ہوجنہیں تم بھی بھی نہیں پاسکتے ہم بڑے نا ہنجار دے رہے ہواور اپنے جسم کوان کا موں سے دکھ درد جھیلنے پر مجبور کر رہے ہوجنہیں تم بھی بھی نہیں پاسکتے ہم بڑے نا ہنجار

^{1}المستدرك للحاكم ، كتاب الرقاق، باب تمثيل آخر للدنيا، ٥/٥٥)، الحديث ٧٩٧٥

ہوہتم ایمان کی حقیقت کو پیچانے بی نہیں۔ اگر تمہیں محمد صلّی الله عَلَیْهِ وَسَلّم کی لائی ہوئی کتاب (قرآنِ مجید) میں شک ہے تو ہمارے پاس آ وَ اہم تہماری ایسے نور کی طرف راہنمائی کرینگے جس سے تمہارے دل مطمئن ہوجا کیں، بخدا اہم کم عقلی کا بہانہ بنا کرجان نہیں چھڑ اسکتے کیونکہ دنیاوی امور میں تم صائب الرَّائے ہواور انہیں بخوبی سرانجام دے رہے ہو۔ تہمیں کیا ہوگیا ہے! تم معمولی ہی دنیا پرخوش ہوجاتے ہواور معمولی سے دنیاوی نقصان پر اِنتہائی رنجیدہ ہوجاتے ہو، تہمارے چرے اور زبانیں دکھری مُظہر ہیں اور تم اسے مصیبت کہتے ہواور تم دنیا پر گنا ہوں سے آلودہ زندگی بسر کرتے ہواور دین چرے اور زبانیں دکھری مُظہر ہیں اور تم اسے مصیبت کہتے ہواور تم دنیا پر گنا ہوں سے آلودہ زندگی بسر کرتے ہواور دین کے اکثر احکامات کونظر اُنداز کر دیتے ہواور اس سے نہ تہمارے چروں پرشکن آتی ہے اور نہی تہماری حالت میں کوئی کو اپنی بدا ہوتا ہے ۔ ایسا معلوم ہوتا ہے جسے الله تعالی تم سے بری ہو، تم باہم محبت رکھتے ہو، مگر الله تعالی کے حضور حاضری کو اپنی بدا ہوتا ہے ۔ ایسا معلوم ہوتا ہے جسے الله تعالی تم اس کے اور اُم میدوں کے پیچے دوڑ نے لگے اور موت کا انظار ختم کر دیا۔ میں الله تعالی سے دعاما نگا ہوں : وہ مجھے تم سے علی کی بخشے اور مجھے ہو، کی خدمت میں پہنچا دے ۔ اگر تم میں نہنے دیلے میں الله تعالی سے دعاما نگا ہوں : وہ مجھے تم تا چکا، الله تعالی سے نعموں کا سوال کرو، بہت آسانی سے پالو گے، میں اپنے میں نئے اور تم ہارے کے الله سے دعاما نگا ہوں ۔

حضرت عیسی عَلیّهِ السَّلام نے اپنے حوار یول سے فر مایا: جس طرح دُنیا داردُنیا کی جاہت میں معمولی سے دین پر راضی ہیں تم بھی دین کی سلامتی کے لئے معمولی ہی دنیا پر راضی ہوجاؤ۔

اسی موضوع پرکسی شاعرنے کہاہے:۔

وما اراهم رضوا في العيش بالدون

ارى رجالا بادنى الدين قد قنعوا

استغنى الملوك بدنياهم عن الدين

فاستغن با لدين عن دنيا الملوك كما

﴿1﴾میں نے لوگوں کو دیکھاہے وہ تھوڑے سے دین پر راضی ہوگئے مگر تھوڑی سی دنیا پر راضی نہیں ہوئے۔

﴿2﴾جسطرح دنیاداردنیا کے بدلے دین سے بے نیاز ہو گئے ہیں تو بھی دین کے بدلے دنیا سے بے نیاز ہوجا۔

حضرت عیسلی عَلَیْهِ السَّلام نے فرمایا: اے دنیا کوسونے جا ندی کے لئے طلب کرنے والے! ترک دنیا بہت عمدہ چیز

-4

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: میرے بعدتم پر دنیا آئے گی اور تبہارے ایمان کوایسے کھا جائی جیسے آگ لکڑیوں کو کھا جاتی ہے۔

الله تعالی نے حضرتِ موی عَلَیْهِ السَّلام کی طرف وحی کی: اے موی ! دنیا کی محبت میں مشغول نہ ہونا، میری بارگاہ میں اس سے بڑا کوئی گناہ نہیں ہے۔

روایت ہے کہ حضرتِ موکی عَلیْهِ السَّلام ایک روتے ہوئے تخص کے پاس سے گزرے، جب آپ واپس ہوئے تو وہ شخص ویسے ہی رور ہاتھا، موکی عَلیْهِ السَّلام نے باری تعالی سے عرض کیا: یاالله ؛ تیرابندہ تیر بے خوف سے رور ہاہے، الله تعالی نے فر مایا: موکی ! اگر آنسو کے راستے اس کا د ماغ باہر نکل آئے اور اس کے اسھے ہوئے ہاتھوٹوٹ جا کیں تب بھی میں اسے نہیں بخشوں گا؛ یہ دنیا سے محبت رکھتا ہے۔

حضرت على رَضِيَ اللهُ عَنْه كا قول ہے كہ جس شخص ميں جيوعا دتيں پائي جاتى ہيں وہ نارِجہنم سے دوراور جنت كامطلوب ہے:

- ﴿1﴾ الله كو بهجان كراس كي عبادت كي _
- 2) شیطان کو پہان کراس کی مخالفت کی۔
 - ﴿3﴾ حق كو بيجيان كراس كي اتباع كي _
- ﴿4﴾ باطل کو پیجیان کراس سے اجتناب کیا۔
 - ﴿5﴾.....ونيا كويبچيان كراسے ترك كرديا اور
 - ﴿6﴾ آخرت كويبجيان كراس كاطلبكارر ما-

حضرتِ حسن رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ کا قول ہے کہ اللّٰه تعالیٰ نے ان لوگوں پررخم فر مایا جن کے پاس د نیاا مانت کے طور پر آئی اورانہوں نے اسے خیانت کے بغیرلوٹا دیااوراللّٰہ کی بارگاہ میں بہت سِبُک بارروانہ ہوئے۔

مزید فرمایا: جو تخیے دین کی طرف رغبت دلائے اسے قبول کرلے اور جو تخیے دنیا کی طرف رغبت دلائے ،اسے اس کے گلے میں ڈال دے۔(قبول نہ کر)

Z

حضرت ِلقمان َ حُمَةُ اللهِ عَلَيْه نے اپنے بیٹے کو وصیت کی کہ یہ دنیا بہت گہراسمندرہے،اس میں بہت لوگ غرق ہوگئے بیں ،اس سے گزرنے کے لئے خوف ِخدا کی کشتی بنا، جس میں بھراؤا یمانِ خداوندی کا ہواوراسے تؤکُّل کے راستوں پر چلاتا کہ نجات یا جائے ور نہ نجات کی کوئی صورت نہیں ہے۔

حضرت فُضَيْل رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كه ميں اس ارشا دربانى:

"بلاشبہ ہم نے زمین کی چیز وں کوزمین کے لیے زینت بنادیا ہے تا کہ آ زما ئیں کون اچھ عمل کرتا ہے اور ہم ان چیز وں کو پنجر نا قابل زراعت بنانے والے میں۔"⁽¹⁾

میں بہت غور وفکر کرتا ہوں۔ ایک علیم کا قول ہے کہ تجھے دنیا میں جو پچھ ملا ہے تجھ سے پہلے بھی پچھ لوگ اس کے مالک بنے تھے اور تیرے بعد بھی اور لوگ اس کے مالک بنیں گے، تیرے لئے دنیا میں صبح وشام کی روٹی ہے، اس روٹی کے لئے خود کو ہلاکت میں نہ ڈال، دنیا سے روز ہ رکھ اور آخرت پر افطار کر، دنیا کا مال خواہشات ہیں اور ان کا منافع نارِجہنم ہے۔

کسی را ہب سے زمانہ کے متعلق بو چھا گیا،اس نے جواب دیا: یہ جسموں کو پرانا کرتا ہے،امیدیں بڑھا تا ہے، موت کو قریب کرتا ہے اور آرز ووک کو دور کر دیتا ہے۔ دنیا والوں کے متعلق بو چھا گیا تواس نے کہا: جس نے دنیا کو پالیا وہ دکھ میں مبتلا ہوا اور جس نے اسے نہ پایا وہ مصیبت میں گھر گیا اسی لئے کہا گیا ہے: _

ومن يحمد لدنيا بعيش يسره فسوف لعمرى عن قليل يلومها

اذا ادبرت كانت على المرء حسرة وان اقبلت كانت كثيرة همومها

﴿1﴾ جود نیاوی عیش وعشرت کے سبب اس کی تعریف کرتا ہے، مجھے زندگی کی قسم عنقریب وہ اسے برا بھلا کہے گا۔

﴿2﴾ جب ونیا چل جاتی ہے تو حسرت چھوڑ جاتی ہے اور جب آتی ہے تو بہت سے غم ساتھ لے کر آتی ہے۔

ایک دانا کا قول ہے:'' دنیاتھی اور میں نہیں تھا، بید نیار ہے گی اور میں نہیں رہوں گا، میں اس کی پروانہیں کرتا

•تو جمه کنز الایمان: بے شک ہم نے زمین کا سنگار کیا جو پھھاس پرہے کہ انہیں آ زمائیں ،ان میں کس کے کام بہتر ہیں اور بے شک جو کچھاس پرہے،ایک دن ہم اسے پٹ پر (چیٹل، بے کار) میدان کرچھوڑیں گے۔ (پ۵۱، الکھف: ۸۰۷)

T

ہوں کیونکہاس کی زندگی قلیل ہے،اس کی صفامیں بھی کُدُورَت ہے،اس میں رہنے والے اس کے زائل ہونے ،مصیبت کے نازل ہونے اور موت کے آنے سے سخت خوفز دہ رہتے ہیں۔''

ایک اور دانا کا قول ہے: دنیا انسان کواس کی منشا کے مطابق نہیں ملتی ، یا تو زیادہ ملتی ہے یا پھر کم ۔ حضرتِ سفیان دَحْمَهُ اللهِ عَلَیْه کا قول ہے: تم دنیا کی نعمتوں کو دیھووہ اپنی برائی کی وجہ سے ہمیشہ نالائقوں کے پاس ہی ہوتی ہیں۔
حضرتِ ابوسلیمان الدارانی دَحْمَهُ اللهِ عَلَیْه کا قول ہے کہ جب سی طالب دنیا کو دنیا ملتی ہے تو وہ زیادہ کی تمنا کرتا ہے اور جب کسی طالب آخرت کو آخرت کا اجر ملتا ہے تو وہ زیادہ کی تمنا کرتا ہے ، نہ اِس کی تمناختم ہوتی ہے اور نہ اُس کی تمنا ختم ہوتی ہے۔

ایک شخص نے حضرت ابوحازم کے مَدَّ اللهِ عَلیْه ہے دنیا کی محبت کا شکوہ کیا اور ریبھی بتلایا کہ میر اکوئی گھر نہیں ہے۔ آپ نے کہا: جو کچھتم کواللّٰہ نے دیا ہے اس میں سے صرف رزقِ حلال لے لواورا سے صحیح مَصْرَف میں خرج کرو، اس طرح تم کو دنیا کی محبت کوئی نقصان نہیں دے گی اور آپ نے بیاس لئے فرمایا کہا گرتو نے اپنے نفس کواس سے لگایا تو یہ تھے ایسی تکلیف میں ڈال دے گی کہ تو دنیا سے تنگ ہوجائے گا اور اس سے نکلنے کی کوشش کرےگا۔

حضرتِ یجی بن معافر کے مَدَّاللَٰهِ عَلَیْه کا قول ہے کہ دنیا شیطان کی دکان ہے،اس میں سے پچھ نہ لو،اگرتم نے پچھ لے لیا تو شیطان تلاش کرتا ہواتم تک پہنچ جائے گا۔

حضرت فِضَيْل رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كه اگر دنيامث جانيوالے سونے اور آخرت باقی رہنے والی شیکری كی ہوتی ، تب بھی فانی چیز پر باقی رہنے والی چیز کوتر جیج و بینا مناسب ہوتا چہ جائیکہ بید دنیا تھیکری ہے اور آخرت خالص سونا ہے مگر ہم نے پھر بھی دنیا کو پیند کر لیا ہے۔

حضرتِ ابوحازم رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْهِ كَا قُول ہے كہ طلب دنیا ہے بچو، میں نے سنا ہے جو شخص دنیا كی تو قیر كرتا ہے، قیامت كے دن اسے بارگا و خداوندى میں كھڑا كر كے كہا جائے گا: بیاس چیز كی عزت كرتا تھا جسے الله نے ذليل پيدا كیا تھا۔ حضرتِ ابن مسعود رَضِیَ اللهُ عَنْه كا قول ہے: اس دنیا میں ہر شخص بطورِمہمان ہے اور یہاں كی ہر چیز مُسْتَعُار ہے،

مہمان آخرکوچ کرجا تاہےاورمستعار چیز واپس کرنی پڑتی ہے۔

اسی موضوع پرایک اورشاعرنے اس طرح اظہار خیال کیا ہے: _

وما المال والاهلون الاوديعة ولابديوما ان ترد الودائع

﴿1﴾..... بيرمال اوراولا دمستعار چيزيں ہيں انہيں ايک دن يقيناً واپس كرنا ہے۔

حضرتِ رابعه رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا كے يہاں ان كِساتھى جَعْ ہوئے اور دنیا كی مَدمت كاذكر چھيرُ دیا۔ آپ نے كہا: چپ ہوجاؤ! دنیا كاذكر نہ كرو! شایدتمہارے دلوں كے كسى گوشتے میں دنیا كی محبت ضرور موجود ہے كيونكہ جس شخص كوجس چیز سے محبت ہوجاتی ہے وہ اكثر اس كاذكر كرتا ہے۔

حضرت ابراجيم بن ادہم رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه سے دنیا کے بارے میں سوال کیا گیا تو انہوں نے فر مایا:

نرفع دنيانا بتمزيق ديننا فلاديننا يبقى ولا ما نرفع

فطوبي لعبد اثر الله ربه وجاد بدنياه لما يتوقع

﴿1﴾ بم نے دنیا کے لئے وین کو پارہ پارہ کردیا مگر نبدونیا ملی اور نبدوین باقی رہا۔

﴿2﴾وه بنده خوش نصيب موتا ہے جس نے الله كى طرف توجه كى اور دنيا كو بهتر آخرت كى اميد ميں صرف كرويا۔

ایک اورشاعر کہتاہے: _

ارى طالب الدنيا وإن طال عمره ونال من الدنيا سرورا وانعما

كبان بني بنيانه فاقامه فلما استوى ما قد بناه تهدما

﴿1﴾ دنیا کے طلبگار کی اگر چہ طویل عمر ہواورا سے ہوشم کاعیش ونشاط میسر ہو۔

﴿2﴾ مگر میں اسے اس شخص جیسا سمجھتا ہوں جس نے ایک عمارت بنائی اور وہ عمارت کممل ہوتے ہی زمین بوس ہوگئی ہو۔

ایک اور شاعر کہتا ہے: _

هب الدنيا تساق اليك عفوا اليس مصير ذاك الى انتقال

وما دنياك الا مثل فع اظلك ثم اذن بالزوال

﴿1﴾ بیدد نیا آخرکسی اور کی طرف منتقل ہوجائے گی ،اسے راہ خدامیں خرج کردے ، مختجے بخشش سے ہمکنار کرادے گی۔

﴿2﴾.....تیری دنیاسائے کی طرح ہے، کچھ دیرتیرے اوپر سامیہ گستررہے گی اور پھر ڈھل جائیگی۔

حضرت ِلقمان نے اپنے بیٹے سے کہا: اے بیٹے! دنیا کوآخرت کے لئے نے دونوں طرف سے نفع اٹھائے گا اور آخرت کو دنیا کے لئے نہ نے کہ دونوں طرف سے نقصان میں رہے گا۔

حضرت مُطَرِّف بن ﷺ وَحَمَةُ اللهِ عَليُه كا قول ہے كہ بادشا ہوں كے ميش ونشاط اور نرم ونازك لباس كوندد كيھو بلكه بيدد كيھو كه وہ دنيا سے تتى جلدى جارہے ہيں اور كيسا بُر الحمكاناان كو ملے گا۔

حضرت ابن عباس دَضِیَ اللهٔ عَنهُمَا كا قول ہے ، الله تعالی نے دنیا کے تین حصے کئے ہیں ، ایک حصہ مومن کے لئے ، دوسرا منافق کے لئے اور تیسرا حصہ کا فر کا ہے۔ مومن اسے زادِراہ بناتا ہے ، منافق زیب وزینت کرتا ہے اور کا فراس سے نفع اندوز ہوتا ہے۔

بعض صالحین کا قول ہے کہ دنیا مردار ہے، جواسے حاصل کرنا چاہتا ہے وہ کتوں کی زندگی بسر کرنے پر تیار ہے، اسی لئے کہا گیا ہے:۔

> ياخاطب الدنيا الى نفسها تنح عن خطبتها تسلم ان التي تخطب غدارة قريبة العرس من الماتم

> > ﴿1﴾ا عدنيا كوايخ قريب بلانے والے! تواسے نه بلاء سلامت رہے گا۔

﴿2﴾....جس فریمی کوتم اپنے پاس بلارہے ہووہ ہیبت نا ک اور گناہ سے معمور چیز ہے۔

حضرت ابوالدرداعدَ طِبَ اللهُ عَنْهُ كا قول ہے كہ الله تعالى كے يہاں دنيا كى بے قدرى اس كئے ہے كہ ہر گناہ اسى ميں پروان چڑھتا ہے اور اس سے كنار وكشى كئے بغير الله تعالى كى نعمتوں كۈنبيں يا يا جاسكتا ، اسى لئے كہا گيا ہے: _

اذا امتحن الدنيا لبيب تكشفت له عن عدو في ثياب صديق

﴿1﴾ جب تفلند نے دنیا کو جانچا تواہے دوست کے لباس میں ایک وتمن نظر آیا۔

اسی موضوع پر چنداشعاریہ بھی ہیں:۔

ياراقد الليل مسرورا باوله ان الحوادث قد يطرقن اسحارا

افني القرون التي كانت منعمة كر الجديدين اقبالا و ادبارا

مكاشفة القلوب

كم قد ابادت صروف الدهر من ملك قد كان في الدهر نفاعا و ضرارا

يامن يعانق دنيا لا بقاء له يمسى ويصبح في دنياه صفارا

هلا تركت من الدنيا معانقة حتى تعانق في الفردوس ابكارا

ان كنت تبغى جنان الخلد تسكنها فينبغى لك ان لا تامن النارا

﴿1﴾.....ا ہاول رات میں خوش خوش سونے والے! حواد ثاتِ زمانہ بھی رات کے آخری حصہ میں بھی نازل ہوتے ہیں۔

﴿2﴾دن رات كى كردش نے ان صديول كو بھى فناكر ديا جوخوشحالى ميں بے مثال تھيں۔

﴿3﴾.....گروشِ دوراں نے ایسے کتنے ملکوں کوویران کر دیا جوز مانہ میں سکھ د کھ دینے والے تھے۔

﴿4﴾ا عناني ونيا كو كله ركان والع التوضيح وشام سفريس ب (بيمر كله ركان سه كيا فائده؟)

﴿5﴾ تونے دنیا سے تعلق ختم کیوں نہیں کیا تا کہ جنت الفردوس میں عفت مآب حوروں سے ہم آغوش ہوسکتا۔

﴿ 6 ﴾ اگرتوجنت میں سکونت کا خواہشمند ہے تو تحقیے نارِجہنم سے بے خوف نہیں ہونا جا ہے۔

حضرت ابوامامہ بابلی رَضِیَ اللّهٔ عَنْه سے مروی ہے کہ جب حضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم کومبعوث فر مایا گیا توشیطان ایپ نشیطان سے کہا: ایک نبی مبعوث ہوا ہے اور اس کے ساتھ اس کی امت بھی ہے۔ شیطان نے پوچھا: کیا وہ لوگ دنیا کو پسند کرتے ہیں؟ اُنہوں نے کہا: ہاں۔ شیطان نے کہا: پھر تو کوئی پروانہیں، اگروہ بتوں کونہیں پوچھا تو نہ پوچیں، ہم انہیں تین باتوں میں پھنسائیں گے: دوسرے کی چیز لے لینا، غیر پسندیدہ جگہوں پر خرج کرنا اور لوگوں کے حقوق ادانہ کرنا، یہی تین چیزیں تمام برائیوں کی بنیاد ہیں۔ (1)

ایک آدمی نے حضرت علی رَضِیَ اللّهُ عَنْه ہے دنیا کی تعریف پوچھی: آپ نے فر مایا: میں اس گھرکی کیا تعریف کروں جس کا صحت منداصل میں بیمار، جس کا بے خوف پشیمان، جس کا مفلس ممگین، جس کا مالدار مصائب میں مبتلا ہوا ور جس کے حلال کا حساب ہو، حرام پر عذاب ہوا ور مشکوک پر ملامت ہو۔ یہی بات آپ سے دوسری مرتبہ پوچھی گئی تو آپ نے فر مایا: وضاحت سے بیان کروں یا مختصر جواب دوں ؟عرض کیا گیا: مختصر آفر ماسیے! آپ نے فر مایا: اس کے مالِ حلال کا حساب ہے اور حرام پر عذاب ہے۔

1 شعب الايمان، الحادي و السبعون من شعب الإيمان، باب في الزهد و قصر الأمل، ٣٣٨/٧، الحديث ٢٠٥٠٢

777

حضرتِ ما لک بن دینار رَحُ مَدُّاللهِ عَلَیْه کا قول ہے کہ زبردست جادوگر سے بچو جوعلاء کے دلوں پر بھی جادو چلالیق ہے اور فر مایا گیا: وہ جادوگرونیا ہے۔

حضرت ابوسلیمان الدارانی دَئه مَهٔ الله عِمَلُه کا قول ہے کہ جب دل میں آخرت کا تصور بسا ہوا ہوتو دنیا اس سے مزاحت کرتی ہے اور جب دل میں دنیا کا تصور جاگزیں ہوتو آخرت کوئی مزاحت نہیں کرتی اس لئے کہ آخرت کے تصورات کریمانہ ہیں اور دنیاوی وساوس انتہائی جاہلانہ ہیں اور یہ بہت بڑی بات ہے۔ ہمارے خیال میں اس سلسلہ میں جناب سیار بن الحکم دَئه مَهُ الله عَلَیْه کی بات زیادہ دانشمندانہ ہے، انہوں نے کہا ہے: دنیا اور آخرت دونوں دل میں جع ہوتی ہیں چھران میں جو عالب آجائے دوسرافریق اس کا تابع بن جاتا ہے۔

حضرتِ ما لک بن دینار رَحْمَهُ اللهِ عَلَیْه کاارشاد ہے: تم جس قدر دنیا کے لئے مُمگین ہوتے ہوای قدر آخرت کاغم ہوجاتا ہے اور جس قدر آخرت کاغم کھاتے ہوای قدر دنیا کاغم مٹ جاتا ہے، آپکا یقول حضرتِ علی رَضِی الله عنه کے اس ارشاد سے ماخوذ ہے کہ دنیا اور آخرت دوسوکنیں ہیں، ایک کو جتنا راضی کروگے، دوسری اتنی بی ناراض ہوگی۔
حضرتِ حسن رَضِی الله عنه کا قول ہے: بخدا ارب نے ایسی قویل بھی پیدا کی ہیں جن کے سامنے بید نیامٹی کی طرح بے وقارتی، اہمیں دنیا کے آئے جانے کی کوئی پرواہ نہیں تھی چاہے وہ اس کے پاس ہویا اُس کے پاس ہو۔

مورتِ حسن رَضِی الله عنه سے ایسے محص کے متعلق پوچھا جس کو اللہ تعالیٰ نے مال دیا ہے، وہ اس سے راہِ خدا میں دیتا ہے اور صلہ رحی کرتا ہے، کیا ایسا شخص تلاشِ معاش کرے تا کہ کچھا ور دنیا حاصل کرے؟ آپ نے فر مایا:

مورتِ فِضیل رَضِی اللهُ عَنْه کا قول ہے کہ اگر مجھے ساری دنیا کسپ حلال کی صورت میں مل جائے مگر آخرت کی بھلائی اس میں نہ ہوتو میں اس سے اس طرح دامن بچائے نکل جاؤں گا جیسے تم مردار سے دامن بچائے نکل جائے ہو۔

بھلائی اس میں نہ ہوتو میں اس سے اس طرح دامن بچائے نکل جاؤں گا جیسے تم مردار سے دامن بچائے نکل جائے ہو۔

جب حضرتِ عِن اللهُ عَنْه شام کی مملکت میں داخل ہوئے تو حضرتِ ابوعبیدہ رَضِی اللهُ عَنْه ایک اونٹی پر آپ جب حضرتِ ابوعبیدہ رَضِی اللهُ عَنْه ایک اونٹی پر آپ

کے اِشتِقبال کے لئے حاضر ہوئے جس کی کیل رسی کی تھی، سلام ودعا کے بعد حضرت عمر دَضِے اللّٰهُ عَنْه ان کے خیمہ میں تشریف لائے ، وہاں اونٹ کے پالان ، تلوار اور ڈھال کے علاوہ کچھ نہیں تھا، حضرت عمر دَضِے اللّٰهُ عَنْه نے پوچھا: کوئی اور سامان بھی ہے؟ انہوں نے عرض کیا: ہمارے آرام کے لئے یہی کچھکافی نہیں ہے؟

حضرت ِ حسن رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ دنیا کی محبت میں ڈوب کربنی اسرائیل نے اللّٰه کی عبادت کو جیھوڑ کربتوں کی عبادت شروع کی تھی ۔

حضرت ِسُفیان دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ بدن کے لئے دنیاوی غذا حاصل کرواور دل کے لئے اُخروی غذا کی تلاش کرو۔

حضرت وَهُبِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَا قُول ہے، میں نے ایک کتاب میں پڑھا ہے کہ دنیا بھمندوں کے لئے مالی غنیمت اور جاہلوں کے لئے سامانِ غفلت ہے، اُنہوں نے اس کی حقیقت نہ جانی یہاں تک کہ دنیا سے کوچ کر گئے، جب وہاں ان پراس کی حقیقت مُنگئِشف ہوئی تو انہوں نے واپسی کا سوال کیا جو نامنظور ہوا۔

حضرتِ ِلقمان نے اپنے بیٹے سے کہا: اے بیٹے! اگر تونے دنیا سے بے توجہی برتی اور آخرت کی طرف متوجد رہا تو ایسے گھر کے قریب پہنچ گیا جواس گھر سے بدر جہا بہتر ہے۔

حضرت سعید بن مسعود رئے مَهُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ جبتم كسى السي شخص كود يكھوجس كى دنيابر هربى ہواور آخرت كم ہورہى ہوگر وہ اس بات پر راضى ہوتو سمجھ لوكہ وہ شخص فريب خوردہ ہے كہ اس كى صورت من كى جارہى ہے اور اسے محسوس بھى نہيں ہور ہاہے۔

حضرتِ عَمْرُوبِن العاص دَضِيَ اللّهُ عَنُه نِي منبر پر کھڑے ہو کرفر مایا: بخدا! میں نے تم جیسی قوم نہیں دیکھی،جس چیز سے حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کنارہ کش رہے تم اس میں مگن ہو، بخدا نبی کریم صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم پرایسے تین دن کبھی نہیں گزرے کہان بران کے مال سے زیادہ قرض نہ ہو۔

حضرتِ حسن رَضِيَ اللَّهُ عَنُه نے بِهِ آیت: " فَلاَ تَغُوَّنَّكُمُ الْحَلِوةُ التَّهْ نَيَا " (1) پِرُ صَرَفَر ما يا كه جانتے ہو يہ س كافر مان ہے؟ بيخالقِ دنيا، ما لكِ دنيارتِ تعالى كافر مان ہے۔خودكو دنيا كی مشغولیت سے بچاؤ! دنيا میں بہت سے شغل

القين : توجمهُ كنز الايمان: توبر رتبهين وهوكه نه و دنيا كي زندگي - (ب ٢١، لقين : ٣٣)

ہیں،اگرانسان دنیا کے کسی شغل کا دروازہ کھول دیتا ہے تو اس پر دنیا کے دس اور درواز سے خود بخود وَ اہوجاتے ہیں۔ مزید فرمایا کہ انسان کتنا مسکین ہے،ایک ایسے گھر پر راضی ہوگیا ہے جس کے حلال کا حساب ہوگا اور حرام پر عذاب!اگروہ کسبِ حلال سے دنیا حاصل کرتا ہے تو قیامت کے دن اس سے اس کا حساب لیاجائے گا اوراگر مال حرام کھا تا ہے تو عذاب میں مبتلا ہوگا،انسان مال کو کم سمجھتا ہے مگر افسوس کے کمل کو کم نہیں سمجھتا، دینی مصیبت پرخوش ہوتا ہے اور دنیاوی مصیبت پر فریاد و فغال کرتا ہے۔

حضرت حسن بصری رَضِیَ اللَّهُ عَنُه نے حضرتِ عمر بن عبدالعزیز کوایک خط کھا جس میں بعداز تسلیمات تحریفر مایا کہتم آخری انسان ہوجنہوں نے موت کا پیالہ بیا۔ آپ نے جواب میں لکھا: بعداز تسلیم گویاتم دنیا میں کبھی نہیں رہے اور ہمیشہ آخرت میں رہے ہو۔ (یعنی میری طرح دنیا میں تم بھی رہتے ہواور موت کا پیالہ تم کو بھی بینا ہے)

حضرت فضیل بن عِیَاض دَ حُمَهُ اللهِ عَدَیه کا قول ہے کہ دنیا میں آنا آسان ہے مگراس سے نکانا سخت مشکل ہے۔

بعض صوفیاء کا قول ہے کہ اس شخص پر انہائی تعجب ہے جوموت کوت سمجھتے ہوئے بھی مسرور ہے! جہنم کویقینی سمجھتے

ہوئے بھی ہنستا ہے! دنیا کی ہلا کتوں کود کیھتے ہوئے بھی مطمئن ہے! تقدیر خدا کویقینی سمجھتے ہوئے بھی ممگسین ہے!

حضرت امیر معاویہ رَضِی الله عَنه کے پاس نَجُران کا ایک ایب اُحض آیا جس کی عمر دوسوسال تھی ، آپ نے پوچھا: تو نے دنیا کوکیسا پایا؟ کہنے لگا: بُری بھی ہے بھلی بھی ہے ، دن کے بدلے دن اور رات کے بدلے رات ، اس کی بُرائی اور بھلائی برابر رہتی ہے ، پچہ پیدا ہوتا اور اسے ہلاک کرنے والا ہلاک کردیتا ہے اگر نئی مخلوق پیدا نہ ہوتی رہتی تو مخلوق بہت پر انی اور ویران ویران ویران ویران میں ہوجاتی اور اگر ہلاک کرنے والا نہ ہوتا تو یہ دنیا مخلوق سے بھر جاتی اور اپنی تمام تر وسعت کے باوجود تنگ ہوجاتی ۔ آپ نے فرمایا: پچھ ما نگنا ہوتو ما نگو ، اس نے جواب دیا: میری گزشتہ عمر لوٹاد بچئے یا اجلِ مقررہ کوٹال دیجئے ، آپ نے فرمایا: یہ چھ ما نگنا ہوتو ما نگو ، اس نے جواب دیا بھر آپ سے مجھے بچھ اور ما نگنا نہیں ہیں ، اس شخص نے جواب دیا پھر آپ سے مجھے بچھ اور ما نگنا نہیں ہیں ، اس شخص نے جواب دیا پھر آپ سے مجھے بچھ اور ما نگنا نہیں ہیں ، اس شخص نے جواب دیا پھر آپ سے مجھے بچھ اور ما نگنا نہیں سے دعرتِ داوُد طائی رُخے مَهُ اللهِ عَليْه کا قول ہے کہ اے انسان! تو اُمیدوں کو پاکرخوش ہور ہا ہے حالانکہ تیری اُجل قریب حضرتِ داوُد طائی رُخے مَهُ اللهِ عَلَیْه کا قول ہے کہ اے انسان! تو اُمیدوں کو پاکرخوش ہور ہا ہے حالانکہ تیری اُجل قریب میں تا خیر کی ہے ، گویا ہی تیر نے ہیں کسی اور کے کام آ تے ۔

حضرت بِشر رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ جو تخص الله سے دنیا ما نگتا ہے وہ گویاالله كى بارگاہ میں بہت دریتک حساب كے لئے تشہر نے كاسوال كرتا ہے۔

حضرتِ ابوحانِ م_{دَ} حُمَةُ اللَّهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ دنیا میں كوئى بھی چیز الیی نہیں ہے جو تجھے مسر وركرے مگر اللَّه تعالیٰ نے اس میں ایک الیں صفت بھی رکھ دی ہے جو تجھے بری معلوم ہوگی۔

حضرت ِ حسن رَضِیَ اللّٰهُ عَنُه سے مروی ہے کہ ہرانسان دل میں تین حسر تیں لے کرمرتا ہے ایک بید کہ وہ اپنے جمع کردہ مال سے سیر ہوتا اور وہ سیر نہیں ہوا، دوسرے بید کہ اپنی اُمیدوں کو پایئے تکمیل تک پہنچا تا مگر نہ پہنچا سکا اور تیسرے بید کہ وہ آخرت کے لئے نیک عمل جھیج سکا۔

ایک بندہ مومن سے کسی نے کہا کہ میں نے''غنا'' کو پالیا ہے۔اس نے کہا: جس نے خودکو دنیا کی غلامی سے آزاد کرلیا، حقیقی مالداری اسی نے یائی۔(یعن غنا کو پانے کا دعویٰ وہی کرسکتا ہے)

حضرت ابوسلیمان رَحْمَهُ اللهِ عَلیْه کا قول ہے کہ دنیا کی خواہشات سے وہی رکتا ہے جس کے دل میں آخرت کی فکر ہوتی ہے ۔ معنوت مالک بن دینار رَحْمَهُ اللهِ عَلیْه کا فرمان ہے کہ ہم نے محبتِ دنیا میں ایک دوسر سے سلح کرلی ہے ، ہم میں سے کوئی کسی کو نہ تھم دیتا ہے ، نہ منع کرتا ہے حالانکہ الله تعالی نے ہمیں اس چیز کا تھم نہیں فرمایا ، کیا خبر ہم کس فتم کے عذا ب میں مبتلا ہو نگے۔

حضرت ابوحازِم رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كه دنیا كی معمولی سی محبت بھی آخرت سے كافی بے توجہی پیدا كردیت ہے۔
حضرت حسن رَضِیَ اللهُ عَنْه فرمایا كرتے تھے كه دنیا كی بے قدرى كرو، بیاپی بے قدرى كر نیوالوں پر بہت آسان ہے۔ مزیدار شادفر مایا كہ جب الله وتعالی سی بندہ كی بہترى كا ارادہ فرما تا ہے تواسے دنیا كا عطیہ دیتا ہے، جب وہ ختم ہو جاتی ہے تواور دے دیتا ہے اور جب بندہ دنیا كو تقیر سبجھنے لگتا ہے توالله تعالی اسے بے اندازہ مال ودولت دے دیتا ہے۔

ایک صالح اپنی دعامیں کہا كرتے تھے كہ اے آسانوں كوزمین پر گرنے سے روكنے والے! مجھ سے دنیا كوروك لے۔ (مجھے دنانہ دے)

حضرت محمد بن مُمُلَدِر رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ قيامت كے دن اليشخص بھى ہوں گے جنہوں نے زندگى كے دن روز وں ميں اور را تيں عبادت ميں گزارى ہوں گى ، راو خدا ميں مال و دولت خرج كيا ہوگا ، راو خدا ميں جہاد كيا ہوگا اور مُنكرَات سے اپنادامن بچايا ہوگا مگران كے بارے ميں كہا جائيگا: بيوہ ہيں جنہوں نے رب كی حقير كردہ چيز كو بہت بڑا سمجھا تھا، ذراسو چوتو سہى ہم ميں كتنے ایسے ہيں جواس مصيبت ميں سمجھا تھا، ذراسو چوتو سہى ہم ميں كتنے ایسے ہيں جواس مصيبت ميں

مبتلانہیں ہیں،علاوہ اُزیں گناہوں کے کو وِگراں کا بار بھی ہماری گردنوں پرموجود ہے۔

حضرت ابوحازم _{ذَ}ئے مَدُّاللَّهِ عَلَیُه کا قول ہے کہ دنیا اور آخرت دونوں کے حصول میں دشواریاں ہیں۔فرق سے ہے کہ آخرت کے حصول میں آپ کسی کومد دگارنہیں پائیں گے مگر دنیا کے حصول میں جب بھی کسی چیز کی جانب ہاتھ بڑھاؤ گے تو دوسرے بد بخت کواپنے سے پہلے موجود پاؤگے۔

حضرت ابو ہریرہ وَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے کہ اللّٰه تعالی نے جب سے دنیا کو پیدا کیا ہے وہ زمین وآسان کے درمیان پرانے مشکیز کی طرح لئی ہوئی ہے اوراسی طرح قیامت تک لئکتی رہے گی، جب وہ اللّٰه تعالی سے سوال کرتی ہے اے اللّٰه! تونے مجھے کیوں ناپیند فرمایا ہے؟ تورب کریم فرما تا ہے: اے ناچیز خاموش رہ!

حضرت عبدالله بن مبارک رَحْمَةُ اللهِ عَليْه كاقول ہے كہ جب دنیا كی محبت اور گنا ہوں نے دل كواپنا شكار بنالياہے، اب اس میں بھلائی كيسے بہنچ سكتی ہے۔

حضرت وَهُب بن مُنَدِّد رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے: جس شخص كا دل كسى دنياوى چيز سيخوش ہوگياوہ دانا كى سے ہث گيا اور جس نے دنياوى خواہشات كواپنے بيروں تلے روند ديا، شيطان اس كے سائے سے بھى بھا گتا ہے اور جس كاعلم خواہشات برغالب آگيا، حقيقت ميں وہى غالب ہے۔

حضرت بِشر رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه سے کہا گیا کہ فلاں آ دمی مرگیا ہے، آپ نے فرمایا: اس نے دنیا کوجمع کیا اور آخرت کوضائع کر دیا۔لوگوں نے کہا: وہ تو یہ بینکیاں کیا کرتا تھا۔ آپ نے فرمایا: '' جس کے ول میں دنیا کی محبت ہو، اسے نیکی نفع نہیں پہنچاتی۔

ایک صالح کا قول ہے کہ دنیا ہم سے نفرت کرتی ہے مگر ہم اس کے پیچھے بھا گتے ہیں،اگر وہ بھی ہم سے محبت کرتی ہوتی تو خداجانے ہمارا کیا حال ہوتا!

ایک دانا سے بوچھا گیا کہ دنیاکس کی ہے؟ کہا:جس نے اسے چھوڑ دیا، بوچھا گیا: آخرت کس کی ہے؟ فرمایا:

جس نے اسے طلب کیا۔ایک اور دانا کا قول ہے کہ دنیا ایک ویران گھرہے اور وہ دل دنیا سے بھی زیادہ ویران ہے جو اس کی جشجو میں سرگر داں ہے، جنت ایک آباد گھرہے وہ دل جنت سے بھی زیادہ آباد ہے جواسے طلب کرتا ہے۔

حضرت جنید رَخمَةُ اللهِ عَلیُه فرماتے ہیں کہ امامِ شافعی رَخمَةُ اللهِ عَلیُه و نیا میں حق اللهِ عَلیْه و نیا میں حق انہوں میں سے تھے، انہوں نے اپنے بھائی کوخوفِ خداکی نصیحت کی اور فرمایا: اے بھائی! بید دنیا لغزش کی جگہ اور رسوا کرنے والا گھرہے، اس کی آبادی ویرانی کی طرف اور اس میں رہنے والے قبروں کی طرف جارہے ہیں، اس کی قلیل چیز بھی جدا ہونے والی ہے، اس کا تمکو کی مفلسی میں مالداری ہے، اللہ کی طرف توجہ کر کا تمکو کی مفلسی میں مالداری ہے، اللہ کی طرف توجہ کر اور اس کے عطا کردہ رزق پر راضی ہوجا، جنت کو دنیا میں گروی ندر کھ کیونکہ تیری زندگی ڈھاتا ہوا سا بیاور گرتی ہوئی دیوار ہے، الہٰذاعمل زیادہ کر اور امیدیں کم کردے۔

حضرت ابراہیم بن اوہ ہم رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه نے ایک خفس سے کہا کہ تو خواب کے ایک درہم کو یا بیداری کے ایک دینار کو اچھا ہمجھتا ہوں۔ آپ نے فرمایا: تم جھوٹ کہتے ہو کیونکہ دنیا کو اچھا ہمجھتا ہوں۔ آپ نے فرمایا: تم جھوٹ کہتے ہو کیونکہ دنیا کے ساتھ تیری محبت خواب کی محبت ہے اور آخرت کے ساتھ محبت بیداری کی محبت ہے۔ حضرت المعیل بن عیاش رَحْمَةُ اللهِ عَلَیْه کا قول ہے کہ ہمارے دوست دنیا کو خزیر کانام دیا کرتے تھے اور کہتے تھے کہ ہم سے دوررہ! اگر انہوں نے دنیا کے لئے اس سے بُرانام یا یا ہوتا تو ضرور اس کانام وہی رکھتے۔

حضرت كعب دَحْمَةُ اللهِ عَليه كا قول م : تم في دنيا ساتن محبت كى م كماس يوجف لكم مو

حضرتِ بيجي بن معاذ رازى رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول م كروانا تين بين:

- ﴿1﴾جس نے دنیا کوچھوڑنے سے پہلے دنیا کوٹرک کردیا۔
 - ﴿2﴾ قبر میں جانے سے پہلے اسے بنالیا اور
- ﴿3﴾ بارگاورب العزت میں حاضری سے پہلے اسے راضی کرلیا۔
- مزید فرمایا که دنیا کی تمناہی انسان کوالله کی' عبادت' سے روک دیتے ہے چہ جائیکہ انسان سرایا دنیاہی کا ہوجائے

(تو کیاحال ہوگا)۔

حضرت بکر بن عبدہاللّٰه رَحْمَهُ اللّٰهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ جو څخص د نيا كے ساتھ د نيا سے بے پروائی برتنا جا ہتا ہے وہ شخص آگ كو بھو سے سے بجھار ہاہے (اس سے تو آگ اور بھڑ كے گی)۔

حضرت بُنْدار رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ جب تو دنیا سے كنار ہ كئى كى با تیں كرنے والے دنیا واروں كو د يكھے تو سمجھ لینا كہ بیشیطان کے مرید ہیں۔ مزید فرمایا: جو دنیا كی طرف متوجہ ہوااس کے شعلے (حرص) نے اسے را كھ كر دیا، جو آخرت كی طرف متوجہ ہوااس کے شعلوں نے اسے كندن كا ایک ٹکڑا بنادیا اور جس نے رب تعالی كی طرف رجوع كیا اس كی وحدت كی آگ نے اسے بے مثال ہیرا بنادیا۔

حضرت على دَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كاارشاد ہے؛ دنیا كی چھے چیزیں ہیں:

ا سب ہے بہتر کھانے کی چیز شہد ہےاوروہ کھی کالعاب ہے۔

الله شادی کے لئے عورت عمدہ چیز ہے مگر میحلِ مباشرت کے سوا کچھنہیں عورت کی سب سے عمدہ چیز (چرے) کو سنوارا

اورسب سے بری چیز (فرج) کوچاہاجا تاہے۔

☆.....☆.....☆

اب 32)

مذمت دنیا 🏷

بعض تارکین دنیا کا کہنا ہے: نیک عمل کرنے میں پیش پیش رہو،الله تعالیٰ سے ڈرتے رہو،جھوٹی اُمیدوں میں نہ بر و،موت کو نہ بھولوا ور دنیا ہے رغبت نہ رکھو کیونکہ بیفریبی اور مکار ہے جس نے دھوکا دے کرراہ خدا ہے دور کر دیا، اس کی جھوٹی امیدوں نے تمہیں آ زمائش میں ڈال دیااور بیتمہار ہےسامنے انتہائی حسین شکل (بہروپ) میں بے بردہ دلہن بن کرآتی ہے، آنکھیں اسے دیکھتی ہیں، دل اس برفدا ہیں اور روحیں اس کی فرکیفَۃ ہیں مگر اس نے کتنے عاشقوں کو قتل کردیااوراینے بیروانوں کوذلت ورسوائی کے گڑھوں میں دھکیل دیا ہے؟ تم اسے نگاہ حقیقت بین سے دیکھوتو معلوم ہوگا، بیہ مصائب کا گھرہے،اس کے خالق نے بھی اس کی **ن**دمت کی ہے،اس کا ہر نیا پرانا ہوجا تا ہے،اس کی سلطنت ختم ہوجاتی ہے،اس کامعزز ذلیل ہوجاتا ہے،اس کی کثرت قلت میں تبدیل ہوجاتی ہے،اس کی محبت فنا ہوجاتی ہے،اس کی بھلائی گزرجاتی ہے،اللہ تم پررحمت کرے،غفلت سے جا گو،اس کی مبیٹھی نیند سے بیدار ہوجاؤ قبل اس کے کہ کہا جائے: فلاں بیار ہے یااسے جان کے لالے بڑے ہیں، کوئی ایسی دوایا ایساطبیب ہے جواسے شفادے، پھرطبیب بلایا جائے اوروہ تیری زندگی کے بارے میں ناامیدی کا اظہار کرے، پھرکہا جائے کہ فلاں نے اپنی دولت کا حساب لگا کروصیت کردی ہے، پھر کہا جائے: اس کی زبان بند ہوگئی اور وہ اپنے عزیزوں سے بات نہیں کرسکتا اور ہمسائیوں کونہیں پہچان سكتا ہے،اس وقت تيري بييثاني پر پينے كے قطرے انجرآئيں، تيري آه و بكاسنائي دے،موت پر تيرايقين راسخ ہوجائے، تیری نگاهٔ منگی بانده کرد یکھنے لگے، تیرےاندیشے سچ ثابت ہوں، تیری زبان گنگ ہوجائے، تیرے عزیز رونے لگیں اور تجھ سے کہا جائے: وہ تیرا فلاں بیٹا ہے، یہ تیرا فلاں بھائی ہے گر توان سے گفتگونہ کر سکے، تیری زبان پرمہرلگ جائے، تو اسے ہلانہ سکے پھر تجھ برموت طاری ہو، تیرے تمام اعضاء سے روح نکالی جائے اور اسے آسان کی طرف لے جایا جائے ،اس وقت تیرے بھائی تجھ پر جمع ہوجا کیں ، تیرے لئے کفن لایا جائے ، پھر تجھے نہلا کرکفن پہنایا جائے ، تیری تمام امیدیں منقطع ہوجائیں اور تیرے دشمن سکون کا سانس لیں، تیرے اہلِ خانہ تیرے مال کی طرف متوجہ ہوں اور تو

M

اینے اعمال کی سزایانے کے لئے تنہارہ جائے۔

کسی تارکے و نیا نے ایک بادشاہ سے کہا کہ د نیا کی مذمت اوراسے چھوڑ وینے کالوگوں میں سب سے زیادہ مستحق وہ خض ہے جو مالدار ہے اور دولت کے بل ہوتے پراپنے کام انجام دے رہا ہے، ہوسکتا ہے اس کے مال پرکوئی آفت نازل ہوکراسے مختاج کردے یا کوئی آفت اس کی جمع کردہ پونجی اوراس کے درمیان تفرقہ ڈالدے یا کوئی بادشاہ اس کے مال ودولت کو پامال کرتا ہواگز رجائے یا کوئی تکلیف اس کے جسم میں سرایت کرجائے یا دنیا کی کوئی جان سے پیاری چیز اسے دوستوں کی نظروں میں گرادے اور بایں طور پر بھی دنیا لائق مذمت ہے کہ یہ جو پچھودیتی ہے واپس لے لیتی ہے، یہ ایک ہی وفت میں دودوآ دمیوں سے مجبت کرتی ہے، یہ بہننے والوں پر ہنستی اور رونے والوں پر روتی ہے، دیتے وقت واپس کا نقاضا بھی کردیتی ہے، آج مالداروں کے سر پر تاج رکھتی ہے اور کل اسے مٹی میں چھپادیتی ہے، چاہے جانے والا اسی کے میں مرگیا ہواور زندہ اسی کے لئے زندہ ہو، وہ ہر جانے والے کے وارث کے گل کی جاور کسی تغیر و تبدل کی پر وانہیں کرتی۔

حضرت حسن بھری دَضِی اللّه عَنه نے حضرت عمر بن عبدالعزیز دَضِی اللّه عنه کولکھا کہ بید نیا کوچ کی جگہ ہے،
کھہر نے کا مقام نہیں ہے، حضرت آ دم عَلیْهِ السَّلام کو آز ماکش کے طور پراس پراتارا گیا تھا اس لئے امیر المؤمنین اس سے
دور دور دور رہئے ۔اس دنیا کا توشداس کو چھوڑ دینا، اس کی سر مایہ داری فقر وفاقہ ہے، ہر وقت اپنے چاہنے والوں کو قل کر تی
رہتی ہے، عزت والے کو ذکیل اور مالدار کو فقیر بنادیتی ہے، بیز ہر ہے جسے انسان بخبری میں کھا کرموت سے ہمکنار
ہوجاتا ہے، اس میں جراحت کا علاج کرنے والے مجروح کی طرح طویل دکھ سے نیخ کے لئے پچھ دیر صبر کیجئے اور
طویل بھاری سے نیخ کے لئے پچھاموں تک علاج کی شدت برداشت کیجئے اور اس فریبی دھو کہ باز سے جوخوب بن
طویل بھاری سے نیخ کے لئے پچھاموں تک علاج کی شدت برداشت کیجئے اور اس فریبی دھو کہ باز سے جوخوب بن
طویل بھاری سے اور مکر کا جال پھیلائے ہوئے ہے، جھوٹی امیدوں کی فراوانی ساتھ لائی ہے اور ایک الیی دہمن کا
انداز اپنائے ہے جسے آ تکھیں دیکھنا چاہتی ہیں، جس کے دل شیدائی ہیں اور جانیں اس پر فدائی ہیں اور بیتمام چاہنے

والوں کوختم کرتی چلی آئی ہے اور مٹاتی چلی جائے گی ، کیا کوئی عقلنداس سے نصیحت حاصل نہیں کرتا؟

جب اس کا کوئی عاشق اسے پالیتا ہے تو وہ گمراہ ہوجا تا ہے اور اس سے کامل شُغَف کے باعث اپنی آخرت کو بھی بھول جاتا ہے یہاں تک کہاس کے قدم ڈ گرگا جاتے ہیں اوروہ دائمی حسرت میں گرفتار ہوجاتا ہے،اس برموت کی سختیاں اور د کھ طاری ہوتے ہیں، کما حقہ نہ یانے کی حسرت اور مطلوب تک رسائی حاصل نہ کر سکنے کا افسوس اے اور زیادہ دکھی بنادیتا ہے،اس کی روح شدید دکھ کے عالم میں بغیر کسی زادِراہ کے نکتی ہے اور اس کے قدم کہیں نہیں گئتے۔امیر المونین! اس سے بیجتے رہے کیونکہ دنیا دار جب اس کی مسَرَّت میں ڈوب جاتا ہے تو وہ اسے دکھ میں مبتلا کردیتی ہے، اس میں نقصان یانے والافریب زرہ ہے،اس میں نفع یانے والا دوہرافریب خوردہ ہے کیونکہ اس کی وسعت مصائب تک جا بیچی ہے،اس کا وجود آمادہ فناہے،اس کی خوشی دکھوں میں لیٹی ہوئی ہے، جواس کا ہوجا تا ہے وہ واپسنہیں لوٹنا اورانجام سے بے خبر رہتا ہے،اس کی امیدیں جھوٹی ،تمنائیں باطل ،اس کا صاف گدلا ،اس کی عیش مختصر ہے،انسان اگرغور کرے تووہ اس کےخطرات میں گھر اہوا ہے،اس کی نعمتیں پُر خطراوراس کےاکم ہولناک میں ،اللّٰہ تعالٰی نے اس کی تنبیہ کی ہےاور نصیحت فر مائی ہے،اللہ کے ہاں اس کی کوئی قدرنہیں اور نہاللہ تعالیٰ نے اس برجھی رحمت کی نظر ڈ الی ہے۔ نبی اکرم صَدَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كِ حضور ميں اس كے خزانے اوران كى تنجياں پيش كى تُئيں مگر آپ نے قبول كرنے سے ا ثكار كرديا كيونكه الله تعالی کے بہاں اس کی حیثیت مجھر کے پر سے بھی کم ہے، اگر آ ہاسے قبول فرمالیتے تب بھی الله تعالی کے خزانوں میں کوئی فرق نیآتا، دیکھنا! کہیں اس کی محبت میں حکم خدا کی مخالفت نہ ہو،اس کی الفت میں اللّٰہ کی ناراضگی نہ ہواورا سے اً س کے مالک کی منشا کے مخالف مقام نہ ملے۔اللّٰہ تعالیٰ نے اسے بطور آ ز مائش مومنوں سے بھیر دیا اورا پینے دشمنوں کی فریفتگی کی وجہ سے انہیں دولت سے مالا مال کر دیا، جو بیوقوف اسے پالیتا ہے وہ مجھتا ہے کہ شاید الله نے اسے عزت دے دى ہے اور يہ جھول جاتا ہے كہ الله تعالى كے محبوب نبي صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے اپنے شكم مبارك يربيتم باندھے تھے۔

حدیث قدس ہے،الله تعالی نے حضرت موسی عَلیْهِ السَّلام سے فر مایا کہ جب تو دولتمندی کواپنی جانب آتا دیکھے تو سمجھ لینا کہ کسی گناہ کی سزا آرہی ہے اور جب فقر وفاقہ کودیکھے تو کہہ خوش آمدید، کیونکہ یہ نیکوں کی علامت ہے۔اے

لوگو!اگرچاہوتوعیسیٰ عَلیُہِ السَّادِم کے نقشِ قدم پرچلوجوفر مایا کرتے تھے کہ بھوک میری کھال،خوف میری عادت،صوف میرالباس،سر مامیں سورج کی کرنیں میری آگ، چاندمیرا چراغ، دوپاؤں میری سواری اور زمین کی سبزیاں میری غذا ہیں، نہ جم میرے پاس کچھ ہوتا ہے اور نہ شام کو کچھ ہوتا ہے مگر دنیا میں مجھ سے بڑھ کرکوئی غنینیں ہے۔ (1)

حضرت وَبْب بن مُدَبّه رَحْمَةُ الله عَليه كهتم بي كه جب الله تعالى في حضرت موى اور بارون عَليهما السّالام كوفرعون کی طرف بھیجا تو فرمایا:اس کی دنیاوی شان وشوکت سے خوف زدہ نہ ہونا وہ میری اجازت کے بغیر نہ بول سکتا ہے، نہ سانس لےسکتا ہےاور نہ ہی بلک جھیک سکتا ہے کیونکہ اس کی پیپٹانی میرے ہاتھ میں ہےاور دنیا ہے اس کی نفع اندوزی تم کوتعجب میں نہ ڈالے، یہ چیز دنیا کی رونق ہے اور بے وقو فول کی زینت ،اگر میں جا ہول تو تمہیں ایسی جاہ وحشمت اور د نیاوی قدر دمنزلت دے کرجیجوں کہ فرعون دیکھتے ہی اپنے عجز کا اقرار کرلیکن میں نےتم سے دنیا کو پوشیدہ کرلیا ہے اورتمہاری توجہاس سے ہٹادی ہے کیونکہ میں اپنے دوستوں کو دنیاوی نعمتوں سے دور کر دیتا ہوں جیسے مہر بان گڈریا اپنی بكريوں كو ہلاكت خيز چرا گاہوں ہے دورر كھتا ہے اور ميں انہيں دنيا كے فريب سے بچا تا ہوں جيسے چروا ہا پنے اونٹوں كو خطرناک جگہوں سے بچا تا ہے، بیان کی حقارت کے لئے نہیں ہے بلکہ اس لئے ہے کہ وہ میری بخشی ہوئی عزت سے پورا حصہ پالیں، میں اپنے دوستوں کوا کلساری،خوف، دلوں کےخشوع وخضوع اورتقویٰ سےمزین کرتا ہوں جن کااثر ان كيجسمول برنمايال موتاہے، يهي ان كالباس ہے، يهي ان كا ظاہراوريهي ان كاباطن ہے، يهي ان كي مطلوب نجات، تمناكيس، قابل فخرعزت اور پہچان ہے، جبتم ان سے ملو، نرم برتاؤ كرواوران كے لئے دل اور زبان كوسرايا تواضع بناؤاوريا در كھو! جس نے میرے کسی دوست کوخوفز دہ کیااس نے مجھے جنگ کی دعوت دی اور میں قیامت کے دن اس پرغضبنا ک ہول گا۔ حضرت علی دَخِبَ اللّٰهُ عَنْه نے ایک دن خطید یا اورفر مایا: باخبرر ہو!تم مرنے والے ہو،موت کے بعد پھراٹھائے جاؤ گےاورا پنے اعمال کی جزاوسزا یاؤ گے،تہہیں دنیا کی زندگی دھو کے میں مبتلا نہ کردے، پیہمصائب میں کیٹی ہوئی، نا یا ئیداری میں مشہور، دھو کے ہے موصوف اوراس کی ہرچیز زوال پذیر ہے، بداینے جا بنے والوں میں ڈول کی طرح ہے، ہمیشہ ایک حالت میں نہیں رہتی ،اس میں اتر نے والامصائب سے نہیں نچ سکتا ، بھی توبیا پنے جاہنے والوں برخوثی

^{1}حلية الاولياء ، ابراهيم بن عبدالله ، ٣٤٢/٦ ، الحديث ٨٨٥ و فردوس الاخبار ، ١٧٥/٣ ، الحديث ٤٦٩ و تاريخ مدينه دمشق ، ٢١/٧٦ مختصرا

ومسرت بھیرتی ہے اور بھی غم واندوہ سے ہمکنار کردیتی ہے، اس کی حالتیں مختلف ہیں، بیادلتی بدلتی رہتی ہے، اس میں آرام قابلِ فدمت اور وسعتِ مال ناپائیدارہے، بیا پنے بسنے والوں کو تیروں کی طرح کمان سے نکال کرنشانوں پر مارتی رہتی ہے اور انہیں موت سے ہمکنار کرتی رہتی ہے۔

ہرکسی کی موت کا وفت مقرر ہےاور ہر مخص کو پورارزق دیا جاتا ہےاورا بے بندگانِ خدا! باخبر رہو،تم اس راستے کے راہی ہوجس برتم سے پہلے طویل عمروں والے گز رہکے ہیں، وہتم سے زیادہ طاقتور، بہترین کار گیراورعمدہ یادگاریں جچھوڑنے والے تھے مگر دنیا کے انقلاب میں ان کی آ وازیں خاموش ہو گئیں ،ان کے جسم بوسیدہ ،شہر ویران اوریا د گاریں مٹ گئیں اور مضبوط محلات اور مسرت کے بدلہ میں انہیں پھرول کے تکیے ملے اور پھروں سے تیار شدہ قبریں ان کا مدفن بنیں،ان کے ٹھکانے قریب ہیں کیکن ان کے مکین دور کے ہیں، وہ اپنے قبیلہ سے علیحدہ اور اہلِ محلّہ سے بے پرواہیں، ان کا آبادی سے کوئی تعلق نہیں ،عزیزوں اوریر وسیوں کے قریب ہوتے ہوئے بھی ان کا باہم کوئی میل ملاپنہیں ہے اورمیل ملاپ ہوبھی کیسے سکتا ہے، انہیں مصائب کی چکیوں نے پیس دیا ہے اور نمنا ک مٹی اور پھر انہیں کھا گئے ہیں، وہ چندروز ہ زندگی گز ارکرمر گئے ،ان کی خوشحالی قصہ ٔ یارینہ بن گئی ،انکی موت بران کے عزیز روئے اور وہ مٹی کے پنیجے جا سوئے، انہوں نے دنیا سے کوچ کیا، اب انہیں واپس نہیں آنا ہے، افسوس! صدافسوس! گویا وہ ایک تھم سے جو قائل کی زبان سے نکل چکا،اب لوٹ کرکس طرح آسکتا ہے اوران کے سامنے قیامت کے دن تک عالم برزخ ہے، گویاتم بھی ویسے ہی ہوجیسے وہ ہو چکے، وہی دکھ، وہی قبر میں تنہائی ہے،تم ان قبروں کے گروی ہواورانہیں میں تہہیں رہنا ہے،تم برکیا بینتے گی اگرتم ان با توں کود کیھ لو جب قبریں کھولیں جا ئیں گی ، دلوں کے رازسا منے ہوں گےاورتم اعمال کی جزا حاصل کرنے کے لئے رب تعالیٰ کےحضور کھڑے ہوگے،گزشتہ گناہوں پرتمہارےجگر پھٹنے کو ہوں گے،تمام پردے ہٹ جائیں گےاورتمام گناہ اورراز کی باتیں تمہارے سامنے ہوں گی ، تب ہرایک کواس کے اعمال کابدلہ دیا جائے گا۔ فر مانِ الٰہی ہے: " تا کہ برےاپنی برائیوں کی سز ااور نیک اپنی اچھائیوں کی جزایا ئیں۔"⁽¹⁾ مزید فرمایا که « نامهٔ اعمال رکھے جائیں گے ہرنیک وبداسے دیکھے گا۔ ⁽²⁾

^{۔۔۔۔۔}تو جمہ کننز الایمان: تا کہ برائی کرنے والول کوان کے کئے کابدلہ دےاور نیکی کرنے والول کونہایت اچھاصلہ عطافر مائے۔ (پ۲۲، النجہ: ۳۱)

^{2}توجمة كنز الايمان: نامهُ اعمال ركها جائے گانوتم مجرموں كوديكھو كے كه اس كے لكھے سے ڈرتے ہوں گے _ (ب ١٥، الكهف: ٤٩)

<u>"</u>

ربِّ نوالجلال ہمیں اور آپ کواپنے احکامات بڑمل پیرا ہونے اور اپنے دوستوں کے قشِ قدم پر چلنے کی تو فیق دے تاکہ ہم اس کی رحمت کے فیل خُلْدِ بَرِیں کو حاصل کرلیں ، بلاشبہ وہ حمید ہے۔

بعض داناؤں کا قول ہے کہ دن تیراورلوگ نشانے ہیں۔ زمانہ ہر دن ایک تیر پھینکتا ہے اور مجھے دن رات کی گردش کے فریب میں مبتلا کر دیتا ہے یہاں تک کہ تیرے تمام اجزاء بوسیدہ ہوجاتے ہیں، مرورایام میں تیری بقااور سلامتی ناممکن ہے، اگر تجھے اپنے اوپر گزرے حواد ثات زمانہ کی خبرلگ جائے جنہوں نے تیرے وجود کونقصان میں ڈالا ہے تو تجھے ہر آنے والا دن خوفز دہ کر دے اور ایک ایک لجہ تجھ پر بھاری ہوجائے کیکن اللہ تعالیٰ کی تدبیر ہر تدبیر سے بالا ہے، اس نے انسانوں کو دنیاوی لذتوں کی مٹھاس میں ڈال دیا ہے حالا نکہ بید دنیا خطل (سُمتہ) سے بھی زیادہ تلخی بنائی گئ جے۔ ہر مداح اس کی ظاہری شان وشوکت کی وجہ سے اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہے اور ہر واعظ اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہے اور ہر واعظ اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہے اور ہر واعظ اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہے اور ہر واعظ اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہے اور ہر واعظ اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہے اور ہر واعظ اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہے اور ہر واعظ اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہے اور ہر واعظ اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہے اور ہر واعظ اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہے اور ہر واعظ اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہے اور ہر واعظ اس کے عیوب سمجھنے میں ناکام رہا ہوں کہ میں اسے بھی نیاں کرتا ہے ، اے اللہ ایمیں نیکی کی ہدایت دے۔ آمین ا

کسی دانا سے دنیا اور بقائے متعلق پوچھا گیا؟ اس نے کہا: اس کا وقفہ چشم زدن جتنا ہے کیونکہ جو وقت گزرگیا ہے وہ واپس نہیں آئے گا اور مستقبل کا تجھے علم ہی نہیں ہے، ہردن گزشتہ رات کی خبر سنا تا ہے اور لمحات کے گزرنے کی داستان بیان کرتا ہے، حواد ثانی زمانہ انسان کو متواتر تغیر اور نقصان سے ہمکنار کرتے رہتے ہیں، زمانہ جماعتوں کو منتشر اور پراگندہ کردیتا ہے اور دولت کو منتقل کرتا رہتا ہے، امیدیں طویل اور زندگی تھوڑی ہے اور الله ہی کی طرف ہر کام کور جوع ہونا ہے۔

حضرت عمر بن عبدالعزیز رضی الله عنه نے خطبہ میں فر مایا: اے لوگو! تم ایک خاص مقصد کے لئے پیدا کئے گئے ہو، اگرتم اس کی تقد بیق کرتے ہوتو تم بے وقوف ہو کیونکہ تمہارے اعمال ویسے نہیں ہیں اور اگرتم اسے جھٹلاتے ہوتو ہلاکت میں پڑ گئے ہو، تمہیں اس دنیا میں ہمیشہ نہیں رہنا ہے بلکہ ایک جگہ سے دوسری جگہ شقل ہونا ہے، اے بندگانِ خدا! تم ایسے گھر میں رہتے ہوجس کا کھانا گلے میں پھندا ہے اور جس کا بینا اُنچھو لگنا ہے، اگرتم ایک نعمت کے حصول میں خوش ہوتے ہوتو دوسری نعمت کی جدائی تمہیں مغموم کردیتی ہے، اس گھر کو پہچانو جس کی طرف تم کو لوٹنا ہے اور جس میں تم کو ہمیشہ دہنا ہے، پھر آپ روتے ہوئے منبر سے اتر آگے۔

حضرت علی رَضِیَ اللّهُ عَنُه نے اپنے خطبہ میں فرمایا: ''میں تہہیں اللّٰہ تعالیٰ سے ڈرنے اور دنیا کوچھوڑنے کی وصیت کرتا ہوں ، دنیا تہہیں چھوڑنے والی ہے مگرتم اس سے چھٹے ہوئے ہو، وہ تبہارے اجسام بوسیدہ کرتی جا درتم اسے نیا کرنے کی فکر میں ہو، تہہاری مثال ایک مسافر کی ہے، دنیا میں تم سفر آخرت کے لیے زادراہ تیار کرنے آئے ہوجس طرح مسافر کوسفر کے درمیان آرام نہیں ہوتا اور وہ شب وروز طحِ منازل کے لئے قدم الیک اس طرح دنیا میں قر ارنہیں لینا جا ہے اور شب وروز اُ مجالِ صالحہ کے قدموں سے سفر آخرت طے کرنا جا ہے۔

بہت سے انسان ایسے ہیں جن کی اَجل قریب آگی اور پچھا یسے ہیں جنگی زند گیوں میں سے ابھی ایک ہی دن باقی ہے، اسے تلاش کرنے والا اس کی تمنامیں اسے چھوڑ جاتا ہے لہذا اس کے دکھ تکلیف پرواویلامت کرو کیونکہ بیسب چیزیں عنقریب ختم ہو نیوالی ہیں، اس کے مال و دولت پرخوثی نہ مناؤ کیونکہ بیع نقریب زائل ہو جائیگی، طالب دنیا پر جیرائگی ہے وہ دنیا کو تلاش کرر ہا ہے اور موت اس کی تلاش میں ہے، وہ موت سے غافل ہے مگر موت اس سے غافل نہیں ہے۔

حضرت فحمہ بن الحسین رَحْمَةُ اللهِ عَلیْه کا قول ہے کہ جب اہلِ علم فضل ،صاحب اوب ومعرفت اوگوں کو معلوم ہوا کہ الله تعالیٰ نے دنیا کی تکر مَّت کی ہے، وہ اس کے حضور میں انتہا کی ذلیل چیز ہے اور وہ اسے اپنے دوستوں کے لئے پسند خہیں کرتا اور حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے اس سے کنارہ کشی پیند فر مائی ہے اور صحابہ کرام دَضِی الله عَنْهِ ہواس کے فریب خبیں کرتا اور حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے اس سے درمیانی حصر لیا، باقی کوالله کی راہ میں بانٹ دیا، وہ قوُت لا یَہُوت (1) پرراضی ہوگئے اور باقی کو چھوڑ دیا، انہوں نے معمولی کپڑوں سے تن ڈھانیا، معمولی غذا سے بھوک مٹائی اور دنیا کوفائی اور آخرت کی طرف کو چھوڑ دیا، انہوں نے معمولی کپڑوں سے تن ڈھانیا، معمولی غذا سے بھوک مٹائی اور دنیا کوفائی اور ونیا کوفائی اور وہ کو بائی کوفریان اور آخرت کی طرف کوچ کر گئے جس کے متعلق انہیں کائی یقین تھا کہ وہ عنقریب اپنے جسموں سمیت ادھر ہی جا کیں گئے جہاں وہ طویل نعمیں حاصل کریں گے اور مصائب سے انہیں کوئی واسط نہیں ہوگا اور سب پھوالله کی تو فیق سے ہوگا جس کی پندا نہوں نے اپنی پندا نہوں نے اپنی پندا ورجی کی ناپیند یوگی کو نہوں نے ناپیند بھولیا ہے۔

اس قدرخوراک جس سے زندگی قائم رہے۔(اردو لغت ، ۱ ۹/۱ ۵۳)

اب 33

فضيلتِ قناعتً

فقیر کے لئے ضروری ہے کہ وہ قانع ہو، مخلوقات سے امیدیں وابسۃ نہ کرے، ان کے اموال پرنگاہ نہ رکھے اور نہ ہی مال ودولت کے حصول میں حریص ہو، بیاس وقت ممکن ہے جب انسان بقدر ضرورت اپنے کھانے پینے پہننے اور رہائش کی چیزوں پرمطمئن ہوجائے اور ہر معمولی چیز پراکتفا کرے اور اپنی امیدیں ایک دن یا ایک ماہ سے زیادہ طویل نہ کرے، کیونکہ کثرت کی طلب اورطُولِ اَئل سے قناعت کامفہوم ختم ہوجا تا ہے اور انسان حرص اور لا کی میں مبتلا ہوجا تا ہے، پھریہی طبح اور لا کی اسے بداخلاقی اور برائیوں پر آ مادہ کرتے ہیں جن سے انسان کی اچھی عادات تباہ ہوجاتی ہیں اور حص وطبع اس کی فطرتِ ثانیہ بن جاتے ہیں۔

فر مانِ نبوی ہے:اگرانسان کوسونے کی دوواد یاں بھی مل جائیں تو وہ تیسری کی تمنا کرےگا،انسان کے پیٹ کوقبر کی مٹی ہی پرکرتی ہےاورِالله تعالیٰ تو بہکرنے والے کی تو بہکوقبول فر مالیتا ہے۔ ⁽¹⁾

حضرتِ اَبُووَاقِدِ اللَّهُ عَنُهُ ہے مروی ہے کہ جب حضور صَلَی الله عَلَیْهِ وَسَلَم پروی نازل ہوتی تو ہم بغرضِ تعلیم حاضر ہوتے ،ایک مرتبہ ہم حاضر ہوئے وَ آپ نے فرمایا ؛الله تعالی فرما تا ہے: ہم نے مال ودولت نماز وزکو ہ کی اوائیگی کے لئے دیا ہے، اگرانسان کوسونے کی ایک وادی مل جائے تو وہ دوسری کی تمنا کرے گا اگر دوسری مل جائے تو تیسری کی آرز وکر ہے گا،انسان کے پیٹ کوقبر کی مٹی ہی بھر سکتی ہے اور الله تعالی ہر تو بہ کرنے والے کی توبیقول کر لیتا ہے۔ (2) مخرتِ ابوموسیٰ اشعری دَضِی الله عَنْه ہے مروی ہے: سور ہُراءت جیسی ایک اور سورت بھی نازل ہوئی تھی جو بعد میں اُٹھالی گئی، اس میں تھا کہ الله تعالی اس دین کی ایسی قوموں سے امداد کروائے گا جن کے لئے بھلائی میں کوئی حصہ

^{1}بخارى، كتاب الرقاق، باب ما يتقى من فتنة المال، ٢٢٩/٤، الحديث ٦٤٣٨

نہیں ہوگا اورا گرانسان کو دولت کی دووا دیاں دے دی جائیں تو وہ تیسری وادی کی تمنا کرے گا ،انسان کا پیٹ قبر کی مٹی ہی بھرے گی اور اللہ تعالیٰ تو ہر نیوالے کی تو ہر کوقبول کرتا ہے۔ ⁽¹⁾

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَا فَرِ مان ہے: دو بھو كے بھى سير نہيں ہوتے علم كا بھوكا اور دولت كا بھوكا _(2)

روصی ہا ہو ہوں ہے کہ انسان بوڑھا ہوجا تا ہے مگر دو چیزیں جوان ہوجاتی ہیں، حرص اور دولت کی محبت۔ (3)

چونکہ یہ خصلت انسان کو کمراہ کر دیتی ہے اس لئے اللہ تعالیٰ اوراس کے رسول صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے قناعت کی تعریف فرمائی ہے، چنانچے فرمانِ نبوی ہے کہ اس شخص کے لئے خوشخری ہے جو اسلام کے راستہ پر چلا اور زندگی کی معمولی گزران پر قناعت کرلی۔ (4)

فرمانِ نبوی ہے: قیامت کے دن ہرامیراور فقیریۃ مناکرے گاکہ اسے دنیا میں معمولی غذامیسر آتی۔ (⁵⁾ فرمانِ نبوی ہے کہ تؤ نگری مال کی کثرت سے نبیس ہے بلکہ فیقی مالداری دل کی بے پروائی ہے۔ ⁽⁶⁾ (تو نگری بہ دل است نہ بہمال)

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے حص اور دنیا کی بہت جستجو کرنے سے منع فرماتے ہوئے ارشاد فرمایا کہ اے لوگو! اچھے طریقے سے رزق حاصل کرو کیونکہ بندے کو وہی کچھ ملتا ہے جواس کی قسمت میں لکھ دیا گیا ہے اور کوئی انسان اپنا رزق ختم کئے بغیر دنیا سے نہیں جائے گا۔⁽⁷⁾

^{1}مشكل الآثار للطحاوي، الجزء الثاني ، ١ /٢٨٧، الحديث ٢١٧٢-٢١٧٦

١٠٢٧٩ الحديث ١٠٢٩ الحديث والسبعون...الخ، باب في الزهد...الخ، ٢٧١/٧، الحديث ١٠٢٧٩

₃.....مسلم كتاب الزكاة، باب كراهة الحرص على الدنيا، ص ٢١٥، الحديث ١١٣- (١٠٤٦) و ١١٥_ (١٠٤٧) ماخوذاً

^{4} ترمذي، كتاب الزهد ، باب ماجاء في الكفاف ... الخ، ٤/٥٦ ، الحديث ٢٣٥٦

^{5}ابن ماجه، كتاب الزهد، باب القناعة، ٤ / ٢ ٪ ؟ ، الحديث . ٤ ١ ٪

^{6}بخارى، كتاب الرقاق ، باب الغنى غنى النفس، ٢٣٣/٤، الحديث ٢٤٤٦

الحديث ١٠٤٠٥ - ١٠٤٠٥ و البيهة عن كتاب البيوع، باب الإجمال في طلب الدنيا...الخ،٥/٤٣٤، الحديث ١٠٤٠٥ - ١٠٤٠٥ و شعب الايمان للبيهة عن ٢٨٨/٧، الحديث ١٠٣٨

Y

مروی ہے کہ حضرتِ موسیٰ عَدَیْهِ السَّلام نے رہِ جلیل سے سوال کیا: تیرا کونسا بندہ زیادہ غنی ہے؟ ارشادِر بانی ہوا:جو میرے عطا کردہ رزق پر قناعت کرتا ہے، پھر پوچھا: عادل کون ہے؟ رب تعالی نے فرمایا: جوابیخ آپ سے انصاف کرتا ہے۔ (1)

حضرت عبدالله بن مسعود رَضِى اللهُ عَنه سے مروی ہے: حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: روح القدس نے مجھے خبر دی ہے کہ کوئی شخص دنیا سے اپنارزق پورا کئے بغیر نہیں جائے گالہذاالله تعالی سے ڈرواوررزق حلال حاصل کرو۔ (2) حضرت ابو ہر ریرہ رَضِیَ اللهُ عَنه سے مروی ہے کہ مجھے حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: جب مجھے بھوک گلتو ایک روٹی اور بانی کا پیالہ تیرے لئے کافی ہے اور دنیا کی مزید خواہش ہلاکت ہے۔ (3)

حضرت ابوہر ریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے کہ مجھے حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فرمایا: پر ہیز گار بن! توسب سے برا اعابد ہوگا، قناعت کر! توسب سے برا اشکر گزار ہوگا، جوابیخ لئے پیند کرتا ہے وہی دوسروں کے لئے پیند کر! تومومن ہوگا۔ (4)

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے لا فِی سے منع فرمایا ہے چنانچہ حضرت ابوا یوب انصاری دَضِی اللهُ عَنْه سے مروی ہے کہ ایک بَدَوی نے حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں عرض کی: مجھے ایک مخضر نصیحت سیجے ! آپ نے فرمایا: ہرنماز کوزندگ کی آخری نماز سیجھ کر پڑھ! کوئی ایسی بات نہ کرجس پرکل معذرت کرنی پڑے اور لوگوں کے مال سے امید نہ رکھ۔ (5) حضرت عوف بن ما لک الانتجعی دَضِی اللهُ عَنْه سے مروی ہے کہ ہم سات ، آٹھ یا نو آدمی حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے ساتھ بیٹھے ہوئے تھے ، آپ نے فرمایا: تم رسول الله کی بیعت نہیں کرتے ؟ چنانچہ ہم نے ہاتھ بڑھا کر بیعت کی ، ہم میں سے کسی نے پوچھا: یارسول الله ! آپ نے ہم سے سی چیزی بیعت لی ؟ آپ نے فرمایا: یہ کہ الله کی عباوت کرو، اسے میں چیزی بیعت لی ؟ آپ نے فرمایا: اور لوگوں سے کسی چیز کا الشریک سمجھو، پانچ نمازیں پڑھو، سنوا وراطاعت کرو، ایک بات آپ نے آ ہستہ کی ، پھر فرمایا: اور لوگوں سے کسی چیز کا الشریک سمجھو، پانچ نمازیں پڑھو، سنوا وراطاعت کرو، ایک بات آپ نے آ ہستہ کی ، پھر فرمایا: اور لوگوں سے کسی چیز کا

^{●}الزهد لهناد ، باب المتحابين، ١ /٢٧٧، الحديث ٤٨٩ و تاريخ مدينه دمشق ، ١ ٣٩/٦١

^{2}شرح السنة ، كتاب الرقاق، باب التوكل على الله ، ٣٣٠/٧، الحديث ٤٠٠٦، ملخصاً

الحديث ١٠٣٦٦ الحادي والسبعون...الخ، باب في الزهد...الخ، ٢٩٥/٧، الحديث ١٠٣٦٦

^{4}ابن ماجه ، كتاب الزهد، باب الورع والتقوى، ٤٧٦/٤، الحديث ٢١٧٤

^{5} مسند احمد، حديث ابي ايوب الانصاري ، ۹/ ، ۱۳ ، الحديث ۲۳۰۵۷

سوال نہ کرو۔رادی کہتا ہے کہ ہم میں سے پچھالیے بھی تھے جن کا اگر تازیا نہ گرجا تا تووہ کسی سےاٹھا کردینے کا سوال نہ کرتے۔ ⁽¹⁾

حضرت ِعمر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا فرمان ہے، طبع کا ترک، فقر اور لوگوں سے ناامیدی عنی ہے، جولوگوں کے مال ودولت سے ناامیدر ہتا ہے وہ سب سے بے پر واہو جاتا ہے۔

کسی داناسے مالداری کے معنی پو جھے گئے تو اس نے جواب دیا کہ مختصرامیدیں اور معمولی گزران پرراضی ہونے کا نام غناء ہے، اسی لئے کہا گیا ہے: _

العیش ساعات تمر و خطوب ایام تکر اقنع بعیشک ترضه واترک هواک تعیش حر فلرب حتف ساقه ذهب و یاقوت و در

- ﴿1﴾عيش كى صرف چند گھڑياں ہيں اور كار ہائے نماياں انجام دينے كيلئے وقت كم ہے۔
- ﴿2﴾ تو قناعت كراس عيش پر جو تيمو كو حاصل ہے اور خواہشات نفسانی كوچھوڑ كرآ زاد ہو جااور عيش كى زندگى بسركر
 - ﴿3﴾ بہت ہے وہ لوگ جن كوموت آئى وہ سونا جاندى اور تعل وجوا ہر چھوڑ كرمر كئے۔

حضرت محمد بن واسع دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ خَشَك روثَى بإنى مين بِعُلُوكر كھاتے اور كہتے: جواس پر قناعت كرلے وه كسى كافتاج نہيں ہوگا۔

حضرت سفیان کو حَمَهُ اللهِ عَلیْه کا قول ہے کہ تمہارے لئے بہترین دولت وہ ہے جوتمہارے قبضہ میں نہیں ہے اور قبضہ میں آئی ہوئی دولت میں وہ بہترین دولت ہے جوتمہارے ہاتھ سے نکل گئی ہے۔

حضرت ابن مسعود رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے ہر دن ایک فرشتہ پکار کر کہتا ہے کہ اے انسان! گمراہ کرنے والے بہت سے مال سے وہ معمولی مال بہتر ہے جو تخفیے زندہ رہنے میں مدددے۔

حضرت ِسُمَيْط بن عُجُلان دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كافر مان ہے كەاپ انسان تيرابالشت كھرپيٹ تخفيجهنم ميں نەلے جائے۔

1مسلم، كتاب الزكاة، باب كراهة المسألة للناس، ص ١٩٥، الحديث ١٠٨_ (١٠٤٣)

کسی دانا سے پوچھا گیا: تیرامال کیا ہے؟ اس نے کہا: ظاہر میں یا کیزگی، باطن میں نیکی اورلوگوں سے ناامیدی۔ مروی ہے کہ ربِّ دوالہ حلال نے انسان سے فرمایا: اگر تحقیے ساری دنیامل جاتی تب بھی تحقیے اس دنیا سے دووقت کی خوراک ملتی، اب جب کہ میں نے دنیا سے مخقے صرف خوراک دی ہے اوراس کا حساب دوسروں پرر کھ دیا ہے تو میں نے یہ تجھ پراحسان کیا ہے۔ (1)

حضرت ابن مسعود رَضِیَ اللهُ عَنْه کا قول ہے: جبتم کوئی حاجت طلب کروتو تھوڑی مانگو، اتنانہ مانگو کہ دوسرے پر وبال بن جاؤ کیونکہ جو کچھتمہارانصیب ہےوہ تہہیں ضرور ملے گا۔

بَنُواُمَیَّ کے ایک حاکم نے حضرت اِبوحازِم رَحْمَهٔ اللهِ عَلَیْه کی طرف خطالکھا جس میں ان سے سی ضرورت کے متعلق بوچھا گیا تا کہ وہ اسے پوری کر دیں۔ ابوحازِم رَحْمَهُ اللهِ عَلَیْه نے جواب میں لکھا، میں نے اپنی ضرور تیں اپنے مالک کی بارگاہ میں پیش کی ہوئی ہیں، جن کووہ پورا کر دیتا ہے، خوش ہوجا تا ہوں اور جن کووہ روک دیتا ہے اس سے قناعت کر لیتا ہوں۔ ہوں۔

کسی دانا ہے بوچھا گیا کہ کونسی چیز دانا کے لئے باعث خوشی اور دکھ دور کرنے کا سامان ہے؟ دانانے جواب دیا کہ دانا کے لئے سب سے بڑی خوشی نیک عمل اورغم دور کرنے میں اس کامد د گار اللّٰہ کی رضا پر راضی رہنا ہے۔

ایک دانا کا قول ہے: میں نے لوگوں میں سب سے غمز دہ حاسد کو، سب سے بہترین زندگی والا قناعت پیند کو، سب سے زیادہ مصائب پر صبر کرنے والا لا کچی کو، سب سے زیادہ خوش تارک دنیا کو اور سب سے زیادہ پشیمان حد سے تجاوز کرنے والا عالم کو یایا ہے۔ اسی موضوع پر کہا گیا ہے: _

ارفه ببال فتى امسى على ثقة ان الذى قسم الارزاق يرزقه

فالعرض منه مصون لا يدنسه والوجه منه جديد ليس يخلقه

ان القناعة من يحلل بساحتها لم يلق في دهره شيئا يورقه

﴿1﴾ جب جوان اس بات برهمل اعتاد كرتا ب كرراز ق مطلق اسے ضرور رزق دے گا۔

^{1}اتحاف السادة المتقين ، كتاب ذم البخل...الخ ، ١/٩ ، و الكشكول لبهاء الدين العاملي ، ١٦٣/٢

﴿2﴾..... تواس کی عزت میلی نہیں ہوتی اور نہ ہی اس کا چیرہ کھی پرانا ہوتا ہے۔

﴿3﴾.....جۋمخص قناعت اختیار کرلیتا ہےا ہے بھی کسی چیز کی پر واہنہیں ہوئی اوراس پر بھی د کھ کا ساپنہیں پڑتا۔

ایک اور شاعر کہتا ہے: _

حتى متى انا في حل و ترحال وطول سعى وادبار واقبال

ونازح الدار لاانفك مغتربا عن الاحبة لايدرون ماحالي

بمشرق الارض طورا ثم مغربها لايخطر الموت من حرصي على بالي

ولو قنعت اتاني الرزق في دعة ان القنوع الغني لاكثرة المال

﴿1﴾ كبتك مين اس طرح سفركرتار مول گااورز بردست جدوجهداورييآ مدورفت جاري ركھول گا۔

﴿2﴾ میں گھر سے دور ہمیشہ دوستوں سے پوشیدہ رہتا ہوں ، انہیں میر بے حالات کاعلم نہیں ہوتا۔

﴿3﴾ میں بھی مشرق میں ہوتا ہوں اور بھی مغرب میں ،حرص کاغلبہ یوں ہے کہ میر دول میں بھی موت کا خیال ہی نہیں آتا۔

﴿4﴾.....اگر میں قناعت کرتا تو خوشحالی کی زندگی بسر کرتا کیونکہ قیقی تو نگری قناعت میں ہے کثریتے مال ودولت تو نگری نہیں ہے۔

حضرت عمروض الله عنه کاارشاد ہے کہ کیا میں تہمیں نہ بتلاؤں کہ میں الله تعالیٰ کے مال سے کیا کچھ لینا حلال ہمجھتا ہوں؟ سنو! سردی اور گرمی کے لئے دوجیا دریں اور اس کے علاوہ مجھے جج ،عمرہ اور غذا کے لئے قریش کے معمولی جوان کی شکم سیری کے بقدر غذا کی فراہمی ۔ لوگو! میں مسلمانوں سے اعلیٰ اور ارفع نہیں ہوں ، بخدا میں نہیں جانتا کہ اتنالینا بھی جائز ہے یا نہیں؟ گویا آپ اتن ہی مقدار میں بھی شک فر مارہ ہے تھے کہ کہیں یہ قناعت کے دائرہ سے خارج تو نہیں ہے؟ جائز ہے یا نہیں؟ گویا آپ اتن ہو اور اس چیز کے مطلوب ہو جو بھی ایک بَدَوِی نے اپنے بھائی کوحص سے روکتے ہوئے کہا: تم دنیا کے طالب ہواور اس چیز کے مطلوب ہو جو بھی میں تمہاری ہو چی ہے ، گویا کہ غائب چیز تمہارے سامنے اور حاضر چیز میں میں تارک دنیا کورزق پاتے ہوئے نہیں دیکھا ہے ، اسی مضوع پر کسی شاعر نے کہا ہے :

اداك يزيدك الاثراء حرصا على الدنيا كانك لا تموت

فهل لك غاية ان صرت يوما اليها قلت حسبي قد رضيت

﴿1﴾مین دیکیدر باہوں که تیراتمول تیرے حرص کو بڑھار باہے گویا کہ تو نہیں مرے گا۔

﴿2﴾ بھی تواپی حرص ہے رک کریبھی کہے گا کہ بس مجھے پیکا فی ہے اور میں اس فدر پر راضی ہوں۔

حضرتِ عَنِی رَحْمَهُ اللهِ عَلَیْه کہتے ہیں کہ ایک آ دمی نے چنڈول (چڑیا) کوشکارکیا، چڑیا نے کہا: تم میرا کیا کروگ؟
اس آ دمی نے کہا: ذرج کر کے کھا وُ نگا، چڑیا نے کہا: بخدا! میر سے کھانے سے تمہارا پیٹ نہیں بھر ہے گا، میں تمہیں تین ایسی باتیں بتاؤں گی، جومیر سے کھانے سے کہیں بہتر ہیں، ایک تو میں تم کواس قید کی حالت میں ہی بتاؤں، دوسری درخت پر بیٹھ کراور تیسری بہاڑ پر بیٹھ کر بتاؤں گی۔

آ دمی نے کہا: چلوٹھیک ہے پہلی بات بتاؤ! چڑیا نے کہا: یا در کھوگزری بات پرافسوس نہ کرنا، آ دمی نے اسے چھوڑ دیا، جب وہ درخت پر جا کر بیٹھ گئ تو آ دمی نے کہا: دوسری بات بتاؤ! چڑیا نے کہا: ناممکن بات کوممکن نہ بجھنا۔ پھر وہ اڑ کر ہیا ٹر پر جا بیٹھی اور کہنے گئی: اے بدنصیب! اگر تو مجھے ذیح کر دیتا تو میر بے پوٹے سے بیس بشقال کے دوموتی نکلتے ، بیس کر وہ محف افسوس سے اپنے ہونے کا شتے ہوئے کہنے لگا کہ اب تیسری بات بتاد ہے! چڑیا بولی: تم نے تو پہلی دوکو بھلادیا ہے، اب تیسری بات کس لئے پوچھتے ہو؟ میں نے تم سے کہا تھا کہ گزشتہ بات پر افسوس نہ کرنا اور ناممکن چیز کوممکن نہ سمجھنا، میں تو اپنے گوشت ،خون اور پروں سمیت بھی بیس مثقال کی نہیں ہوں چہ جائیکہ میر بے پوٹے میں بیس بیس مثقال کے دوموتی ہوں ، یہ کہا اور وہ اڑگئی۔

یانسان کے انتہائی حریص ہونے کی مثال ہے کیونکہ وہ بھی لاچ میں ناممکن کومکن سیحصتے ہوئے راہ حق سے بھٹک جاتا ہے۔ حضرت ابن بھاک دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه کا قول ہے: امیدیں تیرے دل کا جال اور بیروں کی بیڑیاں ہیں، دل سے امیدیں نکال دے، تیرے پاؤں بیڑیوں سے آزاد ہوجا کینگے۔

حضرت ابو محمد البزيدي دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول بي كمين خليفه بإرون الرشيد كي بإن آيا تووه ايك ايسي كاغذكو براه

ر ہاتھا، جس پرآ بے ذَریسے کیچھ کھھا ہوا تھا،خلیفہ نے جب مجھے دیکھا تومسکرا دیا۔ میں نے کہا: امیر المونین کوئی خاص بات ہے؟ کہا: میں نے بنواُ مَیَّ کے خزانے میں بیدوشعر پائے جو مجھے بہت اچھے لگے ہیں اور میں نے ان میں ایک اور شعر کا اضافہ کر دیاہے: _

اذا سد باب عنك من دون حاجة فدعه لاخرى ينفتح لك بابها

فان قراب البطن يكفيك ملؤه ويكفيك سوات الامور اجتنابها

ولاتك مبذالا لعرضك واجتنب ركوب المعاصى يجتنبك عقابها

﴿1﴾ جب تیری حاجت روائی کا دروازه تجھ پر بند ہوجائے تو رُک جا، کوئی اور تیری حاجت روائی کردے گا۔

﴿2﴾ پیٹ کابندہ ہونااس کے بھرنے کے لئے کافی ہے اور کام کی برائیوں سے بچنے کے لئے ان سے اجتناب ضروری ہے۔

﴿3﴾اوراپنے مقصد کو حاصل کرنے کے لئے رکیک حرکتیں مت کراورار تکابِ معاصی سے پر ہیز کرجس کی وجہ سے تو سزا سے

محفوظ ہوجائیگا۔

حضرت عبدالله بن سلام رَضِيَ اللهُ عَهُ نَ حضرت كَعْبُ وَضِيَ اللهُ عَهُ سے بوچھا كو علاء كِعلم حاصل كر لينے كے بعد كونى چيزان كے دلوں سے علم نكال ليتى ہے؟ حضرت كعب رَضِيَ اللهُ عَنهُ نے كہا: لا لج ہرص اور لوگوں كے آگے ہاتھ كھيلانا كسى خض نے حضرت فَضَيْل رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه سے اس قول كى تشرح جا ہى توانہوں نے جواب دیا كو انسان لا لج میں جب كى چيز كو اپنا مطلوب ومقصود بنالیتا ہے تواس كا دین رخصت ہوجا تا ہے۔ حرص بدہ كدانسان بھى اِس چيز كى اور بھى اُس چيز كى طلب میں رہتا ہے بہاں تک كہ وہ سب کچھ حاصل كرنا چا ہتا ہے اور كھى اس مقصد كے حصول كے لئے تيراسانقة مختلف لوگوں سے پڑے گا، جب وہ تيرى ضرورتيں پورى كريں گوتو تيرى ناك ميں كيش ڈال كر جہاں چا ہيں تيراسانقة مختلف لوگوں سے پڑے گا، جب وہ تيرى ضرورتيں پورى كريں گوتو تيرى ناك ميں كيش ڈال كر جہاں چا ہيں گے اور تورشوا ہوجائے گا اور اسى محبت دنیا كے باعث جب بھى توان كے سامنے سے گزرے گا توانہيں سلام كرے گا اور جب وہ نيار ہوں گے ، تو عيا دت كوجائيگا اور بہ تيرے تمام افعال خدا كى رضا كے لئے نہيں ہوں گے۔ تيرے لئے بہت اچھا ہوتا اگر توان لوگوں كافيتا ہے نہ ہوتا۔

اب 34

🕇 فقراء کی فضیلت

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كافر مان ہے كہاس اُمت كےسب سے بہترين لوگ فقراء ہيں اورسب سے پہلے جنت ميں داخل ہونے والے كمز ورلوگ ہيں۔ (1)

فرمانِ نبوی ہے: میری دوبا تیں ہیں، جوانہیں پیند کرتا ہے وہ مجھے پیند کرتا ہے جوانہیں بُر اسمجھتا ہے وہ مجھے بُرا سمجھتا ہے؛ فقراور جہاد۔⁽²⁾

مروی ہے کہ جبریل عَدَیْہ السَّلام آپ کی خدمت میں حاضر ہوئے اور کہا:الله تعالی آپ کوسلام فرما تا ہے اور فرما تا ہے کہ اگر آپ چاہیں تو میں پہاڑسونے کا بنادوں! جو آپ کے ساتھ ساتھ رہے ۔حضور صَلَّی اللهُ عَدَیْهِ وَسَلَّم نے چند لمحے خاموش رہنے کے بعد فرمایا کہ جبریل! یہ دنیا تو اس کا گھر ہے جس کا کوئی گھر نہ ہو، یہ اس کی دولت ہے جس کے پاس کوئی دولت نہ ہواور اسے وہی جمع کرتا ہے جو بے وقوف ہو۔ جبریل ہولے: اے الله کے نبی!الله تعالی آپ کو اسی حق وصدافت پرقائم رکھے۔

مروی ہے کہ حضرتِ عِیسیٰ عَلَیْہِ السَّلام اثنائے سفر میں ایک ایسے خص کے پاس سے گزرے جو کمبل لیعیٹے سور ہاتھا، آپ نے اسے جگا کرفر مایا: اے سونے والے اٹھ! اور اللہ کو یا دکر! اس شخص نے کہا: تم مجھ سے اور کیا جا ہے ہوکہ میں نے دنیا کودنیا داروں کے لئے چھوڑ دیا ہے۔ آپ نے فر مایا: تو پھراے میرے دوست! سوجا۔

حضرتِ موسیٰ عَلَیْهِ السَّلام ایک ایسے تخص کے قریب سے گزرے جواینٹ کا تکبیہ بنائے ، کمبل میں لیٹا ہواز مین پر

^{1}فردوس الاخبار،٢/٢٨،الحديث ٢٩٢١

^{2}طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٣٦٦/٦ و بريقة محمودية في شرح طريقة محمدية ،٣٩/٣

سور ما تھااوراس کی داڑھی اور تمام چہرہ غبار آلود ہور ما تھا۔موسیٰ عَلَيْهِ السَّلام نے عرض کی: اے رب تعالیٰ! تيرايه بنده دنيا میں برباد ہو گیا۔الله تعالیٰ نے موسیٰ عَلَیْهِ السَّلام کی طرف وحی کی اور فرمایا بتہہیں پیتے نہیں! جب میں کسی بندے برایخ کرم کے درواز کے مکمل طور پر کھول دیتا ہوں ،اس سے دنیا کی الفت ختم کر دیتا ہوں۔

حضرت ابورافع رضي الله عنه سے مروی ہے کہ حضور صلَّى الله عليه وَسَلَّم كاايك مهمان آيا مرآ ي كى ياساس كى میز بانی کے لئے کچھ نہ تھا،حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَ سَلَّم نے مجھے خیبر کے ایک یہودی کے پاس بھیجااور فرمایا: اسے کہو کہ رجب المرجب کے جاندتک ہمیں قرض یا ادھار میں آٹادے دے۔ میں اس یہودی کے پاس گیا تو اس نے کہا: کوئی چیز گروی ر کھوتب آٹا ملے گا۔ میں نے آپ کوخبر دی تو آپ نے ارشاد فر مایا: بخدا! میں زمین وآسان کا امین ہوں ،اگروہ قرض یا ادھار میں آٹا دے دیتا تو میں ضرور واپس کرتا، لومیری بیزرّہ لے جاؤ اور اس کے پاس گروی رکھ دو۔ جب میں زِرَہ لے كرنكلاتو آپ كى تىلى كے لئے بير آيت نازل ہوئى:

اوراے سننے والے اسکی طرف اپنی آئکھیں نہ لگا جوہم نے کا فروں

لاتَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَى مَامَتَّعْنَابِهَ أَزُوَاجًا

کے جوڑوں (زن دشوہر)کو ہر تنے کیلئے دی ہے جیتی دنیا کی تازگی۔

فر مانِ نبوی ہے کہ فقرمومن کے لئے گھوڑے کے منہ برحسین بالوں سے بھی زیادہ خوبصورت ہے۔ ⁽²⁾ فر مانِ نبوی ہے کہ جس کاجسم تندرست ، دل مطمئن ہے اور اس کے پاس ایک دن کی غذا موجود ہے تو گویا اسے (کا ئنات کی)ساری دولت مل گئی ہے۔

حضرت كَعْبُ الأحْبار وَضِي اللهُ عَنْه يهم وي به كمه الله تعالى في موسى عَلَيْهِ السَّلام عدفر ما يا: جب تو فقر كوآتا ديكھے تو كہنا خوش آمديد! اے نيكوں كے لباس!

حضرت ِعَطَاءِ خُرَّاسَا نی دَحْمَهُ اللهِ عَلَیْه ہے منقول ہے:الله تعالیٰ کے ایک نبی کاساحلِ دریا ہے گزرہوا، وہاں انہوں

العمان: ابن آنکواٹھا کراس چزکونہ دیکھوجوہم نے ان کے کچھ جوڑوں کو برتنے کودی۔ (پ٤١٠ الحج : ٨٨)..... مسند

2المعجم الكبير، ٧/٥٥، الحديث ٧١٨١

البزار، مسند ابي رافع مولي...الخ،٩/٥١٣،الحديث٣٨٦٣

3ترمذي ، كتاب الزهد، باب ٣٤، ٤/٥٥ ١ ، الحديث ٢٣٥٣

نے دیکھاایک شخص مجھلیوں کا شکارکرر ہاہے،اس نےالله تعالیٰ کا نام لے کردریا میں جال ڈالامگر کوئی مجھلی نہیسنی۔ پھر ا نہی نبی کا گزرایک دوسر ٹے خص کے پاس سے ہوا جو مجھلیوں کا شکار کرر ہاتھا،اس نے شیطان کا نام لے کراپنا جال پھینگا، جب جال کھینچا تو وہ مجھلیوں سے بھرا نکلا۔اللّٰہ کے نبی نے بارگاہ رب العزت میں عرض کی:اے عَالِمُ الْغَیْب!اس میں کیا راز ہے؟الله تعالی نے فرشتوں کو تھم دیا کہ میرے نبی کو اُن دو شخصوں کا مقام آخرت دکھلا وُ، جب انہوں نے پہلے مخص كالله تعالى كے حضور عزت ووقاراور دوسر شخص كى بحرمتى ديھى توبساختە كہما تھے: إلله الْعَالَمِينُ! ميں تيرى تقسیم برراضی ہوں۔

فر مانِ نبوی ہے: میں نے جنت کودیکھااس میں اکثر فقراء تھے، میں نے جہنم کودیکھااس میں اکثر مالداراورعورتیں

ایک روایت میں ہے کہ حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم نے دریافت کیا: مالدارکہاں ہیں؟ تو مجھے بتلایا گیا آنہیں مالداری نے گرفتار کررکھا ہے۔⁽²⁾

ایک دوسری حدیث میں ہے: میں نے جہنم میں اکثر عور تول کود کچھر کہا:ایسا کیوں ہے؟ تو مجھے بتلایا گیا بیان کی سونے اورخوشبوؤل سے محبت کی وجہ سے ہے۔ ⁽⁸⁾

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِر مات عِينِ: " فقر" ونيا ميس مومن كے لئے تخفہ ہے۔ (4)

ایک روایت میں ہے:انبیائے کرام میں سب ہے آخر حضرت سلیمانء لیّو السَّلام جنت میں داخل ہوں گے کیونکہ وہ دنیاوی دولت اوراس کی شاہی رکھتے تھے اور صحابہ میں حضرت عبدالرحمٰن بنعوف دَحِب اللّٰهُ عَنْه اینے شَمُوُّل کی وجہ ہے ب سے آخر میں جنت میں جائیں گے۔ (⁵⁾ دوسری حدیث میں ہے کہ میں نے انہیں (حضرت عبدالرحمٰن بن عوف کو) گھٹنوں کے بل جنت میں داخل ہوتے دیکھا۔⁽⁶⁾

- € مسند احمد، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص ، ٢/٢٪ ٥، الحديث ٦٦٢٢ 2قوت القلوب ، ٤/١ . ٤
 - 3....قوت القلوب، ٢/٢٤ و كشف الخفاء، ١/٥٥/١ الحديث١٢٨٦
 - 4.....فردوس الاخبار، ١/٥٠٥، الحديث ٢٢١٩
 - المعجم الاوسط ، ١٣٩/٣، الحديث ١١١٢ ما خوذاً ليس ذكر عبد الرحمن بن عوف
 - 6المعجم الكبير، ١ / ٢٩ ١ ، الحديث ٢٦٤

حضرت عيسلى عَلَيْهِ السَّلام كا قول ہے كه مالدار بہت وشوارى كے ساتھ جنت ميں داخل ہوگا۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَابِلِ بِيتِ دَضِىَ اللَّهُ عَنْهُمُ سے مروی ہے: آپ نے فرمایا: جب الله تعالیٰ سی انسان سے محبت کرتا ہے تو اس کے لئے ذخیرہ کر سے محبت کرتا ہے تو اس کے لئے ذخیرہ کر دیتا ہے۔ پوچھا گیا: حضور ذخیرہ کیسے ہوتا ہے؟ آپ نے فرمایا: اس انسان کے مال اور اولا دمیں سے پچھ باقی نہیں رہتا۔ (1)

حدیث شریف میں ہے کہ جب تو" فقر" کواپی طرف متوجہ پائے تواسے 'خوش آمدید' کہاور'' اے نیکوں کی علامت' کہہ کراس کا خیر مقدم کراور جب تم مال ودولت کواپی طرف آتاد یکھوتو کہو، دنیا میں مجھے یہ کسی گناہ کی جلدی سزامل رہی ہے۔ (2)

حضرت موسی عَلَیْهِ السَّلام نے الله تعالی سے عرض کیا: الهی امخلوق میں تیرے دوست کو نسے ہیں تا کہ میں ان سے محبت کروں ،الله تعالی نے فر مایا: فقیرا ورفقر۔

حضرت عیسلی عَلیْهِ السَّلام کا فرمان ہے: میں فقر کودوست رکھتا ہوں اور مالداری سے نفرت کرتا ہوں اور آپ کو'' اے سکین'' کہہ کر بلایا جاناسب ناموں سے احیصا لگتا۔

جب عرب کے سر داروں اور مالداروں نے حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے کہا: آپ اپنی مجلس میں ایک دن ہمارے لئے اور ایک دن ان فقراء کے لئے متعین سیجے ، پس وہ ہمارے دن میں نہ آ کیں اور ہم ان کے دن میں نہیں آ کیں گے۔ فقراء سے ان کی مراد حضر سے بلال ، حضر سے سلمان ، حضر سے صُہُیْب ، حضر سے آبُوؤ ر ، حضر سے خَبَّ ب بن الاَرَت ، حضر سے مَثَّلُ ربن یَا سِر ، حضر سے آبُوؤ ر ، حضر سے آبُو مُر کُیرہ اور اصحابے صُفَّہ کے فَقُر اء دِ صُوانُ اللهِ عَلَیْهِم اَجْمَعِیْن سے حضور صَلَّى اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے اس بات کو مان لیا کیونکہ ان فقر اء کے لباس اون کے سے اور پیدنہ بات کو مان لیا کیونکہ ان فقر اء کے لباس سے ان دولت مندول کو بد ہو آتی تھی ، ان فقر اء کے لباس اُون کے سے اور پیدنہ آنے کی صورت میں ان کے کیڑوں سے جو ہو آتی تھی وہ آفر ع بن حابس السّمِ شِمِی ، مُیکینَہ بن حَصْن الفرّا ربی ، عَبَّاس بن مِرْوَاس السامی اور دیگر اُغنیا نے عَرَب کو بہت چیش بہ جَبِیں کر دیا کرتی تھی چنانچے حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی اس بات بر رضا مندی السامی اور دیگر اُغنیا نے عَرَب کو بہت چیش بہ جَبِیں کر دیا کرتی تھی چنانچے حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی اس بات بر رضا مندی

❶كنزالعمال، كتاب الفراسة ٦/٦، الجزء الحادي عشر، الحديث ٣٠٧٩ (راوي ابوعقبه خولاني)

^{●}فردوس الاخبار،٣٠/١٧٠ الحديث ٦٩٤ عو حلية الاولياء، ابراهيم بن عبدالله، ٢/٦ ع٣،الحديث ٥٨٨٤ م

کے باعث قرآنِ مجید کی بیآیات نازل ہوئیں:

وَاصْبِرْنَفْسَكَمَعَ الَّذِينَ يَدُعُونَ مَ بَيُّهُمْ بِالْغَلُوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجُهَدُولا تَعْدُعَيْك

عَنْهُمْ ۚ تُرِيدُ نِينَةَ الْحَلِوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلا تُطِعْمَنَ اغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْمِ نَاوَاتَّبَعَ هَوْ لهُ وَكَانَ

اَمُرُدُ فُورُطًا ﴿ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ مَّ بِكُمْ * فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيَكُفُورُ الْ

ایک روز حضرت ابن اُمِّ مَکُتُوم رَضِیَ اللَّهُ عَنُه نے حضور کی خدمت میں حاضری کی اجازت طلب کی ،اس وقت آپ کے پاس ایک قریش سردار بیٹھا ہواتھا، (2) آپ کوابن اُمِّ مَکَتُوم کی آمد پہندیدہ معلوم ہیں ہوئی ، تب الله تعالیٰ نے بیآیات نازل فرمائیں:

عَبَسَ وَتُولِّي أَنْ جَاءَهُ الْا عَلَى أَوْمَايُدْ مِنْكَ

لَعَلَّهُ يَدُّكُنَّ كُنَّ أَوْيَنَّاكُمُّ فَتَنْفَعَهُ اللِّ كُلِّي كُلِّي كُامًا

مَنِ اسْتَغْنَى فَ فَانْتَ لَهُ تَصَدُّى ۚ مَنِ اسْتَغْنَى فَ فَانْتَ لَهُ تَصَدُّى ۚ

اس نے تنوری چڑھائی اور منہ موڑلیا جب اسکے پاس نابینا آیا اور کس چیز نے مہیں یہ معلوم کرایا کہ ثایدوہ پاک ہوجا تایا نصیحت منتا پس اسے نصیحت فائدہ دیتی جُوخُص بے پروائی کرتا ہے تم اسکی خاطرا سے رو کتے ہو۔

یہاں نابینا سے مراد حضرتِ ابن اُمَّ مکتوم _{دَ طِن}ی اللَّهُ عَنْه اور بے پرِ واُثخص سے مرادوہ قریشی سردار ہے جوحضور کی خدمت میں آیا ہواتھا۔

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم عصمروى ب: قيامت كون ايك بند عكولا ياجائ كا الله تعالى اس ساس طرح

- السنتو جمه کنز الایمان: اوراپی جان ان سے مانوس رکھوجو جو جو ام اپنے رب کو پکارتے ہیں ، اسکی رضا چاہتے اور تمہاری آ تکھیں انہیں چھوڑ کراور پر نہ پڑیں ، کیاتم و نیا کی زندگی کا سڈگار (زینت) چاہو گے اوراس کا کہانہ مانو جس کا ول ہم نے اپنی یاد سے غافل کر دیا اور وہ اپنی خواہش کے پیچھے چلا اوراس کا کام حدسے گزرگیا اور فر مادو کہ جی تمہارے رب کی طرف سے ہے تو جو چاہے ایمان لائے اور جو چاہے کفر کرے۔ (پ ۱۹۷۵کھف: ۲۹،۲۸ میں ماجد ، کتاب الزهد ، باب مجالسة الفقراء ، ۲۵۰۶ ، الحدیث ۲۲۲ و الدرالمنثور ، ۲۷۳/۳
 - سرور کا نثات صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم السروار کودعوت اسلام و رے تھے۔
- استوجمه کنز الایمان: تیوری چرهانی اورمنه پھیرااس پرکهاس کے پاس وه نابینا حاضر ہوااور تہمیں کیامعلوم شایروه تقراہو، یا تھیجت لے تو اسے تھیجت فائدہ و ہے وہ جو بے پرواہ بنتا ہے، تم اس کے تو پیچھے پڑتے ہو۔ (ب۳۰ عبس: ۲-۱) ترمذی، کتاب التفسير ، باب ومن سورة عبس، ۹/۵ / ۱، الحدیث ۳۳٤۲

معذرت کرے گا جیسے دنیا میں ایک شخص دوسرے سے معذرت کرتا ہے اور الله تعالی فرمائے گا: مجھے میری عزت اور جلال کی شم ! میں نے تجھ سے دنیا کو تیری بے قدری کی وجہ سے نہیں کچیرا تھا بلکہ اس عزت اور کرامت کے سبب جو میں نے تیرے لئے تیار کی تھی تخجے دنیا سے محروم رکھا ،ا سے میرے بندے! لوگوں کی ان جماعتوں میں جاؤ، جس کسی نے بھی میری رضا مندی کی خاطر مجھے کھلایا ، پلایا ، پالباس پہنایا ، اس کا ہاتھ بکڑلو! وہ تمہارا ہے ۔ لوگ اس دن پسینہ میں غرق ہوں گے اور وہ صفوں کو چرتا ہواان کو تلاش کر کے جنت میں لے جائے گا۔ (1)

فرمانِ نبوی ہے کہ فقراء کو پہچانو اور ان سے بھلائی کرو، ان کے پاس دولت ہے۔ پوچھا گیا کہ حضور کوئی دولت ہے؟ آپ نے فرمایا: جب قیامت کاون ہوگا، الله تعالیٰ ان سے فرمائے گاجس نے تمہیں کھلایا پلایا ہویا کیڑ ایہ نایا ہو اس کا ہاتھ کیڑ کراسے جنت میں لے جاؤ۔ (2)

فرمانِ نبوی ہے کہ جب میں (شپ معراج) جنت میں گیا تو میں نے اپنے آگے حرکت کی آواز تن، میں نے دیکھا تو وہ بلال تھے، (3) میں نے جنت کی بلندیوں پر دیکھا، وہاں مجھا پنی امت کے فقراءاور ان کی اولادیں نظر آئے تکیں، میں نے بنچے دیکھا تو مالدار نظر آئے اور عور تیں کم تھیں، میں نے سبب پوچھا تو بتلایا گیا کہ عور توں کوسونے اور رایداروں کوان کے طویل حسابات نے اوپہیں جانے دیا۔ (4) میں نے اپنے صحابہ کو تلاش کیا تو مجھے عبدالرحمٰن بن عوف نظر نہ آئے، کچھ دیر بعد وہ روتے ہوئے آئے، میں نے بوچھا: تم مجھ سے کیوں چھچے رہ گئے؟ تو عبدالرحمٰن نے کہا: میں بہت دکھ جھیل کر آپ کی خدمت میں پہنچا ہوں، میں تو سمجھ رہا تھا کہ شاید میں آپ کونیوں دیکھی یاؤں گا۔

المغنى عن حمل الاسفار للعراقي، ١٠٨٧/٢، الحديث٣٩٣٧

^{●}تفسير روح البيان ، الزخرف تحت الآية :٥ ٨٠٤٥ ٣٧٥

^{2}تاریخ مدینة دمشق، ۲ / ۹۹

١٣٣٥ مسلم، كتاب الفضائل، فضائل الصحبة، باب من فضائل ام سليم...الخ، ص١٣٣٣، الحديث ٢٤٥٧

^{4} كنز العمال ، قسم الاقوال، كتاب الفضائل، ذكر الصحبة...الخ، ١/٦ . ٣، الجزء الحادي عشر، الحديث ٢ ٣٣١ و

حضرت عبدالرحمٰن بن عوف سابقین اولین مسلمانوں میں سے تھے، حضور کے جانثار اور ان دس حضرات میں سے تھے جنہیں حضور صَلَّی الله عَلَیٰهِ وَسَلَّم نے جنت کی بثارت دی ہے (1) اور ان مالداروں میں سے تھے جن کے لئے حضور صَلَّی الله عَلَیٰهِ وَسَلَّم نے فرمایا: مگر جس نے مال کوا یسے ایسے خرج کیا (2) انہیں بھی مالداری نے اتنی مصیبت میں مبتلا کر دیا۔ حضور صَلَّم انداُهُ عَلَیٰهِ وَسَلَّم ایک ایسے خصص کے پاس سے گزرے جس کے پاس مال ومنال دنیا سے بھی بیں تھا، آپ نے فرمایا: اگر اس کا نور تمام دنیا والوں میں تقسیم کیا جائے تو پورا ہوجائیگا۔ (3)

نبی کریم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کیا میں جنتی بادشاہوں کے متعلق تہمیں بتاؤں؟ عرض کی گئ فرمائے۔ آپ نے فرمایا: ہروہ شخص جسے کمزورونا توال سمجھا گیا،غبار آلود پریشان بالوں والا، وہ پھٹی پرانی چا دروں والا، جسے کوئی خاطر میں نہیں لاتا ہے، اگروہ الله کی قتم کھالے توالله تعالیٰ اس کی قتم کو ضرور پورا کرتا ہے۔ (4)

حضرتِ عمران بن حَمَيْن رَضِى اللهُ عَنه سے مروی ہے: حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم مجھ سے حسن طَن رکھتے تھے، ایک مرتبہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مِن اللهُ عَنها اللهُ عَنها کی عیادت کو چلو گے؟ میں نے کہا: 'میرے ماں باپ آپ پر قربان! ضرور چلول گا' چنانچ ہم روانہ ہوگئے اور حضرتِ فاطمہ رَضِی اللهُ عَنها کے دروازہ پر پہنچے، آپ نے دروازہ کھٹکھٹایا اور سلام کے بعد اندر آنے کی اجازت طلب

- 1 ٢٧٦٨ عناب المناقب، باب مناقب عبدالرحمن...الخ ١٦/٥٠ ١٤ ،الحديث ٣٧٦٨
- 2مسلم، كتاب الزكاة، الترغيب في الصدقة، ص٩٦، الحديث٣٦ ـ (٩٤) ٣٣٠ ـ (٩٤) وعمدة القارى، كتاب الزكاة، باب اتقوا النار ولو بشق تمرة، ٣٧٩/٦، تحت الحديث ١٤١ و لطائف المعارف لابن رجب، المجلس الثالث فيما يقوم مقام الحج... الخ، ص ٢٤١
- السافية الكبرى للسبكي، ٣٦٧/٦ وتذكرة الموضوعات للفتني، ص١٧٨ وشعب الايمان، الحادي والسبعون
 من شعب الإيمان، باب في الزهد و قصر الأمل، ٣٣٢/٧، الحديث ١٠٤٨٦
 - 4....ابن ماجه، كتاب الزهد ، باب من لايؤ به به، ٤٢٩/٤ ، الحديث ٥١١٥

فر مائی حضرت ِ فاطمہ دَ صِب َ اللّٰهُ عَنْهَا نے فر مایا: تشریف لا ہے ! آپ نے فر مایا: میرے ساتھ ایک اور شخص بھی ہے، یو چھا كيا:حضور! دوسراكون ہے؟ آپ نے فرمايا:عمران!حضرت فاطمه دَضِيَ اللهُ عَنْهَا بوليس: ربِّ دوالجلال كي قشم! جس نے آپ کوتل کے ساتھ مبعوث فر مایا میں صرف ایک جا در سے تمام جسم چھیائے ہوئے ہوں۔ آپ نے دستِ اقدس کے اشارے سے فرمایا:تم ایسے ایسے یردہ کرلو،انہوں نے عرض کیا:اس طرح میراجسم تو ڈھک جاتا ہے مگرسزہیں چھپتا،آپ نے ان کی طرف ایک پرانی چا در پھینکی اور فرمایا:تم اس سے سرڈ ھانپ لو،اس کے بعد آپ گھر میں داخل ہوئے اور سلام کے بعد یو چھا: بیٹی کیسی ہو؟ حضرتِ فاطمہ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا نے عرض کیا:حضور مجھے دو ہری نکلیف ہے،ایک بیاری کی نکلیف اور دوسرے بھوک کی تکلیف! میرے پاس ایسی کوئی چیز نہیں ہے جسے کھا کر بھوک مٹاسکوں ، دسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم یین کرا شکبار ہو گئے اور فر مایا: بیٹی گھبراؤنہیں،رب کی قتم! میرارب کے یہاں تم سے زیادہ مرتبہ ہے مگر میں نے تین دن ہے کچھنہیں کھایا ہے،اگر میں الله تعالیٰ ہے مانگوں تو مجھے ضرور کھلائے مگر میں نے دنیا پر آخرے کوتر جیح دی ہے پھر آ پ نے حضرت فاطمہ دَخِب َ اللّٰهُ عَنْهَا کے کند ھے بر ہاتھ رکھ کرفر مایا:''خوش ہو جاؤتم جنتی عورتوں کی سر دار ہو!''انہوں نے یو چھا: حضرتِ آسیہ اور مریم کہاں ہوگگی؟ آپ نے فرمایا: آسیہ اپنے زمانے کی عورتوں کی اورتم اپنے زمانے کی عورتوں کی سر دار ہو،تم جنت کے ایسے محلات میں رہوگی جس میں کوئی عیب، کوئی دکھ اور کوئی تکلیف نہیں ہوگ ۔ پھر فر مایا: اسپنے چپازاد کے ساتھ خوش رہو، میں نے تمہاری شادی دنیااور آخرت کے سردار کے ساتھ کی ہے۔⁽¹⁾

حضرت على رَضِىَ اللهُ عَنُه ہے مروی ہے؛ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جب لوگ فقراء ہے دشمنی رکھیں، دنیاوی شوکت وحشمت کا اظہار کریں اور روپیہ جمع کرنے پرحریص ہوجائیں تواللّه تعالیٰ ان پر جپار صیبتیں نازل فرما تا ہے قبط سالی، ظالم بادشاہ، خائن حاکم اور دشمنوں کی ہیبت۔ (2)

حضرت ابوالدرداءرَ ضِيَ اللَّهُ عَنْهُ سے مروی ہے کہ ایک درہم والے سے دودرہم والے کا حساب زیادہ ہوگا۔ (3)

❶مشكل الاثار للطحاوي ، باب بيان ماروي عن رسول الله في افضل بناته...الخ،١/٣٦/ الجزء الاول، الحديث ١٠١

^{2}المستدرك للحاكم ، كتاب الرقاق، باب الحسب المال...الخ،٥/٣٦ ٤ ،الحديث٩٩ ٩٧ (العلماء مكان فقراء)

^{3} الخ،٣٧٧/٧ الحادي والسبعون...الخ، فصل فيما بلغنا عن الصحابة...الخ،٣٧٧/٧ الحديث ٢٤٧ (عن ابي ذر)

حضرت عمردَضِیَ اللّهُ عَنْه نے حضرت سعید بن عامر دَضِیَ اللّهُ عَنْه کے پاس ایک ہزار دینار بھیجے، حضرت سعیدا پن گھر میں اِنتہائی غمز وہ حالت میں واغل ہوئے، ان کی بیوی نے بوچھا: کوئی خاص بات ہوگئ ہے؟ بولے: بہت اہم بات ہوگئ ہے، پھر فر مایا: مجھے کوئی پر انا دو پٹہ دے دو، پھراسے پھاڑ کراس کے ٹکڑے کیے اور دیناروں کی بوٹلیاں بنا کر تقسیم کر دیں (۱) اور نماز کے لئے کھڑے ہوئے اور شیح تک رور وکر عبادت کرتے رہے پھر فر مایا: میں نے حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے سناہے: میری امت کے فقراء مالداروں سے پانچ سوسال پہلے جنت میں داخل ہوں گے بہاں تک کہ اگر کوئی مالدار آ دمی ان کی جماعت میں شامل ہوگا تواسے ہاتھ پکڑ کر باہر نکال دیا جائے گا۔ (2)

حضرتِ ابو ہر ریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ سے مروی ہے کہ تین آ دمی بلاحساب جنت میں داخل ہوں گے: وہ مخض جس نے کیڑے دھونے کا ارادہ کیا مگر اس کے دوسرے پرانے کیڑے نہیں تھے جنہیں پہن کر وہ کیڑے دھولے۔ جو مخص چولہے پر دودو ہانڈیاں نہیں چڑھا تا اور جس کو پینے کی دعوت دے کراس سے بینہ پوچھا بتم کیا پیو گے؟ (3)

حضرت سفیان توری رکو مَهُ اللهِ عَلیْه کی محفل میں ایک فقیر آیا تو آپ نے اسے فر مایا: آگے آجاؤ! اگرتم مالدار ہوتے تو میں تہمیں آگے بڑھنے کی اجازت نہ دیتا ، ان کی فقراء سے بے پایاں محبت دیکھ کران کے مالدار دوست ریتمنا کرتے کہ کاش ہم بھی فقیر ہوتے۔

حضرت مؤمل رَحْمَةُ اللهِ عَليْه كابيان ہے كه ميں في حضرت سفيان تورى دَحْمَةُ اللهِ عَليْه كى مجلس ميں فقير سے زياده

ں۔۔۔۔ بیعبارت " مجھےکوئی پرانادو پٹہ۔۔۔۔۔۔۔ پوٹلیاں بنا کرتقتیم کردیں" یہاں محذوف تھی شاید کا تب سےرہ گئی ہوگی،ہم نے عربی متن دیکھ کر اس کاتر جمہ یہاں شامل کردیا ہے۔علمیہ

الحديث ٢٣٦١ وكنز العمال ، قسم الاقوال، كتاب الخ، ٢٥٨/٤ ، الحديث ٢٣٦١ وكنز العمال ، قسم الاقوال، كتاب الزكاة ، الباب الثالث في فضل الفقر... الخ٣/٣٠ ، الجزء الخامس ، الحديث ٢٦٢١

 ^{3} كنز العمال ، كتاب الاخلاق ،حرف الزا، الزهد، ٢٦/٢، الجزء الثالث، الحديث ٦٠٧٥

M

باعزت اور مالدار سے زیادہ ذلیل کسی کونہیں دیکھا۔

ایک دانشمند کا قول ہے کہ انسان جتنا تنگدتی ہے ڈرتا ہے، اگرا تناجہنم سے ڈرتا تو دونوں سے نجات پالیتا اور جتنی اسے دولت سے محبت ہے اگر جنت ہے اسے اتنی محبت ہوتی تو دونوں کو پالیتا جتنا ظاہر میں لوگوں سے ڈرتا ہے اگرا تناباطن میں الله تعالیٰ سے ڈرتا تو دونوں جہانوں میں سعید شار ہوتا۔

حضرت ابن عباس رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا کا قول ہے کہ جو مالدار کی عزت اور فقیر کی تو بین کرتا ہے، وہ ملعون ہے۔ حضرت ِلقمان نے اپنے بیٹے کوفسیحت کرتے ہوئے کہا کہ بوسیدہ کیٹر وں کی وجہ سے کسی کوحقیر نہ مجھو کیونکہ اس کا اور تمہارارب ایک ہے۔

حضرتِ بجیل بن معاذرَ حُمَةُ اللهِ عَلیْه کہتے ہیں کہ فقراء سے تمہاری محبت رسولوں کی صفات میں سے ایک صفت ہے، ان کی مجالس میں آنا نیکوں کی اوران کی دوستی سے دور بھا گنا منا فقوں کی علامت ہے۔

بعض کتب سابقہ میں مرقوم تھا کہ اللّٰہ تعالیٰ نے اپنج بعض انبیاء عَلَیْهِمُ السَّلَام پروحی کی کہ میری دشمنی سے ڈرو، اگر میں نے مجھے دشمن بنالیا تو تو میری آئکھ سے گر جائیگا اور میں تجھ پر مال ودولت کی بارش کروں گا (یعنی مال ودولت کی فراوانی اللّٰہ تعالیٰ کے یہاں بے قدری کی موجب ہے)۔

حضرتِ عائشہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا کے پاس حضرتِ معاویہ ابن عامر رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ور پجھ دوسر بلوگوں نے ایک لاکھ درہم بھیجے، آپ نے سب کوایک ہی دن میں تقسیم کر دیا حالانکہ آپ کی اوڑھنی پر پیوند گئے ہوئے تھے، آپ کی لونڈی نے کہا کہ آپ روزے سے ہیں اگر آپ مجھے ایک درہم وے دیتیں تو میں گوشت لے آتی اور آپ افطار کرتیں، آپ نے بین کر فرمایا: تم مجھے پہلے بتا دیتیں تو میں ایک درہم تہمیں دے دیتی۔

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے حضرتِ عائشه رَضِيَ اللهُ عَنْهَا كووصيت فرما كَى: اگرتم مجھے علاقات كى خواہشمند ہوتو فقراء جيسى زندگى بسر كرنا، دولت مندول كى محفلول سے عليجد ه رہنااوراوڑھنى كوپيوندلگائے بغير نها تارنا۔ (1)

1 ترمذي، كتاب اللباس، باب ماجاء في ترقيع الثوب ٣٠٢/٣، الحديث ١٧٨٧

ایک شخص حضرت ابراہیم بن ادہم رَحْمَةُ اللهِ عَلیْه کی خدمت میں دس ہزار درہم لایا اور بڑی عاجزی سے انہیں قبول کرنے کی درخواست کی۔ آپ نے انکار کر دیا اور فر مایا: کیاتم دس ہزار درہم کے بدلے فقراء کے دفتر سے میرانام کا ثنا چاہتے ہو بخدا! میں ایسا کبھی نہیں ہونے دوں گا۔

شایدعدمِ رضاسے بیمراد ہے کہ وہ الله تعالیٰ کے اس سے مال روک لینے کو براسمجھتا ہے اور بہت سے طالبِ دنیا ایسے ہیں جودل میں بھی بھی الله تعالیٰ کامنکر ہونا پیندنہیں کرتے لہٰذاان کی طلب میں کوئی برائی نہیں ہے کیکن اوّل الذکر بات اعمال کو تباہ کر دیتی ہے جس میں الله تعالیٰ کے دولت نہ دینے کو بُر اسمجھا جاتا ہے۔

حضرت عمردَضِیَ اللهُ عَنُه سے مروی ہے حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ ہرچیزی ایک کلید ہوتی ہے اور جنت کی جا بی خابی فقر اءاور مساکین کی محبت ہے۔اپنے صبر کی وجہ سے وہ قیامت کے دن اللّٰہ تعالیٰ کے قریب ہوں گے۔

حضرت على رَضِى اللهُ عَنُه مع مروى ہے :حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمايا كه الله تعالى كوده بنده سب سے زياده محبوب ہے جوفقیر ہو الله كى رضا پر راضى ہواوراس كے عطاكرده رزق پر قناعت كرے۔(3)

حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے دعاما کَلی: اے الله! محمد (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) کے گھر انے کی خوراک اندازے کے مطابق ہو (⁴⁾ اور فرمایا: قیامت کے دن کوئی فقیر اور مالدار ایبانہیں ہوگا جو بیتمنا نہ کرے کہ مجھے دنیا میں خوراک کے

۲۳۵ ، کتاب الزهد باب ماجاء فی الکفاف...الخ ، ۱۵۲/۵ ، الحدیث ۲۳۵ ،

۲۰۷/۳ فردوس الاخبار، ۲۷۰/۲، الحديث ۲۶۲۸ و كنزالعمال، كتاب الزكاة، الباب الثالث في فضل الفقر...الخ، ۲۰۷/۳
 الجزء السادس، الحديث ۱۹۲۱

الشافية الكبرى للسبكى، ٣٦٨/٦ و كنز العمال، قسم الاقوال، كتاب الاخلاق ،حرف القاف، القناعة و
 الاستغناء...الخ، ٣٨/٦، الجزء الثالث، الحديث ٨٨٠٧و المعجم الكبير للطبراني، ٢٤٢/١٨، الحديث ٢٠٧٠

^{4.....}مسلم ، كتاب الزكاة، باب في الكفاف والقناعة، ص ٢٤٥، الحديث ١٢٦_ (١٠٥٥)

مطابق ہی رزق دیاجا تا۔

الله تعالی نے حضرت المعیل عَلَیْهِ السَّلام کی طرف وحی کی که مجھے شکنته دلوں کے بہاں تلاش کرنا، آپ نے بوچھا: وہ کون لوگ ہیں؟ رب تعالی نے فرمایا: وہ سے فقراء ہیں۔

فرمانِ نبوی ہے کہ راضی بررضا فقیر سے زیادہ کوئی فضیلت والانہیں ہے۔(2)

فرمانِ نبوی ہے کہ الله اتعالیٰ قیامت کے دن ارشاد فرمائے گا کرمخلوق میں میر ہے دوست کہاں ہیں؟ فرشتے پوچھیں گے یاالله اوہ کون ہیں؟ رب تعالیٰ فرمائے گا: وہ مسلمان فقراء ہیں جومیری عطابر قانع تھے اور میری رضاپر راضی تھے، انہیں جنت میں داخل کروا چنا نچہ لوگ ایخے صاب میں سرگرداں ہوں گے کہ وہ لوگ جنت میں کھا بی رہے ہوں گے۔ (3) بیت میں داخل کروا چنا نچہ لوگ ایک رضا پر راضی ہونے والوں کا تذکرہ ہے، ان شاء اللہ عنقریب زامدوں کا ذکر بھی ان کے فضائل میں آئے گا۔

'' قناعت''اور'' رضا'' کے متعلق بہت ہی اُ حادیث وارد ہوئی ہیں، یہ بات خوب ذہن نثین کرلیں کہ قناعت کی ضد'' جرص طُنع'' ہے۔

حضرت ِعمر دَ خِنَى اللّٰهُ عَنْهُ كا فر مان ہے كہ طبع ، تنگد تن اور قناعت مالدارى ہے جولوگوں سے طبع نہيں رکھتااور قناعت كرليتا ہے وہلوگوں ہے بے پرواكر دياجا تاہے۔

حضرت ابن مسعود دَحِن اللَّهُ عَنْهُ ہے مروی ہے کہ ہرروز ایک فرشتہ عرش سے منادی کرتا ہے،اے انسان! گمراہ کرنے والے نیادہ مال سے کفایت کرنے والاتھوڑ امال بہتر ہے۔

حضرتِ ابوالدرداء دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ ہرانسان کی عقل میں کمزوری ہوتی ہے، جب اس کے پاس مال و دولت زیادہ آنے لگتا ہے تو وہ بہت خوش ہوتا ہے مگر رات دن کی گردش جواس کی عمر کم کررہی ہے، اسے غمز دہ نہیں

- 1ابن ماجه، كتاب الزهد، باب القناعة ، ٤٢/٤، الحديث ١٤٠
- ۳۹۳۷ و ۱۰۹۰/۲۰ الحديث ۳۹۳۷ و المغنى عن حمل الاسفار للعراقى، ۲/۹۰/۱ الحديث ۳۹۳۷
 - 3طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٢٦٨/٦

گرتی ۔افسوس!اےانسان! تخصے مال کی زیادتی کوئی فائدہ نہیں دے گی جب کہ تیری عمر برابر کم ہوتی جارہی ہے۔

حضرتِ محمد بن واسع _{دَ}حُمهُ اللهِ عَلَيْه خشك روٹی پانی میں بھگو کرنمک سے کھالیتے اور فر ماتے : جو د نیامیں اتنی مقدار پر راضی ہوجا تا ہےوہ کسی کا محتاج نہیں رہتا۔

حضرت حسن رَحْمَةُ اللهِ عَدَيْهُ كا قول ہے كہ الله تعالى نے ایسے لوگوں پر لعنت كى ہے جواس كے تقسيم كرده رزق پر راضى نہيں ہوئے، پھر آپ نے بيرآپ نير هى:

اورآ سانوں میں تمہارارزق ہےاورجس چیز کاتم سے وعدہ کیا جاتا ہے آسانوں اورزمین کے رب کی قتم وہ حق ہے۔ وَفِي السَّبَآءِ بِإِذْ قُكُمُ وَمَاتُوْعَدُونَ ۞ فَوَ رَبِّ السَّبَآءَ وَالْا ثُرْضِ إِنَّهُ لَحَقُّ (1)

❶تو جمه کنز الایمان: اورآ سان میں تمہارارزق ہےاور جوتمہیں وعدہ دیاجا تا ہے تو آ سان اورز مین کے ربّ کی شم بے شک پیقر آن حق _ ہے۔ (پ۲۰،۱لڈریک ۲۳،۲۲)

حضرت ابوذر رَضِیَ اللّهُ عَنْه ایک مرتبہ لوگوں میں بیٹھے ہوئے تھے کہ آپ کی بیوی نے آ کر کہا:تم ان کے ساتھ بیٹھ ہوئے تھے کہ آپ کی بیوی نے آکر کہا:تم ان کے ساتھ بیٹھ ہوئے ہوئے ہواور گھر میں آٹے کی چٹکی اور پانی کا گھونٹ تک نہیں ہے۔آپ نے فر مایا: تمہیں پیتے نہیں ہمارے سامنے دشوار گزار گھاٹیاں ہیں ان سے وہی نجات پائے گا جس کا بوجھ ہلکا ہوگا۔ جب آپ کی بیوی نے بیسنا تو چپ چاپ گھر میں واپس چلی گئیں۔

حضرت فه والنون رَحْمَةُ اللهِ عَليْه كا قول ہے كه بيصبر جموكا كفر كے بہت قريب ہوتا ہے۔

ایک دانا سے بوچھا گیا کہ تیری دولت کیا ہے؟ اس نے جواب دیا: ظاہری صفائی، دل میں نیکی اور لوگوں سے ناامیدی۔
روایت ہے کہ اللہ تعالی نے بعض سابقہ آسانی کتابوں میں فر مایا ہے: اے انسان! اگر تجھے ساری دنیا کی دولت مل جاتی تب بھی تجھے دوووت کی روٹی ہی میسر آتی ، اب جبکہ میں نے تجھے غذاد ہے دی ہے اور اس کا حساب اور کے ذمے لگا دیا ہے تو یہ میں نے تجھے پراحسان کیا ہے۔

قناعت کے متعلق ایک شاعر نے کہاہے:۔

واقنع بياس فان العز في الياس

واستغن عن ذي قربي وذي رحم

اضرع الى الله لا تضرع الى الناس

ان الغنى من استغنى عن الناس

﴿ 1 ﴾ … الله سے ما نگ، لوگوں سے نہ ما نگ، ان سے نا اُمید ہو کر قناعت کواپنا کیونکہ لوگوں سے نا اُمید ہونے ہی میں عزت ہے۔

﴿2﴾ ہرعزیز اور یگانے سے بے پر واہوجا، کیونکہ لوگوں سے بے نیازی ہی مالداری ہے،

ایک اور شاعر کہتا ہے: _

مقدر اى باب منه يغلقه اغاديا ام بها يسرى فتطرقه ياجامع المال اياما تفرقه ماالمال مالك الايوم تنفقه ان الذى قسم الارزاق يرزقه والوجه منه جديد ليس يخلقه

یاجامعا مانعا و الدهر یرمقه مفکرا کیف تاتیه منیته جمعت مالا فقل لی هل جمعت له المال عندک مخزون لوارثه ارفه ببال فتی یغدو علی ثقة فالعرض منه مصون لایدنسه

ان القناعة من يحلل بساحتها لم يلق في ظلها هما يورقه

- ﴿ 1 ﴾ ……ا ہے مال ودولت کوجمع کرنے والے! زمانہ ہرکسی کامقدر دیکھتا ہے، تواس کے س کس دروازے کو بندکرے گا؟
- ﴿2﴾اس فکر میں کہ س کس طرح امیدیں یوری ہوں گی ، کیااس کے ساتھ کوئی دشواری ہے یا آسانی پس تواس کوچھوڑ دےگا۔
- ﴿3﴾.....ا ہے مال کے جمع کر نیوالے! تونے دولت اکٹھی کرلی، مجھے یہ بتلا تونے اسے خرچ کرنے کے لئے اپنے دن بھی اکٹھے کر لئے ہیں؟ (کیا تھے زندگی بربھروسہ ہے)
 - ﴿4﴾..... دولت تیرے پاس وارثوں کا خزانہ ہے، راہ خدا میں خرچ کرنے والے مال کے سواتیرا کوئی مال نہیں ہے۔
 - ﴿5﴾ جب جوان اس بات پراعتاد کرتا ہے کہ جس ذات نے تقسیم ارزاق کیا ہےا ہے بھی رزق دے گا۔
 - ﴿ 6﴾ تباس کی عزت محفوظ ہو جاتی ہے، بھی اس پر میل نہیں آتا، اور نہ ہی اس کا چہرہ بھی پرانا ہوتا ہے۔
 - ﴿7﴾ جو خص قناعت كو پاليتا ہےاس پر بھى و كھ كاسا ينہيں پڑتا۔

قرض کی ادا ٹیگی

اب 35

اللّٰہ کے سوا کسی اور کو اپنا ولی بنانا اور قیامت کا میدان

فرمانِ اللي ب: وَلا تَوْكَنُوْ إِلَى الَّذِيثِيَّ ظَلَمُوْ افْتَسَسَّكُمُ النَّارُ أَنْ

بعض مفسرین کا قول ہے: اہلِ لغت اس بات پرمتفق ہیں کہ''رکوُن'' مطلق میلان اور توجہ کا نام ہے، جا ہے وہ میلان معمولی ہویازیادہ عبدالرحمٰن بن زیدرَ حُسَهُ اللهِ عَلَیْه کا قول ہے کہ یہاں رُکوُن سے مراد چھپانا ہے یعنی ان کے لفر کا انکار نہ کرنا یکرَّمَه کا قول ہے: رُکوُن سے مراد ہے ان کفار سے نیکی نہ کرو، آیت کے ظاہری معنی یہ ہیں کہ کفار اور بدکار مسلمانوں سے باہم میل ملاپ نہ رکھو۔

حضرت نیٹا پوری دَحْمَةُ اللهِ عَلَیْه اپنی تفسیر میں رقم طراز ہیں بخققین کا قول ہے کہ جس رُگون سے منع کیا گیا ہے وہ ہے کفار کے کفرکوا چھا سمجھنا، ان کے طریق کارکوخوب جاننا اور دوسروں کے سامنے ان کی تعریف کرنا اور گمراہی کے کا موں میں ان کا شریک کاربنا ہے، ہاں اگر ان کے مظالم کے سیّر باب اور نفع اندوزی کی وجہ سے ان سے میل ملاپ بروھا تا ہے تواس میں کوئی حرج نہیں ہے لیکن میر اضمیر ہے کہتا ہے کہ طلب معاش کے لئے ان سے میل ملاپ کی رخصت ہے گر تقویٰ کا تقاضایہ ہے کہ ان سے میال ملاپ کی رخصت ہے گر تقویٰ کا تقاضایہ ہے کہ ان سے بالکل علیجدگی کی جائے ، کیا الله تعالیٰ بندے کی مشکلات میں اسے کافی نہیں ہے۔

میں کہتا ہوں کہ امام نیٹ اپوری کا قول بالکل صحیح ہے۔ آج کے دور میں تو خصوصی طور پر اس بات کی ضرورت ہے کہ ان سے تعلقات نہ رکھے جا کیں کیونکہ نیکی کا حکم کرنا اور برائیوں سے روکنا اس دھو کہ اور فریب کاری کے دور میں نامکن ہے دور میں ڈال سکتا ہے تو تہمار اس شخص کے نامکن ہے دان سے باہم تعلق ہلاکت میں ڈال سکتا ہے تو تہمار اس شخص کے نامکن ہے دور تیں ڈاک سے نامکن ہے دور تیں ڈاک سے نامکن ہے تا ہوں کہ ان اور جبکہ ان کا ظلم اس اندازیر آ گیا ہے کہ ان سے باہم تعلق ہلاکت میں ڈال سکتا ہے تو تہمار اس شخص کے نامکن ہے دور میں دور تھیں ڈاک سے تعلقات نہ دور جبکہ ان کا ظلم اس اندازیر آ گیا ہے کہ ان سے باہم تعلق ہلاکت میں ڈال سکتا ہے تو تہمار اس خوال

الست توجمه كنز الايمان: اورظالمول كى طرف نه مُحكوكة بهين آگ چھوئ گی - (پ١٢، هوه: ١١٣)

^{🗨} قارئین کرام ملاحظ فر مائیں کہ پانچویں چھٹی صدی ہجری کی حالت بیتھی ۔مزید دیکھئے مقدمہ تاریخ المخلفاءاز تثمس بریلوی

بارے میں کیا خیال ہے جوان ظالموں اور سرکشوں سے زبر دست محبت کرتا ہے، ان کی شراب نوشی اور حرام کاری کی محافل میں شریک ہوتا ہے اوران کے تقاضائے دوستی کو پورا کرتا ہے اوران کے طرز معاشرت میں گھل مل جاتا ہے، ان کا سالباس پہن کرخوش ہوتا ہے اوران کی ظاہری اور فانی رونق کو بہتر سمجھتا ہے اوران کی معاشی خوشحالی پر دشک کرتا ہے، حالانکدا گر حقیقت میں دیکھا جائے تو بیسب چیزیں ایک دانہ سے بھی حقیر اور مچھر کے پر سے بھی زیادہ بے وقار ہیں چہجائیکہ انسان دل کی گہرائیوں سے انہیں چا ہے ، چا ہے والا اور جسے چاہا گیا ہے دونوں بے وقار ہیں ۔

فر مانِ نبوی ہے کہ انسان اپنے دوست کے دین پر ہوتا ہے ،تم ید کیھو کہ تمہارا دوست کون ہے؟ (1) منقول ہے کہ اچھے ساتھی کی مثال عطار جیسی ہے ،اگر وہ عطر نہیں دے گالیکن تم عطر کی خوشبو سے محروم نہیں رہوگے اور ہر بُر بے ساتھی کی مثال لو ہار کی ہے اگر چہوہ مجھے نہیں جلائے گا مگر اس کی دھوکنی کا دھواں تم تک ضرور پہنچے گا ⁽²⁾ (اور کپڑوں کو کثیف کردے گا اور تفس کو بھی گزند پہنچائے گا)۔

فر مانِ اللی ہے کہان لوگوں کی مثال جنہوں نے اللّٰہ کے سواا پنے اور مددگار بنا لیے ہیں مکڑی کے گھر کی ہی مثال ہے (جو بہت ہی رود اور کمز ورہوتا ہے)۔ بودااور کمز ورہوتا ہے)۔

فرمانِ نبوی ہے کہ جس نے کسی دولت مند کی اُسکی دولت کی وجہ سے تعظیم کی اسکا ایک تہائی (4) میمان ضائع ہو گیا۔ (5) فرمانِ نبوی ہے: جب کسی فاسق کی تعریف کی جاتی ہے تواللہ تعالیٰ سخت ناراض ہوتا ہے اور عرشِ الہٰی کا نب جاتا ہے۔ فرمانِ الہٰی ہے:

^{1}ترمذي، كتاب الزهد، باب ٥٥، ٤/٢١، الحديث ٢٣٨٥

^{2}ابوداود، كتاب الادب، باب من يؤمر ان يجالس، ٤/٠٤، الحديث ٤٨٢٩

العنجوت: ١٤) مثال جنهول في الله كسوااور ما لك بناليد بين مكرى كي طرح بهاس في جال كالكر بنايا- (ب ٢٠ العنكوت: ١٤)

^{●} یہاں کتابت کی غلطی ہے یوں لکھاتھا کہ " اس کا دو جھے ایمان ضائع ہو گیا " جبکہ "مکاشفۃ القلوب "(عربی) اور دیگر کتب میں حدیث کے الفاظ یوں ہیں: " ذھب ثلث دینہ " یعنی اس کا ایک تہائی ایمان ضائع ہو گیالہذا ہم نے ترجمہ میں اصل کے مطابق تھیجے کر دی ہے۔ علمییه

[•] الشافية الكبرى للسبكي، ٣٣١/٤ وشعب الايمان، السبعون من شعب الإيمان، باب في الصبر، ٢١٣/٧ ، الحديث ١٠٠٤

^{6} شعب الايمان، الباب الرابع والثلاثون...الخ، ٢٣٠/٤، الحديث ٤٨٨٦

يَوْمَنَنْ عُوْاكُلُّ أَنَاسٍ بِإِ مَا هِمْ عَوْاكُلُّ أَنَاسٍ بِإِ مَا هِمْ عَوْمُ اللهِ

یعنی ہم قیامت کے میدان میں تمام انسانوں کوان کے امام کے

ساتھ بلائیں گے۔

مفسرین کرام کاامام کے تعین میں اختلاف ہے: حضرتِ ابن عباس دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اور آپ کے رفقاءامام سے مراد نامهُ اَعمال لیتے ہیں، چنانچے فرمانِ الٰہی ہے:

فَأَمَّا مَنُ أُوْتِي كِتَابَةُ بِيَمِينَهِ (2) قَامًا مَنْ أُوْتِي كِتَابَةُ بِيمِينَهِ (2) المرجس تحض كودا كيل باته ميس كتاب دى جائے گ

حضرت زیدرَ حُمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ امام سے مرادر تبهى كتابيں ہيں اورلوگوں كو" اے تورات والے! "،"اے انجیل والے! "اور" اے قرآن والے! " كہه كربلايا جائے گا۔

حضرت مجامد و خمة اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كه امام سے مراد نبی ہے ۔ لوگوں كو يوں بلا ياجائے گا: اے ابرا بيم عَلَيْهِ السَّلام كى اتباع كرنے والوآ وَ! اے مسلى عَلَيْهِ السَّلام كى اتباع كرنے والوآ وَ! اور اللهِ عَلَيْهِ السَّلام كى اتباع كرنے والوآ وَ! اور اللهِ عَلَيْهِ السَّلام كى اتباع كرنے والوآ وَ! اور اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَى اتباع كرنے والوآ وَ!

حضرت علی رَضِیَ اللهٔ عَنه کا قول ہے کہ امام سے مرادامام عصر ہے جس کے روکنے سے وہ رک جاتے تھا ورجس کے تھا کہ م

حضرت ابن عمر دَضِیَ الله عنهٔ مَا سے مروی ہے ؛ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جب الله تعالی قیامت کے دن تمام مخلوق کو جمع فرمائے گاتو ہر خائن کو جمند ادیا جائے گا اور کہا جائے گا: یہ فلال بن فلال کی خیانت کا حجمند ا ہے۔ (3) مخلوق کو جمع فرمائے گاتو ہر خائن کو جمند ادیا جائے گا اور کہا جائے گا: یہ فلال بن فلال کی خیانت کا حجمند الله عَلیْهِ وَسَلَّم نے اس آیت کی تفسیر مردی وغیرہ میں حضرت ابو ہر بردہ دَضِی اللهٔ عَنْه سے مروی ہے ؛ حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے اس آیت کی تفسیر میں فرمایا: ' لوگوں میں سے ایک آدی کو بلایا جائے گا ، اس کے دائیں ہاتھ میں نامہ اعمال دیا جائے گا ، اس کے جسم کو ساٹھ ہاتھ کہ باکر کے اس کے سر پر چمکدار موتیوں کا تاج رکھا جائے گا ، اس کا چہرہ انتہائی روثن ہوگا ، پھروہ ا ہے دوستوں کی ساٹھ ہاتھ کہ باکر کے اس کے سر پر چمکدار موتیوں کا تاج رکھا جائے گا ، اس کا چہرہ انتہائی روثن ہوگا ، پھروہ وہ اپنے دوستوں کی

طرف جائے گا جواسے دور ہے دیکھ کرکہیں گے: اس کے مرتبہ میں اضافہ فر ما اور ہمیں بھی ایسا ہی مقام عنایت فرما۔

- 1توجمه كنز الايمان: جس دن بم برجماعت كواس كامام كساته بلائيس كـ (ب٥١، بني اسرائيل: ٧١)
 - الحاقة: ١٩).
 - 3 مسلم، كتاب الجهاد والسير، باب تحريم الغدر، ص ٥٥٥، الحديث ٩ _ (١٧٣٥)

جب وہ ان کے پاس آئے گاتو کہے گا کتہ ہیں خوشخری ہو،تم میں سے ہرایک کو یہی مقام ملے گا اور کا فرکا منہ کا لاکر ک اس کا قد آ دم عَلَیْهِ انسَّادم کے قد کے برابر ساٹھ ہاتھ کر دیا جائے گا اور اسے ظلمت کا تاج پہنایا جائیگا، وہ اپنے ساتھیوں کے پاس آئے گا وہ اسے دیکھ کر کہیں گے اے اللہ! ہم اس کے شرسے پناہ چاہتے ہیں اور ہمیں ایسے انجام سے بچا، وہ ان کے پاس آئے گا تو وہ کہیں گے: اے اللہ! اسے رسوا کر ۔ تب کا فرکے گا کہ اللہ تعالی نے تجھے اپنی رحمت سے دور کردیا ہتم میں سے ہرایک کے ساتھ یہی سلوک کیا جائے گا۔ (1) فرمان الہی ہے:

اِذَا زُلْزِلَتِ الْأَنْ صُّ زِلْزَ الْهَا أَنْ وَأَخْرَجَتِ الْأَنْ صُّ جب نمين زلز لے سے ہلائی جائے گی اور وہ اپنے بوجھ نکال

اَثْقَالَهَا ۞ (2) اَثْقَالَهَا ۞ (2)

حضرتِ ابن عباس دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اس آیت کی تفسیر میں فرماتے ہیں کہ زمین نیچے سے بِلے گی اوراس کے پیٹ میں جتنے مردے اور دفینے ہیں،سب کو باہر نکال دیگی۔

حضرت الدهرريده رضي الله عنه عدمروى مع كدحضور صلى الله عَليه وسَلَّم في يرآيت براهي :

اس دن زمین اپنی خبریں بیان کرے گی۔

يَوْمَيِنٍ تُحَرِّثُ أَخْبَا رَهَا ۞

اور فرمایا: جانتے ہواس کی خبریں کیا ہیں! صحابہ نے عرض کیا: الله اور اس کے رسول (صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم) بہتر جانتے ہیں، آب نے فرمایا: وہ ہرمر داور ہرعورت کے ہراس عمل کی گواہی دیگی جواس کی پیشت پرکیا گیاہے۔(4)

طبرانی کی حدیث ہے:حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: زمین پر گناه کرنے سے پر ہیز کرو کیونکہ وہتمہاری ماں ہےاور جوشخص بھی اس برکوئی عمل کرتا ہے وہ اس کی (قیامت کے دن)خبر دے گی۔ ⁽⁵⁾

^{1} ترمذي، كتاب التفسير، ٥ / ٩ ٩، الحديث ٣١٤٧

^{2}توجمهٔ كنز الايمان: جبز مين هر هراوى جائي جيهااس كاهر هراناهم رائه اورز مين اين بوجه بابر جينك دے (ب٠٣٠ الولوال: ٢٠١)

^{3} ترجمه كنز الايمان: اس ون وه اپن جُرين بتائ كى - (ب ، ٣ ، الولوال: ٤)

^{4} ترمذي، كتاب صفة القيامة، باب٧، ٤/٤ ١، الحديث ٢٤٣٧

^{5}المعجم الكبير، ٥/٥٦، الحديث ٥٩٦

اب 36

للموت للموت

فر مانِ نبوی ہے: میں کیسے سکون پاؤں جبکہ صاحب صور بعنی حضرت اسرافیل عَلیْهِ السَّدَم نے صور مند میں لیا ہوا ہے، پیشانی جھکائی ہوئی ہے اور کان الله تعالی کے فر مان پر متوجہ کرر کھے ہیں کہ اسے کب صور پھو نکنے کا تھم ملے اور وہ صور پھونکیں۔(1)

حضرت مقاتل رَحْمَةُ اللهِ عَليْه كا قول ہے كہ صورا كيك بُوق يا قَرْ نا كى طرح ہے جسے حضر سے اسرافيل عَليْهِ السَّادَ مِبِكُل كَلُوحَ اللهِ عَنه مِن لِيهِ وَسِحَ بَيْن ،اس صوركى گولائى آسان وز مين كى چوڑائى (گولائى) كے برابر ہے ،حضر سے اسرافيل محتملى باند ھے عرش كى طرف د كيور ہے بين كہ آنہيں كب صور پھو نكنے كاحكم ہوتا ہے ، جب پہلی مرتبہ صور پھو نكا جا گا تو شد سے اضطراب سے جبرائيل ،ميكائيل ،اسرافيل اورعز رائيل كے سواز مين و آسان كے سب جاندار ہلاك ہوجائيں شد سے اضطراب سے جبرائيل ،ميكائيل ،اسرافيل اورعز رائيل كے سواز مين و آسان كے سب جاندار ہلاك ہوجائيں ہے پھرعز رائيل كو بھى فنا سے بمكنار گردوبارہ كريا جائے گا يہاں تك كه نفخ صوركوچا ليس سال گر رجائيں گے ، تب الله تعالی اسرافيل كوزندہ كريكا اوروہ أشكر كو وبارہ صور يھو تكيں گے ، تب الله تعالی اسرافيل كوزندہ كريكا اوروہ أشكر دوبارہ صور يھو تكيں گے جنا نچہ

فرمانِ اللي ہے:

ثُمَّ نُفِحَ فِيهِ وَأُخْرَى فَإِذَاهُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُونَ ۞ (2)

پھر دوبارہ صور پھونکا جائے گا پس اچانک وہ اپنے ہیروں پر

کھڑے ہوجائیں گے اور دوبارہ زندہ ہوناد کیھر ہے ہوں گے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ جب سے اسرافیل کو بیدا کیا گیا ہے صوراس کے منہ میں ہے اور وہ ایک قدم آ گے اور ایک

- 1 ترمذي، كتاب صفة القيامة، باب ماجاء في شان الصور، ٤/٥٩، الحديث ٢٤٣٩
- 🗨 تو جمهٔ کنز الایمان: پھروہ دوبارہ پھونکا جائے گا جھی وہ دیکھتے ہوئے کھڑے ہوجائیں گے۔(پ٤٢،الزمر:٦٨)

قدم پیچیر کھے حکم خداوندی کے انتظار میں ہے۔

ہوشیار ہوجا وَاور صور پھو نکے جانے کے وقت سے ڈرو! اس وقت میں لوگوں کی ذلت اور رسوائی اور عاجزی کا تصور کروجبکہ دوسری مرتبہ صور پھونک کرانہیں کھڑا کیا جائے گا اور وہ اپنے متعلق اچھا یا بُر افیصلہ سننے کے منتظر ہو نگے اور اے انسان! تو بھی ان کی ذلت و پر بیثانی میں برابر کا شریک ہوگا بلکہ اگر تو دنیا میں آسودہ حال اور دولت مند ہو جان لے کہ اس دن دنیا کے بادشاہ تمام مخلوق سے زیادہ ذلیل اور حقیر ہوں گے اور وہ چیونٹیوں کی طرح پامال ہوں گے، اس وقت جنگلوں اور پہاڑوں سے درندے سرجھ کائے قیامت کی ہیبت سے سہمے ہوئے اپنی ساری درندگی اور وحشت مجھول کرلوگوں میں گھل مل جائیں گے، بیدرندے اپنے کسی گناہ کے سبب نہیں بلکہ صور کی خوفناک آ واز کی شدت کی وجہ سے زندہ ہوجائیں گے اور انہیں لوگوں سے خوف اور وحشت تک محسون نہیں ہوگی ، چنانچہ

فرمان الهی ہے:

اور جب وحشی جانوراٹھائے جائیں گے۔

وَ اِذَاالُوْحُوْشُحُشِمَاتُ ۞ ⁽²⁾

پھر شیطان اور سخت نافر مان اپنی نافر مانی اور سرکشی کے بعد الله تعالی کے حضور حاضر ہونے کے لئے انتہائی ذلت سے اس فر مان الہی کی تائید میں حاضر ہوں گے:

پی قتم ہے تیرے دب کی ہم انہیں شیطانوں کیساتھ اکٹھا کریں گے پھر انہیں جہنم کے اردگر دزانو وک کے بل گرے ہوئے حاضر کریں گے۔

فَوَى بِنْ لَنَحْشُر نَّهُمُ وَالشَّلِطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِ مَنَّهُمُ

حَوُلَجَهَنَّمَ حِثِيًّا ﴿ (3)

ذراسوچو! اس وقت تمہارا کیا حال ہوگا!اور جب لوگ قبر سے اٹھانے کے بعد ننگے ہیراور ننگے بدن میدانِ قیامت میں جوایک صاف شفاف زمین ہوگی جس میں کوئی کجی اور ٹیلنہیں ہوگا، آئیں گے، اس پرنہ کوئی ٹیلہ ہوگا کہ انسان اس کے پیچھےاوجھل ہوجائے اور نہ ہی کوئی گھاٹی ہوگی جس میں انسان حجیب جائے بلکہ وہ ہموارز مین ہوگی جس

- الكتاب العظمة للاصبهاني، صفة اسرافيل...الخ، ص١٣٧، الحديث ٣٨٨ و موسوعة ابن ابي الدنيا ، كتاب الاهوال،
 ٦/٦ ١، الحديث ٥٤
 - 2ترجمه كنز الايمان: اورجب وشق جانورجع كئ جاكير وب٣٠ التكوير: ٥)
- 3 توجمهٔ کنز الایمان: توتمهار برب کی تسم ہم انھیں اور شیطانوں سب کو گھیرلائیں گے اور انھیں دوز نے کے آس پاس حاضر کریں گے۔ گھٹنول کے بل گرے۔ (ب۶۱، میدہ ۸۶)

پرلوگ گروہ درگروہ لائے جائیں گے، بےشک رتِ ذوالب لاعظیم قدرتوں کا مالک ہے جوروئے زمین کے گوشے گوشے سے تمام مخلوق کوایک ہی میدان میں صور پھو نکنے کے وقت جمع فر مائے گا، دل اس لائق ہیں کہاس دن بیقرار ہوں اور آئکھیں خوفز دہ ہوں۔

نبی کریم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا فرمان ہے کہ قیامت کے دن لوگ ایک چَیْنُکُ میدان میں کھڑے کئے جائیں گ جو ہرفتم کے درختوں، او نچے نیچے ٹیلوں اور عمارتوں سے پاک ہوگا۔ (1) اور بیز مین دنیا کی زمین جیسی نہیں ہوگی بلکہ بیہ صرف نام کی ہی زمین ہے چنانچے فرمانِ الہی ہے:

يَوْمَ نُبُدَّا لُ الْأَنْ مُنْ خُيْرَ الْأَنْ ضِ وَالسَّلُوتُ (2)

حضرت ابن عباس دَضِی اللهٔ عَنهُمَا کا قول ہے کہ اس زمین میں کی بیشی کی جائے گی ،اس کے درخت ، پہاڑ ، وادیاں ، دریا سب ختم کر دیئے جائیں گے اور اسے عکاظی چڑ ہے کی طرح کھینچا جائے گا (جس طرح کچے چڑ کے کھینچتے ہیں) وہ بالکل چیٹیل میدان ہوگا جس پر نہ کسی کوتل کیا گیا ہوگا اور نہ ہی اس پر کوئی گناہ ہوا ہوگا اور آسانوں کے سورج ، جا نداور ستارے ختم کردیئے جائیں گے۔

².....تو جمهٔ کنز الایمان: جس دن بدل دی جائے گی زمین اس زمین کے سوااور آسان - (پ۱۰ ابراهیم: ٤٨)

X

گے۔فرمانِ نبوی ہے کہ لوگ ننگے پیر ننگے بدن اٹھیں گے اور اپنے نہینے میں کان کی لوؤں تک غرق ہوں گے۔ ام المؤمنین حضرتِ سَوْدَودَ رَضِیَ اللَّهُ عَنْهَا نے عرض کی :یا دسول الله! کیسا عبرت ناک منظر ہوگا کہ ہم ایک دوسرے کونگا دیکھیں گے! آپ نے فرمایا: کسی کوکسی کا ہوش نہیں ہوگا۔ (1)

اس دن لوگ ننگے ہوں گے مگر کوئی کسی کی طرف متوجہ نہیں ہوگا کیونکہ لوگ مختلف صورتوں میں چل رہے ہوں گے بعض لوگ ببیٹ کے بل اور بعض منہ کے بل چلیں گے ، انہیں کسی کی طرف توجہ کرنے کا ہوش ہی نہیں ہوگا۔

حضرت ابو ہریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے کہ حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلّم نے فر مایا: قیامت کے دن لوگ تین حالتوں میں ہوں گے: سوار، پیدل اور منہ کے بل چلنے والے، ایک شخص نے بوچھا کہ منہ کے بل کیسے چلیں گے؟ آپ نے فر مایا: جو پیروں پر چلاسکتا ہے وہ منہ کے بل چلانے پر بھی قادر ہے۔ (2)

آ دمی کی طبیعت میں انکار کا مادہ بہت ہے جس چیز کود مکی نہیں پاتا ہے اس کا انکار کردیتا ہے چانچہ اگرانسان سانپ کو پیٹے کے بل انہائی برق رفتاری ہے دوڑتا ہوانہ دیکھا تو یہ بات کبھی تسلیم نہ کرتا کہ پیٹے کے بل دوڑا اور چلا جاسکتا ہے، جنہوں نے پیروں پرکسی کو چلتے ہوئے نہیں دیکھا ہوگا ان کے لئے یہ بات انہائی حیرت انگیز ہوگی کہ انسان صرف پیروں پر چلتا ہے لہٰذاتم دنیاوی قیاس سے کام لیتے ہوئے اخروی عجائبات کا انکار نہ کرو، پس اس پر قیاس کرلوکہ اگرتم نے دنیا کے جائبات نہ دیکھے ہوتے اور تمہیں ان کے متعلق بتایا جا تا تو تم تسلیم کرنے سے انکار کردیتے۔

ذراا پنے دل میں یہ سوچو کہ جب تم نظے، ذلیل ورسوا، حیران و پریشان اپنے متعلق اچھے یا بُرے فیصلے کے منتظر موگے تب تمہاری کہا جالت ہوگی۔

مخلوق کے اِژ دِ ہام اور بھیڑ بھاڑ کے متعلق ذرا خیال کرو کہ عرصۂ محشر میں زمین وآسان کی تمام مخلوق فرشتے ، جن ، انسان ، شیطان ، جانور ، درند ہے ، پرند ہے سب جمع ہوں گے ، پھر سورج نکلے گا ، اس کی گرمی پہلے سے دُگنی ہوگی اوراس

1المعجم الكبير، ٢٤/٢٤، الحديث ٩١

2 ترمذی، کتاب التفسیر، ۹٦/٥، الحدیث ٣١٥٣

X

کی حد ت میں موجودہ کی دور ہوجائے گی، سورج لوگوں کے سروں پرایک کمان کے فاصلے کے برابر آجائے گا، اس وقت عرشِ الہی کے سابیہ کے حضور حاضری کے خیال سے انتہائی شرمندہ اور ذلیل ورسوا ہوں گے اس وقت سورج کی گرمی، سانسوں کی گرمی، دلوں میں پشیمانی کی آگ اور زبر دست خوف وہراس طاری ہوگا اور ہرایک بال سے پسینہ بہنا شروع ہوگا، یہاں تک کہوہ قیامت کے میدان میں پانی کی طرح ہمرجائے گا اور ان کے جسم بقدر گناہ پسینے میں ڈو بے ہوں گے بعض گھٹوں کہوہ کی گئی کے بعض کا نوں کی لُوت کا وربعض سرایا پسینہ میں غرق ہونگے۔

حضرت ابن عمر دَضِیَ اللّهُ عَنْهُمَا ہے مروی ہے ؛ حضور صَلَّی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: لوگ اللّه کی بارگاہ میں کھڑے ہوں گے۔ (1)

حضرتِ ابو ہر ریرہ دَ طِنیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے کہ حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: قیامت میں لوگوں کا پسینہ ستر ہاتھ او نچا ہوجائے گا اوران کے کا نوں تک پینچ جائے گا۔⁽²⁾ اسے بخاری ومسلم نے روایت کیا ہے۔

ایک اور روایت ہے کہ لوگ چالیس برس برابر آسان کی جانب تکٹکی باندھے دیکھتے رہیں گے اور شدید تکلیف کی وجہ سے پسیندان کے منہ تک پہنچا ہوا ہوگا۔ (3)

حضرت عُقْبَهَ بِنَ عامر دَضِیَ اللهُ عَنُدے مروی ہے کہ قیامت کے دن سورج لوگوں کے انتہائی قریب ہوگا،لوگوں کوشد بدیسینہ آئے گا چنانچ بعض لوگ ٹخنوں تک، بعض آ دھی پنڈلی تک، بعض گھٹنوں تک، بعض رانوں تک، بعض کر تک، بعض منہ تک (اور آپ نے ہاتھ کے اشارے سے بتلایا کہ انہیں پیننے کی لگام لگی ہوگی) اور بعض لوگ پسینہ میں ڈوب جائیں گے اور آپ نے سرکی طرف اشارہ فرمایا۔ (4)

❶بخارى، كتاب التفسير، باب يوم يقوم الناس...الخ، ٣٧٤/٣، الحديث ٩٣٨ ٤

^{2}بخارى، كتاب الرقاق، باب قول الله تعالى الا يظن...الخ، ٤/٥٥١، الحديث ٢٥٥٢،

^{3}المعجم الكبير، ٩٧٦٤، الحديث ٩٧٦٤

^{4} مسند احمد ، مسند الشاميين، حديث عقبة بن عامر الجهني، ٦/٦ ١ ١ الحديث ١٧٤٤

مكاشفة القلوب

اے نا تواں انسان! ذرا قیامت کے روز کے پسینہ اور د کھ در دکو یا دکر اور سوچ ان میں ایسے لوگ بھی ہوں گے جو کہیں گے: اے الله! ہمیں اس مصیبت سے نجات دے اگر چہتو ہمیں جہنم بھیج دے اور تو بھی انہی میں سے ایک ہوگا اور تجھے معلوم نہیں کہ تو کہاں تک پسینہ میں غرق ہوگا۔

ہروہ انسان جس کا حج، جہاد، روزہ، نماز، کسی بھائی کی حاجت روائی، نیکی کے علم اور برائیوں سے منع کرنے کے سلسلے میں پسینہ بہے گا اور شدیدرنج والم ہوگا۔ (اس سلسلے میں پسینہ بہے گا اور شدیدرنج والم ہوگا۔ (اس سلسلے میں بیانہ بہے گا اور شدیدرنج والم ہوگا۔ (اس سے ایسا کا م سرز ذہیں ہوا ہے)

اگرانسان جہالت اور فریب سے کنارہ کش ہوکر سوچ تواسے معلوم ہوگا کہ عبادات میں سختی برداشت کرنا، قیامت کے طویل سخت اور شدید دن کے انتظار اور پسینہ (کے عذاب) سے بہت ہی آسان ہے۔

ایک لا کھ بندوں کی شفاعت کرنے والا

اعلی حضرت، إمام البسنّت، مولانا شاه امام احدرضا خان عليه رحمهُ الرَّحمٰن فتاوى رضوية شريف جلد 23 صفحه 122 بنقل فرمات بين: حضرت ابُوالْمُوَابِب رَضِى اللهُ عَنْه فرمات تصح كم مين نے خواب مين دسول الله صلّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے جھے سے فرما يا كہ قيامت كودن تم ايك لاكھ بندوں كى شَفاعت كروگ ميں نے عرض كى : يارسول الله ارصَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بهوا؟ ارشاد فرما يا: اس ليك كم جھے ير دُرود ير هراس كا ثواب مجھے نذركرد ية ہو۔

(الطبقات الكبرى للشعراني، ص١٠١)

تواب نَذْر کرنے کا طریقہ ہیہ کہ پڑھتے وقت تواب نَذْر کرنے کی دل میں نیت کرلے یا پڑھنے سے قبل یا بعد زبان سے بھی کہدلے کہ اِس دُرود شریف کا تواب جنابِ رسالت مآب صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی نَذْر کرنا ہوں۔ کرنا ہوں۔

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

اب 37

کمخلوق کے نیصلے 🏷

حضرت ابو ہریرہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ہے مروی ہے: حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فرمایا کہ جانتے ہو مفلس کون ہے؟ ہم نے کہا: مفلس وہ ہے جس کے پاس رو پید پیسہ اور مال ومنال نہ ہو۔ آپ نے فرمایا: نہیں، میری امت میں مفلس وہ ہے جو قیامت کے دن نماز، روزہ، زکو ۃ وغیرہ کا ثواب لئے ہوئے آئے گا مگر اس نے کسی کو گالی، کسی کی غیبت، کسی کو ناحق قبل مسی پر ظلم اور کسی کا مال کھایا ہوگا، اس کی تمام نیکیاں ان لوگوں میں تقسیم کردی جائیں گی، جب اس کی نیکیاں ختم ہوجائیں گی تو دوسروں کے گناہ اس پر ڈال دیئے جائیں گے اور اسے جہنم میں ڈالا جائے گا۔ (1)

اے انسان! ذرا سوچ! اس دن تیری کیا حالت ہوگ! تیرے پاس کوئی الیی نیکی نہیں ہے جسے تونے ریا اور شیطان کے وسوسوں سے پاک ہوکر کیا ہوگا، اگر تو نے طویل مدت میں ایک خالص نیکی حاصل کرلی ہے تو وہ بھی قیامت میں تیرے دشمن لیجا کیں گے شاید تو نے اپنے نفس کا محاسبہ کرتے ہوئے دیکھا ہوگا کہ اگر چہتو ساری رات عبادت میں اور تیری نیکیاں برباد ہوجاتی ہیں، اور تیام دن روزوں میں گزارتا ہے مگر تیری زبان مسلمانوں کی غیبت سے نہیں رکتی اور تیری نیکیاں برباد ہوجاتی ہیں، دیگر برائیاں جیسے حرام کی چیزیں کھانا، مال مشکوک ہفتم کرجانا اور کمل طور پرعبادت الہی نہ کرسکنے کی کوتا ہی سے تو کیسے عہدہ برآ ہوسکتا ہے۔ جبکہ اس دن ہربے سینگ والی بکری کوسینگ والی بکری سے بدلہ دلایا جائے گا۔

حضرت البوذر رَضِىَ اللهُ عَنهُ مع مروى ہے كہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم في دوبكر بول كوآ بس ميں سينگ مارت موئ و كير كرفر مايا: ابوذر! جانتے ہو بيا بيا كيول كررہى ہيں؟ ميں نے كہا: نہيں۔ آپ نے فر مايا: كيكن الله تعالى جانتا ہے كہوئ و كيول ايك دوسر كوسينگ ماررہى ہيں اوروہ قيامت كے دن ان كا فيصله فر مائے گا۔ (2) حضرت ابو ہر بریودَ ضِیَ اللهُ عَنهُ قر آن كريم كى آيت:

^{1}مسند احمد ، مسند ابي هريرة ، ٣/٣ ١ ، الحديث ٨٠٣٥

^{2}مسند احمد، مسند الانصار، حديث ابي ذرالغفاري ، ١٠٠/٨ ، الحديث ٢١٤٩٤

زمین کے تمام جانوراور تمام پرندی تمہاری طرح ایک امت

وَهَامِنُ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلا ظَيْرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيُهِ

ے۔

إِلَّا أُمَّمَّا مُثَالُكُم اللَّهُ ال

کی تفسیر میں فرماتے ہیں: قیامت کے دن تمام مخلوق جانور، درندے، پرندے وغیرہ اٹھائے جائیں گے اور ہر کسی کو انصاف دیا جائے گا یہاں تک کہ بے سینگ والی بکری کوسینگ والی سے بدلہ دلا یا جائے گا اور پھر کہا جائے گا:تم مٹی ہوجاؤ!اس وقت میں کر ہر کا فرید پکارا کھے گا کہ'' کاش میں بھی مٹی ہوتا''(یکٹیٹی گُڈٹ ٹُڑباﷺ)۔(2)

اے ناتواں انسان!اس وقت جب که تیرا نامهُ اَعمال نیکیوں سے خالی ہوگا تو سخت دکھ میں مبتلا ہوکر کے گا: میری نکیاں کہاں ہیں؟ اور تجھ سے کہا جائے گا کہ وہ تیرے دشمنوں کے نامہُ انکمال میں منتقل ہو گئیں ہیں۔اُس وقت تواہیے نامهُ أعمال کو برائیوں سے بھراہوا یائے گاجن سے بیخے کیلئے تو نے دنیامیں اِنتہائی کوشش کی تھی اور رنج وغم اٹھایا تھا،تب تو کہے گا:اےاللہ!میں نے توبیگناہ نہیں کئے تھے،تو تجھے کہا جائیگا کہ بیان لوگوں کی برائیاں تیرے حصہ میں آئی ہیں جن کی تونے غیبت کی ، گالیاں دیں اوران ہے لین دین ، ہمسائیگی ، گفتگو ، مباحثوں اور دیگر معاملات میں تونے بدسلو کی کتھی۔ حضرت ابن مسعود رَضِيَ اللَّهُ عَنْه سِيم وي ہے؛حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِي فر مايا: شيطان جزيرة العرب ميں بت برستی سے نا اُمید ہو گیا ہے لیکن وہ عنقریب تمہارے برے اُفعال سے راضی ہوجائے گا اور یہی بدا عمالیاں تباہ کرنے والی ہیں، جہاں تک ہو سکے زیاد تیوں سے بچو کیونکہ قیامت کے دن ایک ایساانسان بھی آئے گا جس کی نیکیاں بہاڑوں کی طرح ہوں گی اوروہ یہ سمجھے گا کہ میں عنقریب نجات یا جاؤں گا مگر برابرانسان آتے جائیں گےاور کہیں گے: اے اللہ ایس نے ہم برظلم کیا تھا۔رب فر مائے گا:''اس کی نیکیاں مٹادو!'' یہاں تک کہاس کی کوئی نیکی باقی نہیں بیجے گی، بیالیاہی ہے جیسے کچھلوگ سفر میں ایک صحرا میں اتر ہے، ان کے پاس ککڑیاں نہیں تھیں، وہ اردگر دیھیل گئے اور انہوں نے لکڑیاں اکٹھی کیں مگر آگ جلانے سے پہلے ہی وہاں سے چل دیئے، یہی حال گنا ہوں کا ہے۔ جب به آیت کریمه نازل ہوئی:

^{🕕} تو جمهٔ کنز الایمان: اورنبین کوئی زمین میں چلنے والا اور نہ کوئی پرند کہا پنے پرول اڑتا ہے مگرتم جیسی امتیں ۔ (ب۷، الانعام: ۳۸)

^{2}ترجمه كنز الايمان: بائ يس كى طرح فاك بوجا تا_ (ب ٣٠ النبا: ٤٠)

الحديث ٣٢٦٣ (١٤٠٥) السابع والاربعون...الخ، فصل في محقرات الذنوب، ٥/٥٥) الحديث ٣٢٦٣

(1) إِنَّكَ مَيِّتَّ وَّ إِنَّهُمُ مَّيِتُونَ ۞ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيمَةِ عِنْدَ كَرَبِّكُمْ تَخْتَصِبُونَ ۞

تو حضرت نیر رَضِیَ اللهُ عَنُد نے عرض کی : یارسول الله! (صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم) ہم دنیا میں ایک دوسرے کے ساتھ جو زیادتیاں کرتے ہیں وہ لوٹائی جا کیں گی؟ آپ نے فرمایا: ہاں! تا کہ ہرمظلوم کواس کاحق دلایا جائے ۔ حضرت زیبر رَضِیَ الله عَنْه نے کہا: ' بخدا! یہ بات بہت عظیم ہے۔'(2) ایساعظیم دن جس میں کسی قدم کونہیں بخشا جائے گا اور نہ ہی کسی تھیٹر سے درگز رکیا جائے گا تا آ نکہ ہرمظلوم کوظالم سے اس کاحق دلایا جائے گا۔

حضرتِ آئس دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے کہ رسول اللّٰه صَلَی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فرمایا: اللّٰه تعالیٰ قیامت کے دن لوگوں کو بر ہنہ ، غبار آلود ، خالی ہاتھ اٹھائے گا ، پھر اللّٰه تعالیٰ فرمائے گا (اوریہ آواز قریب ودور یکساں سی جائے گی) کہ میں بادشاہ ہوں ، ہر شخص کواس کے اعمال کے مطابق بدلہ دینے والا ہوں ، کوئی جنت میں اور کوئی دوز خی میں بغیر بدلہ دیئے نہ جائے گا۔ ہم نے دسول اللّٰه صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم ہے عرض کیا: حضور بدلہ کیسے دیا جائے گالوگ تو بر ہنہ اور خالی ہاتھ ہوں گے! آپ نے فرمایا: نیکیوں اور گنا ہوں کے ساتھ بدلے دیئے اور لئے جائیں گے (⁽⁸⁾ لبذا اللّٰه سے ڈرو! لوگوں کے مال چھین کر ، ان کی عزتیں پامال کر کے ، ان کے دل دُکھا کے اور ان سے بُر اسلوک کر کے ان برظم نہ کروکیونکہ جو گناہ بندے اور خدا تعالیٰ کے درمیان ہیں وہ بہت جلد معاف کر دیئے جائیں گے۔

جو خص گناہ اور لوگوں سے زیاد تیاں کر کے تائب ہو چکا ہوا سے چاہئے کہ وہ نیکیوں میں دل لگائے اور ان کو یوم قیامت کے لئے ذخیرہ بنائے ، مزید برآں مکمل اخلاص سے ایسی نیکیاں کرے جو الله تعالی کے سواکوئی نہ جانتا ہو ممکن ہے اسی کے فیل الله تعالیٰ اسے اپنامُقرَّب بنالے اور ان محبوب مومنوں کی جماعت میں اسے شامل فرمالے جسے وہ باوجود زیاد تیوں کے اپنے لطف وکرم سے بخش دے گا۔

حضرت أنس رَضِيَ اللهُ عَنه م وى ب: هم رسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كساته بيش هوئ تها، اجإنك

-تو جمهٔ کنز الایمان: بِشَکِتْهِیں انتقال فرمانا ہے اوران کو بھی مرناہے، پھرتم قیامت کے دن اپنے رب کے پاس جھکڑ دگے۔ (پ۲۳،۱۴مارور: ۲۱،۳۰)
 - 2مسند احمد، مسند الزبير بن العوام، ٣٥٣/١ الحديث ١٤٣٤
 - 3مسند احمد، مسند المكيين، حديث عبدالله بن انيس، ٩/٥٪ ، الحديث ١٦٠٤٢ عن عبدالله بن انيس

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَتَنْسِم فر ما يااس طرح كرآب كوندانِ مبارك نظر آف لكرحضرت عمر رَضِي اللهُ عَنْه ف عرض کیا: میرے ماں باب آپ پر قربان ہوں!حضور کس بات پرنبسم فر مارہے ہیں؟ آپ نے فرمایا: میری امت کے دوآ دى الله كى بارگاه ميں حاضر ہول كے ، ان ميں سے ايك كهے گا: ' واله الْعَالِمينَ ! مجھے اس بھائى سے انصاف ولا يئے ـ ربّ تعالی دوسرے آ دمی سے فرمائے گا کہ اسے اس کاحق دو! وہ عرض کرے گا:''یا الٰہی!میری نیکیوں میں کچھ یا قی نہیں ر ہاہے۔''الله تعالی انصاف چاہنے والے سے فر مائے گا:اب کیا کہتے ہو؟ وہ کہے گا:''اےاللہ !اس کے عوض میرے گنا ہوں کا باراس پر کرد یجئے! "حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كى چشمائے اطہرا شكبار ہو گئيں، پھر فرمایا: بے شک به بہت شدیددن ہوگا،لوگ اینے گناہ دوسروں پر ڈالنے کے خواہشند ہوں گے۔اللّٰہ تعالیٰ پہلے شخص سے فر مائے گا کہ نظرا تھا کر جنت کودیکھو! وہ جنت کود کیر کر کہے گا: میں نے سونے جاندی کے اونچے اونچے محلات دیکھے ہیں جن میں موتی جڑے ہوئے ہیں، یکونسے نبی،صدیق یاشہید کے لئے ہیں؟ ربدوالجسان فرمائے گا: جواس کی قیمت اداکرے گا اسے دوں گا۔وہ کہے گا:اےاللہ!ان کی قیمت کس کے پاس ہے؟الله تعالی فرمائے گا:'' تیرے پاس ان کی قیمت ہے اوروہ یہ ہے كەتواپىخاس بھائى كومعاف كردے' چنانچەوەاسےمعاف كردےگا اوررب تعالى فرمائے گا:اپنے بھائى كاماتھ يكڑ کراسے جنت میں داخل کردے۔اس کے بعدحضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَ سَلَّم نے فر مایا:الله سے ڈرو!اورا بک دوسرے سے نیکی کرو!الله تعالی قیامت کے دن مومنوں میں باہم صلح کرائے گا۔⁽¹⁾

اس ارشاد میں بیتا کید پائی جاتی ہے کہ انسان اپنے اخلاق بہتر بنائے ، لوگوں سے نیکی کرے۔ اب اے انسان ذرا غور کرا اگر تیرانامہ اعمال اس دن مظالم سے پاک ہو یا الله تعالی تجھے اپنے لطف وکرم سے بخش دے اور تجھے سعادت ابدی کا یقین ہوجائے تواللہ تعالی کی عدالت سے واپس لوٹے ہوئے تجھے کتنی ''خوثی اور مسرت' ہوگی ، تیر ہے جسم پر رضائے الہی کا لباس ہوگا ، تیرے لئے ابدی سعادت ہوگی اور ہمیشہ رہنے والی نعتیں حاصل ہوں گی ، اس وقت تیرا دل خوثی و شاد مانی سے اُڑر ہا ہوگا ، تیر اچرہ سفید ونو رانی ہوگا اور چودہویں رات کے جاند کی طرح تاباں ، تو سرا تھائے ہوئے فخر کے ساتھ لوگوں میں جائے گا ، تیری پیٹھ گنا ہوں سے خالی ہوگی ، جنت کی ہواؤں اور رضائے الہی کی ٹھنڈک سے تیری پیشانی چمک رہی ہوگی ، ساری مخلوق کی تگا ہیں تجھ پر جمی ہوں گی ، وہ تیرے حسن و جمال پر رشک کریں گے ، ملا تکہ تیرے پیشانی چمک رہی ہوگی ، ساری مخلوق کی تگا ہیں انوا لم یہ قو من الحسنات ...النے ، م/ ۲۰ ۲۰ المحدیث ۸ کو ۱

آ کے پیچے چل رہے ہوں گے اور لوگوں سے کہیں گے: یہ فلاں بن فلاں ہے،اللّٰہ تعالیٰ اس سے راضی ہوا اور اسے راضی کردیا، اسے سعاوتِ ابدی میسر آ گئ ہے اور اسے بھی بھی شقاوت سے ہمکنار نہیں ہونا پڑے گا۔ کیا تو یہ مقام اِس مقام سے بلند نہیں ہم متنا جے توریاء تقنی منافقت اور زیب وزینت سے لوگوں کے دلوں میں بناتا ہے۔اگر تو اس بات کواچھا ہم متنا وہی مقام آ خرت اچھا ہے، تو اخلاص اور اللّٰہ تعالیٰ کے حضور نیتِ صادق کے ساتھ حاضری دے، کھر تو یہ بلند مرتبہ حاصل کر لے گا۔

نعوذ باالله اگرابیانه موااور تیرے نامهٔ أعمال سے تمام برائیاں فکیس جنہیں تومعمولی سمجھتا تھا حالانکہ الله تعالیٰ کے نز دیک وہ بہت بڑی غلطیاں تھیں،اسی وجہ ہے تچھ پراللہ تعالیٰ کاعتاب ہواوروہ فر مائے:اے بدترین انسان! تچھ پرمیری لعنت ہو، میں تیری عبادت قبول نہیں کرنا، توبیہ واز سنتے ہی تیراچېره سیاه ہوجائے گا، پھرالله تعالیٰ کی ناراضگی کے سبب الله كفرشة تجھ يرناراض موجائيں گےاوركہيں گے: تجھ ير بهاري اورتمام مخلوق كي طرف بے لعنت مو،اس وقت عذاب کے فرشتے اپنی بھریور بدمزاجی ، بدخلقی اور وحشتنا ک شکلوں کے ساتھ رب تعالیٰ کی ناراضگی کی وجہ ہے انتہائی غصہ میں تیری طرف بڑھیں اور تیری پیشانی کے بالوں کو پکڑ کر تھے تمام لوگوں کے سامنے منہ کے بل تھسیٹیں ،لوگ تیرے چیرے کی سیاہی دیکھیں، تیری رسوائی دیکھیں!اورتو ہلاکت کو یکارےاور فرشتے تخفے کہیں تو آج ایک ہلاکت کونہیں بہت می ہلا کتوں کو بُلا اور فرشتے ریجار کر کہیں، بیفلاں بن فلاں ہے،الله تعالیٰ نے آج اس کی رسوائیوں کا بردہ جا ک کردیا ہے،اس کے برے اعمال کی وجہ سے اس پرلعنت کی ہے اور دائمی بدیختی اس کونصیب ہوئی ہے اور بیانجام بسااوقات ایسے گنا ہوں ، کا ہوتا ہے جسے تو نے لوگوں سے حصیب کر کیا ہو، ان سے شرمندگی یا اظہارِ تقویٰ کے طور پر تونے ایبا کیا ہو مگراس سے بڑھ کر تیری بے وقوفی اور کیا ہوگی کہ تو نے چندآ دمیوں کے ڈ رسے صرف دنیاوی رسوائی سے بیچتے ہوئے حییب کر گناہ کیا مگر اس دعظیم رسوائی ''سے جوساری دنیا کے سامنے ہوگی اوراس میں الله تعالیٰ کی ناراضگی ،عذابِ الیم اورعذاب کے فرشتوں کا تجھے جہنم کی طرف گھسٹنااور دوسر ہے عذاب شامل ہو نگے ،تو نے بچنے کی کوئی تدبیر نہ کی ۔قیامت میں تیری یہی کیفیات ہوں گی مگرافسوس کہ تخصے پیش آنے والےخطرات کا ذرہ بھراحساس نہیں ہے۔

(باب 38)

$\left\{ \stackrel{\star}{0} \right\}$ مذمّتِ مال ومنال

er of the f<u>all and the graph</u> shed

فرمانِ اللي ہے:

يَا يُنهَا الَّذِينَ امَنُوالا تُلْهِكُمُ امُوالكُمُ وَلآ اولادُكُمُ

عَنْ ذِكْمِ اللهِ وَوَمَن يَّفَعَلْ ذَٰ لِكَ فَالْ لِكَهُمُ

الْحٰسِرُونَ ۞ (1)

مزیدارشادہے:

إِنَّمَا آمُوالْكُمْ وَأَوْلَا دُكُمْ فِشَتَّةٌ ۗ وَاللَّهُ عِنْدَةَ اَجْرٌ

عَظِيْمٌ ۞ (2)

إلبا الموالدم وأولا ديم وسه والله عبالة اجر

لہذا جس کسی نے بھی مال اور اولا دکواللہ تعالیٰ کی رحمت پرتر جیح دی اس نے عظیم نقصان کیا۔

فرمانِ اللی ہے: جو خص دنیاوی زندگی اور زیب وزینت کی تمنا کرتاہے۔ (آخرآیت تک)(3)

فرمانِ اللِّي ہے:

تحقیق انسان سکڑی کرتاہے اسلئے کہ وہ خود کوغنی اور بے پروا سمجھتا ہے۔

اےا پیان والوتہہیں تمہارا مال واولا داللہ سے غافل نہ کر ہے

بلاشيتهارے مال اور اولا وتبهارے ليے آز مائش ہيں اور الله

کے نزد یک بہت بڑاا جرہے۔

اورجس نے ایسا کیاوہ نقصان پانے والے ہیں۔

- إِنَّ الَّالْ نُسَانَ لَيُطْغَى ﴿ أَنْ مَّ الْاَاسْتَغُنَّى ۞
- س. تو جمهٔ کنز الایمان: اے ایمان والو! تمہارے مال نتمہاری اولا وکوئی چیز تمہیں الله کے ذکر سے عافل نہ کرے اور جوالیا کرے تو وہی لوگ نقصان میں میں ۔ (ب۸۷، المنشقون: ۹)
 - 2ترجمهٔ کنز الایمان: تمبارے مال اورتمبارے بیج جائج ہی ہیں اور الله کے پاس بڑا ثواب ہے۔ (پ۸۷، التغابن: ۱۵)
- ۔۔۔۔۔تو جمع کنز الایمان: جودنیا کی زندگی اور آرائش چاہتا ہوہم اس میں ان کا پورا کھل دے دیں گے اوراس میں کمی نیدیں گے یہ ہیں وہ جن کے لیے آخرے میں کچھنیں مگر آگ اورا کارٹ گیا جو کچھو ہاں کرتے تھے اور نا بوو (برباد) ہوئے جوان کے عمل تھے۔ (ب۲۱، ھرد: ۹،۲۰۰۵)
 - **4**.....تو جمهُ كنو الايمان: بيشك آ ومي مركشي كرتا باس يركه اينة آ ب كوني تمجه ليا ـ (ب ٣٠ مالعلق: ٧٠٦)

مزید فرمایا: تمہیں کثرت ِ مال کی طلب نے ہلاک کردیا۔ (1)

فرمانِ نبوی ہے کہ جیسے پانی سبزیاں اُ گاتا ہے اسی طرح مال اور عزت کی محبت انسان کے دل میں نفاق پیدا رتے ہیں۔(2)

فرمانِ نبوی ہے کہ دوخطرنا ک بھیٹر ئیئے بکر یوں کے احاطہ میں گھس کر اتنا نقصان نہیں کرتے جتنا کسی مسلمان کے دین میں مال ،عزت اور وجاہت کی تمنا نقصان کرتی ہے۔ (3)

فرمانِ نبوی ہے کہ زیادہ دولت مند ہلاک ہو گئے مگر جنہوں نے بندگانِ خدا پر بے اندازہ مال خرچ کیا (وہ ہلاکت مے مخفوظ رہے) اور ایسے لوگ کم ہیں ، ⁽⁴⁾

آپ سے بوچھا گیا آپ کی امت میں سب سے بُر بےلوگ کون ہیں؟ فرمایا: دولت مند! (5)

فرمانِ نبوی ہے کہ عنقریب تمہارے بعدایک قوم آنے والی ہے جود نیا کی خوش رنگ نعتیں کھا کیں گے، خوش قدم گھوڑ ول پرسوار ہول گے، بہترین، حسین وخو بروعور تول سے نکاح کریں گے، بہترین رنگوں والے کیڑے پہنیں گے، کھوڑ ول پرسوار ہول گے، بہترین محمولی پیٹ بھی نہیں بھریں گے، ان کے دل کثیر دولت پر بھی قناعت نہیں کریں گے، جسج وشام دنیا کو معبور جمھے کر اس کی عبادت کریں گے، اسے اپنار بسمجھیں گے، اس کے کاموں میں مگن اور اس کی پیروی میں گامزن رہیں گے۔ اس کے حکم مول میں مگن اور اس کی پیروی میں گامزن رہیں گے۔ جو خض ان لوگوں کے زمانہ کو پائے ، اسے محمد بن عبد الله (صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ورَضِیَ اللهُ عَنْه) کی وصیت ہے کہ وہ انہیں سلام نہ کرے، بیاری میں ان کی عیادت نہ کرے، ان کے جناز وں میں شامل نہ ہواور ان کے سرداروں کی عزت نہ کرے اور جس شخص نے ایسا کیا اس نے اسلام کومٹانے میں ان سے تعاون کیا۔ (6)

التكاثر:١)

^{....2}

^{119}المعجم الكبير، 97/19 ، الحديث 119

^{4} مسند احمد، مسند ابي هريرة، ٣٠/٣ ، الحديث ٩١ ٨٠٩

^{5} البزار، ٦ / ٣٤ ٢، الحديث ٥ ١ ٤ ٩ و شعب الايمان، ٥ / ٣٣، الحديث ٩ ٦ ٦ ٥

المعجم الاوسط، ۲۰/۲، الحديث ۱۵۳۱و تذكرة الموضوعات للفتني، ص ۱۷۶ و اتحاف السادة المتقين، كتاب
 ذم البخل...الخ، ۹/۹۹

فرمانِ نبوی ہے کہ دنیا، دنیا داروں کے لئے چھوڑ دو، جس نے اپنی ضرورت سے زیادہ دنیا لے لی، اس نے بے خبری میں اینے لئے ہلاکت لے لی۔ (1)

فرمانِ نبوی ہے کہ انسان " میرامال "کرتا ہے مگرتمہارے مال سے وہ ہے جوتو نے کھالیا وہ ختم ہوگیا اور جو پہن لیاوہ پرانا ہوگیا، جوراہِ خدامیں خرج کیاوہی باقی رہا۔ (2)

ایک شخص نے عرض کیا: یا دسول الله! مجھے کیا ہو گیا ہے کہ میں موت کواچھانہیں سجھتا؟ آپ نے فرمایا: تیرے پاس کے کھ مال ودولت ہے؟ اس نے عرض کیا: جی ہاں۔ آپ نے فرمایا: مال کوراہِ خدا میں خرچ کردو کیونکہ مومن کا دل اپنے مال کے ساتھ رہتا ہے اگروہ مال کورو کے رکھتا ہے تو اس کا دل مرنے پر تیار نہیں ہوتا اور اگروہ مال کو آگے بھیج دیتا ہے (راہِ مولی میں خرچ کردیتا ہے) تو اسے بھی وہاں جانے کی آرز وہوتی ہے۔ (3)

فرمانِ نبوی ہے کہ انسان کے تین دوست ہیں: ایک اس کی موت تک ساتھ رہتا ہے، دوسرا قبرتک اور تیسرا قیامت تک ساتھ رہے گا،موت تک کا ساتھی اس کا مال ہے، قبرتک کا ساتھ دینے والا اس کا خاندان ہے اور قیامت تک ساتھ دینے والے اس کے اعمال ہیں۔(4)

حضرت عیسیٰ عَلَیْهِ السَّلام کے حواریوں نے آپ سے پوچھا: کیا وجہ ہے کہ آپ پانی پر چلتے ہیں اور ہم نہیں چل سکتے؟ آپ نے فرمایا: تم مال ودولت کو کیسا سمجھتے ہو؟ وہ بولے: اچھا سمجھتے ہیں۔ آپ نے فرمایا: مگرمیر سے نزد کیک مٹی کا ڈھیلا اور روپیہ برابر ہے۔

حضرت سلمان فارسى رَضِيَ اللَّهُ عَنُه في حضرت ابوالدرداء رَضِي اللَّهُ عَنْه كولكها كهام بها فَي اخودكوا تني دنياجمع

- 1 كنزالعمال، كتاب الاخلاق، باب الزهد، ٧٩/٢، الجزء الثالث، الحديث ١١١٤
 - 2مسلم ، كتاب الزهد والرقائق، ص٨٢ه١ ، الحديث ٣_ (٩٥٨)
 - 3الزهد لابن المبارك، ص١٢٤، الحديث٦٤٣
 - 4.....المعجم الكبير، ٢٦٣/٧، الحديث ٧٠٧٥ ماخوذاً

کرنے سے بچاؤجس کائم ''شکر''ادانہ کرسکو کیونکہ میں نے دسول اللہ صَلَّى اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کوفر ماتے ہوئے سناہے کہ الله تعالیٰ کا اطاعت گزار دولت مندا پنامال لئے قیامت میں آئے گا، وہ پل صراط سے گزرنے لگے گا تواس کا مال کہے گا: گزرجا کیونکہ تو نے میراحق ادا کیا تھا اور جب گنہ گار دولت مندآئے گا اور پل صراط سے گزرنے لگے گا تواس کا مال کے گا: گزرجا کیونکہ تو نے میراح بارے میں الله تعالیٰ کے مقرر کردہ حقوق پور نے ہیں کئے تھے، پس اسے ہلاکت میں ڈال دیا جائے گا۔ (1)

فرمانِ نبوی ہے کہ جب انسان مرتا ہے تو فرشتے کہتے ہیں: اس نے کیا بھیجا تھا (راہ خدا میں کیا کچھ خرچ کیا تھا) اور انسان کہتے ہیں: اس نے کیا کچھ چھوڑا ہے؟ (²⁾

فرمانِ نبوی ہے کہ جائیدا دنہ بناؤ،تم دنیا ہے محبت کرنے لگو گے۔⁽³⁾

مروی ہے کہ کسی شخص نے حضرتِ ابوالدرداء دَضِیَ اللهُ عَنْهُ کو شخت ست کہا، آپ کونا گوارگز رااور آپ نے الله تعالی سے بددعا کی: اے الله اجس نے مجھے بُر اکہا ہے، اس کے جسم کو تندرست رکھ، اس کوطویل زندگی اور کثیر مال ومنال عطا کردے گویا نہوں نے تندرستی اور طویل زندگی کے ساتھ مال ودولت کی فراوانی کو بھی بُر ااور اسے راور است سے ہٹانے والاسمجھا۔

حضرت على حَرَّمَ اللهُ وَجُهَهُ نَهُ اللهُ وَجُهَهُ فَ اللهُ وَجُهَهُ فَ اللهُ وَجُهَهُ فَ اللهُ وَجُهَهُ فَ اللهُ وَجُهَا اللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَمُعَالِمُ اللهُ وَجُهَا اللهُ وَجُهَا اللهُ وَجُهَا اللهُ وَجُهَا اللهُ وَجُهَا اللهُ وَعُمَا اللهُ وَجُهَا اللهُ وَاللهُ وَاللّهُ واللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ

مروی ہے کہ حضرت عمر دَضِیَ اللّٰهُ عَنُه نے ام المونین حضرتِ زینب بنت جُحُش دَضِیَ اللّٰهُ عَنُها کی خدمت میں پچھرقم بھیجی، آپ نے پوچھا: یہ کیا ہے؟ لوگول نے کہا: حضرتِ عمر دَضِیَ اللّٰهُ عَنُه نے آپ کی خدمت میں رقم بھیجی ہے۔ آپ بولیں: اللّٰه تعالیٰ عمر پر رحمت فرمائے، پھرایک پر دہ کیکراس کے چند کھڑے کئے اور اس کی تھیلیاں بنا کران میں رقم ڈال کرتمام کی

^{1} شعب الايمان، الحادي والسبعون... الخ، فصل فيما بلغنا عن الصحابة في معنى ما تقدم عن رسول الله، ٧/ ٣٨٠، الحديث ١٠٦٥٧

^{2}شعب الايمان، الحادي والسبعون...الخ، باب في الزهد، ٣٢٨/٧، الحديث ١٠٤٧٥

^{3} ترمذي ، كتاب الزهد، باب ٢٠، ٤٧/٤ ، الحديث ٢٣٣٥

X

تمام رشتہ داروں اور نتیموں میں تقسیم کر دی اور ہاتھ اٹھا کر اللہ تعالیٰ سے دعاما نگی کہ اے اللہ الْعالَموین! قبل اس کے کہ میرے پاس آئندہ سال حضرتِ عمر رَضِی اللهٔ عنه کی ایسی ہی رقم آئے، مجھے دنیا سے اٹھا لے! چنانچہ وہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے وصال کے بعد سب سے پہلے انتقال فر مایا۔ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے وصال کے بعد سب سے پہلی زوجہ محترمتھیں جنہوں نے سب سے پہلے انتقال فر مایا۔

حضرت حسن دَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهُ كَا قُول ہے: جس نے دولت كوعزت دى الله نے اسے ذليل كيا - كہتے ہيں: جب رو پہي بيسہ بنتا ہے توسب سے پہلے شيطان انہيں اٹھا كر ماتھ سے لگا كر چومتا ہے اور كہتا ہے جس شخص نے تم سے محبت كى وہ يقيناً ميرا بندہ ہے۔

حضرت ِسميط بن عجلان دَحُهَ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے: روپیہ پیسہ منا فقوں كى اليى مہاریں ہیں جوانہیں جہنم میں لے جاتے ہیں۔

حضرتِ يجي بن معاذدَ خمَهُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كدرو پيد پيد بچھو ہيں، اگر تمہيں اس كى كاٹ كامنتر نه آتا ہوتواسے ہاتھ نه لگاؤ، اگر اس نے تجھے ڈنک ماردیا تواس كا زہر تجھے ہلاك كردے گا، پوچھا گيا: اس كامنتر كيا ہے؟ آپ نے فرمایا: حلال سے كمانا اور شيخ كام ميں خرچ كردينا۔

حضرت علاء بن زیاد کہتے ہیں: میر ہے سامنے دنیا تمام زینوں سے مزین ہوکر آئی تو میں نے کہا: میں تیرے شر سے اللّٰہ کی پناہ جا ہتا ہوں، دنیانے کہا: اگرتم میرے شرسے بچنا جا ہتے ہوتو روپے پیسے سے دشمنی رکھو کیونکہ دولت اور روپ پیسے کو حاصل کرنا، دنیا کو حاصل کرنا ہے جوان سے الگ تھلگ رہے وہ دنیا سے پی جاتا ہے۔

اسی گئے کہا گیاہے:۔

انى وجدت فلا تظنوا غيره ان التورع عند هذا الدرهم فاذا قدرت عليه ثم تركته فاعلم بان تقاك تقوى المسلم

﴿1﴾ ميں نے بيراز باليا ہے اورتم بھى سمجھلوك، دولت كوچھور كر بى تقوى عاصل موتا ہے۔

﴿2﴾.....جب تودنیا پا کراہے جھوڑ دے تو واقعی تونے ایک مسلمان کا ساتقویٰ حاصل کیا ہے۔

ایک شاعر کہتاہے:

لايغر نك من المرء قميص رقعة اوازار فوق عظم الساق منه رقعة اوجبين لاح فيه اثر قد خلعه اره الدرهم تعرف حبه او ورعه

﴿1﴾..... تَجِيِّ كَى بِيوندلَّى قَيص يامونَّى نِيرٌ لى تك أَهِي مِونَى حِيا در (تهبند) دهو كه مين نه دُّ الے۔

﴿2﴾ یااس کی پیشانی پرنشانِ عباوت دھو کہ میں نہ ڈالےتم تو بیدد کیھو کہیں وہ مال ودولت ہے محبت تو نہیں کرتا۔

مروی ہے کہ حضرت عمر بن عبدالعزیز خونی الله عنه کی موت کے وقت مُسْلَمہ بن عَبُرُالْمَلِک نے آکر کہا: امیر المونین !
آپ نے ایساکام کیا ہے جو پہلے حکمرانوں نے نہیں کیا۔ آپ اپنی اولا دکوتنگدست چھوڑ کر جارہے ہیں ؟ حضرت عمر بن عبدالعزیز کے تیرہ بچے تھے، آپ نے یہ ن کر فر مایا: مجھے اٹھا کر بٹھاؤ۔ جب آپ بیٹھ گئے تو فر مایا: تم نے یہ کہا ہے کہ میں نے ان کے لئے مال و دولت نہیں چھوڑی ہے۔ میں نے بھی ان کاحق نہیں روکا اور نہ بھی انہیں و وسروں کاحق دیا ہے، اگر یہ اطاعت گزار رہیں گے تواللہ تعالی ان کی ضرور تیں پوری کرے گا، وہی نیکوں کا سر پرست ہے اور اگر یہ بدکار نظے تو مجھے اٹکی کوئی پروانہیں ہے۔

روایت ہے کہ حضرت محمد بن گغب القُرظی دَ حَمَدُ اللهِ عَلَيْه کو کہیں سے بہت می دولت مل گئی ،ان سے کہا گیا کہ اپنی اولا د اولا دے لئے کچھ جمع کر دیجئے! آپ نے فر مایا کہ میں اسے اپنے لئے اللّٰہ کے ہاں جمع کروں گا اور اپنے رب کواپنی اولا د کے لئے جھوڑ جاؤں گا۔

مروی ہے کہ ایک شخص نے اَبُوعَبْدِرَ بِیہ سے کہا: اے برادر! اپنی اولا دے لئے برائی نہیں بلکہ بھلائی حیور کر جاسیے تو انہوں نے اپنے مال سے ایک لا کھ درہم نکالے۔

حضرتِ بحیل بن معاذدَ حُمَةُ اللهِ عَلَيْهِ كا قول ہے كہ دومسببتیں الی ہیں كہان جیسی مسببتیں اگلے بچھلے لوگوں نے نہیں سُنی ہیں، وہ ہے موت کے وقت بندے كا مال پرافسوس، پوچھا گيا وہ كیسے؟ آپ نے فر مایا: اس سے تمام دولت چھن جاتی ہے اور دوسرے به كہا سے تمام دولت كا حساب الله كودينا پڑتا ہے۔

.....☆.....☆......☆

اب 39)

اعمال،میزان اور نار جهنم

میزانِ علی اور نامہ اعمال کے دائیں بابا ئیں ہاتھ میں دیئے جانے کے ہارے میں غور کرتے رہائتہارے لئے ضروری ہے کیونکہ حساب کے بعدلوگوں کی تین جاعتیں ہوں گی: ایک جماعت وہ ہوگی جس کی کوئی نیکی نہیں ہوگی، شب آ گے سے ایک سیاہ گردن نمودار ہوگی جو انہیں اس طرح اُ چک لے گئی جیسے پرندہ دانے اچک لیتا ہے اور انہیں لگی لیٹ گرآگ میں ڈال دیکی اور آگانہیں نگل لے گی، پھر پکار کر کہا جائے گا: ان کی بدیختی دوا می ہے اور ان کے لئے سی بھلائی کی تو تع نہیں ہے۔ دوسری جماعت وہ ہوگی جس کی کوئی برائی نہیں ہوگی، اس دن نداء آئے گی کہ ہر حال میں اللہ کی حمد کرنے والے کھڑے ہوجا کیں، وہ کھڑے ہوجا کیں، وہ کھڑے ہوجا کیں اور نہایت اطمینان سے جنت میں داخل ہوں میں اللہ کی حمد کرنے والوں ہوجا کیاں وہ وہوٹ کے باعث ذکرِ خدا سے ندر کئے والوں کو اس طور حمد میں ہوگی ہوگی ان جماعت وہ ہوگی جس کے بعد کوئی دکھڑ تکلیف نہیں ہے۔ تیسری جست میں بھیجا جائے گا اور کہا جائے گا کہ ان کے لئے دوا می سعادت ہے جس کے بعد کوئی دکھڑ تکلیف نہیں ہوگی جب تک جماعت وہ ہوگی جن کے نامہ ہائے گا کہ ان کے لئے دوا می سعادت ہے جس کے بعد کوئی دکھڑ تکلیف نہیں ہوگی جب تک جماعت وہ ہوگی جن کے نامہ ہائے گا کہ ان کے اعمال میں نامہ اعمال میں گناہ اور نیکیاں لپٹی ہوئی ہوئی ان کے اعمال میں گناہ اور نیکیاں کی طرف ہوں گی کہونے ہاتھ میں آتا ہے اور میزان کا کہ سیار کی ان مور ہوگیا ہوں گی کہونے ہاتھ میں آتا ہے اور میزان کا جائے اور میزان کے جائیل میں گناہ اور نیکیا گا کہ حالت ہوگی جس سے لوگوں کے ہوش اڑ جائیں گیں گئے۔

حضرت حسن رَضِى اللهُ عَنُه ہے مروی ہے کہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے حضرت عائشہ رَضِى اللهُ عَنَهَا کَ گود میں سرر کھااور آپ کواؤگھ آگئی، حضرت عائشہ رَضِی اللهُ عَنُهَا آخرت کو یا دکر کے روپڑیں اور ان کے آنسو حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کے چِرهٔ انور پرگرے تو حضور کی آپ نے فرمایا: عائشہ! کیوں روتی ہو؟ عرض کی: حضور! آخرت کو یا دکر کے روتی ہوں، کیالوگ قیامت کے دن اپنے گھر والوں کو یا دکریں گے؟ آپ نے فرمایا: بخدا! تین جگہوں میں یا دکر کے روتی ہوں، کیالوگ قیامت کے دن اپنے گھر والوں کو یا دکریں گے؟ آپ نے فرمایا: بخدا! تین جگہوں میں

مكاشفة القلوب 一 🔨 ٢ 🗡

لوگوں کواپنے سوا کچھ یا دنہیں ہوگا:

﴿1﴾ جب میزانِ عدل رکھا جائے گا اور اعمال تولے جائیں گے، لوگ سب پچھ بھول کریہ دیکھیں گے کہ ان کی نکیاں کم ہوتی ہیں یازیادہ؟

- ﴿2﴾ نامهُ اعمال دیئے جانے کے وقت ریہ و چیس گے کہ دائیں ہاتھ میں ملتا ہے یا بائیں ہاتھ میں ، اور
 - ﴿3﴾ بلي صراط ہے گزرتے ہوئے سب کچھ بھول جائیں گے۔⁽¹⁾

حضرتِ اَنس رَضِیَ اللهٔ عَنه سے مروی ہے کہ قیامت کے دن انسانوں کومیزان کے سامنے کھڑا کیا جائے گا اور ایک فرشتہ مقرر کر دیا جائے گا، اگر اس کی نیکیاں بھاری ہوگئیں تو وہ فرشتہ بلند آ واز سے کہے گا کہ فلال نے سعادتِ ابدی حاصل کر لی ہے اور اسے بھی بدختی سے واسط نہیں پڑے گا اور اگر اس کی برائیاں زیادہ ہوگئیں تو فرشتہ بلند آ واز سے حاصل کر لی ہے اور اسے بھی بدختی سے واسط نہیں ہوگی ، تب پہارے گا اور آگر اس کی برائیاں زیادہ ہوگئیں تو فرشتہ بلند آ واز سے کیار کے گاجسکی آ واز تمام مخلوق سنے گی کہ فلال نے دائمی بدختی پالی ہے اس کے لئے بھی کوئی سعادت نہیں ہوگی ، تب عذاب کے فرشتے لوہے کے گرز لئے آ گے کے پڑے بہنے ہوئے آ ئیں گے اور جہنمیوں کوجہنم میں لے جائیں گے۔ فرمانِ نبوی ہے کہ قیامت کے دن اللہ تعالی حضرتِ آ دم عَدَیْهِ السَّدَام کو بلا کرفر مائے گا کہ المُضِحُ اور جہنمیوں کوجہنم میں بھیجوں ؟ رب فرمائے گا کہ ہر ہزار میں سے نوسو میں بھیجوں ؟ رب فرمائے گا کہ ہر ہزار میں سے نوسو ننانو کے نبیجے دیجئے ۔ دیکھ کے دیجئے ۔ دیجئے ۔ دیکھ کے دیجئے دیجئے ۔ دیجئے ۔ دیجئے ۔ دیکھ کے دیکھ کی کہ کو دیکھ کے دیکھ

صحابه کرام نے ذکر قیامت پرخوف سے ہنسنا بند کر دیا: گ

صحابہ کرام رضی الله عنه م نے جب یہ بات سی تو وہ ناامید ہوگئے اور ہنسنامسکرانا چھوڑ دیا۔حضور صَلَی الله عَلیْهِ
وَسَلَّم نے جب یہ مشاہدہ فرمایا توارشاد کیا کیمل کرواور خاطر جمع رکھو، رہِ نوالہ حلال کی قسم! جس کے قبضہ قدرت میں
میری جان ہے، کا فرانسانوں اور شیطان کے چیلوں کے علاوہ دوالی مخلوقات بھی ہیں جواپی تعداد میں تم سے بہت
زیادہ ہیں۔صحابہ نے بوچھا: وہ کون ہیں؟ آپ نے فرمایا: یا جوج اور ما جوج، صحابہ کرام یہ سنتے ہی خوش ہوگئے۔ آپ
نے مزید فرمایا: عمل کرواور اطمینان رکھو بخدا! تم قیامت کے دن لوگوں میں ایسے ہوگے جیسے اونٹ کے پہلو میں تِل یا

- 1ابو داود، كتاب السنة، باب في ذكر الميزان، ٢/٧٤، الحديث ٥٧٥٥
- 2بخاري، كتاب احاديث الانبياء ، باب قصة ياجوج وماجوج ، ١٩/٢ ، الحديث ٣٣٤٨

جیسے جانور کی ٹا نگ پر نقطہ ہوتا ہے۔ (1)

اے فانی دنیا کے دھندوں میں مگن اور فریب خوردہ غافل انسان! اس دارِ فانی میں غور وفکر نہ کر بلکہ اس منزل کی فکر کرجس کے متعلق خبر دی گئے ہے کہ وہ تمام انسانوں کا پڑاؤ ہے چنانچے فر مانِ اللی ہے:

اورتم میں سے ہرایک اس پرگزرنے والا ہے تیرے رب کاحتمی وعدہ یہ ہے پھر ہم پر ہیز گاروں کونجات دیں گے اور ظالموں کو اس میں گرا ہوا چھوڑیں گے۔

اور وہ اسے ایسی جگہ ٹھبرائیں گے جس میں کنار ہے تنگ، تاریک راستے اور پوشیدہ ہلاکتیں ہوں گی ، مجرم اس میں دائماً رہے گااس میں آگ بھڑ کائی جائے گی ،ان کامشر وب گرم پانی اوران کا ٹھکانا جہنم ہوگا،عذاب کے فرشتے انہیں

- 1ترمذى ، كتاب التفسير، سورة الحج ، ٥/٥ ١ ١ ، الحديث ٢١٧٠
- ستو جمه کنز الایمان: اورتم میں کوئی ایبانہیں جس کا گذردوز خ پر نہ ہوتہارے ربّ کے ذمہ پر بیضر ورتھ ہری ہوئی بات ہے پھر ہم ڈر
 والوں کو بیجالیں گے اور ظالموں کواس میں چیموڑ دیں گے گھٹوں کے بل گرے۔ (ب۲۰ مریم : ۲۲،۷۲)

منتشرکریں گے اور جہنم انہیں جمع کرے گا، وہ ہلاکت کے متمنّی ہوں گے مگر انہیں موت نہیں آئے گی، ان کے پاؤں پیشانیوں سے بندھے ہوں گے اور ان کے چہرے گنا ہوں کی سیابی سے کالے ہوں گے، وہ ہر چہار سو پکارتے پھریں گے: اے مالک! ہمارے کے سزاکا وعدہ پورا ہو چکا۔ اے مالک! لوہا ہمیں فنا کردے گا ہماری کھالیں اتر گئیں۔ اے مالک! ہمیں اس سے نکال ہم دوبارہ برے اعمال نہیں کریں گے، عذاب کے فرضتے جواب میں کہیں گے: اس وقت تہمہیں تہماراتا سف کوئی 'دما مُمن' فراہم نہیں کرے گا اور تم اس ذلت کی جگہ سے بھی نہیں نکل سکو گے، اس میں رہواور کوئی دوسری بات نہ کرو۔ اگر تم اس سے نکال بھی دیئے گئے تو تم وہی کچھ کرو گے جو پہلے کیا کرتے تھے۔

تب وہ ناامید ہوجائیں گے اوراینے گناہوں پرانتہائی پریشانی کا إظہار کریں گے مگر انہیں ندامت نہیں بچائے گی اور نه ہی ان کاعذاب'' افسوس'' دور کر سکے گا بلکہ وہ باندھ کرمنہ کے بل ینچے ڈال دیتے جائیں گے اور ان کے اویرینچے دائیں بائیں آ گ ہوگی اور وہ سرایا غرق آتش ہوں گے،ان کا کھانا پینا، بستر ،لباس سب کچھ آ گ کا ہوگا اور وہ آ گ کے شعلوں میں لیٹے ہوں گے،جہنم کے قطران کالباس اورلوہے کے ڈیٹرےان کی سزا کے لئے ہوں گے اور زنجیروں کی گراں باری تنگی کی وجہ سے آ واز پیدا کررہی ہوگی ، وہ جہنم کی گہرائیوں میں شکست خور دگی کے ساتھ سرگر داں ہوں گے اور اس کی آگ میں سخت پریشان ہوں گے، آگ انہیں ایسا أبال دے گی جیسے بانڈیوں میں ابال آتا ہے اور وہ گریدوزاری کریں گے،موت کو بلائیں گے، جونہی وہ ہلاکت کی تمنا کریں گے،ان کےسروں پرجہنم کا کھولتا پانی انڈیلا جائے گا جس ہےان کی آنتیں اور چمڑا گل جائے گااوران کے لئے لوہے کے ہتھوڑے ہوں گے جن سےان کی بیشانیوں کوتو ڑا جائے گا،ان کے منہ سے پیپ بہنے لگے گی اور پیاس سے ان کے جگر ٹکڑ بے ٹکڑ ہے ہوجائیں گے،ان کی آنکھوں کی پتلیاں ان کے رخساروں پر بہیں گی جس ہے ان کے رخساروں کا گوشت ادھڑ جائے گا اور جب ان کا چڑہ گل جائے گاتو دوسرا چڑہ پیدا ہوجائے گا،ان کی ہڈیاں گوشت سے خالی ہونگی،ان کی روح کا رشتہ رگوں سے قائم ہوگا، جوجسم سے لیٹی ہوئی ہوں گی وہ آ گ کی گرمی ہے بھولی ہوں گی اور وہ اس وقت موت کی تمنا کریں گے مگرانہیں موت نہیں تائے گی۔

اگرتم انہیں اس حالت میں دیکھوتو نظر آئے گا کہان کی شکلیں بہت زیادہ سیاہ ہیں، آئکھیں اندھی، زبانیں گونگی،

کمریں شکستہ، ہڈیاں ریزہ ریزہ، کان بہرے، چبڑہ چیتھڑوں کی طرح پارہ پارہ، ہاتھ گردنوں کے پیچھے بندھے ہوئے یعنی شکن کی ہوئی بیشانی اور پاؤں کیجا،منہ کے بل آگ پر چلتے ہوئے، اپنی پلکوں سے گرم لوہاروندتے ہوئے، ان کے تمام اعضائے بدن میں بھڑکتی ہوئی آگ ہوگی ،جہنم کے سانپ اور بچھوان کے جسم پر چیٹے ہوئے ہوں گے تو بیمناظر دیکھ کرتمہاری کیا حالت ہوگی!

اب ذراان کے ہولنا ک عذاب کی تفصیل پرغور کرواور جہنم کی دادیوں اور گھاٹیوں کےسلسلہ میں تامل کرو۔ فرمانِ نبوی ہے کہ جہنم میں ستر ہزار وادیاں ہیں، ہروادی میں ستر ہزار گھاٹیاں ہیں اور ہر گھاٹی میں ستر ہزار سانپ اور ستر ہزار بچھو ہیں، کا فروں اور منافقوں کوان تمام جگہوں ہی میں جانا ہوگا۔ ⁽¹⁾

(

حضرت علی رَضِیَ اللهُ عَنه ہے مروی ہے؛ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: وادی حزن یاحزن کی گھاٹی سے پناہ مانگو! پوچھا گیا: حضور وہ کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: وہ جہنم کی ایک ایسی وادی ہے جس سے ہرروز جہنم بھی ستر مرتبہ پناہ مانگتا ہے، یہ وادی الله تعالی نے ریا کارقار بول کے لئے تیار کی ہے۔ (2)

یہ جہنم کی وسعت،اس کی وادیوں کی گھاٹیاں، زندگی کے نشیب و فراز اور خواہشات نفسانی کی تعداد کے برابر ہیں جہنم کے درواز ہے انسانی جسم کے ان اعضاء کی تعداد کے برابر ہے جن سے انسان جرائم کا ارتکاب کرتا ہے، وہ ایک دوسرے کے اوپر ہیں،اوپر والا جَهَنَّم، پھر سَقَر، پھر خُطَمَه، پھر سُعِیْو، پھر جَجِیْم اورسب سے ایک دوسرے کے اوپر ہیں،اوپر والا جَهَنَّم، پھر سَقَو، پھر اُطٰی، پھر خُطَمَه، پھر سَعِیْو، پھر جَجِیْم اورسب سے نیچ ھَاوِیَه ہے، ذرا ہاویہ کی گہرائی کا تصور کرو، جس قدرانسان کی شہوات نفسانی گہری ہوں گی،اسی قدراسے ہاویہ کی گہرائی دوسری گہرائی دوسری گہرائی دوسری گہرائی دوسری گہرائی دوسری گہرائی برجا کررکتی ہے۔

حضرت ابو ہریرہ وَضِیَ اللّٰهُ عَنُه سے مروی ہے کہ ہم نے ایک دھما کہ سناحضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جانتے ہوں ہے؟ ہم نے کہا:الله اوراس کا رسول صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم بہتر جانتے ہیں، آپ نے فرمایا: سترسال پیشتر جہنم کے

- 1معرفة الصحابة، باب السين، سفيان بن مجيب، ٣/٢ . ٥ ، الحديث ٢ ٣٥٢
- 2 كنز العمال، كتاب العلم، باب في فضله ... الخ، ٥/ ١٠ الجزء العاشر، الحديث ١٩٤١

کنارے سے پھرلڑھکایا گیا تھا جواَب اس کی گہرائی میں جا پہنچاہے⁽¹⁾ (بیاس کی آ واز تھی)۔

اب جہنم کے درجات بیغور سیجے! بےشک آخرت اپنے طبقات اور خصائص کے اعتبار سے بہت ظیم ہے، جیسے دنیا میں لوگوں کے مختلف درجات ہیں اسی طرح جہنم میں مختلف درجات ہوں گے جو گنا ہوں کا عادی اور سخت نافر مان ہوگا وہ آگ میں غرق ہوگا اور معمولی طور پر گناہ کرنے والا ایک محد ودحد تک جلے گا اسی طرح آگ بھی گنہ گار کے گنا ہوں کے مطابق عذاب دے گی کیونکہ اللہ تعالی کسی پرایک ذرہ کے برابر ظلم نہیں کرتا ہے لہذا ہرانسان کو ایک جیسا عذاب نہیں ہوگا بلکہ گنا ہوں کی مقدار کے مطابق سزا ملے گی مگر جہنم کا سب سے معمولی عذاب بھی اگر دنیا پر پیش کردیا جائے تو اس کی جدّت سے ساری دنیا جل کر تھے میں ہوجائے۔

فر مانِ نبوی ہے کہ جہنم کامعمولی عذاب یہ ہوگا کہ دوزخی کوآ گ کے جوتے پہنائے جائیں گے جس کی گرمی سے اس کا د ماغ کھولتا ہوگا۔⁽²⁾

اس معمولی عذاب سے اس بڑے عذاب کا اندازہ لگاؤ! اگرتمہیں آگ کے جلانے میں شبہہ ہوتواپی انگل اس دنیا کی آگ میں ڈال کر دیکھوتو تمہیں پیتہ چل جائے گا، اگر چہاس دنیاوی آگ کوجہنم کی آگ سے کوئی نسبت نہیں ہے لیکن سوچوتو، جب بیآگ دنیا کے سخت ترین عذابوں میں شار ہوتی ہے تواس آگ کا کیا عالم ہوگا! اگرجہنمی وہاں اس دنیاوی آگ کو یالیس تو خوثی ہے دوڑتے ہوئے اس میں گھس جائیں، (اس میں اپن نجات مجھیں)۔

اسی لئے بعض احادیث میں ہے کہ جہنم کی آگ کوستر مرتبدرجت کے پانی سے دھوکر دنیا میں لوگوں کے استعال کے لئے بھیجا گیا ہے (3) بلکہ چضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا ہے کہ الله تعالی نے حکم دیا کہ جہنم میں آگ بھڑ کائی جائے،

- 1 مسلم ، كتاب الجنة، باب مافي شدة حرنارجهنم...الخ، ص٢٥٢، الحديث ٣١_ (٢٨٤٤)
 - 2ترمذی ، کتاب صفة جهنم، باب۲۷۱/٤٬۱۲ الحدیث۲٦۱۳
- 3طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٦ /٣٨٧ و صحيح ابن حبان، باب صفة الناروأهلها، ٦ / ٢٧٦ الجزء التاسع، الحديث ١ ٢٤٠

ہزارسال کے بعد جہنم سرخ ہوگیا پھر ہزارسال تک آ گ بھڑ کائی گئی جس سے وہ سفید ہوگیا، جب مزید ہزارسال آ گ بھڑ کائی گئی تو وہ بالکل سیاہ اور تاریک ترین ہوگیا۔⁽¹⁾

فر مانِ نبوی ہے: جہنم نے رہِ عظیم سے شکایت کی کہ میر بعض جصابعض حصوں کی تپش سے فنا ہور ہے ہیں تو اللہ تعالی نے اسے صرف دوسانسوں کی اجازت دیدی ، ایک گرمی میں اور ایک سردی میں ، گرمیوں میں گرمی کی شدت اس کے سردسانس سے ہوتی ہے۔ (2)

حضرتِ اَنُس رَضِیَ اللّٰهُ عَنُه ہے مروی ہے: قیامت کے دن مالدارترین کا فروں کولا یا جائے گا اور اسے آگ میں غوطہ دے کر یو چھا جائے گا کہ تونے دنیا میں کوئی نعمت یائی تھی؟ وہ کہے گا: بالکل نہیں، پھرایک ایسے تخص کولا یا جائے گا جس نے دنیا میں سب سے زیادہ دکھا ٹھائے ہوں گے، اسے جنت میں لیجا کر باہر نکالا جائے گا اور یو چھا جائیگا: تونے میں کوئی دکھیایا ہے؟ وہ کہے گا بنہیں۔ (3)

حضرت ابوہر بردہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے کہ اگر مسجد میں ایک ہزاریا اس سے بھی زیادہ لوگ موجود ہوں اور وہاں جہنمی شخص سانس لے قودہ سب کے سب مرجائیں گے۔

بعض علماء نے اس فرمانِ الہٰی کی کہ '' آگ ان کے منہ کوجلس دی گی۔'' ⁽⁴⁾ تشریح میں لکھا ہے کہ آ گ کی ایک ہی لپیٹ سے ان کی ہڈیوں کا گوشت نیچے گر جائے گا۔

اب اس پیپ کے متعلق غور کر وجوانتہائی بد بودار بن کراُن کے جسموں سے اس قدر بہے گی کہ وہ اس میں غرق ہوجائیں گے، قر آ نِ کریم میں اس کو عُسَّاق کا نام دیا گیا ہے۔

حضرت ابوسعيد خُدْرى رَضِيَ اللهُ عَنه عيم وى مع جضور صَلَّى اللهُ عَليهِ وَسَلَّم فِي مايا: الردوز خيول كى بيب كا

^{1} ترمذی، کتاب صفة جهنم ، باب ۸، ۲٦٦/٤ ، الحدیث ۲٦٠٠

^{2}بخارى ، كتاب بدء الخلق، باب صفة النار...الخ،٢/٥٩، الحديث ٣٢٦ و ابن ماجه ، كتاب الزهد، باب صفة النار، ٢٩/٤، الحديث ٢٣٢٠ بالتقديم و التاخير

^{3}ابن ماجه ، كتاب الزهد، باب صفة النار، ٤/٩ ٢ ٥، الحديث ٢٩١٩

 ^{4}ترجمة كنز الايمان: ان كمنه يرآ گليث ماركل - (ب٨١٠المؤمنون: ١٠٤)

ایک ڈول دنیامیں بھینک دیا جائے تواس کی بدبوسے تمام مخلوق کا دم گھٹ جائے۔⁽¹⁾

جب دوزخی پیاس کی شدت محسوس کریں گے تو انہیں یہی پینے کودی جائے گی وہ پیپ کا پانی حلق میں ڈالیس گے، ایک گھونٹ لیس گے مگراسے نگل نہیں سکیس گے اور موت ہر جانب سے ان پرحملہ کریگی مگر وہ نہیں مریں گے۔اگر وہ پانی کی تمنا کریں گے تو انہیں تا نبے کی رنگت جیسا پانی دیا جائے گا جو چہروں کو جلادیتا ہے، یہ بہت برامشروب ہے اور جہنم بہت براٹھ کا ناہے۔

residents

ان کے طعام کے متعلق سوچو!وہ زَقُوم (تھوہر) ہوگا جیسا کہ فرمانِ الہی ہے:

'' پھرتم اے جھٹلانے والے گمرا ہو! زقو م کا درخت کھانے والے ہو،اس سے بیٹ بھرنے والے ہو پھراس پر گرم پانی پینے والے ہواورتشندلب اونٹوں کی طرح پینے والے ہو۔''(2)

مزيد فرمايا:

''وہ ایک درخت ہے جوجہنم کی گہرائی سے نکلتا ہے اس کا سرسانپ کے سروں کی مانند ہے پھران کے لیے اس میں گرم پانی کی ملاوٹ ہے پھران کا دوزخ کی طرف جانا ہے۔''⁽³⁾ (وہ ان مراحل ہے گزرکرجہنم میں جائیں گے۔)

ایک اور ارشادِر بانی ہے:

''وہ جلتی ہوئی آگ میں داخل ہوں گے کھولتے ہوئے چشمہ سے بلائے جائیں گے۔''⁽⁴⁾

اورفر مایا:

4توجمه كنز الايمان: جائيس بحركتي آ ك ميس نهايت جلتے چشمكاياني پلائے جائيس - (ب ٠٣٠ الغاشية: ٥٠٤)

^{1} ترمذی ، کتاب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة شراب...الخ ٢٦٣/٤، الحديث ٢٥٩٣

ستر جمهٔ کنز الایمان: پیرب شکتم اے گمرا ہو، جھٹلانے والو! ضرورتھو ہڑ کے پیڑ میں سے کھاؤگے پھراس سے پیٹ بھروگے پھراس پر
 کھولتا پانی پیوگے پھراییا ہیوگے جیسے تخت پیاسے اونٹ پئیں۔ (پ۲۰، الواقعة: ۵۰ ـ ۵۰)

^{3}تو جمه کنز الایمان: بیشک وہ ایک پیڑ ہے کہ جہنم کی جڑ میں نکاتا ہے اسکا شگوفہ جیسے دیووں کے سرپھر بیشک وہ اس میں سے کھا کیں گے پھر اس سے پیٹ بھریں گے پھر بے شک ان کے لیے اس پر کھولتے پانی کی ملونی (ملاوٹ) ہے پھر ان کی بازگشت (واپسی) ضرور بھڑ کتی آگ کی طرف ہے۔ (پ۲۲، الصَّفَت: ۲۶ تا ۲۸)

''بِشَک ہمارے پاس (ان کے لیے) ہیڑیاں اور آگ ہے اور گلے میں اٹک جانے والا کھانا اور در دناک عذاب ہے۔'،(1)
حضرت ابن عباس دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ مَا ہے مروی ہے؛ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: اگر زقوم کا ایک قطرہ دنیا
کے دریاؤں اور سمندروں میں ڈال دیا جائے تولوگوں کے لئے زندگی دو مجرہوجائے پھران لوگوں کا کیا حشر ہوگا جن کی غذا ہی زقوم ہوگی۔(2)

حضرت اَنس رَضِیَ اللهٔ عَنُه ہے مروی ہے ؛حضور صَلَّی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا:الله تعالی نے جن چیزوں ہے محبت رکھنے کا حکم دیا ہے انہیں محبوب رکھواور جن چیزوں سے پر ہیز کا حکم دیا ہے ان سے پر ہیز کرو،الله کے عذاب اور جہنم سے دُرو،اگر جنت کا ایک فرہ تمہارے پاس دنیا میں ہوتا تو دنیا تمہارے لئے انتہائی جافب نِظراور پُرکشش ہوجاتی اورا گرجہنم کی آ گی ایک چنگاری تمہارے ساتھ ہوتی تو دنیا تمہارے لئے انتہائی مہلک اور تباہ کن بن جاتی ۔ (3)

حضرت ابوالدرداء رَضِيَ اللهُ عَنُه عِيم وی ہے؛ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نَے فرمایا: جَہٰمیوں پر بھوک مسلط کی جائے گی بہاں تک کہ وہ عذا ب کو بھول کر کھانے کی التجا کریں گےان کی التجائے جواب میں انہیں ضریع پیش کی جائے گی جوا بلوے سے زیادہ کڑوی اور نہایت بد بودار ہوگی جو نہ انہیں فر بہ کرے گی اور نہان کی بھوک مٹائے گی ، پھر کھانے کی ، ورخواست کریں گے تو انہیں اینا ہے ان کا جوان کے گلے میں اٹک جائے گا تب انہیں یاد آئے گا کہ وہ دنیا میں حال میں پھنسا ہوالقمہ پانی سے اتارتے تھے لہذاوہ پانی کے لئے التجا کریں گے تو لو ہے کی سنسوں سے پکڑکر گرم پانی کا برتن ان کے آگے لایا جائے گا ، جب وہ منہ کے قریب ہوگا تو پش سے ان کے چیر ہے جسلس جا کمیں گے اور جب وہ پانی بلا ان کے پیٹ میں پہنچے گا تو ان کی انتر یال گلڑ نے کھڑے کردے گا ، پھر وہ کہیں گے کہ جہنم کے نگہ بانوں کو بلاؤ اور انہیں بلا کہ کہیں گے: اپنی اسے نی خود دعا کرو (اور کافروں کی پاس پیغیم رولائل لے کرنہیں آئے تھے؟ جہنمی کہیں گے: ہاں آئے تھے۔ تب وہ کہیں گے: تم خود دعا کرو (اور کافروں کی دعا کھی راور است پڑئیں آئی) پھروہ کہیں گے: ہاں آئے تھے۔ تب وہ کہیں گے: تم خود دعا کرو (اور کافروں کی دعا کھی راور است پڑئیں آئی) پھروہ کہیں گے: مال کے جہنم کو بلاؤ اور اسے بلا کر کہیں گے: الله تعالی ہم پرموت مسلط کردے۔

س...تو جمه کنز الایمان: بے شک ہمارے پاس بھاری پیڑیاں ہیں اور بھڑکتی آگ اور گلے میں پھنستا کھانا اور وروناک عذاب (پ۲۹، المزمل:۱۳،۱۲) (پ۲۹، المحدیث ۷۵۲۰۰۰۰)

الترغيب والترهيب، كتاب صفة الجنة والنار، الترهيب من النار، ٢٦٤/٤ ٢٠ الحديث ٢٠٢٥ والبعث والنشور للبيهقي، ص٣٠٣٥ ٥ ٦٠

ما لک جواب دے گا جمہیں مرنانہیں ہے، ہمیشہ یہیں رہناہے۔

حضرتِ آغَمَشُ دَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ كَا قُولَ ہے: ان كى دُعااور ما لک کے جواب کے درمیان ایک ہزار ہر س گزرجا ئیں گ۔
پھر کہیں گے کہ رب سے بڑھ کر کوئی مہر بان نہیں ہے لہذا اپنے رب کے حضور میں عرض کریں گے: اے رب! ہم پر بدیختی
عالب آگئ اور ہم گراہ ہو گئے اب ہمیں نکال ، اگر ہم پھر وہی کام کریں تو ہم ظالم ہوں گے۔ انہیں جواب ملے گا: دور
ہوجا وَاسی جہنم میں رہواور خاموش ہوجا وَ! حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: اس وقت انہیں ہلاکت بختی اور ندامت گھیر
لے گی اور وہ ہرشم کی بھلائی سے نا اُمید ہوجا کیں گے۔ (2)

حضرت ابواً مامه دَضِيَ اللهُ عَنُه مع مروى ہے كه حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے اس فر مانِ البى: اوروه پیپ کے پانی سے سیراب کیا جائے گا۔ وہ اس كا گھونٹ گھونٹ لے گامگر كلے سے نہیں اتر ہے گا۔ (3)

کی تشریح میں فرمایا: جب بدیانی اس کی نظروں کے سامنے آئے گا تووہ اسے براسمجھے گا، جب ہونٹوں کے قریب آئے گا تو چہروں کو مجھ کسادے گا اور سرکی کھال بالوں سمیت جلادے گا، جب وہ اسے پئے گا تو اس کی آئیس کاٹ کر باہر نکال دے گا، فرمانِ الہی ہے:

''اوران کوگرم یانی پلایاجائے گاجوان کی آنتیں کاٹ دےگا۔''(⁴)

مزیدفر مایا:''اور جب وہ پانی طلب کریں گے تو آئہیں پیپ جیسا پانی دیا جائے گا جو چہروں کو بھون ڈالے گا۔''⁽⁵⁾ بہ بھوک کے وقت ان کا کھانا بینا ہوگا۔

^{1}ترمذی ، کتاب صفة جهنم ، باب ماجاء فی صفة طعام اهل النار ، ٢ / ٢ ٦ ٢ ،الحدیث ٥ ٩ ٥ ٢ جبتم رپرمقررفر شت کانام مَالك(عَلَيْهِ السَّلام) مع علميه

^{2}ترمذى ، كتاب صفة جهنم ، باب ماجاء في صفة طعام اهل النار، ٢٦٤/٢ ٢ ،الحديث ٥٩٥٠

^{🔞} تو جمعهٔ کنز الایعمان: اوراسے پیپ کا پانی پلایا جائے گا بمشکل اس کا تھوڑ اتھوڑ اگھونٹ لے گا اور گلے سے پنچا تارنے کی امید نہ ہوگی۔ (پ۲۰۱ ابراهیم: ۱۷۰۱)

^{4} ترجمه كنز الايمان: اورانمين كولتا ياني پلاياجائ كرآنتول كَنْكُرْكُرُوك ردك (ب٢٦، محمد: ١٥)

^{5}ترجمهٔ کنز الایمان: اوراگر پانی کے لیے فریاد کریں توان کی فریا دری ہوگی اس پانی سے کہ چرخ ویے (پھلے) ہوئے دھات کی طرح ہے کہ ان کے منہ بھون (جلا) وے گا۔ (پ۱۰ الکھف: ۲۹)ترمذی ، کتاب صفة جھنم، باب ماجاء فی صفة شراب اهل النار، ۲۲/۲، الحدیث ۲۹۲ م

_ [2]

اب دوزخ کے سانپ بچھو،ان کی جسامت، تیز زہراور دوزخیوں کی رسوائی پرغور کرو،سانپ، بچھوجوان پر مسلط کئے جائیں گے،ان کے سخت دشمن ہونگے ،ایک لمحہ بھی کا شخ اورڈ نک مارنے سے بازنہیں رہیں گے۔

حضرت ابو ہریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے؛ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: جس شخص کواللّٰه تعالیٰ نے مال دیا اور اس نے زکو قادانہیں کی ، قیامت کے دن اس کا مال شنج سانپ کی شکل میں آئے گاجس کی پیشانی پر دوسیاہ نقطے ہوں گے ، وہ اس کے گلے سے لپٹ کراس کے جبڑوں کو پکڑ لے گا اور کہے گا: میں تیرا مال اور تیرا خزانہ ہوں پھر آپ نے بیآ بیت تلاوت کی :

اور جو ہمارے دیئے ہوئے مال میں بخل کرتے ہیں وہ بینہ جھیں

وَلا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُوْنَ بِمَا اللَّهُ مُاللَّهُ مِنْ

أَصْلِم ⁽¹⁾

كدىيان كے كيے اچھاہے۔

فرمانِ نبوی ہے: جہنم میں بَخْتی اونٹوں کی گردنوں جیسے (موٹے ادر لیے) سانپ ہونگے جب وہ پھنکاریں گے توان کی گرمی چالیس برس کی قاصلے سے محسوس کی جائے گی اور ہیبت ناک بچھو ہوں گے جن کی سانس کی گرمی چالیس برس کے فاصلے سے محسوس کی جائے گی اور بچھواس آ دمی پر مسلط ہوں گے جس پر دنیا میں بخل، برخُلقی اور لوگوں کو ستانے کاظلم عائد ہوگا اور جس میں بیبرائیاں نہیں یائی جاتیں ،اسے کوئی تکلیف نہیں دی جائیگی۔

اس کے بعد دوز خیوں کے طویل وعریض جسموں پرغور کرو،الله تعالی ان کے اجسام کے طول وعرض میں اضافہ کر دے گاتا کہ انہیں زیادہ سے زیادہ عذاب ہوللہذاوہ دوزخی متواتر اپنے اجسام پرجہنم کی گرمی اور سانپوں، بچھوؤں کے ڈنگ جھیاتار ہے گا۔

حضرت ابو ہر ریدہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنُه ہے مروی ہے :حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیٰهِ وَسَلَّم نَے فر مایا کہ جہنم میں کا فرکی داڑھ احد پہاڑ کے برابرادراس کا نجلا ہونٹ سینہ پر بڑا ہوگا اوراو پر والا ہونٹ اس قدراو پر اٹھا ہوا ہوگا جس سے سارا چہرہ چھپا ہوگا۔(3)

- سستوجمه كنز الايمان: اورجو بخل كرت بين الله ييزيين جوالله في أنبين البيغ فضل سے دى (ب٤٠ ال عمران: ١٨٠) سسبخارى، كتاب الزكاة، باب اثم مانع الزكاة، ٤٧٤/١، الحديث ١٤٠٣
 - 2مسند احمد، مسند الشاميين، حديث عبدالله بن الحارث...الخ ٢١٧/٦ ، الحديث ٢١٧٢٩
- الحديث ٢٥٨٥ ، وص٢٦٤ ، باب ماجاء في اعظم اهل النار ٢٦١/٤ ، الحديث ٢٥٨٨ ، وص٢٦٤ ، الحديث ٢٥٩٦ ما خوذا

فرمانِ نبوی ہے کہ کا فرجہنم میں اپنی زبان تھسیٹ رہا ہوگا اور لوگ اس کی زبان کوروندتے ہوئے جا کیں گے۔ ⁽¹⁾ ان کی ان عظیم جسامتوں کے باوجود آگ انہیں جلاتی رہے گی اور کئی کٹی مرتبہ ان کے چمڑے اور گوشت کو تبدیل کیا جائے گا حضرت حسن دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه اس ارشا دِ الٰہی کے بارے میں کہ

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بِدَّ لَنْهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا (2) جب بكي الحَدِيرُ على جائيں عَهم اور چر عبدل دي عـ

کہتے ہیں کہ آگ ان کے اجسام کودن میں ستر ہزار مرتبہ جلائے گی مگر جونہی ان کے چیڑے جلیں گے،اللّٰہ تعالیٰ دوبارہ ان کے اجسام کوکمل کردےگا۔

پھر دوز خیوں کی گریہ وزاری ،فریا دوفغاں اور ہلا کت وموت کی التجاؤں کے متعلق غور کر وجوابتدائے قیامت ہی سے ان کامقدر بن جائے گی۔

فرمانِ نبوی ہے: قیامت کے دن جہنم کوستر ہزار مہاری ڈال کرلا یا جائے گا اور ہرمہار کے ساتھ ستر ہزار فرشتے ہوں گے۔ ہوں گے۔

حضرتِ اَنُس رَضِیَ اللّٰهُ عَنُه ہے مروی ہے:حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ جہنمیوں پر گریہ وزاری بھیجی جائے گی، وہ روتے رہیں گے یہاں تک کہ آنسوختم ہوجائیں گے، پھروہ خون کے آنسوروئیں گے یہاں تک کہ ان کے چبروں پر گڑھے پڑجائیں گے،اگران میں کشتیاں چلائی جائیں تووہ بھی رواں ہوجائیں۔(4)

انہیں گریہ وزاری ، آ ہ، فریا داورموت کی دعا ما تکنے کی اجازت ہوگی جس سے وہ دل کا بوجھ ہلکا کریں گے مگر بعد میں انہیں اس سے بھی منع کر دیا جائے گا۔

حضرت ِ محمد بن كَعْب دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه مع مروى ہے كه الله تعالى دوز خيوں كى پانچ باتوں ميں سے جار كاجواب دے گا

- 1 شعب الايمان ، التاسع من شعب الإيمان، باب في أن دار المؤمنين... الخ ، ٢ /٣٥٣، الحديث ٢٩٤.
- 2توجمه كنز الايمان: جب بھى ان كى كھاليں كي جائيں گى جم ان كے سوااور كھاليں انہيں بدل ويں گے۔ (ب٥، النسا:٥٥)
 - 3مسلم كتاب الجنة...الخ، باب في شدة حرنار جهنم...الخ، ص٢٥ ١، الحديث ٢٩ ـ (٢٨٤٢)
 - ٤٣٢٤ الحديث ٤٣٢٤.

مگر پانچویں جواب کے بعد پھر بھی کلام نہیں فرمائے گا،وہ کہیں گے:

اےرب تونے ہمیں دومرتبہ مارااور دومرتبہ زندہ کیا، ہم نے اپنے گناہوں کو مان لیاہے پس کوئی نکلنے کاراستہ ہے۔

رب فر مائے گا: بیاس لیے ہے کہ جب تہمیں الله کی وحدانیت کو بلایا جاتا تھا تو تم کفر کرتے تھے اگراس کا شریک لایا جاتا تھا تو تم مان لیتے تھے تھم صرف الله بزرگ و برتر کے لیے ہے۔

(2)

پھروہ کہیں گے:اےرب ہم نے دیکھااور سنا ہمیں واپس بھیج تا کہ ہم نیک مل کریں۔

رب فرمائے گا: کیاتم اس سے پہلے قسمیں نہیں کھاتے تھے کتہیں کوئی زوال نہیں آئے گا۔(4)

پھر کا فرکہیں گے:اے دب ہمیں جہنم سے نکال، ہم پہلے سے اچھے مل کریں گے۔ ⁽⁵⁾

رب فرمائے گا: کیا ہم نے تمہیں عمز ہیں دی تھی جس میں تم نصیحت کرنے والے کی نصیحت کو یاد کرتے اور تمہارے پاس ڈرانے والا آیا تھااب تم عذاب چکھوظالموں کوکوئی مددگار نہیں ہے۔ (6)

تب وہ کہیں گے: اے رب ہم پر بدبختی غالب آگئی اور ہم گمراہ ہوگئے تھے اے رب ہمیں اس سے نکال اگر ہم پھراسی راستے پرلوٹے تو ہم ظالم ہوں گے۔

اورالله تعالی انہیں فرمائے گاجہم میں رہواوراب مت بولو۔ (8)

- 1تر جمهٔ کنز الایمان: اے ہمارے ربّ تونے ہمیں دوبار مردہ کیا اور دوبار زنرہ کیا اب ہم اپنے گنا ہوں پرمقر ہوئے تو آگ سے نگلنے کی بھی کوئی راہ ہے۔ (ب۲۲، المومن: ۲۱)
- 2 تو جمهٔ کنز الایمان: بیاس پر ہوا کہ جب ایک الله پکاراجا تا تو تم کفر کرتے اوراس کا شریک تلم رایا جا تا تو تم مان لیتے تو تھم الله کے لیے ہوسب سے بلند بڑا۔ (ب ۲۶ مالمومن: ۱۷)
 - 3توجمه كنز الايمان: اے بهارے ربّ اب بهم نے ديكھا اور سنا بهيں پھر بينے كه نيك كام كريں _ (ب ٢ ، السحده: ١٢)
 - ابراهیم، ۱۶ ابراهیم، نکاتم پہلفتم نکھا چکے تھے کہمیں ونیا ہے کہیں ہٹ کرجانائمیں (پ۱۱، ابراهیم، ٤٤)
 - استوجمه کنز الایمان: اے ہمارے ربّ ہمیں نکالی کہ ہم اچھا کام کریں اس کے خلاف جو پہلے کرتے تھے۔ (ب۲۲، فاطر: ۳۷)
- ⑥تو جمه کنز الایمان: کیا ہم نے تنہیں وہ عمر نہ دی تھی جس میں سمجھ لیتا جسے سمجھنا ہوتااورڈ رسنانے والاتمہارے پاس تشریف لایا تھا تواب چکھو کہ ظالموں کا کوئی مرد گارنہیں۔(پ۲۰، فاطر: ۳۷)
- استوجمه کنز الایمان: اے رب ہمارے ہم پر ہماری بدیختی غالب آئی اور ہم گراہ لوگ تھاے ہمارے رب ہم کودوز خے نکال دے پھراگر ہم ویسے ہی کریں تو ہم ظالم ہیں۔ (پ۸۱، المومنون: ۲۰۷،۱)
 - 3ترجمه كنز الايمان: ربّ فرمائ كادُ تكارے (ذليل بوكر) يز عربواس ميں اور جھسے بات نهكرو- (ب٨١ ، المومنون: ٨٠٠)

یان کے لیے انتہائی در ہے کاعذاب ہوگا اور پھروہ بھی باری تعالیٰ سے کلام نہیں کرسکیں گے۔ حضرت مالک بن اُنس دَحْمَةُ اللهِ عَلیُه سے مروی ہے؛ حضرت نہید بن اسلم نے اس فر مان اللی:

برابرہے ہمادے لیے کہ ہم جزع وفزع کریں یاصبر کریں ہمارے

سَوَآءٌ عَلَيْنَا آجَزِعُنَا آمُرصَبُرُنَا مَالنَامِنُ

لیے بھا گنے کی جگہ نہیں۔

مَّحِيْسٍ عَ (1)

کی تشریح میں فر مایا: وہ سوسال صبر کریں گے، پھر سوسال آہ و فُغاں کریں گے، پھر سوسال صبر کرنے کے بعد کہیں گے: ہمارے لئے صبر کرنا اور آہ و اُبکا کرنا دونوں برابر ہیں۔

فر مانِ نبوی ہے کہ قیامت کے دن موت کوایک موٹے مینڈ ھے کی شکل میں لا کر جنت اور جہنم کے درمیان ذرج کے سات کا اور کہا جائے گا اور کہا جائے گا:اے جنت والو! اب موت کا خوف کئے بغیر ہمیشہ کے لئے جنت میں رہواور جہنم والوں سے کہا جائے گا کہ تہمیں موت نہیں آئے گی ، ہمیشہ کے لئے جہنم میں رہو۔ (2)

حضرت حسن دَضِيَ اللهُ عَنهُ فرما ياكرتے تھے كہ ايك آدى جہنم سے ہزار سال بعد نظے گا، كاش وه حسن ہو۔ كسى نے حضرت حسن دَضِيَ اللهُ عَنهُ كوايك گوشے ميں روتا ديكھ كر يو چھا كيوں رور ہے ہو؟ آپ نے فرما يا: كہيں بے نياز پروردگار مجھے جہنم ميں نہ ڈال دے۔

یہ مجموعی طور پرعذابِ جہنم کی قشمیں تھیں، وہاں کے غم، تکلیفوں اور حسر توں کی تفصیل بہت طویل ہے، ان کے لئے بدترین عذاب یہ ہوگا کہ وہ جنت کی نعمتیں، رضائے خداوندی اور دیدارِ الٰہی سے محروم ہوں گے کیونکہ دنیا میں کھوٹے سکے خرید ہوا کہ وہ جنت کی نعمتیں، رضائے خداوندی اور دیدارِ الٰہی سے محروم ہوں گے کیونکہ دنیا میں کھوٹے سکے خرید ہوائی بدل کے بدلے چندروزہ زندگی میں انتہائی رسواکن نفسانی خواہشات خرید لیں، وہ اپنے ضائع شدہ اعمال اور ہر بادکر دہ ایام پر افسوس کرتے ہوئے کہیں گے: ہائے افسوس! ہم نے اپنے جسموں کورب کی نافر مانی میں تباہ کردیا، ہم نے زندگی کے خضرایام میں اپنے نفس کو صبر پر کیوں نہ مجود کیا، اگر ہم ان گزرنے والے دنوں میں صبر کر لیتے تو رب العالمین کے جوارِ رحمت میں جگہ پاتے، جنت اور رضائے الٰہی حاصل کر لیتے۔

۱۱ ستوجمه کنو الایمان: ہم پرایک ساہے چاہے بقراری کریں یا صبر سے رہیں ہمیں کہیں پناہیں۔ (۱۳، ابراهیم: ۲۱)

الحديث ٠٤- (٢٨٤٩)الحديث ٠٤- (٢٨٤٩)

ہائے افسوس! ان کی زندگی گناہوں میں نباہ ہوگئی،مصائب میں گھر گئے، دنیاوی نعمتوں اور لذتوں کا کوئی حصہ ان کے لئے باقی ندر ہا،اگروہ باوجودان مصائب کے جنت کی نعمتوں کا نظارہ نہ کرتے توان کی حسرت دو چند نہ ہوتی مگر انہیں جنت دکھائی جائے گی، چنانچہ

فرمانِ نبوی ہے کہ قیامت کے دن کچھ لوگوں کو جنت کی طرف لا یا جائےگا جب وہ جنت کے قریب پہنچیں گے، اس کی خوشبوسو گھیں گے، جنتیوں کے محلات کو دیکھیں گے، تب الله تعالی فرمائے گا: انہیں واپس لے جاؤ، ان کا جنت میں کوئی حصہ نہیں ہے، وہ الیں حسرت لے کرلوٹیں گے کہ اول و آخر اس کی مثال نہیں ملے گی اور کہیں گے اے رب! اگر جنت اور اس میں رہنے والوں کے لئے جو انعامات تیار ہیں وہ دکھانے سے پہلے ہی ہمیں جہنم میں بھیج و بیا تو ہمیں پچھ آسانی رہتی، رب تعالی فرمائے گا: یہ تہمارے ساتھ اس لئے کیا گیا ہے کہ جبتم میری بارگاہ میں آتے تو اکر کر آتے کہ جب تم میری بارگاہ میں آتے تو اکر کر آتے لیکن جب تم لوگوں سے ملتے تو جھک جھک کر ملتے تھے، لوگوں کو اپنے دلوں میں چھپی باتوں سے بے خبرر کھتے اور ربیا کاری سے کام لیتے تھے۔ تم لوگوں سے ڈرتے تھے مگر مجھ سے نہیں ڈرتے تھے، تم لوگوں کو بڑا سیمھتے تھے اور مجھے نہیں، تم وائی نعمتوں سے محروم کر کے غرض کے لئے لوگوں سے تو تعلقات ختم کر دیتے تھے مگر میرے لئے نہیں، آج میں تہمیں دائی نعمتوں سے محروم کر کے دردنا کے مذاب کا مزا چکھاؤں گا۔ (1)

حضرت احمد بن حرَّب دَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهُ كا قول ہے: ہم دھوپ پرسائے کوتر جیج دیتے ہیں مگرجہنم پر جنت کوتر جی نہیں دیتے۔

حضرت عِیسلی عَلَیْهِ السَّلام کاارشادہے کہ کتنے تندرست جسم ،خوبصورت چہرےاورشیریں کلام کرنے والی زبانیں ، کل جہنم کے طَبقات میں پڑے جیخ رہے ہول گے۔

Brown Bill Considerate A

حضرت داؤوعَ لَيْهِ السَّلَام نے بارگا والہی میں عرض کی: الہی! جب میں سورج کی تیش پرصبر نہیں کر سکتا تو تیرے جہنم کی آگریں کے استعمار کروں گا؟ میں کہ تیری رحمت کی آواز سننے کا حوصانہیں رکھتا، تیرے مذاب کی آواز کیسے سنوں گا؟

^{1}المعجم الاوسط للطبراني، ٤/٥٥، الحديث ٤٧٨ ٥

اے نا تواں!ان ہولنا کیوں پرغور کراور مجھ لے کہ الله تعالیٰ نے آگ کواس کی تمام تر ہولنا کیوں کے ساتھ پیدا کیا ہے اوراس میں رہنے والوں کو پیدا کر دیا ہے جونہ کم ہوں گے نہ زیادہ ،الله تعالیٰ ان کا فیصلہ فر ما چکا ہے۔ فرمانِ الہی ہے:

''اورانہیں حسرت کے دن سے ڈرائے جب کام کمل کیا جائے گا اور وہ غفلت میں ہیں اور ایمان نہیں لاتے۔''(1) اپنی جان کی قتم! اس میں قیامت کی طرف اشارہ ہے بلکہ یومِ از ل مراد ہے لیکن چونکہ ان فیصلوں کا اظہار قیامت کے دن ہوگا اس لئے اسے قیامت سے منسوب کیا گیا ہے۔

تجھ پرتعجب ہے کہ اس بات کو جانتے ہوئے بھی کہ جانے میرے ق میں کیا فیصلہ ہو چکا ہے تو دنیاوی برائیوں اور لہوولعب میں مشغول ہے اور انجام کا پیتہ چل جائے لہوولعب میں مشغول ہے اور نخطت میں پڑا ہے،اگر تیری تمنایہ ہے کہ کاش تجھے اپنے ٹھکانے اور انجام کا پیتہ چل جائے تو اسکی چندعلامتیں ہیں،ان پرنظر کر اور پھراپنی اُمیدیں قائم رکھ۔

پہلے تواپ نے احوال اورا عمال کود کھے،اگر تو ہراس عمل پر کاربندہے جس کے لئے اللّٰہ تعالیٰ نے مجھے دنیا میں بھیجا ہے اور مجھے نیکیوں سے محبت ہے توسمجھ لے کہ تو جہنم سے دور ہے اورا گر تو نیکی کا ارادہ کرتا ہے مگرا یسے موافع حائل ہوجاتے ہیں کہ تو نیکی نہیں کر پاتا لیکن جب برائی کا ارادہ کرتا ہے تواسے آسانی سے کر لیتا ہے توسمجھ لے تیرے لئے فیصلہ ہو چکا ہے کیونکہ جیسے بارش کا وجود سبزے کی نشو ونما اور دھواں آگ پر دلالت کرتا ہے تواسی طرح یفعل بھی برے انجام کا پیتہ دیتا

فرمانِ الهي ہے:

اِنَّ الْاَبْرَاسَ لَغِيُّ نَعِينِيْ ﴿ وَإِنَّ الْفُجَّاسَ لَغِي جَعِيْمٍ ﴿ (2) لَهُ مِنْ مِن مِن مِن اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللّهُ اللهُ الله

2توجمهٔ كنز الايمان: بشك كوكارضرورچين مين بين اوربشك بدكارضروردوزخ مين بين - (ب ۳۰ الانفطار: ۱٤،۱۳۰)

(پ۱٦، مريم: ۳۹)

^{📭} تو جمهٔ کنز الایمان: اورانہیں ڈرسناؤ پچھتاوے کے دن کا جب کام ہو چکے گااوروہ غفلت میں ہیں اوروہ نہیں مانتے۔



خُ فضیلت اطاعت ﴿

اِطاعت ِخداوندی کے معنی تمام نیکیوں کو پالینا ہے، اللہ تعالی نے قرآ نِ مجیدی مُتَعَدَّد آیات میں لوگوں کواسی بات کی ترغیب دی ہے اوراس لئے انبیاء کرام کومبعوث فر مایا تا کہ لوگوں کونس کی تاریک بیوں سے نکال کراللہ تعالی کی معرفت کی روشنیوں میں لائیں اوروہ اس جنت سے نفع اندوز ہوں جو نیکوں کے لئے تیار کی گئی ہے کہ اس جیسی جنت کسی آئے تھے نہیں دیکھی کسی کان نے نبیں سنی اور کسی دل میں اس کا تصور بھی نہیں گزرا، لوگوں کو فضول نہیں پیدا کیا گیا بلکہ اس لئے پیدا کیا گیا ہا بلکہ اس لئے پیدا کیا گیا ہے کہ بروں کوان کی برائی کی سزا ملے اور نیکوں کوان کی نیکیوں کا اجرعطا ہو۔

الله تعالی عبادت سے بے نیاز ہے، لوگوں کی برائیاں نہاسے نقصان پہنچاتی ہیں اور نہ ہی اس کے کمال میں کوئی نقص آتا ہے۔ اگر مخلوق الله تعالی کی عبادت نہ کرے تب بھی الله تعالیٰ کی بارگاہ میں ایسے فرشتے ہیں جوشج وشام رب کی حمد کرتے رہتے ہیں اور بھی نہیں تھکتے۔

جس شخص نے نیکی کی ،اس نے اپنے لئے کی اور جس نے گناہ کیااس کاعذاب اسی کی گردن پر ہوگا،الله تعالیٰ غنی ہے اور تم فقیر ہو۔

حیران کن بات تو یہ ہے کہ ہم اگر کوئی غلام خریدتے ہیں تواس بات کو پیند کرتے ہیں کہ وہ ہر وقت خدمتِ ما مورہ

پوری تَنکِر ہی سے سرانجام و بتار ہے، ہمارامطیع وفر ما نبر دارر ہے حالا نکہ اسے معمولی قیمت سے خریدا گیا ہے، اس کی ایک غلطی پراسے دشمن مجھ لیتے ہیں، با انتہا غصہ کرتے ہیں، اس کا کھانا بند کر دیتے ہیں، اسے آئکھوں سے دور کر دیتے ہیں یا پھراسے بچھ دیتے ہیں، کیا ہم اس ما لک حقیقی کی اِطاعت نہیں کرتے جس نے ہمیں بہتر بن صورت میں بیدا کیا ہے، ہم بارش کے قطروں کے برابر گناہ کرتے ہیں مگر وہ اپنی تعمیں ہم سے نہیں روکتا، اپنی رحمت کی نفر سے نہیں روکتا، جس کے بخیر ہمارے لئے ایک قدم چلنا بھی مشکل ہوجائے، اگر وہ چا ہے تو ہمیں ایک گناہ کے بدلے پکڑنے پر قادر ہے مگر دہ ہمیں مہلت دیتا ہے تا کہ ہم تو بہ کریں اور وہ تو بقول فرما کر ہمارے گناہوں کو بخش دے اور ہمارے عیوب ڈھانی لے۔

ہر خقلمند بخو بی جانتا ہے کہ إطاعت وفر ما نبر داری کے لائق کون ہے! وہ اسی ذات کی طرف متوجہ ہوتا ہے، اسی کے دامن رحمت میں پناہ ڈھونڈ تا ہے، جب اس سے کوئی گناہ سرز دہوتا ہے تو وہ اپنے خالق کی طرف رجوع کرتا ہے، اس کی رحمت سے ناامیز نہیں ہوتا اور اس کے إنعامات کا شکر ادا کرتا رہتا ہے یہاں تک کہ وہ الله تعالیٰ کے دوستوں میں شار ہونے لگتا ہے، جب اسے موت آتی ہے تو وہ دیدار اللی کا مشتاق اور رب بے نیاز اس سے ملاقات کا خواہ شمند ہوتا ہے۔

حضرت ابوالدرداء دَضِی الله عنه نے حضرت کعب دَضی الله عنه سے کہا: مجھے تورات کی ایک خاص آیت سناؤ! انہوں نے جواب میں یہ آیت سنائی رب فرما تا ہے: نیکوں کو میرے دیدار کا شوق ہے اور میں ان کی ملاقات کا ان سے بھی زیادہ خواہ شمند ہوں حضرت کعب نے کہا: اس آیت کے حاشیہ میں کھا ہوا تھا: جس نے مجھے تلاش کیا، پالیا اور جس نے کسی اور کو ڈھونڈھا وہ میرے دیدار سے محروم رہا حضرت ابوالدرداء فرمانے لگے: بخدا میں نے حضور صلّی الله عَلَیْهِ وَسَلّم سے بھی ایسے ہی سناہے۔

والمائل فالمستوار ويواسلان والمائل والمأثي

حضرت داؤد عَدُه السَّادِم کی طرف اللَّه تعالیٰ نے وحی فرمائی: اے داؤد! میرایہ پیغام دنیا والوں تک پہنچا دو، میں اس کا دوست ہوں جو مجھے دوست رکھتا ہے، اپنی مجلس میں آنے والوں کا ہم مجلس ہوں، جو میرے ذکر سے الفت رکھتا ہے میں اس سے دوستی رکھتا ہوں، جو مجھے پیند کرتا ہے میں اس سے دوستی رکھتا ہوں، جو مجھے پیند کرتا ہے میں اس سے دوستی رکھتا ہوں، جو مجھے پیند کرتا ہوں سے مجھے اسے پیند کرتا ہوں، جو میرا فر ما نبر دار بن جاتا ہے میں اس کا کہنا قبول کرتا ہوں، جو شخص بھی دل کی گہرائیوں سے مجھے محبوب جانتا ہے میں اسے اپنے گئے پیند کرتا ہوں اور اس سے بے مثال محبت کرتا ہوں، جس نے حقیقاً مجھے طلب کیا، اس نے مجھے پالیا اور جس نے میرے غیر کوطلب کیا وہ مجھ سے محروم رہا، پس اے دنیا والو! تم کب تک دنیا کے دھو کہ میں رہوگے؟ میری کرامت، دوستی اور مجلس کی طرف آؤ! اور مجھے سے اُنس رکھو، میں مجھے اپنی محبت سے مالا مال کر دوں میں رہوگے؟ میری کرامت، دوستی اور مجھے لیا الله، موی نجی الله اور مجھے الله (علیهم السلام) کے خمیر سے بنایا ہے، کا کیونکہ میں نے اپنے دوستوں کا خیئیر ابرا ہیم طیل الله، موی نجی الله اور مجھے فی الله (علیهم السلام) کے خمیر سے بنایا ہے، ان کی روعیں اپنے نور سے اور ان کی نعمیں اسے بیدا کی ہیں۔

وليناف والإزامية والهابية والمالية والمناشية

ایک مردصالے ہے مروی ہے کہ حضرت رب العزت نے ایک صدیق پر الہام فرمایا کہ میرے بندوں میں کچھ ایسے بندے بھی ہیں جو مجھے مجبوب رکھتے ہیں، میں انہیں مجبوب رکھتا ہوں، وہ میرے مشاقی دیدار ہیں، میں ان کا مشاق دیدار ہوں، وہ میرے مشاقی دیدار ہوں، میں انہیں یا دفر ما تا ہوں، وہ میری طرف دیکھتے ہیں اور میں ان پرنگا ورحمت ڈالتا ہوں، اگر توان کے راستہ پر چلے گا تو میں مجھے مجبوب بناؤں گا اوراگر تو نے ان کا راستہ نہ اپنایا تو میں تجھے میں رکھوں گا۔ اس صدیق نے بوچھا: یاللہ ان کی علامتیں کیا ہیں؟ تورتِ ذوابعدل نے فرمایا: 'وہ دن ڈھلنے کا ایسا خیال رکھتے ہیں جیسے مہر بان چرواہا اپنی بکر یوں کا خیال رکھتا ہے وہ غروب شمس کے ایسے مشاق ہوتے ہیں جیسے سورج ڈو بنے کے بعد پرندہ اپنے آشیا نے میں پہنچنے کا مشاق ہوتا ہے۔'

جبرات بھیگ جاتی ہے، تاریکی بڑھ جاتی ہے، بستر بچھادیئے جاتے ہیں، لوگ اٹھ جاتے ہیں اور دوست دوستوں کے ساتھ خوش گیبیاں کرتے ہیں تو وہ میرے لئے کھڑے ہوجاتے ہیں، میرے لئے چہروں کا فرش بچھادیے ہیں (سجدے کرتے ہیں) میرے کلام ہوتے ہیں، میرے انعامات کی آرزوکرتے ہیں، ان کی ساری رات گریدوزاری کرتے ، رحمت کی امیدر کھتے اور خونے عذاب سے ڈرتے ہوئے، قیام وقعود، رکوع و بچود ہیں گزرجاتی ہے، مجھے اپنی نظر رحمت کی امیدر کھتے اور خونے عذاب سے ڈرتے ہوئے، قیام وقعود، رکوع و بچود ہیں گزرجاتی ہے، مجھے اپنی نظر رحمت کی قتم! وہ میری وجہسے گناہ کا بوجھ نہیں اٹھاتے اور مجھے اپنی ساعت کی قتم! وہ میری محبت کا شکوہ نہیں کرتے، میں پہلے پہل انہیں تین چیزیں عطا کرتا ہوں: ان کے دلوں میں اپنا نور ڈال دیتا ہوں جس سے وہ میری خبر یا لیتے ہیں جیسے میں ان کی خبر یا تا ہوں۔ دوسرے یہ کہ آگرز مین و آسان اپنی تمام تر اشیاء کے ساتھ ان کے میزانِ عمل میں رکھود سے جائیں تب بھی ان کے لئے ملکے ہوں گے اور میں ان کی نیکیاں بھاری کردوں گا۔ تیسرے یہ کہ میں اپنی رحمت کو اس کی طرف متوجہ کردیتا ہوں اور وہ اس بات کو جان لیتا ہے کہ وہ جو بچھ ما نگے گامیں اسے دے دونگا۔

الله تعالی نے حضرت داؤر عَلَيْهِ السَّلام کی طرف وحی کی کہا ہداؤد! تم جنت کا تذکرہ کرتے ہو مگر مجھ سے میرے مشاقوں میں شمولیت کی دعا کیول نہیں کرتے؟ آپ نے عرض کی: یا الله! تیرے مشاق کون ہیں؟ ربِ دوالجلال نے

فر مایا: میرے مشاق وہ ہیں جن کے دلول کو میں نے ہر کدورت سے پاک کر دیا ہے، انہیں منہیات سے متنبہ کر دیا ہے، وہ اپنے دل کے گوشوں سے مجھے دیکھتے ہیں اور میری رحمت کے امید وار رہتے ہیں، میں ان کے دلول کو دستِ رحمت میں لئے کر آسانوں پر رکھتا ہوں اور اپنے مقرب فرشتوں کو بلاتا ہوں، فرشتے اکٹھے ہو کر مجھے ہجدہ کرتے ہیں اور میں فرماتا ہوں: میں نے سجدہ کرنے کے لئے تہ ہیں نہیں بلایا بلکہ تہ ہیں اپنے مشاق ہائے دیدار کے دل دکھانے کے لئے بلایا ہے، بیابل شوق قابلِ فخر ہیں، ان کے دل آسان پر ایسے حیکتے ہیں جیسے زمین پر سورج چمکتا ہے۔

اے داؤد! میں نے مشاقوں کے دل اپنی رضا ہے، ان کاعیش اپنے نور سے پیدا کیا ہے، میں نے انہیں اپنا ہم راز بنایا ہے، ان کے وجود دنیا میں میری نگاہ رحمت کا مرجع ہیں اور میں نے ان کے دلوں میں ایک راستہ بنایا ہے جس سے وہ میر ادیدار کرتے ہیں اور ان کاشوق فُرُوں سے فُرُوں تر ہوتار ہتا ہے۔

حضرت واؤد عَدَيْهِ السَّلَام نے عرض کی: یاالله! مجھا ہے کسی مشاق کا دیدار کراد ہے، رب تعالیٰ نے فر مایا: داؤد لبنان کے بہاڑ پر جاؤ، وہاں میر سے چودہ محبّ رہتے ہیں جن میں جوان اور بوڑھے بھی شامل ہیں انہیں میر اسلام کہو اور کہناالله تعالیٰ فر ما تا ہے: تم میر بے دوست اور مجبوب ہووہ تمہاری خوشی میں خوش ہوتا ہے اور تمہیں بہت محبوب رکھتا ہے اور فر ما تا ہے: تم مجھ سے کوئی حاجت کیوں نہیں بیان کرتے؟ حضرتِ داؤد عَدَیْهِ السَّلَام ان سے ملاقات کے لئے روانہ ہوئے اور انہیں ایک چشمہ کے قریب یا یا وہ الله تعالیٰ کی عظمت وجلال پرغور و فکر کر رہے تھے۔

جب انہوں نے حضرتِ داؤد عَلَيْهِ السَّلام کود يکھا تو وہ ادھرادھر چھپ جانے کے ليے اکھ کھڑے ہوئے، حضرتِ داؤد عَلَيْهِ السَّلام نے فر ما يا: ميں الله کارسول ہوں اور تہہارے پاس الله کا پيغام پہنچانے آيا ہوں تو وہ نظريں جھکائے سرا پا اشتياق ہے اُس کا فر مان سننے کے لئے واپس آ گئے، حضرتِ داؤد عَلَيْهِ السَّلام نے فر ما يا: ميں تہہاری طرف الله کارسول بن کر آيا ہوں ،الله نعالی تہہيں سلام کہتا ہے اور فر ما تا ہے: تم مجھ سے حاجت کيوں نہيں طلب کرتے مجھے پی ضرور توں بن کر آيا ہوں ،الله دخوش ہوتا کے لئے کيوں نہيں پکارتے تا کہ ميں تمہارا کلام سنوں تم ميرے دوست اور محبوب ہو، ميں تمہاری خوش سے خوش ہوتا ہوں ،تہاری محبت کو بہتر سمجھتا ہوں اور ميں ہروت مہر بان شفق ماں کی نگاہ سے تم کود کھتا ہوں۔

جب انہوں نے بیسنا تو ان کے رخساروں پر آنسو بہنے لگے، ان کاشنخ پکاراٹھا: اے رب! تو پاک ہے، تو پاک

ہے، ہم تیرے غلام اور غلاموں کی اولا و ہیں، ہماری گزشتہ عمروں کے وہ کھات جو تیرے ذکر سے غفلت میں گزرے انہیں معاف فر مادے۔ دوسرا بولا: تو پاک ہے، ہم تیرے غلام اور غلاموں کے بیٹے ہیں جو معاملات ہمارے اور تیرے درمیان ہیں، ہمیں ان میں حسنِ نظر عطافر ماتیسرے نے کہا: اے اللّٰہ! تو پاک ہے ہم تیرے درمیان ہیں، ہمیں ان میں حسنِ نظر عطافر ماتیسرے نے کہا: اے اللّٰہ! تو پاک ہے ہمیں اپنے تیرے غلام اور تیرے غلاموں کی اولا د ہیں، اے رب! تو نے ہمیں دعا کی ترغیب دی ہے اور تجھے معلوم ہے کہ ہمیں اپنے لئے کسی چیز کی ضرورت نہیں ہے، ہم پر کممل احسان فر مااور اپنے راستہ پر ہمیشہ گامزن رکھ۔

ایک اور محب یوں کہنے لگا: الهی! ہم تیری رضامندی کو پوری طرح نہیں پاسکتے ، ہماری امداوفر ماتا کہ ہم اسے پالیں۔
ایک اور محب نے کہا: تو نے ہمیں نطفہ سے پیدا کیا اور اپنی ذات میں نظر کی دولت بخش ہے اے الله! تو نے ہمیں کلام کی ترغیب دی ہے، جو تیری شانِ عظمت کے نہم میں مشغول ہیں اور تیرے جلال میں غور وفکر کرتے ہیں اور ہم بخص سے تیرے نور کے قرب کی درخواست کرتے ہیں۔ ایک اور محب پکارا ٹھا کہ تیری عظمتِ شان ، دوستوں سے انتہائی قرب تیرے نور کے قرب کی درخواست کرتے ہیں۔ ایک اور محب پکارا ٹھا کہ تیری عظمتِ شان ، دوستوں سے انتہائی قرب اور کمین پر بے شار انعامات کی وجہ سے ہماری زبانیں دعا مائلنے سے رک گئی ہیں۔ ایک اور بولا: تو نے ہمارے دلوں کو این ذکر کی تو فیق بخشی ، اپنی رحمت میں مشغول فر ماکر ساری دنیا سے بے نیاز کر دیا ، کما حقہ شکر اوانہ کر سکنے کی ہماری تقصیر کو معاف فر مادے۔

ایک اور نے کہا: اے الله! توجانتا ہے کہ ہماری تمنا تیرے دیدار کے سوااور پھی بھی نہیں ہے۔ ایک اور نے کہا: مالک غلام سے مانگنے کوفر ماتا ہے مگر غلام اپنے لیے مانگنے کی جرأت نہیں کرسکتا، ہمیں نورعنایت فرماتا کہ ہم آسان کی تاریکیوں سے نکل کر تیری بارگاہ میں آئیں۔

ایک نے کہا: ہم یہ دعا ما نگتے ہیں کہ ہماری یہ عبادت قبول فر مالے اور ہمیں ہمیشہ اسی پر قائم رکھ ، ایک اور محبّ نے کہا: تو نے ہمیں جو فضیلت اور انعامات بخشے ہیں انہیں کممل فر مادے۔ دوسرے نے کہا: دنیا میں ہمیں کسی چیز کی ضرورت نہیں ہے، ہمیں اپنا جمالِ جہاں آراد کھا دے۔

ایک اور محبّ نے کہا: میری آئکھیں دنیا اور اس کی زیب وزینت سے کور کر دے اور میرے دل کو آخرت کے خیالات سے یاک فرمادے۔

ایک اور محبّ نے کہا: میں نے تیری رفعت اور پا کی کوجان لیا اور دوستوں سے تجھ کو جومحبت ہے اس کو پہچان لیا ہے، ہم پر بیاحسان اور فر ما کہ ہم کواپیا کردے کہ ہم تیرے سواکسی اور چیز کاول میں خیال تک نہ لائیں۔

پھراللّٰہ تعالیٰ نے حضرت واؤد علیّٰہِ انسَّادم کی طرف وحی فر مائی کہا ہواؤد!ان سے کہدو، میں نے تمہاری باتیں س کرانہیں قبول کرلیا ہے، تم ایک دوسرے سے الگ الگ ہوجاؤ اورخودکودیدار کے لئے آ مادہ کرلومیں تمہارے اور اپنے درمیان حائل پردے اٹھانے والا ہوں تا کہتم میرے نوراورجلال کودیکھو۔

حضرتِ داؤد عَلَيْهِ السَّلام نے عُرض کیا: یاالله! انہیں بیمقام کیسے ملا ہے؟ رب نے فرمایا: حسنِ طن ، دنیا اور اس کے لواز مات سے کنارہ کئی ، میر بے حضور مناجات اور تنہائی میں حاضر ہونے کی وجہ سے انہیں بیمقام ملا ہے اور اس مقام کو وہی پاتا ہے جو دنیا اور مافیہا کوچھوڑ دے ، اس سے بالکل تعلق ندر کھے ، دل کومیری یاد سے معمور کر لے ، تمام مخلوق کوچھوڑ کر مجھے پیند کر لے تب میں اس پر رحمت نازل کرتا ہوں اسے دنیاوی علائق سے آزاد کر دیتا ہوں ، اس کے اور اپنے کر مجھے پیند کر لے تب میں اس پر رحمت نازل کرتا ہوں اسے دنیاوی علائق سے آزاد کر دیتا ہوں ، اس کے اور اپنی درمیان جابات اٹھا دیتا ہوں ، وہ مجھے ایسے دیکھتا ہے جیسے کوئی انسان اپنے سامنے کسی چیز کو دیکھتا ہے ، ہر لمحہ اسے اپنی عزت و کر امت کا نظارہ دکھا تا ہوں ، اسے نورِ معرفت سے سرفر از کرتا ہوں ، جب وہ بیار ہوجا تا ہے تو میں مہر بان ماں کی طرح اسکی تیار داری کرتا ہوں ، اگر وہ پیاسا ہوتا ہے تو میں اسے سیر اب کرتا ہوں اور اسے اپنے ذکر سے غذا فر اہم کرتا ہوں ۔

اےداؤد! (عَدَیْهِ السَّلام) جب میں اس سے بیسلوک کرتا ہوں تو وہ دنیا اور اس کے علائق سے نابینا ہوجاتا ہے،
اسے دنیا سے کوئی محبت نہیں رہتی، وہ میر سے سواکسی کی طرف توجہ نہیں دیتا، وہ جلدی مرنے کو پہند کرتا ہے مگر میں اس کی موت ناپیند کرتا ہوں کیونکہ ساری مخلوق میں وہی تو میر کی نظر رحمت کا مُورِ دومَ رَجَّع ہوتا ہے، وہ میر سے سواکسی کوئییں دیکھتا اور میں اس کے سواکسی اور کو پیند نہیں کرتا۔

اے داؤد! اگر تواسے اس حالت میں دیکھے کہ اس کاجسم پُرعیب ہو، وُبلا ہو، اس کے اعضاء ٹوٹ چکے ہوں اور اس کا دل نظام سے بے ربط ہو چکا ہوتو جب میں فرشتوں میں اس پر فخر کرتا ہوں اور آسان والوں میں اس کا تذکرہ کرتا ہوں تو وہ یہ شکرا پنی عبادت اور خوف کوزیادہ کردیتا ہے۔

X

اے داؤد! مجھے اپنی عزت وجلال کی قتم! میں اسے جنت الفردوس میں جگہ دوں گا اوراس کے دل کو اپنے دیدار سے معمور کردوں گاپہاں تک کہ وہ راضی ہو جائے گا۔

الله تعالی نے حضرت واؤد عَلَیْهِ السَّلام سے فرمایا کہ میری محبت کے مشاق بندوں سے کہد دیجئے: تمہیں اس وقت کوئی محرومی نہیں ہوگی جبکہ میں مخلوق کے سامنے حجابات ڈال دوں تو تم بے پردہ دل کی آئکھوں سے میرا دیدار کرتے رہوگے اور تمہیں کوئی ضرر نہیں ہوگا جبکہ میں نے دنیا کے بدلے تمہیں دین دے دیا اور تمہیں میری رضا کی خواستگاری کے باعث دنیا پر میری ناراضگی کوئی نقصان نہیں دے گی۔

حضرت داؤد عَلَيْهِ السَّلام کی خبروں میں بی بھی مرقوم تھا کہ الله تعالیٰ نے حضرت داؤد عَلَيْهِ السَّلام کی طرف وحی کی کہ الله تعالیٰ نے حضرت داؤد عَلَيْهِ السَّلام کی طرف وحی کی کہ اگرتم میری محبت کا دعویٰ کرتے ہوتو دل سے دنیا کی محبت نکال دو کیونکہ میری اور دنیا کی محبت ایک دل میں نہیں سما سکتیں۔

اےداؤد!دنیا ہے میل جول رکھو مگر مجت خالصۃ مجھ ہے، ہی رکھوبتم میرے دین کی پیروی کرو، لوگوں کے ادیان کی پیروی نہ کرو، جو چیزتم کومیری محبت کے شایاں نظر آئے اسے حاصل کرو، جس چیز میں تمہیں مشکل پیش آئے تو اس میں میری پیروی کرو، میں تمہارے احوال وحوائج کی اصلاح کردونگا بتمہارا قائدور ہمر بنوں گاسوال سے پہلے عطاکروں گا، مصائب میں تمہاری مددکروں گا، میں نے اپنی ذات کی قتم کھائی ہے کہ میں اپنے اس بندے کو بدلد دوں گا جوطلب صادق اور پختہ ارادوں کے ساتھ میرے حضور گردن جھکا کے آتا ہے اور وہ یہ جھتا ہے کہ مجھ سے بے نیازی و بے اعتنائی ممکن نہیں ہے، جب تو اس مقام پر پہنی جائے گا تو میں تم سے رسوائی اور وحشت کودور کردوں گا، تمہارے دل میں لوگوں سے بے نیازی ڈال دوں گا کیونکہ میں نے اپنی ذات کی قتم کھائی ہے کہ جب کوئی بندہ دنیا سے تعلق تو ڈکر میری ذات پر بجروسہ کرتے ہوئے مطمئن ہوجاتا ہے تو میں اسے دنیا سے مالا مال کردیتا ہوں، اعمال میں تضاد پیدا نہ کرو، لوگوں سے بے پرواہ ہوجاؤ، تم کو تمہارا ساتھی کوئی فائدہ نہیں دے گا اپنادھیان مجھ تک محدودر کھو، میری معرفت کی کوئی

۔ حذبین ہےاہے محدود نتی مجھو، مجھ سے جتنازیادہ طلب کرو گےا تناعطا کروں گا،میرے دینے کی کوئی حذبیں ہےاور بنی اسرائیل کو بتاؤ کہ میرے اور میری کسی مخلوق کے درمیان رشتہ داری نہیں ہے،میرے بارے میں ان کےعزائم کواوران کی رغبت کو بڑھاؤ ، انہیں اس جنت کا مژدہ سناؤ جسے کسی آئکھ نے نہیں دیکھاکسی کان نے نہیں سنااور کسی دل پراس کا تصورنہیں گزرا، مجھے ہروفت آئکھوں کے سامنے مجھو! مجھے سرکی آئکھ سے نہیں ، دل کی آئکھ سے دیکھو۔

میں نے اپنی عزت اور جلال کی قتم کھائی ہے کہ جو بندہ جان بوجھ کرتا خیر سے میری عبادت کرے گا، میں اسے تو ابنہیں دوڑگا، سیکھنے والوں سے تواضع سے پیش آؤ! اور مریدین پرزیادتی نہ کرو! میرے محبّ اگراس مقام کو جانتے جو میں نے مریدین کے لئے مقرر کیا ہے تو وہ بھی اسی راستہ پر چلنا پسند کرتے۔

اےداؤد! کسی مریدکواس کی سرمستی سے ہوشیار نہ کرو، اسے میری ذات میں مگن رہنے دومیں تم کو بچید (بے انہا کوشش کرنے والا) ککھوں گا، اور جے میں اپنے ہاں جہید لکھ دیتا ہوں اُس پر کنلوقات سے کوئی خوف اور بھا بی نہیں رہتی۔

اے داؤد! میرا کلام خوب مجھواور اسے مضبوطی سے پیڑلو، اپنی ذات کے لئے اپنے نفس سے نیکیاں لو، دنیا میں مشخول نہ ہوتا کہ مجھ سے تمہاری محبت پس پردہ نہ چلی جائے ، میر بیدوں کو میری رحمت سے ناامید نہ کرو، میر بے لئے اپنی خواہشات کوختم کردو کیونکہ میں نے شہوات کمزور بندوں کے لئے بنائی ہیں، توی مردوں کا خواہشات نفسانی سے کیا کام؟ کیونکہ میمری بارگاہ میں منا جات کی شیرینی کوختم کردیتی ہیں، میرے ہاں طاقتوروں کا عذاب سے ہے کہ جب وہ میرے دیدار کی لذت پالینے کے قریب ہوتے ہیں، میں ان کی عقلوں پر پردہ ڈال دیتا ہوں اور وہ محروم رہتے ہیں، میں اس کی عقلوں پر پردہ ڈال دیتا ہوں اور وہ محروم رہتے ہیں، میں اپنے دوست کے لئے دنیا اور دنیا کی وجہ سے اپنی دوری پسنہ ہیں کرتا۔

اے داؤد! میرے اور اپنے درمیان مخلوق کو نہ لاؤ کہیں اس کی سرمستی تم کومیری محبت سے دور نہ کردے کیونکہ یہ مخلوق میرے ارادت مند بندوں کے لئے چوروں کی طرح ہے، ہمیشہ روزے رکھوشہوات کوترک کرسکو گے،خود کو بے روزہ ہونے سے بچاؤ کیونکہ مجھے ہمیشہ روزے رکھنے والے بہت پسند ہیں۔

☆.....☆.....☆





ربددوالجلال فقرآن مجيد مين ذكر كساته شكركوبهي شامل فرمايا ب،ارشاد بارى تعالى ب:

اور بے شک الله کا ذکر بہت بڑا ہے۔

وَلَنِكُمُ اللهِ أَكُبَرُ اللهِ اللهِ

ارشادِ الهي ہے:

پستم میراذ کر کرومین تههاراذ کر کروں گااور میراشکر کرواور کفرنه کرو_

فَاذْ كُرُونِيَ ٓ اَذَكُمُ كُمُ وَاشُكُرُ وَالِي وَلا تَكُفُرُونِ ۞

مزيد فرمايا:

مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَا بِكُمُ إِنْ شَكَرْتُمْ وَامَنْتُمْ (3)

اگرتم ایمان لائے اورشکر گزار بن گئے تواللہ تعالی تہمیں عذاب

نہیں دےگا۔

اور فرمایا:

ہم عنقریب شکر کرنے والوں کواجر دیں گے۔

وَسَنَجْزِى الشَّكِرِيْنَ ۞

اورالله تعالى نے شیطان مردود كا قصه بیان كرتے ہوئے ارشاد فرمایا كه شیطان نے بارگاور تي میں كہا:

میں انہیں بہکانے کیلئے تیرے سیدھے راستے پر بیٹھ جاؤں گا۔

لَا قُعُكَ تَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمُ أَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمُ أَنَّ

بعض علماء کا خیال ہے کہ یہاں صراطِ متنقیم سے مرادشکر کا راستہ ہے، شیطان نے الله تعالیٰ کی مخلوق پر طعن کرتے

ہوئے کہاتھا:

العنكبوت:٥٥) المرابيتك الله كافر كرسب سي برا - (پ٢١ العنكبوت:٥٥)

2ترجمهٔ کنز الایمان: تومیری یا دکرویی تهاراچرچا کرول گا اورمیراحق ما نواورمیری ناشکری نه کرو-(پ۲،البقرة:۲۰۱)

انساء: ۲۷ مه کنز الایمان: اورالله تهمین عذاب دے کرکیا کرے گا اگرتم حق مانواورایمان لاؤ۔ (ب د النساء: ۲۷)

4 توجمه كنز الايمان: اورقريب م كبهم شكروالول كوصله عطاكرير _ (ب٤ ، ال عمران: ٥٤ ١)

5ترجمه کنز الایمان: مین ضرور تیر سید هراسته بران کی تاک مین بیشول گا-(پ۸،الاعراف: ٦)

توان میں ہےا کثر کوشکرگز ارٹہیں بائے گا۔

(1) وَلَا تَجِدُا كُثَرَهُمْ أُكِرِينَ ۞

اورفر مانِ اللهي ہے:

وَقَلِيْلٌ مِّنْعِبَادِيَ الشَّكُوْمُ ﴿ (2)

میرے بندوں میں تھوڑے ہیں جوشکرا دا کرتے ہیں۔

اورالله تعالى في شكر كرف يرنعتول مين زيادتي كاتذكره فرمايا بي چنانچ فرمان الهي بي:

اگرتم نے شکر کیا تو میں نعمتوں کوزیادہ کروں گا۔

لَيِنْ شَكُرْتُمُ لاَ زِيْرَاتَكُمُ (3) اوراس فرمان میں کسی کوشنٹی نہیں فرمایا اور یانچ چیزیں ایسی ہیں جن میں الله تعالی نے استثناء کیا ہے:

ے.... تَوْ گَرِی ہے.... قبولیت ہ....رزق ہ... بخشش اور ہ.... تو بہ

چنانچ فرمانِ الهي ہے:

اگرالله نے جا ہا توعنقریب تنہیں مال دارکر دےگا۔

فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللهُ مِنْ فَضَلِمْ إِنْ شَاءَ اللهُ عَلْمُ اللهُ مِنْ فَضَلِمْ إِنْ شَاءَ الله

اورارشادفر مایاہے:

وہ جسے حیاہتا ہے بے حساب رزق دیتا ہے۔

يَرُزُقُ مَنْ يَّشَاءُ بِغَيْرِحِسَابِ ﴿ 5َ)

اور فر مایا: '' اور الله تعالی شرک کے سواجو گناہ جا ہے بخش دے گا'' ⁽⁶⁾

مزيد فرمايا: "الله تعالى جس كى توبه جا بهتا ہے قبول كر ليتا ہے۔ " (7)

شكرالله تعالى كى صفات مين سے ايك صفت ہے چنانچدارشا واللى ہے:

اورالله تعالیٰشکورچلیم ہے۔

وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مُلَّكُمٌ حَلَّكُمْ ١٤٥

- 1توجمه كنز الايمان: اورتوان مين اكثر كوشكر كزارنه مائ كار (ب١٨١٧ء اف: ١٧)
 - 2ترجمه كنز الايمان: اورمير بندول مين كم بين شكروالي (ب٢٠ ،سبا:١٠)
- 3تر جمه كنز الإيمان: اگراحيان مانو گيتو مين تمهين اوروُون گا_(ب۳۱،۱ اهيه:۷)
- ۲۸:ستوجمه کنز الایمان: توعنقریبالله تمهیس دولت مندکردےگا این فضل سے اگر حالیہ ۱۷۰۰انتوبه: ۲۸)
 - البقرة: ۲۱۲) توجمه كنز الايمان: جي جائب كنتى و در ۲۱ البقرة: ۲۱۲)
 - 6تو جمه كنز الايمان: كفرس فيج بو كهرب جمي عاب معاف فرماد يتاب (به النساء: ٤٨)
 - 7ترجمه كنز الايمان: اور الله جس كى حياب توبقبول فرمائ ـ (ب١٠١٠ التوبه: ٥١)
 - **3**..... توجمه كنز الايمان: اورالله فدرفر مان والاحلم والاج (ب ٢٨، التغابن: ١٧)

ييشُ ش: مطس ألمَد فِيَدَّ العِيْدِ المينَّة و (وعوت اسلامی)

,

الله تعالى في شكر كوجنتيول كامبتدائ كلام قرار ديا باورفرمايا:

(جنتی جنت میں داخل ہوتے ہی کہیں گے)' دحمد اور شکر ہے اللہ کے لیے جس نے اپناوعدہ سچا فر مایا۔''⁽¹⁾ اور فر مایا:

ان کی آخری پکاریہ ہوگی حمہ الله رب العالمین کے لیے۔

وَاخِرُ دَعُولُهُمْ إِنِ الْحَمْدُ اللَّهِ مَ إِنَّا لُعَدُدُ اللَّهِ مَنْ الْعُلَمِينَ أَنْ الْحَمْدُ اللَّهِ مَا إِنَّا لُعَلَّمُ اللَّهِ مَا إِنَّا لُعَمَّدُ اللَّهِ مَا إِنَّا لُعَمَّدُ اللَّهِ مَا إِنَّا لُعَمَّدُ اللَّهِ مَا إِنَّا لُعَمَّدُ اللَّهِ مَا إِنَّا الْعُلَمِينَ أَنْ اللَّهِ مَا إِنَّا الْعُمْدُ اللَّهِ مَا إِنَّا الْعُمْدُ اللَّهِ مَا إِنَّا الْعُمْدُ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مَا اللَّهُ اللَّهُ مَا أَنْ الْحُمْدُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُن اللَّهُ مُن اللَّهُ مِن اللَّهُ مِن اللَّهُ مَا اللَّهُ مُن اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِن اللَّهُ مُن اللَّهُ مِن اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِن اللَّهُ مُواللَّهُ مِن اللَّهُ مُن اللَّهُ مِن اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِن اللَّهُ مِنْ مِن اللَّهُ مِن اللَّالِي مِنْ اللَّهُ مِن اللَّهُ مِن الل

شکر کی فضیلت میں بہت ہی احادیث بھی وارد ہوئی ہیں چنانچیفر مانِ نبوی ہے:'' کھا کرشکر ادا کرنے والے صابر روزہ دار کی طرح ہیں ۔''⁽³⁾

حضرت عطاء دَعِی الله عَنْدُ وَسَلَّی الله عَنْدُ وَسِی الله عَنْدُ وَخِی الله عَنْهُ الله عَنْدُ وَخِی الله عَنْهُ الله عَنْدُ وَخِی الله و الله وَخِی الله و الله وَخِی الله و الله وَخِی الله و الله وَخِی الله و الله وَخِی الله وَخِی الله وَخِی الله وَخِی الله وَخِی الله وَخِ

(پ٤، ال عمران: ٩٠).....شرح مشكل الاثار للطحاوي ٢٠ /٣٣/ الحديث ٢١٨ و صحيح ابن حبان ،كتاب التوبة، =

الزمر: ۲۶، الزمر: ۲۶، الزمر: ۲۶، الزمر: ۲۶، الزمر: ۲۶)

^{2}توجمه كنز الايمان: اوران كى وعاكا خاتمه ريه م كهسب خويبول سرابا (خويون والا)الله جورب مهسار ب جبان كا- (ب ١١، يونس: ١٠)

^{3}ترمذي كتاب صفة القيامة ، باب: ٤٣ ، ١٩/٤ ، الحديث ٤٩٤ ٢

⁴.....تر جمهٔ کنز الایمان: بے شک آسانوں اور زمین کی پیدائش اور رات اور دن کی باہم بدلیوں میں نشانیاں ہیں عقامندوں کے لئے۔

.....

یہ حدیث اس بات پردلالت کرتی ہے کہ انسان کبھی بھی بارگاہِ رب العزت میں رونا بندنہ کرے اوراس راز کی طرف یہ روایت بھی بھی اشارہ کرتی ہے کہ الله تعالی کے ایک نبی کا ایسے پھر سے گزر ہوا جوخودتو جھوٹا تھا مگر اس سے پانی بہت نکل رہا تھا ،الله تعالی کے نبی کو بہت تعجب ہوا ،الله تعالی نے پھر کوقوت کو یائی عطا کردی اور اس نے کہا: جب سے میں نے الله تعالی کا یفر مان سنا ہے کہ

انسان اور پھرجہنم کا ایندھن ہوں گے۔

وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۗ

میں برابراللہ کے خوف سے رور ہاہوں۔

الله کے نبی نے الله سے دعاما کی کہ اس پھر کوجہنم کی آگ سے بچالے الله نے دعا قبول فرمالی کچھ مدت گزرنے کے بعدان کا پھراسی طرف جانا ہوا، دیکھا تو پھر برابرروئے جارہا ہے؟ بعدان کا پھراسی طرف جانا ہوا، دیکھا تو پھر برابرروئے جارہا ہے؟ بچھرنے جواب دیا: اُس وقت خوف کی وجہ سے رورہا تھا اب خوشی اور مسرت میں رورہا ہوں۔

انسان کا دل بھی پیھر کی طرح یا اس سے بھی زیادہ سخت ہے، اس کی سختی خوف اور شکر دونوں حالتوں میں گریہ وزاری کرنے سے ختم ہوتی ہے۔

نبی اکرم صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں: قیامت کے دن کہاجائے گا کہ حمر کرنے والے کھڑے ہوجا کیں ،لوگوں کا ایک گروہ کھڑ اہوجائے گا ،ان کے لئے جھنڈ الگایاجائے گا اور وہ تمام جنت میں جا کیں گے بوچھا گیا: یارسول الله! حمر کرنے والے کون ہیں؟ آپ نے فرمایا: جولوگ ہر حال میں الله کاشکرا واکرتے ہیں۔ (2) دوسری روایت کے الفاظ یہ ہیں''جو ہر دکھ سکھ میں الله کاشکرا واکرتے ہیں''۔ (3)

⁼ ذكر البيان بان المرء...الخ، ٩/٢، الحديث ٦١٩ مختصرا

^{1} ترجمه كنز الايمان: جس كاايندهن آ دى اور چر بي - (ب١، البقرة: ٢٤)

الشافية الكبرى للسبكي، ٩٤/٦ و قوت القلوب ، ١/٤ ٥٣ و الموسوعة لابن ابي الدنيا، كتاب الاهوال،
 ٢٢٥/٦ الحديث ١٤ و فردوس الاخبار، ١٦/١ الحديث ١٤

^{3} المعجم الكبير، ٢ ١/٥١ ، الحديث ١ ٢٣٤ ابتغير قليل

فرمانِ نبوی ہے کہ شکررہِ رحمٰن کی حیا در ہے۔

الله تعالی نے حضرت ابوب عَلیْهِ السَّلام کی طرف وحی فرمائی که میں طویل باتوں کے بدلے اپنے دوستوں سے شکر کرنے پرراضی ہوگیا ہوں اور صابرین کی تعریف میں فرمایا کہ ان کا گھر جنت میں ہے، جب وہ جنت میں جائیں گے تو میں انہیں شکر کرنا سکھلا وُں گا کیونکہ شکر بہترین بات ہے اور اس سے میں نعمتیں زیادہ کروں گا اور ان کی مدت دیدار طویل کرتا جاؤں گا۔

جب جمعِ اموال کے سلسلہ میں وحی ربانی کا نزول ہوا تو حضرت ِعمر دَضِیَ اللّه عَنْه نے رسولِ اکرم صَلّی اللّه عَلَيْهِ وَسَلّم سَلّم عَلَيْهِ وَسَلّم سَلّم اللّه عَلَيْهِ وَسَلّم سَلّم اللّه عَلَيْهِ وَسَلّم سَلّم اللّه عَنْه کا قول ہے کہ اس حدیث ہے معلوم ہوا کہ میں مال کے بدلے شکر گزاردل کو پیند کرنا چاہئے۔حضرت ابن مسعود دَضِیَ اللّه عَنْه کا قول ہے کہ شکر نصف ایمان ہے۔

شکر، زبان، دل اوراعضائے بدن سے ہوتا ہے۔ دل کاشکرنیکیوں کا ارادہ کرنا اور مخلوق سے اسے پوشیدہ رکھنا۔
زبان کاشکر بیہ ہے کہ ان کلمات کو اوا کرے جو اظہارِ شکر کے لئے مخصوص ہیں۔ اعضائے بدن کاشکر بیہ ہے کہ انہیں عبادت الٰہی میں مصروف رکھے اور بُرے کا موں میں استعال نہ کرے، آئکھوں کاشکر بیہ ہے کہ وہ جس مسلمان کا عیب دیکھیں تو اسے ڈھانپ لیس۔کانوں کاشکر بیہ ہے کہ وہ کسی مسلمان کی برائی سنیں تو اسے چھپائیں، یہی ان کاشکر ہے۔ زبان کاشکر بیہ ہے کہ وہ کسی مسلمان کی برائی سنیں تو اسے چھپائیں، یہی ان کاشکر ہے۔ زبان کاشکر بیہ ہے کہ وہ تقدیرِ الٰہی پراپنی رضا کا اظہار کرے اور اسے یہی تھم دیا گیا ہے، چنا نچر حضور صَلَّی اللّٰہ عَلَیْهِ وَسَلَّم فَیْهِ وَسَلَّم فَیْهُ مِیْ ایک میں یہی پہرتے ہے سنیا جا بہتا تھا۔ (3)
اللّٰہ کی حمد اور شکر کرتا ہوں تب حضور صَلَّی اللّٰہ عَلَیْهِ وَسَلَّم فَیْهِ وَسَلَّم فَیْمُ مِیْ ایک میں یہی پہرتے سے سنیا جا بہتا تھا۔ (3)

بزرگانِ سلف کا بیطر یقه تھا کہ وہ دوسروں سے پوچھا کرتے تھے کہ کیسے ہو؟ ان کی نیت یہ ہوتی تھی کہ لوگ

- ❶.....كشف الخفاء ، ١/٨/١، الحديث . ١١٨ ، و الدرالمنثور، سورة الفاتحة، تحت الآية: ١،١/١،١ و قوت القلوب، ٣٤٣/١
 - 2 ابن ماجه ، كتا ب النكاح ، باب افضل النساء ،٢/٢ ، الحديث ١٨٥٦
 - 3المعجم الاوسط للطبراني، ٢١٦/٣ الحديث٤٣٧٧

مكاشفة القلوب ﴾

جواب میں الله کاشکر کریں اور جواب دینے والے اور پوچنے والے دونوں کا شارشکر گزاروں میں ہوجائے ،ان کی اس بات میں ریا کا قطعی دخل نہیں ہوتا تھا۔ جس شخص سے بھی اس کی حالت پوچھی جائے وہ تین با توں میں سے ایک بات کرے گا، شکرا داکرے گا، شکایت کرے گایا پھر خاموش رہے گا،الله کاشکرا داکر نا عبادت ہے، شکایت کر نا گناہ ہے جو دین داروں کے نزد کی سخت ناپیندیدہ فعل ہے،الله تعالی کے یہاں اس کی برائی کا کہناہی کیا جو بادشا ہوں کا بادشاہ ہے دین داروں کے نزد کی سخت ناپیندیدہ فعل ہے،الله تعالی کے یہاں اس کی برائی کا کہناہی کیا جو بادشا ہوں کا بادشاہ ہو جس کے دست قدرت میں بندہ ناچیز کی تمام چیزیں ہیں لہذا انسان کے لئے ضروری ہے اگر وہ مصائب پر صبر نہیں کرسکتا، قضائے اللی پر راضی نہیں رہ سکتا اور لامحالہ اپنی تہی دامنی کا شکوہ کرنا چاہتا ہے تو وہ لوگوں کے آگے شکا یتیں کرنے کے بیا کا لاللہ دب العزت کے حضورا پی گزارشات پیش کرے وہی مصائب میں مبتلا کرنے والا اور وہی ان سے نجات دینے والا ہے اور پر حقیقت ہے کہ بندہ ناچیز کا الله کی بارگاہ میں اپنی ذلت کا اظہار کرنا حقیقی عزت ہے مگر اپنے جیسے بندوں کے آگے شکوے کرنا اور ذلت اٹھا نا انتہائی رسواکن چیز ہے۔

فر مانِ اللّٰہی ہے:'' تحقیق تم اللّٰہ کے سواجن کو (معبور تبجھ کر) پکارتے ہووہ تمہارے جیسے اللّٰہ کے بندے ہیں۔''(1) نیز فر مایا:'' تحقیق تم اللّٰہ کے سواجن کی عبادت کرتے ہووہ تمہارے رزق کے مالک نہیں ہیں اللّٰہ کے یہاں رزق تلاش کرواور اس کی عبادت کرواور اس کاشکرادا کرو۔''⁽²⁾

شکر کی اقسام میں سے زبان سے شکر اداکر نابھی ہے چنا نچہ مروی ہے کہ حضر سے عمر بن عبد العزیز دَضِیَ الله عَنْه کی خدمت میں ایک وفد آیا تو ان میں سے ایک جو ان کھڑا ہو کر آپ سے گفتگو کرنے کی تیاری کرنے لگا۔ آپ نے فرمایا:

بڑوں کی عزت کرویعنی بڑوں کو مجھ سے گفتگو کرنے دو۔ اس پروہ جو ان بولا: اے امیر المؤمنین! اگر قیادت کا معیار عمر

ہوتا تو مسلمانوں میں ایسے بوڑھوں کی کثیر تعداد موجود ہے جو آپ سے عمر میں بڑے ہیں۔ آپ نے بیتن کر فرمایا: چلو

بات کرو! اس نے کہا: ہم کچھ لینے نہیں آئے کیونکہ آپ کی مہر بانیوں سے ہمیں بہت کچھ ل چکا ہے، کسی سے خوفز دہ ہوکر

نہیں آئے کیونکہ آپ کے عدل وانصاف نے ہمارے تمام خوف دورکر کے امن کی زندگی بخشی ہے، ہم صرف اس لئے

آئے ہیں کہ اپنی زبانوں سے آپ کا شکر بیادا کریں اور واپس چلے جائیں۔

¹.....توجمهٔ كنز الايمان: بشك وه جن كوتم الله كسوابوجة به تتمهارى طرح بندے بين - (ب٩ الاعراف: ٩٩)

^{2}تو جمهٔ کنز الایمان: بےشک وہ جنہیں تم الله کے سوابو جتے ہوتمہاری روزی کے پچھ ما لک نہیں ، توالله کے پاس رزق ڈھونڈو اوراس کی ہندگی کرواوراس کا احسان مانو۔ (پ۲۰العنکبوت: ۱۷)

اب 42)

مُذَمَّتِ عُجِبُ وتكبر ﴿

الله تعالی نے قرآنِ مجیدی متعدد آیات میں تکبری فرمت کی ہے اور ہرخودسر متکبرکو بُراگردانا ہے چنانچ ارشادِ الله

<u>ب</u>

سَاصُرِفُ عَنْ البِينَ الَّذِيثِ يَتَكَلَّبُ رُونَ فِي

الْأَرُّ شِ بِغَيْرِ الْحَقِّ (1)

اورفر مایا:

ػڶڮڬؽڟڹڂٛٳۺ۠*ڎؗٵڸ۠ڴڸۣۨڡۜٙڵۻؚڡؙؾۘڴ*ڐؚؚڔ

إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكَدِرِ يْنَ ۞

جَبَّامٍ^{©(2)}

البتہ میں ان لوگوں کواپنی آیات سے پھیر دوں گا جوز مین میں

ناحق تكبر كرتے ہيں۔

اس طرح الله ہر سر کش متکبر کے دل پر مہر لگا دیتا ہے۔

مزید فرمایا: ''اورانهوں نے فتح مانگی اور ہرسر کش عنا در کھنے والا نا مراد ہوا۔''⁽³⁾ ایک اور آبیت میں ارشا وفر مایا:

وہ تکبر کرنے والول کومجبوب نہیں رکھتا۔

مزید فرمایا: "بشک انہوں نے اپنی زندگیوں میں تکبر کیا اور بہت بڑی سرتشی کی۔ "(5) فرمانِ الہی ہے:

جولوگ میری عبادت سے تکبر کرتے ہیں بہت جلدجہنم میں

ذلیل ہوکر داخل ہوں گے۔

إِنَّا الَّذِينَ يَسْتَكُبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِ سَيَدُخُلُونَ

(6) جَهَنَّمَ لِخِرِينَ®

الایمان: اور میں اپنی آیتول سے آئیں چھیردول گاجوز مین میں ناحق اپنی برائی جائے ہیں۔ (ب٩، الاعراف: ١٤٦)

الله يونهى مهركرويتا م مسكرس كسار دل ير (ب ٢٤ ١ السؤسن ٥٠)

3ترجمه كنز الايمان: اورانبول في فيصله ما نكااور برسرش بث وهرم نامرا وبوا- (ب ١٦، ابراهيم: ٥١)

4 توجمه كنز الايمان: بشك وه مغرورول كو پيندنيين فرما تا - (ب١٠ النحل: ٢٣)

الفرقان: ۲) ستو جمه کنو الایمان: بشکاپ بخ بی میں بہت ہی او تجی شیخی اور بڑی سرکشی پرآئے۔(پ۹۱،الفرقان: ۲۱)

وه جومیری عباوت سے او نیچ تھنچیۃ (تکبرکرتے) ہیں عنقریب جہنم میں جا کیں گے ذلیل ہوکر۔ (پځ ۲ مالہ ؤ من ۲۰۱۰) ۔ اور بھی متعدد مقامات براللہ تعالیٰ نے تکبر کی مذمت فرمائی ہے۔

اور فرمانِ نبوی ہے:'' جس شخص کے دل میں رائی کے دانہ کے برابر تکبر ہوگا وہ جنت میں داخل نہیں ہوگا اور جس شخص کے دل میں رائی کے دانہ کے برابرا بمان ہوگا وہ جہنم میں نہیں جائے گا۔ ⁽¹⁾

حضرت ابو ہر ررد و خبی الله عنه سے مروی ہے: حضور صلّی الله علیه و صلّم نے فرمایا: الله فرما تا ہے کہ عظمت اور کبریائی میری چا دریں ہیں جوان میں سے سی کا دعوی کرے گا میں اسے جہنم میں ڈال دوں گا، (2) مجھے سی کی پروانہیں ہے۔
حضرت ابوسلمہ بن عبد الرحمٰن دَضِی الله عنه سے مروی ہے: حضرت عبد الله بن عُرَدَضِی الله عنه ما اور حضرت عبد الله بن عُمْر و دَضِی الله عنه ما کو وصفا پر ملاقات ہوئی ، پھر در پر تھر ہے نے بعد عبد الله بن عَمْر و دَضِی الله عنه ما رونے گئے اور حضرت عبد الله بن عُمْر و دَضِی الله عنه ما رونے گئے ، لوگوں نے رونے کا سبب بو چھا تو آپ نے فرمایا: حضرت عبد الله بن عَمْر و رضی الله بن عُمْر و ضی کے دل میں دَضِی الله عنه ما کہنا ہے ، انہوں نے حضرت رسول اکرم صلّی الله علیه و سَلّم کو بیفر ماتے سا ہے: '' جس شخص کے دل میں دائی کے برابر تکبر ہوگا الله تعالی اسے منہ کے بل جہنم میں ڈالے گا۔'(3)

فر مانِ نبوی ہے کہ آ دمی اپنے نفس کی بیروی میں برابر بڑھتا چلا جا تا ہے یہاں تک کہاسے متکبرین میں لکھا جا تا ہےاورا سے انہیں کے عذاب میں مبتلا کیا جائیگا۔ (⁴⁾

حضرت سلیمان بن داؤد علیه ما السلام نے ایک مرتبہ پرندوں ، انسانوں ، جنوں اور درندوں سے فر مایا کہ میری معیت میں چلو چنانچہ آپ دولا کھ انسانوں اور دولا کھ جنوں کے ساتھ تخت پر جلوہ فر ما ہوئے اور اتن بلندی تک جا پہنچ کہ وہاں سے فرشتوں کی تسبیحات کی آ واز باسانی سنی جار ہی تھی ، چروہاں سے نیچا تر بے یہاں تک کہ ان کے قدم سمندر کوچھونے گئے تو آپ نے آ واز سنی ، اگر تمہارے کسی ساتھی کے دل میں ذرّہ برابر تکبر ہوگا تو جتنی بلندی تک میں تم کو کے گیا ہوں اس سے بھی زیادہ گہرائی میں اسے دھنسادوں گا۔

^{1}مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر وبيانه ، ص ٢٦، الحديث ١٤٨ ـ (٩١)

^{2}ابوداود، كتاب اللباس، باب ماجاء في الكبر، ٤ / ٨١ /١ الحديث ٩٠٠٠

^{€}شعب الايمان، السابع والخمسون...الخ، فصل في التواضع...الخ، ٦/١٨٦، الحديث، ٤٥١٨ (المروه مكان الصفا)

^{4....} ترمذي ، كتاب البر والصلة ، باب ماجاء في الكبر، ٣/٣ .٤ ، الحديث ٢٠٠٧

نبی کریم صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کہ جہنم سے ایک گردن نکلے گی جس کے دوکان ، دوآ تکھیں اور قوت گویائی رکھنے والی زبان ہوگی ، وہ کہے گی کہ مجھے تین شخصوں پر مقرر کیا گیا ہے ، ہر سرکش متکبر کے لئے ،الله کے ساتھ شریک ٹھہرانے والے کے لئے اور تصویریں بنانے والے کے لئے۔ (1)

فرمانِ نبوی ہے کہ بخیل ،متکبراور بدخصال جنت میں نہیں جائے گا۔(2)

فرمانِ نبوی ہے کہ جنت اور جہنم نے باہم گفتگو کی:

جہنم بولا کہ 'میں نے سرکشوں اور متکبروں کو اپنے لئے بیند کیا ہے۔''

جنت نے کہا:''میرے اندر کمز ور ضعیف اور در ماندہ لوگ آئیں گے''

الله تعالیٰ نے جنت سے فرمایا: ' تو میری رحمت ہے ، میں جس بندے کوچا ہوں گااسے تیرے سپر دکر دوں گا، اور جہنم سے فرمایا: ' تو میراعذاب ہے ، میں جسے چاہوں گاتیرے عذاب میں جھونک دوں گااورتم دونوں کو بھر دوں گا۔ ⁽³⁾

نی کریم صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کہ وہ بندہ بہت بُراہے جس نے تکبر کیا ،سرکشی اختیار کی اور قادرِ مطلق خدا کو بھول گیا، وہ بندہ بہت براہے جس نے تکبر کیا، اپنے آپ کو بہت براسمجھا اور بہت برٹے بلند و باعزت خدا کو بھول گیا، وہ بندہ بہت براہے جو مقصو دِ زندگی سے غافل ہوگیا، اسے بھول گیا اور قبروں اور مصائب کو بھلا بیٹھا، وہ بندہ بہت بُراہے جس نے بغاوت اور سرکشی کی اور اپنی ابتداء اور انتہاء کو بھول گیا۔ (4)

حضرت ثابت دَضِیَ الله عَنه ہے مروی ہے: ہمیں معلوم ہوا ہے، حضور صَلّی الله عَلَيْهِ وَسَلّم سے کہا گیا کہ فلال میں

^{1}ترمذي، كتاب صفة جهنم، باب ماجاء في صفة النار، ٤/٩٥٦، الحديث ٢٥٨٣

^{2}مسند احمد، مسند ابي بكر الصديق، ا/٢٦، الحديث٣٢ ملخصاً

^{3} بخاري ، كتا ب التفسير، باب وتقول هل من مزيد، ٣٣٣/٣، الحديث ٥٨٥٠

^{4}ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ۲۴٬۱۷ ،۲۰۱ لحدیث ۲۶۵

کتنا تکبر ہے! آپ نے فرمایا: کیااس کے لئے موت نہیں ہے؟ ⁽¹⁾ (یعنی وہموت ہے نہیں ڈرتا)

حضرت عبدالله بن عَرُودَ ضِى الله عَنه ما سے مروى ہے: حضور صَلَّى الله عَنه وَ سَلَّم نے فرمایا كه حضرت نوح عَلَيْه السَّلام نے وفات كے وفت اپنے بيٹوں كو بلاكر فرمایا: ميں تمہيں دوباتوں كرنے كاحكم ديتا ہوں اور دوباتوں سے روكتا ہوں، ميں تكبراور شرك سے منع كرتا ہوں اور " لَا اِلله الله " پركار بندر ہے كاحكم ديتا ہوں كيونكه اگرا كيك پلڑے ميں آسان وزمين اپنى تمام اشياء سميت ركھ ديتے جائيں اور دوسر بيلڑے ميں " لَا اِلله الله " ركھ ديا جائے تو يہ پلڑ ابھارى ہوجائے گا۔ اگر آسان وزمين اپنى تمام تراشياء سميت ايك دائره كي طرح ہوجائيں اور ان ميں " لَا اِلله الله " ركھ ديا جول كونكه يه برچيزى تنجى ديا جول كونكه يه برچيزى تنجى حيات كا اور ميں تمہيں " ورئے مين الله و بَحَدْدِة " پڑھنے كاحكم ديتا ہوں كيونكه يه برچيزى تنجى ہے اور اسى كے سبب ہرچيز كورزق ديا جاتا ہے۔ (2)

حضرت عِیسیٰ عَلَیْهِ السَّلام نے فرمایا: اسے بشارت ہو جسے اللّٰہ نے اپنی کتاب کاعلم دیا اور وہ متکبرنہیں مرا۔ فرمانِ نبوی ہے کہ ہرسنگدل، اِتر اگر چلنے والامتکبر، مال جمع کرنے والا اورکسی کوراہ خداسے رو کنے والاجہنمی ہے اور ہرمفلس ضعیف جنتی ہے۔ (3)

فرمانِ نبوی ہے: ہمیں سب سے زیادہ محبوب ہماراسب سے زیادہ مقرب قیامت میں وہ مخص ہوگا جوتم میں سے بہترین اخلاق کاما لک ہے اور قیامت کے دن ہمیں سب سے زیادہ ناپبنداور ہم سے سب سے زیادہ دور، لوگوں کا مضحکہ اڑانے والے، بیہودہ گواور منہ بھر بھر کر باتیں کرنے والے ہوں گے بوچھا گیا: حضور! بیکون ہوں گے؟ آپ نے فرمایا: مشکیر ہول گے۔

فرمانِ نبوی ہے: قیامت کے دن متکبر چیونٹیوں کی طرح اٹھائے جائیں گےلوگ انہیں روندیں گے اور ریزہ ریزہ کردیں گے اور وہ انتہائی ذلت میں ہوں گے پھر انہیں جہنم کے قید خانہ کی طرف لے جایا جائیگا جس کا نام بُولس

^{●} شعب الايمان ، السابع والخمسون ... الخ، فصل في التواضع ... الخ ٢٩٣/٦ ، الحديث ٨٢٠٩

^{2}مسنداحمد ، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، ۲/ ٩٥/٦ ، الحديث ٢١٢٣

^{3} مسنداحمد ، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، ۲۷۲/۲ ، الحديث . ۳۰

^{4}تاریخ مدینه دمشق، ۳۹۷/۳۷

ہے،ان پرجہنم کی آ گ بھڑ کے گی،انہیں دوزخمیوں کےجسموں سے نگلنےوالی پیپ پلائی جائے گی۔(1)

حضرت ابو ہریرہ دَضِیَ اللّٰه عَنُه سے مروی ہے:حضور صَلّٰی اللّٰه عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ سرکش اور متکبروں کو قیامت کے دن چیونٹیوں جیسی جسامت میں پیدا کیا جائے گا ،اللّٰه تعالیٰ کے یہاں ان کی ناقدری کی وجہ سے لوگ انہیں روندر ہے ہول گے۔ (2)

حضرت محمد بن واسع دَضِیَ الله عَنْه سے مروی ہے کہ میں بلال بن ابی بردہ کے ہاں گیا اور ان سے کہا کہ تہہارے والد نے مجھے حضور صَلَّی اللّٰه عَلَیْهِ وَسَلَّم کی بیصدیث سنائی تھی کہ جہنم میں ایک وادی ہے جس کانام" ہَبْہَ بَ ہے،اللّٰه تعالیٰ اس وادی میں ہر متکبر کو داخل کرے گا،اے بلال! خیال رکھنا کہیں اس وادی کے رہنے والوں میں سے نہ ہوجانا۔ (3) فرمانِ نبوی ہے کہ جہنم میں ایک محل ہے جس میں تمام متکبروں کو جمع کیا جائیگا اور پھر وہ کی ان پر گرادیا جائے

فرمانِ نبوی ہے: اے الله! میں تکبر کی برائی سے تیری پناہ مانگتا ہوں۔

اور فرمایا کہ جو شخص دنیا ہے اس حال میں جائے کہ وہ تین چیزوں سے بری ہو، وہ جنت میں جائے گا: تکبر، قرض، خیانت۔ (6)

حضرت ابوبكر دَضِى اللَّه عَنه كاارشاد ہے كہتم میں ہے كوئى بھى كسى مسلمان كو تقیر نہ تہجھے كيونكہ حقیر مسلمان بھى الله تعالى كنز ديك بہت معزز ہوتا ہے۔

^{1}ترمذي، كتاب صفة القيامة، باب ٢٢١/٤،٤٧ ،الحديث ٢٥٠٠

الدنيا ،
 الاصل الثاني والاربعون، في فضيلة المؤذنين، ١/٥٥ والتواضع والحمول لابن ابي الدنيا ،
 ١٠٥٧٨/٣ الحديث ٢٢٤

۱۷/۱۰، تاریخ مدینه دمشق ۱۷/۱۰۰

^{4} شعب الايمان، السابع والخمسون...الخ، فصل في التواضع...الخ، ٢٨٩/٦ الحديث ٨١٨٧ (ليس بمرفوع بل موقوف على عبدالله بن مسعود رضي الله عنه)

التسشعب الايمان ، التاسع عشر من شعب الايمان ، فصل في البكاء عند قراءة القرآن، ٢ /٣٦٦، الحديث ٢٠٦٦ ملتقطًا

^{6}ترمذي، كتاب السير، باب ماجاء في الغلول، ٢٠٩/٣، الحديث ١٥٧٩

حضرت وہب دَضِیَ اللّٰه عَنْهُ کا قول ہے کہ اللّٰه تعالیٰ نے جنت عدن کو پیدا فر ما کر کہا: تو ہر متکبر پرحرام ہے۔
حضرت اَحف بن قیس دَضِیَ اللّٰه عَنْهُ حضرت مصعب بن زبیر دَضِیَ اللّٰه عَنْه کے ساتھ چار پائی پر بیٹھا کرتے تھے، ایک دن احف تشریف لائے تو حضرت مصعب پیر لمبے کئے ہوئے دراز تھے، انہیں دیکھ کرانہوں نے پیرنہیں سمیٹے، حضرت احف بیٹھ گئے اور انہیں بہت دکھ ہوا، یہاں تک کہ ان کے چہرے پر ناراضگی کی علامتیں ظاہر ہوگئیں، تب انہوں نے کہا: تعجب ہے کہ انسان تکبر کرتا ہے حالا نکہ وہ دو بیٹا بگا ہوں سے نکلا ہے۔

حضرت ِحسن دَضِیَ الله عَنُه فرماتے ہیں: تعجب ہے کہ انسان روزاندایک یا دومر تبہ پاخانہ دھوتا ہے اور پھر بھی الله تعالیٰ ہے مقابلہ کرتا ہے۔

آیهٔ کریمه

''وَفِي اَنْفُسِكُمْ اَفَلَاتُبُصِرُونَ ﴿ (1)

کے متعلق بعض علماءنے کہاہے کہاس سے مرادانسان کی شرم گاہیں ہیں۔

حضرت محمد بن حسین بن علی دَضِیَ الله عَنْهِم کا قول ہے کہ انسان کے دل میں جتنا تکبر داخل ہوتا ہے اتناہی اس کی عقل کم ہوتی ہے، تکبر زیادہ ہوتو عقل بہت کم ہوتی ہے اورا گر تکبر تھوڑ اہوتو اسی کے حساب سے عقل کم ہوجاتی ہے۔ حضرت سِلیمان دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ سے اس گناہ کے تعلق بوچھا گیا جس کی موجودگی میں نیکی کوئی فائدہ ہیں دیتی تو انہوں نے کہا: وہ تکبر ہے۔

حضرت نعمان بن بشیر دَضِیَ الله عَنْه نے منبر پر کھڑے ہوکر فر مایا: شیطان کے پچھ جال ہیں، ان جالوں میں سے میجال بھی ہیں: الله کی نعمتوں پر اِتر انا، اس کی عطاؤں پر فخر کرنا، بندگانِ خداسے تکبر کرنا اور الله تعالی کی ناپسندیدہ خواہشات کی انتباع کرنا۔اے الله ابنی منت اور احسان کے فیل دنیا اور آخرت میں ہمیں عفواور عافیت عطافر ما! آمین۔
فرمانِ نبوی ہے کہ جو خص مکبر کی وجہ سے این تہبند کو کھسٹتا ہے الله تعالی اسے نگاؤ رحمت سے نہیں دیکھتا ہے۔ (2)

- الله ويا الله الله الله الله الله و ا
- 2مسلم، كتاب اللباس والزينة، باب تحريم جر الثوب خيلاء و بيان حد ما يجوز ارخاؤه اليه...الخ، ص ٥٦ ١٠،

الحديث ٤٨_ (٢٠٨٧)

[47]

مزید فرمایا که ایک شخص اپنی چا در پرفخر کرر ماتھا، اس کانفس بہت اِتر ار ماتھا، الله تعالیٰ نے اسے زمین میں دصنسادیا اور وہ قیامت کے دن تک اسی طرح دصنستا چلا جائے گا۔ ⁽¹⁾

فرمانِ نبوی ہے کہ جو' تکبر' سے اپنے کپڑے گھیدٹ کر چلتا ہے الله تعالی قیامت کے دن اس پرنگاہِ رحمت نہیں فرمائے گا۔ (2)

حضرت زید بن اسلم سے مروی ہے کہ میں حضرت عبد الله بن عمر دَضِیَ الله عَنه ما کی خدمت میں حاضر ہوا تو عبد الله بن واقد کا گزر ہوا جو نئے کیڑے بہتے ہوئے تھا، میں نے ساحضرت عبد الله بن عمر دَضِیَ الله عَنه ما کہدر ہے تھا ہے بیٹے!
تہبند کواونچا کرلوکیونکہ میں نے رسول الله صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم کو بیفر ماتے ہوئے سناہے کہ جوا پے تہبند کوتکبر سے گسیدٹ کرچاتا ہے، الله تعالی اس کی طرف نگا ورحت نہیں کرتا۔ (3)

روایت ہے کہ حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم نے ایک مرتبرا پنی تقیلی پرلعابِ دہمن لگا کرفر مایا: الله تعالی فرما تا ہے:
اے انسان! تو عُجُب وغرور کرر ہا ہے حالانکہ میں نے مخصے اس جیسے پانی سے پیدا کیا ہے، یہاں تک کہ جب میں نے مخصے ملک کردیا تو تو رنگ بر نگے کیڑے پہن کرز مین پر دندنا تا پھر رہا ہے حالانکہ مخصے اسی زمین میں جانا ہے۔ تو نے مال جمع کر کے اسے روک لیا مگر جب موت تیرے سامنے آ جاتی ہے تو صدقہ کرنے کی اجازت طلب کرتا ہے، اب صدقہ کرنے کا وقت کہاں؟ (4)

فرمانِ نبوی ہے کہ جب میراامتی اِتراکر چلے گا اور فارس وروم والے ان کے خدمت گز ارہوں گے تواللّٰہ تعالیٰ ان پر دوسروں کومسلط کردے گا۔ (⁵⁾

^{1}مسلم، كتاب اللباس والزينة، باب تحريم التبختر...الخ، ص ١٥٦، الحديث ٤٩ ـ (٢٠٨٨)

^{2}مسلم، كتاب اللباس والزينة ، باب تحريم جرالثوب خيلاء...الخ، ص ١٥٥ ١ ١ الحديث٤٦ ـ (٢٠٨٥)

۱ مسندعبد الله بن عمر...الخ، ۲۱۹/۲ الحديث ۳۳۹ ومسند احمد، مسندعبد الله بن عمر...الخ، ۲۱۹/۲ الما ١٩/٢ الما الحديث ۲۳۹ مختصرا

^{4} مسند احمد، مسند الشاميين، حديث بسر بن جحاش ، ٢٥٥/٦ ، الحديث ٩ ١٧٨٥

الخارة ... الخارة عن الأمارة ... الخارة صلى الله عليه وسلم ... الخارة كتاب الأمارة ... الخارة ... ١١٥/٦
 ١١٥/٦ الجديث ٢٦٦٨ و سنن الترمذي، كتاب الفتن ، ١١٥/٤ الحديث ٢٢٦٨

فرمان نبوی ہے:

جوائیخ آپ کوبر اسمحھتا ہے اور اِترا کر چلتا ہے ، وہ الله تعالی سے اس حالت میں ملاقات کرے گا کہ الله تعالیٰ اس برناراض ہوگا۔ (1)

حضرتِ ابوبكر الهذلي دَضِيَ الله عَنُه عِيمروي ہے:

ہم حضرت حسن دَضِیَ الله عَنه کے ساتھ بیٹے ہوئے تھے کہ 'ابنُ الاَہُمُ مُن' کا گزرہوا جوابی کی طرف جارہا تھا۔
اس نے متعددر لیٹمی عَبا کیں ایک دوسرے پر پہن رکھی تھیں اوران کی وجہ سے اس کی اَچکئ کھی ہوئی تھی ، وہ نہایت متکبرانه انداز میں ایک ایک قدم رکھتا ہوا جارہا تھا۔ حضرت حسن نے ایک نظرا سے دیکھا اور فرمایا: افسوس! افسوس! ناک چڑھانے والا اِبر اکر چلنے والا منه پھلائے ہوئے اپنے دونوں پہلود کھتا ہوا جارہا ہے ، اے بیوتوف! تواپنے پہلوؤں میں ایس فعمت نوتوں کود کھر ہا ہے ، اے بیوتوف! تواپنے پہلوؤں میں ایس نعمتوں کود کھر ہا ہے جن کا شکر ادائہیں کیا گیا جو الله تعالی کے حقم سے بنائی گئیں اور نہ ہی تو نے الله تعالی کے حقوق کوادا کیا ہے ، تیرے بدن کے ہرایک عضو میں الله کی نعمت ہے اور شیطان ہر عضو پر قبضہ کی فکر میں ہے۔ بخدا! اپنی فطرت کے مطابق چانا ہو ایک کے طرح لڑکھڑ اکر چانا اس چلنے سے بہتر ہے۔

اِبنُ الْأَثْتُمُ نے جب بیسنا تو آ کرمعذرت کرنے لگا۔ آپ نے فر مایا: مجھ سےمعذرت نہ چاہو،اللّٰہ تعالیٰ سے تو بہ کرو، کیا تونے بیفر مانِ اللی نہیں سناہے:

''اورز مین پراتر ا کرنه چل بے شک تو نه تو زمین کو پھاڑے گا اور نه ہی پہاڑ وں جتنا لمباہوجائے گا۔''⁽²⁾

.....

حضرت حسن دَحُمَةُ اللهِ عَلَيْه كِقريب سے ایک جوان كاگزر ہوا جوخوبصورت كيڑے پہنے ہوئے تھا آپ نے اسے بلا كرفر مايا: اے انسان! اپنى جوانى پر فخر كرتا ہے! اپنى عادتوں سے محبت كرتا ہے! گويا كہ قبر نے تير بے وجودكو چھپاليا ہے اور تو نے اسينے اعمال ديكھ لئے ہيں! تچھ پر حیف صد حیف! جااور اسینے دل كاعلاج كركيونكه الله تعالى كو بندوں كے عمده

^{1 . . .} ٢ مسند احمد، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب ، ٢/٢ ٢ ٤، الحديث ٢٠٠٢

س... تو جمهٔ کنز الایمان: اورز مین میں اِترا تا نہ چل ہے شک تو ہر گز زمین نہ چیرڈالے گااور ہر گز بلندی میں بہاڑوں کونہ پنچے گا۔.... و جمهٔ کنز الایمان: اورز مین میں اِترا تا نہ چل ہے شک تو ہر گز زمین نہ چیرڈالے گااور ہر گز بلندی میں بہاڑوں کونہ پنچے گا۔
(پ۹۱، بنی اسوائیل: ۳۷)

دلوں کی ضرورت ہے۔

روایت ہے کہ حضرتِ عمر بن عبد العزیز دَضِیَ اللّه عَنْه نے خلافت سنجالنے سے پہلے جج کیا، حضرتِ طاؤس دَحْمَةُ اللّهِ عَلَيْه نے ان کے پہلوکوانگل سے دبا کرکہا: دَحْمَةُ اللّهِ عَلَيْه نے انہیں دیکھا کہ وہ اِتر الرح لرح کی رہو۔ جی ۔ طاؤس دَحْمَةُ اللّهِ عَلَيْه نے ان کے پہلوکوانگل سے دبا کرکہا: یہاس کی جال نہیں ہے جس کے پیٹ میں گندگی بھری ہو۔ جناب عمر بن عبد العزیز دَضِیَ اللّه عَنْه نے معذرت خوا ہانہ لہجہ میں کہا: اے عم محترم! میرے جسم کے ہرعضونے مجھے اس جال پر مجبور کیا اور میں بیجال سکھ گیا۔

حضرت محمد بن واسع دَحْمَهُ اللَّهِ عَلَيْهِ فِي السِيخِ عِيلِيعُ كُونا زُوتَبَخَّرُ سے چلتے ہوئے د مَلِي كر بلايا اور كہا: جانتے ہوئم كون ہو؟ تمہارى ماں كوميں نے سودرہم ميں خريدا تھا اور تمہارا باپ مخلوقِ خدا ميں بہت سے لوگوں سے كم مرتبہہے۔ حضرت عبد اللَّه بن عمر دَضِيَ اللَّه عَيْهِ مانے ايك آدمى كوتهبند گھييٹ كرچلتے ہوئے د مَلِي كرفر مايا كه شيطان كے بھى

ر سے جو جو مصامی رو موجہ میں ہوتا ہے۔ بھائی ہیں آپ نے دویا تین مرتبہ یہ جملہ دُھرایا۔

روایت ہے کہ مُطَرِّف بن عبدالله بن الشِّحِیْرُ دَحْمَهُ اللهِ عَلَیْه نے مُبَرِّلَا کوریشی جبہ بہنے نا زسے چلتے و مکی کرکہا کہ اے بندہ خدا! یہ چال ان لوگوں کی ہے جنہیں الله تعالی نا پیند کرتا ہے اور جورسولِ خداصَدًی الله عَلَیْهِ وَسَدَّم کے وَثَمَن بیں ، مُبَلَّب نے کہا: مجھے بہچانتے ہو میں کون ہوں؟ حضرتِ مطرف دَحْمَهُ اللهِ عَلَیٰه بولے کہ اچھی طرح بہچانتا ہوں ، تیری ابتدا نا پاک نطفہ ہے ، تیری انتہاء گندے مردار کے طور پر ہے اور درمیانی مدت میں تو گندگی اٹھائے پھرتا ہے۔ مہلب نے یہ سن کرمتکبرانہ چال ترک کردی اور آ گے روانہ ہوگیا۔

اسی موضوع پرا کششعراء نے بہت سے اشعار کے ہیں، ان میں سے چند یہ ہیں:

عجبت من معجب بصورته وكان بالامس نطفة مذرة

وفي غد بعد حسن هيئته يصير في القبر جيفة قذرة

﴿ 1 ﴾ میں اپنی صورت پر فخر کرنے والے پر جیران ہوں کیونکہ وہ کل تک ایک نا پاک نطفہ تھا۔

﴿2﴾اورائي خوبصورتى كے باوجودكل قبريس ايك بدبودارمردار موجائے گا۔

العنی اس کی بارگاه مین عمده اور پا کیزه دل مقبول مین علمیه

خلفِ احمر کہتا ہے: _

لنا صاحب مولع بالخلاف كثير الخطاء قليل الصواب

اشد لجاجا من الخنفسا وازهى اذا ما مشى من غراب

﴿1﴾.....ميراايك اختلاف پيند دوست ہے جس كى غلطيان زياد ه اوراجھائياں كم ہيں۔

﴿2﴾وه گبريلے سے بھی زيادہ ضدى ہے اور كؤے سے بھی زيادہ اكر كر چاتا ہے۔

ایک اور شاعر کہتا ہے: _

﴿1﴾ میں نے متکبرے کہا: جبکہ اس نے کہا: مجھ جیسے رجوع نہیں کیا کرتے۔

﴿2﴾ا بهت جلدونيا سے كوچ كرنے والے! تو تواضع كيون نبيس كرتا!

حضرت ذوالنون مصرى دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه اسى موضوع برفر مات بين:

ايها الشامخ الذي لايرام نحن من طينة عليك السلام

انما هذه الحيوة متاع ومع الموت تستوى الاقدام

﴿1﴾....اےموت کونہ چاہنے والے متکبر تجھ پرسلامتی ہو⁽¹⁾ ہم مٹی سے ہیں۔

﴿2﴾ بیدونیا کی زندگی چندروز ہے،موت کے ساتھ بی پیر برابر ہوجا کیں گے۔

مجامد نے فرمانِ الہی:

" ثُمَّذَهَبَ إِلَى الْمُلِهِ يَتَمُعًى ﴿ "(2)

ے معنٰی بیربیان کئے ہیں کہوہ اپنے گھر والوں کی طرف اتر اتا ہوا گیا۔والله اعلمہ .

۳۲: القيامة: ٣٣)

[•] سسبیلامِ متارکت ہے جوکسی سے کنارہ کشی اختیار کرتے وقت کہتے ہیں جسیا کہ آیت مبارکہ ہے: وَّ إِذَا خَاطَهُمُ الْجَهِلُوْنَ قَالُوْاسَلَمَا ﴿ مَارِكَ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّ

اب 43)

رندگی کے باریے میں غور و نکر ﴿

الله تعالی نے قرآ نِ مجید میں بہت سے مقامات پرانسان کوغور وفکر کرنے کا حکم دیا ہے چنانچے فرمانِ الہی ہے:

بے شک زمین وآسمان کی پیدائش اور رات دن کے اختلاف میں

إِنَّ فِي خُلُقِ السَّلَوْتِ وَالْا رُمِضِ وَاخْتِلافِ

(اہل بصیرت کے لئے نشانیاں ہیں)۔

الَّيْلِوَالنَّهَامِ (1)

یعنی رات دن کے ایک دوسرے کے پیچھے آنے جانے میں عقلمندوں کے لئے غور وفکر کی دعوت ہے کیونکہ جونہی ایک ا

جاتاہے، دوسرا آجاتاہے، چنانچیارشادِ الہی ہے:

الله تعالی وہ ہے جس نے رات اور دن کوایک دوسرے کے پیچیے

وَهُوَالَّذِي كُجَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَا رَخِلْفَةً (2)

آنے والا کر دیاہے۔

حضرت عطاء رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهُ كَا قُول ہے كہ پہلى آيت ميں إختلاف ہے مرادنوروظلمت، كى اورزيا دتى ہے۔

کسی نے کیاخوب کہاہے: _

ياراقد الليل مسرورا باوله ان الحوادث قد تطرقن اسحارا

لاتفرحن بليل طاب اوله فرب اخر ليل اجج النارا

﴿1﴾ اےرات کے ابتدائی حصد میں خوش خوش سونے والے! بھی صبح کومصائب بھی نازل ہوجایا کرتے ہیں۔

﴿2﴾رات کے پہلے بہری یا کیزگی سے خوش نہ ہو، رات کے بہت سے آخری حصے جہنم کے شعلوں کو بھڑ کا دیتے ہیں۔

دوسراشاعر کہتاہے: _

ان الليالي للانام مناهل تطوى و تنشر دونها الاعمار

فقصارهن من الهموم طويلة وطوالهن مع السرور قصار

• ستوجمهٔ کنز الایمان: بشک آسانون اورزمین کی پیدائش اوردات اوردن کی باجم بدلیون مین نشانیان بین - (پ٤٠١ لِ عمران: ١٩٠)

2.....ت**ر جمهُ کنز الایمان: اوروبی ہے جس نے رات اور دن کی برلی رکھی ۔ (پ۹۱، الفرقان: ۲۲)**

كاشفة القلوب

﴿1﴾ بشک راتیں لوگوں کی منزل ہیں علاوہ ازیں ان کی عمریں لیبٹی اور پھیلائی جارہی ہیں۔

﴿2﴾ چیموٹی راتیں غموں کی وجہ سے طویل ہو جاتی ہیں اور طویل راتیں مسرت کی وجہ سے چیموٹی معلوم ہوتی ہیں۔

اورالله تعالى نے غور وفكر كرنے والوں كى تعريف كى ، چنانچ فر مانِ الهي ہے:

الَّذِيْنَ يَذُكُرُونَ اللهَ قِيلًا وَقَعُودًا وَعَلَيْ جُنُوبِهِمُ

وَيَتَفَكَّرُ وْنَ فِي خُلْقِ السَّلْمُوتِ وَالْأَرْضِ مَّرَبَّنَا

مَاخَكَقُتَ هٰذَابَاطِلًا ۚ (1)

بدہ لوگ ہیں جو کھڑے ہوئے بیٹھے ہوئے اور پہلو کے بل لیٹے ہوئے

الله كويادكرتے بين اورزين وآسان كى پيدائش مين غوروفكركرتے بين

(اور کہتے ہیں)اے ہمارے پروردگارتونے ان کو بے فائدہ بیدائہیں کیا۔

حضرت ابن عباس رَضِيَ اللَّهُ عَنهُمَا مِهِ مروى ہے كہ بچھلوگوں نے الله تعالىٰ كى ذات وصفات ميں غور وفكر كيا تو حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمايا: ' مخلوقِ خدا كے احوال ميں غور وفكر كرو، الله كى ذات ميں غور وفكر نہ كروكيونكم اس كى بے مثال قدرت برقاد زنہيں ہو سكتے ''(2)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے مروی ہے کہ ایک دن آپ ایک ایسی جماعت کے پاس گئے جوغور وفکر میں ڈو بی ہوئی مخصی ، آپ نے بوچھا: کیابات ہے تم بولتے کیوں نہیں ہو؟ انہوں نے جواب دیا ہم اللّه تعالیٰ کے بارے میں غور وفکر کررہے ہیں ، آپ نے فر مایا: اچھا! لیکن مخلوق خدا میں غور وفکر کرو، خالق کا کنات کی ذات میں غور وفکر مت کرو، پھر آپ نے فر مایا: مغرب میں ایک سفید براق نور انی زمین ہے ، سورج کا وہاں تک جیالیس دنوں کا سفر ہے ، وہاں اللّه تعالیٰ نے ایک مخلوق پیدا فر مائی ہے ، وہ جب سے پیدا ہوئے ہیں انہوں نے ایک لمح بھی اللّه تعالیٰ کی نافر مائی نہیں کی ، لوگوں نے بوچھا: حضور!

سستر جمه کنز الایمان: جوالله کی یاد کرتے ہیں کھڑے اور بیٹھے اور کروٹ پر لیٹے اور آسانوں اور زمین کی پیدائش میں غور کرتے ہیں اے ربّ ہمارے تونے یہ بے کارند بنایا۔ (ب٤٠١ با عسران: ٩٩١)

^{2} كنزالعمال، كتاب الاخلاق، باب التفكر، ٢/٧٤، الجزء الثالث، الحديث ٣٠٧٣ ماخوذاً

ان میں شیطان کا گزرنہیں ہے؟ آپ نے فرمایا: انہیں شیطان کی پیدائش کاعلم ہی نہیں، پوچھا گیا: وہ آ دم عَلَيْهِ السَّكرم كی اولاد میں سے ہیں؟ آپ نے فرمایا: انہیں تو آ دم عَلَيْهِ السَّكرم كی پیدائش كا بھی علم نہیں ہے۔ (1)

حضرت عطاء رَحْمَةُ اللهِ عَليْه عدم وى به كه ايك دن مين اورعبيد بن عمير حضرت عائشه رَضِى اللهُ عَنْهَا كى خدمت مين حاضر ہوئے ، آپ كے اور ہمارے درميان پرده پر اہوا تھا، انہوں نے پوچھا: عبيد! تم ہمارى ملا قات كو كيون نہيں آتے ؟ عبيد نے كہا: مين حضور صَلَّى اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم كاس فر مان كى وجہ سے دير سے حاضر ہوتا ہوں كه حضور صَلَّى اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم نَع بير نے كہا: مين حضور صَلَّى اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم نَع بير بولے: آپ ہمين حضور صَلَّى اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم نَع بير بولے: آپ ہمين حضور صَلَّى اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم سے مشاہده كى ہوئى منفر د بات بناك منفر د بات بناك ميں حضرت عائشہ وَضِى اللهُ عَنْهَ رو پر ين اور فر ما يا: حضور صَلَّى اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم كَى ہم بات منفر وَتَى ۔

ایک مرتبہ حضور صَلّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلّم رات کومیرے ہاں تشریف لائے اور میرے ساتھ آ رام فرما ہوئے ، تھوڑی دیر کے بعد فرمایا کہ مجھے اجازت دوتا کہ میں الله تعالیٰ کی عبادت کروں۔ چنا نچہ آ پ ایک مشکیزہ کی طرف گئے ، وضوفر مایا اور نماز میں کھڑے ہوگئے ۔ نماز شروع کرتے ہی آ پ نے رونا شروع کیا یہاں تک کہ آ پ کی مبارک داڑھی آ نسووں سے تر ہوگئی ، پھر سجدہ کیا یہاں تک کہ روتے روتے زمین گیلی ہوگئی ، سلام کے بعد آ پ پہلو کے بل لیٹ گئے تا آ نکہ حضرتِ بلال دَحِی الله عَنْه نے شن کی اذان دے دی اور آ پ کونماز کے لئے بلایا اور عرض کی: یارسول الله! آ پ کس لئے روتے ہیں حالانکہ الله عالیٰ نے آ پ کے سب آ پ کے اگلوں اور پچھلوں کی خطا کیں معاف فرما کیں ۔ آ پ نے فرمایا: افسوس! بلال تم مجھرو نے سے روکتے ہو حالانکہ الله تعالیٰ نے آج کی رات مجھ پریہ آ بیت نازل فرمائی ہے:

بے شک زمین وآسان کی پیدائش اور رات دن کے اختلاف میں

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّلْمُوتِ وَالْأَنْمِضِ وَاخْتِلَافِ

عقلمندوں کے لیےنشانیاں ہیں۔

الَّيْلِوَالنَّهَامِلاليَّتِلِاُولِالْكِلْبَابِ (2)

پھرارشا دفر مایا:اس شخص پرافسوس ہے! جس نے بیآیت پڑھی اوراس میں غور وفکرنہیں کیا۔⁽³⁾

1 ٤٤٢/٤،...العظمة لابي الشيخ الاصبهاني،٤/٢/٤

ے ۔۔۔۔۔ تو جمع کنز الایمان: بے شک آسانوں اورزمین کی پیدائش اوررات اورون کی باہم بدلیوں میں نشانیاں ہیں تقلمندوں کے لئے۔۔۔ (۹ عمران: ۹۰)

3ابن حبان ، كتاب الرقائق ، باب التوبة ، ٢/٨، الحديث ٩ ٦١٩

امام اَوزاعی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے پوچھاگیا کہان آیات میں غور وفکر کرنے سے کیا مراد ہے؟ تو انہوں نے جواب دیا:ان آیات کو پڑھواور پھرانہیں سجھنے کی کوشش کرو۔

محرین واسع رَحْمَةُ اللهِ عَلَیْه سے مروی ہے کہ بھرہ کا ایک شخص حضرت ِ ابوذَ ررَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کی وفات کے بعدان کی زوجہ محتر مہ کی خدمت میں حاضر ہوااوران سے حضرت ِ ابوذَ ررَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کی عبادت کے متعلق بوچھا: ان کی زوجہ نے جواب دیا کہ وہ سارا دن گھر کے کونے میں بیٹھے غور وفکر کیا کرتے تھے۔

حضرتِ حسن رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ ايك لمحه كاغور وفكررات بھرى عبادت سے بہتر ہے، حضرتِ فضيل كا قول ہے كہ غور وفكر ايك آئينہ ہے جو تحقی تیرى نيكياں اور برائياں دكھا تاہے۔

حضرتِ ابراہیم رَحْمَةُ اللهِ عَلیْه سے کہا گیا کہ آپ بہت زیادہ غور وفکر کرتے ہیں، انہوں نے کہا کہ غور وفکر عقل کا مغزہ۔ حضرتِ شفیان بن عُیکینَهٔ رَحْمَةُ اللهِ عَلیْه شاعر کے اس شعر کوا کثر بطورِ تمثیل پیش کیا کرتے تھے:

اذا المرء كانت له فكرة ففي كل شيء له عبرة

🖈 جب آ دمی میں غور وفکر کرنے کا مادہ ہوتو اسے ہر چیز میں عبر تیں نظر آتی ہیں۔

حضرت ِطاوُس َ حُمَةُ اللهِ عَلَيْه ہے مروی ہے کہ حواریوں نے حضرت عِیسی عَلَیْهِ السَّلام ہے کہا کہ آج روئے زمین پر آپ جبیبا کوئی اور بھی ہے؟ آپ نے فرمایا: جس کا بولنا ذکرِ اللی میں ہو، جس کی خاموثی غور وفکر میں اور جس کی نگاہ، نگاہِ عبرت ہو، وہ مجھ جبیبا ہے۔

حضرت ِ حسن رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهُ كَا قُول ہے كہ جس شخص كى گفتگو حكيمان نہيں وہ لغوہے، جس كى خاموثى غور وفكر كى خاموثى نہيں ہے وہ بھول ہے اور جس كى نگاہ نگاہ عبرت نہيں وہ بيہودہ ہے فر مانِ اللى ہے:

البية ميں اپنی نشانيوں سے زمين پر ناحق تكبر كرنے والوں كو

سَاصُرِفُ عَنْ البِتِيَ الَّذِينَ يَتُكَبَّرُونَ فِي

يھير دول گا۔

الْاَرُمُ ضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ (1)

السنة وجمه كنز الايمان: اورمين اين آيتون عن أنبين پيردول كاجوز مين مين ناحق اين براني حيائي سي سين مين - (ب٩٠ الاعراف : ١٤٦)

حضرتِ حسن دَ حَمَدُ اللهِ عَليْه كَهِ عِين كَهِ إِس آيت كَ معنى بيه بين كه مين اُن كِ دلوں مين غور وفكر كرنے كى صلاحيت بي نہيں رہنے دوں گا۔

حضرت ابوسعید خدری رَضِیَ اللهُ عَنُه سے مروی ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ اپنی آنکھوں کوعبادت کا حصہ دو، عرض کی گئی: حضور! ان کا عبادت سے کیا حصہ ہے؟ آپ نے ارشاد فرمایا: قرآنِ مجید کودیکھنا، اس میں غوروفکر کرنا اور اس کے عائبات میں سبق حاصل کرنے والی نگاہ سے غوروفوض کرنا۔ (1)

مکہ معظمہ کے قریب جنگل میں رہنے والی عورت سے مروی ہے: اس نے کہا: اگر نیکوں کے دل غور وفکر میں ڈوب کرغیب کے پردوں میں پوشیدہ ان انعامات کود کیھ لیس جن کواللّٰہ تعالیٰ نے ان کے لئے تیار کیا ہے توان کی دنیاوی زندگی ان پر بھاری ہوجائے اور دنیاان کی نظروں میں بالکل حقیر ہوجائے۔

حضرت ِلقمان تنہائی میں بیٹھ کر بہت دریتک غور وفکر میں ڈو بےرہتے ،ان کا خادِم وہاں سے گزرتا اور کہتا کہ آپ ہمیشہ تنہا بیٹھے رہتے ہیں، اگر لوگوں کے ساتھ بیٹھا کریں تو آپ ان سے الفت حاصل کریں، آپ جواب میں فرماتے کہ طویل تنہائی دائمی غور وفکر عطا کرتی ہے اور طویل تفکر جنت کاراستہ ہے۔

حضرت وہب بن منبہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ جس شخص کاغور وفکر بڑھ جاتا ہے اسے علم عطا ہوتا ہے اور جسے علم عطا ہوتا ہے۔ علم عطا ہوتا ہے۔

حضرت عمر بن عبدالعزيز دَخِي اللهُ عَنْه كا قول ہے كه الله تعالى كى نعمتوں ميں غور وفكر كرناسب سے افضل عبادت

حضرتِ عبدالله بن مبارک رَضِیَ اللهٔ عَنُه نے ایک دن تہل بن علی رَضِیَ اللهُ عَنُه کوخاموش اور شفکر د کیو کیھا: کہاں تک پہنچ ہو؟ وہ بولے کہ بل صراط کے متعلق غور وفکر کرر ہا ہوں۔

حضرتِ بشررَ حُمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كما گرلوگ الله تعالى كى عظمت ميں غور وفكر كريں تو بھى بھى الله تعالى كى نافر مانى نه كريں۔

۱۰۰۰۰ شعب الايمان ، التاسع عشر من شعب الإيمان، باب في تعظيم القرآن، ۲۸/۲ ، الحديث ۲۲۲۲

حضرتِ ابن عباس رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا كا قول ہے كہاليى دوركعتيس جوحضورِ قلب اورانتها كَى غور وَفكر سے پڑھى جائيں وہ سارى رات كى بےحضورِ قلب عبادت سے افضل ہيں۔

حضرت ابوشُر شُحَدَ حُمَةُ اللهِ عَليْه چلے جارہے تھے کہ اچا نک جا در لپیٹ کر بیٹھ گئے اور رونا شروع کر دیا، رونے کا سبب دریا فت کیا گیا تو انہوں نے کہا: میں اپنی گزشتہ عمر قلیل نیکیوں اور موت کے جلد آنے پرغور کرکے رور ہا ہوں۔

ابوسلیمان کے مَدُّاللَّهِ عَلَیْه کا قول ہے: آئکھوں کورونے کا اور دلوں کوغور وفکر کرنے کا عادی بناؤ، مزید فرمایا: دنیا کے بارے میں غور وفکر آخرت کے لئے ایک پردہ ہے اور نیکوں کے لئے عذا ب ہے کین آخرت کے تعلق غور وفکر علم کا وارث بنا تا ہے اور دلوں کو زندہ کرتا ہے۔

حضرتِ حاتم رَ حُـمَةُ اللهِ عَليُه كا قول ہے كه عبرت حاصل كرنے سے علم برد هتا ہے ، ذكر سے محبت برد هتى ہے اورغور وفكر سے خوف خدا برد هتا ہے۔

حضرت ابن عباس رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا کا قول ہے کہ نیکیوں میں غور وفکر نیکیوں کی ترغیب دیتا ہے اور گنا ہوں پر پشیمانی گناہ چھوڑنے پر آمادہ کرتی ہے۔

روایت ہے،اللّٰہ تعالیٰ نے اپنی بعض کتابوں میں فر مایا ہے کہ میں ہرعالم ودانشمندکا،کلام نہیں اس کی نیت اور محبت دیکھتا ہوں،اگراس کی نیت ومحبت میرے لئے ہوتی ہے تو میں اس کی خاموثی کوغور وفکر کی خاموثی ،اس کی گفتگو کو حمد قرار دیتا ہوں،اگر چہوہ خاموش بیٹھا ہوا ہو۔

حضرت ِ حسن رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ تقلمند ہميشہ ذكر سے فكر كى جانب اورغور وفكر سے ذكرِ خدا كى جانب رُجوع ہوتے ہیں یہاں تک كدان كے دل بولتے ہیں اورعلم وحكمت كى باتیں كرتے ہیں۔

اسطی بن خلف رَحْمَهُ اللهِ عَلَیْه کہتے ہیں کہ حضر سے داؤد طائی رَحْمَهُ اللهِ عَلَیْه ایک جا ندنی رات میں جھت پر ہیٹھے الله تعالیٰ کے عجائباتِ ارض وسامیں غور وفکر کر رہے تھے اور وہ آسان کی طرف دیکھ کررور ہے تھے یہاں تک کہ بے خودی کی حالت میں ہمسایہ کے گھر میں گر پڑے ، مکان کا مالک اپنے بستر سے بر ہن تلوار لیکر جھیٹا، وہ سمجھا شاید کوئی چور آگیا ہے لیکن جب اس نے آپ کود یکھا تو تلوار نیام میں کر کے بوچھا: آپ کوکسی نے جھت سے دَھکا دیا ہے؟ آپ نے فرمایا:

مجھےمعلوم نہیں۔

حضرت ِ جبنیدرَ حُمَةُ اللهِ عَلیُه کا قول ہے کہ بہترین اور عدہ مجلس مجلسِ غوروفکر ہے جوتو حید کے میدان میں انجام دی جائے اور محبت کے سمندر سے محبت کے جام پینا بہترین شراب اور معرفت کی معطر ہواؤں سے لطف اندوز ہوناسب ہواؤں سے بہتر ہے اور الله تعالیٰ سے اَجرحسن کی اُمیدر کھنا عمدگی میں بے مثال ہے۔

پیرفر مایا: وہ دل کیسا بہترین ہے جو اِن مجالس کا شناسا ہے اوراسے خوشنجری ہوجومحبت کے ان لذیذترین جاموں سے کام ودہن کی تواضع کرتا ہے۔

امامِ شافعی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ گفتگو پرخاموثی سے اور حصولِ علم کے لئے غور وفکر کرنے سے إمداد طلب کرو۔

مزید فرمایا: کامول کے بارے میں اچھی طرح سوچ سمجھ لینا دھوکہ سے بچا تا ہے اور عمدہ رائے شرمندگی اور حد سے زیادہ بڑھ جانے سے بچالیتی ہے، کامول میں نفکر اور غور وخوض ہوشیاری پیدا کرتا ہے، داناؤں کے مشورے اور ذہانت نفس کی پائیداری اور بصیرت کی قوت ہیں لہذا ارادہ کرنے سے پہلے سوچ، کام کرنے سے پہلے غور وفکر کر اور قبل ازوقت مشورہ حاصل کر۔

مزيد فرمايا كه فضائل حيارين:

اب 44

﴿ شدائدِ مرگ ﴾

حضرت حسن رَضِيَ اللَّهُ عَنُه ہے مروی ہے کہ حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِي موت اورا سَكِو ُ كھ در دكا تذكره فرماتے موئے ارشا دفر مایا کہ بید وُ كھ در دتلوار سے لگنے والی تین سوچوٹوں کے برابر ہوتا ہے۔

حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے موت كى شدت كے متعلق بوچھا گيا تو آپ نے ارشادفر مايا كه آسان ترين موت أون ميں كانے دار ٹہنى كى طرح ہے اسے جب كھينچا جائے گا تو اسكے ساتھ ضرور كچھانہ كچھاون بھى كھينچى چلى آئے گا۔ (2)
حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ايك مريض كے پاس تشريف لائے اور فر مايا: ميں جانتا ہوں كہ وہ س حال ميں ہے اور پسيندا سے س لئے آر ہا ہے؟ دردوا كم موت كى شدت وحدت كى وجہ سے ہے۔ (3)

حضرت علی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ لوگوں کو جہاد پراُ بھارتے اور فرماتے کہا گرتم جہاد میں شمولیت اختیار نہ کرو گے تب بھی مرنا ضرور ہے، بخدا! مجھے لواروں کے ایک ہزاروار بستر پرمر نے سے زیادہ آسان نظر آتے ہیں۔

امام اوزاعی رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے: ہمارے علم میں بیہ بات آئی ہے کہ مردہ قبر سے اٹھنے کے وقت تک موت کی تاخی محسوں کرتارہے گا۔

حضرت شداد بن اوس کے مُدَاللهِ علیّه کا قول ہے کہ موت مومن کے لئے دنیا اور آخرت کے خوفوں میں سب سے زیادہ حوصلہ شکن خوف ہے، وہ آریوں سے چر جانے، قینچیوں سے اعضاء کاٹ دیئے جانے اور دیگوں میں اُلینے سے بھی زیادہ سخت ہے، اگر کوئی مردہ زندہ ہوکر دنیا والوں کوموت کی تخی کی خبر دیدے تو وہ زندگی کے لطف کو بھول جائیں اور بھی آرام کی نیندنہ سوئیں۔

- 1الزهد لابن مبارك، باب في طلب الحلال، ص ٢١٩، الحديث ٠٦٦
- 2 كنزالعمال، كتاب الموت، الفصل الاول ، ٢٣٩/٨ ، الجزء الخامس عشر، الحديث ٢١٦٧ ٤
 - 3المعجم الكبير، ٢٦٩/٦ ، الحديث ٦١٨٥ ملتقطا

مكاشفة القلوب }

زید بن اسلم رَحْمَهُ اللهِ عَلَیْه این باپ سے روایت کرتے ہیں کہ جب مومن کسی این عمل کی وجہ سے کسی درجہ کوئیس پاسکتا تو موت کے وقت اسے سکرات اور اس کے دُکھ سے واسطہ پڑتا ہے تا کہ وہ اس طرح جنت کے اس آخری درجہ کو بھی حاصل کرے جسے وہ اعمال سے حاصل نہیں کر سکا ، اگر کسی کا فر کے کچھا چھے اعمال ہوتے ہیں اور دنیا میں اسے اس کا بدلہ حاصل نہیں ہوسکا ہے تو اس پرموت کی شدت کو ہلکا کر دیا جاتا ہے تا کہ وہ ان اچھے کا موں کا بدلہ پالے اور مرنے کے بعد سیدھا جہنم میں جائے۔

ایک صاحب اکثر مریضوں سے موت کی شدت کے متعلق گفتگو کیا کرتے تھے، جب وہ خود مرض الموت میں مبتلا ہوئے تولوگوں نے ان سے موت کی شدت کے بارے میں سوال کیا، وہ کہنے لگا: ایبامحسوس ہوتا ہے جیسے آسان زمین مل گئے ہیں اور میری روح سوئی کے ناکے سے نکل رہی ہے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ مرگ مفاجات مومن کے لئے راحت اور گنہ گار کے لئے باعث زحمت ہے۔ (1)
حضرت کھول رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ہے مروی ہے: حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: اگرمیت کے بالوں میں سے ایک بال زمین و آسان میں رہنے والوں پر رکھ دیا جائے توسب الله تعالیٰ کے إذن سے مرجائیں کیونکہ میت کے ہرایک بال میں موت ہوتی ہے اور موت جب کسی چیز پرطاری ہوتی ہے تو وہ چیز فنا ہوجاتی ہے۔ (2) مروی ہے کہ اگرموت کے درد کا ایک قطرہ دنیا کے پہاڑوں پر رکھ دیا جائے توسب پہاڑ پکھل جائیں۔

انبیاء عَلَیْهِمُ السَّلام پرِموت بہت آسان کر دی جاتی ہے:

مروی ہے کہ جب حضرتِ ابراہیم عَلَیْه السَّلام کا انتقال ہوا تواللّٰه تعالیٰ نے فر مایا: اے میر نے لیل! تم نے موت کو کیسا پایا؟ اُنہوں نے عرض کی: جیسے شیخ کو گیلی اون میں ڈال کر کھینچا جائے، رب تعالیٰ نے فر مایا:''ہم نے تمہارے لئے موت کو بہت آسان کر دیا ہے۔(تونے تب بھی اس کی پیشدت محسوں کی ہے)۔

مروی ہے کہ حضرتِ موسیٰ عَلَیْهِ السَّلام کی روح بارگاہِ رب العزت میں حاضر ہوئی توربِ جلیل نے فر مایا: موسی! تم

- 1مسند احمد ، مسند السيدة عائشه رضى الله عنها، ٩/٢٦، الحديث ٢٥٠٩٦
- اسسبستان الواعظین وریاض السامعین لابن جوزی، ص۱۳۲ و طبقات الشافیة الکبری، ۲/۲ و بریقة محمودیة فی
 شرح طریقة محمدیة ، ۲/۶ ۲ والتذکرة للقرطبی، باب ما جاء ان للموت سکرات...الخ، ص۲٥

نے موت کوکیسا پایا؟ حضرت ِموکی عَلَیْهِ السَّلام نے عرض کی: جیسے چڑیا جال میں پھنس جاتی ہے اور وہ مرتی نہیں بلکہ آسائش طلب کرتی ہے اور ندر ہائی پاتی ہے کہ اُڑ جائے (یہی حال دم نزع انسان کا ہوتا ہے)۔

یہ مروی ہے کہ انہوں نے کہا: میں نے ایسا در دمحسوس کیا جیسے زندہ بکری کی قصاب کھال اُ تارر ہاہو۔
مروی ہے کہ موت کے وقت حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے قریب پانی کا پیالہ رکھا تھا، آ باس میں دستِ اَطهر ڈبو
کر بیبیثانی پر ملتے اور فر ماتے: اے الله! مجھ پرموت کی تختیوں کو آسان فر ما اور حضرت خاتونِ جنت دَضِیَ اللهُ عَنهَ کھڑی رور ہی تھیں، ہائے میرے اہا کی تکلیف! اور آ پ صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم فر مار ہے تھے کہ تیرے باپ پر آج کے بعد کوئی دُ کھ وار ذہیں ہوگا۔ (1)

حضرت ِعمردَضِیَ اللَّهُ عَنْهُ نے حضرتِ کعب دَضِیَ اللَّهُ عَنْهُ سے کہا: ہمیں موت کی شدت کے متعلق بتاؤ، حضرتِ کعب دَضِیَ اللَّهُ عَنْهُ نے کہا: امیر المونین! موت ایسی ٹہنی کی طرح ہے جس میں بہت زیادہ کا نٹے ہوں اوروہ انسان کے جسم میں داخل ہوگئی ہواوراس کے ہر ہر کا نٹے نے ہررگ میں جگہ پکڑلی ہو پھر اسے ایک آ دمی انتہائی تختی سے کھنچے، تو کچھ باہر آ جائے اور باقی جسم میں باقی رہ جائے۔

فر مانِ نبی صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے کہ بندہ موت کی تختیوں کو بیاری سمجھ کران کا علاج کرتا ہے مگراس کے جسم کے اعضاء ایک دوسرے سے وَ داع ہوتے ہیں اور کہتے ہیں کہ تجھ پرسلام ہو، اب ہم قیامت تک کے لئے ایک دوسرے سے جدا ہورہے ہیں۔ (2)

'' مذکورہ بالااحوال' ان مقدس ہستیوں کے تھے جواللہ تعالی کے دوست اور محبوب ہیں ،ہم جو گنا ہوں سے آلودہ ہیں ،ہم ہوگئا ہوں سے آلودہ ہیں ،ہم اری کیا حالت ہوگی! ہمارے لئے تو موت کی ختیوں کے علاوہ اور بھی آفتیں ہوں گی۔ موت کی تین مصبتیں ہوتی ہیں :

يَيْنَ شَ : مجلس اَلَمْ دَيَدَ حَالَةِ لَمِيَّة (وعوتِ اسلامی)

^{1}ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء في ذكر مرض...الخ، ٢٨٢/٢، الحديث ١٦٢٣ ملخصا و بخاري، كتاب المغازي، باب مرض النبي صلى الله تعالى عليه و سلم...الخ، ٢٠/٣، الحديث ٢٦٤ ٤

النحمال، كتاب المزارعة من قسم الأفعال، الباب الثاني في أمور قبل الدفن، الفصل الأول في المحتضر...الخ،
 ٢٣٩/٨ الجزء الخامس عشر، الحديث ٢٢١٧٦ و رساله قشيريه ، باب احوالهم عند الخروج من الدنيا، ص ٣٣٤

🐵 پېلى: نزع كى تكليف، جوابھى مذكور ہوچكى ہے۔

۔۔۔۔۔ دوسرے:عزرائیل کی صورت کا مشاہدہ اور اسے دیکھ کردل میں انتہائی خوف و دہشت کا پیدا ہونا، اگر بے پناہ ہمت والا آ دمی بھی ملک الموت کی اس صورت کو دیھے لے جووہ فاسق و فاجر کی موت کے وقت لے کر آتے ہیں تو اسے تابیخ کی ندر ہے۔ (1)

مروی ہے کہ حضرت ابرا ہیم عَلَیْہ السَّلام نے ملک الموت سے کہا: کیاتم مجھے اپنی وہ صورت دکھا سکتے ہوجس میں تم گنہگاروں کی روح قبض کرنے کو جاتے ہو؟ ملک الموت بولے: آپ میں دیکھنے کی تاب نہیں ہے۔ آپ نے فرمایا: میں دیکھلوں گاچنا نجے ملک الموت نے کہا: تھوڑی سی دیر دوسری طرف توجہ سیجئے۔

جب آپ نے پچھ دیر کے بعد دیکھا توایک کالاسیاہ آ دمی جس کے رونگٹے کھڑے ہوئے تھے، بدبو کے تھے، سیاہ کیڑے ہوئے اور دُھواں اٹھ رہا تھا، سامنے نظر آیا، حضرت ابراہیم عَلیْدِ السَّلام یہ منظر دیکھ کر بیہوش ہوگئے، جب آپ کو ہوش آیا تو دیکھا کہ ملک الموت سابقة شکل میں بیٹھے ہوئے تھے۔ آپ نے فرمایا:

اگر فاسق و فاجر کے لئے موت کی اور کوئی تختی نہ ہوتب بھی صرف تمہاری صورت دیکھنا ہی ان کے لئے بہت بڑا عذاب ہے۔

حضرت ابو ہر رر ورضی الله عنه سے مروی ہے؛ حضرت واؤد علیه السّدہ انتہائی غیرت مند جوان تھے، جب آپ باہر تشریف لے جاتے تو دروازے بند کر جاتے ، ایک دن آپ گھر کے دروازے بند کر کے باہر تشریف لے گئے۔ آپ کی زوجہ محتر مدنے دیکھا کہ حن میں ایک آ دمی کھڑا ہوا تھا، وہ بولیں نہ جانے اس کو کس نے گھر میں داخل ہونے دیا ہے، اگر داؤد عکیه السّادم آگئے تو ضرورانہیں دکھ پہنچ گا۔ پھر حضرت داؤد عکیه السّادم تشریف لائے اوراسے کھڑا دیکھ کر بوچھا: کون ہو؟ اس نے کہا: میں وہ ہول جو با دشا ہول سے بھی نہیں ڈرتا، نہ کوئی پر دہ میری راہ میں حاکل ہوتا ہے۔ حضرت داؤد عکیه السّادم خاموش کھڑے کے کھڑے دہ گئے اور فرمایا: تب تو تم ملک الموت ہو۔ (2)

- س.موت کی تیسری مصیبت کابیان آ گے صفحہ نمبر 337 پر ہے۔علمیه
- 2مسند احمد، مسند ابي هريرة ،٣٠ ، ٤٠ ، الحديث ٩٤٣٢

مروی ہے کہ حضرت عیسیٰ عَدَیْدِ السَّلام کا ایک انسانی کھوپڑی کے قریب سے گزرہوا، آپ نے اسے پاؤں سے کھوٹک دیااور فرمایا: تککم خدا مجھ سے بات کر، کھوپڑی بولی: اے روح الله! میں فلاں فلاں زمانے کا بادشاہ تھا، ایک مرتبہ میں اپنے ملک میں تاج سر پرر کھے، لشکر کے گھیرے میں تخت پر بیٹھا ہوا تھا، اچپا نک ملک الموت میرے سامنے آگیا جسے دیکھ کرمیرا ہرعضو معطل ہوگیا اور میری روح پرواز کرگئی۔ پس اس اجتماع میں کیا رکھا تھا، جدائی تو سامنے کھڑی تھی اور اس اُنسی ومحبت میں کیا تھا، وحشت ہی وحشت اور تنہائی ہی تنہائی تھی، یہ دھوکہ ہے جو نافر مانوں نے ڈال دیا جو اطاعت مندوں کے لئے نصیحت ہے۔

یہ وہ آفت ہے جسے ہر گنہگار اور فرمانبر دار دیکھتا ہے۔ انبیائے کرام نے موت کے وقت صرف نزع کی تخی کو بیان فرمایا ہے، اس خوف ودہشت کا تذکرہ نہیں کیا جو ملک الموت کی صورت دیکھنے والے انسان پرطاری ہوتا ہے۔ اگر ملک الموت کی صورت کو کوئی رات کوخواب میں دیکھ لے تواسے بقیہ زندگی بسر کرنا اجیرن ہوجائے، چہ جائیکہ اسے موت کی تختی کے وقت ایسی ہیب ناک شکل میں دیکھے۔

الله تعالی کے فرما نبر داراور نیک لوگ ملک الموت کوانتهائی حسین وجیل شکل میں دیکھتے ہیں چنانچ حضرت عکرمہ حضرت ابن عباس (رَضِیَ الله عَنهُم) سے روایت کرتے ہیں کہ حضرت ابراہیم عَلیّه السَّلام بہت غیرت مندانسان سے مقرت ابن عبادت خانہ تھا، جب آپ باہر جاتے اسے بند کر جاتے ۔ ایک دن باہر سے تشریف لائے تو دیکھا کہ عبادت خانہ میں ایک آ دمی کھڑا ہے۔ آپ نے پوچھا: مجھے کس نے میرے گھر میں داخل کیا ہے؟ وہ بولا: اس کے عبادت خانہ میں ایک آ دمی کھڑا ہے۔ آپ نے پوچھا: مجھے کس نے میرے گھر میں داخل کیا ہے جواس مکان کا آپ ما لک نے ۔ آپ نے فرمایا: 'اس کا ما لک تو میں ہوں۔' اس نے کہا: مجھے اس نے داخل کیا ہے جواس مکان کا آپ سے اور مجھ سے زیادہ ما لک ہے۔ آپ نے پوچھا: کیا تم فرشتوں میں سے ہو؟ وہ بولا: ہاں! میں ملک الموت ہوں۔ آپ نے فرمایا: کیا تم مجھے اپنی وہ صورت دکھلا سکتے ہوجس شکل میں تم مومنوں کی روح کوقبض کرتے ہو؟ ملک الموت نے کہا: ہاں! آپ نے را دوسری طرف توجہ سے بھے۔

چند لمحے دوسری طرف متوجہ ہونے کے بعد آپ نے دوبارہ اس کی طرف دیکھا تو انہیں ایک حسین وجمیل جوان

نظرآیا جس کے چہرے پرنور برس رہاتھا،لباس انتہائی پاکیزہ پہنے اور اس سے خوشبو کی لیٹیں اٹھ رہی تھیں۔آپ نے بید منظر دیکھ کرفر مایا: اے عزرائیل!اگرمومن کوموت کے وقت اور کوئی انعام نہ ملے،صرف تمہاری صورت ہی و کیھنے کول جائے تو یہی کافی ہے اور بڑا انعام ہے۔

موت کے وقت ایک مصیبت محافظ فرشتوں کا مشاہدہ ہے۔حضرت وہیب دَ حُمَةُ الله عَلَیٰه سے مروی ہے کہ تمیں بین بین ملی ہے کہ جب بھی کوئی آ دمی مرتا ہے تو وہ مرنے سے پہلے'' نامہ اعمال'' لکھنے والے فرشتوں کا مشاہدہ کرتا ہے،اگر وہ آ دمی میں بہت ہی بہترین مجالس میں نیک ہوتا ہے تو وہ کہتے ہیں کہ الله تعالی تجھے ہماری طرف سے جزائے خیر دے، تو نے ہمیں بہت ہی بہترین مجالس میں بھلا یا اور بہت ہی نیک کام لکھنے کو دیئے۔

اورا گرمر نے والا گنهگار ہوتا ہے تو وہ کہتے ہیں کہ اللّٰہ تجھے ہماری طرف سے جزائے خیر نہ دے ہونے بہت ہی بری مجالس میں ہمیں بٹھلا یا اور گنا ہوں اور مخش کلام سننے پر مجبور کیا ،اللّٰہ تجھے بہتر جزانہ دے۔اس وقت انسان کی آ تکھیں کھلی کے کھلی رہ جاتی ہیں اور وہ کسی چیز کونہیں دیکھ یا تا سوائے اللّٰہ تعالیٰ کے فرشتوں کے۔

انت تیسری آفت گنهگارول کا جہنم میں اپنے ٹھکانے کو دیکھنا اور وہاں جانے سے پہلے ہی اِنتہائی خوفز دہ ہوجانا ہے، اس وقت وہ نزع کے عالم میں ہوتا ہے، اس کے اعضائے بدن ڈھیلے پڑجاتے ہیں اور اس کی روح نکلنے کو تیار ہوتی ہے۔ مگر وہ ملک الموت کی آواز کے (جودو بثارتوں میں سے ایک پر شتمل ہوتی ہے) بغیر نہیں نکل سکتی ، یا تو یہ کہ اے دھمن خدا! مجھے جہنم کی بثارت ہو، اس لئے عقامند موت کے وقت سے بہت خوفز دہ رہتے ہیں۔

نبی اکرم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا فر مان ہے کہ تم میں سے کوئی شخص بھی اس وقت تک دنیا سے نہیں نکاتا جب تک کہ اپناٹھ کانا ،خواہ وہ جنت میں ہویا جہنم میں ہو، دیکھ نہ لے۔ ⁽¹⁾

.....☆.....☆......☆

^{●} كتاب ذكر الموت لابن أبي الدنيا ، ٥/ ٤ ٩ ٤ ، الحديث ٣٠٣



كُلات و سوالاتِ قبر ﴿

فرمانِ نبوی ہے: جب میت کوقبر میں رکھاجا تا ہے تو قبر کہتی ہے: اے انسان! تجھ پرافسوں ہے تجھے میرے بارے میں کس چیز نے دھو کہ میں ڈالا تھا؟ کیا تجھے معلوم نہیں تھا کہ میں آ زمائشوں، تاریکیوں، تنہائی اور کیڑے مکوڑوں کا گھر ہوں، جب تو مجھ پر سے آگے پیچھے قدم رکھتا گزرا کرتا تھا تو تجھے کونساغرور گھیرے ہوتا تھا؟ اگر میت نیک ہوتی ہوتا سے کی طرف سے کوئی جواب دیتا ہے کیا تجھے معلوم نہیں ہے بیشخص نیکیوں کا تھم دیتا اور برائیوں سے رکھا کرتا تھا۔ قبر کہتی ہوجاؤں گی، اس کا جسم نورانی بن جائیگا اور اس کی روح اللّٰہ تعالیٰ کے قرب رحمت میں جائے گی۔ (1)

عبید بن عمیر اللیثی رَحْمَهٔ اللهِ عَلیْه ہے مروی ہے کہ جب کوئی شخص مرتا ہے تو زمین کا وہ ٹکڑا جس میں اس نے دفن ہونا ہوتا ہے ، ندا کرتا ہے کہ میں تاریکی اور تنہائی کا گھر ہوں ، اگر تواپی زندگی میں نیک عمل کرتار ہا تو میں آج تجھ پر سرا پا رحمت بن جاؤں گا اور اگر تو نافر مان تھا تو میں آج تیرے لئے سز ابن جاؤں گا۔ میں وہ ہوں کہ جو مجھ میں حق کا فر ما نبر دار بن کر آتا ہے وہ خوش ہوکر باہر نکلتا ہے اور جو نافر مان بن کر آتا ہے وہ ذلیل ہوکر باہر نکلتا ہے۔

حضرت محمد بن بیخی و خمهٔ اللهِ عَلیْه کہتے ہیں کہ مجھ تک بیروایت پہنچی ہے کہ جب آ دمی کو قبر میں رکھا جا تا ہے اوراسے عذاب دیا جا تا ہے تواس کے قریبی مردے کہتے ہیں: اے اپنے بھائیوں اور ہمسائیوں کے بعد دنیا میں رہنے والے! کیا تو نے ہمارے جانے سے کوئی تصیحت حاصل نہ کی؟ اور تیرے سامنے ہمارام کر قبروں میں دفن ہوجانا کوئی قابلِ غور بات نہیں؟ تو نے ہماری موت سے ہمارے اعمال ختم ہوتے دیکھے؟ لیکن تو زندہ رہا اور تجھے مل کرنے کی مہلت دی گئی ، مگر تو نے اس مہلت کوئیمت نہ جانا اور نیک اعمال نہ کئے اور اس سے زمین کا وہ گلڑا کہتا ہے: اے دنیا کی ظاہری پر اِ ترانے نے اس مہلت کوئیمت نہ جانا اور نیک اعمال نہ کئے اور اس سے زمین کا وہ گلڑا کہتا ہے: اے دنیا کی ظاہری پر اِ ترانے

1المعجم الكبير، ٢٢/٣٧٧، الحديث ٩٤٢

۔ والے! تونے اپنے ان رشتہ داروں سے عبرت کیوں نہ حاصل کی جود نیاو کی نعمتوں پر اِترایا کرتے تھے مگروہ تیرے سامنے میرے پیٹ میں گم ہو گئے ،ان کی موت انہیں قبروں میں لے آئی اور تونے انہیں کندھوں پرسواراس منزل کی طرف آتے دیکھا کہ جس سے کوئی را وِفرارنہیں ہے۔

یزیدرقاشی رَحْمَهُ اللهِ عَلیْه کا قول ہے کہ مجھے بیروایت ملی ہے: جب میت کوقبر میں رکھا جاتا ہے تواس کے اعمال جمع ہوجاتے ہیں، پھرالله تعالی انہیں قوتِ گویائی دیتا ہے اوروہ کہتے ہیں: اے قبر کے تنہا انسان! تیرے سب دوست اورعزیز تجھ سے جدا ہو گئے ہیں، آج ہمارے سواتیرا اورکوئی ساتھی نہ ہوگا۔

حضرت کعب رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے کہ جب نیک آدمی کو قبر میں رکھا جاتا ہے تو اس کے اعمالِ صالحہ ، نماز ، روزہ ، حج ، جہاد اور صدقہ وغیرہ اس کے پاس جمع ہوجاتے ہیں ، جب عذا ب کے فرشتے اس کے پیروں کی طرف سے آتے ہیں تو نماز کہتی ہے: اس سے دور رہو، تمہارا یہاں کوئی کا منہیں ، بیان پیروں پر کھڑا ہوکر اللّٰہ تعالیٰ کی لمبی لمبی عبادت کرتا تھا۔

پھروہ فرشتے سر کی طرف ہے آتے ہیں تو روزہ کہتا ہے: تمہارے لئے اس طرف کوئی راہ نہیں ہے کیونکہ دنیا میں اللہ تعالی کی خوشنو دی کے لئے اس نے بہت روزے رکھے اور طویل بھوک پیاس برداشت کی ، فرشتے اس کے جسم کے دوسرے حصول کی طرف ہے آتے ہیں تو جج اور جہاد کہتے ہیں کہ ہٹ جاؤ! اس نے اپنے جسم کود کھ میں ڈال کراللہ تعالی کی رضا کے لئے جج اور جہاد کیا تھالہٰ ذاتمہارے لئے بہال کوئی جگہیں ہے۔

پھر وہ ہاتھوں کی طرف ہے آتے ہیں تو صدقہ کہتا ہے: میرے دوست سے ہٹ جاؤ! ان ہاتھوں سے کتنے صدقات نکلے ہیں جو محض خوشنودی خدا کے لئے دیئے گئے اوران ہاتھوں سے نکل کر وہ بارگا و الٰہی ہیں مقبولیت کے درجے پر فائز ہوئے لہٰذا یہاں تمہارا کوئی کا منہیں ہے۔ پھراس میت کو کہا جاتا ہے کہ تیری زندگی اور موت دونوں بہترین ہیں اور رحت کے فرشتے اس کی قبر میں جنت کا فرش بچھاتے ہیں، اس کے لئے جنتی لباس لاتے ہیں، حدِ نگاہ تک اس کی قبر کوفراخ کردیا جاتا ہے اور جنت کی ایک قندیل اس کی قبر میں روشن کردی جاتی ہے جس سے وہ قیامت کے دن تک

روشنی حاصل کرتارہےگا۔

حضرت عبید بن عمیر نے ایک جنازہ کے جلوس میں کہا: مجھے بیروایت پینچی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا:
میت کو قبر میں بٹھایا جاتا ہے، درال حالیکہ (1) وہ چلنے والوں کے قدموں کی چاپ کوئن رہا ہوتا ہے تو اس کے ساتھ قبر
گفتگو کرتی ہے اور کہتی ہے کہ اے انسان! تجھ پرافسوں ہے کیا تجھ مجھ سے، میری تنگی سے، بد بوسے، بیبت اور کیڑوں سے نہیں ڈرایا گیا تھا! اب تو میرے لئے کیا تیاری کرکے لایا ہے؟ (2)

> اللَّهُمَ إِنِّى أَعُو ُ ذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبُرِ احالله! مِن جُه سعداب قبرسه يناه ما نَكَتا مول -

کہ کرفر مایا کہ جب مومن کی موت کا وقت قریب آتا ہے تواللہ تعالی اس کی طرف ایسے فرشتے بھیجتا ہے جن کے چہرے سورج کی طرح روش ہوتے ہیں، وہ اس کے لئے خوشہو ئیں اور کفن ساتھ لاتے ہیں اور حدِ نظر تک بیڑھ جاتے ہیں، جب اس مومن کی روح پرواز کرتی ہے تو آسان وزمین کے در میان رہنے والے تمام فرشتے اس کے در جات کی بلندی کی دعا کرتے ہیں، اس کے لئے آسانوں کے در واز سے کھول دیئے جاتے ہیں اور آسان کے ہر در واز سے کی خواہش ہوتی ہے کہ بیروح میرے یہاں سے داخل ہو، جب اس کی روح اور کو جاتی ہے تو کہا جاتا ہے: اے اللہ! تیرا فلال بندہ آگیا ہے۔ رب تعالی ارشا دفر ماتا ہے:

اسے لے جاؤ اوراسے وہ انعامات دکھلاؤ جو میں نے اس کے لئے تیار کئے ہیں کیونکہ میں نے وعدہ کیا ہے کہ " انہیں مٹی سے میں نے پیدا کیا ہےاورای میںان کولوٹاؤں گا"۔ ⁽³⁾

- 1 در آن حالے کد یعنی اس حال میں کہ علمیه
- 2الزهد لابن المبارك ، زيادات الزهد برواية نعيم، باب ما يبشر به الميت...الخ، ص ٤١، الحديث ١٦٣
 - ان ساتر جمه کنز الایمان: ہم نے زمین ہی ہے تہ ہیں بنایا اوراس میں تمہیں پھر لے جائیں گے۔ (پ٦٠ مطلا:٥٥)

M

مردہ قبر میں لوگوں کے جوتوں کی چاپ کوسنتا ہوتا ہے، جب وہ اسے فن کر کے واپس جارہے ہوتے ہیں، تب اسے کہا جاتا ہے کہا کہتا ہے اور تیرانبی کون ہے؟ وہ جواب میں کہتا ہے: میرا رب الله علیٰه وَسَلّم ہے۔

پھر فر مایا: قبر میں فرشتے سخت سرز آش کرتے ہیں اور یہ آخری مصیبت ہے جومیت پر قبر میں نازل ہوتی ہے۔ جب وہ ان کے سوالات کے جواب سے فارغ ہوجا تا ہے قو منادی نداء کرتا ہے: تقرنے سے کہا اور یہی فر مانِ اللی ہے:

مُثَیِّتُ اللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللللللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ

پھراس کے پاس ایک حسین وجمیل شخص آتا ہے جس کے جسم سے خوشبو کی لیٹیں آتی ہیں اور وہ انتہا کی دیدہ زیب لباس زیب تن کئے ہوئے ہوتا ہے، وہ آکر کہتا ہے کہ تجھے رحمتِ خداوندی اور ہمیشہ رہنے والی نعمتوں کی امین''جنت' کی خوشخبری ہو، مومن جواب میں کہتا ہے: الله مجھے بھلائی سے سر فراز فرمائے، توکون ہے؟ جواب ماتا ہے: میں تیرانیک عمل ہوں، تونیکیوں میں بڑھ کر حصہ لیتا تھا اور برائیوں سے رک جاتا تھا اس کے اللہ تعالیٰ نے تجھے بہترین جزاء دی ہے۔

پھر منادی ندا کرتا ہے کہ اس مومن کے لئے جنتی فرش بچھا دواوراس کے لئے جنت کی جانب ایک دروازہ کھول دو، چنا نچہاس کے لئے جنتی فرش بچھادیا جا تا ہے اور جنت کی طرف ایک دروازہ کھول دیا جا تا ہے اور وہ دعا ما نگتا ہے، اللہ اقیامت کوجلدی قائم فرما تا کہ میں اینے اہل وعیال اور مال سے ملاقات کروں۔

حضور صَدِّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَدَّم نے فرمایا: جب کافر کا آخری وقت قریب آتا ہے اور دنیا سے رخصت ہوا جا ہتا ہے تو سخت برتم فر شنے آگ اور دوز خے تارکول کالباس لئے آتے ہیں اور اسے انتہائی خوفز دہ کر دیتے ہیں، جب اس کی روح نکلتی ہے تو آسان اور زمین کے درمیان رہنے والے تمام فر شنے اس پر لعنت بھیجے ہیں، آسانوں کے درواز کی روح نکلتی ہے تو آسان اور ہر درواز ہیں جا ہتا ہے کہ بیروح ادھر سے نہ گزرے، جب اس کی روح اوپر چڑھتی ہے تو بند کردیئے جاتے ہیں اور ہر درواز ہیں جا الله! تیرافلال بندہ آیا ہے جسے زمین و آسان نے قبول نہیں کیا ہے،

¹....تو جمه كنز الايمان: الله ثابت ركها به ايمان والول كوش بات ير - (ب١٠، ابراهيم: ٢٧)

رب تعالی فرما تا ہے کہ اسے واپس لوٹا و اور اسے وہ عذاب دکھلا و جو میں نے اس کے لئے قبر میں تیار کیا ہے کیونکہ
انسان سے میراوعدہ ہے: ''تہہیں ہم نے مٹی سے پیدا کیا اور ہم تہہیں اسی میں لوٹا کیں گے۔''(1)
اور وہ مردہ قبر میں فن کر کے واپس جانے والوں کے جوتوں کی چاپ سنتا ہے تب اس سے کہا جاتا ہے: اے انسان!
تیرارب کون ہے؟ تیرا نبی کون ہے؟ اور تیرادین کیا ہے؟ وہ کہتا ہے: میں نہیں جانتا اور اسے کہا جاتا ہے: تو نہ جانے ۔
پھراس کے پاس ایک بدصورت، بد بودار اور انتہائی غلیظ کیڑوں والا آ کر کہتا ہے: تجھے قبر خداوندی اور دائی در دنا ک عذاب کی خوشخبری ہو، مردہ کا فر کہتا ہے: الله تعالی بدہوں۔
عذاب کی خوشخبری ہو، مردہ کا فر کہتا ہے: الله تعالی تجھے بری خبر سنائے تو کون ہے؟ وہ کہتا ہے: میں تیرے اعمالِ بدہوں۔
بخدا تو برائیوں میں بہت تیزی دکھا تا تھا اور نیکیوں سے اعراض کیا کرتا تھا لہٰذاالله تعالی نے تجھے بری جزادی ۔ کا فر کہتا ہے: الله تعالی نے تجھے بھی جزادے ۔

پھراس کے لئے ایک گونگا، اندھااور بہرافر شتہ مقرر کیا جاتا ہے، جس کے پاس لوہے کا ہتھوڑ اہوتا ہے جسے اگر جن وانسان ل کراٹھانا چاہیں تو نہاٹھا سکیں ،اگروہ پہاڑ پر مارا جائے تو وہ مٹی ہوجائے ۔وہ فرشتہ اس انسان کوہتھوڑ امارتا ہے جس کے جس سے وہ ریزہ ریزہ ہوجا تا ہے پھروہ زندہ ہوجا تا ہے اور فرشتہ اسے آنکھوں کے درمیان مارتا ہے جس کی آواز جن وانسان کے سواز مین کی تمام مخلوق سنتی ہے ، پھر منادی ندا کرتا ہے: اس کے لئے جہنم کی دو تختیاں بچھا و اور اس کے لئے جہنم کی جانب ایک دروازہ کھول دو! لہذا اس کے لئے جہنم کے دو شختے بچھاد بیے جاتے ہیں اور جہنم کی طرف دروازہ کھول دیا جاتا ہے۔ (2)

حضرت محمد بن علی رَحْمَةُ اللهِ عَلیْه سے مروی ہے کہ ہر مرنے والے پر موت کے وقت اس کے اجھے اور برے اعمال پیش کئے جاتے ہیں، وہ نیکیوں کی طرف تکٹکی باندھے دیکھتا ہے اور گنا ہوں کے دیکھنے سے آئکھیں چرا تا ہے۔

حضرتِ ابو ہریرہ وَضِیَ اللّهُ عَنُه سے مروی ہے کہ رسولِ خداصَلَی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّم نے فرمایا: مؤمن پر جب موت کا وقت قریب آتا ہے تو فرشتے ریشم کے ایک کپڑے میں مشک اور ناز بوکی ٹہنیاں لاتے ہیں، ان جنتی اشیاء کو د کیور کرمومن کی روح ایسی آسانی سے کلتی ہے جیسے آٹے میں سے بال نکلتا ہے اور کہا جاتا ہے: اے نفسِ مُطْمَئِنه! اپنے رب کی طرف

-ترجمهٔ کنز الایمان: ہم نے زمین بی سے تہمیں بنایا اوراسی میں تہمیں پھر لے جائیں گے۔ (پ٦١، طحه: ٥٥)
 - 2المستدرك للحاكم، كتاب الايمان، باپ مجيء ملك الموت...الخ ،١٩٨/١، الحديث ١١٤

خوش اور پسندیده ہوکرلوٹ جاءالله تعالیٰ کی تیار کرده آسائشوں اورعزت کی طرف جااور جب روح نکل آتی ہے تواسے اس مشک اور ناز بومیں رکھ کراوپرریشم لپیٹ کر جنت کی طرف لے جایا جاتا ہے۔ (1)

جب کافر پرموت کاوفت قریب آتا ہے تو فرشتے ایک ٹاٹ پرجہنم کی چنگاریاں رکھ کر آتے ہیں جس کی وجہ سے اس کی روح شدید عذاب سے تھینچی جاتی ہے اور کہا جاتا ہے: انے نفسِ خبیث! مصیبت زدہ اور مقہور ہوکر اللّٰہ تعالیٰ کے عذاب اور ذلت ورسوائی کی طرف نکل جا، جب اس کی روح نکل آتی ہے تو اسے ان انگاروں پررکھا جاتا ہے جس سے وہ اُ بلنے گئی ہے اور اس پر ٹاٹ لیسٹ کر پھرجہنم کی طرف لے جایا جاتا ہے۔

حضرت محمد بن كعب قرظى رَضِيَ اللهُ عنه عدم وى بع؛ انهول في يفر مان اللي:

حَتَّى إِذَاجَاءَا حَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ الرَّجِعُونِ ﴿

ہے اے میرے رب مجھے واپس لوٹا تا کہ میں نیک عمل کروں

یہاں تک کہ جبان میں ہے کسی ایک برموت آئے تو وہ کہتا

لَعَلِّيُّ اَعْمَلُ صَالِحًافِيْمَاتَرَكُتُ (2)

اس جگہ جسے میں چھوڑ آیا ہوں۔

پڑھ کر کہا: بین کررب تعالیٰ نے فر مایا: تو کیا جا ہتا ہے اور تجھے کس چیز کی خواہش ہے؟ کیا تو اس لئے جانا جا ہتا ہے تا کہ مال جمع کرے؟، درخت لگائے، عمارتیں بنائے اور نہریں کھدوائے؟ وہ کہے گانہیں بلکہ اس لئے کہ میں چھوڑے ہوئے نیک عمل کرلوں گا۔

رب فرما تاہے:

(3),رحقیق بربات ہے جسے وہ کہنے والا ہے۔

یعنی ہر کا فرموت کے وقت یہی کلمات ضرور کہتا ہے۔

- 1 مسند البزار،۷ ۲۹/۱ ، الحديث ٤ ٥ ٩
- 2تسر جمهٔ کنز الایمان: یهال تک که جب ان میس کسی کوموت آئے تو کہتا ہے کہ اے میرے رب! مجھے واپس چیپر و بیجئے شایداب میس کیچھ بھلائی کماؤں اس میں جوچھوڑ آیا ہول۔ (پ۸۱، المومنون: ۹۹،۰۰۹)
 - 3ترجمه کنز الایمان: هَشت (برگزئیس) یتوایک بات ہے جووہ اپنے منہ سے کہتا ہے۔ (پ۱۱۰ المومنون: ۱۰)

M

حضرت ابو ہریرہ وَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے: حضور صَلّٰی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا کہ مومن کی قبرایک سبز باغ ہوتا ہے، اس کی قبرستر ہاتھ فراخ کر دی جاتی ہے اور وہ چودھویں رات کے جاند کی طرح چکے گا، پھر فر مایا کہ بیآیت مبارکہ:

فَإِنَّ لَهُ مَعِيْشَةً ضَنْكًا (1) فَإِنَّ لَهُ مَعِيْشَةً ضَنْكًا (1)

جانتے ہوکس کے بارے میں نازل ہوئی ہے؟ صحابہ کرام دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ نے عُضَ کیا:اللّٰه اوراس کارسول بہتر جانتا ہے،
آپ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: بیکا فر کے عذاب کے متعلق ہے،اس کی قبر میں اس پر ننا نوے سانپ مسلط کردیئے جاتے ہیں، ہرسانپ کے سات مَر ہوتے ہیں جواس کے وجود کونو چتے،اسے کھاتے اور حشر کے دن تک اس پر گرم گرم کی مارتے رہتے ہیں۔

(2)
پھونکیں مارتے رہتے ہیں۔

اور یہ بات بھی سمجھ لیجئے کہ اس مخصوص عدد پر تعجب نہ کیجئے کیونکہ ان سانپوں کی تعداد ان برائیوں کی تعداد کے برابر ہے جیسے تکبر، دکھاوا، حسد، کینداور کسی کے لئے دل میں میل رکھنا وغیرہ اگر چہان برائیوں کے اصول گئے چئے ہیں مگران کی شاخیں اور پھران شاخوں کی شاخیں بہت زیادہ ہیں جوسب کی سب مہلک ہیں اور قبر میں یہی صفات مذمومہ سانپوں کی شکل میں تبدیل ہوکر آئیں گی، جو برائی اس کا فر کے وجود میں زیادہ راسخ ہوگی وہ از دہا کی طرح ڈسے گی، جو فرد رائم ہوگی وہ از دہا کی طرح ڈسے گی، جو ذرا کم ہوگی وہ بچھوکی طرح ڈسے گی اور جوان دو کے درمیان ہوگی وہ سانپ کی شکل میں نمودار ہوگی۔

اُصحابِ معرفت اورصاحبِ دل حضرات اپنورِ بصیرت سے ان مہد کات اوران کی فروع کو جانتے ہیں گر ان کی تعداد پر مطلع ہونا، یوور نبوت کا کام ہے اس جیسی حدیثوں کے ظاہری معنی صحیح اوران کے پوشیدہ معانی بھی ہیں جو اہلِ معرفت بخو بی سیحتے ہیں، لہٰذاا گر کسی ظاہر بین پر ان کے حقائق منکشف نہ ہوں تو اسے انکار کی بجائے تصدیق اور سلیم سے کام لینا چاہئے کیونکہ ایمان کا کم از کم درجہ یہی ہے۔

الایمان: توبشکاس کے لیے تنگ زندگائی ہے۔ (پ۱۱، طان: ۱۲٤)

^{2}ابن حبان كتاب الحنائز و مايتعلق...الخ، فصل في احوال الميت في قبر، ٤/٥٠ الحزء الخامس، الحديث ٣١١٢

$extstyle ar{}$ علم اليقين، عين اليقين اور سوالاتِ قيامت $extstyle ar{}$

فرمانِ الہی ہے:

ہر گزنہیں اگرتم یقینی طور پر جانتے۔

كَلَّالُوْتَعْلَمُوْنَعِلُمُ الْيَقِيْنِ (1)

یعنی اگرتم قیامت کے اُحوال ووا قعات کویفینی طور پر جانتے ، مگرتم کوتو مال کی کثرت اورایک دوسرے پر تفاخر نے اس بات سے عافل کر دیا ہے،اگرتم ہیہ بات جان لیتے تو تم وہ کا م کرتے جوتمہارے لئے فائدہ مند ہوتے اوران کا موں سے بچتے جوتمہارے لئےمصری لہذافر مایا گیا:اگرتم صحیحمعنی میں عِلم یقین حاصل کر لیتے ، جیسا کہ انبیائے کرام عَلیْهمٔ السَّلام نے تمہیں سمجھایا کہ مال اور اپنے قابلِ فخر کارنا موں کا شارتمہیں قیامت میں کوئی فائدہ نہیں دے گا،تم نے جو مال کی کثرت وتعداد پرفخر کیا ہےاس کی بدولت تم ضرور نارِجہنم کودیکھو گے چنانچہ خالق کا ئنات نے قتم کھائی کہتم ضرورا بنی ان آئھوں سے اپنے روبر وجہنم اور اس کی شدت کودیکھو گے۔

پھرتم اسےضروریفین کی آنکھ سے دیکھوگے۔

ثُمَّلَتَرَوُنَّهَاعَيْنَ الْيَقِيْنِ ۞ (²⁾

یعنی جہنم کا اس طریقے سے مشاہدہ کرو گے کہ جسے مین الیقین کہا جاتا ہے اور جس کے بعد کسی شک وشبہہ کی گنجائش باقی نہیں رہتی ۔ ⁽³⁾

ا گرعلم الیقین اورعین الیقین کا فرق دریافت کیا جائے تو وہ پیہ ہے کہ علم الیقین انبیائے کرام کواپٹی نبوت کے

- 1توجمه كنز الايمان: بإن بان الريقين كاجانناجانة تومال كى محبت ندر كھتے (ب ، ٣ ، التكاثر: ٥)
 - 2ترجمه كنز الايمان: پيمرب شك ضرورات يقيني ويكناويكمو گه- (ب ٣٠ النكاثه:٧)
- اسس آگ کی خاصیت جلانا ہے جو سنااس کا نام علم الیقین ہے، دوسر کوآ تکھوں سے جلتے دیکھاعین الیقین ہے اورخود آگ سے جلے یا اپنا جلنا دیکھارچق الیقین ہے۔

متعلق حاصل تھا اور عین الیقین فرشتوں کو حاصل ہے جو جنت، دوزخ، لوح وقلم اور عرش وکرسی کو اپنی آئکھوں سے در کیھتے ہیں اور اسی کا نام عین الیقین ہے۔ یوں بھی کہا جاسکتا ہے کہ علم الیقین زندوں کا موت اور قبروں کے متعلق علم ہے کیونکہ وہ جانتے ہیں کہ مُوثی قبروں میں ہیں لیکن وہ یہ جھنے سے قاصر ہیں کہان کے ساتھ کیا سلوک ہور ہا ہے اور عین الیقین مُوثی کو حاصل ہے کیونکہ وہ قبور کو جنت کا ایک باغ یا پھر جہنم کا ایک گڑھا خود دکھے جی ہیں۔

یہ بھی کہہ سکتے ہو کہ علم الیقین قیامت کاعلم اور عین الیقین قیامت اور اس کی ہولنا کیوں کود کھے لینا ہے۔ یہ بھی کہہ سکتے ہو کہ علم الیقین جنت اور دوزخ کاعلم اور عین الیقین ان کا دیکھ لینا ہے۔ فرمانِ الٰہی ہے: ''پھرتم اس دن نعتوں کے بارے میں ضرور یو جھے جاؤگے۔''(1)

یعنی قیامت کے دن تم سے دنیاوی نعمتوں جیسے تندرسی، قوتِ ساعت، قوتِ بینائی، حصولِ رزق کے طریقے اور خور دونوش کی تمام اَشیاء کے متعلق ہو چھا جائیگا کہتم نے ان چیز وں کو پاکرالله تعالیٰ کاشکر بھی ادا کیا تھا؟اس کی معرفت حاصل کی تھی یاا نکاروکفر کے مرتکب ہوئے تھے۔

ابن ابی حاتم اور ابن مردویه کی روایت ہے کہ حضرتِ زید بن اسلم نے اپنے والد سے روایت کی ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے بڑھا که '' تم کواَ موال کی کثرت کے مقابلوں نے ہلاک کردیا ''(2) یعنی تم عبادت سے عافل ہوئے۔ '' یہاں تک کتم نے قبروں کودیکھا ''(3) یعنی تم ہیں موت آئی۔

" ہرگزنہیں البتہ تم جان لوگ''⁽⁴⁾ یعنی جب تم قبروں میں داخل ہوگ۔

" پھر بے شکتم عنقریب جان لوگ "،(⁵⁾ جبتم قبروں سے نکل کرمیدان محشر میں آؤگے۔

'' برگزنهیں اگرتم علم یقین کے طور پر جان لیتے ''⁽⁶⁾ یعنی تم اس وقت کو جانتے جب تم اپنے اعمال سمیت الله تعالی

التكاثر: ٨)

التكاثر: ١)
 التكاثر: ١)

3ترجمه كنز الايمان: يهال تك كتم في قرول كامندو يكها (ب . ٣٠ التكاثر: ٢)

4ترجمه كنز الايمان: بإل بال جلدجان جاؤك_(ب ٣٠، التكاثر: ٣)

5ترجمه كنز الايمان: پهر بال بال جلد جان جاؤك _(ب ٣٠ ، التكاثر: ٤)

التكاثر: ٥)
 التكاثر: ٥)
 التكاثر: ٥)

کی بارگاہ میں کھڑے ہوگے اور'' جہنم کو دیکھ رہے ہوگے''⁽¹⁾ بیہ بایں طور واقع ہوگا کہ بل صراط کو جہنم کے درمیان رکھا جائے گا، پس بعض مسلمان نجات پانے والے ہوں گے، بعض زخمی ہوں گے اور بعض جہنم میں گرائے جا نمینگے۔

'' پھراس دن ضرورتم نے نعتوں کے متعلق سوال کیا جائے گا''⁽²⁾ یعنی شکم سیری ، سر دمشر و بات ، مکانات کے سائے ، تمہاری بہترین تخلیق کامصرف اور نیندکی آسائشوں کے بارے میں سوال کیا جائے گا۔⁽³⁾

حضرت علی رَضِیَ اللّهُ عَنْه کا قول ہے کہ نعمت سے مراد تندرتی ہے۔ مزید فرمایا کہ جس نے گیہوں کی روٹی کھائی، فرات کا مُصندُ اپانی پیااوراس کے رہنے کے لئے گھر بھی ہے، یہی وہ نعمتیں ہیں جن کے بارے میں سوال کیا جائےگا۔
حضرت ابوقلا بدرَضِیَ اللّهُ عَنْه سے مروی ہے حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے بیر آیت پڑھ کرفر مایا: میری امت کے لوگھی میں خالص شہر ملاکرا سے کھا کیں گے جن کے متعلق ان سے سوال کیا جائے گا۔

(4)

حضرت عکرمدرَضِیَ اللهٔ عَنه سے مروی ہے کہ جب بیآیت نازل ہوئی تو صحابہ کرام دَضِیَ الله عَنهم نے حضور صَلَّی اللهُ عَلَيهِ وَسَلَّم سے بوجھا: ہمیں کونی نعمت حاصل ہے، ہم نے تو بھی پیٹ بھر کرجو کی روٹی بھی نہیں کھائی ہے، الله تعالیٰ نے نبی کریم صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم کی طرف وحی فرمائی، ان سے فرمائے! تم جوتے پہنے ہواور تھنڈ ایانی پیتے ہو، کیا نیمتیں نہیں ہیں؟ (5)

تر مذی وغیرہ کی روایت ہے کہ جب بیسورت نازل ہوئی تو صحابہ کرام دَضِیَ اللّه عَنْهِم نے بوچھا: ہم سے کوئسی نعمتوں کا سوال ہوگا! ہمیں تو پانی اور محجوروں کے سواکوئی غذاہی میسرنہیں ہے! ہر وفت تلواریں ہماری گر دنوں میں آویزاں ہیں اور دشمنوں سے لڑائیوں میں مصروف رہنا پڑتا ہے! وہ کوئسی نعمت ہے جس کے متعلق سوال ہوگا؟ آپ نے فر مایا: عنقریب

^{1}ترجمه كنز الايمان: بشك ضرورجهم كود يهوك_(ب · ٣ ، التكاثر: ٦)

^{2}توجمه كنز الايمان: پيربشك ضروراس دن تمسينعتول سے پرسش ہوگا - (ب ۳۰ التكاثر: ۸)

^{3}الدرالمنثور، سورة التكاثر، ١١/٨

^{4}الزهد لاحمد بن حنبل، ص٦٦، الحديث٦٦١

^{5}تفسير ابن ابي حاتم، ص ٢٤٦٠، الحديث ١٩٤٦٢

٣٤٨

تههیں نعمتیں ملیں گی _–⁽¹⁾

حضرت ابو ہریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنُه سے مروی ہے؛ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: سب سے پہلے انسان سے جن نعمتوں کا سوال ہوگا وہ یہ ہوں گی کہ اللّٰه تعالی فر مائے گا: میں نے تہمیں تندرستی نہیں دی تھی اور تمہیں پینے کے لئے محضدً ایا نی نہیں دیا تھا؟ (2)

مسلم وغیرہ میں حضرت ابو ہر یرہ وَضِی اللّه عَنه سے مروی ہے کہ حضور صَلّی اللّه عَنیه وَسَلّم ایک مرتبہ کا شانہ نبوت سے باہرتشریف لائے تو آپ کوا چا تک حضرت ابو بکر اور حضرت عمر دَضِی اللّه عَنه هما لل گئے ، آپ نے پوچھا: اس وقت گھرسے باہر کس لئے آنا ہوا؟ عرض کی: حضور! بھوک نے ہمیں گھروں سے نکالا ہے۔ آپ نے فرمایا: بخدا میں بھی بھوک کی وجہ سے گھرسے نکا ہوں۔ پھوتو قف کے بعد آپ سب ایک انصاری کے گھر تشریف لائے مگروہ گھریر موجوز نہیں تھے، ان کی یوی نے آپ کود کھر '' خوش آمدید'' کہا۔ آپ نے اس انصاری کے متعلق پوچھا: تو اس کی بیوی نے عرض کیا: حضور! وہ ہمارے لئے شخد اپنی لینے گئے ہیں۔ اسی وقت وہ انصاری صحابی بھی واپس آگئے، انہوں نے حضور صَلّی الله عَنْهِ وَسَلّم اور کھوروں کا ایک خوشد لائے! آج میں انتہائی باعزت مہمانوں کا شرف میز بانی حاصل کرر ہا ہوں ، پھر وہ گئے اور مجبوروں کا ایک خوشد لائے؟ جس میں پچی کی بہت سی مجبور بی تھیں اور عرض کی: تناول فرما سے اور چھری اٹھائی تو حضور صَلّی الله عَنْهِ وَسَلّم نے فرمایا: دود دود دینے والی کا خیال رکھنا ، چنا نچاس نے بکری ذئ کی اور آپ سب نے بکری کا گوشت اور مجبور میں تناول فرما کیں پانی پیا ، جب کھانے اور پانی سے سر ہو چکے تو آپ کی اور آپ سب نے بکری کا گوشت اور مجبور میں تناول فرما کیں پانی پیا ، جب کھانے اور پانی سے سر ہو چکے تو آپ کی الله عَنْهِ وَسَلّم نے فرمایا: بخدا! اے ابو بکر وعمر! تم سے قیا مت کے دن ان نعمتوں کے متعلق ضر در سوال کیا جائے گئی وَسَلّم نے فرمایا: بخدا! اے ابو بکر وعمر! تم سے قیا مت کے دن ان نعمتوں کے متعلق ضر در سوال کیا جائے گا۔ گا۔

^{1}مسند احمد، حديث رجل من الانصار، ٩/٦٦، الحديث ٢٣٧٠١

۳۳٦ مذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة الهٰکم التکاثر، ۲۳٦/۵، الحدیث ۳۳٦٩

^{3}مسلم، كتاب الاشربة، باب جواز استتباعه...الخ، ص ١١٢٥، الحديث ١٤٠ ـ (٢٠٣٨)



فضيلتِ ذكر اللهي ﴿

فرمانِ الهى ہے: فَاذْ كُوُوْنِيَّ أَذْكُرُكُمْ

تم مجھے یاد کرومیں تمہیں یاد کروں گا۔

حضرتِ ثابت بنانی رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه نے فرمایا: میں جانتا ہوں کہ جب میرارب مجھے یا دفرما تا ہے، یہن کرلوگ کچھ پریشان ہو گئے اور دریافت کیا آپ کو یہ کیسے پیتہ چل جاتا ہے؟ آپ نے کہا: جب میں اسے یاد کرتا ہوں تو وہ بھی مجھے یا دفرما تا ہے۔ فرمانِ الہٰی ہے:

الله كوبهت بإدكرو_

اذْكُرُوااللهَ ذِكُمَّ اكْثِيْرًا ﴿ (2)

مزيد فرمايا:

فَادَآافَفْتُمْ مِنْ عَرَفْتِ فَاذْكُرُوااللهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ

الْحَرَامِ ۗ وَاذْكُرُوْهُ كَمَاهَلُ كُمُ ۚ (3)

دوسرے بارہ میں ارشادِر بانی ہے:

فَاذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكُكُمْ فَاذُكُرُوااللَّهَ كَنِكُمِكُمُ

اباً عَكُمُ اَ وَاشَدَّ ذِكْرًا لَهُ (4)

یں جبتم عرفات ہے پاٹوتومشعرحرام کے نزدیک الله کو یاد کرو

اورجیسے مہیں ہدایت دی گئی ہے ویسے اسے یاد کرو۔

جبتم مناسك حج يور _ كر چكو توالله تعالى كوياد كروجيسيتم ايخ

آباءکویادکرتے ہویااس ہے بھی زیادہ یادکرو۔

- البقرة: ۲۵ البقرة: ٢٥ ميرى يا وكرومين تبهارا چرچا كرول گا- (ب٢، البقرة: ۲۵ ۱)
 - 2ترجمه كنز الايمان: الله كوبهت يادكرو-(ب٢٢ الاحزاب: ٤١)
- الدیمان: توجب عرفات سے بلٹوتوالله کی یاوکرومشئر حرام کے پاس اوراس کا ذکر کروجیسے اس نے تہمیں ہدایت فرمائی۔

(پ٢، البقرة: ١٩٨)

ستوجمه كنز الايمان: پهرجبان چ كام پور كر چكوتوالله كاذكركروجيسان باپ دادا كاذكركرت سے بلكهاس سے زياده۔

(پ٢٠١ البقرة: ٢٠٠٠)

وہ لوگ اللہ تعالیٰ کو کھڑ ہے بیٹھے اور پہلو کے بل لیٹے یا دکرتے

ارشادِ اللي ہے:

الَّذِيْنَ يَذُكُرُوْنَ اللهَ قِيمًا قَعُوْدًا وَعَلَّ جُنُوْ بِهِمْ (1)

ىيں_

فرمانِ الهی ہے:

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّالِوَةَ فَاذُكُرُوا اللَّهَ قِيامًا وَّقُعُودًا وَّعَلَى

وېږ بروج (2) **ج**نوبِگم

پس جبتم نماز پوری کرلوتوالله تعالی کوقیام قعوداور پہلو پر لیٹے

حضرتِ ابن عباس دَضِيَ اللهُ عَنْهِ مااس آيت كي تفسير مين فرماتے ہيں: ليعني الله تعالى كورات، دن، بحروبر، سفر وحضر،

مالداری و مفلسی ،مرض وصحت ، ظاہرونہاں غرض ہرحالت میں یا دکیا کرو۔

الله تعالیٰ کامنافقوں کی مذمت میں ارشادہے:

وہاللہ کو بہت کم یاد کرتے ہیں۔

(3) وَلا يَذُكُرُونَ اللهَ إِلَّا قَلِيُلًا ۞

فرمانِ اللهي ہے:

وَاذْكُنُ مَّ بَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَمَّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِ وَالْأَصَالِ وَلَا تَكُنُ وَاذْكُنُ مَا لَغُولِينَ هَا الْغُولِينَ هَا الْغُولِينَ هَ

اورفر مانِ الهي ہے:

وَلَذِكُمُ اللهِ اَكْبَرُ اللهِ اَكْبَرُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الله

اوربے شک ذکر خدا بہت بڑاہے۔

- ال عمران: ١٩١١ عمران: جوالله كى ياوكرتے بين كھڑ ے اور بيشے اوركروٹ پر ليٹے (پ٤، ال عمران: ١٩١١)
- 2ترجمه كنز الايمان: پيرجبتم نماز پره چكو توالله كى يادكروكر ساور بيشياوركرولول برليغ _(پ٥، النساء: ١٠٣)
 - النساء: ۲۶) النساء: ۱ورالله کو یادئین کرتے مگرتھوڑا۔ (ب٥، النساء: ۲۶)
- ◄تو جمهُ کنز الایمان: اوراپنے رب کواپنے دل میں یاد کروز اری (عاجزی) اور ڈرسے اور بے آ واز نگلے زبان سے منے اور شام اور غافلوں میں نہ ہونا۔ (پ۵، الاعراف: ۲۰۰۵)
 - **5**.....توجمه كنز الايمان: اورئ شك الله كافكرسب سے برا (ب ۲۱، العنكبوت: ٥٥)

يشُ ش: مطس آلدَنيدَ دُولية العِلْمية دووت اسلامي

حضرت ابن عباس دَضِیَ الله عَنه ما سے مروی ہے کہ اس آیت کے دومعنی ہوسکتے ہیں، پہلا یہ کہ الله تعالیٰ کا تمہیں یا دفر مانا تمہارے ذکر سے بہت بڑی چیز ہے، دوسرایہ کہ ذکر خدا ہر عبادت سے زیادہ برتر اور اعلیٰ ہے۔اس سلسلہ میں اور بھی بہت ہی آیات وارد ہوئی ہیں۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشاد ہے كہ غافلوں ميں ذكرِ خداكر نے والوں كى مثال سو كھے گھاس ميں سنر پودے (1) كى سى ہے۔

مزید فرمایا که غافلوں میں ذکر خدا کرنے والے کی مثال بھگوڑوں کے درمیان جہاد کرنے والے کی ہی ہے۔ (2) فرمانِ نبوی ہے: ربِّ دوالجلال فرما تا ہے کہ جب میر ابندہ مجھے یا دکرتا ہے اور میری یا دمیں اس کے ہونٹ وَ اہوتے میں تو میں اس کے ساتھ ہوتا ہوں۔ (3)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشاد ہے: انسان كے لئے ذكرِ خداسے برُ هركركو فَي عمل ايسانہيں ہے جوعذاب الله عليه حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلِيم كارشاد في سبيل الله بھی نہيں گريہ سے جلد نجات دلانے والا ہو، عرض كى گئى كہ جہاد فى سبيل الله بھی نہيں گريہ كہ تواپنى تلوار سے جہاد كرے اور وہ ٹوٹ جائے۔ (4) (بار بار كے جہاد ہے بھی افضل ہے)

فر مانِ نبوی ہے کہ جو شخص جنت کے باغوں سے سیر ہونا جا ہتا ہے وہ اللہ کو بہت یا دکرے۔ ⁽⁵⁾

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے بِوچِها گیا کہ کونساعمل افضل ہے؟ آپ نے فرمایا: جب تو مربے تو تیری زبان ذکر خداسے شیریں ہو۔ ⁽⁶⁾

فرمانِ نبوی ہے کہ ذکرخدا میں صبح وشام بسر کر ، تواس حالت میں دن اور رات مکمل کرے گا کہ تچھ پر کوئی گناہ باقی بن ہوگا۔ ⁽⁷⁾

1 شعب الايمان ، العاشر من شعب الايمان .. الخ، فصل في ادامة .. . الخ، ١/١١، الحديث ٥٦٥ ما حوذا

2المرجع السابق، ص١٦٤، الحديث٥٦٠ المرجع السابق، ص ٩٩٦، الحديث٠١٥

4المعجم الاوسط ، ٣/٢ ، الحديث ٢٢٩٦ ق.....المعجم الكبير ، ١٥٧/٢ ، الحديث ٣٢٦

6المرجع السابق، ص ١٠٦، الحديث ٢٠٨

7.....الفتوحات المكية لابن عربي، الباب الموفي ستين و خمسمائة ، وصية نبوية محمديه، ٧٦٦٧ ع

فرمان نبوی ہے کہ میں وشام یا والہی ، جہاد فی سبیل الله میں تلواریں توڑنے اور بے در یغی راو خدامیں مال لٹانے سے بہتر ہے۔ (1) حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں:الله تعالی فرما تاہے کہ جب میرابندہ مجھے تنہائی میں یا دکرتا ہے تو میں اسے تنہائی میں یا دکرتا ہوں اور جب وہ مجھے جماعت میں یا دکرتا ہے تو میں اسے اس کی جماعت سے بہتر جماعت میں یا دکرتا ہوں ، جب وہ مجھے سے ایک بالشت قریب ہوتا ہے تو میں اس سے ایک ہاتھ قریب ہوجاتا ہوں جب وہ ایک ہاتھ میر حقریب ہوجاتا ہوں اور جب وہ میری طرف چل میر حقریب ہوتا ہے تو میں دونوں ہاتھوں کی وسعت کے برابراس کے قریب ہوجاتا ہوں اور جب وہ میری طرف چل میر سے تو میری رحمت براھ کر اسے سائی عافیت میں لے لیتی ہے یعنی میں اس کی دعاؤں کو بہت جلد قبول فرمالیتا ہوں۔ (2) پڑتا ہے تو میری رحمت میں اس دن جگہ دے گا جس دن کوئی سائی بہت ہوگا ، ان میں سے ایک وہ ہے جس نے تنہائی میں خدا کو یا دکیا اور خوف خدا کی وجہ سے اس کی آئے کھوں سے سائی ہیں ہوگا ، ان میں سے ایک وہ ہے جس نے تنہائی میں خدا کو یا دکیا اور خوف خدا کی وجہ سے اس کی آئے کھوں سے آئے سو بہہ نکلے۔ (3)

حضرت ابوالدرداءرَضِیَ اللّهٔ عَنه ہے مروی ہے: حضور صَلّی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّم نے فرمایا که کیا میں تمہیں تمہارے اعمال میں سے بہترین عمل کی خبر نددوں جواللّه کے نزدیک سب اعمال سے پاکیزہ، سب اعمال میں بلندمر تبہ سونے چاندی کی بخشش سے بہتر، وشمنوں سے تمہارے اس جہاد سے جس میں تم انہیں قتل کرووہ تمہیں شہید کردیں، افضل واعلیٰ ہو؟ صحابہ کرام دَضِیَ اللّه عَنهم نے یو چھا: حضور! وہ کونساعمل ہے؟ آپ نے فرمایا: دائی ذکر اللّه عنهم نے یو چھا: حضور! وہ کونساعمل ہے؟ آپ نے فرمایا: دائی ذکر اللّه عنهم نے بوچھا: حضور! وہ کونساعمل ہے؟ آپ نے فرمایا: دائی ذکر اللّه عنهم نے بوچھا: حضور! وہ کونساعمل ہے؟ آپ نے فرمایا: دائی ذکر اللّه عنهم نے بوچھا: حضور! وہ کونساعمل ہے؟ آپ نے فرمایا: دائی دکر اللّه عنہ میں میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ کی بھورا کی در اللّه عنہ میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ کی بھورا کی در اللّه عنہ کی بھورا کی در اللّه عنہ میں تم انہوں کی بھورا کی در اللّه عنہ کی بھورا کی در اللّه عنہ کی بھورا کی در اللّه کی بھورا کی در اللّه کی در اللّه کی صورا کی بھورا کی در اللّه کی در اللّه کی در اللّه کورنسائل کی در اللّه کی در اللّم کی در اللّه کی در ا

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيُهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کہ اللَّه تعالی ارشا دفر ماتا ہے: جس شخص کومیرے ذکرنے سوال کرنے سے روکے رکھامیں اسے بغیر مائکے سب سائلوں سے بہتر دوں گا۔ (⁵⁾

حضرت فِضيل دَضِيَ اللَّهُ عَنُه فرمات ہیں: ہمیں پی خبر ملی ہے کہ اللّٰہ تعالی فرما تاہے: اے میرے بندے! تو مجھے

- 1ابن ابي شيبه، كتاب الزهد، باب ما جاء في فضل ذكر الله، ٢٣٥/٨، الحديث ٢
- 3بخارى، كتاب الجماعة والإمامة، باب من جلس في المسجد ينتظر...الخ، ٢٣٦/١، الحديث ٦٦٠
 - 4ترمذي، كتاب الدعوات، باب ٢٤٦/٥،٦ الحديث ٣٣٨٨
 - 5 شعب الايمان، العاشر من شعب الايمان... الخ ، فصل في ادامة... الخ، ١٣/١ ٤ ، الحديث ٧٧٥

صبح کے بعداورعصر کے بعد پچھ دیریا دکرلیا کر، یمل مخصصارے دن کے لئے کافی ہوگا۔

بعض علاء کا کہنا ہے کہ الله تعالی ارشاد فرما تا ہے: جب میں کسی شخص کے دل کواپنی یا دمیں سرگرم مل دیکھتا ہوں تو میں اس کے جملہ امور کامتولی ہوجا تا ہوں اور میں اس کا ساتھی ، اس کا ہم نشیں اور ہم بخن بن جا تا ہوں حضرت حسن دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه کا قول ہے کہ ذکر دو ہیں: ایک تو تنہائی میں الله تعالی کو یا دکرنا جو بہت عمدہ اور اجرعظیم کا سبب ہے اور اس سے بھی بہتر ذکر میہ ہے کہ انسان الله تعالی کی حرام کر دہ چیزوں میں الله کو یا در کھے اور ایسے امور سے بازر ہے۔

مروی ہے کہ یادِ الٰہی میں زندگی بسر کرنے والے کے سواہرانسان موت کے وقت پیاساجا تاہے۔

حضرت معاذبن جبل دَضِيَ اللَّهُ عَنْه كافر مان ہے كہ جنتى اس لمھے كے سواجو يا دِالْهى ميں بسرنہيں ہوا، كسى چيز پر حسرت نہيں كرےگا۔ (1)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشاد ہے كہ كوئى جماعت بھى اليئ نہيں ہے جو يا دِالْہی كے لئے بیٹھی ہومگر فرشتے اسے گھیر لیتے ہیں اور رحمت خداوندی اسے ڈھانپ لیتی ہو ،اللّٰہ تعالیٰ اپنے مقربین میں نہیں یا وکرتا ہے۔ (²⁾

Kalangon Bergalan

فرمان نبوی ہے کہ جب بچھلوگ محض رضائے الہی کیلئے ذکر خدا کیلئے جمع ہوتے ہیں تو آسان سے منادی نداکرتا ہے کہ کھڑے ہوتے ہیں تو آسان سے منادی نداکرتا ہے کہ کھڑے ہوجاؤ بتہارے گناہوں کومعاف کردیا گیا ہے اور تہارے گناہوں کونیکیوں سے بدل دیا گیا ہے۔ (3)

نبی کریم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا فرمان ہے کہ کوئی قوم ایسی نہیں جو کہیں بیٹھے اور اللّه تعالیٰ کا ذکر (نہ کرے) اور نبی صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم پردرودنہ بھیجے اور قیامت کے دن وہ حسرت سے دوچار نہ ہو۔ (4)

حضرتِ داوُدعَلَيْهِ السَّكرم نے بارگا واللی میں عرض کیا:الله العالمین! جب تو مجھے دیکھے کہ میں ذکر کرنے والوں کی مجلس سے اٹھ کر کا فالوں کی مجلس میں جار ہا ہوں تو میر ہے تو پاؤں تو ڑدے، بلاشبہہ میر ہے او پریہ تیراانعام ہوگا۔

❶.....شعب الايمان، العاشر من شعب الايمان...الخ ، فصل في ادامة...الخ، ٢/١٩ ٣٩:الحديث٢١٥ رواه مرفوعاً

^{2} الخ، ص ١٤٤٨، الحديث ٣٩_ (٢٧٠٠)

^{3}مسند احمد، مسند انس بن مالك بن النضر، ٢٨٦/٤، الحديث ٢٥٤٦

^{4.....} مسند احمد، مسند ابي هريرة، ٢٨/٣ ه، الحديث ١٠٢٤٨

فرمانِ نبوی ہے: نیک محفل ، مومن کے لئے بیس لاکھ (1) بری مجلسوں کا کفارہ ہے۔

حضرت ابو ہر ریرہ دَخِبیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے: آسان کے رہنے والے ان گھر وں کوجن میں یا دِالہی ہوتی ہے، ایسے دیکھتے ہیں جیسے تم ستاروں کودیکھتے ہو (پُرشوق نگاہوں ہے)

حضرت ِسفیان بن عیدینه دَضِیَ اللّهُ عَنْهُ کا کہنا ہے: جب کوئی جماعت ذکرِ خدا کے لئے جمع ہوتی ہے توشیطان اور دنیاعلیٰجد ہ ہوجاتے ہیں، پھرشیطان دنیا سے کہتا ہے: کیا تو نے انہیں دیکھا یہ کیا کررہے ہیں؟ دنیا کہتی ہے: انہیں چھوڑ دے، جونہی بیذ کرالٰہی سے فارغ ہوں گے میں انہیں گردنوں سے پکڑ کرتیرے حوالے کردوں گی۔

حضرت ابوہریرہ وَضِیَ اللّهُ عَنْهُ ایک مرتبہ بازار میں تشریف لائے اور فرمایا: لوگو! میں تہہیں یہاں دکیور ہاہوں حالا نکہ مسجد میں حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی میراث تقسیم ہورہی ہے۔ لوگ بازار چھوڑ کر مسجد کی طرف کئے مگرانہیں کوئی میراث بٹتی دکھائی نہ دی ، انہوں نے حضرت ابوہریہ سے کہا: ہم نے تو مسجد میں کوئی میراث تقسیم ہوتے نہیں دی ہے۔ آپ نے بولے : ہم نے وہاں ایسی جماعت دی تھی ہے جوذ کر خدا کر رہے ہیں اور قرآن مجید بڑھ درہے ہیں، آپ نے فرمایا: یہی تو نبی کریم صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی میراث ہے۔ (3)

اَعْمَشْ نے ابوصالے ہے، انہوں نے حضرت ابو ہریرہ اور حضرت ابوسعید خدری (دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهِم) ہے روایت کی ہے کہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: اللّٰه تعالیٰ نے نامہ اعمال لکھنے والے فرشتوں کے علاوہ ایسے سیاح فرشتوں کو ہون میں مشغول پاتے ہیں تو دوسروں سے کہتے ہیں پیدا فرمایا جوز مین میں سرگرم سفر رہتے ہیں، جب وہ سی جماعت کوذکر میں مشغول پاتے ہیں تو دوسروں سے کہتے ہیں کہ ادھرا پنی مطلوبہ چیز کی طرف آؤ! لہذا وہ سب فرشتے جمع ہوجاتے ہیں اور انہیں آسان تک گھیرے میں لے لیتے ہیں۔ اللّٰه تعالیٰ فرما تا ہے: میرے بندوکو تم نے کس حال میں چھوڑا؟ وہ کیا کررہے تھے؟ فرشتے کہتے ہیں: یااللّٰه! وہ تیری جر، تیری بزرگی اور تیری شیجے بیان کررہے تھے۔ رہے جلیل فرما تا ہے: کیا انہوں نے جمھے دیکھا ہے؟ فرشتے عرض

^{•} يبال بيس لا كال يحب بجائے دولا كالكها تھا، يقيناً كتابت ميں غلطي ہوئي ہوگي كيول كه " مكاشفة القلوب "ميساس مقام پرعبارت يول ہے:
" المجلس الصالح يكفر عن المؤمن الفي الف مجلس من مجالس السوء " للبذاہم نے يبهال اصل كرمطا بق تيج كروى ہے۔علميه
" المجلس الاخبار ، (٧٧/ مالحديث ٥٨٧)

_ []

کرتے ہیں بنہیں۔رتِ جلیل فرما تا ہے:اگروہ جھے دکھے لیں تو ان کی کیا حالت ہوگی، فرشتے عرض کرتے ہیں:اگروہ کھے دکھے لیں تو اس ہے بھی زیادہ تیری شیجے وتحمید کریں۔رب فرما تا ہے: وہ کس چیز سے پناہ ما نگ رہے تھے؟ فرشتے کہتے ہیں: جہنم کود یکھا ہے؟ فرشتے عرض کرتے ہیں: نہیں، کہتے ہیں: جہنم کود یکھا ہے؟ فرشتے عرض کرتے ہیں: نہیں، رب فرما تا ہے:اگروہ جہنم کود کھے لیں تو اس سے اگر وہ جہنم کود کھے لیں تو اس سے اور زیادہ بھا گیں اور نفرت کریں۔رب فرما تا ہے:وہ کیا چیز ما نگ رہے تھے؟ فرشتے عرض کرتے ہیں:وہ جنت کا سوال کررہے تھے،رب فرما تا ہے:کیا انہوں نے جنت کود یکھا ہے؟ فرشتے کہتے ہیں:نہیں، رب فرما تا ہے:اگروہ جنت کو دکھے لیں تو ان کی کیا حالت ہوگی؟ فرشتے کہتے ہیں:وہ اسے اور زیادہ چاہیں گے۔رب تعالیٰ فرما تا ہے: میں تہمہیں گواہ دکھے لیں تو ان کی کیا حالت ہوگی؟ فرشتے کہتے ہیں:وہ اسے اور زیادہ چاہیں گے۔رب تعالیٰ فرما تا ہے: میں تہمہیں گواہ کے لئے آیا تھا، ربے جلیل فرما تا ہے:یہا لئی جماعت ہے جس کا ہم مجلس وہم شیں بھی محروم نہیں رہتا۔

حضور صَدَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاار شاد ہے كہ سب سے افضل كلمہ جو ميں نے اور تمام انبيائے كرام (عَلَيْهُمُ السَّلام) نے زبان سے اداكيا ہے وہ ہے: آلا اللَّهُ وَ حُدَهُ لَا شَوِيْكَ لَهُ (2)

فرمانِ نبوی ہے کہ جس نے ہرروز ایک سوم تبہ 'آلالهُ الله وَ حُدَهٔ لَا شَرِیْکَ لَهُ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمُدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِیُوّ ''زبان سے اداکیا، اسے دس غلاموں کے آزاد کرنے کے برابر ثواب ماتا ہے، اس کے نامه وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِیُوّ ''زبان سے اداکیا، اسے دس غلاموں کے آزاد کرنے کے برابر ثواب ماتا ہے، اس کے نامه اعمال میں سونیکیاں کسی جاتی ہیں اور اس کے سوگناہ مٹادیئے جاتے ہیں اور اس دن شام تک وہ شیطان سے محفوظ رہتا ہے اور اس سے بڑھ کرکوئی اور عمل نہیں ہوتا مگریہ کہ کوئی شخص اس سے زیادہ باریہ کلمات پڑھے۔ (3)

فرمانِ نبوی ہے: ایسا کوئی بندہ نہیں جو بہترین طریقہ سے وُضوکر ہے، پھر آسان کی طرف نگاہ اٹھا کر کہے: اَشُهَدُ اَنُ لَّا ٓ اِللهُ اِلَّا اللّٰهُ وَ حُدَهُ لَا شَرِیْکَ لَهُ وَ اَشُهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ اوراس کے لئے جنت کے دروازے نہ کھول دیئے جاتے ہوں، پھروہ جس دروازے سے جاہے داخل ہوجائے۔

- ❶.....ترمذي، احاديث شتى، باب ماجاء ان لله ملائكة...الخ، ٥/٤٤٣، الحديث ٢٦١١ بالتقديم والتاخير
 - 2شرح السنة ، كتاب الحج، باب الدعاء يومرعرفة، ٩٣/٤، الحديث ١٩٢٢
 - ۳۲۹۳ ناب بدء الحلق ، باب صفة ابليس و جنوده ، ۲/۲ ، ٤ ، الحديث ٣٢٩٣
 - 4 مسند احمد، مسند عمر بن الخطاب، ٢/١ ه، الحديث ١٢١



خ فضائلِ صلوة ﴿نمازِ ﴾ ﴿

فرمانِ اللِّی ہے

إِنَّ الصَّلَوٰةَ كَانَتُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِلبًّا لَمُوْقُونًا ۞ (1) قق نماز مسلمانوں يروقت مقرر يركه مي موئى ہے۔

اورفر مانِ نبوی ہے:اللّٰہ تعالیٰ نے بندوں پر پانچ نمازیں فرض کیں، جو شخص انہیں باعظمت سجھتے ہوئے مکمل شرائط کے ساتھ اداکر تاہے،اللّٰہ تعالیٰ کااس کے لئے وعدہ ہے کہ وہ اس شخص کو جنت میں داخل فر مائے گا اور جو انہیں کر تا اللّٰہ تعالیٰ کااس کے لئے کوئی وعدہ نہیں ہے، جاہے تواسے عذاب دے اوراگر جاہے تو جنت میں داخل فر مادے۔(2)

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشادِگرامی ہے كەنمازي اپنے اوقات كے مابین سرز دہونیوالے گنا ہوں كا كفاره بیں بشرطیكه بیره گناه سے پر ہیز كیاجائے جسیا كەفر مانِ الهی ہے:

یے شک نیکیاں برائیوں کوکھا جاتی ہیں۔

اِتَّالُحَسَنْتِ يُذُونِينَ السَّيِّاتِ

مطلب پیہ ہے کہ وہ گنا ہوں کا کفارہ ہوجاتی ہیں گویا کہ گناہ تھے ہی نہیں۔

- النساء: ۳۰۱)
 - 2ابوداود، كتاب الوتر، باب فيمن لم يوتر، ٩/٢، الحديث ١٤٢٠
- ١٨١٣ عب الايمان، باب الحادى والعشرين...الخ، فصل في الصلوات...الخ، ٢/٣٤، الحديث ٢٨١٣.
- 4ترجمه كنز الايمان: بِشك نيكيال برائيول كومثاديتي بيل (ب١٢، هود: ١١٤) مسلم، كتاب الطهارة، باب الصلوات الخمس...الخ، ص ١٤٤، الحديث ٢٦ ـ (٢٣٣)

X

بخاری و مسلم اور دیگر اصحابِ سنن وغیره نے حضرت ابن مسعود رَضِیَ اللّه عَنْه سے روایت کی ہے کہ ایک شخص نے کسی عورت کا بوسہ لے لیا اور حضور صَلَّی اللّه عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں حاضر ہوکر بیوا قعہ کہ سنایا، گویا وہ اس کا کفارہ پوچھنا جا ہتا تھا، جب حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم پربی آیت نازل ہوئی:

اور قائم کرنماز دن کے دونوں اطراف میں۔

وَاقِمِ الصَّلُوةَ طَرَفِي النَّهَاسِ (1)

تواس شخص نے عرض کی کہ بیمیرے لئے ہے؟ آپ نے فرمایا: ''میرے ہراس امتی کیلئے ہے جس نے ایسا کا م کیا۔''⁽²⁾

منداحداور سلم شریف میں حضرت ابوا مامہ رَضِی اللهٔ عَنه ہے مروی ہے کہ نبی کریم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں ایک آ دمی حاضر ہوا اور عرض کی کہ مجھ پر حد جاری فرما ہے ؟ اس نے ایک یا دومر تبدیمی بات کہی مگر حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے توجہ نبیں فرمائی ، پھر نماز پڑھی گئی۔ جب نماز ہے آ پ فارغ ہوئ تو فرمایا: وہ آ دمی کہاں ہے؟ اس نے عرض کی: میں حاضر ہوں یارسول الله ! آ پ نے فرمایا: تو نے ممل وضوکر کے ہمار ہے ساتھ ابھی نماز پڑھی ہے؟ اس نے عرض کی: جی باں! آ پ نے فرمایا: ' تو تو گنا ہوں سے ایسا پاک ہے جیسے تیری ماں نے تجھے جنا تھا، آئندہ ایسانہ کرنا!' اس وقت حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم پر بیر آیت نازل ہوئی کہ' نیکیاں گنا ہوں کو یجاتی ہیں' ۔ (3)

اور آ پ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشاد ہے كہ ہمارے اور منافقوں كے در ميان فرق ،عشاءاور فجر كى نماز ہے وہ ان ميں آنے كى طاقت نہيں ركھتے۔ (4)

حضورسرورِ کا ئنات صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کاارشاد ہے: جو خص الله تعالیٰ سے اس حالت میں ملاقات کرے کہ اس نے نمازیں ضائع کردی ہوں توالله تعالیٰ اس کی نیکیوں کی پروانہیں کرے گا۔ ⁽⁵⁾

- ۱۱٤: عود ۱۱۶۰)
 - 2 بخارى، كتاب مواقيت الصلاة ، باب الصلاة كفارة، ١٩٦/١ ١١٠ الحديث ٢٦ ٥
- 3توجمه كنز الايمان: بشك تيكيال برائيول كومثاويتي بيل (ب١٦، هود: ١١٤)المعجم الكبير للطبراني، ١٦٠/٨ ا الحديث ٧٦٧
 - ◘ شعب الايمان، باب الحادي والعشرين...الخ، فصل الصلوات الخمس ...الخ ٢/٣ ٥، الحديث: ٢٥٥٦
 - ٢٢ س. كتاب الكبائر للذهبي، الكبيرة الرابعة في ترك الصلاة ، ص٢٢

فرمانِ نبوی ہے کہ نماز دین کاستون ہے، جس نے اسے چھوڑ دیااس نے دین (کی عمارت) کوڈھا دیا۔ (1) حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے بوچھا گیا کہ کون سائمل افضل ہے؟ تو آپ نے فرمایا کہ نماز کوان کے اوقات میں ادا کرنا۔ (2)

فرمانِ نبوی ہے: جس نے مکمل پاکیزگی کے ساتھ حیجے اوقات میں ہمیشہ پانچے نماز وں کوادا کیا قیامت کے دن نمازیں اس کے لئے نوراور ججت ہونگی اور جس نے انہیں ضائع کر دیاوہ فرعون اور ہامان کے ساتھ اٹھایا جائے گا۔⁽³⁾ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کا ارشاد ہے کہ نماز جنت کی تنجی ہے۔⁽⁴⁾

مزید فرمایا کہ الله تعالی نے تو حید کے بعد نماز سے زیادہ پسندیدہ کوئی عمل فرض نہیں کیااور الله تعالی نے پسندیدگ ہی کی وجہ سے فرشتوں کواسی عبادت میں مصروف فرمایا ہے، لہذاان میں سے پچھر کوع میں، پچھ بجدہ میں، بعض قیام میں اور بعض قعود کی حالت میں عبادت کررہے ہیں۔ (5)

فرمانِ نبوی ہے:''جس نے جان ہو جھ کرنماز چھوڑ دی وہ حد کفر کے قریب ہو گیا'' یعنی وہ ایمان سے نکلنے کے قریب ہو گیا کیونکہ اس نے اللّٰہ کی مضبوط رسی کو چھوڑ دیا اور دین کے ستون کو گرا دیا جیسے اس شخص کو جو شہر کے قریب بہنچ جائے کہا جاتا ہے کہ وہ شہر میں بہنچ گیا ہے ، واخل ہو گیا ہے ، اسی طرح اس حدیث میں بھی فرمایا گیا ہے ۔ واخل ہو گیا ہے ، اسی طرح اس حدیث میں بھی فرمایا گیا ہے ۔

اور حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فرمايا كه جس نے جان بو جھ كرنماز چھوڑ دى وہ محمد صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَى وَمه وارى ئے نكل گيا۔ (7)

حضرت ابوہرریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا فرمان ہے: جس نے بہترین وضوکیا پھرنماز کے ارادہ سے نکلاوہ نماز میں ہے جب تک کہوہ نماز کے ارادہ سے مسجد کی طرف چلتار ہے،اس کے ایک قدم کے بدلے نیکی کھی جاتی ہے اور دوسرے

- ❶تذكرة الموضوعات للفتني، ص٣٨ وكشف الخفاء،٢٧/٢، تحت الحديث ١٦١٩
- 2بخاري ، كتاب التوحيد، باب و سمَّى النبي صلى الله تعالى عليه و سلم...الخ، ٤ / ٩٠٥، الحديث ٢٥٣٤
 - 3مسند احمد، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، ٧٤/٢، الحديث٧٦٥٦
 - 4 ترمذی، کتاب الطهارة، باب ماجاء ان مفتاح...الخ، ١/٨٦ الحديث ٤
- العمال، كتاب الصلاة، الباب الاول...الخ، الفصل الثاني في فضائل الصلاة ، ٢٧/٤ ، الجزء السابع، الحديث ١٩٠٣٤
 - 6المعجم الاوسط ، ٢/٩٩٢ ، الحديث ٣٣٤٨
 - 7 شعب الايمان، الثامن من شعب الايمان...الخ، فصل في بيان كبائر...الخ، ١ / ٢٧٢ ، الحديث ٢٩١

مكاشفة القلوب ۗ

قدم کے بدلہ میں ایک گناہ مٹادیا جاتا ہے۔ جبتم میں سے کوئی ایک اقامت سے تواس کے لئے تاخیر مناسب نہیں ہے، تم میں سے وہ زیادہ اجر پاتا ہے جس کا گھر دور ہوتا ہے، پوچھا گیا: ابوہریرہ اس کی کیا وجہ ہے؟ آپ نے فرمایا: زیادہ قدم چلنے کی وجہ سے اسے بیفضیات حاصل ہے۔ (1)

اوررسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِے فرمایا: تنهائی کی عبادت سے افضل کوئی عمل نہیں ہے جس کی بدولت الله تعالیٰ کا قرب جلد حاصل ہو جائے۔(2)

حضور نبی کریم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کاارشاد ہے کہ ایسا کوئی مسلمان نہیں ہے جورضائے الٰہی کے لئے سجدہ کرتا ہے اور اس کے ہر سجدہ کے بدلے میں اس کا ایک درجہ بلندنہ ہوتا ہوا وراللہ تعالی اس کا ایک گناہ نہ مٹادیتا ہو۔⁽³⁾

مروی ہے کہ ایک شخص نے حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے عض کی کہ میرے لئے دعافر مائے کہ الله تعالی مجھے آپ کی شفاعت کے مستحقین میں سے بنائے اور جنت میں آپ کی صحبت نصیب فرمائے ، حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ کثر تے ہجود سے میری اعانت طلب کرو۔ (4) (یعنی کثرت سے عبادت کرو)

نیز کہا گیا ہے کہ انسان سجدہ میں رب کے بہت قریب ہوتا ہے چنانچ فرمانِ الہی ہے:

وَاسُجُدُواقَتَوبُ ® وَاسْجُدُواقَتَوبُ ®

فرمانِ اللي ہے:

ان کی نشانی ان کے چہروں پر سجدوں کے اثر ات ہیں۔

سِيْمَاهُمْ فِي وُجُوهِ مِنْ مَقِنَ السُّجُودِ (6)

اس آیت کی تفسیر میں مختلف اقوال ہیں: بیر کہ اس سے مراد چېروں کا وہ حصہ ہے جو سجدوں کے وقت زمین سے

- 1مؤطا امام مالك، كتاب الطهارة، باب جامع الوضوء، ١/٤٥، الحديث ٢٧
 - 2الزهد لابن المبارك، باب العمل والذكر الخفي، ص ٥٠ الحديث ١٥٤
- **3**ابن ماجه، كتاب الصلاة، باب ماجاء في كثرة السحود ، ١٨٢/٢ ، الحديث ١٤٢٣
- 4.....مسلم، كتاب الصلاة، باب فضل السّحود والحتّ عليه، ص٥٣، الحديث ٢٢٦_ (٤٨٩) و مصنف ابن ابي شيبه، الركوع و السحود افضل ام القيام، ٢٠/٢، الحديث ٨
- ہے۔۔۔۔۔تو جمهٔ کنز الایمان: اور سجدہ کرواور ہم سے قریب ہوجاؤ۔ (ب ۳۰ العلق: ۱۹) بیآ یت سجدہ ہے اور آیت سجدہ پڑھنے یا سننے سے سجدہ واجب ہوجا تا ہے خواہ سنایا پڑھنا بالقصد ہو یا بلاقصد اور اسی طرح ترجمہ کا حکم ہے۔علمیہ
 - الفتح: ۲۹) ما الميمان: ان كى علامت ان كے چېرول ميں ہے جدول كے نشان سے (پ۲۱، الفتح: ۲۹)

گتاہے یا یہ کہ اس سے مراد خشوع وخضوع کا نور ہے جو باطن سے ظاہر پر چمکتا ہے اور اس کی شعا کیں چہروں پر نمایاں ہوتی ہیں اور یہی بات زیادہ صحیح ہے۔ (1) یا یہ کہ اس سے مراد وہ نور ہے جو وضو کے نشانات پر قیامت کے دن ان کے چہروں پر چکے گا۔ فرمانِ نبوی ہے: جب انسان سحدہ کی آیت پڑھ کر سجدہ کرتا ہے تو شیطان روتے ہوئے علیحدہ ہوجا تا ہے اور کہتا ہے: ہائے افسوس! اسے سجدوں کا تکم دیا گیا اور اس نے سجدہ کرکے جنت پالی اور مجھے سجدے کا تکم دیا گیا تھا گرمیں نے نافر مانی کی اور میرے لئے جہنم بنایا گیا۔ (2)

حضرت علی بن عبدالله بن عباس دَضِیَ اللهُ عَنْهُمُ سے مروی ہے کہ آپ ہرروز ہزار جودکرتے تھاس لئے لوگ انہیں سجادکہا کرتے تھے۔

مروی ہے کہ حضرت عمر بن عبدالعزیز رضی اللهٔ عنه ہمیشمٹی پرسجدہ کیا کرتے تھے۔

حضرت بوسف بن اسباطرَ حُمَةُ اللهِ عَلَيْهُ فر ما ياكرت: اے جوانو! مرض سے پہلے تندرسی کوغنیمت سمجھتے ہوئے آگے بردھو، سوائے ایک آ دمی کے اور کوئی ایسانہیں ہے جس پر میں رشک کرتا ہوں ، وہ ہے رکوع اور سجو دکمل کرنے والا ، یہی میرے اور اس کے درمیان حائل ہوگئے ہیں۔ (3)

حضرت ِسعید بن جبیر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه فرماتے ہیں کہ بچود کے سوامجھے دنیا کی کسی چیز سے اُنس نہیں ہے۔

حضرت عقبہ بن مسلم رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه نے کہاہے:الله تعالیٰ کو بندہ کی اس عادت سے بڑھرکوئی اور چیز زیادہ پسند نہیں ہے جس میں وہاللہ تعالیٰ کی ملاقات کو پیند کرتا ہے اورایسا کوئی لمحنہیں ہے جس میں انسان اللہ کے قریب تر ہو جاتا ہو جبکہ وہ سربسکو دہوجاتا ہے۔

حضرت ابوہر ریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا فرمان ہے: انسان تحبدہ کی حالت میں رب سے بہت قریب ہوجا تا ہے الہذا سجود میں بہت زیادہ دعا ئیں ما نگا کرو۔

- 🗨اس نکته پرتفصیل کے لیے ملاحظہ سیجیح عوارف المعارف ازشیخ المشائخ حضرت سہرور دی۔
- 2 مسلم كتاب الايمان، باب اطلاق رسم الكفر...الخ، ص ٥٦، الحديث ١٣٣ ـ (٨١)
- 3 حضرت ِ یوسف بن اسباطرَ حُمَهُ اللهِ عَلَیْه ضعف اور بڑھا ہے کی وجہ ہے رکوع و بچود کامل طور پرادانہیں کرپاتے تھے اس لیے کامل رکوع و بچود کرنے والوں پررشک فرماتے ۔علمیه

اب 49

$\left<\frac{1}{2}$ تارک نماز پر عذاب $\left<\frac{1}{2}\right>$

دوز خیوں کے متعلق خبر دیتے ہوئے رہ جلیل نے فر مایا کہ ان سے جہنم میں یہ بو چھاجائے گا کہ ' تم کوجہنم میں کیا چیز لے گئی وہ کہیں گے کہ ہم نماز پڑھنے والوں میں سے نہ تھے اور نہ مسکینوں کو کھانا کھلانے والوں میں سے تھے بلکہ بحث کرنے والوں کے ساتھ بحث کما کرتے تھے۔'،(1)

حضرت ِ احمد رَضِيَ اللَّهُ عَنْه سے روایت ہے کہ آ دمی اور کفر کے در میان فرق ، نماز کا جھوڑ دینا ہے۔

مسلم کی روایت ہے کہ آ دمی اور شرک یا کفر کے درمیان فرق نماز کا چھوڑ دینا ہے۔ (3)
ابوداؤ داور نسائی کی روایت ہے کہ بندے اور کفر کے درمیان نماز چھوڑ دینے کے سوااور کوئی فرق نہیں۔ (4)
تر فدی کی روایت ہے کہ کفراور ایمان کے درمیان فرق ترک نماز ہے۔ (⁵⁾
ابن ماجہ کی روایت ہے کہ بندے اور کفر کے درمیان فرق نماز کا چھوڑ وینا ہے۔ (⁶⁾
تر فدی وغیرہ کی روایت ہے: حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ ہمارے اور ان کے درمیان فرق نماز کا ہے،

- 🗗 تو جمه کنز الایمان: تهمین کیابات دوزخ میں لے گئی وہ بولے ہم نماز نہ پڑھتے تھے اور سکین کوکھانا نہ دیتے تھے اور بیہودہ فکر والوں کے ساتھ بیہودہ فکریں کرتے تھے۔ (پ۶۰، المدثر: ۲۶-۶۵)
 - 2مسند احمد، مسند جابر بن عبدالله، ٥/٩٩، الحديث ٥١٨٥
 - 3 مسلم ، كتاب الايمان، باب اطلاق اسم الكفر...الخ، ص ٥٧ ، الحديث ١٣٤_ (٨٢)
 - 4 نسائي ، كتاب الصلاة ، باب الحكم في تارك الصلاة ، ص ٨٤، الحديث ٢٦١
 - 5..... ترمذي ، كتاب الإيمان ، باب ماجاء في ترك الصلاة ، ٢٨١/٤ ، الحديث ٢٦٢٧
 - 6ابن ماجه، كتاب الصلاة ، باب ماجاء فيمن ترك الصلاة ، ١/١ ٥٦، الحديث ١٠٧٨

جس نے نماز حیور دی اس نے کا فروں جیسا کام کیا۔

طبرانی کی روایت ہے کہ جس نے عَمَداً نماز حِیموڑ دی اس نے تعلم کھلا کا فروں جیسا کام کیا ہے۔

ایک روایت میں ہے کہ بندے اور شرک یا کفر کے درمیان فرق ترکیے نماز ہے، جب اس نے نماز چھوڑ دی تو کا فروں جبیبا کام کیا۔⁽³⁾

دوسری روایت میں ہے کہ بندے اور شرک یا کفر کے درمیان نماز چھوڑنے کے سوا اور کوئی فرق نہیں ہے، جس نے''نماز'' چھوڑ دی اس نے مشر کو ں جیسا کام کیا۔⁽⁴⁾

ایک اور روایت میں ہے کہ اس نے اسلام کو بر ہنہ کر دیا اور اسلام کی تین بنیادیں ہیں جن پر اسلام کی عمارت قائم ہے، جس نے ان میں سے ایک کوترک کر دیا، وہ کا فر ہے اور اس کا قتل کر دینا حلال ہے، کلمہ شہادت پڑھنا یعنی الله تعالیٰ کی وحد انیت کی گواہی دینا، فرض نماز ادا کرنا اور رمضان کے روزے رکھنا۔ (5)

دوسری روایت جس کواسنادِ حسن کے ساتھ نقل کیا گیا ہے، یہ ہے کہ جس نے ان میں سے کسی ایک کوچھوڑ دیا وہاللہ تعالیٰ کامنکر ہے،اس سے کوئی حیلہ اور بدلہ قبول نہیں کیا جائے گا اوراس کا خون اور مال لوگوں کے لئے حلال ہے۔ (6)

طبرانی وغیرہ میں وہ بطریق حسن مروی ہے: حضرت عبادہ بن صامت دَضِیَ اللّه عَنْه نے کہاہے کہ مجھے رسول اللّه صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِي اللّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِي اللّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَي اللّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّه عَلَيْهِ وَسَلَّم فَي اللّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّه اللّه عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّه اللّه عَلَيْه وَسَلَّم اللّه اللّه عَلَيْهِ وَسَلّه وَاللّه اللّه عَلَيْهِ وَسَلّه وَاللّه وَاللّهُ وَاللّه وَاللّه وَاللّهُ وَاللّ

- 1 ترمذى، كتاب الايمان، باب ماجاء في ترك الصلاة، ٢٨٢/٤، الحديث ٢٦٣٠
 - 2المعجم الاوسط ، ٢/٩٩٢ ، الحديث ٣٣٤٨
- السنن الدارمي، كتاب الصلاة ، باب في تارك الصلاة ، ٧/١، الحديث ١٢٣٣ و ابن ماجه، كتاب الصلاة ، باب ماجاء فيمن ترك الصلاة ، ٢٠٤١ ، الحديث ١٠٧٩ ماخوذًا
 - 4ابن ماجه ، كتاب الصلاة، باب ماجاء فيمن ترك الصلاة ، ١ / ٥٦٥ ، الحديث ١٠٨٠
 - 5 مسند ابي يعلى، مسند ابن عباس ، ٣٧٨/٢ ، الحديث ٥ ٢٣٤
 - 6الترغيب و الترهيب ، كتاب الصلاة، الترهيب من ترك الصلاة ... الخ، ١ / ٢٦٠ الحديث ١ ٨٢ م

دین سے نکل گیا، گناہ اور نافر مانی نہ کرویہ اللّٰہ تعالیٰ کے قہر کے اسباب ہیں اور شراب نہ پیو کیونکہ بیا گنا ہوں کامنبع ہے۔ (الحدیث)

تر مذی کی روایت ہے کہ حضرت محمصطفیٰ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے صحابہ کرام رَضِیَ اللهُ عَنْهُم ترک ِنماز کے علاوہ کسی اور عمل کے حچھوڑ نے کو کفرنہیں سمجھتے تھے۔⁽²⁾

صحح حدیث میں ہے کہ بند ہےاور کفروایمان کے درمیان فرق نماز ہے، جباس نے نماز حچوڑ دی تو گویاس نے شرك كما ـ ⁽³⁾

بزاز کی روایت ہے کہ جونماز اوانہیں کرتااس کا اسلام میں کوئی حصنہیں ہے اور جس کا وضوصیح نہیں ہے اس کی نمازنہیں (4)

طبرانی کی روایت ہے کہ جس شخص میں امانت نہیں اس کا بمان نہیں جس کا وضو تھیے نہیں ،اس کی نماز نہیں اور جس نے نمازنہیں پڑھی اس کا دین نہیں رہا، جیسے وجود میں سر کا مقام ہے اسی طرح دین میں نماز کا مقام ہے۔ ⁽⁵⁾

ا بن ماجدا وربيهق ميں حضرت ابوالدر داء دَضِيَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے کہ مجھے میرے حبیب صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے وصیت فر مائی:اللّٰہ تعالیٰ کےساتھ شرک نہ کراگر چہ تجھے کاٹ دیا جائے اورجلا دیا جائے ،فرض نماز عَمَداً نہ جچھوڑ کیونکہ

جس نے عَمَداً نماز حِصورٌ دی وہ ہمارے ذمہ سے نکل گیااور شراب نہ بی کیونکہ بیہ ہر برائی کی تنجی ہے۔ ⁽⁶⁾

مند بزاز میں حضرت ابن عباس رَضِي اللهُ عَنهُمَا ہے مروی ہے: آ ب نے فرمایا: جب میری پتلیول کی صحت کے باوجودمیری بینائی ضائع ہوگئ تو مجھ سے کہا گیا کہ آپ کچھنماز چھوڑ دیں،ہم آپ کاعلاج کرتے ہیں، میں نے کہا:ایسا تهين ہوگا كيونكه ميں نے رسول الله صَلَى اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم سے سناہے، آپ نے فرمایا: جس نے نماز جھوڑ دی وہ الله تعالی

- 1الاحاديث المختارة، مسند انس بن مالك، ٢٨٧/٨، الحديث ٢٥١
- 2ترمذي، كتاب الايمان، باب ماجاء في ترك الصلاة ، ٢٨٢/٤، الحديث ٢٦٣١
- ۱۰۸۰ ماجه ، كتاب الصلاة ، باب ماجاء فيمن ترك الصلاة ، ۱/٥٦٥، الحديث ۱۰۸۰
 - 4 مسند البزار، ٥ / ١٧٦/ ، الحديث ٨٥٣٩
 - 5المعجم الاوسط، ١٦٢٦، الحديث ٢٢٩٢
 - 6ابن ماجه ، كتاب الفتن، باب الصبر على البلاء ، ٢٧٦/٤ الحديث ٤٠٣٤

سے اس حال میں ملاقات کرے گا کہ الله تعالیٰ اس برناراض ہوگا۔ (1)

طبرانی کی ایک روایت ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں ایک شخص نے حاضر ہوکرع ض کی کہ مجھے ایسا عمل بتا ہے جسے کر کے میں جنت میں جاؤں۔ آپ نے فرمایا:الله تعالی کے ساتھ شرک نہ کرا گرچہ تجھے عذاب دیا جائے اور زندہ جلادیا جائے ، والدین کا فرماں بردارین ،اگرچہ وہ تجھے تیرے تمام مال واسباب سے بے دخل کردیں اور جان بوجھ کرنماز نہ چھوڑ کیونکہ جس نے دیدہ دانستہ نماز چھوڑ دی وہ الله تعالی کے ذمہ سے نکل گیا۔ (2)

ایک اور روایت میں ہے: الله تعالی کے ساتھ شرک نہ کراگر چہ تجھے قبل کر دیا جائے اور جلا دیا جائے ، والدین کی نافر مانی نہ کراگر چہ وہ تھے تیرے اہل وعیال اور مال سے نکال دیں ، فرض نماز کو عمداً نہ چھوڑ کیونکہ جس نے جان ہو جھ کر نماز چھوڑ دی وہ الله تعالیٰ کے ذمہ ہے نکل گیا ، شراب بھی نہ پی کیونکہ اس کا پینا ہر برائی کی بڑو ہے ، خودکو'' نافر مانیوں' سے بچا کیونکہ ان سے الله تعالیٰ ناراض ہوجا تا ہے ، اپنے آپ کو جنگ کے دن بھاوڑ ابنے سے بچااگر چہلوگ ہلاک ہوجا کیں اور لوگ مرجا کیں مگر تو ثابت قدم رہ ، اپنی طاقت کے مطابق اپنے اہل وعیال پرخرج کر ، ان کی تا دیب ہے بھی عافل نہ ہواور آنہیں خوف خدا دلاتارہ ۔ (3)

صحیح ابن حبان میں روایت ہے کہ بادل والے دن نماز جلدی پڑھالیا کرو کیونکہ جس نے نماز چھوڑ دی اس نے کفر کیا۔(4)

'' طبرانی'' میں حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی کنیز حضرتِ المیمه دَضِیَ اللَّهُ عَنْهَا سے مروی ہے کہ میں ایک مرتبہ حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے سر پر پانی ڈال رہی تھی کہ ایک شخص نے آ کرکہا: مجھے وصیت فرمائی جائے ، حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نَے سر پر پانی ڈال رہی تھی کہ ایک شخص نے آ کرکہا: مجھے وصیت فرمائی جائے ، والدین کی''نافرمانی'' وَسَلَّم نِے فرمایا: اللَّه تعالیٰ کے ساتھ کسی کوشریک نہ بنااگر چہ تھے کاٹ دیا جائے اور جلا دیا جائے ، والدین کی''نافرمانی'' نہ کراگر چہ وہ تھے تیرے گھر اور مال و دولت کے چھوڑ نے کا کہیں توسب پچھ چھوڑ دے، شراب بھی نہ بی کیونکہ بہ ہر

¹ ١١٧٨٢، المعجم الكبير، ١ ١ / ٢٣٤، الحديث ١١٧٨٢

^{2}المعجم الاوسط ،٦ / ٤٩ ، الحديث ٧٩٥٦

^{3}مسند احمد، مسند الانصار، حديث معاذ بن جبل، ٢٤٩/٨ ١٠ الحديث ٢٢١٣٦

^{4}صحيح ابن حبان ، كتاب الصلاة باب الوعيد على ترك الصلاة ، ٢/٣ ١ ، الجزء الثالث ، الحديث ٢٦١ ،

برائی کی تنجی ہےاورفرض نماز بھی بھی جان بو جھ کرنہ چھوڑ کیونکہ جس نے ایسا کیا وہ اللّٰہ اوراس کے رسول کے ذیمہ سے نکل گیا۔⁽¹⁾

ابونعیم کی روایت ہے کہ جس شخص نے جان بوجھ کرنماز چھوڑ دی ،اللّٰہ تعالیٰ اس کا نام'' جہنم'' کے اس درواز بے پر لکھ دیتا ہے جس میں سے اسے داخل ہونا ہوتا ہے۔ (2)

طبرانی اور بیہق کی روایت ہے کہ جس نے نماز چھوڑ دی گویااس کا مال اوراہل وعیال (سب پھی)ختم ہوگیا۔ (3)
حاکم نے حضرت علی دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے روایت کی ہے کہ حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فر مایا: اے گرووقریش! تم نماز ضرورا داکرواورز کو قاداکرونہیں تواللّٰہ تمہاری طرف ایسے خص کو بھیج گاجودین کے لئے تمہاری گردنیں اڑادے گا۔ (4)
بزاز کی روایت ہے کہ جو تخص نماز ادانہیں کرتااس کا دین میں کوئی حصنہیں ،اور جس کاؤضو تی نہیں اس کی نماز ہے۔ نہیں۔ (5)

منداحدی ایک مرسل روایت ہے کہ الله تعالی نے اسلام میں چار چیزیں فرض کی ہیں، جو محض ان میں سے تین کو پورا کرتا ہے مگر ایک کو چھوڑ دیتا ہے اسے عذاب سے کوئی چیز نہیں بچائے گی تا آ نکہ وہ چاروں پڑمل کرے، نماز، زکو ق،روز ہ اور رجح ۔ (6)

اَصِها نی کی روایت ہے کہ جس نے عَمَداً نماز چھوڑ دی ،الله تعالیٰ اُس کے اعمال کو ہر بادکر دیتا ہے اور اُسے اپنے

^{1}المعجم الكبير، ٢٤/١٩٠١ الحديث ٤٧٩

الجزء الترهيب عن ترك الصلاة ، الباب الاول...الخ ، الفصل الثاني...الخ ، الترهيب عن ترك الصلاة ، ١٣٢/٤ ، الجزء السابع ، الحديث ١٩٥٨ وحلية الاولياء ، مسعر بن كدام ، ١٩٩/٧ ، الحديث ١٩٥٨ .

الحماعة، الايمان، الحادى و العشرون من شعب الإيمان، باب في الصلوات، فصل الصلوات الخمس في الجماعة، ٢/٣ م، الحديث ٤ ٨ ٨ و كنز العمال، كتاب الصلاة الباب الاول... الخ، الفصل الثاني... الخ، الترهيب عن ترك الصلاة ، ٤ / ٢ ٨ ١ الجزء السابع، الحديث ٥ ٨ ٠ ٨ ١

^{4}المستدرك للحاكم ،كتاب الايمان والنذور، باب من قال انا برئ...الخ، ٥/٥ ٤، الحديث ٧٨٨٩

^{5} مسند البزار، ١٧٦/١، الحديث ٢٥٣٩

^{6} مسند احمد ، مسند الشاميين، حديث زياد بن نعيم...الخ ، ٢٣٦/٦، الحديث ٤٠٨٠٤

ذمہ سے نکال دیتا ہے یہاں تک کہوہ الله کی بارگاہ میں توبہ کرے۔ (1)

طبرانی کی روایت ہے کہ جس نے نماز حیموڑ دی اس نے تھلم کھلا کفر کیا۔ (2)

مسندِ احمد میں روایت ہے کہ عَمداً نماز کو نہ چھوڑ و کیونکہ جس نے جان بو جھ کرنماز چھوڑ دی اُس سے اللہ اور رسول کا ذمة تم ہو گیا۔ ⁽³⁾

ابن ابی شیبهاور تاریخ بخاری میں حضرت علی _{دَطِ}ئے اللّٰهُ عَنْه پرموقوف روایت ہے: جس نے نمازنه پڑھی وہ کا فر (4) _

محد بن نصر اور ابن عبد البردَجِ مَهُمَا اللهُ تَعَالَى ابنى مسانيد ميں حضرت ابن عباس دَضِيَ اللهُ عَنهُمَا عِيم کرتے میں کہ جس نے نماز چھوڑ دی اس نے کفر کیا۔ (5)

ابن نصر رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْه نِه ابن مسعود رَضِيَ اللَّهُ عَنْه سے موقوف روایت کی ہے کہ جس نے نماز جیموڑ دی اس کا دین نہیں ہے۔

ابن عبدالبرنے حضرتِ جابر رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ تک موقوف روایت کی ہے کہ جس نے نماز نہیں پڑھی وہ کا فرہے۔ ⁽⁷⁾ ایک اور روایت میں ہے جوابوالدر داء رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ پر موقوف ہے کہ جونماز ادانہیں کرتا اس کا ایمان نہیں ہے اور

- ❶الترغيب والترهيب، كتاب الصلاة ، الترهيب من ترك الصلاة...الخ ، ١ / ٢٦١، الحديث ٨٢٨
 - 2المعجم الاوسط ، ٢/٩٩٢ ، الحديث ٣٣٤٨
- - 4مصنف ابن ابي شيبة ، كتاب الايمان والرء ويا ، باب ٦ ، ٢٢٨/٧، الحديث ٨٥
- 5تعظيم قدر الصلاة لمحمد بن نصرالمروزي، باب ذكر اكفارتارك الصلاة ، ٢/٠٠٠، الحديث ٩٣٩، سورة البقرة، تحت الآية: ٣/١٠٢٥ و صحيح ابن حبان، كتاب الصلاة ، باب الوعيد على ترك الصلاة ، ٣/٣، الحديث ١٤٦١
 - الحديث ٩٣٥ و شعب الايمان، الصلاة ١٩٨/٢، الحديث ٩٣٥ و شعب الايمان، الحديث ٢٨٠٧ و الدرالمنثور، سورة البقرة ،
 الحادى و العشرون من شعب الإيمان، باب في الصلوات، ٣٩/٣، الحديث ٢٨٠٧ و الدرالمنثور، سورة البقرة ،
 تحت الآبة: ٣٥٦، ٢١/١٧
 - الترغيب والترهيب، كتاب الصلاة ، الترهيب من ترك الصلاة . . . الخ ، ١ / ٢٦١ ، الحديث ٨٣٣ و الدر المنثور، سورة البقرة، تحت الآية : ٣٠٦ / ٢١٣ / ٧١٣

جس کا وضونہیں اس کی نماز نہیں ۔⁽¹⁾

ابن الی شیبہ کی روایت ہے: حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جس نے نماز چھوڑ دی اس نے کفر کیا۔ (2) محمد بن نصر دَضِیَ اللَّهُ عَنْه سے مروی ہے کہ میں نے آٹخق سے سنا، وہ کہتے تھے: حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے بیہ حدیث صحیح ثابت ہے کہ آپ نے فرمایا: تارک ِنماز کا فرہے۔ (3)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كِز مان مقدسه سے لےكر آج تك تمام علماء كى رائے ہے كہ تاركِ نماز جو بغيركس عذر كے نماز نہيں پڑھتا ختى كه نماز كا وقت نكل جاتا ہے تو وہ كا فرہے۔ (4)

حضرت الوب رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فرمات بين كه ترك نماز "كفر" ہے جس ميں سي كو إختلاف نہيں ہے۔

فرمانِ اللي ہے:

پس ان کے بعد بر بےلوگ جانشین ہوئے جنبوں نے نمازوں

کوضائع کیااورخواہشات نفسانی کی پیروی کی پس عنقریب وہ

غی میں جائیں گے مگرجس نے توبہ کی (وہ محفوظ رہے گا)۔

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِ هِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّاوة

وَاتَّبَعُواالشَّهَوْتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿ إِلَّا

مَنْتَابَ (5)

حضرت ابن مسعود رَضِیَ اللَّهُ عَنُه فرماتے ہیں کہ ضائع کرنے کا یہ معنی نہیں ہے کہ بالکل نماز پڑھتے ہی نہیں بلکہ بیک اسے مؤخر کرکے پڑھتے ہیں۔

امام التابعين حضرت معيد بن مسيّب دَضِيَ اللّهُ عَنْه فرمات بين كهاس آيت ميں ضياع سے بيمراد ہے كہ ظہر كى

-الترغيب والترهيب، كتاب الصلاة، الترهيب من ترك الصلاة...الخ، ١/١ ٢٦ ،الحديث ٨٣٤
 - 2مصنف ابن ابي شيبة ، كتاب الايمان والرء ويا ، باب ٦ ، ٢ ، ٢ ، ٢ ، الحديث ٤٥
- الحديث ، ۱۹۲۹ ، الحديث ، ۹۹ و الحديث ، ۹۹ و التوغيم قتل المسلمين...الخ ، ۹۲۹/۲ ، الحديث ، ۹۹ و الترغيب والترهيب ، کتاب الصلاة ، الترهيب من ترك الصلاة ...الخ ، ۲٦۱/۱ ، الحديث ۸۳٤
 - 4المرجع السابق
- ستو جمه کنز الایمان: توان کے بعدان کی جگہ وہ ناخلف آئے جنہوں نے نمازیں گنوائیں (خائع کیں) اوراپی خواہشوں کے پیچھے ہوئے تو عنقریب وہ دوزخ میں فی کا جنگل یا ئیں گے مگر جوتائی ہوئے ۔ (پ۲۱ مریم: ۹۰۰۰۶)

مكاشفة القلوب ۗ

عصر کے وقت اور عصر کی مغرب کے وقت اور مغرب کی عشاء کے وقت اور عشاء کی فجر کے وقت اور فجر کی سورج کے طلوع ہونے کے وقت کے قریب پڑھی جائے ، جو شخص اس طریقہ سے نمازیں پڑھتا ہوا مرجائے اور اس نے تو بہنہ کی تو الله تعالیٰ نے اس کے لئے " غَی" کا وعدہ فر مایا ہے جوجہنم کی ایک گہری اور عذاب سے بھر پوروادی ہے۔

فرمانِ الهي ہے:

اے ایمان والو تہمیں تمہارے مال اور تمہاری اولا داللہ کے ذکر سے غافل نہ کرے اور جس نے ایسا کیا پس وہ لوگ خسارہ پانے والے ہیں۔

ێٵؿۘۿٵڵۧڹؚؽؽٵڡؘڹؙۅٛٵڵٵؙۛۑۿڴؙؚؠٵؘڡٛۅٵؽؙڴؠؙۅؘڵٳۤٵۅؙڵۮػؙؠٝ ۼڽ۬ڎؚػ۫ڔٳۺ۠ۼ^ۦٛۅڡ؈ؿؖڣ۫ۼڶڎ۬ڸڬٷٲۅڵڸٟڬۿؠؙ ٵٮؙڂڛۯۅؙڽٛ۞⁽¹⁾

مفسرین کی ایک جماعت کا قول ہے: یہاں ذکر سے مرادنمازیں ہیں لہٰذا جو شخص نماز کے وقت اپنے مال کی وجہ سے جیسے اس کی خرید و فروخت وغیرہ میں مشغول ہوکرنماز سے غافل ہوگیا یا اپنی اولا دمیں مشغول ہوکرنماز بھول گیا وہ نقصان پانے والوں میں سے ہے۔اسی لئے حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا فرمان ہے کہ قیامت کے دن انسان کے سب اعمال سے پہلے نماز کا محاسبہ ہوگا ،اگر اس کی نمازیں کم ہوگئیں تو وہ فلاح و کا مرانی پاگیا اور اگر اس کی نمازیں کم ہوگئیں تو وہ فالاح و کا مرانی پاگیا اور اگر اس کی نمازیں کم ہوگئیں تو وہ فالاح و کا مرانی پاگیا اور اگر اس کی نمازیں کم ہوگئیں تو وہ فالاح و کا مرانی پاگیا اور اگر اس کی نمازیں کم ہوگئیں تو وہ فالاح و کا مرانی پاگیا اور اگر اس کی نمازیں کم ہوگئیں تو وہ فائب و خاسر ہے۔

اورفر مان الهي ہے:

یں ویل ہےان نمازیوں کیلئے جواپی نمازوں سے بے خبر ہیں۔

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ أَنْ الَّذِيْنَهُمْ عَنْ صَلاَتِهِمْ سَاهُوْنَ ۞ (3)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فرمایا: بیده الوگ ہیں جونماز وں کوان کے اوقات سے مؤخر کر کے پڑھتے ہیں۔ (4) مسندا حمد کی بسند سیح مطبر انی اور سیح ابن حبان کی روایت ہے کہ حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے ایک دن نماز کا تذکره فرمایا اور فرمایا: جس نے ان نماز وں کو پابندی سے ادا کیا، وہ نماز اس شخص کے لئے قیامت کے دن نور، ججت اور نجات

- 1تو جمهٔ کنز الایمان: اے ایمان والواجمہارے مال نتمہاری اولا دکوئی چیز تهمیں الله کے ذکر سے غافل نہ کرے اور جوابیا کرے تو وہی لوگ نقصان میں ہیں۔ (پ۲۸، الملفقون: ۹)
 - 2المعجم الاوسط ، ٣٢/٣ ، الحديث ٣٧٨٢
 - 3ترجمه کنز الایمان: توان نمازیول کی خرابی ہے جواپی نماز سے محولے بیٹے ہیں۔(پ۳۰، الماعون: ٥٠٤)
 - 4مسند ابي يعلى، مسند سعد بن ابي وقاص، ١/١ ٣٤ ، الحديث ٨١٨

ہوگی اور جس شخص نے نماز وں کوادانہ کیا قیامت کے دن اس کے لئے نماز نور، ججت اور نجات نہ ہوگی اور وہ قیامت کے دن قارون، فرعون، ہامان اورانی بن خلف کے ساتھ ہوگا۔ (1)

بعض علاء کا کہنا ہے: ان لوگوں کے ساتھ تارک ِ نماز اس لئے اٹھایا جائےگا کہ اگر اس نے اپنے مال واُسباب میں مشغولیت کی وجہ سے نماز نہیں پڑھی تو وہ قارُون کی طرح ہو گیا اور اس کے ساتھ اٹھایا جائے گا، اگر ملک کی مشغولیت میں نماز نہیں پڑھی تو فرعون کی طرح ہے اور اس کے ساتھ اٹھایا جائے گا، اگر وزارت کی مشغولیت نماز سے مانع ہوئی تو وہ ہامان کی طرح ہے اور اس کے ساتھ اٹھے گا، اگر تجارت کی وجہ سے نماز نہیں پڑھی تو وہ ابی بن خلف تا جر مکہ کی طرح ہے اور اس کے ساتھ اٹھایا جائے گا۔

برزاز نے حضرت ِ سعد بن ابی وقاص رَضِیَ اللهٔ عَنُه ہے روایت کی ہے کہ میں نے حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے اس آیت کے معنی پوچھے''جولوگ اپنی نمازوں سے بے خبر ہیں' تو آپ نے فرمایا کہ بیدہ وولوگ ہیں جونمازوں کوان کے اوقات سے مؤخرکردیتے ہیں۔(2)

ابویعلی نے سند حسن کے ساتھ مصعب بن سعد دَضِیَ اللّه عَنهُ کا قول اپنی مسند میں نقل کیا ہے۔ مصعب دَضِیَ اللّه عَنهُ کا قول اپنی مسند میں نقل کیا ہے۔ مصعب دَضِیَ اللّه عَنهُ فرماتے ہیں: میں نے اپنے والدسے عرض کی اباجان! آپ نے اللّه تعالیٰ کے اس فرمان پرغور کیا ہے: ''جولوگ اپنی نماز ول سے بخبر ہیں''ہم میں سے کون ہے جونہیں بھولتا اور اس کے خیالات منتشر نہیں ہوتے ؟ انہوں نے جواب دیا اس کا مطلب نہیں بلکہ اس کا مطلب نماز ول کا وقت ضائع کر وینا ہے۔ (3)

ویل کے معنی شخت عذاب ہے، ایک قول یہ بھی ہے کہ ویل جہنم کی ایک وادی کا نام ہے، اگر اس میں دنیا کے پہاڑ ڈالے جائیں تو وہ بھی اس کی شدیدگرمی کی وجہ ہے پھل جائیں اور بیوادی ان لوگوں کامسکن ہے جونمازوں میں سستی کرتے ہیں اوران کوان کے اوقات سے مؤخر کر کے پڑھتے ہیں، ہاں اگروہ الله تعالیٰ کی طرف رجوع اور تو بہ کرلیں اور گزشتہ اعمال پر پشیمان ہوجائیں تو اور بات ہے۔

^{1} مسند احمد، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، ٢٥٧٤/٢ ، الحديث ٢٥٨٧

^{2}مسند البزار ، ٣٤٤/٣ ، الحديث ١١٤

^{3}عسند ابي يعلى، مسند سعد بن ابي وقاص، ١/٠٠٣، الحديث ٧٠٠

صیح ابن حبان کی روایت ہے کہ جس کی نماز قضاء ہوگئی تو گویا اُس کا مال اور گھر انا تباہ ہو گیا۔ (1) حاکم کی روایت ہے کہ جس نے بغیر کسی عذر شرعی کے دونماز وں کو یکجا کیا تو وہ کبیرہ گنا ہوں کے دروازہ میں واخل ہوا۔ ⁽²⁾

صحاح سته کی روایت ہے کہ جس کی نمازِ عصر قضا ہوگئی تو گویااس کے اہل وعیال اور مال متاہ ہوگیا۔ (3) ابن خزیمہ دَ حُمَةُ اللهِ عَلَيْه نے اپنی ' دصیح'' میں ان الفاظ کا اضافہ کیا ہے کہ امام مالک کا قول ہے کہ اس سے مرادوفت کا نکل جانا ہے۔ (4)

نسائی کی روایت ہے کہ نماز وں میں ایک نماز ایسی ہے کہ جس کی وہ نماز قضا ہوگئ تو گویا اس کے اہل وعیال اور مال ومتاع سب نتاہ ہوگیا اور وہ نماز عصر ہے۔ ⁽⁵⁾

مسلم اورنسائی کی روایت ہے کہ بینما نِ عصرتم سے پہلے لوگوں پر پیش کی گئی لیکن انہوں نے اسے کھودیا، پستم میں سے جو شخص اسے پابندی سے پڑھتا ہے اسے دوگنا ثواب ملتا ہے اور اس نماز کے بعد ستارے نظر آنے تک کوئی نماز نہیں ہے (مغرب) جب وقت شروع ہوتا ہے تو بعض ستاروں پر تابندگی آجاتی ہے)

احمد، بخاری اورنسائی میں روایت ہے کہ جس نے نمازِ عصر چھوڑ دی اس کا عمل برباد ہو گیا۔ (⁷⁾ مندِ احمد اور ابن ابی شیبہ کی روایت ہے کہ جس نے نمازِ عصر چھوڑ دی، عَمَداً بیٹے اربا یہاں تک کہ نماز قضا ہو گئی تو

❶.....صحيح ابن حبان، كتاب الصلاة ، باب الوعيد على ترك الصلاة ، ٣/٥١، الجزء الثالث ،الحديث٢٦كا ١

^{2}المستدرك للحاكم ، كتاب الامامة وصلاة الحماعة ، باب الزجر عن الجمع...الخ،١/٥٦٤، الحديث ١٠٥٨

^{3}بخارى، كتاب مواقيت الصلاة ، باب اثم من فاتته العصر، ٢٠٣/١ الحديث ٢٥٥

^{4} صحيح ابن خزيمة، ١ / ٧٣ / ، تحت الحديث ٣٣٥

^{5}نسائي، كتاب الصلاة ، باب صلاة العصر في السفر، ص٨٦، الحديث ٤٧٦

^{6}مسلم ، كتاب الصلاة، باب الاوقات التي نهي عن الصلاة فيها، ص ٤١٤، الحديث ٢٩٢_ (٨٣٠)

^{7} بخارى ، كتاب مواقيت الصلاة، باب من ترك العصر، ٢٠٣/١، الحديث ٥٥٣

بشکاس کاعمل نباه ہو گیا۔

ابن ابی شیبہ کی مرسل روایت ہے کہ جس نے نمازِ عصر چھوڑ دی ، یہاں تک کہ سورج غروب ہو گیا اوراس کے لئے کوئی عذر بھی نہیں تھا تو گویا اس کاعمل برباد ہو گیا۔(2)

عبدالرزاق کی روایت ہے کہتم میں سے کسی ایک کا اہل اور مال ومتاع سے تنہارہ جانا نمازِ عصر کے قضاء ہوجانے سے بہتر ہے۔ (3)

طبرانی اوراحمہ کی روایت ہے کہ جس نے جان بوجھ کرنما نے عصر چھوڑ دی یہاں تک کہ سورج غروب ہو گیا تو گویا اس کے اہل وعیال اور مال بر باد ہو گیا۔ (4)

شافعی اور بیہ بی کی روایت ہے کہ جس کی ایک نماز فوت ہوگئی گویااس کا گھرانااور مال ہلاک ہوگیا۔⁽⁵⁾

بخاری میں حضرت ِسمرہ بن جندب رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ہے مروی ہے کہ حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم اکثر البّخ صحابہ کرام سے اللّٰه عَنْهُ مِیں سے کسی نے خواب و یکھا ہے تو بیان کرے ۔ لوگ البّخ خواب آپ کو سنایا کرتے۔

ے رہایا رہے ہے کہ اسلام کا کہ اللہ علیٰہ وَسَلَّم نے ہمیں بتلایا کہ میرے پاس دوآ نے والے آئے اور انہوں نے مجھے جگا کر کہا کہ ہمارے ساتھ چلئے! میں ان کے ساتھ چل پڑا یہاں تک کہ ہم نے ایسے آ دمی کو دیکھا جو لیٹا ہوا تھا اور دوسرا ایک ہماری پھر لئے کھڑا تھا۔ جب وہ بھاری پھراس کے سر پر مارتا تواس سونے والے کا سرریزہ ریزہ ہوجاتا، پھروہ پھراٹھا لیتا ہے اور اس آ دمی کا سرجیح ہوجاتا ہے میں نے لیتا ہے اور اس آ دمی کا سرجیح ہوجاتا ہے ، میں نے ابنہوں نے مجھے کہا: ابھی اور چلئے! اور چلئے!

پھر ہم ایک ایسے آدمی کے پاس آئے جو پیٹھ کے بل لیٹا ہوا تھا اور دوسرا ہاتھ میں لوہے کی سنسی لئے کھڑا تھا اور سونے والے کے چیرے کی ایک جانب سنسی سے اس کی باچھ کوگدی کی طرف کھنچتا ہے اور اس کے تھنوں اور آئکھوں

- 1مسند احمد، من مسند القبائل، ومن حديث ابي الدرداء عويمر، ١٨/١٠ ١٨/١٠ الحديث ٢٧٥٦٢
 - 2مصنف ابن ابي شيبة، كتاب الايمان والرؤيا، باب ٢٢٣/٧،٦، الحديث٤٩
 - ٣٢٢٤ عبدالرزاق، كتاب الصلاة، باب تفريط مواقيت الصلاة، ٢٢٨١، الحديث ٢٢٢٤
 - 4..... مسند احمد، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب، ٢ /٧٥ ٢، الحديث ٥٠٠٥

ہے بھی یہی سلوک کرتا ہے اور اس کے بیاعضائے بدن گدی کی طرف مڑجاتے ہیں پھر وہ دوسری سمت ہے آتا ہے اور اس کے ساتھ وہی سلوک کرتا ہے جو پہلے کر چکا ہے۔ جب وہ دوسری جانب جاتا ہے تو پہلی جانب چہرہ صحیح ہوجاتا ہے، پھر وہ واپس آتا ہے اور پہلی طرف سے اس کے چہرے کو وہی اذبت دیتا ہے، میں نے کہا: سے ان اللہ اللہ ایہ کیا ہے؟ انہوں نے کہا: ابھی اور چلئے اور چلئے! ہم چل پڑے اور تنور جیسی ایک چیز دیکھی ، راوی کہتا ہے کہ جھے ایسے یا دیڑتا ہے کہ حضور صَلَّی الله تَعَالَی عَلَیْهِ وَسَلَّم فَ مِنْ الله تَعَالَی عَلَیْهِ وَسَلَّم فَ مِنْ الله تَعَالَی عَلَیْهِ وَسَلَّم فَ مِنْ الله تَعَالُی عَلَیْهِ وَسَلَّم فَ مِنْ الله عَلَیْهِ وَسَلَّم فَ مِنْ الله وَ الله وَالله وَالله وَالله وَاله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله

ہم پھرروانہ ہوگے اور تب ایک الی نہر پر پہنچ جو میں ہجھتا ہوں کہ خون کی طرح سُر خ تھی ،اس میں ایک آدمی تیر رہا ہے اور نہر کے کنارے پرایک آدمی بہت سے پھر لئے کھڑا ہے ، وہ اسے پھر مارتا ہے اور وہ تیر نے لگتا ہے۔ جب بھی وہ اس کے قریب آتا ہے وہ اسے پھر مارتا ہے ۔ میں نے ان سے پوچھا: یہ کیا ہے؟ اُنہوں نے کہا: ابھی اور چلئے اور پھر گا تا ہم پھر چل دیئے اور ایک ایسے برصورت آدمی کے پاس آئے کہتم نے اس جیسابدصورت نہیں دیکھا ہوگا، وہ آگ جھڑ کا تا ہے اور پھر اس کے اردگر دیھا گئے لگتا ہے ، میں نے ان سے پوچھا: یہ کیا ہے؟ اُنہوں نے کہا: چلئے اور چلئے! ہم پھر چل پڑے اور ایسے باغ کے قریب پہنچ جس میں طویل وعریض سبزہ اور ہرقتم کے پودے ، پھول وغیرہ گئے تھے اور باغ کے پیچھے ایک طویل القامت آدمی ہے جس کا سر آسان سے چھور ہا ہے اور اس کے چاروں طرف چھوٹے چھوٹے بچے جمع ہیں۔ میں نے پوچھا: یہ کیا ہے؟ اور پیٹ ان وفرشتوں نے جھے کہا: ابھی اور چلئے! اور چلئے!

پھر ہم نے ایک عظیم درخت دیکھا، میں نے آج تک اس جیسا طویل اور حسین درخت نہیں دیکھا ہے، اُنہوں نے مجھ سے کہا کہاس پر چڑھے چنانچاس پر چڑھ کرایک ایسے شہر میں پہنچ جوسونے جاندی کی اینٹوں سے بناہواتھا، ہم نے دروازہ کھولنے کو کہا تو ہمارے لئے دروازہ کھول دیا گیا، وہاں ہمیں کچھانتہائی حسین وجمیل اور کچھانتہائی بدصورت آدمی ملے،ان دوفر شتوں نے ان آدمیوں سے کہا کہ تم جاؤاوراس نہر میں گھس جاؤ۔

آ پ نے فرمایا: تب میں نے دیکھا،ایک سفید پانی کی نہر بہہ رہی تھی، وہ لوگ نہر کی طرف چل دیے، جب واپس آئے تو ہم نے دیکھاان کی بعصورتی زائل ہو چکی تھی اوروہ انتہائی خوبصورت بن گئے تھے۔

مجھ سے ان دوفر شتوں نے کہا کہ یہ جنت عدن ہے اور یہ آپ کی منزل ہے، آپ نے فر مایا: پھر میں نے نگاہ اٹھا کر اوپردیکھا تو مجھے سفید بادل کی طرح ایک محل نظر آیا۔ اُنہوں نے مجھے کہا: یہ آپ کا گھر ہے، میں نے ان سے کہا: الله تعالیٰ تہمیں برکتوں سے نوازے، مجھے کو اجازت دوتا کہ میں اس میں داخل ہوں، انہوں نے کہا: ابھی نہیں لیکن جائیں گے آپ ہی ! پھر میں نے ان سے کہا: آج رات میں نے بہت سے بجائب دیکھے ہیں، یہ جو پچھ میں نے دیکھا، کیا ہے؟ انہوں نے کہا: ہم ابھی آپ کو بتلاتے ہیں:

پہلے جس آ دی کو آپ نے دیکھا کہ اس کا سرپھر سے کچلا جارہا ہے، وہ ایسا شخص ہے جو قر آ نِ مجید پڑھ کراس پر عمل نہیں کرتا اور فرض نمازوں سے سوجاتا ہے، ادانہیں کرتا، وہ آ دمی جس کی با چیس اور نتھنے اور آ تکھیں سنسی سے گدی کی طرف موڑی جارہی ہیں، وہ ایسا آ دمی ہے جوجھوٹ گھڑتا ہے اور جھوٹی با تیں پھیلاتا ہے اور آپ نے تنور جیسی عمارت میں جو ننگے مرداور عور تیں دیکھی ہیں وہ زانی مردوزانیے عور تیں ہیں اور جس آ دمی کو آپ نے خون کی نہر میں تیرتے اور پھر کھاتے ویکھا ہے وہ سودخور ہے اور جس آ دمی کو آپ نے آگ کھڑکا تے اور اس کے گرد گھو متے دیکھا ہے وہ مالک ہے جوجہنم کا دارو نے ہے۔ آپ نے جس طویل آ دمی کو باغ میں دیکھا ہے وہ حضر تے ابرا ہیم عَلَیْہِ السَّامِ میں اوران کے اردگر دجو بجے تھے وہ ایسے بچے ہیں جو بجین ہی میں دین فطرت پر فوت ہوئے ہیں۔

بعض مسلمانوں نے بوچھانیارسول الله!مشرکوں کے نقے منے فوت ہوجانے والے بیچ بھی وہاں ہوں گے؟ آپ نے فر مایا: ہاں۔

اورجس جماعت کے لوگوں کا آپ نے ایک پہلوخوبصورت اور دوسرا پہلو بدصورت دیکھا ہے، یہ وہ لوگ ہیں جو اپنے اعمال میں نیکیاں برائیاں دونوں ساتھ لاتے ہیں اور اللہ تعالیٰ ان کی غلطیوں سے درگز رفر ما تا ہے۔ (1)

بزاز کی روایت میں اس طرح ہے کہ پھر حضور صَدَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَدَّم الیّی قوم پرتشریف لائے جن کے سَر پھر سے پھوڑے جارہے تھے، جب وہ ریزہ ریزہ ہوجاتے تو پھراپی اصلی حالت پر آجاتے اور یہی عذاب آئییں برابر دیا جارہا

1بخارى ، كتاب التعبير، باب تعبير الرؤيا...الخ ، ٢٥/٤، الحديث ٧٠٤٧

ہے، آپ نے بوچھا: جبریل بیکون ہیں؟ جبریل نے کہا: بیدہ الوگ ہیں جن کے سرنماز پڑھنے سے بھاری ہوجاتے یعنی بینماز نہیں پڑھتے تھے۔ (1)

خطیب اورابن النجار کی روایت ہے کہ نماز اسلام کی علامت ہے جس کا دل نماز کی طرف متوجہ رہا اوراس نے تمام شرا کط کے ساتھ سیجے وقت پراور سیجے طریقے سے نماز پڑھی، وہ مومن ہے۔ (2)

ابن ماجہ کی روایت ہے:حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ رب دوالبعلال کا ارشاد ہے: میں نے آپ کی امت پر پانچ نمازیں فرض کی ہیں اور میں نے اپنے لئے وعدہ کر لیا ہے کہ جوشخص ان نمازوں کوان کے اوقات میں اوا کر ریگا اسے جنت میں داخل کروں گا اور جوان کی پابندی نہیں کرےگا،میر ااس شخص کے لئے کوئی وعدہ نہیں ہے۔ (3)

احمداور حاکم کی روایت ہے کہ جس شخص نے بیر جان لیا کہ نماز اس پر واجب اور ضروری ہے اور اس نے اسے ادا کیاوہ جنت میں جائے گا۔ ⁽⁴⁾

تر مذی ، نسائی اورابن ماجه کی حدیث ہے کہ قیامت میں سب سے پہلاعمل جس کا بندے سے محاسبہ ہوگا وہ نماز ہے ، اگر نمازیں صحیح ہوئیں تو وہ کا میاب و کا مران ہوا اورا گر نمازوں میں نقصان نکلا تو وہ خائب و خاسر ہوا ، اگر اس کے فرائض کم ہوجا ئیس گے تواللہ تعالی فرمائے گا ، دیکھومیرے بندے کی نفلی عباوت ہے؟ اور نوافل سے اس کے فرائض کو پورا کیا جائے گا پھر سارے اعمال کا دارومدار نماز کے معاملہ میں کا میابی اور ناکا می پر ہوگا۔ (5)

نسائی کی حدیث میں ہے کہ قیامت کے دن سب سے پہلے انسان سے نماز کا محاسبہ کیا جائے گا اور سب سے پہلے انسان سے نماز کا محاسبہ کیا جائے گا اور سب سے پہلے لوگوں میں خون کا فیصلہ کیا جائے گا۔ (⁶⁾

^{1} مسند البزار ، ۱۷/٥ ، الحديث ۱۸ ۹۵

^{2} كنزالعمال، كتاب الصلاة ، الباب الاول...الخ، الفصل الاول في الوجوب، ١١٣/٤، الجزء السابع، الحديث ١٨٨٦٦

ابن ماجه، كتاب الصلاة ، باب ماجاء في فرض الصلوات...الخ ، ۲ / ۱۷ ، الحديث ١٤٠٣.

^{4}مسند احمد ، مسند عثمان بن عفان ، ١٣٢/١ ، الحديث ٢٣٤

^{5} ترمذي ، كتاب الصلاة، باب ماجاء ان اول مايحاسب...الخ، ٢٢/١، الحديث ٤١٣

^{6}نسائی ، كتاب تحريم الدم، باب تعظيم الدم، ص٢٥٢، الحديث ٢٩٩٧

).

احمد، ابوداؤد، نسائی، ابن ماجداور حاکم میں بیصدیث ہے کہ قیامت میں سب سے پہلے انسان کی نماز کا محاسبہ ہوگا، اگر پوری ہوئیں تو انہیں مکمل لکھ دیاجائے گا اوراگرکم ہوئیں تو الله تعالی فرشتوں سے فرمائے گا: دیکھومیر ہے بند ہے کی نفل عبادت ہے؟ اور اس سے فرض عبادت مکمل کی جائے گی، پھر زکو ہ کا محاسبہ ہوگا اور اسی طرح پھرسار ہے اعمال کا۔ (۱)

ابن عساکر کی صدیث ہے کہ پہلی وہ چیز جس کا بند ہے سے اول قیامت میں محاسبہ کیا جائے گا، اس کی نماز دیکھی جائے گی، اگر نماز حیح ہوگئے اوراگر نماز میں نقصان ہوا تو سار ہے اعمال میں نقصان پایا جائے گا، گرنماز حیح ہوئی تو سار ہے اعمال حیح ہوگئے اوراگر نماز میں نقصان ہوا تو سار ہوگا تو اس سے فرائض گا، پھراللہ تعالی فرشتوں سے فرمائے گا دیکھومیر ہے بند ہے کی نظی عبادت ہوگی تو اس سے فرائض گا عاسبہ ہوگا بھی الله تعالی کی بخشش ورحت کا طریقہ ہے۔ (2)

طبر انی کی صدیث ہے کہ قیامت میں سب سے پہلے انسان کی نماز وں کا سوال ہوگا، اگر اس کی نماز میں درست ہو کیوس تو سار ہا کا م ونا مراد ہوا۔ (3)

ہوئیں تو سار ہے اعمال درست ہوئے اور وہ نجات پاگیا، اگر اس کی نماز میں خو وہ ناکام ونا مراد ہوا۔ (3)

احمد، ابوداؤد، حاکم اور نسائی کی حدیث ہے: قیامت کے دن سب سے پہلے انسان کے سار ہے اعمال میں نماز کی

. نامکمل؟اگرمکمل ہوئیں تومکمل لکھ دیا جائے گا اورا گر پچھ کم ہوئیں تو فر مان ہوگا: کیا میر بے بندے کی نفل عبادت ہے؟اگر اس کی نفل عبادت ہوئی تو تھلم ہوگا کہ اس سے فرائض کوکمل کرو، پھراسی طرح دیگراعمال کا محاسبہ ہوگا۔ ⁽⁴⁾

پرسش ہوگی ،اللّٰہ تعالیٰ فرشتوں ہےفر مائے گا حالانکہ وہ سب کچھ جانتا ہے ، کہ میر بے بندے کی نمازیں دیکھو ،کمل ہیں یا

طیالی، طبرانی اورالضیاء فی المختارہ کی حدیث ہے کہ میرے پاس رب تعالی کا پیغام کے کر جبریل امین آئے اور کہا: رب تعالی فرما تاہے: اے محمد! (صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم) میں نے آپ کی امت پر پانچ نمازیں فرض کی ہیں، جو شخص انہیں سے حجے وقت میں سے حکم اور جود سے اداکرے گا، میراان نمازوں کے سبب اس سے وعدہ ہے کہ میں اسے جنت میں داخل کرونگا اور جس نے مجھ سے اس عالم میں ملاقات کی کہ اس کی کچھ نمازیں کم ہیں تو میرااس کے اسے جنت میں داخل کرونگا اور جس نے مجھ سے اس عالم میں ملاقات کی کہ اس کی کچھ نمازیں کم ہیں تو میرااس کے

^{1} مسند احمد، مسند الشاميين، حديث تميم الدارى، ٢/٣٥، الحديث ١٦٩٤٦

^{2}تاريخ مدينة دمشق ، ٠ ٢٧٧/٢ و ترمذي، كتاب الصلاة ، باب ماجاء ان اول ما يحاسب...الخ، ٢/١ ٤ ، الحديث ٤١٣

^{3}المعجم الاوسط ، ٣٢/٣ ، الحديث ٣٧٨٢

^{4}ابوداود، كتاب الصلاة، باب قول النبي صلى الله تعالى عليه وسلم كل صلاة...الخ، ١ / ٣٢٩ الحديث ٨٦٤

K

ساتھ وعدہ نہیں ہے، چاہوں تواسے عذاب دوں اور چاہوں تواس پررحم کروں۔ ⁽¹⁾ .

بیہ ق کی حدیث ہے کہ نماز تراز وہے، جس نے اسے پورا کیاوہ کامیاب ہے۔ (²⁾

دیلمی کی حدیث ہے کہ نماز شیطان کا منہ کالا کرتی ہے،صدقہ اس کی کمرتو ڑتا ہے،اللّٰہ کے لئے لوگوں سے محبت اور علم دوستی اسے شکست فاش دیتی ہے، جبتم بیاعمال کرتے ہوتو شیطان تم سے اتنادور ہوجا تا ہے کہ جیسے سورج کے طلوع ہونے کی جگہ غروب ہونے کی جگہ سے دور ہے۔ (3)

تر مذی، ابن حبان اور حاکم کی روایت ہے کہ الله تعالیٰ سے ڈرواور پانچ نمازیں بڑھو، ما ورمضان کے روزے رکھو، مال کی زکو قدو، اینے حاکموں کی اِطاعت کرو، تم اپنے رب کی جنت کو یالو گے۔ (4)

احمد، بخاری مسلم ، ابوداؤ داورنسائی میں حدیث ہے کہ الله تعالیٰ کے ہاں سب سے پیندید عمل نماز کواس کے سجے وقت میں ادا کرنا ہے۔ (5)

بیہ ق نے حضرت عمر دَضِیَ اللهٔ عَنه سے روایت کی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں ایک آدمی نے حاضر ہوکر عرض کی: مجھے بتلا ہے کہ الله تعالی کوسب سے زیادہ کو نساعمل پبند ہے؟ آپ نے فرمایا: نماز کو صحح وقت میں ادا کرنا اور جس نے نماز کو چھوڑ دیا اس کا دین نہیں اور نماز دین کا ستون ہے۔ (6) اسی لئے جب حضرت عمر دَضِیَ اللهُ عَنْه کو شد ید زخی کردیا گیا تو کسی نے آپ سے کہا: امیر المؤمنین! نماز ، آپ نے فرمایا: ''بہت اچھا، بلا شبہہ اس شخص کا دین میں کوئی حصہ نہیں ہے جس نے نماز کوضا کے کردیا'' اور آپ نے نماز پڑھی حالانکہ آپ کے زخم سے خون بہدر ہاتھا۔

^{1} مسند الطيالسي، احاديث عبادة بن الصامت، ص٧٨، الحديث ٥٧٣

^{2} شعب الايمان، باب الحادي والعشرين...الخ ،تحسين الصلاة...الخ ١٤٧/٣٠٠ ا، الحديث ٥١١١٠

^{3}فردوس الاخبار،٢٠/٣، الحديث ٣٦١٥

^{4}ترمذى ، كتاب السفر، باب ما ذكر في فضل الصلوة، ١٩/٢ ، الحديث ٦١٦

^{5}نسائي، كتاب المواقيت ، باب فضل الصلاة لمواقيتها، ص ١٠٦، الحديث ٢٠٧

^{6} شعب الايمان ، باب الحادي والعشرين...الخ ، ٣٩/٣، الحديث ٢٨٠٧

ذَہُبَی کی روایت ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: جب بندہ اول وقت میں نماز پڑھتا ہے تواس کی نماز آسانوں کی طرف جاتی ہے اور وہ نورانی شکل میں ہوتی ہے یہاں تک کہ عرشِ اللی تک جا پہنچتی ہے اور نمازی کے لیے قیامت تک دعا کرتی رہتی ہے کہ اللّٰہ تیری حفاظت فر مائے جیسے تو نے میری حفاظت کی ہے اور جب آ دمی بے وقت نماز پڑھتا ہے تواس کی نماز سیاہ شکل میں او پر آسانوں کی طرف چڑھتی ہے جب وہ آسان تک پہنچتی ہے تواسے بوسیدہ کپڑے کی طرح لیبیٹ کر پڑھنے والے کے منہ پر مارا جاتا ہے۔ (1)

ابوداؤ دکی روایت ہے:حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: تین آدمی ایسے ہیں کہ الله تعالی جن کی نماز اور ذکر قبول نہیں کرتا،ان میں سے ایک وہ ہے جووفت گزرجانے کے بعد نماز پڑھتا ہے۔(2)

بعض علماء کا کہنا ہے: حدیث شریف میں ہے کہ جو شخص نماز کی پابندی کرتا ہے اسے اللہ تعالی پانچ چیزوں سے سرفراز فرما تاہے:

جو خض نمازوں میں ستی کرتا ہے الله تعالی اسے پندرہ مصائب میں مبتلا کرتا ہے: پانچ دنیا میں، تین موت کے وقت، تین قبر میں اور تین قبر سے نکلتے وقت۔

د نیاوی مصائب میہ ہیں کہ

اس کی عمر سے برکت چھین لی جاتی ہے
 ہے۔۔۔۔۔اس کے چیرے سے صالحین کی نشانی مٹ جاتی ہے

- 1 كتاب الكبائر للذهبي ، الكبيرة الرابعة في ترك الصلاة ، ص٢٢
- 2ابوداود، كتاب الصلاة، باب الرجل يؤم القوم...الخ، ٢٤٣/١، الحديث ٩٩٥
 -

مكاشفة القلوب 🖊 💎

🖈اس کے کسی بھی عمل کااللہ تعالی اَجز نہیں دیتا

اساس کی دعا آسانوں کی طرف بلندنہیں ہوتی

🖈 نیکوں کی دعاؤں میں اس کا کوئی حصنہیں ہوتا۔

اور جومصائب اسے موت کے وقت درپیش ہوں گے وہ یہ ہیں کہ

☆.....وه ذليل موكرمركا

اور کے گااور کے گااور

اس پیاسامرے گا،اگراسے دنیا کے تمام سمندر پلا دیئے جائیں تو بھی اس کی پیاس نہیں بجھے گی۔

قبر کے مصائب بیہ ہیں کہ

استقبراس پرتنگ ہوگی یہاں تک کہاس کی پسلیاں ایک دوسرے میں پیوست ہوجا کیں گی

اس کی قبر میں آگ بھڑ کائی جائے گی جس کے انگاروں پروہ رات دن لوٹنار ہے گا

اور جومصائب اسے قبرسے نکلتے ہوئے حشر کے میدان میں جھیلنے ہوں گےوہ یہ ہیں:

الله كي ناراضكي اور ﴿ ١٠٠٠ جَهِمْ مِين داخله له كَالله كَا ناراضكي اور ﴿ ١٠٠٠ جَهُمْ مِين داخله له الله كالله كالم كالله كالله

ایک روایت میں ہے کہ وہ قیامت میں اس حالت میں آئے گا کہ اس کے چہرے پرتین سطریں کھی ہوں گی:

🖈 يبلى سطر به ہوگى:ا بالله كے حقوق ضائع كرنے والے!

🤝دوسری سطر ہوگی: اے الله کی ناراضگی کے لئے مخصوص! اور

ہوگی کہ جیسے تونے اللہ کے حقوق دنیا میں ضائع کئے ہیں ایسے ہی تو آج الله کی رحمت سے ناامید ہوگا۔

اس حدیث میں مجموعی تعداد تو بندرہ بتائی گئی ہے مگر تفصیلاً چودہ کا ذکر ہے، شایدراوی حدیث بندر ہویں بات بھول گئے۔⁽¹⁾

حضرت ابن عباس رَضِیَ اللهٔ عَنهُ مَا سے مروی ہے کہ قیامت کے دن ایک شخص الله کی بارگاہ میں کھڑا کیا جائے گا اور الله تعالیٰ اسے جہنم میں جانے کا تکم دے گاوہ پو چھے گا: یاالله! مجھے کس لئے جہنم میں بھیجا جارہا ہے؟ رب تعالیٰ فرمائے گا کہ نمازوں کو ان کے اوقات سے مؤخر کرکے پڑھنے اور میرے نام کی جھوٹی فتمیں کھانے کی وجہ سے بیہ ہورہا ہے۔ (2)

بعض محدثین سے مروی ہے کہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے ایک دن صحابہ کرام دَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ سے کہا کہ تم بول دعاما نگا کرو!" اے الله! ہم میں سے کسی کوشتی اور محروم نہ بنا۔ "پیرفر مایا: جانتے ہو بد بخت محروم کون ہوتا ہے؟ کہا گیا:
کون ہوتا ہے؟ یاد سول الله! آپ نے فرمایا: جوانسان تارکِ نماز ہوتا ہے۔ (3)

نیز فرمایا (محدثین نے):حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے مروی ہے: آپ نے فرمایا کہ قیامت کے دن سب سے پہلے تارکبینِ نماز کے منہ کالے کئے جائیں گے اور جہنم میں ایک وادی ہے جسے" لَمُلَم" کہا جاتا ہے، اس میں سانپ رہتے ہیں، ہرسانپ اونٹ جتنا موٹا اور ایک ماہ کے سفر کے برابر طویل ہوگا، وہ بے نمازی کوڈ سے گا اس کا زہر ستر سال تک بے نمازی کے جسم میں جوش مار تارہے گا، پھراس کا گوشت گل جائے گا۔ (4)

^{.....}

^{....}**2**

^{3} كتاب الكبائر للذهبي ، الكبيرة الرابعة في ترك الصلاة ، فصل في المحافظةالخ، ص ٢٥

^{4 &}quot; كتاب الكبائر " يس امام في رحمة الله تعالى عَليْه في جميم كى اس واوى كانام " ملحم" كصاب علميه المرجع السابق

نیز بیر بھی مروی ہے کہ بنی اسرائیل کی ایک عورت حضرت موسی عَدَیْهِ السَّلام کی خدمت میں آئی اور عرض کیا اے نیز الله! میں نے بہت بڑا گناہ کیا ہے اور تو بہ بھی کی ہے،الله تعالی سے دعا مانگئے کہ وہ میرے گناہ کو بخش دے اور میری توبہ قبول فرمالے۔

حضرت موسی عَلَیْهِ السَّلام نے پوچھا: تو نے کونسا گناہ کیا ہے؟ وہ کہنے گئی کہ میں زنا کی مُرتیک ہوئی اور جو بچہ پیدا ہوا میں نے اسفیل کردیا ہے! میں کرموسی عَلَیْهِ السَّلام بولے: اے بد بخت! نکل جا، کہیں تیری خُوسَت کی وجہ سے آسان سے آگ نازل ہو کر ہمیں نے جلاد ہے! چنا نچہ وہ شکسته دل ہو کر وہاں سے چل پڑی، تب جریل عَلَیْهِ السَّلام نازل ہوئے اور کہا: اے موسی الله تعالی فرما تا ہے کہ تو نے گناہ سے تو بہ کرنے والی کو کیوں واپس کردیا ہے؟ کیا تو نے اس سے بھی زیادہ بُر ا وہ ہے؟ جبریل عَلَیْهِ السَّلام بولے کہ اس سے بریل اس عورت سے زیادہ براکون ہے؟ جبریل عَلیْهِ السَّلام بولے کہ اس سے بُر اوہ ہے جو جان ہو جھ کرنماز چھوڑ دے۔

بعض صالحین سے مروی ہے کہ ایک آ دمی نے اپنی مردہ بہن کو فن کیا تو اس کی تھیلی بے خبری میں قبر میں گرگئ جب سب لوگ اسے وفن کر کے چلے گئے تو اسے اپنی تھیلی یاد آئی، چنا نچہ وہ آ دمی لوگوں کے چلے جانے کے بعد بہن کی قبر پر پہنچا اور اسے کھودا تا کہ تھیلی نکال لے، اس نے دیکھا کہ اس کی قبر میں شعلے بھڑک رہے ہیں، چنا نچہ اس نے قبر پر ممثی ڈالی اور انتہائی عملین روتا ہوا ماں کے پاس آیا اور پوچھا: ماں! یہ بناؤ کہ میری بہن کیا کرتی تھی؟ ماں نے پوچھا: تم کیوں پوچھر ہے ہو؟ وہ بولا میں نے اپنی بہن کی قبر میں آگ کے شعلے بھڑکت و کیھے ہیں اس کی ماں رونے لگی اور کہا: تیری بہن نماز میں شستی کرتی رہتی تھی اور نماز وں کوان کے اوقات سے مؤخر کرکے پڑھا کرتی تھی۔

یہ تواس کا حال ہے جونماز وں کوان کے اوقات سے مؤخر کر کے بیڑھا کرتی تھی اوران لوگوں کا کیا حال ہے جو سرے سے نماز پڑھتے ہی نہیں۔

اےاللہ! ہم تجھ سے نماز وں کوان کے اوقات میں ادا کرنے اور پابندی سے نماز پڑھنے کی تو فیق طلب کرتے ہیں، بے شک اے رب! تو مہر بان ، کریم ، رؤ ف اور دھیم ہے۔

اب 50

$\left< \stackrel{}{\stackrel{}{ au}} ightarrow$ طبقات جہنم اوران کے عذاب $\stackrel{}{\stackrel{}{ au}}$

فرمانِ اللي ہے:

یہال" جُوزُة "سے مرادگروہ، جماعت اور فریق ہے اور دروازوں سے مراد طبقات ہیں جواویر نیچے بنے ہوئے ہیں۔

ابن جرج کا قول ہے کہ جہنم کے طبقات سات ہیں: "جَهَلَّم "، الظی" پھر" خُطمَه "، پھر "سَعِیْر"، پھر "سَقَر"، پھر "جَجِیْم" اور پھر "هَاوِیه" بہلاطبقه مُوَظِّرِین کے لئے ، دوسرایبود کے لئے ، تیسرانصاریٰ کے لئے ، چوتھا صائبین کے لئے ، یا نیواں آتش پرستوں کے لئے ، چھٹا مشرکوں کے لئے اور ساتواں منافقوں کے لئے ہے۔

"جَهَانَّم "سب سے اوپر کا طبقہ ہے اور باقی سب مذکورہ ترتیب کے ساتھ اس کے نیچے ہیں۔ اور یہ بایں معنی ہے کہ اللّٰہ تعالیٰ ابلیس کے بیروکاروں کوسات گروہوں میں تقسیم فر مائے گا اور ہر گروہ اور فریق جہنم کے ایک طبقہ میں رہے گا، اس کا سبب بیہ ہے کہ کفر اور گنا ہوں کے مرات چونکہ مختلف ہیں اس لئے جہنم میں وُخُول کے لئے ان کے درجات بھی مختلف ہیں۔ اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ ان سات طبقات کو انسان کے سات اعضائے بدن کے مطابق بنایا گیا ہے، اعضاء یہ ہیں: آئکھ، کان، زبان، پیٹ، شرمگاہ، ہاتھ اور پیر، کیونکہ یہی اعضاء گنا ہوں کا مرکز ہیں اس لئے ان کے وارد ہونے کے درواز سے بھی سات ہیں۔

حضرت علی دَطِی اللهٔ عَنْه سے مروی ہے کہ جہنم کے اُوپر ینچے (تدبہتہ) سات طبقات ہیں لہذا پہلے، پہلا بھراجائے گا، پھر دوسرا، پھر تیسرا، اسی طرح سب طبقات بھرے جائیں گے۔

بخارى نے اپنى تارى غىر اور تر مذى نے حضرت ابن عمر دَضِى الله عَنهُمَا سے روايت كى ہے كه حضور صَلَّى اللهُ عَليه

1.....توجمه کنز الایمان: اس کے سات دروازے ہیں ہر دروازے کے لئے ان میں سے ایک حصّہ بٹاہواہے۔ (پ؟ ۱، الحجر: ٤٤)

X

وَسَلَّم نے فرمایا: جہنم کےسات دروازے ہیں:ان میںا کیک درواز ہاں شخص کے لئے ہے جس نے میری امت پرتلوار سونتی۔ ⁽¹⁾

طبرانی نے اوسط میں روایت کی ہے کہ ایک مرتبہ حضرتِ جبریل عَلیْہِ السَّلام ایسے وقت میں تشریف لائے کہ اس وقت میں اس سے قبل کسی وقت میں نہیں آتے تھے، حضور صَلَّی اللّهُ عَلیْهِ وَسَلَّم کُھڑ ہے ہو گئے اور فر مایا: جبریل! کیا بات ہے؟ میں تم کو متغیر و کیور ہا ہوں؟ جبریل نے عرض کی: میں اس وقت آپ کے پاس آیا ہوں جبکہ اللّه تعالیٰ نے جہنم کو دہ کا دیے کا حکم دیا ہے۔ آپ نے فر مایا: جبریل! مجھے اس آگ یا جہنم کے بارے میں بتلا وً! جبریل عَلیْهِ السَّلام نے عرض کی کہ اللّه تعالیٰ نے دوجہنم 'کو کھم دیا اور اس میں ایک ہزارسال تک آگ وہ منافی گئی یہاں تک کہ وہ سفید ہوگئی، گھراسے ہزارسال تک در ہکائی گئی یہاں تک کہ وہ سرخ ہوگئی، پھراسے حکم خداوندی سے ہزارسال تک اور کھڑکایا گیا تا آئکہ وہ بالکل ہزارسال تک اور خیا ہوتا ہے اور نہ اس کی جوتا ہے اور نہ اس کی جوتا ہے اور نہ اس کے خوت ہیں۔

شعلے بجھتے ہیں۔

اس ذات کی شم اجس نے آپ کو بی برحق بنا کر مبعوث فر مایا ہے، اگر سوئی کے ناکے کے برابر بھی جہنم کو کھول دیا جائے تو تمام اہلِ زمین فنا ہوجا کیں، اور شم ہے! اس ذات کی جس نے آپ کوحق کے ساتھ بھیجا، اگر جہنم کے فرشتوں میں سے ایک فرشتہ دنیا والوں پر ظاہر ہوجا کے تو زمین کی تمام مخلوق اس کی بدصورتی اور بد بوکی وجہ سے ہلاک ہوجا کے، اور قسم ہے! اس ذات کی جس نے آپ کوحق کے ساتھ مبعوث فر مایا، اگر جہنم کے ذبیر وں کا ایک حلقہ 'جس کا الله تعالیٰ نے قر آپ کر کیم میں ذکر کیا ہے' دنیا کے پہاڑوں پر کھ دیا جائے تو وہ دریزہ ریزہ ہوجا کیں اور وہ حلقہ 'ترقیق القری' میں جائے ہم رے حضور کر کیا ہے' دنیا کے پہاڑوں پر کھ دیا جائے تو وہ دریزہ ریزہ ہوجا کیں اور وہ حلقہ 'ترقیق القری' میں جائے ہم بیات انتہائی پر بیثان کن ہے۔ حسلی الله عَلَیٰہ وَ سَلَم نے بین کہ جنور مایا: جبریل کود یکھا! وہ رور ہے ہیں۔ آپ نے فر مایا: جبریل! دروی کھے ہیں کہ جن سے دو وال تکہ تمہارا تو اللہ کے ہاں بہت بڑا مقام ہے۔ جبریل نے کہا: میں کیوں ندرو وں؟ میں ہی رونے کا تم کیوں روتے ہو حالا تکہ تمہارا تو اللہ کے ہاں بہت بڑا مقام ہے۔ جبریل نے کہا: میں کیوں ندرو وں؟ میں ہی رونے کا

- ١٣٤ مذي، كتاب التفسير، باب ومن سورة (الحجر) ٨٦/٥، الحديث ٣١٣٤
- سیبان ترجمه میں بیعبارت" اس میں ایک ہزارسال تک آگ د ہکائی گئی یہاں تک کدوہ سفید ہوگئی" لکھنے سے رہ گئی تھی شاید کا تب سے خلطی ہوئی ہو، بہر حال ہم نے عربی متن د کھی کریہاں تھچ کردی ہے۔والله تعالٰی اعلمہ۔ علمیه

زیادہ حقدار ہوں، کیا خبر علم خدا میں میرااس مقام کے علاوہ کوئی اور مقام ہو! کیا خبر کہیں مجھے اِلمیس کی طرح نہ آز مایا جائے! وہ بھی تو فرشتوں میں رہتا تھا!اور کیا خبر مجھے ہاروت و ماروت کی طرح آز ماکش میں نہ ڈال دیا جائے! تب حضور صلّی الله عَلَیْهِ وَ سَلَّم اور جبر مِل عَلَیْهِ السَّکام دونوں اَشکبار ہو گئے اور بیا شکباری برابر جاری رہی یہاں تک کہ آواز آئی: "اے جبر مِل!اے محمد!الله تعالی نے تم دونوں کواپنی نافر مانی سے محفوظ کر لیا ہے 'کپس اس کے بعد جبر میل عَلَیْهِ السَّکام آسانوں کی طرف برواز کر گئے۔(1)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَا گُزرانصار كَى ايك جماعت ہے ہوا جوہنس رہے تھے اور فضول باتوں میں مصروف تھے۔ آپ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: تم بہنتے ہو! حالانكہ تمہارے پیچھے جہنم ہے جسے میں جانتا ہوں، اگرتم جانتے تو كم بہنتے اور زیادہ روتے ، تم كھانا بینا حجور دیتے اور پہاڑوں كی طرف نكل جاتے اور انتہائی مصائب برداشت كركے اللّه كى عبادت كرتے۔

اس وقت الله تعالى كى طرف سے ندا آئى كە اے ثر! (صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم) مير بندول كونا أمير نه كرو، آپ خوشخرى دينے والے بنا كرنہيں بھيج گئے، پس رسول الله صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم فَي وَسَلَّم فَي وَسَلَّم فَر ما ياكه راهِ راست بِي گامْزَن رہواور حت خداوندى سے أميد ركھو۔ (2)

احمد کی روایت ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے جبریل سے کہا: میں نے بھی بھی میکائیل کو مہنتے ہوئے نہیں دیکھا،
اس کی کیا وجہ ہے؟ جبریل نے کہا کہ جب سے جہنم کو پیدا کیا گیا ہے میکائیل عَلیْهِ السَّلَام بھی نہیں مسکرائے۔
مسلم شریف میں روایت ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ قیامت کے دن جہنم کوستر ہزار لگا میں دے
کرلایا جائے گا اور ہرلگام کے ساتھ ستر ہزار فرشتے اسے کھنچ رہے ہوں گے۔
(4)

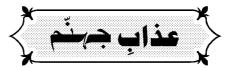
^{1}المعجم الاوسط ، ٧٨/٢، الحديث ٢٥٨٣

^{2}المعجم الاوسط ، ٢٨٨٧، الحديث ٢٥٨٣

^{3} مسند احمد، مسند انس بن مالك بن النضر، ٤٤٧/٤، الحديث ١٣٣٤٢

^{4} مسلم ، كتاب الجنة...الخ، باب في شدة حر نار...الخ ، ص ٢٥ ٢ ، الحديث ٢٩ _ (٢٨٤٢)

[**5]** -!



ابوداؤد، نسائی اور ترمذی کی روایت ہے: جب الله تعالی نے جنت اور جہنم کو بیدافر مایا تو جریل علیّہ السَّلام کو بھیجا کہ جنت اوراس میں جو پچھ میں نے جنتیوں کے لئے تیار کیا ہے اسے دیکھ آؤ، جبریل علیّہ السَّلام نے آکر جنت اوراس میں رہنے والوں کے لئے تیار شدہ نعمتوں کو دیکھا اور بارگا والہی میں جا کرعرض کیا: تیرے عزت وجلال کی قتم! جو بھی اس کا تذکرہ سنے گااس میں آنے کی کوشش کرے گا،الله تعالی نے تکم دیا اور جنت پرمصائب طاری کردیئے گئے، پھر الله تعالی نے قلم دیا اور جنت پرمصائب طاری کردیئے گئے، پھر الله تعالی نے فلم دیا اور جنت پرمصائب طاری کردیئے گئے، پھر الله تعالی نے فرمایا: جاؤاورد کھوکہ میں نے جنت میں آنے والوں کے لئے کیا انتظام کیا ہے! جبریل جنت کی طرف آئے تو دیکھا کہوہ مصائب میں چھیا دی گئی ہے چنا نچہ جبریل واپس آگئے اور کہا: مجھے تیری عزت کی قتم! مجھے ڈر ہے کہ اس میں کوئی نہیں جائے گا۔

پھرالله تعالی نے فرمایا: جاؤجہنم اوراس میں پہنچنے والوں کے لئے میں نے جو پھھ تیار کیا ہے اسے دیکھو! جبریل نے جہنم کود یکھااس کی ایک آگ ووسری آگ کوروندرہی تھی جبریل علیٰہ السَّلام واپس آگئے اور بارگا والہی میں عرض کی: تیری عزت کی قشم! جو بھی اس کا تَذکِرہ سنے گااس میں نہیں آئے گا،الله تعالی نے حکم دیا اور جہنم کو شہوات سے ڈھانپ دیا گیا رب تعالی نے جبریل سے فرمایا: اب جاؤاورا سے دیکھو جبریل آئے ، جہنم کودیکھا اور واپس جاکر بارگا والہی میں ویا گیا رب تعالی نے جبریل جھے ڈر ہے کہ کوئی بھی اس میں گرنے سے نہیں بچگا۔ (1)

بےشک جہنم محلوں جیسی چنگاریاں بھینکتی ہے۔

اِنَّهَاتَرُفِي شِثَرَمِ كَالْقَصْرِ (2)

کی تشریح میں فر مایا:'' ینہیں کہتا کہ وہ درختوں جتنی بڑی چنگاریاں بھینکتی ہے بلکہ قلعوں اور شہروں جتنی بڑی بڑی چنگاریاں

^{1} ترمذي، كتاب صفة الجنة، باب ماجاء حفت الجنة...الخ، ٢٥٣/٤ ،الحديث ٢٥٦٩

^{2}ترجمه كنز الايمان: بشك دوزخ چنگاريال أراتى جيسياو في كل رب ٢٠ المرسلت: ٣٠)

تجينگي ہے۔

احمد، ابن ماجه منج ابن حبان اور حاکم کی روایت ہے که' وَ مِل' جہنم کی ایک وادی ہے ، کا فراس میں چالیس سال برابر گرتا چلا جائے گا مگراس کی گہرائی تک نہیں بہنچ سکے گا۔ (1)

تر فدی کی روایت ہے کہ وَ مِل جہنم کی ایک وادی ہے، کا فرستر سال میں بھی اس کی گہرائی تک نہیں بہنچ سکے گا۔(2) (دونوں روایتوں میں گہرائی تک پہنچنے کی مدت کا فرق ہے، دونوں کا مقصد یہ ہے کہ اس کی گہرائی بہت ہی زیادہ ہے جو برسوں میں طے ہوگی۔)

ابن ماجهاورتر مذی کی حدیث ہے: آپ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نَ فرمایا کہ جُبُّ الْحُرْن سے اللّٰه کی پناه ما نگو ، صحابہ کرام نے بوچھا: یادسول الله! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) جُبُ الْحُرْن کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: جہنم کی ایک وادی ہے جس سے جہنم بھی دن میں چارسومر تبہ پناه ما نگتا ہے، بوچھا گیا: حضور! اس میں کون جا کیں گے؟ آپ نے فرمایا: وہ ریا کا رقاریوں کے لئے تیار کی گئی ہے جوابیخ اعمال کی نمائش کرتے ہیں اور الله تعالی کے یہاں سب سے زیادہ نا پیندا یسے قاری ہیں جو ظالم حاکموں سے میل جول رکھتے ہیں۔ (3)

''طبرانی'' کی روایت ہے کہ جہنم میں ایک ایسی وادی ہے کہ جہنم اس وادی سے دن میں جاِرسومر تنبہ پناہ مانگتا ہےاور پیحضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی امت کے ریا کاروں کے لئے تیار کی گئی ہے۔ ⁽⁴⁾

ابن ابی الدنیادَ خیمهٔ اللهِ عَلیْه کی روایت ہے کہ جہنم میں ستر ہزار وادیاں ہیں ، ہروادی میں ستر ہزار گھاٹیاں ہیں ، ہر گھاٹی میں ستر ہزار سوراخ ہیں ، ہر سوراخ میں ایک سانپ ہے جودوز خیوں کے چہروں کوڈ ستار ہتا ہے۔ ⁽⁵⁾

¹ ۱۷۱۲ مسند احمد، مسند ابي سعيد الخدري ،٤/ ، ١٥ ا الحديث ١١٧١٢

^{2}ترمذي، كتاب التفسير، باب ومن سورة (الانبياء) عليهم السلام ، ١١١٥، الحديث ٣١٧٥ وفيه اربعين مكان سبعين

^{3}ابن ماجه، كتاب السنة، باب الانتفاع بالعلم...الخ، ١٦٧/١، الحديث ٢٥٦

^{4}المعجم الكبير، ٢ ١٣٦/١، الحديث ١٢٨٠٣

^{5}موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب صفة النار، ٩/٦، الحديث ٥٤

بخاری نے اپنی تاریخ میں یہ منگر السند حدیث نقل کی ہے کہ جہنم میں ستر ہزاروا دیاں ہیں، ہروا دی میں ستر ہزار گھاٹی میں ستر ہزار کھر میں ستر ہزار مکان میں ستر ہزار کھر میں ستر ہزار مکان میں ستر ہزار کھو ئیں، ہر کئوئیں میں ستر ہزار اور منافق ان تمام کا عذا ب پائے بغیر نہیں رہے میں ستر ہزار اور منافق ان تمام کا عذا ب پائے بغیر نہیں رہے گا۔ (1)

تر مذی میں منقطع السندروایت ہے کہ جہنم کے کنارے سے قطیم چٹان اُٹر ھکا کی جاتی ہےاورستر سال گز رنے کے باوجود بھی وہ جہنم کی گہرائی تک پہنچ نہیں یاتی۔⁽²⁾

حضرت ِعمر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ فرمایا کرتے: جہنم کوا کثریا کروکیونکہاس کی گرمی سخت ،اس کی گہرائی بے حدہے اوراس میں لوہے کے ہتھوڑے ہیں۔

بَرُّاز ،ابویَثْلی صحیح ابن حبان اور بیہبق کی روایت ہے کہا گرجہنم میں پیھر پھینکا جائے اوراسے بنچے جاتے ہوئے ستر سال گزرجا ئیں ، تب بھی وہ اس کی گہرائی تک نہیں بہنچ سکے گا۔⁽³⁾

' دمسلم' میں حضرت ابو ہر ریرہ رَضِیَ اللهٔ عَنه ہے مروی ہے کہ ہم حضور صَلَّی الله عَلَيْهِ وَسَلَّم عَساتھ تھے کہ ہم نے الله اوراس کا رسول (صَلَّی الله عَلَيْهِ وَسَلَّم) زیادہ ایک دھا کہ سنا ، حضور نے فر مایا: جانتے ہویہ کیا تھا؟ ہم نے عرض کیا: الله اوراس کا رسول (صَلَّی الله عَلَيْهِ وَسَلَّم) زیادہ جانتے ہیں، آپ نے فر مایا: یہ پھر تھا جے الله تعالی نے ستر سال پہلے جہنم میں ڈالا تھا ابھی وہ اس کی گہرائی تک پہنچ سکا جانے ہیں، آپ نے فر مایا: یہ پھر تھا جے الله تعالی نے ستر سال پہلے جہنم میں ڈالا تھا ابھی وہ اس کی گہرائی تک پہنچ سکا ہے۔ (4)

طبرانی میں حضرتِ ابوسعید خُدری رَضِیَ اللهٔ عَنه سے مروی ہے: حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم نے ایک ہولناک آواز سن ، جبریل عَلیْهِ السَّلام حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم کے پاس آئے تو آپ نے پوچھا: جبریل بیکسی آواز تھی ؟ جبریل نے عرض کیا: یہ چٹان تھی جسستر سال پہلے جہنم کے کنارے سے گرایا گیا تھا اوروہ ابھی جہنم کی گہرائی تک پینی ہے ،الله تعالی

¹ ١١٧٧٥ الحبير، باب نفير، ١١٢٨، الحديث ١١٧٧٥

^{2} ترمذی، کتاب صفة جهنم، باب ماجاء في صفة قعر جهنم ، ٢٦٠/٤ الحديث ٢٥٨٤

الحديث ٥٢٤٧، الحزء التاسع، الحديث ٥٢٤٠، الخ، باب صفة النارواهلها، ٢٧٨/٦، الحزء التاسع، الحديث ٥٢٤٠٠

^{4} مسلم، كتاب الجنة...الخ، باب في شدة حر نار جهنم...الخ،ص٢٥٢، الحديث ٣١- (٢٨٤٤)

نے چاہا کہ آپ کوبھی اس کی آ واز سنادی جائے ،اس کے بعد کسی نے وصال تک آپ کو ہنتے ہوئے نہیں دیکھا۔ (1)
احمد اور تر فدی کی روایت ہے کہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے سرکی طرف اشارہ کر کے فر مایا:اگراس جتناسیسہ
آسمان سے زمین کی طرف بچینکا جائے تو زمین و آسمان کی پانچ سوسالہ سفر کی دوری کے باوجودرات سے پہلے بہلے یہ نہیں بہلے اس کی گہرائی
زمین پر آ جائے اوراگراسے جہنم کے کنارے سے جہنم میں بچینکا جائے تو چالیس سال گزرنے سے پہلے اس کی گہرائی
تک نہ بہنچ سکے۔ (2)

احمد، ابویعلی اور حاکم کی روایت ہے کہ اگر جہنم کا ہتھوڑ اجولو ہے سے تیار کیا ہوا ہے، زمین پر رکھ دیا جائے اور جن وانسان مل کراسے اٹھانا چاہیں تو اسے اٹھانہیں سکیس گے۔ (3)

حاکم کی روایت ہے کہ اگر پہاڑ پرہتھوڑ ہے کی ایک ضرب لگائی جائے تووہ ریزہ ریزہ ہوکرریت بن جائے۔ (4) ابن ابی الدنیا کی روایت ہے کہ اگر جہنم کا ایک پقر دنیا کے پہاڑوں پر رکھ دیا جائے تو وہ اس کی گرمی ہے پگھل جائیں۔ (⁵⁾

حاکم کی ایک روایت ہے کہ زمینیں سات ہیں اور ہرز مین کا دوسری زمین کے درمیان پانچیوسال کے سفر کے برابر فاصلہ ہے، سب سے او پر والی زمین مجھلی کی بیٹت پر ہے جس نے اپنی دونوں آئکھیں آسان سے ملائی ہوئی ہیں، مجھلی چٹان پر ہے اور چٹان فر شتے کے ہاتھ میں ہے، دوسری زمین ہوا کا قید خانہ ہے، جب اللہ تعالی نے قوم عاد کی ہلاکت کا ارادہ فر مایا تو وہاں کے خازن کو فر مایا کہ ان پر ہوا بھیج جوان کو ہلاک کرد ہے، خازن نے عرض کیا: یااللہ! میں ان پر بیل کے نتھنوں کے برابر ہوا بھیجونگا، ربود والد حلال نے فر مایا: تب تو دنیا کی تمام مخلوق ہلاک ہوجائے گی اور یہ سب کے لئے کا فی ہوگی، ان پر انگو تھی کے سوراخ کے برابر ہوا بھیجواور یہی وہ ہوا ہے جس کے متعلق ارشا والہی ہے:

^{1}المعجم الاوسط ، ١/٢٣٨ ، الحديث ٥١٨

^{2}ترمذى ، كتاب صفة جهنم، باب ماجاء في صفة طعام...الخ، ٤/٥٦، الحديث ٢٥٩٧

^{3}مسند احمد، مسند ابي سعيد الخدري، ٤ /٥٥ ، الحديث١١٢٣٣

^{4}المستدرك للحاكم، كتاب الاهوال ، باب السور الذي ذكره الله في القرآن، ٥/٥، ٨، الحديث ٨٨١٣

الترغيب والترهيب ، كتاب صفة الجنة والنار، فصل في سلاسلها وغير ذلك ، ٢٧٩/٤ ، الحديث ٥٦٤٥

مَاتَكَنُّ مِن شَيْءً اَتَتُعَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتُهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿ (1)

کی طرح کردیا۔

اس نے کسی چیز کونہیں حیموڑا جس بروہ آئی مگراہیے پوسیدہ مڈی

تیسری زمین میں جہنم کے پھر ہیں، چوتھی میں جہنم کا گندھک ہے، صحابہ کرام نے عرض کیا نیاد سول اللہ! جہنم کے لئے بھی گندھک ہے، صحابہ کران میں بلندوبالا مشحکم پہاڑ ڈالے لئے بھی گندھک ہے؟ آپ نے فرمایا: بخدا! اس میں گندھک کی گئی وادیاں ہیں، اگران میں بلندوبالا مشحکم پہاڑ ڈالے جائیں تو نرم ہوکرریزہ ریزہ ہوجائیں، پانچویں میں جہنم کے سانپ ہیں جن کے منہ غاروں کی طرح ہیں جب وہ کا فرکو ایک مرتبہ ڈسیں گئواس کی ہڈیوں پر گوشت باقی نہیں رہیگا۔

چھٹی میں جہنم کے بچھو ہیں جن میں سب سے چھوٹا بچھوبھی پہاڑی خچر کے برابر ہےوہ جب کا فرکوڑ سے گاتو کا فر جہنم کی شدت اور گرمی کو بھول جائے گا۔

ساتویں میں اہلیس لوہے سے جکڑا ہواہے،اس کا ایک ہاتھ آگے اور ایک پیچھے ہے، جب اللّٰہ تعالیٰ چاہتا ہے کہ اسے کسی بندے کے لئے چھوڑ دیتواسے چھوڑ دیتا ہے۔⁽²⁾

احمد، طبرانی متیح ابن حبان اور حاکم کی روایت ہے کہ جہنم میں بختی اونٹوں کی گردنوں جیسے سانپ ہیں، جب ان میں سے کوئی ایک ڈستا ہے تواس کی گرمی ستر سال کے راستے کی دُوری سے محسوس کی جاتی ہے اور جہنم میں پہاڑی خچروں جیسے بچھو ہیں، جب وہ ڈستے ہیں توان کی گرمی حالیس سال کی دوری ہے محسوس کی جاتی ہے۔ (3)

تر مذی میچے ابن حبان اور حاکم کی روایت ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمانِ اللّٰہی '' گالْمُهُلِ '' (4) کے بارے میں فرمایا ہے کہ وہ زیتون کے تیل کی تنگِفٹ کی طرح ہوگا، جب وہ ان کے چبروں کے قریب آئے گا تو ان کے چبروں کے قریب آئے گا تو ان کے چبرے کی کھال بالوں سمیت ادھڑ کر اس میں گرجائے گی۔ (5)

^{2}المستدرك للحاكم، كتاب الاهوال، باب كل ارض الى التي...الخ، ٥/٦ ٨ ٨، الحديث ٤ ٨٧٩

^{3} مسند احمد، مسند الشاميين، حديث عبدالله بن الحارث...الخ، ٢١٧/٦، الحديث ٩ ١٧٧٢

^{4}ترجمه كنز الايمان: چرخ ويخ (كولت بوع) دهات كى طرح - (ب ١٥ ١٠ الكهف: ٢٩)

^{5.....}المستدرك للحاكم، كتاب الاهوال ، باب صفة ماء كالمهل ، ٥/٩ ٢٨، الحديث ٨٨٢٢

''تر مذی'' کی روایت ہے کہ گرم یانی ان کے سرول پرڈالا جائے گا تو وہ شدید گرم یانی ان کے سرول سے گزر کر ان کے پیٹ میں اثر انداز ہوگا اور جو کچھان کے لئے بیٹوں میں ہوگا اسے باہر نکال دے گا یہاں تک کہ اس شدت ے ان کے پیروں سے بہد نکلے گا اوران کے وجود کی چر بی ختم کردے گا ، پھر دوبارہ اے ویسے ہی ڈالا جائیگا اور بار بار انسانوں کوبھی ہیئت ِاولی پر کیاجا تارہے گا۔ ⁽¹⁾

ضُحَّا ک کا قول ہے کہ جمیم وہ گرم یانی ہے جوز مین وآ سان کی پیدائش کے وفت سے جہنمیوں کو پلانے کے وفت تک برابرگرم ہور ہاہےاور پھرانہیں بلانے کےساتھان کےسروں پربھی ڈالا جائے گا۔

ا یک قول بیہ ہے کہ وہ جہنم کے گڑھوں میں جمع ہو نیوالے جہنمیوں کے آنسوہوں گے جوانہیں پلائے جائیں گے۔ اور بھی مختلف اقوال ہیں۔⁽²⁾

قرآنِ یاک میں اسی یائی کا ذکرہے،ارشاوالہی ہے:

اوروہ گرم یانی پئیں گے جوان کی انتزیاں کاٹ دےگا۔

(3) وَسُقُواٰمَآءُحَبِيْبًا فَقَطَّعَ اَمُعَآءَهُمُ ۞

احد، ترفدى اورحاكم كى روايت بے :حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم في الله مان اللي :

اوراسے پیپ کا یانی پلایا جائے گا جسے وہ گھونٹ گھونٹ سٹے گا

وَيُسْتَى مِنْ مَا وَصَدِيْ أَنْ يَتَحَرَّعُ عُدُولا يَكُادُ

اورا ہے گلے سے اتارنہیں سکے گا۔

کے بارے میں فرمایا کہ دوزخی اسے اپنے منہ کے قریب لائے گا تواس کی بدبوکی وجہ سے اسے بخت ناپسند کرے گامگر جب پیاس کے مارےمنہ کےاورزیا دہ قریب لائے گا تواس کامنہ بھن جائے گا اوراس کے سرکی کھال بالوں سمیت اس میں گر جائے گی اور جب وہ اسے گھونٹ گھونٹ سیٹے گا تو وہ اس کی انتڑیاں کاٹ کر باہر زکال دے گا⁽⁵⁾ چنانچیہ

- 1ترمذی ، کتاب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة شراب...الخ، ۲۲۲۶، الحدیث ۲۵۹۱
- 2الترغيب والترهيب ، كتاب صفة الجنة والنار، فصل في شراب اهل النار، ٢٨٢/٤، الحديث ٢٥٦٥
 - 3توجمه كنز الايمان: اورانبيس كولتا ياني پلاياجائكة نول كاكر فلاكرد درب ٢٦، محمد: ١٥)
- ◆تر جمهٔ کنز الایمان: اوراے پیپایا پانی پلایاجائے گا بمشکل اس کاتھوڑ اٹھوڑ اٹھونٹ لے گااور گلے سے بنیجا تارنے کی امید نہ ہوگ۔ (پ۱۲،۱۳ ابراهیم: ۱۷،۱٦)
 - 5ترمذی، کتاب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة شراب...الخ، ۲۲۲/ ، الحدیث ۲۹۹۲

فرمانِ اللهي ہے:

ۅٙٳڽ۫ؾۜٮٛؾۼؽؗؿؙۅٛٳؿۼٙٲڎٛۅٳڽؚؠٙٵۧٷٵڶؠؙۿڸؚؽۺؖۅؚؽٳڷۅؙڿؙۅٛ^ۄ ڽؚئۺٳڶۺۧڒؚٳڹ؞⁽¹⁾

اور جب وہ فریاد کریں گے توان کی فریادری کی جائے گی ایسے پانی کے ساتھ جو گلے ہوئے تا نبے جیسا ہوگا جوان کے دہنوں کو بھون ڈالے گاوہ بہت برایپنا ہے۔

احمداور حاکم کی روایت ہے کہ اگر''جہنم' کے بد بودار پانی کا ڈول دنیا میں گرادیا جائے تو تمام مخلوق اس کی بد بو سے پریشان ہوجائے ،اس پانی کا نام عُسّاق ہے جس کا فرمانِ اللی میں بھی ذکر ہے چنانچہ ارشاد ہوتا ہے:''پس چکھو گرم یانی اور عَسَّاق کو''⁽²⁾

> اورجہنیوں کے مشروب کے متعلق ارشاد فرمایا:''مگر گرم پانی اور غَسَّاق ہوگا۔''⁽³⁾ غَسًاق کے معنی میں کچھا ختلاف ہے۔⁽⁴⁾

حضرت ابن عباس رَضِیَ اللّهٔ عَنهُ مَا کا قول ہے کہ اس سے مرادوہ مواد ہے جو جہنیوں کے چڑوں سے بہے گااور بعض مفسرین کا کہنا ہے کہ اس سے مرادان کی پیپ ہے۔ حضرت کعب رَضِیَ اللّهٔ عَنهُ کا قول ہے کہ وہ جہنم کا ایک کنوال ہے جس میں ہرزہریلی چیز جیسے سانپ بچھووغیرہ کا زہر بہہ کر آئے گا اور وہاں جمع ہوتا رہے گا چھر کا فرکو وہاں لا یا جائے گا اور اسے اس میں غوطہ دیا جائے گا، جب وہ نکے گا تو اس کا چڑا اور گوشت گرچکا ہوگا اور اس کے پیروں اور ٹائلوں کے پیچھے چمٹا ہوا گھٹ تا ہوا آئے گا جیسے آدمی اپنے کسی کپڑے کو گھٹ تا ہوا لا تا ہے۔

تر فدى كى روايت بى: حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم في بيرٌ بت برهي :

- ںتو جمهٔ محنز الایمان: اوراگر پانی کے لئے فریاد کریں توان کی فریادری ہوگی اس پانی سے کہ چرخ دیئے (پیگھلے) ہوئے دھات کی طرح ہے کہان کے مند بھون (جلا) دیے گا کیا ہی بُر اپیٹا۔ (ب ۱۰ الکھف: ۲۹)
 - 2ترجمه كنز الايمان: تواسي چكهيس كهولتا پانى اور پيپ (ب٢٣ ، صَ٥٧٠)
 - النباده ٢٠ النباد ١٠ النباده ٢٠ النباد ٢٠ النباده ٢٠ النباده ٢٠ النباده ٢٠ النباد ٢٠ ا
 - 4مسند احمد، مسند ابي سعيد الخدري ، ٤ /٥٨ ، الحديث ١١٢٣٠

X

الله سے کماحقہ ڈرواورتم ہرگزنہ مرومگریہ کہ مسلمان ہوکر

اتَّقُواالله كَتَّ تُقْتِه وَلا تَنُوثُنَّ اللهِ وَأَنْتُمُمُّسُلِمُونَ ﴿

مرو_

اور فرمایا که زقوم کااگرایک قطره زمین پرڈال دیاجائے تو مخلوق پر زندگی گزار نادو بھر ہوجائے ،اس شخص کا کیا حال ہوگا جس کی غذا ہی زقوم ہوگی۔دوسری روایت کے الفاظ یہ ہیں:اس کا کیا حال ہوگا جس کا زقوم ہوگی۔دوسری روایت کے الفاظ یہ ہیں:اس کا کیا حال ہوگا جس کا زقوم کے سواکوئی کھا نانہیں ہوگا۔(2) حضرت ابن عباس دَحِیم الله عَنْهُمَا ہے تیج روایت کے ساتھ مروی ہے:انہوں نے فرمانِ الٰہی:

اورکھانا گلے میں پھنس جانے والا۔

وَّطَعَامًا ذَاغُصَّةٍ (3)

کی تفسیر میں فرمایا کہاس میں کانٹے ہوں گے جوحلق بکڑلیں گے، نداو پر آئیں گےاور نہ نیچے پیٹے میں اتریں گے۔

بخاری اورمسلم کی روایت ہے کہ کا فر کے کندھوں کا درمیانی فاصلہ تیز رفتار سوار کے تین دن کی مسافت کے برابر ہوگا۔

احمد کی روایت ہے کہ کا فرکی داڑھ احد پہاڑ کے برابر ہوگی اوراس کی ران بیضاء پہاڑ کی مثل ہوگی اور جہنم میں اس کی بیٹھ ک قُدُنید اور مکہ معظّمہ کے درمیانی فاصلہ کے برابر ہوگی یعنی تین دن کے سفر کے برابر ،اس کے چمڑے کی موٹائی بیالیس یمنی ہاتھ ہوگی یا بیالیس مجمی ہاتھ ،ابن حبان نے پہلے قول کو ترجیح دی ہے۔ (5)

مسلم کی روایت ہے کہ کافر کی داڑھ یا دانت احد پہاڑ جبیبا ہوگا اوراس کے چڑے کی موٹائی تین دن کے سفر کے برابر ہوگی۔ (⁶⁾

تر مذی کی روایت ہے:حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا کہ قیامت کے دن کا فر کی داڑھاُ حدکے برابر ہوگی ،اس کی ران بیضاء کے برابراور جہنم میں اسکی بیٹھک تین دن کے سفر کے برابر ہوگی جیسے رَبَدُ ہاور مدینہ کا درمیانی فاصلہ ہے۔⁽⁷⁾

- ۱۰:۲:نالایمان: الله یو دروجیسااس سودر نے کاحق ہاور برگزندمرنا مگرمسلمان (ب٤ ال عمران ۱۰۲)
 - 2 ترمذى، كتاب صفة جهنم ، باب ماجاء في صفة شراب...الخ ، ٢٦٣/٤ ، الحديث ٤ ٥ ٩ ٢
 - المزمل:۱۳) عن توجمه كنز الايمان: اور كلي مين يضتا كهانا_(پ٢٩،المزمل:١٣)
 - 4بخارى، كتاب الرقاق، باب صفة الجنة و النار، ٢٦٠/٤، الحديث ٢٥٥١
 - 5 مسند احمد، مسند ابي هريرة ، ٣٠ / ٢٠ الحديث ١٠٩٣١
 - (٢٨٥١) ٤٤ الحديث ٤٤ (٢٨٥١)
 - 7 ترمذي ، كتاب صفة جهنم ، باب ماجاء في عظم اهل النار، ٢٦١/٤، الحديث ٢٥٨٧

احمد کی روایت ہے: قیامت کے دن کا فر کی داڑھ احد پہاڑجیسی ہوگی ،اس کے چمڑے کی موٹائی ستر ہاتھ ہوگی ، اس کا باز و بیضاء پہاڑ جسیا ،اور اس کی ران وَرِقان ⁽¹⁾ جیسی اور جہنم میں اس کی بیٹھک میرے اور رَبَدُ ہ کے درمیانی فاصلہ کے برابر ہوگی۔⁽²⁾

ایک روایت میں ہے کہ جہنم میں اس کی بیٹھک تین دن کے سفر کے برابر ہوگی جیسے رَبَذَ ہ ہے۔

احمد ، تر مذی اور طبر انی کی روایت ہے: جسے حافظ مُنْذِری نے اچھی سندوالی حدیث کہا ہے اور تر مذی نے اسے فُضَیل بن بیزید سے نقل کیا ہے کہ کا فرجہنم میں ایک یا دوفر سخ کے برابر لمبی زبان جہنم میں کھینچتا پھرے گا اور لوگ اسے روندتے ہوں گے ، ایک فرسخ تین میل کے قریب ہوتا ہے۔

(4)

فضل بن یزید نے ابی العَجْلان سے روایت کی ہے کہ کا فرقیامت میں دوفر سے کمی زبان تھینچ رہا ہوگا اور لوگ اسے روندر ہے ہول گے۔ ⁽⁵⁾

بیہ فی وغیرہ کی روایت ہے کہ جہنمیوں کے جسم جہنم میں بہت بڑے کردیئے جائیں گے یہاں تک کہاس کے کان کی کو سے اس کے کندھے تک سات سوسال کے سفر کا فاصلہ ہوگا ،اس کی کھال کی موٹائی ستر ہاتھ اور اس کی داڑھ جبلِ احد کے برابر ہوگی۔ (6)

احمداور حاکم نے بسند شخیح مجاہد سے روایت کیا ہے کہ حضرتِ ابن عباس رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا نے فرمایا: جانتے ہو جہنیوں کے جسم کتنے قطیم ہوں گے؟ میں نے کہا: نہیں! تب انہوں نے کہا: ہاں، بخدا! تم نہیں جانتے کہان کے کان کی کو اور ان کے کندھے کے درمیان ستر سال کے سفر کا فاصلہ ہوگا، اس کی وادیوں میں خون اور پیپ رواں ہوگی، میں نے کہا: نہریں ہوں گی تو انہوں نے فرمایا: نہیں بلکہ وادیاں ہوں گی۔ (7)

۱۰۰۰۰۰۱یک قطیم سیاه پیها ژکانام ہے۔علمیه
 ۱۰۰۰۰۰۰۱یک قطیم سیاه پیها ژکانام ہے۔علمیه

^{3}ترمذی ، کتاب صفة جهنم ، باب ماجاء فی عظم اهل النار، ۲۱/۶ ، الحدیث ۲۰۸۷

^{4}المرجع السابق، الحديث ٢٥٨٩

^{5} شعب الايمان، التاسع من شعب ... الخ، فصل في ان الجنة ... الخ، ٥٣/١ ٣٥٣، الحديث ٢٩ ٣٩ بابن العجلان مكان ابي العجلان

^{6}هسند احمد ، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب، ۲/۲ ٥٥، الحديث ٠٠٥٠

^{7}مسند احمد ، مسند السيدة عائشة رضى الله عنها ، ٩ /٢٢٧ ، الحديث ٢٤٩١٠

اب 52)

﴿ گناھوں سے خوفزدہ ھونے کی فضیلت ﴿

یہ بات اچھی طرح ذہن نشین کر لیجئے کہ گنا ہوں سے متنبہ کرنے والی باتوں میں خوفِ الہٰی ،اس کے انتقام کا اندیشہ، اس کی ہیبت اور شان وشوکت ،اس کے عذاب کا ڈراوراس کی گرفت بہت نمایاں حیثیت رکھتی ہیں ،فر مانِ الہٰی ہے کہ ''جولوگ اللّٰہ تعالیٰ کے احکامات کی مخالفت کرتے ہیں وہ اس امر سے ڈریں کہ انہیں فتنہ یا در دناک عذاب بینچے۔'،(1)

مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ایک جوان کے پاس تشریف لائے جونزع کے عالم میں تھا، آپ نے فرمایا:
اپنے آپ کوکس عالم میں پاتے ہو؟ عرض کیا: یارسول الله! میں الله کی رحمت کا امید وار ہوں اور اپنے گنا ہوں سے خوفز دہ ہوں ۔ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے بین کر فرمایا کہ کی بندے کے دل میں ایسی دوبا تیں جمع نہیں ہوتیں مگر الله تعالی اس بندے کی امید پوری کر دیتا ہے اور گنا ہوں کے خوف سے اسے بے نیاز کر دیتا ہے۔ (2)

وَهُب بن وَرُوسے مروی ہے: حضرتِ عِیسیٰ عَلَیْهِ السَّلام فر مایا کرتے تھے کہ جنت کی محبت اور جہنم کا خوف مصیبت کے وقت صبر دیتا ہے اور بیدو چیزیں دنیاوی لذتوں ،خواہشات اور نافر مانیوں سے دور کر دیتی ہیں۔

حضرت ِ حسن رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ کا قول ہے: بخداتم سے پہلے ایسے لوگ ہوگز رے ہیں جو گنا ہوں کوا تناعظیم سجھتے تھے کہ وہ بے حدوحساب سونے چاندی کی بخششوں کو بھی اپنے ایک گناہ سے نجات کا ذریعہ نہیں سبجھتے تھے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ جو بچھ میں سنتا ہوں ، کیاتم سنتے ہو؟ آسان چَر چَرا تا ہے اور اس کاحق ہے کہ وہ چَر چَرائے ، ربِ دوالجلال کی قتم! آسان میں چارانگل جگہ نہیں ہے جس میں فرشتہ بارگاوالہی میں سجدہ ریز، قیام کرنے والایار کوع کرنے والانہ ہو، جو بچھ میں جانتا ہوں اگرتم جانتے تو کم ہنتے اور زیادہ روتے اور نکل جاتے یا پہاڑوں پرچڑھ جاتے اور الله تعالی

ستو جمه کنز الایمان: تو ڈریں وہ جورسول کے علم کے خلاف کرتے ہیں کہ آئییں کوئی فتنہ پنچے یاان پر در دناک عذاب پڑے۔ (پ۸۱، النور: ۹۳)

2ترمذي، كتاب الجنائز، باب ما جاء في التشديد عند الموت ،٢٩٦/٢، الحديث ٩٨٥

كاشفة القلوب ۗ

کے شدیدانتقام اور ہیب وجلال کے خوف سے اللّٰہ تعالیٰ کی بناہ ڈھونڈتے۔⁽¹⁾

ایک روایت میں حضرتِ بکر بن عب الله المُزَنی دَحْمَةُ اللّهِ عَلَیْه کا قول ہے: جولوگ ہنتے ہوئے گناہ کرتے ہیں وہ روتے ہوئے جہنم میں جائیں گے۔

حدیث نثریف میں ہے: کہا گرمومن الله تعالیٰ کے تیار کردہ تمام عذا بوں کو جانتا تو کبھی بھی جہنم سے بےخوف نہ تا۔ (2)

صحیحین میں ہے؛جب بیآیت نازل ہوئی:

اوراینے قریبی رشتہ داروں کوڈ را۔

وَٱنْذِرُمُ عَشِيْرَتَكَ الْأَقْرَبِيْنَ ﴿

تو آپ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كُور بِهِ كَ اور فر ما يا: الله تعالى سے اپنے نفسوں كونٹر يدلو، ميں تمہيں الله تعالى كے معاملات ميں كسى چيز سے بے پروانہيں كروں گا، الله تعالى كے معاملات ميں كسى چيز سے بے پروانہيں كروں گا، الله عباس! (رسولِ خداصَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كَ چَيا) ميں ميں تمہيں احكامِ خداوندى ميں كسى چيز سے بے پروانہيں كروں گا، الله عباس! (رسولِ خداصَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كى چوچى) ميں آپ كوالله تعالى كے عذاب سے كسى چيز سے بے پروانہيں كروں گا، الله عليه إرسولِ خداصَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كى چوچى) ميں ميں تم كوالله كسامنے كسى چيز سے بے پروانہيں كروں گا، الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كى بيوچى) مير بے مال سے جو چاہے ما نگ لومگر ميں الله كے سامنے تمہيں كسى چيز سے بے پروانہيں كروں گا۔ (())

حضرت عاكشه صديقه رضى الله عنهان بير سير يرضى:

اورجولوگالله کی عطاکردہ چیزوں سے دیتے ہیں اور ایکے دل اس

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَاۤ التَوْاوَّ قُلُوبُهُمۡ وَجِلَةٌ اَنَّهُمُ

بات سے ڈرتے ہیں کہ وہ اللہ تعالیٰ کی طرف لوٹنے والے ہیں۔

اِلْ رَبِّهِمُ لِم جِعُوْنَ أَنَّ (5)

1 كنز العمال، كتاب العظمة ، قسم الاقوال، ٥/٦ ١ ، الجزء العاشر، الحديث ٢٩٨٢٨ ، ٢٩٨٢٨ و مسند احمد ، 1

....2

- 3ترجمه كنز الايمان: اورا محبوب! ایخ قریب ترشد دارول كودراؤ (۱۹۰، الشعراء: ۲۱٤)
 - 4بخارى، كتاب التفسير، باب ولا تخزني...الخ ،٣٠٤ ٢٩ ١، الحديث ٤٧٧١
- ۔۔۔۔۔تو جمهٔ کنز الایمان: اوروہ جودیتے ہیں جو کچھ دیں اوران کے دل ڈررہے ہیں یوں کہان کواپنے ربّ کی طرف پھرنا ہے۔ (پ۸۱، المومنون: ۲۰)

اور پوچھا: یارسول الله! کیابیه و همخص ہے جوزنا کرتا ہے، چوری کرتا ہے، شراب پیتا ہے مگرخوف خدا بھی رکھتا ہے؟ آپ نے فرمایا: اے ابوبکر کی بیٹی! ایسانہیں ہے بلکہ اس سے مراوو همخص ہے جونماز پڑھتا ہے، روزہ رکھتا ہے، صدقہ دیتا ہے مگراس بات سے ڈرتا ہے کہ کہیں وہ نامقبول نہ ہوں۔ (1) اسے احمد نے روایت کیا ہے۔

حضرت حسن بصری رَضِیَ اللهٔ عَنْه ہے کہا گیا: اے ابوسعید! تمہاری کیارائے ہے؟ ہم ایسے لوگوں کی مجلس میں بیٹھتے ہیں جوہمیں رحمتِ خداوندی ہے اُمیدیں وابسۃ رکھنے کی ایسی باتیں سناتے ہیں کہ ہمارے دل خوشی سے اڑنے لگتے ہیں، آپ نے فرمایا: بخدا! تم اگرایسی قوم میں بیٹھتے جو تمہیں خوف خدا کی باتیں سناتے اور تم کوعذاب الہی سے ڈراتے بہاں تک کہتم امن پالو، وہ تمہارے لئے بہتر ہے اس چیز سے کہتم ایسے لوگوں میں بیٹھو جو تم کو بے خوفی اور اُمید میں رکھیں یہاں تک کہتم کوخوف آ گھیرے۔

....

حضرتِ فاروقِ اعظم عمر بن خَطَّاب دَخِیَ اللهٔ عَنْه کو جب نیز ہ سے زخی کر دیا گیا اور ان کی وفات کا وفت قریب آیا تو انہوں نے اپنے بیٹے سے کہا: بیٹے! میراچہرہ زمین پرر کھ دو، افسوس! اور شدید افسوس! اگر الله نے مجھ پر دم نہ فر مایا۔ حضرتِ ابن عباس دَخِیَ اللهٔ عَنْهُ مَا نے کہا: امیر المؤمنین! آپ کوکس چیز کا خوف ہے؟ الله تعالیٰ نے آپ کے ہاتھ سے فقو حات کرا کیں، شہر آبا دکرائے۔ انہوں نے کہا: میں اس بات کو پسند کرتا ہوں کہ مجھے برابر ہی میں چھوڑ دیا جائے یعنی نہنے مان اور خافع دیا جائے۔

حضرتِ زین العابدین علی بن حسین دَضِیَ اللّهٔ عَنْهُمُ جب وضوے فارغ ہوتے تو کا پنے لگ جاتے ،لوگوں نے سبب پوچھا: تو آپ نے فرمایا: تم پر افسوس ہے! تہمیں پیتنہیں میں کس کی بارگاہ میں جارہا ہوں اور کس سے مناجات کا ادادہ کررہا ہوں۔

حضرتِ احمد بن منبل رَضِى اللهُ عَنهُ نے فر مایا: خوف خدانے مجھے کھانے پینے سے روک دیا، اب مجھے کھانے پینے کی خواہشات نہیں ہوتیں۔

صَحِيحَيْن كى روايت ہے:حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے ان سات آ دميوں كا ذكر كيا كه جس دن كوئى سايہيں ہوگا

التاخير عسند السيدة عائشه رضى الله عنها ١٠٠ ١٩/١ ، الحديث ٢٥٧٦٣ بالتقديم و التاخير

توالله تعالی انہیں اپنے عرش کے سامید میں جگد دےگا، ان میں سے ایک وہ آ دمی ہے جس نے تنہائی میں الله تعالی کے عذاب اور وعید کو یاد کیا اور اپنے قصور یاد کر کے خوف الہی سے اس کی آئھوں سے آنسو بہد نکلے اور خوف الہی کی وجہ سے وہ نا فر مانی اور گنا ہوں سے کنارہ کش ہوگیا۔ (1)

حضرت ابن عباس رَضِيَ اللهُ عَنهُمَا سے مروی ہے: حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فر مایا: دوآ تکھیں الیی ہیں جنہیں آگنہیں چھوئے گی ،ایک وہ آ تکھ جوآ دھی رات میں الله کے خوف سے روئی اور دوسری وہ آ تکھ جس نے راہِ خدامیں تگہبانی کرتے ہوئے رات گزاری۔(2)

حضرت ابو ہر ریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے:حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فر مایا: قیامت کے دن ہر آ نکوروئے گی مگر جو آ نکو اللّٰه کی حرام کردہ چیزوں سے رک گئی، جو آنکو راہِ خدامیں بیدار رہی اور جس آ نکو سے خوف الٰہی کی وجہ سے محفوظ رہے گی۔ (3)

تر ذری نے حسن اور شیخے کہہ کر حضرت ابو ہر ریرہ دَ ضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے روایت کی ہے کہ رسولِ خداصَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نَرُ مَلْ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّه عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَنْه سے رویا یہ اللّٰه عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰه عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰه عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَنْه اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَنْهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم الللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلّ

حضرت عبدالله بن عمروبن عاص رَضِيَ اللهُ عَنهُ مَا كا قول ہے كہ ہزار دینار راو خدامیں خرج كرنے سے مجھے خوف خدا سے ایک آنسو بہالینازیادہ پیند ہے۔

حضرت عون بن عبدالله رَضِيَ اللهُ عَنْه كہتے ہيں: مجھے بيروايت ملى ہے كهانسان كے خوف ِ خدا ہے بہنے والے آنسو

۱۳۳۰ بخارى، كتاب الاذان ، باب من جلس في المسجد...الخ ، ۲۳٦/۱ ، الحديث ، ٦٦

^{2} الخ ، ١ / ٤٨٨ ، الحديث ٢٩٦ سر من شعب الايمان... الخ ، ١ / ٤٨٨ ، الحديث ٢٩٦

^{3}حلية الاولياء، ٣٠/٣، الحديث ٣٦٦٣

^{4}ترمذي، كتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء في فضل الغبار...الخ ٢٣٦/٣، الحديث ١٦٣٩

_ []

اس کے جسم سے جس حصہ پر لگتے ہیں، اس حصہ کوالله تعالی جہنم پرحرام کردیتا ہے اور حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کا سینتُ انور رونے کی وجہ سے ایسے جوش مارتا تھا جیسے ہانڈی ابلتی اور جوش مارتی ہے (1) (یعنی جیسے بھڑ کتی آگ پر ہانڈی جوش مارتی ہے) کندی کا قول ہے کہ خوف خدا سے رونے والے کا ایک آنسوسمندروں جیسی طویل وعریض آگ کو بجھادیتا ہے۔

حضرت ابن سَمَّا ک دَ حُمَهُ اللَّهِ عَلَیُه اینے نفس کوسَر زُنِش کرتے اور فر ماتے کہ کہنے کوتو زاہدوں جیسی باتیں کرتے ہو اور عمل منافقوں جبیبا کرتے ہواوراس کُچُ رُوی کے باوجود جنت میں جانے کا سوال کرتے ہو، دور ہو! دور ہو! جنت کے لئے دوسر بے لوگ ہیں جن کے اعمال ہمارے اعمال سے طعی مختلف ہیں۔

حضرت سُفیان تُوری دَخِی اللّه عَنه کہتے ہیں کہ حضرت جعفر صادق دَخِی اللّه عَنه کی خدمت میں ، میں حاضر ہوااور عرض کی: اے رسول خداصَلْی اللّه عَلَیْهِ وَسَلَّه کے لختِ جَگر! مُصے وصیت کیجئ! آ ب نے فر مایا: ' سفیان! جھوٹے میں مُروَّت نہیں ہوتی ، حاسد میں خوشی نہیں ہوتی عُملین میں بھائی چارہ نہیں ہوتا اور بَرُخُلُق کے لئے سرداری نہیں ہوتی۔' میں نے کہا: اے رسولِ خدا کے فرزند! کچھاور نصیحت فرما ہیئ! آ پ نے فرمایا: اے سفیان! اللّه تعالیٰ کی منع کر دہ چیزوں میں نے کہا: اے رسولِ خدا کے فرزند! کچھاور نصیحت فرما ہیئ؟ آ پ نے فرمایا: اے سفیان! اللّه تعالیٰ کی منع کر دہ چیزوں ہوتی رکھو، تبتم مومن ہوگی، ہُرول سے دوئی ندر کھورنہ تو بھی ہُر عَمل کرنے لگے گا، چنا نچے حدیث میں ہے کہ آ دمی اپنے دوست کے طریقہ پرہوتا ہے، تم یہ دیکھو کہ تبہاری دوئی کس سے ہے؟ اور اپنے کا مول میں ان لوگوں سے مشورہ لو جونونے خدار کھتے ہوں ، میں نے عرض کیا: اے رسولِ خدا کے فرزند! کچھاور نصیحت کیجے! آ پ نے فرمایا: جو بغیر قبیلہ کے عزت اور بغیر حکومت کے ہیہت چا ہے اسے چا ہے کہ خدا کی نا فرمانی کی ذلت سے نکل کر اللّٰہ کی فرمانہ دو اللّٰہ کی فرمانہ ہو کہ میں ان اور فرمایا: اے رسولِ خدا کے فردا کی نا فرمانی کی ذلت سے نکل کر اللّٰہ کی فرمانہ دو اللّٰہ کی فرمانہ ہو گیہ کے اسے جا ہے کہ خدا کی نا فرمانی کی ذلت سے نکل کر اللّٰہ کی فرمانہ دو تین کہا: اے رسولِ خدا کے فرزند! کچھاور نصیحت فرمایا: آ پ نے فرمایا: مجھے میرے والد نے تین کہمزین اور کی با تیں سکھلا کیں اور فرمایا: اے بیٹے! جو بروں کی صحیت اختیار کرتا ہے، سلامت نہیں رہتا، جو ہری کی حجت اختیار کرتا ہے، سلامت نہیں رہتا، جو ہری کی جگھ

^{1}مسند احمد، مسند المدنيين، حديث مطرف بن عبدالله ، ٩٩/٥ و٤ ،الحديث ٢ ٦٣١ .

جا تاہے مُثبَّم ہوتا ہے اور جواپنی زبان کی حفاظت نہیں کرتا شرمندگی اٹھا تا ہے۔

ابن مبارک رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا کہنا ہے کہ میں نے وُبَیْب بن وَرُد رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے بوچھا کہ جو شخص الله کی نافر مانی کرتا ہے، کیاوہ عبادت کا مزہ یا تا ہے؟ انہوں نے کہا: نہیں اور معصیت کا اِرادہ کرنے والا بھی نہیں۔

امام اَبُواْلَفُرَح إِبِن جَوَزى دَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ كَا قُول ہے كہ خوف خواہ شات نفسانی كوجلانے والى آگ ہے، جس قدر بيہ آگ شہوات كوجلائے گی اور گنا ہوں سے روكے گی ، اس قدر بيہ بہترين ہوگی اسی طرح جس قدر بيخوف عبادت پر برا محيخة كريگا اسی قدريہ بہترين ہوگا ، اس محارث كيے نہيں ہوگا ، اسی سے ہی تو پاكدا منی ، تقویٰ ، پر ہيزگاری ، مجاہدات اورا يسے عمدہ اعمال كاظہور ہوتا ہے جن سے الله تعالى كاقر ب حاصل ہوتا ہے جیسا كه آیات واحادیث سے ثابت ہوتا ہے چنا نچوار شا والہی ہے:

ان لوگوں کیلئے ہدایت اور رحمت ہے جواپنے رب سے ڈرتے ہیں۔

(1) هُدًى وَّهَ حُمَةٌ لِلَّنِ بِينَ هُمُ لِرَبِّهِمُ يَـرُهَبُونَ ۞

اورفر مانِ اللي ہے:

ى ضِى اللهُ عَنْهُمْ وَى ضُوْاعَنْهُ ﴿ ذَلِكَ لِمَنْ

خَشِى َرَبَّهُ ۞

نیز فرمانِ الہی ہے:

وَخَافُوْنِ إِنْ كُنْتُمْ مُّوَّمِنِيْنَ هِ (3)

مزیدارشادهوا:

(4) وَلِمَنْخَافَمَقَامَرَ بِهِجَنَّاثِ ۞

الله ان سے راضی ہوااور وہ الله سے راضی ہوئے بیاس کے لیے ہے جواین رب سے ڈرا۔

اور مجھ سے ڈروا گرتم ایما ندار ہو۔

اور جو شخص اپنے بروردگار کے آگے کھڑے ہونے سے ڈرتا ہے اس کے لیے دوجنتیں ہیں۔

- **ں**.....توجمهٔ کنز الایمان: ہدایت اور رحمت ہان کے لیے جوابیے رب سے ڈرتے ہیں۔ (ب۹۱ الاعراف: ۱۵۲)
- 2ترجمه كنز الايمان: الله ان سراضى، اوروه اس سراضى، ياس كي بي مجوايخ رب سو در رب ٢٠، البينة ٨٠
 - 3ترجمه كنز الايمان: اور مجمس وروا كرايمان ركعة بور (ب٤، ال عمران: ١٧٥)
 - **4**.....توجمهٔ کنز الایمان: اور جواین ربّ کے حضور کھڑے ہونے سے ڈرےاس کیلئے ووجنتیں ہیں۔(پ۲۰، الرحن ن ٤٦٪)

البتەنقىچە جاصل كرے گا جۇمخص ڈرتا ہے۔

اورارشادفر مایا:

سَيَنَّ كُرُّ مَنُ يَّخْتِي أَنَّ لِهِ (1)

فرمان الهي ہے:

اِتَّمَايَخْشَى اللهَ مِنْ عِبَادِةِ الْعُلَنَّوُ الْ

سوائے اسکے نہیں کہ اللہ کے بندوں میں سے عالم ڈرتے ہیں۔

اور ہروہ آیت یا حدیث جوعلم کی فضیلت پر دلالت کرتی ہے وہ خوف کی فضیلت پر بھی دلالت کرتی ہے کیونکہ خوف علم ہی کانتُمُرہ ہے۔

ابن افی الدنیا کی روایت ہے:حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَ سَلَّم نے فرمایا: جب خوف خدا سے بندے کاجسم کا نبتا ہے اور اس کے رونگٹے کھڑے ہوجاتے ہیں اس کے گناہ ایسے جھڑتے ہیں جیسے سو کھے درخت سے پتے جھڑتے ہیں۔⁽³⁾ حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا:اللَّه تعالیٰ فرما تا ہے: مجھا پنی عزت وجلال کی قسم! میں اپنے بندے پر دوخوف اور دوامن جمع نہیں کرتا،اگروہ دنیا میں مجھ سے اُمن میں (بخوف) ہوتا ہے تو میں قیامت کے دن خوفز دہ کروں گا اور

اگرد نیامیں وہ مجھ سے ڈرتا ہے تو میں اسے قیامت کے دن بے خوف کر دوں گا۔⁽⁴⁾

ابوسليمان الداراني دَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ كا قول ہے كه ہروه دل جس ميں خوف خدانہيں ہے ويرانه ہے،اور فرمانِ اللي

:ح

یس خدا کی تدبیر سے بےخوف نہیں ہوتے مگر خسارہ پانے والی ...

قوم ہی بے خوف ہوتی ہے۔

فَلَايَأُمَنُمَكُمَ اللهِ إِلَّا النَّقُومُ الْخُسِرُونَ ﴿ (5)

الاعلى: ١٠٠ الاعلى: عقريب فيحت مانے گاجوژرتا ہے۔ (پ٠٣٠ الاعلى: ١٠)

الله سے اللہ ہے اس کے بندول میں وہی ڈرتے ہیں جوعلم والے ہیں۔ (پ۲۲، فاطر: ۲۸)

3 شعب الايمان، الحادي عشر من شعب الايمان .. . الخ ، ١ / ١ ٩ ٤ ، الحديث ٢ . ٨

4....المرجع السابق، ص٢٨٦، الحديث ٧٧٧ بالتقديم والتاخير

الاعداف: تو جمه كنز الايمان: تو الله كي خفيه تدبير سے نثر نہيں ہوتے مگر تابى والے ـ (پ٩٠ الاعداف: ٩٩)

اب 53

خ فضائل توبه خ

توبه كى فضيلت ميں بهت مي آيات وارد بيں ، فرمانِ اللي ہے:

اورتوبه كروالله كي طرف ايمومنو! تا كهتم فلاح ياؤ_

وَتُوبُوَّا إِلَى اللهِ جَمِيْعًا اَيُّكَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمُ تُقْلِحُوْنَ ۞ (1)

اورفرمایا:

وَالَّذِيْنَ لَا يَدُعُونَ مَعَ اللهِ الهَّااخُرُولَا يَقْتُلُونَ النَّفُسَ الَّذِيْ حَرَّمَ اللهُ اللهُ اللهُ الْحَقِّ وَلَا يَزُنُونَ وَمَن يَّنَفُ مَا للهُ اللهُ اللهُ اللهُ الْحَقِّ وَلَا يَزُنُونَ وَمَن يَّافُهُ اللهُ مَن اللهُ وَمَن تَاب وَعِيلَ صَالِحًا فَاوُلَيْكَ عَمُونُ اللهُ اللهُ اللهُ مَن اللهُ اللهُ اللهُ مَن اللهُ اللهُ اللهُ مَن اللهُ اللهُ مَن اللهُ الله

اور جولوگ الله کیساتھ کوئی اور معبوذ ہیں پکارتے اور ناحق کسی انسان
کو قبل نہیں کرتے جس نے آل کوالله نے حرام کر دیا ہے اور زنانہیں
کرتے اور جوکوئی ہے کام کرے گا شخت مصیبت سے ملاقات کرے
گا قیامت کے دن اسے دگنا عذاب دیا جائے گا اور رسوائی کیساتھ
ہمیشداسی میں رہے گا مگر جس نے تو بہ کی اور ایمان لا یا اور ایچھ
عمل کئے پس بیلوگ الله تعالی آئی برائیوں کوئیکیوں میں بدل دیتا
ہے اور الله بخشے والا مہر بان ہے اور جوکوئی تو بہ کرے اور ایحقمل
کرے پس بیشک وہ رجوع کرنا ہے الله کی طرف رجوع کرنا۔

توبہ کے متعلق بہت سی احادیث ہیں مسلم کی ایک حدیث ہے کہ بے شک الله تعالی اپنی رحت کورات میں وسیع

النور: ۳۱) ملاورالله كلطرف توبكروا مسلمانو! سب كسب اس اميد بركتم فلاح پاؤ- (پ ۱۸ النور: ۳۱)

ستو جمهٔ کنز الایمان: اوروه جوالله کے ساتھ کی دوسرے معبود کونہیں پوجتے اوراس جان کوجس کی الله نے حرمت رکھی ، ناحی نہیں مارتے اور بدکاری نہیں کرتے اور جو بیکام کرے وہ سزایائے گا۔ بڑھایا جائے گااس پر عذاب قیامت کے دن اور ہمیشہ اس میں ذلت سے رہے گا مگر جوتو بہ کرے اور ایمان لائے اور اچھا کام کرے تو ایسوں کی برائیوں کوالله بھلائیوں سے بدل دے گا اور الله بخشے والامہر بان ہے اور جوتو بہ کرے اور اچھا کام کرے تو وہ الله کی طرف رجوع لایا جیسی جائے تھی۔ (ب۹۰، الفرقان: ۸۸ تا ۷۸)

کرتا ہے تا کہ دن میں گناہ کرنے والے تو بہ کریں اور وہ ان کی تو بہ قبول فر مائے اوراسی طرح دن کو اپنا وسب رحمت دراز فر ما تا ہے تا کہ رات کے گناہ گاروں کی تو بہ قبول فر مائے یہاں تک کہ مغرب سے سورج طلوع ہوگا⁽¹⁾ (روز قیامت تک مترب ہے مغرب کی حدیث ہے ،مغرب کی طرف ایک دروازہ ہے جس کی چوڑ ائی چالیس یاستر سال کے سفر کے برابر ہے ، الله تعالیٰ نے اسے آسان وزمین کی پیدائش کے وقت سے تو بہ کے لئے کھولا ہے اور اسے بند نہیں کرے گا تا آئک مغرب سے سورج طلوع ہوگا۔ (روز قیامت تک)

تر مذی کی حدیث صحیح ہے الله تعالی نے مغرب میں تو بہ کے لئے ایک درواز ہ بنایا ہے جس کاعرض ستر سال کے سفر کے برابر ہے ،الله اس وقت تک اسے بندنہیں فر مائے گاجب تک کہ اس سے پہلے سورج مغرب سے طلوع نہ کرے۔(3) چنانچے فر مانِ الٰہی ہے :

يَوْمَ يَأْقِ بَعْضُ الْيِتِ مَبِّكَ لاَ يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا (4) جسدن تير روب كي بعض نثانيان آئيں گی كى كواس كا ايمان نفع نبين دے گا۔

یہ کہا گیا ہے کہ بیروایت اور پہلے والی روایت کے مرفوع ہونے کی تصریح نہیں ملتی جیسا کہ پیہتی نے اس کی تصریح کی ہے،اس کا جواب بیہ ہے کہ ایسی باتیں اپنی عقل اور سمجھ سے نہیں کہی جاتیں لہذا بیحدیث مرفوع کے حکم میں ہوگ۔

طبرانی نے جید سند سے نقل کیا ہے کہ جنت کے آٹھ دروازے ہیں،سات دروازے بند ہیں اور ایک دروازہ تو ہدی کے لئے کھا ہے یہاں تک کہ سورج مغرب سے طلوع ہوگا۔ (⁵⁾

ابن ماجہ نے جید سند سے بیر حدیث روایت کی ہے کہ اگر تم اتنے گناہ کرو کہ تمہارے گناہ آسانوں تک پہنچ جائیں، پھرتم تو بہکروتواللہ تعالیٰ تمہاری تو بہ قبول فر مالے گا۔⁽⁶⁾

^{●}مسلم، كتاب التوبة، باب قبول التوبة من الذنوب ... الخ، ص٧٥٥ ، الحديث ٣١ ـ (٢٧٥٩)

^{2}ترمذي، كتاب الدعوات، باب في فضل التوبة...الخ ، ٥/٦ ٣١، الحديث ٢٥ ٣٥.

^{3}المرجع السابق ، ص٣١٧ ، الحديث ٤٧ ٣٥

 ^{◄}ترجمه كنز الايمان: جسون تههار _ربك ودايك نشانى آئ كى كى جان كوايمان لا ناكام ندو _ گا_(ب٨١لانعام:١٥٨)

^{5}المعجم الكبير، ١٠٤٧٦ ، الحديث ١٠٤٧٩

^{6}ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر التوبة ،٤/٠٩٠، الحديث ٤٣٤٨

X

حاکم کی صحیح روایت ہے کہ یہ بات انسان کی سعادت مندی کی علامت ہے کہ اس کی زندگی طویل ہواور اللّٰہ تعالیٰ اسے توب کی تو فیق عطافر مائے۔

تر مذی،این ماجهاور حاکم کی روایت ہے کہ ہرانسان خطا کار ہےاور بہترین خطا کارتو بہکرنے والے ہیں۔⁽²⁾

بخاری وسلم کی صدیث ہے کہ ایک بندے نے گناہ کیا، پھر اللّٰه کی بارگاہ میں عرض کیا: اے اللّٰه! ہیں نے بہت بڑا گناہ کیا ہے، میرا بید معاف فر مادے، رب نے فر مایا: میرا بندہ جا نتا ہے کہ اس کا خدا ہے جو گناہ پر مُوافَدٌ ہ کرتا ہے اور گناہ ول کو معاف کر دیا، پھر وہ انسان جتنی مدت اللّٰه نے چا ہا گناہوں سے رکار ہا، پھر اس نے دوسرا گناہ کر لیا اور کہا: اے اللّٰه! میں نے اور گناہ کر لیا، اسے معاف فر مادے، تب ربِ جلیل نے فر مایا: میرا بندہ جا نتا ہے کہ اس کا خدا گناہ ول کو بخش دیتا ہے اور گناہ کر لیا اور عرض کیا کہ یا اللّٰه! میں نے پھر گناہ کیا ہے، میرے اس کا خدا گناہ ول کو بعاف فر مادیا ہے، میرے اس کا خدا گناہ ول کو بعاف فر مادیا ہے، میرے اس کا خدا گناہ ول کو معاف فر مادیا ہے، میرے اس کا خدا گناہ ول کو معاف فر مادیا ہے، میرے اس کا خدا گناہ ول کو معاف فر مادیا ہے اور ان پر مواخذہ گناہ کو معاف کر دیا جا تا ہے اور رب فر ما تا ہے: میں نے اپنے بندے کو بخش دیا، جو کہا ہے۔ اس کا حدا گناہ ول کو معاف کر دیا جا تا ہے اور رب فر ما تا ہے: میں نے اپنے بندے کو بخش دیا، جو چاہئے کمل کرے۔ (3)

مُنْذِرى دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ كَا قُول ہے: ''جوچاہے کمل کرے'' کا مطلب سے ہے کہ اللّٰه علیم وخبیر ہے، اسے علم ہے کہ جب بھی میرا سے بندہ گناہ کر ہے گا فوراً ہی گناہ سے تو بہ کر لیتا ہے اور جس میرا سے بندہ گناہ کر ہے گا فوراً ہی گناہ کرتے ہی دل کی گہرائیوں سے تو بہ کر لے تو ایسی صورت میں اسے گناہ نقصان نہیں دیں جب اس کا بیطریقتہ ہو کہ گناہ کرتے ہی دل کی گہرائیوں سے تو بہ کر لے تو ایسی صورت میں اسے گناہ وی سے اظہارِ نفرت نہ کر ہے اور بار بارگناہ کرنے گئاہوں سے اظہارِ نفرت نہ کر ہے اور بار بارگناہ کرنے لگ جائے کیونکہ بیجھوٹوں کی تو بہ ہے۔

^{■}المستدرك للحاكم ، كتاب التوبة والا نابة، باب من سعادة المرء...الخ ، ١/٥، ٣٤١/٥، الحديث ٧٦٧٦

^{2}ترمذی، کتاب صفة القیامة ، باب ۹ ع (ت ۲۱) ،۲۲۶/۲ ، الحدیث ۲۰۰۷

^{3}بخارى، كتاب التوحيد، باب قول الله تعالى: يزيدون أن...الخ ،٤/٥٧٥، الحديث٧٥٠٧

محدثین کی ایک جماعت نے بیٹی روایت نقل کی ہے کہ مومن جب کوئی گناہ کرتا ہے تواس کے دل پرسیاہ نقط پڑ جا تا ہے، اگر وہ تو بہ کر سے اور اگر وہ گناہ کرتار ہتا ہے جا تا ہے، اگر وہ تو بہ کرلے، گناہ سے رک جائے اور استعفار کر بے تو وہ نقطہ صاف ہوجا تا ہے، ارشاد ہوتا ہے: تواس کا دل سیاہ نقطوں میں حصیب جاتا ہے، (۱) اس کا ذکر الله تعالیٰ نے کتا ہے مقدس میں فرمایا ہے، ارشاد ہوتا ہے:

گَلَّا بَلْ ﷺ مَا اَنَ عَلَى قُلُو بِهِمْ مَّا كَانُو الْكِنْسِبُونَ ۞ (2) مِرْزَبِين يه بلدا كَدون برا كَامال نے زنگ چڑھاديا ہے۔

تر مذی کی روایت ہے کہ الله تعالی بندے کی توبہ قبول فرما تاہے جب تک کہ اس کی روح گلے تک نہ بینے جائے۔⁽³⁾

طبرانی اور بیہق نے حضرت معافر طبی الله عنه سے روایت کی ہے کہ حضور صلّی الله علیّه و صَلَّم الله عَلَیْه و صَلَ الله عَلَیْه و صَلَّم الله عَلَیْ الله عَلَیْه و مَایا: اے معافر! میں مجھے الله سے ڈرنے ، تھی بات کرنے ، وعدہ پوراکر نے ، امانت کی اوائیگی ، خیانت سے پر ہیز ، بیتیم پر رحم ، ہمسائے کی حفاظت ، غصہ صَبْط کرنے ، نرمی گفتار ، بہت سلام کرنے ، حاکم کی إطاعت ، قرآن میں غور و فکر ، آخرت کو مجبوب رکھنے ، حساب سے ڈرنے ، تھوڑی اُمیدوں اور بہترین عمل کی وصیت کرتا ہوں اور مسلمان کو گالی دینے ، جھوٹے کی تصدیق کرنے ، سیچ کو جھٹلانے ، حاکم عادل کی نافر مانی کرنے اور زمین میں فتنہ و نساد کھیلانے سے مجھے روکتا ہوں ، اے معافر! الله تعالی کا ہر درخت اور پھرکے پاس ذکر کراور ہر پوشیدہ گناہ کی جھپ کرتو بہ کراور ہر ظاہری گناہ کی ظاہر میں تو بہ کر۔ (4)

اصبہانی کی روایت ہے کہ جب بندہ اپنے گنا ہوں سے توبہ کر لیتا ہے تواللہ تعالیٰ اس کے محافظ فرشتوں کو،اس کے اعضائے بدن کو اور زمین کے اس کلڑے کوجس پر اس نے گناہ کیا ہے اس بندے کا گناہ بھلا دیتا ہے یہاں تک کہوہ

^{1} ابن ماجه ، كتاب الزهد، باب ذكر الذنوب ، ٤ /٨٨ ٤ ، الحديث ٤ ٢ ٤

^{2}ترجمهٔ کنز الایمان: کوئی نیس، بلکهان کے دلول پرزنگ چڑھادیا ہے ان کی کمائیوں نے ۔ (ب ۳۰، السطففين: ۱۶)

^{3}ترمذى، كتاب الدعوات، باب في فضل التوبة...الخ، ٣١٧/٥، الحديث ٤٨ ٣٥

^{4}الزهد الكبير، ص ٣٤٧، الحديث ٥٥٦

كاشفة القلوب

ہے۔ قیامت میں اللہ کی بارگاہ میں پیش ہوگا اوراس کے گنا ہوں کی کوئی گواہی دینے والانہیں ہوگا۔ ⁽¹⁾

اصبهانی کی ایک روایت ہے کہ گنا ہوں پر شرمسار الله تعالی کی رحمت کا منتظر ہوتا ہے اور مشکبر الله تعالی کی ناراضگی کا منتظر ہوتا ہے،اے الله کے بندو! جان لوکہ ہم ل کرنے والا اپنے عمل کو پائے گا اور دنیا سے نہیں نکے گا یہاں تک کہوہ اپنے ایجھے اور بُرے اعمال کو دکھے لے گا اور اعمال کا دارو مداران کے خاتمہ پر ہے، اور رات، دن تمہاری سوار بال بیں ان پرسوار ہوکر آخرت کی طرف اچھا سفر کرو، تو بہ میں تا خیر سے بچو کیونکہ موت اچا تک آتی ہے، تم میں سے کوئی الله تعالی کے حام کی وجہ سے ست نہ ہوجائے کیونکہ آگئے ہوئے اسلم کی وجہ سے ست نہ ہوجائے کیونکہ آگئے ہوئے اسلام کے حام کی وجہ سے ست نہ ہوجائے کیونکہ آگئے ہوئے اسلام کے بیارے جوتے سے بھی قریب ہے، پھر حضور صَدِّی الله عَدَیْهِ وَسَدُّم

فَكُنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَمَّ قِ خَيْرًا يَّرَهُ ٥ وَمَنْ يَعْمَلُ بِي جَولُونَى ذره برابرنيكى كركا اسد ديمي كا اورجوك في ذره

برابر برائی کرے گااسے دیکھے گا۔ (3)

مِثْقَالَ ذَرَّ وَشَرَّا النَّرَةُ أَنْ

طبرانی بیصدیث نقل کرتے ہیں کہ گناہوں سے توبہ کرنے والااس شخص کی طرح ہے جس کا کوئی گناہ نہ ہو۔ ⁽⁴⁾

بیہ چی نے بیر حدیث ایک دوسرے طریق سے قتل کی ہے،اس میں بیلفظ زیادہ ہیں: گنا ہوں سے استغفار کرنے والا جو برابر گناہ بھی کئے جار ہاہے،ایسا ہے جیسے وہ رب تعالیٰ سے مذاق کررہا ہو۔ ⁽⁵⁾

صیح ابن حبان اور حاکم کی روایت ہے کہ گنا ہوں پر شرمندگی تو بہ ہے یعنی شرمندگی تو بہ کا اہم رکن ہے جیسے حج میں وقو ف عرفات ہے۔ (6)

توبہ کے لئے ضروری ہے کہ وہ صرف گنا ہوں کے خراب ہونے اور الله تعالیٰ کے عذاب سے ڈرتے ہوئے کی جائے ، اپنی بے عزتی کے ڈرسے یارو پے پیسے کے ضائع ہونے کی وجہ سے نہ ہو۔

- 1 ۷/۱٤، تاریخ مدینة دمشق
- 2الترغيب و الترهيب، كتاب التوبة و الزهد، الترغيب في التوبة...الخ، ٤/٩/١ الحديث ٤٨١٦
- الزِنْزال:۸۰۷)
 ۱۰۰۰ الزِنْزال:۸۰۷)
 - 4المعجم الكبير، ١٠/١٥٠ الحديث ١٠٢٨١
 - 5شعب الايمان، السابع والاربعون من شعب الايمان...الخ ، ٢٣٦/٥، الحديث ٧١٧٨
 - ١٠٠٠ المستدرك للحاكم ،كتاب التوبة والانابة، باب الندم توبة، ٥/٦٤، الحديث ٢٦٨٦

حاکم نے سند سیجے سے بیرحدیث نقل کی ہے لیکن اس میں ایک راوی ساقط ہے کہ اللّٰہ تعالیٰ سی بندے کے گنا ہوں پریشیمانی اور شرمندگی و کھتا ہے تو اسے بخشش طلب کرنے سے پہلے بخش ویتا ہے۔ ⁽¹⁾

مسلم وغیرہ کی حدیث ہے:حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا:اس ذات کی قسم جس کے قبضه و قدرت میں میری جان ہے!اگرتم گناہ نہ کرواور بخشش طلب نہ کروتوالله تعالی تنہیں نابود کردےاور تمہارے بدلہ میں ایسی قوم کولائے جو گناہ کریں اور الله تعالی ہے بخشش طلب کریں پھر الله تعالی انہیں معاف فرمادے۔(2)

مسلم كى حديث ہے: كوئى ايسانہيں ہے جے الله تعالى سے زيادہ اپنى تعريف پبندہو، اسى لئے الله تعالى نے اپنى تعريف فرمائى ہے اوركوئى بھى الله تعالى سے زيادہ غيرت والانہيں ہے، اسى لئے الله تعالى نے بدكاريوں كوحرام كرديا ہے اوركوئى ايك ايسانہيں ہے جو الله تعالى سے زيادہ عذر پبند كر نيوالا ہواسى لئے الله تعالى نے كتابيں نازل كيس اور رسولوں كو بھيجا۔ (3)

مسلم کی روایت ہے کہ ایک عورت جہینہ جوزنا سے حاملہ ہوئی تھی حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں آئی اور عرض کی نیارسول الله ایس قابلِ حدّ ہوں ، مجھ پر صَد جاری فرمایئے ، حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے اس کے سر پرست کو بلاکر فرمایا کہ اس سے حسن سلوک کرنا اور جب اس کا بچہ پیدا ہوجائے تو اِسے میرے پاس لے آنا، چنا نچہ اس شخص نے ایسا ہی کیا اور حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے عَلَم فرمایا کہ اس عورت کے پیڑے اچھی طرح باند دود نے جائیں ، پھر آپ نے اسے سنگسار کرنے کا تھم دیا اور بعد میں آپ نے اس کی نماز جنازہ پڑھائی ۔ حضرت عمر دَضِی اللهُ عَنْه نے عرض کی نیاد سول الله ! آپ نے اس زائیہ کی نماز جنازہ پڑھائی ؟ آپ نے فرمایا: اس نے الی تو بر کی ہے کہ اگروہ مدینہ کے سر آدمیوں پر بانٹ دی جائے تو سب کو پوری ہوجائے ، کیا تم نے اس سے کوئی افضل شخص دیکھا کہ وہ خود کو اللّٰہ کی حدود کے اجراء کے لئے لئے گے آئی ہے۔ (4)

 [■] المستدرك للحاكم ، كتاب التوبة والانابة، باب ما علم الله من عبد... الخ ، ٥/ ٠ ٣٦ ، الحديث ١ ٧٧٢

^{2}مسلم، كتاب التوبة، باب سقوط الذنوب...الخ ، ص ١٤٧٠، الحديث ١١ ـ (٢٧٤٩) وغيره

^{3}المرجع السابق ، باب غيرة الله تعالى ... الخ،ص٢٧٦ ، الحديث ٣٥ _ (٢٧٦٠)

^{4} مسلم، كتاب الحدود، باب من اعترف ... الخ ، ص ٩٣٢ ، الحديث ٢٤ _ (١٦٩٦)

تر فدی نے بسند حسن بھی ابن حبان اور بسند جھی جا کم نے حضر سے ابن عمر دَ طِی اللّٰه عَنْهِ ما سے روایت کی ہے، انہوں نے کہا: میں حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی گفتگو سنتا تھا، آپ ایک یا دومر تبہ (اور انہوں نے سات مرتبہ تک گِنا) سے زیادہ کی بات کوئیں وہرایا کرتے تھے گریہ بات میں نے آپ سے اس سے بھی زیادہ بارشی ہے، آپ فرماتے تھے کہ بنی اسرائیل میں ایک کِفُل نامی خض تھا، وہ گنا ہوں سے پر ہیز نہیں کرتا تھا، ایک مرتبہ وہ ایک عورت کے پاس گیا اور اسے ساٹھ دینار دے کر گناہ پر رضا مند کرلیا، چنا نچہ جب وہ برائی کے انہائی قریب ہوا تو وہ عورت کا نینے اور رونے لگی، اس نے عورت سے کہا: کیا تم مجھے اچھا نہیں جھی ہو؟ وہ بولی نہیں بلکہ بات سے کہ میں نے ایسی برائی بھی نہیں کی ہے اور آج میں کی ضرورت سے مجبور ہوکر یہ کررہی ہوں۔ اس نے یہ بات س کرکہا: واقعی تم نے اس حالت میں بھی الی برائی نہیں کی ہے مروہ اسی رات یہ دینار لے جاؤ، میں نے تہیں بخش دیئے ہیں اور خدا کی قشم! میں آئندہ بھی بھی گناہ نہیں کروں گا۔ پھروہ اسی رات مرگیا، بھی تا میں جھی گناہ نہیں کروں گا۔ پھروہ اسی رات مرگیا، بین کے میں آئندہ بھی بھی گناہ نہیں کروں گا۔ پھروہ اسی رات مرگیا، بین کے کوش دیا ہے۔ (۱)

حضرت ابن مسعود رَضِیَ اللهٔ عَنُه ہے تھے حدیث مروی ہے، حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: دوبستیاں تھیں، ایک نیکوں کی اور دوسری بروں کی، ایک مرتبہ بروں کی بہتی ہے ایک آ دمی نیکوں کی بہتی کی طرف جانے کے اراد ہے سے نکلا مگراسے راستہ میں مشیتِ اللی کے مطابق موت آ گئی چنانچہ اس شخص کے بارے میں شیطان اور فرشتهٔ رحمت کا جھگڑا ہوگیا، شیطان بولا اس نے بھی بھی میری نافر مانی نہیں کی لہذا یہ میرا ہے، فرشتهٔ رحمت نے کہا کہ بیتو تو بہ کے اراد ہے ہوگیا، شیطان بولا اس نے بھی بھی میری نافر مانی نہیں کی لہذا یہ میرا ہے، فرشتهٔ رحمت نے کہا کہ بیتو تو بہ کے اراد ہے جارہا تھا، الله تعالی نے فیصلہ فر مایا کہ تم دیکھو، بیکونی بستی سے زیادہ قریب ہے؟ انہوں نے اسے بالشت نیکوں کی بستی سے قریب یا یا لہذالله تعالی نے اسے بخش دیا۔

معمر کی روایت ہے کہ میں نے کہنے والے سے سنا ہے،الله تعالیٰ نے نیکوں کی بہتی کواس کے قریب کر دیا۔

قاتل،ارادهٔ توبه کی بدولت نجات یا گیا: }

بخاری و مسلم کی حدیث ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: تم سے پہلے لوگوں میں سے ایک شخص تھاجس نے ننا نوتے تل کئے تھے، اس نے دنیا کے سب سے بڑے عالم کے تعلق پوچھ کچھ کی تو لوگوں نے اسے ایک راہب کا

1ترمذی، کتاب صفة القیامة ، باب ٤٨ _ (ت:١١٣)، ٢٢٣/٤ ، الحدیث ٢٥٠٤

2المعجم الكبير، ٩/١٧١، الحديث ١٨٥١

پیۃ دیا چنانچہ وہ راہب کے پاس آیا اور اسے کہا: میں نے ننانو نے آل کئے ہیں، کیا میری توبہ قبول ہوسکتی ہے؟ راہب
بولا: نہیں اور اس آ دمی نے راہب کو بھی قتل کر کے سوتل پورے کر لئے، پھر اس نے دوبارہ دنیا کے سب سے بڑے
عالم کی تلاش شروع کی تو اسے ایک عالم کا پیۃ بتایا گیا، وہ عالم کے پاس گیا اور کہا کہ اس نے سوتل کئے ہیں، کیا اس کے
لئے تو بم کن ہے؟ عالم نے کہا: ہاں! تیرے اور تیری تو بہ کے درمیان کون حاکل ہوسکتا ہے! فلاں فلاں جگہ جاؤو ہاں الله
تعالی کے نیک، عبادت گر ارلوگ رہتے ہیں، تم بھی وہیں جاکر ان کے ساتھ عبادت کرواور پھر اپنے وطن واپس نہ آنا
کیونکہ بیہ بہت بُری جگہ ہے۔

چنانچہوہ چل پڑا، جب وہ آ و ھےراستے میں پہنچا تو اسے موت آگئ، لہذااس کے متعلق رحمت اور عذاب کے فرشتوں کا آپس میں جھگڑا ہوگیا، رحمت کے فرشتوں نے کہا: یہ تائب ہوکراپنادل رحمتِ خداوندی سے لگائے آرہا تھا، عذاب کے فرشتوں نے کہا: اس نے بھی کوئی نیکی نہیں کی، تب ان کے پاس آ دمی کی شکل میں ایک فرشتہ آیا جسے انہوں نے اپنا تھم سلیم کرلیا، اس فرشتہ نے کہا: تم زمین ناپ لو، وہ جس بستی کے قریب تھاوہ انہی میں شارہوگا چنانچہ انہوں نے زمین ناپی اور وہ نیکوں کی بستی کے قریب تھاوہ انہی میں شارہوگا چنانچہ انہوں نے زمین ناپی اور وہ نیکوں کی بستی کے قریب نکلا، لہذا اسے رحمت کے فرشتے لے گئے۔ (1)

ایک روایت میں ہے کہ وہ ایک بالشت نیکوں کی بستی سے قریب تھالہٰ ذااسے بھی نیکوں میں سے کر دیا گیا۔ (2)
دوسری روایت ہے کہ الله تعالیٰ نے بروں کی بستی کی زمین کی طرف وحی فرمائی،اس سے کہا: دور ہوجااور نیکوں کی بستی کی زمین سے کہا: تو قریب ہوجا اور فرمایا: ان بستیوں کا فاصلہ ناپوتو فرشتوں نے اسے ایک بالشت نیکوں کی بستی سے قریب یایا اور اسے بخش دیا گیا۔ (3)

حضرت َقَاده دَحِبَ اللّٰهُ عَنْه كاقول ہے كه حسن دَحِبَ اللّٰهُ عَنْه نے ہمیں بیہ تلایاتھا كه جبعز رائیل آیا تواس شخص نے اپناسینه نیکوں کی طرف کردیا۔

طبرانی نے سند جید کے ساتھ بدروایت نقل کی ہے کہ ایک آ دمی نے بہت زیادہ گناہ کئے اور وہ ایک شخص کے

^{1} مسلم، كتاب التوبة، باب قبول توبة القاتل...الخ، ص ٤٧٩ ١، الحديث ٤٦ ـ (٢٧٦٦)

^{2}المرجع السابق، الحديث ٤٧ _ (٢٧٦٦)

³بخارى ، كتاب احاديث الانبياء، باب ٢٥٥/٢٥٦ ، الحديث ٢٤٧٠

پاس آ یا اور کہا: میں نے ننا نوے بے گنا ہوں کو آل کیا ہے، کیاتم میرے لئے توبکا کوئی راستہ پاتے ہو؟ اس آ دمی نے کہا: نہیں، چنانچہ اس لئے اسے بھی قبل کر دیا اور دوسرے آ دمی سے کہا کہ میں نے سو بے گنا ہوں کو آل کیا ہے، کیا میرے لئے توبکا کوئی طریقہ ہے؟ اس نے کہا: اگر میں یہ کہوں کہ الله تعالیٰ توبہ کرنے والوں کی توبہ قبول نہیں کرتا توبہ سراسر جھوٹ ہے، دیکھو فلاں مقام پر ایک عبادت گزار جماعت رہتی ہے، تم بھی وہاں جاؤ اوران کے ساتھ رہ کہ عبادت کرو، چنانچہ وہان کی طرف چل پڑا اور راستے ہی میں مرگیا۔ اس پر عذا ب اور رحمت کے فرشتوں نے جھگڑا کیا الله تعالیٰ نے ان کے پاس فرشتہ بھیجا جس نے کہا کہتم ان دونوں جگہوں کی زمین نا پ لو، جس زمین سے بی قریب ہوگائی کا ہوگا، جب زمین نا پی گئی تواسے چیونٹی کے برابر عبادت گزار بندوں کی بہتی سے قریب پایا گیا لہذا اسے بخش دیا گیا۔ (۱)

طبرانی کی ایک اور روایت میں ہے کہ پھر وہ دوسرے راجب کے پاس آ یا اور کہا: میں نے سوتل کئے ہیں، کیا تو میرے لئے تو بہ کا راستہ پاتا ہے؟ راجب نے کہا: تم اپنے آپ پر بہت ظلم کر چکے ہو میں پچھ نہیں جانتا لیکن قریب ہی دو بستیاں ہیں، ایک کونصرہ اور دوسری کو کفرہ کہا جاتا ہے، نصرہ والے ہمیشہ الله کی عبادت کرتے رہتے ہیں، اس میں کوئی گہر نہیں رہتا ہم نصرہ میں جاؤ، گہر نہیں رہتا ہم نصرہ میں جاؤ، گہر نہیں رہتا ہم نمیشہ گنا ہوں میں مگن رہتے ہیں، وہاں ان کے سوااور کوئی نہیں رہتا ہم نصرہ میں جاؤ، اگرتم وہاں ثابت قدمی سے نیک مل کرتے رہے تو تمہاری تو بہ کی قبولیت میں کوئی شکن نہیں ہوگا چنا نچہ وہ نصرہ کا ارادہ کرے روانہ ہوگیا۔

جب وہ دونوں بستیوں کے درمیان پہنچا تواسے موت نے آلیا، فرشتوں نے اللہ تعالی سے اس شخص کے بارے میں سوال کیا تو رہے جلیل نے فرمایا کہ دیکھویہ کوئی بستی سے قریب ہے، جس بستی سے قریب ہوا، اسے انہی لوگوں میں سے لکھ دو، پس فرشتوں نے اسے چیوٹی کے برابر نصرہ سے قریب یا یا لہذا اسے نصرہ والوں میں سے لکھ دیا گیا۔ (2)

^{1}المعجم الكبير، ٩ / ١٩ ٣٦٩ الحديث ٨٦٧

^{2}الترغيب والترهيب، كتاب التوبة والزهد، الترغيب في التوبة...الخ ٤/٤ ١، الحديث ٤٨٢٧



اب 64

ممانعت ظلم 🏅

ر مانِ اللّٰیہے:

وَسَيَعْلَمُ الَّذِينِيَ ظَلَمُو ٓ اَ كَي**َّمُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ** ﷺ اورَ عَقريب ظالم جان ليں گے نوسی پھرنے کی جگہ پھیرے جائیں گے۔

فرمانِ نبوی ہے کظلم قیامت کے دن تاریکی ہوگی۔(2)

حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے مزید فرمایا: جو شخص ایک بالشت زمین ظلم سے حاصل کرلیتا ہے،الله تعالیٰ اس کے گلے میں ساتوں زمینوں کا طوق ڈالے گا۔(3)

بعض کتب میں مرقوم ہے کہ اللہ تعالی فرما تا ہے: اس آ دمی پرظلم میر نے فضب کو بھڑ کا دیتا ہے جس کا میر سوا کوئی مددگار نہیں ہے۔کسی شاعر نے کیا خوب کہا ہے: _

لاتظلمن اذا ما كنت مقتدرا فالظلم يرجع عقباه الى الندم

تنام عيناك والمظلوم منتبه يدعوعليك وعين الله لم تنم

﴿1﴾جب توصاحب اقتدار ہوتو کسی پر ہر گرنظلم نہ کر کیونکہ ظلم کا انجام شرمندگی ہے۔

﴿2﴾ تیری آئکھیں سوئیں گی مرمظلوم کی آئکھیں جاگ کر تیرے لئے الله تعالیٰ سے بددعا کریں گی اور الله تعالیٰ بھی سوتانہیں ہے۔

دوسراشاعر کہتاہے:۔

اذا ماالظلوم استوطا الارض مركبا ولج غلوا في قبيح اكتسابه

فكله الى صرف الزمان فانه سيبدى له مالم يكن في حسابه

﴿1﴾ جب مظلوم زمين بر چلے اور ظالم برے اعمال ميں حدے زيادہ بر ه جائے،

﴿2﴾ تو تُو اس كومصائب زمانه كے سپر دكروے كيونكه زمانه اسے وہ سبق دے گا جواس كے وہم وكمان ميں بھى نہيں ہوگا۔

-توجمه كنز الايمان: اوراب جانا جائية بين ظالم كرس كروث يربيلنا كها كيل كرب ١٠١١شعراء: ٢٢٧)
 - 2بخارى، كتاب المظالم والغضب، باب الظلم ظلمات، الخ ، ٢ /٢٧ ، الحديث ٢٤٤٧

اسلاف کرام میں سے بعض کا قول ہے کہ کمزوروں پرظلم نہ کر، ورنہ تو بدترین طاقتوروں میں سے ہوجائے گا۔
حضرت ابو ہر رہورَ خِنَی اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ ظلم کے ظلم کی وجہ سے جزر (سرخاب) اپنے آشیانے میں مرجا تا ہے۔
کہتے ہیں: توریت میں مرقوم تھا کہ بل صراط کے اس طرف منادی ندا کرے گا: اے سرکش ظالمو! اے بد بخت
ظالمو! بیشک الله تعالیٰ نے اپنی عزت کی قتم کھائی ہے کہ آج ظالم کاظلم بل صراط سے نہیں گزرے گا (ظالم بل صراط سے نہیں گزرے گا رکا کی سے کہ آج کو خالم کاظلم بل صراط سے نہیں گزرے گا (ظالم بل صراط سے نہیں گزرے گا رکا کہ کہ گزر کیں گے)۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مِهِ مِهِ وَي ہے: آپ نے فرمایا: پانچ آ دمی ایسے ہیں جن پرالله تعالی غضبناک ہوتا ہے، اگروہ چاہے گاتو دنیا میں انہیں اپنے غضب کا نشانہ بنائے گاور ند (آخرے میں) انہیں جہنم میں ڈالے گا:

﴿1﴾ حاکم قوم جونودتولوگوں ہے اپنے حقوق لے لیتا ہے مگرانہیں ان کے حقوق نہیں دیتا اوران سے ظلم کو دفع نہیں کرتا۔ ﴿2﴾ قوم کا قائد، لوگ جس کی پیروی کرتے ہیں اور وہ طاقتور اور کمزور کے درمیان فیصلہ نہیں کرسکتا اور خواہشات

نفسانی کے مطابق گفتگو کرتاہے۔ مدیث میں حضرت قتید کے بجائے صحابیکا ذکرہے

﴿3﴾.....گھر کاسر براہ جواپنے گھر والوں اور اولا دکوالله کی اطاعت کا حکم نہیں دیتااورانہیں دینی امور کی تعلیم نہیں دیتا۔

❶.....ابن ماجه، كتاب الفتن، باب الامربالمعروف...الخ ٢٠/٤٠، الحديث ٢٠١٠ بذكر صحابية مكان قتيبة

﴿4﴾....اییا آ دمی جواُ جرت پرمز دورلا تا ہےاور کا مکمل کروا کے اس کی اُ جرت پوری نہیں دیتا،اور در کا م

﴿5﴾.....وه آ دمی جواینی بیوی کاحق مهر د با کراس پرزیاد تی کرتاہے۔"

حضرت عبدالله بن سلام دَضِيَ اللهُ عَنُه مع مروى ہے، آپ نے فر مایا:الله تعالی نے جب مخلوق کو پیدافر مایا اوروہ کھڑے ہوگئے تو انہوں نے الله کی طرف سراٹھا کردیکھا اور کہا:اے الله! تو کس کے ساتھ ہوگا؟ ربِ جلیل نے فر مایا: مظلوم کے ساتھ یہاں تک کہا ہے اس کاحق ویا جائے۔

وَجُبِ بِن مُنَةِ وَضِى اللّٰهُ عَنْهُ كَبِتِ بِين ؛ کسی ظالم بادشاہ نے شاندارمحل بنوایا، ایک مفلس بڑھیا آئی اوراس نے محل کے پہلومیں اپنی کشیا بنالی جس میں وہ سکون سے رہتی تھی ایک مرتبہ ظالم بادشاہ نے سوار ہوکر کی کے اردگر دچکر لگایا تواسے بڑھیا کی کٹیا نظر آئی ، اس نے بوچھا: یہ س کی ہے؟ کہا گیا: یہ ایک بڑھیا ہے اور وہ اس میں رہتی ہے چنا نچہا س نے تعم دیا کہ اسے گراد والہٰذا اسے گراد یا گیا، جب بڑھیا والیس آئی تواس نے اپنی منہدم کٹیا و کھر بوچھا کہ اسے کس نے گراد یا ہے؟ لوگوں نے کہا: اسے بادشاہ نے دیکھا اور گراد یا، تب بڑھیا نے آسان کی طرف سراٹھایا اور کہا: اے الله! اگر میں حاضر نہیں تھی تو تو کہاں تھا؟ الله تعالی نے جبر ملی عَلَیْهِ السّدَادم کو تھم دیا بحل کواس کے رہنے والوں پر الٹ دواور ایسانی کیا گیا۔ کہتے ہیں کہ ایک برکھی امیر اور اس کے بیٹے کو جب ایک عباسی امیر المسلمین نے قید کردیا تو بیٹے نے کہا: اے ابا جان! ہم باعزت ہونے کے بعد قید کردیئے گئے ہیں، باپ نے جواب دیا، بیٹے! مظلوموں کی فریادیں را توں کوسفر کرتی رہیں، ہم ان سے عافل رہے گرالله تعالی ان سے عافل نہیں تھا۔

یزید بن حکیم کہا کرتے تھے: میں کبھی کسی سے خوفز دہ نہیں ہوا اَلبتہ مجھے ایک شخص نے ڈرادیا یعنی میں نے اس پر سیجانتے ہوئے ظلم کیا کہ اللّٰہ کے سوااس کا کوئی مددگا رنہیں ہے، وہ مجھے سے کہتا تھا کہ مجھے اللّٰہ کا فی ہے،اللّٰہ تعالیٰ تیرے اور میرے درمیان فیصلہ کرے گا۔

حضرتِ آبِی اُمامہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے: ظالم قیامت کے دن آئے گاجب وہ بل صراط پر پہنچے گا تواسے مظلوم مل جائے گا اور وہ اپنے ظلم کوخوب پہچان لے گالہٰ ذا ظالم مظلوموں سے نجات نہیں پائیں گے یہاں تک کے ظلم کے

1 كتاب الكبائر للذهبي، الكبيرة السادسة والعشرين، ص ١١٩

بدلے ان کی نیکیاں لے لیں گے اور ان کی نیکیاں نہیں ہوں گی تو ان کے ظلم کے برابرا پنے گناہ ظالموں پرڈال دیں گے تا آئکہ ظالم جہنم کے سب سے نچلے طبقے میں بھیجے جائیں گے۔ ⁽¹⁾

حضرتِ عبدالله بن انیس رَضِیَ اللهٔ عَنه ہے مروی ہے کہ میں نے رسولِ اکرم صَلَی اللهٰ عَلَیْهِ وَسَلَم کو یہ فراتے سنا ہے: قیامت کے دن لوگ نظے بدن ، نظے پاؤں ، غیرمختوں ، سیاہ صورتوں میں اٹھیں گے۔ پس منادی ندا کرے گا: جس کی آ واز الی ہوگ جو دور ونز دیک یکساں طور پر سی جائیگی ، میں بدلے دینے والا مالک ہوں کسی جنتی کے لئے مناسب نہیں ہے کہ وہ جنت میں جائے باوجود یکہ اس پر کسی جہنمی کی دادخواہی رہتی ہوچا ہے وہ ایک تھیٹر ہی کیوں نہ ہویا اس سے نہیں ہو وارکوئی جہنمی جہنم میں نہ جائے دراں حالیہ (²) اس پر کسی کاحق رہتا ہو، چاہے وہ ایک تھیٹر ہویا اس سے زیادہ ہواور تیرار ب کسی ایک پر بھی ظلم نہیں کریگا ، ہم نے عرض کی نیاز سول الله! یہ کسے ہوسکے گا حالانکہ ہم تو اس دن نظے بدن ، نظے یاؤں ہو نگے ، آپ نے فرمایا: نیکیوں اور برائیوں کے ساتھ کمل بدلہ دیا جائے گا اور تہا را رب کسی ایک پر ظلم نہیں کریگا ۔ (³)

کِسُرُیٰ نے اپنے بیٹے کے لئے ایک استاد مقرر کیا جواسے تعلیم دیتا تھا اور ادب سکھا تا، جب وہ پچ تکمل طور پر علم وفضل سے بہرہ ور ہو گیا تو استاد نے اسے بلایا اور بغیر کسی جرم اور بغیر کسی سبب کے اسے انتہائی دردنا ک سزادی اس کے فضل سے بہرہ ور ہو گیا تو استاد نے اس رویہ کو بہت ہی بُر اسمجھا اور دل میں اس کی طرف سے عداوت پیدا ہو گئی یہاں تک کہ وہ جوان ہو گیا، اس کا باپ مرگیا اور باپ کے بعد وہ بادشاہ بن گیا۔ بادشاہی سنجالتے ہی اس نے استاد کو بلا کر بوچھا: آپ نے فلاں دن بغیر کسی جرم اور بغیر کسی سبب مجھے اتنی دردنا ک سزا کیوں دی تھی ؟ استاد نے کہا: اے بادشاہ! جب تو علم وضل کے کمال تک پہنچ گیا تو مجھے معلوم ہو گیا کہ باپ کے بعد تو بادشاہ بنے گا، میں نے سوچا تجھے سزا کا ذا گئے اور ظلم کی تکلیف سے موافق کردوں تا کہ تو اسکے بعد کسی پرظلم نہ کرے، بادشاہ نے کہا: اللہ تعالیٰ آپ کو جزائے خیردے اور پھر ان کا وظیفہ مقرر کردیا اور ان کے اخراجات کی ادائیگی کا حکم صا در کردیا۔

² در آن حالے که بیغی اس حال میں که علمیه

^{1} المعجم الاوسط ، ٢٧٦/٤ الحديث ٩٧٦

³ الكبائر للذهبي، الكبيرة السادسة والعشرين، ص ١٢١

^{4}المعجم الاوسط، ١٤٤١ ، الحديث ١٤٤٥

اب 🐯

$\left\langle \underbrace{\mathsf{Ling}}_{\mathsf{Ling}} \right\rangle$ یتیموں پر ظلم سے ممانعت

فرمانِ اللي ہے:

إِنَّا لَّذِينَ يَاكُلُونَ الْمُوَالَ الْيَتْلَى ظُلْمًا إِنَّمَا يَاكُلُونَ

فِي بُطُونِهِمْنَا مَا ﴿ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۞ (1)

بیشک جولوگ ناحق میسیموں کا مال کھاتے ہیں سوائے اسکے نہیں کہ

وہ اپنے بیٹوں میں آگ کھاتے ہیں اور البتہ وہ جہنم میں جائیں گے۔

حضرتِ قَاده دَ ضِیَ اللهُ عَنْه کا قول ہے کہ بیآ یت بنی غَطَفان کے ایک شخص کے ق میں نازل ہوئی ، وہ اپنے چھوٹے یتیم جیتیج کاسر پرست بنااوراس کا تمام مال کھا گیا۔

ناحق اورظلم سے بیمراد ہے کہ وہ ایسا کرتے ہوئے حقیقت میں بتیموں پرظلم کرتے ہیں۔ اِس وعید میں وہ لوگ داخل نہیں ہیں جو کتب فقہ میں مندرجہ شرا کط کے مطابق ان کے مال میں تصرف کرتے ہیں اور کھاتے ہیں۔

فرمانِ اللي ہے:

كُلُ بِالْبَعْرُ وُفِ ﴿ (2)

اور جوغنی ہواسے حالئے کہ وہ بچے (تیموں کے مال سے بچھ نہ لے)

وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعُفِفُ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَا

اور جوفقیر ہواسے جاہئے کہ انصاف کے ساتھ کھائے۔

یعنی وہ اپنی لازمی ضرورت کے مطابق لے لیے یا بطور قرض یا اپنے کام کی اُجرت کے برابر کھائے یا وہ اِضطراب کی حالت میں ہولہذا اگر بعد میں وہ فراخ دست ہوجائے تو یتیم کا کھایا ہوا مال واپس کرے وگر نہ بیاس کے لئے حلال ہے۔

اورالله تعالیٰ نے بتیموں کے حقوق پرتا کیدفر ما کراوران سے زیادہ شفقت واُلفت رکھنے کا ذکر فر ما کرلوگوں کو توجہ

ں ۔۔۔۔۔ تو جملۂ کنز الایمان: وہ جونتیموں کامال ناحق کھاتے ہیں وہ تواپنے پیٹ میں نری آ گ بھرتے ہیں اورکوئی دم جاتا ہے کہ بھڑ کتے دھڑے (بھڑ تی آگ) میں جائیں گے۔(پ٤٠النساء: ١٠)

2ترجمهٔ كنز الايمان: اورجيحاجت نه بهووه پيتار باورجوحاجت مند بهووه بقررمناسب كها ـ (ب ٤ ، النساء: ٦)

دلائی ہےاور اِس ابتدائی آیت سے پہلے والی آیت میں ارشاد فرمایا ہے کہ

وَلْيَخْشَالَّ فِينَ لَوْتَرَكُوْ امِنْ خَلْفِهِ مْدِذُسِّيَّةً

ضِعْفًا خَافُوْ اعَلَيْهِمْ ۖ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُوْلُوْ اقَوْلًا

سَدِيدًا ₍₁₎

نا توال اولا دچھوڑ جا ئیں وہ ان پرخوف کھا ئیں اور چاہئے کہ پالیسی میں میں سرمجم سے کہ

اور بے شک ڈریں وہ لوگ اس بات سے کہا گروہ اپنے پیچھے ا

الله سے ڈریں اور جا ہے کہ تحکم بات کہیں۔

اس آیت کریمہ میں ان لوگوں کے اقوال کے برعکس جواسے ایک تہائی سے زیادہ وصیت کرنے اوراس جیسی اور باتوں پرمجمول کرتے ہیں، آئندہ آنے والی آیت سے ربط دیتے ہوئے بیمراد ہے کہ جس شخص کی سرپرتی میں بیتیم ہووہ اس سے بہتر سلوک کرے، یہاں تک کہ اسے ایسے بلائے جیسے وہ اپنی اولا دکو بلاتا ہے، یعنی اسے 'اے بیٹے'' کہہ کر بلائے اور اس سے ایسی بھلائی، احسان اور نیک سلوک کرے اور اس کے مال کو اس طریقے سے خرچ کرے جیسا کہ وہ اپنی اور اس سے ایسی بھلائی، احسان اور نیک سلوک کرے اور اس کے مال کو اس طریقے سے خرچ کرے جیسا کہ وہ اپنی مرنے کے بعد اپنی اولا داور اپنے مال سے سلوک کی آرز ورکھتا ہے کیونکہ قیامت کے دن کا مالک رہے دوالہ جلال اعمال کے مطابق جزادیتا ہے تعنی جیسا کروگے وہی سلوک تمہارے ساتھ کیا جائے گا۔

بسااوقات انسان بے خوف ہوکر دوسرے کے مال اور اولا دمیں تصرف کرتا ہے کہ اسے اچا نک موت آگیتی ہے اور الله تعالی اسے اس کے مال ، اولا دخاندان اور تمام تعلقات کی ولیں ہی جزادیتا ہے جسیا سلوک اس نے دوسرے کے ساتھ کیا ہوتا ہے، اگر اچھا سلوک کیا ہوتا ہے تو اچھی جزا، اور اگر بُر اسلوک کیا ہوتا ہے تو بُری جزاماتی ہے۔

لہٰذا ہر عقلمند کو جا ہے کہ اگر اس کے دل میں دین کا خوف نہ ہو، تب بھی اسے اپنی اولا داور مال کی خاطر خوف کرنا حا ہے اور تیموں کے مال کو جواس کی سر پرتتی میں ہیں،ایسے خرچ کر ہے جیسے وہ اپنی اولا دکے مال میں ان کے بیتم ہونے کی ان کے سر پرست سے خرچ کرنے کی امیدر کھتا ہے۔

الله تعالی نے حضرتِ داؤد عَلیْهِ السَّلام کی طرف وحی کی کہاہداؤد! ینتیم کے لئے مہربان باپ کی طرح اور مفلس

سستر جمهٔ کنز الایمان: اور ڈریں وہ لوگ کہ اگراپنے بعد ناتوان اولا دیچھوڑتے توان کا کیسانھیں خطرہ ہوتا تو چاہیئے کہ اللّٰہ سے ڈریں اور سیدھی بات کریں۔(ب٤٠ النساء: ٩)

ہیوہ کے لئے مہر بان شوہر کی طرح ہوجااور جان لے کہ جسیا ہوئے گا دیباہی کاٹے گا یعنی تو جسیا کرے گا دیباہی تجھ سے کیا جائے گا کیونکہ آخرا یک دن مرنا ہے، تیری اولا دکویتیم اور بیوی کو ہیوہ ہونا ہے۔

تیموں کے مال کھانے اوران پرظلم کرنے کے متعلق بہت ہی احادیث میں شدید وعیدیں آئی ہیں جبیبا کہ مذکورہ بالا آیت میں لوگوں کواس تباہ کن ، بیہودہ اور ذلیل حرکت سے بازر کھنے کے لئے سخت تنبید کی گئی ہے۔

مسلم وغیرہ میں مروی ہے:حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: اے ابوذ را میں تجھے کمز ور مجھتا ہوں اور میں تیرے لئے وہی کچھ پیند کرتا ہوں جواپنے لئے پیند کرتا ہوں ،کبھی دو پر حکمران نہ بن اور مالِ بیتیم کواچھانہ مجھ۔ (1)

بخاری و مسلم وغیره میں ہے: حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا ہے کہ سات مہلک باتوں سے بچوہ صحابہ کرام نے عرض کی نیار سول الله! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) وہ کوئسی ہیں؟ آپ نے فرمایا: الله کے ساتھ شریک بنانا، جادو، ناحق کسی کو قتل کرنا، سود کھانا اور بیتیم کا مال کھانا وغیرہ۔ (2)

حاکم نے سند سیجے کے ساتھ روایت کی ہے، حضور صَلَّی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: چار شخص ایسے ہیں کہ یہ الله کاعدل ہوگا کہ انہیں جنت میں نہ داخل کرے اور نہ ہی انہیں جنت کی نعمتوں سے لطف اندوز ہونے دے، شرابی، سودخور، ناحق بیتیموں کا مال کھانے والا اور والدین کا نافر مان ۔(3)

صیح ابن حبان میں روایت ہے کہ ان باتوں میں جو آپ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے حضرتِ عمر و بن حزم رَضِيَ اللَّهُ عَنْه کے توسط سے یمن والوں کو جواح کام بھیجے تھے، ان میں یہ بھی تھا کہ

قیامت کے دن الله تعالی کی بارگاہ میں سب سے بڑا گناہ الله کا شریک تھہرانا، ناحق کسی مومن گوتل کرنا، جنگ کے دن میدان سے جہاد فی سبیل الله سے فرار، والدین کی نافر مانی، پا کبازعور توں پراتہام لگانا، جادوسی صنا، سود کھانا اور بیتیم کا مال کھانا ہے۔ (4)

^{1}مسلم، كتاب الامارة، باب كراهة الامارة...الخ ،ص ١٠١٥، الحديث ١٧_ (١٨٢٦)

^{2}بخارى، كتاب الوصايا، باب قول الله تعالى ان الذين يأكلون... الخ ، ٢٤٢/٢، الحديث٢٧٦٦

^{3}المستدرك للحاكم ، كتاب البيوع، باب ان اربي الربا...الخ ، ٣٣٨/٢ ، الحديث ٢٣٠٧

^{4.....}صحيح ابن حبان، كتاب التاريخ، باب كتب النبي صلى الله عليه و سلم، ٦/١٨١، الجزء الثامن ،الحديث ٥٢٥٥

ابویعلی دَحْمَةُ اللهِ عَلَیْه کی روایت ہے کہ قیامت کے دن قبروں سے ایک ایسی قوم اٹھائی جائے گی جن کے منہ سے آ آگ کھڑک رہی ہوگی ،عرض کی گئی: یارسول الله!وه کون ہیں؟ آپ نے فرمایا: کیاتم نے فرمانِ الہی نہیں دیکھا:

بے شک جولوگ ظلم کے طور پریتیموں کا مال کھاتے ہیں سوائے

إِنَّاكَٰذِيْنَ يَأْكُلُوْنَ أَمُوَالَ الْيَتْلَى ظُلْمًا إِنَّمَا يَا لَيْ الْمُطُولِيِّمُ النَّمَا اللَّهُ اللَّهُ الْمُعَالِةَ الْمُعَالِقَةُ الْمُعَالِقُةُ الْمُعَالِقُةُ الْمُعَالِقُةُ اللَّهُ الْمُعَالِقُةُ الْمُعَالِقَةُ الْمُعَالِقَةُ الْمُعَالِقَةُ الْمُعَالِقَةُ الْمُعَالِقِيْفِي الْمُعَلِقُةُ الْمُعَالِقِيْفِي الْمُعَالِقَةُ الْمُعَالِقُةُ الْمُعِلِقُولُ الْمُعَالِقُةُ الْمُعَالِقُةُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُولُ الْمُعَالِقِيْفِي الْمُعَالِقِيقِ الْمُعَالِقِيقِ الْمُعَالِقِيقِ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقِيقِ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُولُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقِيقِ الْمُعِلِقِ الْمُعِلِقِ الْمُعِلِقِ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقِيقِ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِ

اس کے ہیں کہ وہ اپنے بیٹ میں آگ کھاتے ہیں۔

مسلم کی مسلم کی دین دین دین د

مسلم کی روایت ہے معراج شریف کی حدیث میں ہے:

پس میں اچپا تک ایسے آ دمیوں کے پاس آیا جن پر کچھلوگ مقرر تھے جوان کی داڑھیاں نوچ رہے تھے اور کچھ لوگ جہنم کے پقر لاکران کے منہ میں ڈال رہے تھے جوان کے پیچھے سے نکل رہے تھے، میں نے کہا: اے جریل! یہ کون ہیں؟ جبریل نے کہا: جولوگ ناحق بتیموں کا مال کھاتے ہیں وہ اپنے پیٹ میں آگ کھارہے ہیں، پس اس کے سوااور پچھ نہیں (2) (یہوہی لوگ ہیں)۔

قرطبی کی تفسیر میں حضرت ابوسعید خدری دَضِیَ اللّهُ عَنه سے مروی ہے، انہول نے نبی اکرم صَلّی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّم سے روایت کی ہے، آپ نے فرمایا:

معراج کی رات میں نے ایسی قوم کود یکھاجن کے ہونٹ اونٹ کے ہونٹوں جیسے تھے اور ان پر پچھلوگ مقرر ہیں جوان کے ہونٹ کی رات میں ، تب میں نے پوچھا: جوان کے ہونٹ پکڑ کران کے منہ میں جہنم کے پھڑ ڈال رہے ہیں جو اِن کے نیچے سے نکل رہے ہیں ، تب میں نے پوچھا: جریل! میکون ہیں؟ جریل بولے: میدہ ہیں جوناحق تیہموں کا مال کھایا کرتے تھے۔ (3)

- انساء: ۱) سستر جمهٔ کنز الایمان: وه جویتیمول کامال ناحق کھاتے ہیں وہ تواپنے پیٹ میں فری آگ بھرتے ہیں۔ (پ٤ ۱۰نساء: ۱) سسمسند
 ابھ یعلی، ۲۷۲/٦ ، الحدیث ۷٤٠٣
 - 2 كتاب الكبائر الذهبي، الكبيرة الثالثة عشرة، ص٧٢
 - 3تفسير قرطبي، ب٤٠ النسآء، تحت الاية: ١٠ ٣٩/٣





تکبُرُ کی ندمت اور بدانجا می کے متعلق قبل ازیں جو پچھ کھا جاچا ہے، اب اس میں پچھا وراضا فہ کیا جاتا ہے۔ تکبُرُ وہ پہلا گناہ ہے جوابلیس سے سرز دہوا، پھر الله تعالیٰ نے اس پرلعنت کی ،اسے اس جنت ہے جس کی چوڑ ائی آسان اور زمین کے برابر ہے، نکال کرجہنم کے عذاب میں پھینک دیا۔

حدیث قدسی میں ہے: رب تعالی فر ما تا ہے کہ تکبر میری جا دراور بڑائی میرالباس ہے، جو شخص ان دومیں سے سی ایک کے بارے میں مجھ سے جھٹڑا کرے گامیں اس کے دانت توڑ دوں گا اور مجھے کسی کی پروانہیں ہے۔ ⁽¹⁾

حدیث میں وارد ہے کہ متکبر،انسانوں کی شکل میں چیونٹیوں کی طرح قبروں سے آٹھیں گے، ہر طرف سے ذلت و رسوائی انہیں ڈھانپ لے گی اور انہیں دوز خیوں کی پیپ کی مٹی بلائی جائے گی۔ (2)

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فرمايا: تين شخص اليسے بيں كه الله تعالى قيامت كے دن ان سے ' كلام' 'نہيں كر ب گا،ان كى طرف نہيں ديكھے گا اوران كے لئے در دناك عذاب ہے: ''بوڑ ھازانی'' ،'' ظالم با دشاہ'' اور' سرکش متكبر'' ۔ (3) حضرتِ عمر دَضِيَ اللهُ عَنْه سے مروى ہے: انہول نے بير آيت بيڑھى:

اور جب اسے کہاجا تاہے کہ اللہ سے ڈرتواس کوعزت نے گناہ

وَ إِذَاقِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللهَ أَخَنَاتُهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ

کےساتھ بکڑا۔

پھر فر مایا: بیشک ہم الله کے لئے ہیں اور بیشک ہم اسی کی طرف لوٹنے والے ہیں۔⁽⁵⁾

- 1ابوداود، كتاب اللباس، باب ماجاء في الكبر، ١/٤ ١/٨ الحديث ٩٠٠
- 2 ترمذی، کتاب صفة القیامة ، باب ٤٧ (ت: ١١٢) ، ٢٢١/٤ الحدیث ٢٥٠٠
- 3 مسلم، كتاب الايمان ، باب بيان غلظ تحريم ، اسبال الازار...الخ ،ص ٦٨، الحديث ١٧٢ ـ (١٠٧)
- ۲۰۰۳ توجمهٔ کنز الایمان: اورجباس سے کہاجائے کہ الله سے ڈرتواسے اورضد چڑھے گناہ کی ۔ (پ۲، البقرة: ۲۰۲)
 - البقرة: ٢٥ مالله ك مال بين اورجم كواس كي طرف پيرنا (٤٠ مالبقرة: ٢٥ م)

ایک متکبر نے ایک ایسے تخص کو جو'' نیکی اور اچھی باتوں کا حکم دیتا تھا''قتل کر دیا تو دوسر اُتخص کھڑا ہو گیا اور اس نے کہا:تم ان لوگوں کو قتل کر نے کا حکم دیتے ہیں، تب متکبر نے اسے بھی قتل کر دیا جس نے اس کی مخالفت کی اور اسے بھی جس نے اسے نیکی کا حکم دیا تھا۔

حضرت ابن مسعود رَضِیَ اللهُ عَنْه کا قول ہے: انسان کے گنہگار ہونے کے لئے اتنا کافی ہے کہ جب اسے اللہ سے ڈرنے کو کہا جائے تو وہ یہ کہے کہتم اپنا خیال رکھو!

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِهِ الكِي صَحْص سِي فر ما يا كه دائيں ہاتھ سے كھا أن اس نے كہا: ميں دائيں ہاتھ سے كھانے كى طاقت نہيں ركھتا ، حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر ما يا كه تو طاقت نہيں ركھے گا۔ اس شخص كودائيں ہاتھ سے كھانا كھانے سے تكبر نے روك ديا تھا، راوى كہتے ہيں كه اس كے بعد اس شخص نے اس ہاتھ كوندا ٹھايا (۱) يعنى وہ شَل ہوگيا (اور حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے اس كتن ميں جوار شاد فر ما يا تھا وہ پورا ہوگيا)۔

روایت ہے کہ حضرتِ ثابت بن قَیْس بن ثَمَّاس رَضِیَ اللَّهُ عَنْه نے عرض کیا: یارسول الله! میں ایسا آ دمی ہوں کہ خوب صورت لباس اورصاف مقرار ہنے کو پہند کرتا ہوں کیا یہ گلبُّر ہے؟ آپ نے فر مایا: نہیں بلکہ تکبُّر حق ہے پتم پوشی کرنا اور لوگوں کو فقیر سمجھنا ہے ، حالا نکہ وہ اللّٰہ کے بندے ہیں۔ (2)

حضرت وَهُب بن مُنَبِّدَ رَضِى اللَّهُ عَنْهُ كَا قُول ہے كہ جب حضرتِ مِوكى عَلَيْهِ السَّلام نے فرعون سے كها: ايمان لا، تيرا مُلک تيرے ہى پاس رہے گا تو فرعون نے كها: ميں ہامان سے مشورہ كراوں، چنا نچہ جب اس نے ہامان سے مشورہ كيا تو اس نے كها كداب تك تو تو رب رہا ہے، لوگ تيرى عبادت كرتے رہے ہيں اور اب تو عبادت كرنے والا بندہ بنتا جا ہتا ہے؟ فرعون نے بيمشورہ منا تو تكبرى وجہ سے اللّٰه كا بندہ بننے اور موسى عَلَيْهِ السَّلام كى بيروى كرنے سے انكار كرديا، پس اللّٰه تعالى نے اسے غرق كرديا۔

الله تعالیٰ نے قریش کے بارے میں فرمایا ہے کہ جب انہیں اسلام کی دعوت دی گئی تو وہ کہنے لگے:

^{1} مسلم، كتاب الأشربة، باب آداب الطعام ... الخ ،ص ١١١٨، الحديث ١٠٧_ (٢٠٢١)

و المعجم الكبير،٩٧/٧، الحديث ٩٤/٩ و شعب الايمان ،الأربعون من شعب الإيمان، باب في الملابس...الخ، باب في الصلوات، فصل فيمن كان متوسعا ثوبا...الخ،٥/١٦ الحديث ١٩٢٦

بیقر آن مجیدان دوبستیوں (مکہاورطائف) کے بڑے لوگوں

كَوْ لَانُزِّلَ هٰ فَاالْقُرْانُ عَلَى مَجُلِ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ

عَظِيْمٍ 🕝 (1)

بر کیون ہیں اتارا گیا۔

حضرت قَنَّا وه رَضِى اللهُ عَنهُ كا قول ہے كه دوبستيوں كے بروں سے مرادولِيْد بن مُغِيْره اورابوسعودَ قَقَفَى تَصِى قريشِ مكه في اللهُ عَنهُ كا قول ہے كه دوبستيوں كے بروں سے مرادولِيْد بن مُغِيْره اورابوسعودَ قَفَا ورانہوں في اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم ہے آ گے برطے ہوئے تقے اورانہوں في اللهُ عَليْهِ وَسَلَّم) تو يتيم انسان بين الله تعالى في انہيں كيسے ہمارے لئے بھيجا ہے! (2) الله تعالى في فرمايا: الله تعالى في مرايان مين الله تعالى في مرتبيں كيسے ہمارے لئے بھيجا ہے! (2) الله تعالى في فرمايا: الله تعالى من مرتبيں كيسے ہمارے لئے بھيجا ہے الله تعالى في مرايان مين الله من مرتبيں۔ كياوہ تيرے رب كى رحت تقسيم كرتے ہيں۔

پھر الله تعالیٰ نے ان کے جہنم میں داخل ہونے کے وقت ان کے اس تعجب کی خبر دی ہے جبکہ انہوں نے اہلِ صفہ کو جنہیں وہ حقیر سمجھتے تھے، جہنم میں نہ دیکھا تو پھر وہ کہیں گے کہ:

اور ہمیں کیا ہوگیا ہے کہ ہم ان لوگوں کونہیں ویکھتے جنہیں ہم

مَالَنَالَانَرِي مِجَالًا كُنَّانَعُتُّهُمُ قِينَ الْأَشْرَايِ ﴿ (4)

شریروں سے گنا کرتے تھے۔

روایت ہے کہ اُشرار سے ان کی مراد حضر سے مکتار، بلال ، صُهیْب اور مقداد دَضِی اللهٔ عَنهُمُ ہوں گے۔
حضر سے وَہُب دَضِی اللّهُ عَنه کا کہنا ہے کہ مُم ، آسان سے نازل ہونے والی صاف ، شفاف میٹھی بارش کی طرح ہے جسے بودے اپنی جڑوں کے ذریعے پی کراپنے ذاکتے بدلا کرتے ہیں ، چنا نچیکڑو ہے کی کڑواہٹ اور میٹھے کی مٹھاس بڑھتی ہے ، اسی طرح لوگ علم کواپنی ہمتوں اور خواہشات کے مطابق حاصل کرتے ہیں اور اس سے متکبر کا تکبر اور متواضع کا انکسار بڑھتا ہے اور یہ اس لئے ہوتا ہے کہ جس جاہل کا نصب العین اور شُکِح نَظَرَ تکبر ہوتا ہے ، جب وہ علم حاصل کر لیتا ہے تو اسے ایک ایسی چیزمل جاتی ہے جس کی وجہ سے وہ اور زیادہ تکبر کرسکتا ہے اور وہ تکبر ہی میں بڑھتا چلا جاتا ہے اور جب کوئی شخص بے علمی کے باوجود الله سے خائف رہتا ہے تو جب وہ علم حاصل کر تا ہے تو اسے معلوم ہوجا تا ہے کہ اس کے لئے

- الزُّعُوف: ۳۱).
 - 2اتحاف السادة المتقين، كتاب ذم الكبر...الخ، ٢٧٨/١
 - 3 ترجمهٔ كنز الايمان: كياتمهار رب كى رحت وهانتي بير (بدع، الزُّعُرُف: ٣٢)
- 4توجمهٔ كنز الايمان: بميل كيا بوابم النامر دول كوئيس و يكھتے جنهيں بُر التيجھتے تھے۔ (پ۲۳، ص: ۲۳)اتحاف السادة المتقين، كتاب ذم الكبر...الخ، ۲۸۱/۱۰

X

خوفِ خدا کے مکمل دلائل لائے گئے ہیں، چنا نچہاس کا خوف، شفقت اور اکساری بڑھتی ہے۔ چنا نچہ حضرت عباس دَضِی اللهٔ عَنه سے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: ایک قوم ہوگی جوقر آن پڑھیں گے مگروہ ان کے حلق سے نیچے نہیں جائیگا، کہیں گے کہ ہم نے قرآن پڑھا ہے، ہم سے زیادہ اچھا قاری اور عالم کون ہے؟ پھرآپ نے صحابہ کرام کی طرف متوجہ ہو کرفر مایا: اے اُمت! وہ تم میں سے ہول گے وہ جہنم کا ایندھن ہوں گے۔

مضرت عمردَ ضِی اللهٔ عَنه کا قول ہے کہ متکبر علاء نہ بنوکہ تمہارا علم تمہاری جہالت سے آگے نہ بڑھے۔

بنی اسرائیل میں ایک شخص تھا جس کے کثرت گناہ اور فتنہ وفساد کی دجہ سے اسے بنی اسرائیل کا طَلِی کہا جا تا تھا جس کے معنیٰ ہیں اپنے گناہوں سے بنی اسرائیل کو عاجز کرنے والا ، ایک مرتبہ اس کا الیسے انسان سے گزرہوا جسے بنی اسرائیل کا عابد کہا جا تا تھا ، عابد کے سر پر بادل کا ٹکڑا سا یہ کئے ہوئے تھا ، جب اس گنہگار نے عابد کو دیکھا تو اس کے دل میں خیال آیا کہ میں بنی اسرائیل کا بد بخت ترین آدمی ہوں اور یہ بنی اسرائیل کا عابد ہے، اگر میں اس کے پاس بیڑے جاؤں تو شاید اللہ تعالی مجھ پر بھی رحم کر دے، چنانچہ وہ عابد کے پاس جا کر بیڑھ گیا ، عابد کے دل میں خیال آیا کہ میں بنی اسرائیل کا عابد ہوں اور یہ بنی اسرائیل کا بد بخت آدمی ہے ، یہ میر ساتھ کیسے بیٹھے گا! اسے بہت شرم محسوس ہوئی اور اس بد بخت عابد ہوں اور یہ بنی اسرائیل کا اس ذونوں کو نئے سے کہا: یہاں سے اٹھ جاؤ! اس وقت اللہ تعالی نے بنی اسرائیل کے اس زمانے کے بی پر وحی فر مائی کہاں دونوں کو نئے سرے سے عبادت شروع کرنے کا تھم دیجئے کے ونکہ میں نے بد بخت کو بخش ویا ہے اور عابد کے اعمال کو برباوکر دیا ہے۔ دوسری روایت ہے کہ بادل کا ٹکڑا عابد کے سرسے ہٹ کر بد بخت کے سر پر سایے قکن ہوگیا۔ یہ بات تم پر اس حقیقت کو اچھی طرح واضح کردے گی کہ اللہ تعالی ہندوں کے دلوں کو دیکھتا ہے۔

مروی ہے کہ حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں ایک شخص کا تذکرہ بڑے اچھے الفاظ میں کیا گیا، ایک مرتبہ وہی شخص نظر آیا تو صحابہ کرام نے عرض کی: یارسول الله! بیوہ ہی شخص ہے جس کا ہم نے آپ کے سامنے تذکرہ کیا تھا۔ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے قرمایا: مجھے اس کے چہرے پر شیطان کا اثر نظر آتا ہے۔ اس شخص نے آکر سلام کیا اور حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے میں مختے خدا کی قتم دے کر بوچھتا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللهُ عَلَيْه وَسَلَّم اللهُ عَلَيْه وَسَلَّم اللهُ عَلَيْه وَسُلَّم اللهُ عَلَيْه وَسُلَّم اللهُ عَلَيْه وَسَلَّم اللهُ عَلَيْه وَسُلَّم اللهُ عَلَيْهِ وَسُلَّم اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللهُ عَلَيْهِ وَسُلَم اللهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللهُ عَلَيْه وَلَمْ اللهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَمْ اللهُ الله

^{1}مسند ابي يعلى، ٦/٥، الحديث ٦٦٦٨

ہوں: تیرے نفس نے بھی تجھ سے بیکہا ہے کہ قوم میں مجھ سے افضل کوئی نہیں ہے؟ اس نے کہا: بخدااییا ہوا ہے⁽¹⁾ اور حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے نورِ نبوت سے اس کے دل میں موجود تکبر کا اثر اس کے چبرے برد کیولیا۔

150

حضرت حارِث بن جَزْءِ الزُّبَيْدِي صحابي _{دَضِيَ} اللهُ عَنْهُ كاارشاد ہے كہ ججھے ہروہ مَضْحَكہ خَيْر قاری تعجب ميں ڈالتا ہے جس سے تُو تو خندہ بيشانی سے ملتا ہے اوروہ تجھے ناک بھوں چڑھا كرملتا ہے اور تجھ پراپنے علم كااحسان جمّا تا ہے ،اللّه تعالىٰ مسلمانوں سے ایسے قاریوں کوختم كرے۔

حضرت ابوذر رَضِى اللهُ عَنه سے مروى ہے كہ ميں نے حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَى موجود كَى ميں ايك شخص سے تلخ كلامى كى اور اسے كہا: اسے حبثى كے بيٹے! حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے بيتن كرفر مايا: ''اسے ابوذر! صاع كو ہلكا كر! صاع كو ہلكا كر! كسى سفيدكوسياه برفضيلت نہيں ہے۔''

حضرتِ ابوذر رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کہتے ہیں کہ بیسنتے ہی میں لیٹ گیااوراس شخص سے کہا: اُٹھواور میراچ ہرہ روند ڈالو۔ (2) حضرتِ علی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا فر مان ہے کہ جو شخص کسی جہنمی کو دیکھنا جا ہتا ہے وہ ایسے آ دمی کو دیکھے جوخو دبیٹھا ہوا ہو اورلوگ اس کے سامنے کھڑے ہول۔

حضرت اللهُ عَنهُ كافر مان ہے كہ صحابہ كرام دِحُوانُ اللهِ عَلَيْهِمُ اَجُمَعِينَ كُوكُوكُنُ مُصَاحِتُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللهُ عَلَيْهِمُ اَجْمَعِينَ كُوكُوكُنُ مُصَاحِتُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اللهُ عَلَيْهِ وَصَلَّم اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم عَلَم اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم عَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم عَصَاحِ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بعض اوقات البِن صحابہ كے ساتھ چلتے تو آئيس آگے چلنے كا حكم فرماتے اور خودان كے حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بعض اوقات البِن صحابہ كے ساتھ چلتے تو آئيس آگے چلنے كا حكم فرماتے اور خودان كے درميان چلتے ، يہاس كئے كرتے تاكہ دوسرول كو تعليم ہويا پھر قلبِ انور سے تكبر اور بڑائى كے شيطانى وساوس كے نكا لئے كے لئے اليا كرتے جيسا كہ نماز ميں نيا كيڑا ہين كر پھريرانا ہين ليتے ، اس ميں بھى يہى حكمت ہوتى تھى ۔

^{•}المغنى عن حمل الاسفار للعراقي، ٢/ ٠ ٦ ٩، الحديث ٢ ٠ ٥ ٣ و شعب الايمان، السابع والخسمون من شعب الإيمان، باب في حسن الخلق، ٢/ ٢ ٠ ٢، الحديث ٤ ٥ ٨ ٨ و مسند البزار، ٤ ٢ / ١ ٦، الحديث ٧ ٥ ١

الحديث ١٣٥٥ و تاريخ مدينه
 الحديث ١٣٥٥ و تاريخ مدينه
 دمشق ١٠٠ (١٤٦٤)

رُّ فضيلتِ تواضع و قناعت ﴿

نبی کریم صَلَّم الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کا فرمان ہے کہ الله تعالی عفوه درگزر کے ذریعہ بندے کی عزت کو بڑھا تا ہے اور جو الله تعالی کے خوشنو دی کی خاطر تواضع کرتا ہے ، الله تعالی اسے بلند فرما تا ہے۔ (1)

فرمانِ نبوی ہے: کوئی آ دمی الیانہیں مگراُس کے ساتھ دوفر شتے ہیں اور انسان پرفہم وفر است کا نور ہوتا ہے جس سے وہ فر شتے اُس کے ساتھ رہے ہیں، پس اگر وہ انسان تکبر کرتا ہے تو وہ اس سے حکمت چیین لیتے ہیں اور کہتے ہیں:

''اےالله!اسے سَرَطُوں کر''اورا گروہ تواضع اورا کساری کرتا ہے تو فرشتہ کہتا ہے:''اےالله!اسے سر بلندی عطا د)

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کہاس کے لئے خوشخبری ہے جس نے تو نگری میں تواضع کی ، جمع کر دہ مال کو اجھے طریقے پرخرچ کیا، تنگدست اور مفلسوں پر مہر بانی اور علماءودانشمندوں سے میل جول رکھا۔⁽³⁾

مروی ہے کہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم صحابہ کرام کی ایک جماعت کے ساتھ گھر میں کھار ہے تھے کہ دروازہ پر سائل آیا جسے ایک ایک جماعت کے ساتھ گھر میں کھار ہے تھے کہ دروازہ پر سائل آیا جسے ایک ایس سے نفرت کرتے تھے، حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے اسے اندر آیا جسے ایک اجازت دی، جب وہ اندر آیا تو آپ نے اسے اپنے زانو مبارک پر بٹھایا اور فرمایا: کھانا کھاؤ، قریش کے ایک آدمی نے اسے بہت ناپیند کیا اور پھروہ قریش جوان اس جیسی بیاری میں مبتلا ہوکر مَر ا۔ (4)

فر مانِ نبوی ہے کہ رب تعالی نے مجھے دوباتوں کا اختیار دیا، ایک بیر کہ میں رسول عبد بنوں یا نبی فرشتہ بنوں! میں نہیں سمجھ رم اتھا کہ میں کونی بات پیند کروں، فرشتوں میں جبریلِ امین (علیہ السلام) میرا دوست تھا، میں نے سراٹھا

^{1}مسلم، كتاب البر...الخ، باب استحباب العفو و التواضع، ص ١٣٩٧، الحديث ٦٩ ـ (٢٥٨٨)

^{2}الموسوعة ابن ابي الدنيا، التواضع والخمول ،٣/٣ ٥٥، الحديث٧٥

^{3}المعجم الكبير، ٥/١٧، الحديث ٥٦١٥

۱۵ الموسوعة لابن ابي الدنيا، التواضع والخمول،٣/٣٥٥، الحديث ٨٢

کراس کی طرف دیکھا تواس نے کہا: رب کے ہاں تواضع اختیار سیجئے ، تو میں نے عرض کیا کہ میں رسول عبد بننا جا ہتا

الله تعالی نے حضرتِ موسیٰ عَلَيْهِ السَّلام کی طرف وحی فرمائی که میں اس شخص کی نماز قبول فرما تا ہوں جومیری عظمت کے سامنے انکساری کرنا ہے،میری مخلوق پر تکبرنہیں کرتا اوراس کا دل مجھ سے خوفز دہ رہتا ہے۔

فر مانِ نبوی ہے کہ کرم تقو کی کا ،عزت تواضع کا اوریقین بے نیازی کا نام ہے۔ ⁽²⁾

حضرت عيسى عَلَيْهِ السَّلام كافر مان ہے كدرنيا ميں تواضع كرنے والوں كيليِّ خوشخرى ہے، وہ قيامت كرن منبرول پر ہوں گے،لوگوں میں اصلاح کرنے والوں کوخوشخری ہو، بیروہ لوگ ہیں جو قیامت کے دن جنت الفردوس کے وارث ہوں گے اور دنیا میں اینے دلوں کو یا ک کرنے والوں کو بشارت ہو، یہی لوگ قیامت کے دن ویدار الہی سے مشرف ہوں گے۔

بعض محد ثنین کرام سے مروی ہے،حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جب الله تعالی نے سی بندے کواسلام کی مدایت دی، اسے بہترین صورت دی اور اسے اس کے غیر پیندیدہ مقام سے دوررکھا اور ان سب نواز شات کے بعد ا ہے متواضع بنایا،اس سے ثابت ہوا کہ تواضع الله کی پیندیدگی کی علامت ہے۔⁽³⁾

فرمانِ نبوی ہے کہ جیار چیزیں ایس ہیں جواللہ اینے محبوب بندوں کے سواکسی کوعطانہیں فرما تا:

﴿1﴾....خاموشی اور بیربی عبادت ہے، (علاوہ ازیں) «2».....تو کل

هه ونياسے كناره شي _ ⁽⁴⁾ ﴿3} تواضع اور

مروی ہے کہرسولِ خداصَلًى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم کھا نا کھلا رہے تھے کہ ایک عبشی آیا جو چیک میں مبتلا تھا اور جگہ جگہ سے

- 1الموسوعة لابن ابي الدنيا، التواضع و الخمول، ٣/ ٥٥٤، الحديث ٨٥
- 2الموسوعة لابن ابي الدنيا، التواضع و الخمول، ٩/٣ ٥٥، الحديث ١١٥
- الحديث ١٢١. الموسوعة لابن ابي الدنيا، التواضع و الخمول، ٣/٠٥، الحديث ١٢١.
- ۱۲۷ موسوعة لابن ابي الدنيا، التواضع و الخمول، ۲۱/۳ ه، الحديث ۱۲۷

اس کی کھالاً دھڑ چکی تھی، وہ جس کے ساتھ بیٹھتاوہ اس کے پہلو سے اٹھ جاتا،حضور صَلِّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے اپنے پہلو میں بٹھایا۔ ⁽¹⁾

اورارشادفر مایا: مجھے وہ آ دمی تعجب میں ڈالتا ہے جواپنے ہاتھ میں ایساز ٹم لئے پھر تا ہے جولوگوں کے لئے باعث تکلیف ہے اوراس سے اس کا تکبر مٹ گیا ہے۔ (2)

ایک دن حضور صَلَّى اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے اپنے صحابہ سے فرمایا: کیابات ہے میں تم میں عبادت کی شیرینی نہیں یا تا؟ صحابہ کرام نے عرض کی: حضور! عبادت کی شیرینی کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: تواضع! (3)

فرمانِ نبوی ہے کہ جبتم میری امت کے تواضع کرنے والوں کودیکھوتو ان سے تواضع سے پیش آ وَاور متکبرین کو دیکھوتو ان سے تکبر کروکیونکہ بیان کے لئے تحقیراور ذلت ہے۔ ⁽⁴⁾

اسی موضوع پریہ چنداشعار ہیں: _

تواضع تكن كالنجم لاح لناظر على صفحات الماء وهو رفيع

ولاتك كالدخان يعلو بنفسه على طبقات الجو وهو وضيع

﴿1﴾ تواضع كرجواس ستار بي طرح موجود كيصنه واليكو پانى كى تنظح پرنظر آتا ہے، حالانكه وه بهت بلندى پر موتا ہے۔

﴿2﴾.....دهوئیں کی طرح نه ہوجوفضامیں خودکو بلند کرتا ہے حالائکہ اس کی کوئی عزت نہیں ہوتی اور وہ ایک بیکار چیز ہے۔

قناعت کے متعلق جو کچھ پہلے بیان کیا جاچکا ہے،اس سے بھی زیادہ اَ حادیث واَ قوال قناعت کی فضیلت میں وارد ہوئے ہیں، چنانچے فرمانِ نبوی ہے کہ

- 1الموسوعة لابن ابي الدنيا، التواضع والحمول،٣/ ٥٥٣ الحديث ٨١
- الموسوعة لابن ابي الدنيا، التواضع والخمول،٣/٣٥٥٥ الحديث٩٦
- ۱٤٠/۱، الكبيرة الموضوعات للفتني، ص١٧٨ و الزواجر عن اقتراف الكبائر ، الكبيرة الرابعة، الكبر والعجب والخيلاء ، ١٤٠/١
 و طبقات الشافية الكبرى للسبكي ، ٣٥٣/٦
 - 4المرجع السابق

مومن کی عزت لوگوں سے بے پروائی میں ہے، (1) قناعت میں آزادی اور عزت ہے۔ (2)
اسی لئے کہا گیا ہے کہ اس سے بے نیاز ہوجا جسے تو چا ہتا ہے اس جیسا ہوجائیگا جس کی طرف حاجت لے کرجائیگا تو
اس کا قیدی ہوگا اور جس پر چاہے احسان کر تو اس کا سر دار ہوگا ، تھوڑ امال جو تجھے کفایت کرے ، اس زیادہ مال سے بہتر
ہے جو تجھے گمراہ کردے۔

'، ایک بزرگ کا قول ہے کہ میں نے قناعت سے افضل کوئی مالداری نہیں دیکھی اور لا کچ سے بڑھ کرینگدی نہیں دیکھی اور بیا شعار پڑھے: ہے

افادتنى القناعة ثوب عز واى غنى اعز من القناعة

فصيرها لنفسك راس مال وصير بعدها التقوى بضاعة

تجد ربحين تغنى عن خليل وتنعم في الجنان بصبر ساعة

﴿1﴾..... قناعت نے جب مجھےعزت كالباس ديااوركونساوہ تمول ہے جوقناعت سے زيادہ باعزت ہو۔

﴿2﴾ پس اسے اپنفس کے لئے اصل یونجی بنا لے اور اس کے بعد پر ہیز گاری کو ذخیرہ کر لے۔

﴿3﴾..... تو دوگنا نفع پائے گا، دوست سے کچھ طلب کرنے سے بے نیاز ہوجائے گا اور ایک گھڑی صبر کے بدلے جنت میں انعام و سے

اكرام پائےگا۔

ایک اورشاعر کہتاہے: _

قنع النفس بالكفاف والا طلبت منك فوق مايكفيها

انما انت طول عمرك ما عمرت في الساعة التي انت فيها

﴿1﴾ا پنجسم کومعمولی گزربسر برصبر کرنے والا بناور نہ بیتجھ سے تیری ضرورت سے بڑھ کر مال ودولت مائکے گا۔

﴿2﴾ تیری زندگی کی مدت اتنی ہی ہے جنتنی اس لمحد کی مدت ہے جس میں تو سانس لے رہا ہے۔

ایک اورشاعر کہتاہے: _

❶.....شعب الايمان ، الحادي والعشرون من شعب الايمان...الخ ،٣١/٣٠ الحديث ٣٢٤٨ .

2الموسوعة لابن ابي الدنيا، كتاب اليقين، ٢٣/١، الحديث ٨ و الفردوس الاخبار، ٩/٥٦، الحديث ١٥١٨

اذ الرزق عنك ناى فاصطبر ومنه اقنع بالذى قد حصل ولا تتعب النفس في تحصيله فان كان ثم نصيب وصل

﴿1﴾اگررزق تجھ ہے دور ہے تو صبر کراور جو پچھل گیا ہے ای پر قناعت کر۔

﴿2﴾ا پینفس کواس (رزق) کے حاصل کرنے میں زحمت نہ دے،اگروہ تیرامقدر ہے تو کیاوہ مجھے ل جائے گا! ایک اور شاعر کہتا ہے: ہ

اذا اعطشتك اكف اللئام كفتك القناعة شبعا و ريا

فكن رجلا رجله في الثرى وهامة همته في الثريا

﴿ 1 ﴾ جب تحقي بخيلول كاتمول حريص بنائة واس وقت قناعت تحقي سيراب كرني كيلية كافي موكا _

﴿2﴾....اییا جوان بن جس کا پاؤں تحت الٹری میں ہواوراس کےارادوں کی چوٹی ثریا کوچھورہی ہو۔

دوسراشاعرکہتاہے: _

يا طالب الرزق الهنى بقوة هيهات انت بباطل مشغوف رعت الاسود بقوة جيف الفلا ورعى الذباب الشهد وهو ضعيف

﴿1﴾اے آسانی سے حاصل ہونے والے رزق کوقوت سے تلاش کرنے والے!افسوس! تو جھوٹی محبت میں مبتلا ہے،غلط چیز میں دل لگار ہاہے۔

﴿2﴾ شیرا پی تمام ترقوت کے باوجود جنگل کے مردار کھاتے ہیں اور کھیاں اپنی کمزوری کے باوجود شہد کھاتی ہیں۔ حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا طریقتہ بیتھا کہ جب آپ بھوک محسوں فرماتے تو اہل بیت کرام سے فرماتے کہ نماز کے لئے کھڑ ہے ہوجا وَاور فرماتے: مجھے یہی حکم دیا گیا ہے اور بیآ بیت پڑھتے: ''اپنے گھروالوں کونماز کاحکم کراوراس پرصبر کر''(1)

1توجمهٔ كنز الايمان: اورائ گروالول كونماز كاحكم دے اورخوداس پرثابت ره (پ٦١، ظه: ١٣٢).....المعجم الاو سط، (٥٨/١ ، الحدیث ١٨٨٦)

X

شاعر کہتاہے: _

دع التهافت في الدنيا وزينتها ولا يغرنك الاكثار و الجشع

واقنع بما قسم الرحمن وارض به ان القناعة مال ليس ينقطع

وخل ويك فضول العيش اجمعها فليس فيها اذا حققت منتفع

﴿1﴾ دنیا کی زینت اوراس کی گرفتاری کوترک کردے اور تحقیے بہت مالدار ہونے کی حرص و آرز وفریب میں مبتلان کرے۔

﴿2﴾ الله كي تقسيم پر قناعت كراوراس پرراضي موجا كيونكه قناعت ايسي دولت ہے جو كبھى ختم نہيں موتى _

﴿3﴾ تواس تمام تربيهوده عيش كوترك كرد بي كيونكه جب تواسيه بغورد كيھے گا تواس ميں كوئى نفع نہيں پائے گا۔

بعض شعراء کا قول ہے:

اقنع بما تلقى بلابلغة فليس ينسى ربنا النملة

ان اقبل الدهر فقم قائما وان تولى مدبرا نم له

﴿1﴾جو يجم تحقيه بغير كوشش كل جاتا ہے اسى ير" قناعت"كر لے كدرتٍ ذوالجلال توحشرات الارض ميں سے كسى كو بھى نہيں

بھولتا۔(رزق پہنچا تاہے)

﴿2﴾اگرز مانه تجمّے انعامات بے نواز بے تو کھڑا ہوجااورا گرونت تجھ سے پیٹھ پھیر لے تو تو سوجا۔

داناؤں کا قول ہے کہ عزت خوبصورت کیڑوں کی مرہونِ منت نہیں ہے کیونکہ فراخ دستی میں بہترین لباس پہننا خوبصورت کیڑوں سے آراستہ ہونا آ دمی کومصروف کر دیتا ہے یہاں تک کہ دنیاوی محبت کی وجہ سے وہ دینی اُمور کی پروا نہیں کرتااوراییا آ دمی بہت ہی کم تکبروخود بینی سے خالی ہوتا ہے۔

بعض شعراء کا کہناہے: _

رضيت من الدنيا بلقمة بائس ولبس عباء لا اريد سواهما

لاني رايت الدهر ليس بدائم فدهرى وعمرى فانيان كلاهما

﴿1﴾ میں دنیا ہے سوکھی روٹی اورموٹے کیڑے پر راضی ہوں اور مجھے ان کے سوا پھینیں جا ہے۔

﴿2﴾ كيونكه ميں نے زمانه كوفانى ويكھا ہے البذاميرى عمراور زمانيد ونوں فنا ہونيوالے ہيں۔

اب 58

ر فریب ھائے دنیا کے

دنیا کے تمام حالات خوشی اورغم کے اردگر درش کرتے رہتے ہیں، دنیا اپنے چاہنے والوں کی خواہشات کے مطابق نہیں رہتی بلکہ و حکیمِ مطلق الله تعالیٰ کی حکمت کے مطابق رنگ بدلتی رہتی ہے، فرمانِ الله یعالیٰ کی حکمت کے مطابق رنگ بدلتی رہتی ہے، فرمانِ الله یعالیٰ کی حکمت کے مطابق رنگ بدلتی رہتی ہے، فرمانِ الله یعالیٰ کی حکمت کے مطابق رنگ بدلتی رہتی ہے، فرمانِ الله یعالیٰ کی حکمت کے مطابق رنگ بدلتی رہتی ہے، فرمانِ الله یعالیٰ کی حکمت کے مطابق رنگ بدلتی رہتی ہے، فرمانِ الله یعالیٰ کے حکمت کے مطابق رنگ بیا کے مطابق رنگ ہوئے کی مطابق رنگ ہوئے کے مطابق رنگ ہوئے کے مطابق رنگ ہوئے کے مطابق رنگ ہوئے کی مطابق رنگ ہوئے کے مطابق رنگ ہوئے کی مطابق رنگ ہوئے کے مطابق کے مطابق رنگ ہوئے کے مطابق رنگ ہوئے کے مطابق رنگ ہوئے کے مطابق رن

وہ ہمیشہ مختلف رہیں گے مگروہ جس پر تیرے رب نے رحم کیا (وہ

وَّلايَزَالُوْنَمُخْتَلِفِيْنَ ﴿ إِلَّامَنْ مَّحِمَرَبُّكَ اللهِ

اس ہے محفوظ رہیں گے)۔

بعض مفسرین کا کہنا ہے کہ یہاں' اِختلاف' سے مرادرزق کا اختلاف ہے یعنی بعض غنی ہیں اور بعض فقیر ہیں لہذا ہر شخص کے لیے ضروری ہے جسے دنیا کا مال مل جائے اور رہِ ندوالہ جلال دنیا کواس کا خادم بناد ہے تو وہ شکرا داکر تارہے اور نیک کاموں میں اسے صرف کرے کیونکہ اچھے اعمال برائیوں کوزیر کر لیتے ہیں اور اپنی دنیا پرغرور نہ کرے اور بیفر مانِ الہی اس بات کو بیجھنے کے لئے کافی ہے

تهمیں دنیا کی زندگی فریب نہ دے اور نتمہیں کوئی فریب دینے

فكاتَغُرَّنَّكُمُ الْحَلِوةُ التَّنْيَا اللهِ وَلا يَغُرَّنَّكُمُ بِاللهِ

والاالله سے فریب دے۔

الْغَدُّوْمُ ﷺ اورفر مان الٰہی ہے:

''(لیکن تم نے اپنے آپ کوفتنہ میں ڈالا اور تم منتظر ہے اور تم نے شک کیا اور تمہیں آرز ؤوں نے فریب میں ڈالا۔''(3)

- ستو جمه کنز الایمان: اوروه بمیشه اختلاف میں رہیں گے گرجن پرتمهارے ربّ نے رحم کیا (وہ اسے محفوظ رہیں گے)۔
 (۱۱۹،۱۱۸)
- 2تو جمهٔ کنز الایمان: تو ہر گرتمہیں دھوکا نہ دے دنیا کی زندگی اور ہر گرتمہیں الله کے علم پردھوکا نہ دے وہ بڑافر ہی (شیطان)۔
 (۱۲، لقطن: ۳۳)
- 3 تو جمه کنز الایمان: مگرتم نے اپنی جانیں فتنه میں ڈالیں اور مسلمانوں کی برائی تکتے اور شک رکھتے اور جھوٹی طبع نے تہمیں فریب دیا۔ (پ۲۷، الحدید: ۱۶)

د نیا کے فریب سے گریز کے لئے یہ آیات عقلمندانسان کو بہت کچھ بصیرت سکھاتی ہیں۔ان عقلمندوں کی نینداور ہیداری کیسی عجیب ہے جو بے وقو فوں کی شب ہیداری اورکوششوں پر رشک کرتے ہیں حالانکہ خود کچھ بھی نہیں کریا تے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ عقلمندوہ ہے جس نے اپنے نفس کا مُحَاسَبہ کیا اور موت کے بعد کے لئے عمل کئے اور احمق وہ ہے جس نے نفسانی خواہشات کی پیروی کی اور الله تعالیٰ سے ڈھیروں دنیا وی تمنا ئیں رکھیں۔⁽¹⁾ شاعر کہتا ہے:

ومن يحمد الدنيا لشئ يسره فسوف لعمرى عن قليل يلومها

اذا ادبرت كانت على المرء حسرة وان اقبلت كانت كثيرا همومها

﴿ 1 ﴾.....اور جوُّخص کسی پیندیده چیز کی وجہ ہے دنیا کی تعریف کرتا ہے مجھے زندگی کی قسم عنقریب وہ اسے بُرا بھلا کہے گا۔

﴿2﴾ جب دنیا جلی جاتی ہے وانسان کے دل میں حسرت جھوڑ جاتی ہے اور جب آتی ہے تو بے ثنار د کھ لے کر آتی ہے۔

ایک اور شاعر کہتا ہے: _

تالله لو كانت الدنيا باجمعها تبقى علينا وياتى رزقها رغدا

ماكان في حق حر ان يذل لها كيف وهي متاع يضمحل غدا

﴿1﴾..... بخدا! اگرونیاایی تمام ترمال ومتاع کے باوجود ہمارے لئے پر ہیزگاری کا نشان ہوتی اور لگا تاراس کارزق آتار ہتا۔

﴿2﴾ تب بھی کسی مروز زاد کے لئے اس کی طرف رجوع مناسب نہ ہوتا چہ جائیکہ میرمال ہی ایسابنایا گیا ہوجوکل ختم ہوجائے۔

ابن بستام کہتا ہے:۔

اف للدنيا و ايامها فانها للحزن مخلوقة

همومها لا تنقضي ساعة عن ملك فيها و لا سوقة

ياعجبا منها ومن شانها عدورة للناس معشوقة

1ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر الموت...الخ، ٤٦/٤ و٤، الحديث ٢٦٠٠

٤٣٠

﴿1﴾دنیااوراس کے ایام پرحیف ہے، بے شک پید کھوں کے لئے پیدا کی گئے ہے۔

﴿2﴾اس كے دكھا كيالح بھى ختم نہيں ہوتے جا ہے اس ميں كوئى بادشاہ ہے يافقير ہے۔

﴿3﴾اس پراوراس کے عجیب حالات پرتعب ہے، بدلوگوں کی جان لیوامعثوقہ ہے۔

ایک اورشاعر کہتاہے: _

وقائلة ارى الايام تعطى لئام الناس من رزق حثيث

وتمنع من له شرف وفضل فقلت لها خذى اصل الحديث

رأت حمل المكاسب من حرام فجادت بالخبيث على الخبيث

﴿1﴾..... میں دیکھنا ہوں کہ زمانہ بخیل ترین لوگوں کو بے اِنتہا مال دینے پر آ مادہ رہتا ہے۔

﴿2﴾اورصاهبِعزت وفضيلت سے زماند دنيا كوروك ديتاہے، ميں نے اسے كہا:تم اصل بات ميں غور كرو۔

﴿3﴾خبیث حرام کمائی ہے مال اکٹھا کرتے ہیں لہذا خبیث مال اور خبیث لوگوں میں جمع ہوتے ہیں۔

دوسراشاعرکہتاہے: _

سل الايام مافعلت بكسرى وقيصر والقصور وساكنيها

اما استدعتهم للبين طرا فلم تدع الحليم و لا السفيها

﴿1﴾ زمانه سے يو چوتونے كسرى، قيصر، ان كے محلات اور ان ميں رہنے والوں سے كيا كيا؟

﴿2﴾کیاان سب نے تھے سے جدائی کی اِستدعا کی تھی کہ تو نے کسی عقلمنداور کسی بے وقوف کونہیں جھوڑا۔

کہتے ہیں کہایک بدوی کسی قبیلہ میں آیا،لوگوں نے اسے کھانا کھلا یا اوروہ کھانا کھا کران کے خیمہ کے سائے میں

لیٹ گیا، پھرانہوں نے خیمہ اکھیڑلیااور بدوی کو جب بھوک گلی تواس کی آئکھ کس گئی اور وہ کہتا ہواوہاں سے چل دیا: _

الا انما الدنيا كظل بنيته ولا بديوما ان ظلك زائل

الا انما الدنيا مقيل لراكب قضى وطرا من منزل ثم هجرا

﴿1﴾..... باخبر ہوجاؤید دنیاعمارت کے سامید کی طرح ہے اور لامحالہ ایک دن اس کا سامیز اکل ہوجائے گا۔

﴿2﴾ بلاشبه دنیاسوار کے لئے قبلولہ کرنے کی جگہ ہے،اس نے اپنی حاجت پوری کی اور پھرا ہے چھوڑ دیا۔

کسی دانانے اپنے دوست سے کہا: مختجے داعی نے سب کچھ سنا دیا اور بلانے والے نے سب کچھ واضح کردیا،
اس شخص سے بڑھ کراورکوئی مصیبت میں مبتلانہیں جس نے یقین کامل کو گنوادیا اور غلط کاریوں میں مشغول ہوا۔
حضرت ابن مسعود دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ کا قول ہے کہ خوف الہی کے لئے علم اور تکبر وغرور کے لئے جہالت کافی ہے۔
فرمانِ نبوی ہے کہ جس نے دنیا سے محبت رکھی اور اس کی زیب وزینت سے مسر ورہوا، اس کے دل سے آخرت کا خوف نکل گیا۔
(1)

بعض علماء کا قول ہے کہ بندہ سے مال ودولت کے چلے جانے پر رنج وغم کرنے اور مال ودولت کی فرَاوانی میں خوشی پرمُحاسَبہ کیا جائے گا۔

بعض سلف صالحین جنہیں الله تعالیٰ نے دنیادی تھی ،وہ حرام کردہ باتوں سےتم سے زیادہ بچنے والے تھے اور جو کام کرنائمہیں مناسب نظرنہیں آتاوہ ان کے نز دیکے مہلک ترین سمجھے جاتے تھے۔

حضرت عبدالعزيز رَضِيَ اللهُ عَنْه بسااوقات مسعر بن كدام رَضِيَ اللهُ عَنْه كريها شعار برُها كرتے تھے: _

نهارك يامغرور نوم وغفلة وليلك نوم والردى لك لازم

يغرك ما يفني وتفرح بالمني كما غر باللذات في النوم حالم

وشغلك فيها سوف تكره غبه كذلك في الدنيا تعيش البهائم

﴿1﴾ا عفریب خورده! تیرادن نینداورغفلت میں اور تیری رات سونے میں پوری ہوتی ہے اور موت تیرے لئے لازمی ہے۔

﴿2﴾.....زائل شده مال تحقیے فریب میں ڈالتا ہےاورامیدیں پا کرتو بہت خوش ہوتا ہے جیسے خواب دیکھنے والاخواب میں لطف اندوز

ہوتا ہے۔

﴿3﴾عنقریب تواپنی اس دنیاوی مشغولیت کو براسمجھے گا،الیی زندگی تو دنیامیں جانوروں کی ہوتی ہے۔

.....☆.....☆

1موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذم الدنيا، ٢٥٥ ، الحديث ٧٩ و حلية الاولياء، أحمد بن أبي الحواري ، ١١/١٠ ،

الحديث ١٤٣٥

اب 59

مذمت و تخویفِ دنیا

حضرت ابوامامہ باہلی دَضِیَ اللهٔ عَنْه ہے مروی ہے کہ تغلبہ بن حاطب نے رسول الله عَلَیٰهِ وَسَلَم کی خدمت میں عرض کیا: یادسول الله ! میرے لئے دعا کریں الله تعالی مجھے مال دے۔ آپ نے فرمایا: اے تغلبہ! تھوڑا مال جس کا توشکرا دا کرتا ہے اس مالی کثیر سے بہتر ہے جس کا توشکرا دا نہیں کرسکتا ، تغلبہ نے عرض کیا: یادسول الله! میرے لئے الله تعالی سے مال کی دعا سیجے ، آپ نے فرمایا: اے تغلبہ! کیا تیرے پیش نظر میری زندگی نہیں ہے ، کیا تواس بات پر راضی نہیں کہ تیری زندگی نہیں کی زندگی جیسی ہو، بخدا! اگر میں چا ہوں کہ میرے ساتھ سونے اور چا ندی کے پہاڑ چلیں تو چلیں گے۔

تُغْلِمَهِ نَعْرَض كيا: اس ذات كي تتم جس نے آپ كونبى برق بنا كر بھيجا ہے! اگر آپ ميرے لئے الله سے مال كى دعا كريں تو ميں اس مال سے ہر حقد اركاحق پورا كروں گا اور ميں ضرور كروں گا، ضرور حقوق ادا كروں گا، حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَمَالَ سے ہر حقد اركاحق كي اللهُ عَلَيْهِ عَنْ اللهُ عَلَيْهِ وَمَالَ عَظَا كر! چنا نجياس نے بكرياں ليں اور وہ ايسے براھيں كہ جيسے حشرات الارض براھتے ہيں اور ان كے لئے مدينہ ميں رہنا مشكل ہوگيا۔

 ٤٣٣

ان کے مال سے صدقہ لیجئے ان کے ظاہر اور باطن کو پاک سیجئے ان کے صدقات اور ان کے لیے دعا سیجئے بے شک آپ کی دعا

خُلُ مِنْ اَمُوَالِهِمُ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمُ وَتُزَكِيهِم بِهَا وَصَلِّعَلَيْهِمُ التَّصَالِقَكَ سَكَنُ تَهُمُ الأَلَ

ان کے لیے سکین ہے۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نَے جُہُيْءَ اور بنوسُنَيْم کے دوآ دميوں کوصد قات کی وصول يا بی پرمقرر فرما يا اور انہيں صد قات کے احکامات اور صد قات وصول کرنے کی اجازت لکھ کرروانہ فرما يا کہ جاؤا ورمسلمانوں سے صد قات وصول کرکے لاؤا ورفرما يا کہ تغلبہ بن حاطب اور فلاں آ دمی کے پاس جانا جو بنی سلیم سے تعلق رکھتا ہے اور ان سے بھی صد قات وصول کرنا۔ چنانچہ بید دونوں حضرات تغلبہ کے پاس آئے اور اسے حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کا فرمان پڑھوا کر صد قات (بريوں کی زکوة) کا سوال کيا۔ نغلبہ نے کہا: بيتو شکس ہے، بيتو شکس ہے، بيتو شکس ہی کی ايک شکل ہے، تم حاو، جبتم فارغ ہو چکو تو ميرے پاس پھر آنا۔

پھریہ حضرات بنوسلیم کے اس آ دمی کے پاس آئے جس کے متعلق حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر ما یا تھا: جب
اس نے سنا تو اس نے اپنے اعلیٰ مرتبہ اونٹوں کے پاس جاکران میں سے صدقہ کے لئے علیٰجد ہ کردیئے اور انہیں لے کر
ان حضرات کی خدمت میں آیا، ان حضرات نے جب وہ اونٹ دیکھے تو بولے: تمہارے لئے بیاونٹ دینا ضروری نہیں
ہیں اور نہ ہی ہم تم سے عمدہ اور اعلیٰ اونٹ لینے آئے ہیں، اس خص نے کہا: انہیں لے لیجے، میر اول انہیں سے خوش ہوتا
ہے اور میں بی آ یہی کو دینے کے لئے لایا ہوں۔

جب بید حفرات صدقات کی وصولی سے فارغ ہو چکے تو تغلبہ کے پاس آئے اوراس سے پھر صدقات کا سوال کیا، نغلبہ نے کہا: مجھے خط دکھا و اوراس نے خط دیکھر کہا: یڈیکس ہی کی ایک شکل ہے، تم جاؤتا کہ میں اس بارے میں کی ایک شکل ہے، تم جاؤتا کہ میں اس بارے میں کی چھے فور کرسکول ، الہذا بید حفرات واپس روانہ ہوگئے اور حضور صلّی اللّه عَلَیْهِ وَسَلّم کی خدمت میں حاضر ہوئے ، حضور صلّی اللّه عَلَیْهِ وَسَلّم کی خدمت میں حاضر ہوئے ، حضور صلّی اللّه عَلَیْهِ وَسَلّم کی خدمت میں حاضر ہوئے ، حضور صلّی اللّه عَلَیْهِ وَسَلّم نے ان سے بات چیت کرنے سے پہلے محض انہیں و یکھتے ہی فر مایا: اے تغلبہ افسوس! اور ہنوسلیم کے اس شخص کے لئے دعا فر مائی ، پھران حضرات نے آپ کو تغلبہ اور سلیمی کے ممل حالات سنائے ، اللّه تعالیٰ نے تغلبہ کے بارے میں ستر جمہ کنز الایمان: اے مجبوب ان کے مال میں سے زکو ہے تحصیل (وصول) کروجس سے تم انہیں ستھرااور پا کیزہ کر دواوران کے تن میں دعائے خرکرو ہے شک تبہاری وعال کے دلوں کا چین ہے۔ (ب۱۰ الدوبه: ۲۰۱۰)

میں بیآیات نازل فرمائیں:

وَمِنْهُمُ مَّنُ عُهَدَ اللهَ لَمِنُ الْسَنَامِنُ فَضَلِهِ لَنَصَّدَّ قَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الطُّلِحِيْنَ ﴿ فَلَبَّا اللهُمُ مِّنْ فَضُلِه بَخِلُوابِه وَتَوَلَّوْاوَّهُمُ مُّعُونُ ﴿ فَيُونَ وَلَوْاوَّهُمُ مُّعُونَ ﴿ فَا فَعَنَا اللهُ مَا فَعُونَ لَا لِهِ مَا كَانُوا يَكُولِ مِنْ لَقَوْنَ لَا بِهَا اللهَ مَا وَعَنُولُو وَبِمَا كَانُوا يَكُولُونَ ﴿ وَلَا اللهُ مَا وَعَنُولُو وَبِمَا كَانُوا يَكُولُونَ ﴿ وَلَا اللهُ مَا وَعَنُولُو وَبِمَا كَانُوا يَكُولُونَ ﴿ وَلِهِ مَا كَانُوا يَكُولُونَ ﴿ وَلِهُ اللهُ مَا وَعَنُولُو وَلِهَا كَانُوا يَكُولُونَ ﴿ وَلَا يَعْمُونَ اللّهُ مَا وَعَنُولُو وَلِهَا كَانُوا يَكُولُونَ وَلَا اللهُ مَا وَعَنْ وَلَا عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ وَلَا اللّهُ مَا وَعَنْ وَلَا عَلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّ

اور بعض ان میں سے وہ ہے کہ جس نے اللہ سے عہد کیا کہ اگر اللہ جمیں اپنے فضل سے عطافر مائے گا تو البتہ ہم صدقہ دیں گے اور صالحین میں سے ہوں گے پس جب ان کو اللّٰہ متحالیٰ نے اپنے فضل سے عطاکیا تو انہوں نے بخل کیا مال کے ساتھ اور پھر گئے اور منہ پھیرنے والے ہیں پس نفاق الحکے دلوں میں قیامت کے دن تک اثر دے گیا بسبب اسکے کہ انہوں نے اللہ سے کئے ہوئے وعدہ کے خلاف کیا اور بسبب اس کے کہ وہ جموٹ بولتے تھے۔

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں اس وقت انعلبہ کا ایک رشتہ دار بیٹے اہوا تھا، اس نے تعلبہ کے متعلق نازل ہونے والی آیات کوسنا تو اکھ کر تعلبہ کے پاس گیا اور اسے کہا: تیری والدہ ماری جائے! الله تعالی نے تیرے بارے میں فلاں فلاں آیات نازل کی بیں، نغلبہ نے بیسنا تو حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں حاضر ہوا اور صدقہ قبول کرنے کی درخواست کی دخووست کی دخواست کی درخواست ک

تغلبہ بیسنتے ہی اپنے سرمیں خاک ڈالنے لگا حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: تیرے بیکرتوت! میں نے تجھ سے پہلے کہددیا تھا مگرتونے میری بات نہیں مانی تھی۔

جب حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِ صَلَّم فِ صَدَّق لِينے ہے بالكل ا تكاركر ديا تو وہ اپنے ٹھكانے پرلوٹ آئے ، جب حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم وصال فرما گئے تو وہ اپنے صدقات كيكر ابو بكر دَضِى اللَّهُ عَنْه كى خدمت ميں حاضر ہوا مگر انہوں نے بھى لينے ہے ا تكاركر ديا ، پھر حضر ہے مردَضِى اللَّه عَنْه كے دو رِخلافت ميں حاضر ہوا مگر انہوں نے بھى ا تكاركر ديا ، يہاں تك لينے ہے ا تكاركر ديا ، پھر حضر ہے مردَضِى اللَّه عَنْه كے دو رِخلافت ميں حاضر ہوا مگر انہوں نے بھى ا تكاركر ديا ، يہاں تك من جمه كنز الايمان: اوران ميں كوئى وہ ہيں جنہوں نے الله ہے عہد كيا تھا كه اگر ہميں اپنے فضل ہے دے گاتو ہم ضرور جملا آدى ہوجا كيں گے تو جب الله نے انہيں اپنے فضل ہے ديا ہى ميں بخل كرنے گئے اور منہ پھر كر پليٹ گئے تو اس كے پيچھے الله نے ان كے دلوں ميں نفاق ركھ ديا ہى دن تك كه اس ہلیں گے بدله اس كا كہ انہوں نے اللہ سے وعدہ جموٹا كيا اور بدله اس كا كہ جھوٹ يو لئے تھے۔ (ب ۱ مالتو بة نه ۷ تا ۷۷)

K

کہ حضرت عثمان دَضِیَ اللّٰہ عَنُه کے خلیفہ بننے کے بعد تغلبہ کا انتقال ہو گیا۔ ⁽¹⁾

جریر نے لیٹ سے روایت کی ہے کہ ایک شخص حضرت عیسیٰ عَلَیْہِ السَّلام کی صحبت میں آیا اور کہنے لگا: میں آپ کی صحبت میں ہمیشہ آپ کے ساتھ رہوں گا، لہذا حضرت عیسیٰ عَلَیْہِ السَّلام اور وہ آ دمی اکشے روانہ ہوگئے۔ جب ایک دریا کے کنار سے پہنچ تو کھانا کھانے کے لئے بیٹھ گئے، ان کے پاس تین روٹیاں تھیں، جب دوروٹیاں کھا چکے اور ایک روٹی باقی رہ گئی تو حضرت عیسیٰ عَلیْدِ السَّلام دریا پر پانی پینے تشریف لے گئے۔ جب آپ پانی پی کرواپس تشریف لائے تو روٹی موجوز ہیں تھی کہ آپ نے بیٹے تشریف لائے ہو ہو دہیں تھی ، آپ نے بیچ چھا: روٹی کس نے لی ہے؟ وہ آ دمی بولا کہ مجھے معلوم نہیں۔

رادی کہتے ہیں کہ حضرت عیسیٰ عَلَیْہِ السَّلام اسے لے کرآ گے چل پڑے اورآ پ نے ہرنی کود یکھا جودو بچے ساتھ لئے جارہی تھی۔آ پ نے اس کے ایک بچے کو بلایا، جب وہ آیا تو آ پ نے اسے ذی کیا اور گوشت بھون کرخود بھی کھایا اور اس شخص کو بھی کھلایا، پھر بچے سے فر مایا:اللّٰہ کے تھم سے کھڑا ہوجا۔ چنا نچہ ہرنی کا بچہ کھڑا ہوگیا اور جنگل کی طرف چل دیا، تب آ پ نے اس آ دمی سے کہا: میں تجھ سے اُس ذات کے نام پر سوال کرتا ہوں جس نے مجھے یہ مجمزہ دکھلایا، روٹی کس نے لی تھی؟ وہ آ دمی بولا: مجھے معلوم نہیں ہے۔ پھر آ پ ایک جھیل پر پہنچ اور اس شخص کا ہاتھ پکڑا اور دونوں سطح آ ب پر چل پڑے، جب پانی عبور کر لیا تو آ پ نے اس شخص سے بچ چھا: تجھے اس ذات کی قسم! جس نے تجھے یہ مجمزہ دکھیا یا تاوہ روٹی کس نے لئھی؟ اس نے لئھی؟ اس نے لئھی ؟ اس آ دمی نے بھر جواب دیا کہ مجھے معلوم نہیں ہے۔

پھر آپ روانہ ہو گئے اور ایک جنگل میں پہنچے، جب دونوں بیٹھ گئے تو حضرت عیسیٰ عَدَیْهِ السَّلام نے مٹی اور ریت کی ڈھیری بناکر فرمایا کہ الله کے عمم سے سونا ہوجا، چنانچہ وہ سونا بن گئی اور آپ نے اسکی ایک جیسی تین ڈھیریاں بنائیں اور فرمایا: تبائی میری، تبائی میراہے اور اسے وہیں چھوڑ کر آگے روانہ ہوگئے۔

اس شخص کے پاس دوآ دمی آ گئے ،انہوں نے جب جنگل میں ایک آ دمی کواشنے مال ومتاع کےساتھ دیکھا تو ان کی نیت بدل گئی اورانہوں نے ارادہ کیا کہ اسے قل کر کے مال سمیٹ لیں۔اس آ دمی نے جب ان کی نیت بھانپ لی تو

^{1}المعجم الكبير، ١٨/٨ ٢، الحديث٧٨٧٣

خود ہی بول اٹھا کہ بیہ مال ہم نتیوں ہی آپس میں برابر برابر تقسیم کر لیتے ہیں، پھرانہوں نے اپنے میں سے ایک شخص کوشہر کی طرف روانہ کیا تا کہ وہ کھاناخر بدلائے۔ جس شخص کوانہوں نے شہر کی طرف کھانالانے کے لئے بھیجاتھا، اس کے دل میں خیال آیا کہ میں اس مال میں ان کو حصہ دار کیوں بننے دوں؟ میں کھانے میں زہر ملائے ویتا ہوں تا کہ وہ دونوں ہی ہلاک ہوجائیں اور مال اکیلا میں ہی لے لوں، چنانچہ اس نے ایسا ہی کیا۔

راوی کہتے ہیں کہ ادھر جودوآ دمی جنگل میں بیٹھے ہوئے تھے، انہوں نے ارادہ کرلیا کہ ہم اسے ایک تہائی کیوں دیں؟ جونہی وہ آئے ہم اسے قل کریں اور دولت ہم دونوں آپ س میں تقسیم کرلیں، چنانچے جب وہ آ دمی کھانا لے کرآیا تو انہوں نے اسے قل کردیا اور بعد میں وہ کھانا کھایا جسے کھاتے ہی وہ دونوں بھی مرگئے اور سونے کی ڈھیریاں اسی طرح بڑی رہیں اور جنگل میں تین لاشیں رہ گئیں۔

حضرت عیسیٰ عَلَیْهِ السَّلَام کا پھر وہاں سے گزر ہوااوران کی بیرحالت دیکھ کراپینے ساتھیوں سے فر مایا: دیکھویہ دنیا ہے،اس سے بچتے رہنا۔

ذوالقرنین ایسے لوگوں کے پاس پنچے جن کے پاس دنیاوی مال ومتاع بالکل نہیں تھا، انہوں نے اپنی قبریں تیار کرر کھی تھیں، جب ضبح ہوتی تو وہ قبروں کی طرف آتے ، ان کی یاد تازہ کرتے ، انہیں صاف کرتے اور ان کے قریب نمازیں پڑھتے اور جانوروں کی طرح کچھ گھاس پات کھالیتے اور انہوں نے گزربسر صرف زمین سے اُگنے والی سبزیوں وغیرہ پر محدود کرر کھی تھی ۔ ذوالقرنین نے ان کے سردار کوایک آدمی بھیج کر بلایالیکن سردار نے کہا: ذوالقرنین کو جواب دیا کہ مجھے تم سے کوئی کا منہیں ہے، اگر تہہیں کوئی کا م ہے تو میرے پاس آجاؤ۔ ذوالقرنین نے یہ جواب شکر کہا کہ واقعی اس نے بچ کہا ہے۔ چنا نچہ ذوالقرنین اس کے پاس آیا اور اس نے کہا: میں نے تہاری طرف آدمی بھیج کر تہمیں بلایا گرتم نے انکار کردیا لہٰذا میں خود آیا ہوں۔ سردار نے کہا: اگر مجھے تم سے کوئی کا م ہوتا تو ضرور آتا۔ ذوالقرنین نے بلایا گرتم نے انکار کردیا لہٰذا میں خود آیا ہوں۔ سردار نے کہا: اگر مجھے تم سے کوئی کام ہوتا تو ضرور آتا۔ ذوالقرنین نے کہا: میں جات کہا: میں نہیں دیکھا، سردار نے کہا: آگر ہے تھی کہا: سرحالت میں نہیں دیکھا، سردار نے کہا: آپ س حالت کی بات کرر ہے ہیں؟ ذوالقرنین نے کہا: یہی کہ تہارے یاس دنیاوی مال ومتاع اور مال ومنال کے تھی کہیں ہے جس کی بات کرر ہے ہیں؟ ذوالقرنین نے کہا: یہی کہ تہارے یاس دنیاوی مال ومتاع اور مال ومنال کے تھی کہیں ہے جس

(277)

سےتم بہر ہاندوز ہوسکو۔ سردار نے کہا: ہم سونا چاندی کا جمع کرنا بہت بُر اسجھتے ہیں کیونکہ جس شخص کو بیر چیزیں ملتی ہیں وہ ان میں مگن ہوجا تا ہے اور اس چیز کو جوان سے کہیں بہتر ہے، بھول جا تا ہے۔ ذوالقرنین نے کہا: تم نے قبریں کیوں تیار کرر کھی ہیں؟ ہرضبج ان کی زیارت کرتے ہو، انہیں صاف کرتے ہواور ان کے قریب کھڑے ہوکر نماز پڑھتے ہو۔ سردار نے کہا: بیاس لئے کہ جب ہم قبروں کو دیکھیں گے اور دنیا کی آرز وکریں گے تو بیقبریں ہمیں دنیا ہے بے نیاز کردیں گ تو بیقبریں ہمیں دنیا ہے بے نیاز کردیں گی اور ہمیں حرص وہوا سے روک دیں گی۔ ذوالقرنین نے پوچھا: میں نے دیکھا ہے کہ زمین کے سبزے کے علاوہ تمہاری کوئی غذا نہیں ہے، تم جانور کیول نہیں رکھتے تا کہ تم ان کا دودھ دو ہو، ان پر سواری کرواور ان سے بہر ہاندوز ہوسکو، سردار نے کہا: ہم اس چیز کو اچھا نہیں سجھتے کہ ہم اپنے پیٹوں کوان کی قبریں بنا کمیں اور ہم زمین کے سبز ہے سے اف فی خور سے مانی کی گزراوقات کے لئے کافی ہے، جب کھانا حلق سے اتر جاتا ہے (چا ہے وہ کیسا ہی غذا حاصل کر لیتے ہیں اور بیانسان کی گزراوقات کے لئے کافی ہے، جب کھانا حلق سے اتر جاتا ہے (چا ہے وہ کیسا ہی فیراس کا کوئی مز وہا قی نہیں رہتا۔

پھراس قائد (سردار) نے ذوالقرنین کے پیچھے ہاتھ بڑھا کر کے ایک کھو بڑی اٹھائی اور کہا: ذوالقرنین! جانے ہو یہ کون ہے؟ قائد نے کہا: ید دنیا کے بادشاہوں میں سے ایک بادشاہ تھا،اللہ تعالی نے اسے دنیا والقرنین نے کہا: کی اس کے بادشاہ تعالی نے اس کی سے تعالی نے اس کی سے دنیا والوں پرشاہی عطافر مائی تھی کیکن اس نے ظلم وسم کیا اور سرکش بن گیا۔ جب اللہ تعالی نے اس کی سے حالت دیکھی تو اسے موت دے دی اور بیا کی گرے پڑے پھر کی مانند بے وقعت ہوگیا،اللہ تعالی نے اس کے اعمال شار کر لئے ہیں تا کہ اسے آخرت میں سزادے۔

پھراس نے ایک اور کھو پڑی اٹھائی جو ہوسیدہ تھی اور کہا: ذوالقر نین جانے ہویہ کون ہے؟ ذوالقر نین نے کہا: فہراس نے کہا: یہائی جو ہوسیدہ تھی اور کہا: ذوالقر نین جانے ہویہ کون ہے؟ قائد نے کہا: یہائی بادشاہ ہے جسے پہلے بادشاہ کے بعد حکومت ملی ، یہا ہے پیشر و بادشاہ کا مخلوق پڑھم وستم اور زیاد تیاں دیکھ چکا تھالہٰذااس نے تواضع کی ،اللّه کا خوف کیا اور ملک میں عدل وانصاف کر نیکا تھکم دیا ، پھر یہ بھی مرکز ایسا ہو گیا جسیاتم و مکھ رہے ہواور اللّه تعالیٰ نے اس کا شار فر مالیا ہے ، یہاں تک کہ اسے آخرت میں ان کا بدلہ دے گا۔ پھر وہ ذوالقر نین کی کھو پڑی کی طرف متوجہ ہوا اور کہنے لگا: یہ بھی انہی کی طرح ہے ، ذوالقر نین ! خیال رکھنا کہ تم کیسے اعمال کر رہے ہو؟ ذوالقر نین نے اس کی باتیں سن کر کہا: کیاتم میری دوستی میں رہنا چا ہے ہو؟ میں تہمیں اپنا بھائی اور وزیر یا جو پچھ اللّه تعالیٰ نے جھے مال ومنال دیا ہے ، اس میں اپنا شریک بنالوں گا۔ سردار نے کہا: میں اور آپ صلح اور وزیر یا جو پچھ اللّه تعالیٰ نے جھے مال ومنال دیا ہے ، اس میں اپنا شریک بنالوں گا۔ سردار نے کہا: میں اور آپ صلح

نہیں کر سکتے اور نہ ہی ہم اکٹھے رہ سکتے ہیں ، ذوالقر نین نے کہا: وہ کیوں؟ سردار نے کہا: اس لئے کہلوگ تمہارے دشمن اور میرے دوست ہیں ، ذوالقر نین نے پوچھا: وہ کیسے؟ سردار نے کہا: وہ تم سے تبہارا ملک ، مال اور دنیا کی وجہ سے دشمنی رکھتے ہیں اور چونکہ میں نے ان چیز وں کوچھوڑ دیا ہے لہذا کوئی ایک بھی میرا دشمن نہیں ہے اور اس لئے مجھے کسی چیز کی حاجت نہیں ہے اور نہ میرے پاس کسی چیز کی کمی ہے۔ راوی کہتا ہے کہ ذوالقر نین یہ باتیں سن کر انتہائی متاثر ہوا اور حیران واپس لوٹ آیا کسی شاعر نے کیا ہی احیصا کہا ہے: _

يامن تمتع بالدنيا وزينتها ولا تنام عن اللذات عيناه شغلت نفسك فيما ليس تدركه تقول لله ماذا حين تلقاه

﴿ 1 ﴾.....ا ہے وہ مخض! جود نیااوراس کی زینت سے نفع اندوز ہوتا ہےاورد نیاوی لذتوں سے اس کی آ تکھیں نہیں سوتیں۔

﴿2﴾خودكونامكن چيزوں كے حصول ميں مشغول كردياہے، جب توالله كى بارگاه ميں حاضر ہوگا تو كيا جواب دےگا؟

دوسرےشاعر کا قول ہے:۔

عتبت على الدنيا لرفعة جاهل وتاخيرذى فضل فقالت خذ العذر ا بنو الجهل ابنائى لهذا رفعتهم واهل التقوى ابناء ضرتى الاخرى

﴿1﴾میں نے دنیا کے جاہلوں کو بہت مرتبہ عطا کرنے اور اہل فضل سے کنارہ کشی کرنے پر ملامت کی تواس نے مجھ سے کہا کہ میری مجبوری سنئے ۔ مجبوری سنئے ۔

﴿2﴾ جاہل میرے بیٹے ہیں لہٰذامیں انہیں سربلندی دیتی ہوں اور متقی اہل فضل میری سوکن آخرت کے فرزند ہیں (لہٰذامیں ان سے گریز کرتی ہوں)۔

حضرت محمود با ہلی کا قول ہے:۔

الا انما الدنيا على المرء فتنة على كل حال اقبلت او تولت فان اقبلت فاستقبل الشكر دائما ومهما تولت فاصطبر وتثبت

﴿1﴾..... میشک دنیا آئے یاجائے انسان کے لئے ہرحال میں فتنہ وآ ز ماکش ہے۔

﴿2﴾ جب دنیا آتی ہے تو دائی شکر ساتھ لاتی ہے (توشکراداکر) اور جب جائے تو صبر اور ثابت قدمی کا مظاہرہ کر۔

اب 60

فضیلتِ صدقه 🏅

نبی اکرم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا ارشادہے کہ جُو تخص حلال کی کمائی سے ایک تھجور کے برابر صدقہ کرتا ہے (اور اللَّه تعالیٰ اسے اپنی برکت سے قبول فر مالیتا ہے پھراس کی صاحب صدقہ کے لئے مدال کی کمائی ہی کاصدقہ قبول فر مالیتا ہے پھراس کی صاحب صدقہ کے لئے پرورش کرتا ہے جیسے تم اپنے بچھیروں کی پرورش کرتے ہو یہاں تک کہ وہ صدقہ پہاڑے برابر ہوجا تا ہے۔ (1)

دوسری حدیث میں ہے (جیسے تم میں سے کوئی ایک اپنے پچھیرے کی پرورش کرتا ہے) یہاں تک کہ ایک لقمہ احدیبہاڑ کے برابر ہوجا تا ہے۔

اس حدیث پاک کی تصدیق فرمانِ الہی سے ہوتی ہے:

اَكُمْ يَعْكَمُو اَنَّ اللَّهُ هُو يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِمْ كيانهول نَهْيِس جانا كه الله وہى ہے جواپے بندول سے توبہ

وَ يَأْخُنُ الصَّلَ الْتِ⁽²⁾

اورارشادفر مایا:

الله تعالی سود کومٹا تا ہے اور صدقات کو بڑھا تا ہے۔

يَنْحَقُ اللهُ الرِّبُواوَيُرْ فِي الصَّدَاقِي (3)

<u> فضائلِ صدقات: }</u>

صدقہ مال کو کم نہیں کرتا اور الله تعالیٰ اس بخشش کے بدلے انسان کی عزت ووقا رکو بڑھا تا ہے اور جو شخص الله کی رضا جو کی کے لئے تواضع کرتا ہے ،الله تعالیٰ اسے بلندمر تبہ عطا فرما تا ہے۔

- 1بخارى، كتاب الزكاة ، باب الصدقة من كسب طيب، ٤٧٦/١، الحديث ١٤١٠
- 2ترجمه كنز الايمان: كيانهيس خبرنهيس كه الله بى اپنج بندول كى توبة بول كرتا اورصدقے خوداپنے وست قدرت ميں ليتا ہے۔ (ب ۱ ۱ ، التوبة: ٤ . ١).....ترمذى، كتاب الزكاة، باب ماجاء في فضل الصدقة، ٢ / ٤ ٤ / ، الحديث ٢٦٢
 - الله بلاك كرتا بسود كواور برها تاب خيرات كو (پ٣٠ البقرة: ٢٧٦)
 - 4 الخ، باب استحباب العفو والتواضع، ص ١٣٩٧، الحديث ٦٩ ـ (٢٥٨٨)

X

طبرانی کی روایت ہے کہ صدقہ مال کو کم نہیں کرتا اور نہ ہی بندہ صدقہ دینے کے لئے اپناہاتھ بڑھا تا ہے مگر وہ اللہ تعالیٰ کے ہاتھ میں جانے سے پہلے قبول کر لیتا ہے اور کوئی بندہ بے پروائی کے باتھ میں جانے سے پہلے قبول کر لیتا ہے اور کوئی بندہ بے پروائی کے باوجود سوال کا درواز نہیں کھولتا مگر اللہ تعالیٰ اس پرفقر کومسلط کر دیتا ہے، بندہ کہتا ہے: میرا مال ہے میرا مال ہے مگر اس کے مال کے تین جھے ہیں، جو کھایا وہ فنا ہو گیا جو پہنا وہ پرانا ہو گیا جورا و خدا میں دیا وہ حاصل کر لیا اور جواس کے سوا ہے وہ اسے لوگوں کے لئے جھوڑ جانے والا ہے۔ (1)

حدیث شریف میں ہے بتم میں سے کوئی ایک ایسانہیں ہے گر اللہ تعالی بغیر کی ترجمان کے اس سے گفتگوفر مائے گا، آ دمی اپنی دائیں طرف دبی کچھ دکھائی در گیا جو اس نے آگے بھیجا ہے اور بائیں طرف دبی کچھ دکھائی در گا جو اس نے آگے بھیجا ہے اور اپنے سامنے دیکھے گا تو اسے مقابل میں آگ نظر آئے گی پستم اس آگ سے بچو اگر چہ کھور کا ایک ٹکڑا ہی راوِخدا میں دے کر پچسکو۔ (2)

مدیث شریف میں ہے کہ اپنے چہروں کو آگ سے بچاؤ اگر چہ مجبور کے ایک ٹکڑے ہی سے کیوں نہ ہو۔ (3)
حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم فَر مَاتِ ہِیں کہ صدقہ گنا ہوں کواس طرح مٹادیتا ہے جیسے پانی آگ کو بجھادیتا ہے۔ (4)
آپ نے فر مایا: اے کَعْب بن عُجْرُ ہا! جنت میں وہ خون اور گوشت نہیں جائے گا جو حرام ذریعہ سے حاصل کر دہ
مال سے بچلا بچولا ہو، اے کعب بن عُجر ہ! لوگ جانے والے ہیں، بعض جانیوالے اپنی نشس کور ہائی دینے والے ہیں
اور بعض اسے ہلاک کرنے والے ہیں۔ اے کعب بن عُجر ہ! نماز نزو کی ہے، روزہ ڈھال ہے، صدقہ گنا ہوں کواس طرح دور کر دیتا ہے جیسے چکنے بچھر سے کائی اتر جاتی ہے۔ (5)
ایک روایت میں ہے کہ جیسے یانی آگ کو بجھادیتا ہے۔ (6)

●المعجم الكبير، ١١/٠٣٦، الحديث ١٥٠١٠ و مسلم ، كتاب الزهدوالرقائق، ص ١٥٨٢، الحديث ٤ _ (٢٩٥٩)

^{2}بخارى، كتاب التوحيد، باب كلام الرب...الخ ، ٤ /٥٧٨، الحديث ٢ ١ ٥٧

 ^{3 ----} ترمذی، کتاب تفسیر القرآن، باب ومن سورة فاتحة الکتاب، ٤٢/٤ ، الحدیث ٢٩٦٣ .

^{4} ترمذى، كتاب السفر، باب ماذكر في فضل الصلاة، ١١٨/٢، الحديث ٢١٤

^{5}صحيح ابن حبان ، كتاب الحظر و الاباحة ، ذكر الاخبار بايجاب النار...الخ ، ٥/٣٦/٥ ، الحزء السابع، الحديث ١ ٤ ٥ ٥

^{6}ترمذي، كتاب السفر، باب ما ذكر في فضل الصلاة ، ١١٨/٢، الحديث ٢١٤

7

فرمایا: صدقہ الله تعالی کے غضب کو ٹھنڈا کر دیتا ہے اور موت کی زخمتوں کو دور کر دیتا ہے۔ (1)

ایک روایت میں ہے کہ الله تعالی صدقہ کے بدلے نا گوار موت کے ستر درواز ہے بند کر دیتا ہے۔ (2)

حدیث شریف میں ہے کہ لوگوں کے فیصلے ہونے تک لوگ اپنے صدقات کے سابیمیں رہیں گے۔ (3)

دوسری روایت میں ہے کہ کوئی آ دمی صدقہ کی چیز نہیں نکالتا مگرا سے ستر شیطانوں کے جبڑوں سے جدا کرتا ہے۔ (4)

حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے دریافت کیا گیا کہ کونسا صدقہ افضل ہے؟ تو آپ نے فرمایا: کم حیثیت شخص کا

کوشش سے خرج کرنا اوراینے اہل وعیال سے اس کی ابتداء کرنا۔ (5)

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: ایک درہم ایک لا کھ درہم سے سبقت لے گیا، ایک شخص نے عرض کیا: وہ کیسے؟
آپ نے فرمایا: ایک شخص کا بہت مال و دولت تھا اور اس نے اپنے پہلو سے ایک لا کھ درہم نکال کرصد قد کر دیا اور دوسر فے شخص کے پاس صرف دودرہم تھے، اس نے ان میں سے ایک راہِ خدامیں دے دیا۔

وسر فی خص کے پاس صرف دودرہم تھے، اس نے ان میں سے ایک راہِ خدامیں دے دیا۔

فرید نے میں میں کا کی زیاد تا میں اللہ کے اللہ میں اللہ کے اللہ میں میں کی کردی دورہم سے ایک راہے دورہم سے میں کا میں دورہم سے میں کی میں میں کا میں میں کی میں کی میں میں کی میں کی میں کی میں میں کی میں کی کردی ہوئے کی میں کی میں کی میں کی میں کی میں کی میں کے میں کی میں کی میں کی کردی ہوئے کی کردی ہوئے کے میں کی میں کی میں کی کردی ہوئے کے میں کردی ہوئے کی کردی ہوئے کیا تا کہ کردی ہوئے کی کردی ہوئے کردی ہوئے کردی ہوئے کردی ہوئے کی کردی ہوئے کردی ہوئے کردی ہوئے کی کردی ہوئے کردی ہوئے کی کردی ہوئے کردی ہوئے کردی ہوئے کی کردی ہوئے کرد

فرمانِ نبوی ہے کہ سائل کو خالی ہاتھ نہ لوٹا وَاگر چہاہے گائے بکری کاچر اہوا سُم ہی کیوں نہ دے دو۔ (7)

حدیث شریف میں ہے کہ سات شخص ایسے ہیں جورجمتِ اللی کے سایہ میں ہوں گے جس دن رحمتِ اللی کے سوا

کوئی سایہ نہ ہوگا ، ان میں سے ایک وہ ہے جس نے انتہائی راز داری سے راہِ خدا میں خرچ کیا یہاں تک کہ اس کے

بائیں ہاتھ کو پیتہ نہ چلا کہ دائیں ہاتھ نے کیا خرچ کیا ہے۔ (8)

^{1}ترمذي، كتاب الزكاة، باب ماجاء في فضل الصدقة، ٢/ ٢٤ ١، الحديث ٢٦ ٢

الأموال لابن زنجويه ، ٢٦٢/٢، الحديث . ١٣١ و كنز العمال، كتاب الزكاة من قسم الأفعال، باب في السخاء و
 الصدقة ، ٢٤٤/٣، الجزء السادس، الحديث ٦٩٧٥ و كشف الخفاء، ٢١/٢، الحديث ١٩٩١

٣٢٩٩ : ١٣٢٠ الجزء الخامس، الحديث ٩٩٣٩ : ١٣٢٠ الجزء الخامس، الحديث ٩٩٣٩ .

^{4}مسند احمد، حديث بريدة الاسلمي، ٩/٩، الحديث ٢٣٠٢٣

[•] ۲ ٤٤٤ عابن خزيمة ، كتاب الزكاة، حماع ابواب صدقة التطوع ، باب ذكر الدليل...الخ ، ٤ / ٩٩ مالحديث ٤٤٤ ع.

^{6} صحيح ابن حبان، كتاب الزكاة، باب صدقة التطوع ٤٠/٤، الجزء الخامس، الحديث ٣٣٣٦

^{→} صحيح ابن خزيمة، كتاب الزكاة، جماع ابواب صدقة التطوع، باب الامربا عطاء...الخ،٤/١١١، الحديث ٢٤٧٢

^{8}بخارى، كتاب الزكاة، باب الصدقة باليمين، ١/٠٨٠، الحديث ١٤٢٣

نیکی کے راستے یہ ہیں، بری جگہوں سے بچو، پوشیدہ صدقہ الله کے غضب کوٹھنڈ اکر دیتا ہے اور صله رحمی زندگی بڑھاتی

طبرانی کی روایت میں ہے کہ نیک کام، بری جگہوں سے بچنااور خفیہ صدقہ الله کے غضب کوٹھنڈا کردیتا ہے اور صلہ رحی زندگی بڑھاتی ہے اور ہراچھا کام صدقہ ہے، دنیا میں اچھے کام کرنے والے آخرت میں اچھے کام کرنیوالوں کے ساتھ ہوں گے اور جنت میں سب سے پہلے بھلائی کر نیوالے داخل ہوں گے۔ (²⁾

طبرانی اوراحد کی دوسری روایت میں ہے: رسول الله صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم سے بوجِها گيا كه صدقه كيا ہے؟ تو آ ب نے فر مایا: دونا دو گنا اور الله کے ہاں اس سے بھی زیادہ ہے، پھر آپ نے بیرآیت پڑھی:

كَنْ ذَا الَّـنِي كُنْ يُقْرِضُ اللهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفَهُ لَنَّ كُونُ حَصْ ہے جواللّٰه کواچھا قرض دے پس وہ دو گنا كردے اس

کواس کے واسطے بہت دو گنا۔

أَضْعَافًا كَثِيْرَةً (3)

نيزيو چها گيا: يادسول الله! كونسا صدقه افضل ہے؟ آپ نے فرمایا: فقير كو پوشيده دينااوركم مال والے كا كوشش سے خرج كرنا، پهرآب نے بيآيت يرهي:

اگرتم صدقات کو ظاہر کروتو اچھا ہے اور اگرتم انہیں چھیا ؤ اور

إِنْ تُتُدُو الصَّدَاتِ فَنِعِسَّاهِي * وَإِنْ تُخُفُّهُ هَا

فقیر کودوتو تمہارے لئے بہت احھاہے۔

وَتُؤْتُو هَا الْفُقَى آءَ فَهُو خَيْرٌ لَّكُمْ اللَّهِ

جس نے کسی مسلمان کو کیڑا پہنایا تو جب تک اس کے جسم براس کیڑ ہے کا ایک دھا گہ بھی موجودر ہے گااللّٰہ تعالیٰ صدقہ دینے والے انسان کے عیوب کوڈ ھانیتارہے گا۔⁽⁵⁾

- 1المعجم الكبير، ١/٨، ٢٦١/ الحديث ١٠٨٤
- 2المعجم الاوسط ، ١/٤ ، ١٦ ، الحديث ٢٠٨٦
- التوجمة كنز الايمان: بيكوئي جوالله كوقرض حسن و يوالله اسك لئي بهت گنابره هاد ب (ب۲، البقرة: ۲٤).....المعجم الكبير، ٨/٢٢٦، الحديث ١٩٨٨
 - 4تر جمهٔ کنز الایمان: گرخیرات علانیدوتوه کیابی احچهی بات ہےاورا گرچھیا کرفقیروں کودور تمہارے لئے سب سے بہتر ہے۔ (ب٣، البقرة: ٢٧١).....المعجم الكبير ، ٢٢٦/٨، الحديث ١٩٨١
 - 5المستدرك للحاكم ، كتاب اللباس ، باب من كسا مسلما ... الخ ، ٥ / ٢٧٥ ، الحديث ٩٩ ٧٤ ٧

دوسری روایت میں ہے کہ جس مسلمان نے کسی بَر جُنہ مسلمان کو کیڑ ایپہنایا،الله تعالی اسے جنت کالباس ببہنائے گا،جس مسلمان نے کسی بجو کے مسلمان کو کھا نا کھلا یاالله تعالی اسے جنت کے پھل کھلائے گا اور جس مسلمان نے کسی بیا سے مسلمان کو سیراب کیاالله تعالی اسے جنت میں مہر شدہ شراب طہور پلائے گا۔ مسکین کوصدقہ ، خیرات ہے اور رشتہ دار پرصدقہ کرنے میں دوہرا تواب ہے،صدقہ کا اور صلد تمی کا تواب۔ (1)

پوچھا گیا: کونسا صدقہ افضل ہے؟ آپ نے فر مایا: ہراس رشتہ دار کو دینا جو تیرے لئے اپنے دل میں بغض و عداوت رکھتا ہے۔ ⁽²⁾

آ پ نے فرمایا: جس نے کسی شخص کو دودھ پینے کے لئے بکری وغیرہ دی تا کہ وہ اس کا دودھ پی کراسے واپس کردے، یا قرض دیایا سفر کا ساتھی دیا،اسے غلام آزاد کرنے کے برابر ثواب ماتا ہے، (3) مزید فرمایا کہ ہر قرض صدقہ ہے۔ (4)

ایک روایت میں ہے کہ فر مایا: میں نے معراج کی رات جنت کے درواز ہر پر کھادیکھا کہ صدقہ کا دس گنااور قرض کا اٹھارہ گنا تواب ہے۔⁽⁵⁾

فرمایا: جوکسی تنگدست کی مشکل آسان کردیتا ہے،الله تعالی دنیا اور آخرت میں اس پر آسانی کردیتا ہے۔ (6)

پوچھا گیا: یادسول الله! کونسا اسلام بہتر ہے؟ آپ نے فرمایا: کھانا کھلا نا اور ہروا قف اور اجنبی پرتمہا راسلام کہنا!
سائل نے عرض کی کہ مجھے ہر چیز کی حقیقت بتلایئے! آپ نے فرمایا کہ الله تعالی نے ہر چیز کو پانی سے پیدا کیا ہے، پھر
میں نے کہا: مجھے ایسے عمل کے متعلق بتا ئیے جس کے سبب میں جنت میں جاؤں؟ آپ نے فرمایا: کھانا کھلا، سلام کیا کر،

- الحديث ١٩٨٦ و ترمذي، كتاب الزكاة، باب في فضل سقى الماء ، ١٨٠/٢ ، الحديث ١٩٨٢ و ترمذي، كتاب الزكاة، باب ماجاء في
 الصدقة على ذي القرابة ، ٢/٢٢ ، الحديث ٦٥٨
 - 2المعجم الكبير، ٢٠٢/٣ ، الحديث ٢١٢٦
 - 3ترمذي، كتاب البر والصلة، باب ماجاء في المنحة، ٣٨٥/٣، الحديث ١٩٦٤
 - 4 شعب الايمان، باب الثاني والعشرين...الخ ، فصل في القرض، ٣٨٤/٣ ، الحديث٣٥٦٣
 - الحديث ٦٦ ٥٩٣٠ الحديث ١٦٥٠٠ الحديث ١٠٠٠ فصل في القرض ٣/٥٨٣ الحديث ٣٥٦٦
 - 6مسلم، كتاب الذكر...الخ، باب فضل الاجتماع على تلاوة...الخ، ص ٤٤٧، الحديث ٣٨ ـ (٢٦٩٩)

صلەرتى كراوررات كوجب لوگ سور ہے ہول ، نماز پڑھ ، توجنت ميں سلامتى كے ساتھ داخل ہوگا۔ (1) فرمانِ نبوى ہے كہ الله كى عبادت كرو، مسكينوں كوكھلا وُاور سلام كرو، بسلامت جنت ميں جاؤگ۔ (2) فرمانِ نبوى ہے كہ رحمت كے نزول كے اسباب ميں سے مسلمان مسكين كوكھا نا كھلا نا ہے جس نے اپنے مسلمان

بھائی کو کھائے اور پینے سے سیراب کیا،اللہ تعالی اس کے اور دوزخ کے درمیان ستر خندقوں کا فاصلہ کر دیتا ہے جن میں سے ہرایک خندق یانچ سوسال کے سفر کی مسافت پر ہے۔⁽³⁾

فرمانِ نبوی ہے: الله تعالی قیامت کے دن ارشاد فرمائے گا کہ اے انسان! میں بھارہ واتھا مگر تونے عیادت نہیں کی تھی۔ انسان کے گا: میں تیری کیسے عیادت کرتا؟ تُو تورب العالمین ہے۔ رب فرمائیگا: تجھے معلوم نہیں میرا فلال بندہ بھارہے مگر تواس کی عیادت کرتا تو جھے اس کے قریب یا تا۔ اے انسان! میں نے تجھے سے کھانا کھلانے کے لئے کہا تھا مگر تونے جھے کھانا نہیں دیا تھا۔ انسان کہے گا: اے الله! میں تجھے کھانا کھلاتا؟ تُو تورب العالمین ہے۔ رب فرمائے گا: تجھے علم نہیں تھا کہ اگر تواسے کھانا کھلاتا تواسے میرے بہاں عاصل کرتا، اے انسان! میں نے تجھ سے پانی طلب کیا تھا مگر تونے جھے سیراب نہیں کیا تھا۔ انسان کہے گا کہ میں تجھے سے بیانی طلب کیا تھا گر تونے بیاں اس کا جریا تا۔ (4)

اسے یانی نہیں پلایا تھا، کیا تجھے معلوم نہیں تھا کہ اگر اسے یانی پلاتا تو میرے یہاں اس کا اجریا تا۔ (4)

[•] الحديث ٢ او صحيح ابن حبان ، كتاب الطعام الطعام من الاسلام، ١٦/١ ، الحديث ٢ او صحيح ابن حبان ، كتاب الصلاة، باب النوافل، فصل في قيام الليل ، ١١٥/٣ ، الجزء الرابع ، الحديث ٢٥٥٠

^{2}ترمذى، كتاب الاطعمة، باب ماجاء في فضل اطعام الطعام، ٣٣٨/٣، الحديث ١٨٦٢

 ^{3} شعب الايمان، باب الثاني والعشرين... الخ ، فصل في اطعام... الخ ، ۲۱۷/۳ ، الحديث ٣٣٦٤ و ص ٢١٨ .
 الحديث ٣٣٦٨

^{4}مسلم، كتاب البر...الخ، باب فضل عيادة المريض، ص ١٣٨٩، الحديث ٤٣ ـ (٢٥٦٩)

(باب 61)

مسلمان کی حاجت برآری 🏷

فرمانِ الهی ہے:

وَتَعَاوَنُواعَلَى الْبِرِوَ التَّقُوٰى (1)

نیکی اور پر ہیز گاری میں ایک دوسر ہے کی معاونت کرو۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فرمايا كه جَوْحُص سى بھائى كى امداداور فائدے كے لئے قدم اٹھا تا ہے،اسےراو خداميں جہادكرنے والوں جبيبا ثواب ملتا ہے۔ (2)

فرمانِ نبوی ہے کہ الله تعالی نے ایسی مخلوق کو پیدا فرمایا ہے جن کا کام لوگوں کی ضرور توں کو بورا کرنا ہے اور الله تعالی نے اپنی ذات کی قشم کھائی ہے کہ انہیں عذاب نہیں کرے گا، جب قیامت کا دن ہوگا ان کے لئے نور کے منبر رکھے جائیں گے وہ الله تعالی ہے گفتگو کررہے ہوں گے حالانکہ لوگ ابھی حساب میں ہوں گے۔(3)

فرمانِ نبوی ہے کہ جوکسی مسلمان بھائی کی حاجت روائی کے لئے کوشش کرتا ہے جا ہے اس کی حاجت بوری ہویا نہ ہو،اللّٰہ تعالیٰ کوشش کر نبوالے کے اسکے بچھلے سب گنا ہوں کو بخش دیتا ہے اوراس کے لئے دوبراً تیں لکھ دی جاتی ہیں جہنم سے رہائی اور منافقت سے برائے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ جو شخص کسی مسلمان بھائی کی حاجت روائی کرتا ہے، میں اس کے میزان کے قریب کھڑا ہوں گا،

- المائده: ۲) المائده: ۱ورنیکی اور پر بیزگاری پرایک دوسرے کی مدوکرو (ب۲، المائده: ۲)
- 2 كنز العمال، كتاب الزكاة ، الباب الثاني ... الخ ، الفصل الثالث ... الخ ، ٢ / ٠ ٩ ١ ، الجزء السادس ، الحديث ٢٦٤٦٢
- الحديث ١ ١٨٨ و كنز العمال، كتاب قضاء الحوائج ،٤ / ١ ٧٥ ، الحديث ٤٩ ما خودًا و الفردوس الاخبار، ٥ / ٤٧٦ ، الحديث ١ ٨٨١ و كنز العمال، كتاب الزكاة من قسم الأفعال، باب في السخاء والصدقة ، ٣ / ٦٦ ١ ، الجزء السادس، الحديث ١ ٦١٨٨ و تاريخ مدينه دمشق ، ٢ / ٤٣ و المستطرف، الباب الثاني والعشرون في اصطناع المعروف... الخ ، ١ / ٩٩ / ١
- ١٤٣/٢، الحديث ٥٠ ٢و تنزيه الشريعة للكناني، ١٩/٢ ١٠ و ١٠ ١٠ الحديث ٥٠ ٦و تنزيه الشريعة للكناني، ١٤٣/٢ ١٠ الحديث ٥٠ ٥ و البحر المديد لابن عجيبة ١٦/١٨ و المستطرف، الباب الثاني والعشرون في اصطناع المعروف...
 الخ، ١٩٩١

اگراس کی نیکیاں زیادہ ہو کیں توضیح ورنہ میں اس کی شفاعت کروں گا۔ (1) پیروایت حلیہ میں ابوقیم نے قال کی ہے۔
حضرتِ اَنس دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے:حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّٰم نے فرمایا: جوشخص کسی مسلمان بھائی کی حاجت
روائی کے لئے چاتا ہے اللّٰہ تعالیٰ ہرقدم کے بدلے اس کے نامہ اُعمال میں ستر نیکیاں کھودیتا ہے اور ستر گناہ معاف کر
دیئے جاتے ہیں، پس اگروہ حاجت اس کے ہاتھوں پوری ہوجائے تو وہ گناہوں سے ایسے پاک ہوجاتا ہے جیسے ماں
کے پیٹ سے آیا تھا اور اگروہ اسی درمیان مرجائے تو بلاحساب جنت میں جائے گا۔ (2)

حضرت ابن عباس رَضِى اللهُ عَنهُمَا ہے مروی ہے کہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِ فَر مایا: جُو خُص اپنے مسلمان بھائی کی حاجت روائی کے لئے اس کے ساتھ جاتا ہے اور اس کی حاجت پوری کردیتا ہے توالله تعالی اس کے اور جہنم کے درمیان سات خند قیس بنادیتا ہے اور دوخند قول کا درمیانی فاصلہ زمین وآسان کے درمیانی فاصلے کے برابر ہوتا ہے۔ (3)

حضرت ابن عمر ورَضِیَ اللهُ عَنهُمَا سے مروی ہے:حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ الله تعالی کے پچھالیہ انعامات ہیں جوان لوگوں کے لئے مخصوص ہیں جولوگوں کی حاجت روائی کرتے رہتے ہیں اور جب وہ بیطریقہ چپھوڑ دیتے ہیں توالله تعالی وہ انعامات دوسروں کی طرف نتقل کر دیتا ہے۔ (4)

حضرت الو ہرریہ ورَضِی اللهٔ عَنه سے مروی ہے: حضور صَلّی اللهٔ عَلیْهِ وَسَلّم نے فرمایا: جانتے ہو کہ شیرا پی وَ هاڑ میں کیا کہ الله اوراس کے رسول بہتر جانتے ہیں۔ آپ نے فرمایا: وہ کہتا ہے کہ اے الله! مجھے کسی بھلائی کرنے والے پر مسلط نہ کرنا۔ (5)

حضرت على بن ابى طالب رَضِ الله عنه بيحديث مرفوع بيان كرتے تھے كه جبتم كسى ضرورت يا كام كا اراده كروتوا ہے جمعرات كے دن شروع كرواور جب اپنے گھر سے نكلوتو" سودة آل عمدان "كا آخرى حصه،" آية الكرسى"، "سودة القدد" اور" سودة فاتحه " براهو كيونكه ان ميں دنيا اور آخرت كى بہت بى حاجتيں ہيں۔ (6)

^{1}حلية الاولياء ، ٩/٦، الحديث ٩٠٣٨

^{2}الترغيب والترهيب ، كتاب البر والصلاة وغيرهما، الترغيب في قضاء...الخ ، ٣١٧/٣، الحديث ٤٠٢٢

^{3} هو سوعة ابن ابي الدنيا، كتاب قضاء الحوائج، باب في فضل المعروف، ٢٦٧/٤، الحديث ٣٥

^{4}المعجم الاوسط، ٦/٨٥١، الحديث ٥٣٥٠

الخالق للطبراني، الجزء الاول...الخ، باب فضل اصطناع المعروف، ص ٣٣٥، الحديث ١١٥.

حضرت عبدالله بن حسن بن حسین دَخِبَ اللهُ عَنْهُمُ كَهَتْمَ مِیں كه میں كسی ضرورت كے لئے حضرت عمر بن عبدالعزیز دَخِبَ اللهُ عَنْهُ كَ پاس گیا ، انہوں نے مجھے كہا: جب بھی آپ كوكوئی ضرورت پیش آئے تو میری طرف كوئی قاصد بھیج دیں یا خطالکھ دیں كيونكه مجھے الله تعالیٰ سے حیا آتی ہے كہ آپ میرے درواز ہیرتشریف لائیں۔

حضرت علی بن ابی طالب رَضِیَ اللّه عَنْه کا قول ہے: رَبِّ دوالجلال کی قسم اجو ہرآ وازکوسنتا ہے، کوئی شخص ایسانہیں ہے جوا پنے دل میں مسرت کوجگہ دیتا ہے مگر اللّه تعالی اس سرور سے لطف عطافر ما تا ہے، پھر جب کوئی مصیبت نازل ہوتی ہے تو وہ اس سرور کواس طرح بہا لیجاتی ہے جیسے پانی نشیب میں بہتا ہے یہاں تک کہ اسے اجنبی اونٹ کی طرح ہنکا دیا جاتا ہے، نیز آپ نے فرمایا کہ نا بنجار لوگوں سے حاجت طلب کرنے سے حاجت کا پورانہ ہونا بہتر ہے، آپ نے مزید فرمایا: 'اپنے بھائی کے پاس بہت زیادہ خوسے لگتا ہے مزید فرمایا: 'اپنے بھائی کے پاس بہت زیادہ ضرور تیں لے کرنہ جاؤ کیونکہ پھڑ اجب شنوں کو بہت زیادہ چوسے لگتا ہے تواس کی ماں اسے سینگ مارتی ہے کسی شاعر نے کیا خوب کہا ہے:

لا تقطعن عادة الاحسان عن احد مادمت تقدر والايام تارات واذكر فضيلة صنع الله اذ جعلت اليك لا لك عند الناس حاجات

﴿ 1 ﴾ جب تک تیرے مقدور میں ہوکسی احسان کرنے میں پس وییش نہ کراور بیزندگی گزرنے والی ہے۔

﴿2﴾....اورالله تعالیٰ کی اس نوازش کو یا در کھ کہ اس نے تخصے لوگوں کا حاجت روا بنادیا ہے مگر تو کسی کے پاس اپنی حاجت لے کرنہیں جاتا۔

ایک اور شاعر کہتا ہے:

اقض الحوائج ما استطعت وكن لهم اخيك فارج فلخير ايام الفتى يوم قضى فيه الحوائج

﴿ 1 ﴾جہاں تک جھھ ہے ممکن ہولوگوں کی ضرورتیں بوری کراوران کا حاجت روا بھائی بن ۔

﴿2﴾ بیشک کسی جوان کاعمده دن وہی ہے جس میں وہ لوگوں کی حاجت روائی کرتا ہے۔

اور حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَا فرمان ہے: اس شخص كيليّے خوشخبرى ہے جس كے ہاتھوں بھلائيوں كا صدور ہوتا ہے اور اس شخص كيليّے ہلاكت ہے جس كے ہاتھوں برائياں فروغ پاتى ہے۔ (1)

❶شعب الايمان ، الخامس والعشرون...الخ ،حديث الكعبة...الخ ،٣٠ ٤٥ ، الحديث ١٧٠٤ .

(62 <u>-!</u>)

خُ فضائلِ وُضو ﴿

رسول الله صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كالِرشاد ہے كہ جس نے وُضوكيا اور بہترين طريقہ سے كيا پھر دور كعتيں اداكيں اور اس كے دل ميں دنياوى خيالات نہيں آئے وہ گنا ہوں سے اس دن كى طرح نكل گيا جس دن اس كى ماں نے اسے جنا تھا۔ (1)

دوسری روایت کے الفاظ ہیں:اوراس نے ان دورکعتوں میں کوئی نامناسب حرکت نہیں کی تواس کے گزشتہ گناہ بخش دیئے جاتے ہیں۔⁽²⁾

فر مانِ نبوی ہے: کیا میں تمہیں ایسے کا موں کی خبر نہ دوں جن سے درجات بلند ہوتے ہیں اور جو گنا ہوں کا کفارہ بنتے ہیں، تکلیف دہ اوقات میں مکمل وضوکرنا،مساجد کی طرف چلنا اور ایک نماز کے بعد دوسری نماز کا انتظار کرنا، پس سے پناہ گا ہیں ہیں۔ بیلفظ آپ نے تین مرتبہ فر مائے۔ (3)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے ایک ایک مرتبہ اعضاءِ وضوکو دھوکر فرمایا: پیروضو ہے جس کے بغیر اللّه تعالیٰ نماز کو قبول نہیں کرتا اور آپ نے دودومرتبہ اعضائے وضوکو دھوکا اسے ڈہرا تو اب ملے گا اور آپ نے تین تین مرتبہ اعضائے وضوکو دھویا اور فرمایا: میرا، مجھ سے پہلے آنے والے تمام انبیاء کا اور ابراہیم عَلَیْهِ السَّدَم کا وضو ہے جو خلیل اللّه ہیں۔ (4)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كا إرشاد هے: ''جووضو كوقت الله كويا دكرتا ہے،الله تعالى اس كتمام جسم كوياك

۱۸۹۷، کتاب الصلاة من قسم الأقوال، الباب الأول في فضل الصلاة ، ۲۲/٤، الجزء السابع، الحديث ١٨٩٧،
 ١٨٩٨٣،١٨٩٨،

- 2مسند ابي داود الطيالسي، زيد بن خالد الجهني رضي الله عنه ، ص ١٨٩، الحديث ١٣٣١
 - 3 شعب الايمان، باب العشرون من شعب...الخ، فضل الوضوء، ٣/٥١، الحديث ٢٧٣٨.
- ₫.....ابن ماجه، كتاب الطهارة، باب ماجاء في الوضوء مرة...الخ ، ١/١٥، الحديث ٢٠٤ بدون ذكر ابراهيم عليه السلام

۔ کر دیتا ہےاور جو شخص وُضوکرتے وفت اللّٰہ کو یا ذہیں کرتا اس کا وہی حصہ پاک ہوتا ہے جس پر پانی لگتا ہے۔''⁽¹⁾ فر مانِ نبوی ہے کہ جو حالت وضو میں وضو کرتا ہے اس کے نامۂ اَعمال میں اللّٰہ تعالیٰ دس نیکیاں لکھ دیتا (2)

فرمانِ نبوی ہے کہ وضو پر وضونوڑ علیٰ نور ہے۔

ان تمام روایات میں آپ صَلَی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے نے وُضوی فضیلت کی طرف اشارہ فرماتے ہوئے اس کی ترغیب دی ہے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ جب بندہ مسلم وُضوکرتے ہوئے کلی کرتا ہے تواس کے منہ سے گناہ نکل جاتے ہیں اور جب وہ منہ دھوتا ہے تواس کے چرے کے گناہ نکل وہ ناک صاف کرتا ہے تواس کے چرے کے گناہ نکل جاتے ہیں، جب وہ منہ دھوتا ہے تواس کے چرے کے گناہ نکل جاتے ہیں، جب وہ باز ودھوتا ہے تواس کے ناختوں کے نیچ تک کے تمام گناہ نکل جاتے ہیں، جب وہ باؤں دھوتا ہے تواس کے سرکے گناہ نکل جاتے ہیں، جب وہ باؤں دھوتا ہے تواس کے سرکے گناہ نکل جاتے ہیں یہاں تک کہ کا نوں کے نیچ تک کے گناہ گرجاتے ہیں، جب وہ باؤں دھوتا ہے تواس کے باؤں کے ناختوں کے نیچ تک کے تمام گناہ نکل جاتے ہیں، پھراس کا مسجد کی طرف چلنا اور نماز پڑھنا اس کی عبادت میں داخل ہوجاتا ہے۔

اورمروی ہے کہ باؤضوآ دمی روزہ دار کی طرح ہے۔ (⁵⁾

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاإر شادِكرا مي ہے كہ جس شخص نے بہترین وُضوكیا پیر فراغت کے بعد آسان كی طرف نظرا ٹھا كر كہا:

اَشُهَدُانُ لَّا اِللَّهِ اللَّهُ وَحُدَهُ لَاشَرِيُكَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ

- كنزالعمال، كتاب الطهارة،الباب الثاني ... الخ ، الفصل الثاني في آداب الوضوء، ٥/٣٠/ الجزء التاسع، الحديث ٢٦.٦٢
 - 2 ابوداود، كتاب الطهارة، باب الرجل يجدد...الخ ، ١/٦٥، الحديث ٦٢
 - 3المقاصد الحسنة ، حرف الواو، ص ٥٥٨، الحديث ١٢٦٤
 - ◘..... ابن ماجه، كتاب الطهارة ، باب ثواب الطهور، ١٨٢/١، الحديث ٢٨٢ماخوذًا
 - الزهد لا بن المبارك ، الجزء العاشر استعنت بالله، ص ٤٤، الحديث ١٢٤٣

۔ اس کے لئے جنت کے آٹھوں درواز ہے کھول دیئے جاتے ہیں، وہ جس درواز سے حیاہے داخل ہو۔ (1) حضرتِ عمر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ کا قول ہے کہ بہترین وُضوشیطان کو تجھے سے دور بھگا دیتا ہے۔

حضرت مجامد رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے:''جو تحض اس بات کی طافت رکھتا ہے کہ وہ باوضوء ذکر اور استغفار کرتے ہوئے رات گزار ہے تو اسے ایسا کرنا جا ہے کیونکہ رومیں جس حالت میں قبض کی جاتی ہیں اس حالت میں اٹھائی جائیں گی۔''

مروی ہے کہ حضرت عمر بین خطَّاب رَضِی اللهُ عَنْه نے ایک صحابی رُسول کو کعبہ کا غلاف لانے کے لئے مصر بھیجا، وہ صحابی شام کے ایک علاقہ میں ایسی جگہ قیام پذیر ہوئے جس کے قریب اہل کتاب کے ایک ایسے بڑے عالم کا صومعہ تھا کہ کوئی اور عالم اس سے زیادہ باعلم نہیں تھا۔

حضرت عمروَضِیَ اللّه عَنه کے قاصد کے دل میں اس عالم سے ملنے اور اس کی علمی باتیں سننے کی خواہش پیدا ہوئی چنانچہ وہ اس کی عبادت گاہ کے دروازہ پر آئے اور دروازہ کھٹکھٹا یا مگر بہت دیر کے بعد دروازہ کھولا گیا، پھر وہ عالم کے پہان گئے اور اس سے علمی گفتگو کرنے کی فرمائش کی اور اسے اس عالم کے تبحر سے بہت تعجب ہوا! آخر میں انہوں نے دروازہ دیر سے کھو لنے کی شکایت کی تو وہ عالم بولا کہ جب آپ آئے تو ہم نے آپ پر باوشا ہول جیسی ہیب ویکھی لہذا ہم خوف زدہ ہوگئے اور ہم نے آپ پر باوشا ہول جیسی ہیبت ویکھی لہذا ہم خوف زدہ ہوگئے اور ہم نے آپ کو دروازہ پر اس لئے روک دیا کہ اللّه تعالیٰ نے حضرت مولی عَلَیٰہِ السَّلام سے فرمایا: اے مولی اجب مجھے کوئی باوشاہ خوف زدہ کرد ہے تو تو وضوکر اور اپنے گھر والوں کو بھی وضوکا حکم دے ، تو جس سے ڈر رہا ہے اس سے میری امان میں آجائے گا چنانچہ ہم نے دروازہ بند کردیا یہاں تک کہ میں نے اور اس میں رہنے والے تمام آدمیوں نے وضوکر لیا، پھر ہم نے نماز پڑھی لہذا ہم تجھ سے بے خوف ہو گئے اور پھر ہم نے دروازہ کھول دیا۔

.....☆.....☆......

¹ ٢١ مسند احمد ، مسند عمر بن الخطاب، ٢/١ ٥، الحديث ١٢١

(63 <u>- !</u>

خ فضیلت نماز ک

چونکہ نمازافضل ترین عبادت ہے لہٰذاہم نے کتاباللّٰہ کی پیروی کرتے ہوئے اسکی ترغیب دینے کیلئے دوسری مرتبعہ اس کا ذکر کیا ہے کیونکہ جو کچھ ہم تحریر کر چکے ہیں نماز کے فضائل میں اس سے کہیں زیادہ آیات واحادیث وارد ہوئی ہیں چنانچیرارشاد نبوی ہے کہ بندے کیلئے اس سے بڑھ کرکوئی انعام نہیں ہے کہا سے دورکعت نماز پڑھنے کی اجازت دی جائے۔'' حضرت محمد بن سيرين دَضِيَ اللّهُ عَنْهُ كا قول ہے كما كَر مجھے جنت اور دور كعت نماز ميں سے كسى ايك كو پيند كرنے كا کہا جائے تو میں جنت پر دورکعت نماز کوتر جیح دوں گا کیونکہ دورکعتوں میں رضائے الہی اور جنت میں میری رضاہے۔ کہاجا تاہے کہ الله تعالی نے جب سات آ سانوں کو پیدافر مایا توانہیں فرشتوں سے ڈھانپ دیا، وہ اس کی عبادت سے ایک لمحہ کو بھی غافل نہیں ہوتے اور الله تعالیٰ نے ہرآ سان کے فرشتوں کے لئے عبادت کی ایک قشم مقرر فر ما دی ہے چنانچالک آسان والے قیامت تک کے لئے قیام میں ہیں،کسی آسان والےرُکوع میں،کسی آسان والےفرشتے ہجود میں اور کسی آسان والے اللّٰہ تعالٰی کی ہیبت اور جلال سے اپنے باز وجھ کائے ہوئے ہیں بیکتین اور عرش الہی کے فرشتے صف بئسة عرش الہی کا طواف کرتے رہتے ہیں ،الله تعالی کی حمد کرتے ہیں اور زمین والوں کے لئے مغفرت طلب کرتے ہیں گرالله تعالیٰ نے بیتمام عبادتیں ایک نماز میں جمع کر دی ہیں تا کہ مومنوں کو آسانی فرشتوں کی ہرعبادت کا حصہ عنایت فر ما کرانہیں عزت وتو قیر بخشے اوراس میں تلاوت قر آن مجید کی عزت بخشی اور مومنوں سے عبادت کاشکرا داکرنے کی فر ماکش كى ، نماز كاشكراس كى مكمل شرائط وحدود سے ادائيگى ہے، فرمان الهي ہے:

جولوگ غیب پرایمان لاتے ہیں اور نماز قائم کرتے ہیں اور

ہمارے دیئے ہوئے رزق میں سے خرچ کرتے ہیں۔

الَّنِ يَنَ يُخْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُونَ الصَّلُوةَ وَ

مِيَّارَ وَيُؤْمُونُ فَيُفِقُونَ فَيَّالِمَ الْمُعْلِقُونَ فَيْ فَعَوْنَ فَيْ فَعِقُونَ فَيْ فَعِلْمُ الْمُعْلِقُونَ فَيْ

^{◘.....}المعجم الكبير، ١/٨ ١٥، الحديث ٢٥٦٠ و فردوس الاخبار، ١٢١/٤، الحديث ٦٣٧٤

^{۔۔۔۔}تو جمه کنز الایمان: وہ جو بے دیکھے ایمان لا کیں اور نماز قائم رہیں اور ہماری دی ہوئی روزی میں سے ہماری راہ میں اٹھا کیں۔۔۔۔۔و

مكاشفة القلوب

مزيد إرشادفر مايا:

اورتم نماز قائم کرو۔

وَاقِيْهُواالصَّلُوةَ

إرشادِ خداوندی موا:

اورنماز قائم کیجئے۔

وَا قِمِ الصَّلُوةَ (²⁾

ایک مقام پر إرشاد ہے:

اور جونماز وں کو قائم کرنے والے ہیں۔

(3) وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلَوةَ

قر آ نِ مجید میں جہاں کہیں بھی نماز کا ذکر ہے وہاں اسے قائم کرنے کا بھی حکم ہےاور اللّٰہ تعالٰی نے جب منافقوں کا ذکر کیا تو فر مایا:

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۚ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمُ سَاهُوْنَ ۞ لَيْسِها كَتْ جِانِ مَازيول كَ لِيهِ جوا بِي مَاز سَ سَى كَرِ نَـ

والے ہیں۔

الله تعالى في اس آيت ميس منافقول كو دمُصَلِّين "كها ہے اور مومنوں كا ذكر كرتے وقت فرمايا:

جونماز وں کو قائم کرنے والے ہیں۔

(5) وَالْمُقِيْمِيْنِينَالصَّلْوَةَ

اور بیاس لئے فرمایا تا کہ معلوم ہوجائے کہ نمازی تو بہت ہیں گرضچے معنی میں نماز قائم کرنیوالے کم ہیں، غافل لوگ تو بس رواج کے طور پڑمل کرتے ہیں اور انہیں اس دن کی یا دنہیں آتی جس دن اعمال پیش کئے جا کیں گے، کیا معلوم ان کی نمازیں مقبول ہوں گی یا مردود؟

حضرتِ نبي كريم صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم عِيم وي ب: آپ نے فرمایا: بيشکتم ميں سے بعض وہ ہيں جونماز برا سے

- ۱۰۰۰۰ تو جمه کنز الایمان: اورنماز قائم رکھو۔ (پ ۱، البقرة: ٤٣)
 - 2ترجمه كنز الايمان: نمازقائم ركه_(ب١٦، طلا: ١٤)
- **3**.....ترجمه كنز الايمان: اورنماز قائم ركفني واليرب، النساء: ١٦٢)
- 4ترجمه كنز الايمان: توان نمازيول كى خرابى بعجواين نماز سع بعو لي بيش بين (ب ٠٠ الماعون: ٥٠٤)
 - 5توجمه كنز الايمان: اورنماز قائم ركھنے والے _ (پ، النساء: ١٦٢)

X

ہیں مگران کی نماز میں سے تہائی یا چوتھائی یا پانچواں یا چھٹا حصہ یہاں تک کہ آپ نے دسویں حصے تک گنا اور فرمایا: تواب کلھاجا تاہے۔ (1) یعنی نماز میں سے اسی حصہ کا ثواب ملتاہے جس کووہ مکمل یکسوئی اور توجہ سے پڑھتاہے۔ حضور صَدَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم سے مروی ہے: آپ نے فرمایا: جس شخص نے اللّٰہ تعالیٰ کی طرف متوجہ ہوکر مکمل یکسوئی سے دور کعت نماز اداکی وہ گنا ہوں سے اس دن کی طرح پاک ہوگیا جس دن کہ اس کی ماں نے اسے بَنا تھا۔ (2)

حقیقت یہ ہے کہ بند ہے کی نماز باعظمت تب ہوتی ہے جب اس کی تمام تر توجہ اللہ تعالیٰ کی طرف ہواوروہ نفسانی خیالات میں مشغول ہوتو اس کی مثال الیں ہے جیسے کوئی شخص اپنی غلطیوں اور لغزشوں پر معذرت کرنے کے لئے بادشاہ کے دربار میں جار ہا ہواور جب وہ بادشاہ کے حضور پہنچ گیا اور بادشاہ اسے سامنے کھڑا ادیکھ کر اس کی طرف متوجہ ہوا تو وہ دائیں بائیں دیکھنے گے لہذا بادشاہ اس کی ضرورت پوری نہیں کریگا اور بادشاہ اس کی توجہ کے مطابق اس پر عنایت کریگا اور اس کی بات سے گا، اسی طرح جب بندہ نماز میں داخل ہوجا تا ہے اور دوسری باتوں کے خیالات میں کھوجا تا ہے تو اس کی نماز بھی قبول نہیں ہوتی۔

جان لیجئے کہ نماز کی مثال اس وعوت ولیمہ کی ہے جسے بادشاہ نے منعقد کیا ہواوراس میں قسم سے کھانے تیار کئے گئے ہول، کھانے اور پینے کی ہر چیز کی جدا گانہ لذت اور ذائقہ ہو پھر وہ لوگوں کو کھانے کی دعوت دے، ایسے ہی نماز ہے، اللّٰہ تعالیٰ نے لوگوں کواس کی جانب بلایا ہے اور اس میں مختلف اَ فعال اور رنگار نگ ذکر وَدِ ثَیَت رکھے ہیں تا کہ بندے اس کی عبادت کریں اور عبودیت کے رنگار نگ مزے لیں، اس میں اَ فعال کھانے کی طرح اور اَ ذکار پینے کی اشیاء جیسے ہیں۔

یہ بھی کہا گیا ہے کہ نماز میں بارہ ہزاراً فعال نظے، پھریہ بارہ ہزاراً فعال بارہ افعال میں مخصوص کردیئے گئے لہذا جو شخص بھی نماز پڑھنا جا ہے اسے ان بارہ چیزوں کا خیال رکھنا جا ہے تا کہ اس کی نماز کامل ہوجائے، جن میں سے چھ خارج نماز اور چھداخل نماز ہیں:

﴿ پہلا' دعلم' ہے کیونکہ فرمانِ نبوی ہے کہ وہ تھوڑ اعمل جسے انسان مکمل علم سے ادا کرے، اس زیادہ عمل ہے بہتر

^{1}مسند احمد ١٨٩/٣١٠ الحديث: ١٨٨٩ و فردوس الاخبار، ١٩١/١ الحديث ٧٢٠

^{2}المعجم الاوسط، ٧٩/٤، الحديث ٢٣٠٦

مكاشفة القلوب

ہے جسے بے خبری اور جہالت میں ادا کیا جائے۔⁽¹⁾

ﷺ..... دوسرا''وضو'' ہے کیونکہ فر مانِ نبوی ہے کہ طہارت کے بغیر نماز ہوتی ہی نہیں۔

الله عن الله الله عن الله الله عن الله عنه الله عن الله عن الله عنه الله

تم ہرنماز کے وقت زینت حاصل کرو۔

خُذُوْازِيْنَتُكُمْ عِنْدَكُلِّ مَسْجِدٍ

لعنی ہرنماز کے وقت کپڑے پہنو۔

بے شک نمازمومنوں پروفت مقرر پرفرض ہے۔

(4) اِنَّالصَّلْوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتْبَالَمُوْفُوتًا ﴿

پس اپنے چہرے کومسجد ترام کی طرف پھیر دواورتم جہاں کہیں بھی

فَوَلِّ وَجُهَكَ شَطْرَالْمَهُجِ بِالْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمُ

ہوا پنے چېروں کومسجد حرام کی طرف پھیر دو۔

فَوَلُّوا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَةً (5)

افعال کوحرام کر نیوالی تکبیرتح پیہاورحلال کرنے والاسلام پھیرناہے۔

الله عند الله الله عند الله عن

- ◘.....المصنف للامام عبدالرزاق ،كتاب العلم، باب الرخص...الخ ، ٠ /٢٦٣/، الحديث ٢٠٧٥ ماخوذاً
- 2الدار قطني، كتاب الصلاة ، باب ذكر وجوب الصلاة على النبي صلى الله عليه و سلم ، ١٧٥/١، الحديث ١٣٢٦ملتقطا
 - 3ترجمه كنز الايمان: اين زين اوجب مجديل جاؤ (ب، الاعراف: ٣١)
 - النساء: ۳۰۰۰ النساء: ۳۰۰۰ نماز مسلمانول يرونت باندها موافرض بـ ۱۰۴ النساء: ۱۰۴
- البقرة الایمان: ابھی اینامنہ پھیروڈسجد حرام کی طرف اورا ہے سلمانو! تم جہاں کہیں ہوا پنامنہ اس کی طرف کرو۔ (پ۲، البقرة: ٤٤)
 - 6بخارى، كتاب بدء الوحى، باب كيف كان بدء الوحى...الخ، ١/٥، الحديث ١
 - 7المستدرك للحاكم، كتاب الطهارة، باب مفتاح الصلاة...الخ، ٢/١ ٣٤٢، الحديث ٢٦٩

(1) وَقُوْمُواللّٰهِ فَنِينِينَ

اور کھڑے بوجا وَالله کے لیےاطاعت کرنے والے۔

یعنی کھڑے ہوکر نماز پڑھو۔

فَاقْرَءُ وَامَاتَيَسَ مِنَ الْقُرْانِ (2)

یں پڑھوتم جو تہہیں قرآن ہے میسر ہو۔

🕸 دسوال''رُکوع''ہے، اِرشادِ الہٰی ہے:

اوررُ کوع کرنے والول کے ساتھ رُکوع کرو۔

(3) وَارُّ كُغُوْامَعَ الرُّ كِعِيْنَ ﴿

(4) دَاسْجُنُوا اورسجده كروب

ﷺ.....بارہواں'' قعدہ'' ہے، اِرشادِ نبوی ہے کہ جب کسی آ دمی نے آخری سجدہ سے سراٹھایا اورتشہد پڑھنے کے بقدر بیٹھ گیا تواس کی نماز کمل ہوگئی۔⁽⁵⁾

جب یہ بارہ چیزیں پائی جائیں توان کے تیمُلئہ کے لئے ایک اور چیز کی ضرورت ہوتی ہے اور وہ ہے خلوصِ قلب نا کہ تیری نماز صحیح معنوں میں ادا ہوجائے اور فر مانِ الہی ہے:

پس اللہ کی عبادت کرواس کے دین کوخالص کرتے ہوئے۔

فَاعْبُدِاللَّهُ مُخْلِصًا لَّهُ الرِّيْنِ شَ

ہم نے سب سے پہلےعلم کا تذکرہ کیا تھا،علم کی تین قشمیں ہیں: ایک بید کہ وہ فرائض اورسنن کوعلیجد ہ علیحد ہسمجھتا

- ۲۳۸، البقرة ۲۳۸، البقرة ۲۳۸، البقرة ۲۳۸، البقرة ۲۳۸)
- 2ترجمه كنز الايمان: ابقرآن يس سے جتناتم پرآسان بواتنا پر هو- (ب ٢٩، المزمل: ٢٠)
 - 3ترجمه كنز الايمان: اوررُكوع كرنے والول كماتهرُكوع كرو_(ب ١٠البقرة: ٣٠)
 - 4ترجمه كنز الايمان: اور كره و (پ٧١ ،الحج: ٧٧)
- ۲۲۳٦٥، ۲۲۳٦٤ الحديث ٢٢٣٦٥، من قسم الأقوال، الخروج من الصلاة ، ٢٦/٤، الجز الثامن ، الحديث ٢٢٣٦٤، ٢٢٣٦٥ و ٢٢٣٦٥
 و الدار قطني، كتاب الصلاة، باب من احدث قبل... الخ، ١/٥٠٥، الحديث ١٤٠٩
 - الزمر:۲) توجمه کنز الایمان: توالله کویوجوثر اس کے بندے ہوکر۔(ب۲۲، الزمر:۲)

ہو،ؤضومیں جوفرائض اورسنن ہیں،انہیں جانتا ہو کیونکہ بینماز کے کممل کرنے کا ایک واسطہ ہیں اور شیطان کے مکروں کو جانتا ہواوران کے دَفْعیّۂ کے لئے اپنی کوشش صرف کرے۔

وُضوتین چیزوں سے مکمل ہوتا ہے:''پہلا''یہ کہ تواپنے دل کو کبینہ،حسداورعداوت سے پاک کرے،''دوسرا''یہ کہا پنے بدن کو گنا ہوں سے پاک کرے،'' تیسرا'' یہ کہ پانی کوضائع نہ کرتے ہوئے اپنے اعضاءوُضوکوخوب اچھی طرح دھوئے۔

لباس تین چیزوں ہے کمل ہوتا ہے: ''پہلا'' یہ کہ وہ حلال کی کمائی ہے حاصل کیا گیا ہو، '' دوسرا'' یہ کہ نجاست سے پاک ہو، '' تیسرا'' یہ کہ اس کی وضع قطع سنت کے مطابق ہوا در تکبر وخود بنی کے لئے ان کپڑوں کونہ پہنا گیا ہو۔

پابندگ وقت تین چیزوں پر مخصر ہے: '' اول'' یہ کہ تو اتنا علم رکھتا ہو کہ سورج ، چا ندستاروں سے تو وقت کے قعین میں مدد لے سکے ،'' دوم'' یہ کہ تیر سے کا ان اذان کی آواز پر لگے رہیں ،'' سوم'' یہ کہ تیرا دل نماز کے وقت کی پابندی کے متعلق مُتفکّل ہو۔

اِئْتِقبالِ قبله تین چیزوں سے کمل ہوتا ہے: ' پہلا' ہیکہ تیرامنہ کعبہ کی ست ہو، ' دوسرا' ہیکہ تیرادل الله کی طرف متوجہ ہواور ' تیسرا' میک کو انتہائی انکساری سے حاضر ہو۔

نیت تین چیزوں سے تمل ہوتی ہے: ' پہلا' یہ کہ تجھے علم ہو کہ تو کوئی نماز پڑھ رہاہے، ' دوسرے' یہ کہ تجھے اس بات کاعلم ہو کہ توالله کی بارگاہ میں کھڑا ہور ہاہے اوروہ تجھے دیکھ رہاہے اور تو خوف زدہ ہو کر حاضر ہو، ' تیسرے' یہ کہ تھے معلوم ہو کہ الله تعالیٰ تیرے دل کے بھیدوں کو جانتا ہے لہذا تواسینے دل سے دنیاوی خیالات یکسرختم کردے۔

تکبیرتریم بھی تین چیزوں سے پایئے محیل تک پہنچتی ہے: ''پہلا' نید کتم صحح معنوں میں اللہ تعالیٰ کی بڑائی بیان کرو اور شح طور پراللہ اکبر کہو،'' دوسرا'' بید کہا ہے دونوں ہاتھ کا نوں کے برابر تک اٹھاؤ،'' تیسرا'' بید کہ تکبیر کہتے ہوئے تمہارا دل بھی حاضر ہواورا نتہائی تعظیم سے تکبیر کہو۔

قیام بھی تین چیزوں سے کامل ہوتا ہے:'' پہلی'' یہ کہ تیری نگاہ تجدہ گاہ پر ہو،'' دوسرا'' یہ کہ تیرادل الله کی طرف متوجہ ہو،'' تیسرا'' یہ کہ تو دائیں بائیں توجہ نہ کرے۔ قراءت بھی تین چیزوں سے مکمل ہوتی ہے:''پہلا'' یہ کہ تو سورہ فاتحہ کو بیخی تلفظ سے تھہر کھہر کرگانے کی طرز سے احتر از کرتے ہوئے پڑھے،'' دوسرا'' یہ کہ اسے غور وفکر سے پڑھے اور اس کے معانی میں سوچ بچار کرے،'' تیسرا'' یہ کہ جو کچھ پڑھے اس پڑمل بھی کرے۔

رُکوع بھی تین اشیاء سے کامل ہوتا ہے:''پہلا'' یہ کہ پیٹے کو برابرر کھو،اونچایا نیچا نہ رکھو،'' دوسرا'' یہ کہ اپنے ہاتھ گھٹنوں پر رکھواور انگلیاں کھلی ہوئی ہوں،'' تیسرا'' یہ کہ کامل اطمینان سے رُکوع کرواور تغظیم و وقار سے رُکوع کی تسبیحات کممل کرو۔

سجدہ بھی تین باتوں سے کمل ہوتا ہے:''پہلا'' یہ کہ تواپنے ہاتھ کانوں کے برابررکھ'' دوسرا'' یہ کہ گہنیاں کھلی رکھ،'' تیسرا'' یہ کہ کمل سکون سے سجدہ کی تسبیحات کم ل کر۔

قعدہ بھی تین چیزوں سے پایتے بھیل کو پہنچتا ہے: ''پہلا' یہ کہ تو دایاں پاؤں کھڑار کھاور با کیں پر بیٹھ' ' دوسرے'
یہ کہ تشہد پوری تعظیم سے پڑھاورا پنے اور مسلمانوں کے لئے دعاما نگ' '' تیسرے' یہ کہاس کے اختتام پر سلام پھیر۔
سلام اس طریقہ سے پایئے بھیل کو پہنچتا ہے کہ دا کیں جانب سلام پھیرتے ہوئے تیری یہ تچی نیت ہو کہ میں
دا کیں طرف کے فرشتے ، مردوں اور عورتوں کو سلام کر رہا ہوں اوراسی طرح با کیں طرف سلام پھیرتے ہوئے نیت کر
اوراپی نگاہ اپنے دوکندھوں سے مُتجَاوِز نہ کر۔

اسی طرح اخلاص بھی تین چیزوں سے پورا ہوتا ہے:''ایک' بیکہ نماز سے تیرائڈ عارضائے الٰہی کاحصول ہولوگوں کی رضامندی کاحصول نہ ہو،'' دوسر نے' بیکہ نماز کی تو فیق الله کی طرف سے جان '' تیسر نے' بیر کہ تواس کی حفاظت کرتا کہ اسے قیامت کے دن الله کی بارگاہ میں پیش کر سکے کیونکہ فرمانِ الٰہی ہے:

ينهيں فرمايا '' مَنْ عَمِلَ بِالْحَسَنَةِ ''جس نے نيكياں كيں، لهذا پنى نيكيوں كوبُر سے أعمال سے برباد كركے اس كے حضور ميں نہ جا۔

^{1} ترجمه كنز الايمان: جونكل لا عدرب ٢٠ القصص: ٨٤)

)

اب 64

ر آفات قیامت کی

مروی ہے کہ حضرتِ عائشہ صدیقہ رَضِی اللّٰهُ عَنْهَا نے حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم ہے دریافت کیا کہ یادسول الله!

کیا قیامت کے دن دوست دوست کو یا دکرے گا؟ آپ نے فرمایا: تین جگہوں پرکوئی کسی کو یا زنہیں کرے گا، میزانِ عمل کے وقت تا آنکہ وہ اپنا ہکا یا بھاری پلڑا دیکھ نہ لے، نامہ آعمال کے اُڑنے کے وقت (1) یا تواسے دائیں ہاتھ یا بائیں ہاتھ میں نامہ آعمال دے دیا جائے اوراس وقت جبکہ جہنم ہے آگی گردن باہر نکلے گی اور لوگوں کی طرف بڑھتی چلی آئے گی اور کچگی: میں ہر مشرک ، سرکش ، متکبراوراس شخص پر مقرر کی گئی ہوں جو قیامت کے دن پر ایمان نہیں رکھتا تھا پس وہ انہیں اپنے شعلوں میں لیسٹ کرجہنم کی گھاٹیوں میں ڈال دے گی اور جہنم پر بال سے باریک اور تلوار کی دھارسے نیا دہ اور اس پر کانٹے ہوں گے۔ لوگ اس پر بحل کی چیک اور جہنم پر بال سے باریک اور تلوار کی دھارسے زیادہ تیز بل ہے اور اس پر کانٹے ہوں گے ، لوگ اس پر بحل کی چیک اور تیز ہوا کی طرح گزریں گے۔ (2)

حضرت ابو ہر ریور خینی الله عنه سے مروی ہے : حضور صَلَی الله عَلیْهِ وَسَلَم نے فر مایا: جب الله تعالی نے زمین و آسان کو پیدا فر مایا تو پیرصور کو پیدا فر مایا اور اسرافیل کو دیا وہ اسے منہ میں رکھے عرش کی طرف نگاہ جمائے کھڑا ہے کہ کب اسے صور پھو تکنے کا حکم ماتا ہے۔ ابو ہر ریور وَخِی الله عَنه کہتے ہیں میں نے عرض کی: یادسول الله! صور کیا ہے؟ آپ نے فر مایا وہ بیل کا ایک سینگ ہے۔ میں نے کہا: وہ کیسا ہے؟ آپ نے فر مایا: بہت بڑے وائر کے والا ہے، شم ہے اس و ات کی جس نے مجھے حق کے ساتھ مبعوث فر مایا ہے اس کے دائر کے کا قطر زمین اور آسان کی چوڑائی کے برابر ہے، اسے تین مرتبہ پھون کا جائے گا، پہلے گھرا ہے کے لئے، دوسرے موت کے لئے اور تیسری مرتبہ قبروں سے اٹھنے کے لئے، پھر روسیں ایسے کھیں گی جسے شہد کی گھیاں۔ وہ زمین و آسان کے خلاکو پر کر دیں گی اور ناک کے داستے جسموں میں داخل ہو

^{🗗} لعنی نقیسم ہوتے وقت۔ علمیه

^{2}مسند احمد ، مسند السيدة عائشة رضى الله عنها، ٩/٥/٤ الحديث ٢٤٨٤٧

جائیں گی، پھر فر مایا: سب سے پہلے میری قبرشق ہوگا۔⁽¹⁾

دوسری روایت میں ہے: تب الله تعالی جبرائیل، میکائیل اور اسرافیل کوزندہ کریگاوہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی قبرِ انورشق قبرِ انورش کے ماتھ براق اور جنتی لباس ہوں گے، پھر حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی قبرِ انورشق ہوگی اور آپ جبریلِ اَمین کود کھ کر فرمائیں گے کہ یہ کونسا دن ہے؟ جبرائیل عرض کریں گے: یہ روزِ قیامت ہے، یہ مصیبت کادن ہے، پیختی کادن ہے۔ آپ فرمائیں گے: اے جبریل الله تعالی نے میری امت کے ساتھ کیسا سلوک

کیاہے؟ جریل عرض کریں گے: آپ کو بشارت ہو کہ سب سے پہلے مخص آپ ہیں جن کی قبرشق ہوئی ہے۔

حضرت ابو ہر ریرہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے:حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فرمایا کہ اللّٰه تعالی فرمائے گا: اے جن وانس! میں نے تہمیں نصیحت کی تھی ،لوتمہارے نامهُ اَعمال میں تمہارے اَعمال درج ہیں ، جواپنا صحیفه احجِها پائے وہ اللّٰه کی حمد کرے اور جواسے بہتر نہ یائے وہ اینے آپ کوملامت کرے۔ (3)

حضرت يحيى بن معاذ رازى رَضِيَ اللهُ عَنْه مع منقول م كمانهول في ايني مجلس ميس بير يات سنيس:

اس دن ہم پر ہیز گاروں کورخن کی طرف جمع کریں گے وفد کی

صورت میں ادرہم مجرموں کوجہنم کی طرف پیاسا ہانگیں گے۔

يَوْمَ نَحْشُ الْمُتَّقِيْنَ إِلَى الرَّحْلِنِ وَفُدًا ﴿ وَنَسُوقُ

الْمُجْرِمِيْنَ إلىجَهَنَّمَ وِثُرَدًا ١٠٠٠

ایعنی پر ہیز گارسوار ہوکر اللہ کی بارگاہ میں حاضر ہوں گے اور مجرم پیدل اور پیاسے جہنم میں جائیں گے، تو آپ نے فرمایا:
اے لوگو! نیکی اور بھلائی میں پیش پیش رہو کل تم حشر کے دن قبروں سے اٹھائے جاؤگے اور مختلف سمتوں سے فوج در فوج آ و گے، اللہ کے مالیہ کے سامنے اسلیے کھڑے ہوگے اور تم سے ایک ایک حرف کا سوال کیا جائے گا، نیک لوگ اللہ کی بارگاہ میں سوار ہوکر گروہ وَ دُرگروہ وَ مَیں گے، بدکاروں کو بیدل اور پیاسالا یا جائے گا اور لوگ جماعت در جماعت جہنم

(پ۲۱، مریم: ۸۲،۸۵)

^{1}موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الاهوال، باب القيامة ، ٦/٦ ٥١، الحديث٤٥

^{2}تنبيه الغافلين للسمرقندي ، باب اهوال القيامة وافزاعها، ص٧٨، الحديث٤٩

^{3}الفردوس الاخبار، ٥/٥٥، الحديث ١١١٨ ملتقطا

عنو الایمان: جس دن ہم پر ہیزگاروں کورخمٰن کی طرف لے جائیں گے مہمان بنا کراور مجرموں کو جہنم کی طرف ہانگیں گے پیا ہے۔

X

میں داخل ہوں گے۔ اے بھائیو! تمہارے آگے ایک ایبا دن ہے جو تمہارے سال و ماہ کے اندازوں کے مطابق پیاس ہزار برس کا ہے جوہلی میائیو! تمہارے آگے ایک ایبا دن ہے جس دن لوگ خالقِ کا نئات کی بارگاہ میں کھڑے ہوں گئے جو حسرت، افسوس، نکتہ چینی، محاسبہ، چیخ و رکار، مصیبت، بختی اور دوبارہ زندہ ہونے کا دن ہے جس دن انسان اپنے کیے ہوئے انمال دیکھے گا۔ افسوس! پچھتاوے کا دن، جس دن بعض چہرے سفیداور بعض سیاہ ہوں گے، جس دن کسی کو مال اور اولا د فائدہ نہیں دے گی مگر جو قلب سلیم کیکر آئے گا وہی فائدہ پائے گا، جس دن ظالموں کو معذرت کوئی فائدہ نہیں دے گی اور ارائے کا ناہوگا۔

حضرت مُقَاقِل بن سُلیمان رَضِیَ اللّهُ عَنْه کا قول ہے کہ قیامت کے دن مخلوق سوبرس کامل خاموش رہے گی اور لوگ سو برس تک تاریکیوں میں جیران و پریشان رہیں گے اور سوبرس وہ ایک دوسرے پر چڑھ دوڑیں گے، رب کے ہاں جھگڑے کریں گے، قیامت کے دن کی طوالت بچاس ہزار برس کی ہوگی مگرمومن مخلص پر ایسے گزرے گا، جتنا ہلکی فرض نماز پڑھنے میں وقت صرف ہوتا ہے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ بندے کے قدم اس وقت تک نہیں ہلیں گے جب تک کہ اس سے چار چیزوں کا سوال نہیں کرلیا جائیگا ،اس نے اپنی عمر کیسے صرف کی ،اپنے آپ کوئس چیز میں مصروف رکھا، اپنے علم پر کتناعمل کیا اور دولت کیسے کمائی اور کیسے خرچ کی ہے؟ (1)

حضرت ابن عباس رَضِی الله عَنهُ مَا سے مروی ہے: حضور صَلَی الله عَلیهِ وَسَلَم نے فرمایا کہ الله تعالیٰ نے ہرایک نی کو قبول ہو نیوالی ایک ایک دعا عطا فرمائی تھی ، ان سب نے اپنی اپنی وہ دعا دنیا میں ما تک لی مگر میں نے اپنی دعا کو قیامت کے دن اپنی امت کی شفاعت کے لئے محفوظ رکھ لیا ہے۔ (2)

ا ربِ ذِ والحِلال! رسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَى حِرمت وتو قير كَطْفِيل بميں ان كى شفاعت سے محروم نه فرما، وصلى الله عليه و على آله و صحبه و سلم۔

4

¹¹¹ مسند البزار، ۸۷/۷ ، الحديث ٢٦٤ و المعجم الكبير، ٢٠/٢، الحديث ١١١

^{2} شعب الايمان، الرابع عشر من شعب الايمان...الخ ، فصل في براعة...الخ ، ١٨١/٢ ، الحديث ١٤٨٨

(65 <u>- !</u>

$\left\langle \overset{\star}{}$ جہنّم و میزان $\left\langle \overset{\star}{} \right\rangle$

اگرچہ جہنم اور میزان کا ذکر ہم پہلے بھی کر چکے ہیں،اب دوبارہ اس کا ذکر اس لئے کررہے ہیں کہ شاید غافل و بيكاردل اس دوبارہ ذكرہے كچھمزيد إئتِنفادہ كرسكيں اور بار بارذكركرنے كي ضرورت اس لئے بھي پيش آئى كه الله تعالىٰ کے فر مان کی انتباع ہوجائے کیونکہ الله تعالی نے بھی قرآنِ مجید میں مُتَعَدَّد مقامات پراس کا ذکر فرمایا ہے اورجہنم اور میزان کے اُحوال کی ہولنا کیوں کو بہت عظیم قرار دیا ہے تا کعقلمندوں کے دل اس کے ذکر سے تنبیہ حاصل کریں اور جان لیں ، کہ دنیا کا کوئی د کھ در د،جہنم کے مقابلہ میں کوئی حیثیت نہیں رکھتااور آخرت ہی عمدہ اور ہمیشہ رہنے والی ہے۔ اب ہم جہنم کے حالات کا بیان کرتے ہیں ،الله تعالیٰ ہمیں اپنے لطف وعطا کے فیل اس سے امان بخشے۔ (آمین) حدیث شریف میں ہے کہ جہنم سخت تاریک ہے جس میں کوئی روشنی اور شعلہ نہیں ہے،اس کے سات درواز ہے میں ہر درواز ہیستر ہزار پہاڑ ہیں، ہر پہاڑ پرستر ہزارآ گ کی گھاٹیاں ہیں، ہرگھاٹی میںستر ہزار درازیں ہیں، ہر دراز میں آ گ کی ستر ہزاروادیاں ہیں ہروادی میں آ گ کے ستر ہزار مکانات ہیں، ہرمکان میں ستر ہزار آ گ کے گھر ہیں، ہرگھر میں ستر ہزارسانپ اورستر ہزار بچھو ہیں، ہر بچھو کی ستر ہزارؤ میں ہیں ہرؤم میں ستر ہزارمہرے ہیں، ہرمہرے میں ز ہر کے ستر ہزار منکے ہیں، جب قیامت کا دن ہوگا،ان پر سے بردہ اٹھالیا جائے گا، تب جن وانس کے دائیں بائیں غبار کا خیمہ تن جائے گا، آ گے بھی غبار، پیچھے بھی غبار اور ان کے اویر بھی جہنم کا دھواں اورغبار ہوگا، جب وہ اسے دیکھیں گے تو گھٹنوں کے بل گر کر یکاریں گے کہا ہے رب ذوالجلال! ہمیں اس ہے بچا!⁽¹⁾

مسلم شریف کی روایت ہے، حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: قیامت کے دن جہنم کوستر ہزار لگامیں ڈال کرلایا جائے گااور ہرلگام کوستر ہزار فرشتے بکڑ کر تھنچ رہے ہول گے۔⁽²⁾

حدیث شریف میں ہے:حضور صَلَّی اللهُ عَلیهِ وَسَلَّم نے جہنم کے فرشتوں کی عظمت کو بیان کرتے ہوئے، جن کے

- التذكرة للقرطبي، باب ما جاء ان جهنم تسعر...الخ ، ص ٣٧٢ ما حوذًا
- 2مسلم كتاب الجنة...الخ، باب في شدة حرنار...الخ، ص٢٥ ١، الحديث ٢٩ ـ (٢٨٤٢)

متعلق ارشادِ اللي ہے:

غِلاظُّشِكَادٌ⁽¹⁾

وہ سخت اور انتہائی مضبوط ہوں گے۔

فر مایا: ہر فرشتے کے دوکندھوں کا درمیانی فاصلہ ایک سال کا سفر ہوگا اور ان میں اتنی طاقت ہوگی کہ اگر وہ اس ہتھوڑے سے جوان کے ہاتھوں میں ہوگا کسی پہاڑ پرایک ضرب لگا ئیں تو وہ ریزہ ریزہ ہوجائے اور وہ ہرضرب سے ستر ہزارجہنمیوں کوجہنم کی گہرائیوں میں گرائیں گے۔(2)

فرمانِ اللِّي ہے:

اس پرانیس فرشتے مقرر ہیں۔

عَلَيْهَاتِسْعَةَ عَشَىٰ © (3)

اس ارشاد سے مراد جہنمیوں پرمنعکین فرشتوں کے سردار ہیں ورنہ جہنم کے فرشتوں کی تعداد اللہ یتعالیٰ کے سواکوئی نہیں جانتا، '(4) نہیں جانتا، فرمانِ الہی ہے کہ'' تیرے رب کے لشکروں کواس کے سواکوئی نہیں جانتا۔''(4)

حضرتِ ابن عباس رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ہے جہنم کی وسعت کے متعلق سوال کیا گیا تو اُنہوں نے فر مایا: بخدا! میں نہیں جانتا کہ جہنم کتنا وسیع وعریض ہے کیان ہم اتنا جانتے ہیں جہنم پر متعین فرشتوں میں سے ہرایک اتنا عظیم ہے کہ ان کے کان کی کو اور کند ھے کا درمیانی فاصلہ ستر سال کے سفر کے برابر ہے اور جہنم میں پیپ اور خون کی وادیاں بہتی ہیں۔
تر مذی شریف کی حدیث ہے کہ جہنم کی دیواروں کی چوڑائی چالیس سال کے سفر کے برابر ہے۔ (⁵⁾

مسلم شریف کی روایت ہے:حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا تمہاری بیآ گجہم کی آگ کے سَتَّر ویں حصہ کی گرم ہے۔حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا:

^{1}ترجمهٔ كنز الايمان: سخت كرّ (طاقةورفرشة) - (ب ٢٨ ، التحريم: ٦)

البوارلابن رجب الاحبار، ٥/٥، ١٥٠٤، الحديث ٧٥٣١ و التخويف من النار والتعريف بحال دار البوارلابن رجب الحنبلي، ص٢٢٦

^{3}ترجمهٔ كنزالايمان: الريانيس داروف بين _ (ب٢٩، المدثر: ٣٠)

^{4}ترجمهٔ كنز الايمان: اورتمهار ررب ك الشكرول كواس كيسواكوئي نهيل جانتا (ب ٢٩ ، المدشر: ٣١)

^{5} ترمذی ، کتاب صفة جهنم ، باب ما جاء في صفة شراب أهل النار، ٢٦٣/٤، الحديث ٩٣ ٢٥

جہنم کی آگ اس کی گرمی ہے اُنہتر جھے زیادہ گرم ہے۔

فر مانِ نبوی ہے کہ اگر جہنمیوں میں سے کوئی جہنمی اپنی تھیلی دنیا میں نکال دیواس کی گرمی سے دنیا جل جائے اور جہنم کے فرشتوں میں سے کوئی فرشتہ دنیا میں ظاہر ہواورلوگ اسے دیکھ لیں تو اس کے جسم پر غضب الہی کے بے انتہا آثار دیکھ کر دنیا کے سب لوگ ہلاک ہوجائیں۔(2)

مسلم وغیرہ کی حدیث ہے:حضور صَلِّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم صحابہ کے ساتھ بیٹھے ہوئے تھے کہ آپ نے دھما کہ سنا،حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم وَعَرِه کی حدیث ہے۔ آپ نے دھما کہ سنا،حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا:
میاس پھر کے جہنم کی گہرائی میں گرنے کی آ واز ہے جو آج سے سَتَّر سال پہلے جہنم میں گرایا گیا تھا اور وہ اب اس کی گہرائی تک پہنچا ہے۔
(3)

حضرت عمر بن خطاب دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه فر ما یا کرتے تھے کہ جہنم کو بہت یا دکیا کر و کیونکہ اس کی گرمی شدید، اس کی گہرائی بہت بعیداوراس کے ہتھوڑے لوہے کے ہیں۔

حضرتِ ابن عباس رَضِيَ اللهُ عَنهُمَا فرما ياكرتے تھے كہ جہنم اپنے رہنے والوں كواس طرح اُ يك لے گی جيسے پرندے دانوں كوائي جيت بين اور آپ سے اس فرمانِ اللهي :

إِذَا مَا أَثُهُ مُرِّنُ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَعَيُّظًا وَّ اورجب وه أَنبيل دور سے دَکِھ گَاتُوه اس سے خصہ سے بھری زفیرا (4) جونی آواز سنیل گے۔

کے معنی دریافت کئے گئے کہ کیاجہنم کی بھی آئکھیں ہیں؟ تو آپ نے فرمایا: ہاں! تم نے رسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كا فرمان نہیں سنا کہ جوعمدً اکسی جھوٹی بات كوميرى طرف منسوب كرتا ہے وہ اپناٹھكانہ جہنم كی دوآئكھوں كے درميان سمجھے۔

[•] ١٥٢٣) الحديث ٣٠ (١٨٤٢) الخ ، باب في شدة حرنار...الخ ، ص ١٥٢٣ / الحديث ٣٠ (٢٨٤٢)

^{2}التذكرة للقرطبي، باب ما جاء في صفة جهنم...الخ، ص ٢٨١

^{3} مسلم كتاب الجنة...الغ، باب في شدة حرنار...الغ، ص ٥٢٣، الحديث ٣١- (٢٨٤٤)

^{•}تو جمهٔ كنز الايمان: جبوه أنبين دورجگه سے ديجھے گي توسنين گے اس كا جوش مارنا اور چنگھاڑنا - (ب٨١٠ الفرقان: ١٧)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے عرض كيا گيا كه كياجہم كى بھى آئكھيں ہيں؟ تو آپ نے فرمايا: كياتم نے بيفر مانِ الہی نہيں ۔ (1)

اس روایت کی وہ حدیث بھی تائید کرتی ہے جس میں ہے کہ جہنم سے گردن نکلے گی ، جس کی دوآ تکھیں دیکھنے کے لئے اور بولنے کے لئے زبان ہوگی ، وہ کہے گی کہ آج میں ہراس شخص پر مقرر کی گئی ہوں جواللہ تعالیٰ کے ساتھ شریک تھہرا تا تھا اور وہ انہیں اس پرندے سے بھی زیادہ تیزی سے دیکھ لے گی جو تِل پیند کرتا ہے اور زمین پراسے ڈھونڈھ لیتا ہے۔ (2)

میزان جس میں لوگوں کے اعمال تولے جائیں گے،اس کے متعلق نبی کریم صلّی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فر مایا کہ اس کا نیکیوں کاپلّہ نور کا اور برائیوں والا پلّہ ظلمت کا ہے۔⁽³⁾

تر ذری کی روایت ہے:حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ جنت عرشِ اللّٰی کے دائیں اور جہنم بائیں جانب رکھی جائے گی ،نیکیوں کا پلڑ ادائیں اور برائیوں کا پلڑ ااس کے بائیں طرف ہوگالہٰذانیکیوں کا پلڑ اجہنم کے مقابل ہوگا۔ (4)

حضرتِ ابن عباس رَحِبَ اللَّهُ عَنْهُمَا فرماتِ عَصَى كَنْكِيال اور برائيال السِيرَ از ومين تولى جائيں گی جس كے دو پلڑے اور زبان ہوگی۔ آپ فرمایا كرتے تھے: جب الله تعالیٰ بندوں كے أعمال تولئے كا ارادہ فرمائے گا تو آنہيں جسموں ميں تبديل فرمادے گا اور پھر قيامت كے دن آنہيں تولا جائے گا۔

.....☆....☆.....☆

النسجامع الاصول في احاديث الرسول، الكتاب التاسع، الباب الثالث، الفصل الاول، الفرع الثاني في صفة النار، نوع سادس،
 ١٠ ٤٧٦/١، تحت الحديث ٥٠٦٥ والتذكرة للقرطبي، باب ما جاء في شكوى النار و كلامها... الخ، ص ٣٨٤

التذكرة للقرطبي، باب ماجاء في شكوى النار و كلامها...الخ ،ص ٣٨٤ و جامع الاصول في احاديث الرسول، الكتاب
 التاسع ، الباب الثالث، الفصل الاول، الفرع الثاني في صفة النار، نوع سادس ، ٢٠١٠ ٤ ، تحت الحديث ٨٠٦٥

^{3}التذكرة للقرطبي، بيان كيفية الميزان...الخ، ص٣٠٢

^{4}نوادر الاصول ، الاصل الرابع في أدب الانتعال ، ١ /٣٥

(66 <u>- !</u>

مُذَمَّت تَكَبَّر و خود بيني ﴿

الله تعالیٰتم کواور مجھکود نیااور آخرت میں بھلائی کی توفیق دے، خوب غور کرلوکہ تکبر اور خود بنی فضائل سے دور کردیتے ہیں اور روز اکل کے حصول کا ذریعہ بنتے ہیں اور تیری رِ ذَالَت کے لئے اتنا ہی کا فی ہے کہ تکبر مجھے نصیحت سننے نہیں دیتا اور تواجھی عادتوں کے قبول کرنے سے پس و پیش کرتا ہے، اسی لئے دانشمندوں نے کہا ہے کہ حیااور تکبر سے علم ضائع ہوجا تا ہے، علم تکبر کے لئے مصیبت ہوتا ہے۔ فرمانِ نبوی ہے: وہ خص جنت میں نہیں جائے گا جس کے دل میں ایک دانے کے برابر بھی تکبر ہوگا۔ (1) فرمانِ نبوی ہے: جو تکبر کی وجہ سے اپنا کیڑ اکھیٹے ہوئے چاتا ہے، الله تعالیٰ اس کی طرف نظرِر حمت نہیں فرمائے گا۔ (2)

داناؤں کا قول ہے کہ تکبراورخود بینی کی وجہ ہے ملک ہمیشہ نہیں رہتااور الله تعالی نے بھی تکبر کا فساد کے ساتھ بیان فرمایا ہے چنانچ فرمانِ الہی ہے:

یہ آخرت کا گھر ہم ان لوگوں کوعطا کرتے ہیں جوز مین میں تکبر اور فسادنہیں جاہتے۔

تِلْكَالنَّامُ الْأَخِرَةُ نَجْعَلُهَ الِلَّذِينَ لَا يُرِينُ وُنَ عُلُوًّا فِي الْآنُونَ وَلَا فَسَادًا (3)

اور فرمانِ الهي ہے:

سَاصُرِفُ عَنْ الْبِينَ الَّذِنِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَنْ مِنْ بِغَيْرِ البِته مِن النَّولُول سے جوزمین میں تکبر اور فساد کرتے ہیں الْحَقِّ (4) الْحَقِّ (4) الْحَقِّ (4)

- 1 ترمذي، كتاب البر والصلة ، باب ماجاء في الكبر، ٢/٣٠ ، ١ ، الحديث ٢٠٠٥
- 2بخارى، كتاب اللباس، باب قول الله تعالى قل من حرم...الخ، ٤٥/٤، الحديث ٧٨٣ه
- 3توجمهٔ كنوالايمان: يه خرت كا گهر جم ان كيلي كرت بين جوز مين مين تكبرنبين چا جة اورند فساو (ب ٢٠ ، القصص: ٨٠)
- **4**.....تو جمهٔ کنز الایمان: اور میں این آیتول سے انہیں چیمردول گا جوز مین میں ناحق اینی بڑائی چاہتے ہیں ۔(پ۹، الاعراف: ۲۶٪)

ایک دانا کا قول ہے کہ جب میں کسی متکبر کودیکھتا ہوں تواس کے تکبر کا جواب تکبر سے دیتا ہوں۔

کہتے ہیں کہ ابن عوانہ انتہائی متکبرآ دمی تھا،اس نے ایک مرتبہ اپنے غلام سے کہا: مجھے پانی پلاؤ! غلام بولا: ہاں!
ابن عوانہ بین کرچلا یا کہ' ہاں' تو وہ کہے جے' نہ' کہنے کا اختیار ہو، یہ کہرکراسے طمانچے مارے اوراس نے مزارع کو بلاکراس سے بات چیت کی، جب گفتگو سے فارغ ہوا تو پانی منگوا کرکلی کی تا کہ اس سے گفتگو کی نجاست دور ہوجائے۔

اور کہا گیا ہے کہ فلاں نے خود کو تکبر کی اس سیڑھی پر پہنچا دیا ہے کہا گروہ گر گیا تو پھرٹوٹ پھوٹ جائے گا۔ جاحظ کا قول ہے کہ قرلیش میں بنوئخزُ وم اور بنواُ مَیْد کا تکبر مشہور تھا جبکہ عرب میں بنوجعفر بن کِلاَ ب اور بنوزُ رَا اَرہ بن عدی کا تکبر مشہور تھا اور آگا ہر ہ⁽¹⁾ لوگوں کو اپناغلام تصور کرتے تھے اورخود کوان کا مالک تصور کرتے تھے۔

بنوعبدالدار فنبیلہ کے ایک آ دمی سے کہا گیا کہتم خلیفہ کے پاس کیوں نہیں آتے ؟ وہ بولا: میں اس بات سے ڈرتا ہوں کہ وہ پُل میرے عزت واحتر ام کونہیں اٹھا سکے گا۔

حُجَاً جَ بِن اَرْطَا ق سے کہا گیا کیا وجہ ہے کہتم جماعت میں شامل نہیں ہوتے ،اس نے جواب دیا کہ میں دکا نداروں کے قرب سے گھبرا تا ہوں۔

اور بیری کہا گیا ہے کہ وَاکل بن جُرْحضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَ بال آيا اور آپ نے اسے زمين كاليك مكراديا اور حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَ بال آيا اور آپ نے اسے زمان و كھادواور لكھ بھى دو!

چنانچ حضرت معاویہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه شدیدگری کے عالم میں اس کے ساتھ روانہ ہوئے ، وہ اونٹنی پر سوار ہو گیا اور آپ پیدل چلنے لگے ، جب انہیں گری نے نہایت منگ کیا تو انہوں نے اسے کہا کہ مجھے اپنے بیچھے اونٹنی پر بٹھا لو۔ اس نے کہا: میں تہہیں اپنی اونٹنی پر نہیں بٹھا وَں گا کیونکہ میں ان بادشا ہوں میں سے نہیں جولوگوں کو اپنے بیچھے اونٹنیوں پر سوار کر لیتے ہیں۔

آپ نے فر مایا: میں ننگے یا وُں ہوں مجھےا پنے جوتے ہی دے دو، وائل بولا: اے ابوسفیان کے بیٹے! میں کجل

1اریان کے سلاطین جو کسر کی سے موسوم تھے۔

کی وجہ سے نہیں بلکہ اس وجہ سے تہہیں اپنے جوتے نہیں دیتا کہ میں اس بات کو اچھا نہیں سمجھتا کہ یمن کے بادشا ہوں کو رخیر ملے کہتم نے میرے جوتے بہنے ہیں البنة تمہاری عزت افزائی کے لئے اتنا کرسکتا ہوں کہتم میری اونٹنی کے سامیہ میں چلتے رہو۔

کہتے ہیں کہاس نے امیر معاویہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا زمانہ پایا اور وہ آپ کے دورِ حکومت میں ایک دفعہ آپ کے ہاں آیا تو آپ نے اسے اپنے ساتھ تخت پر بٹھایا اور گفتگو کی۔

مسر وربن ہندنے ایک آ دمی سے کہا کہتم مجھے پیچانتے ہو؟ وہ بولا کہ نہیں! مسر ورنے کہا میں مسر وربن ہند ہوں،اس آ دمی نے کہا: میں تجھے نہیں بیچانتا،مسر ورچلا کر بولا: خدااسے غارت کرے جو چاندکونہیں بیچانتا۔

ایسے ہی متکبروں کے بارے میں شاعرنے کہاہے: ۔

قولا لاحمق يلوى التيه اخدعه لو كنت تعلم ما في التيه لم تته

التيه مفسدة للدين منقصة للعقل مهلكة للعرض فانتبه

﴿1﴾ اس بے وقوف سے کہدوو کہ جو تکبر سے اپنے سرین مٹکا کرچل رہا ہے اگر تجھے معلوم ہوجائے کہ ان میں کیا ہے تو تو جیران نہ

يو_

﴿2﴾ تكبردين كافساد عقل كى كى كاباعث اورعزت كى بلاكت ب،اس فرردارره

اور کہا گیا ہے کہ ہر کمینہ آ دمی تکبر کرتا ہے اور ہر بلند مرتبہ آ دمی اکساری کواپنا تا ہے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ تین چیزیں ہلاک کرنے والی ہیں، دائمی کجُل،خواہشاتِ نفسانی کی پیروی اورانسان کا خود کو بہت بڑاسمجھنا۔

حضرت عبدالله بن عَمرودَ ضِى اللهُ عَنْهُمَا عصمروى م كي حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فرمايا:

جب حضرت نوح عَلَيْهِ السَّلام کے وصال کا وقت قریب آیا تو انہوں نے اپنے بیٹوں کو بلا کرفر مایا: میں تہمیں دو چیزوں کا تھم دیتا ہوں اور دو چیزوں سے رو کتا ہوں میں تہمیں شرک اور تکبر سے رو کتا ہوں اور لَآ اِللّٰه اِلّٰا اللّٰهُ یر ﷺ

1شعب الايمان، الحادي عشر من شعب الايمان...الخ ، ١ / ٤٧١ ، الحديث ٧٤٥

تھم دیتا ہوں کیونکہ زمین وآسان اوران میں موجو دسب اشیاءایک پلڑے میں اور بیکلمہ دوسرے پلڑے میں رکھ دیا جائے تب بھی ریکلمہ بھاری رہے گا اورا گرآ سان وز مین ایک دائر ہے میں رکھ دیئے جائیں اور بیکلمہان کےاوپر رکھ دیا جائے تو وہ انہیں دوگئر ہے کردیگا اورتہ ہیں سُبُھن اللّٰہِ وَبحَمُدِہ پڑھنے کا حکم دیتا ہوں کیونکہ پیکمہ ہرچیزی نماز ہے⁽¹⁾ اوراسی کی وجہ سے ہر چیز کورز ق دیا جاتا ہے۔⁽²⁾

حضرت عیسی عَلَیْهِ السَّلام کا فرمان ہے: اس شخص کے لئے خوشخبری ہے جس کواللّٰہ یتعالی نے کتاب کاعلم دیا اور وہ متنكبر ہوكرنہيں مرا۔

حضرت عبدالله بن سلام دَضِيَ اللّه عَنْه ايك مرتبه ككريول كالتُصاسر يراهُمائ بإزار سے كررے، آپ سے سي نے کہا کہ آپ کوکٹر بوں کا گٹھااٹھانے کی کیا ضرورت پیش آگئی ہے حالانکہ آپ کوان کی ضرورت نہیں ہے، آپ نے فر مایا: میں نے جا ہالکڑیوں کا گٹھاسر براٹھا کر بازارہے گزروں تا کہ میرے دل میں سے تکبرنکل جائے۔ تفسير قُرْطَبي ميں فر مان الهي :

اوروه عورتیں اینے پیرز مین برنہ ماریں۔

وَلايَضْرِبْنَ بِأَنْ جُلِهِنَّ (3) کے بیمعنی ہیں کہ وہ اظہارِ زینت اورلوگوں کواپٹی طرف متوجہ کرنے کے لئے اگرابیا کریں توبیان کے لئے حرام ہے اوراسی طرح جو شخص تکبر کےطور پراپنا جوتا زمین پرزورز ور سے مار کر چاتا ہے تو یہ بھی حرام ہے کیونکہ اس میں سراسر تکبر ہی تکبرہے۔

يُثِيُّ سُن مجلس أَمَلَدَ بَيَّاتُ العِنْهِيَّةِ (رعوت اسلام)

¹..... يعنى عبادت ب_علمية

^{2}مسند احمد، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، ٢ / ٦٩٥ ، الحديث ٧١٢٣

النور: ۳۱) نانور: ۱۹ مورتین) زمین پر یا وَل زورت ند کمین _ (پ۱۸، النور: ۳۱)

(اب 67

یتیم سے بھلائی اور اس پر ظلم سے احتراز

بخاری شریف کی حدیث ہے کہ میں اور بیتیم کی کفالت کرنے والا جنت میں ایسے ہوئگے اور پھر آپ نے شہادت کی انگلی اور درمیانی اُنگلی کوتھوڑ اسا کھول کرانگی طرف اشارہ فر مایا۔ (1)

مسلم شریف کی حدیث ہے کہ حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: میں اور بیتیم کی پرورش کرنے والا، چاہوہ بیتیم اس کاعزیز ہویا کوئی غیر، جنت میں ایسے ہوں گے جیسے بید دوانگلیاں، اور مسجد حرام کی طرف اور درمیانی انگلی کی طرف اشارہ کیا۔ (2)

بَرُّاز کی حدیث ہے کہ جس نے کسی بیتیم کی پرورش کی ، چاہے وہ بیتیم اس کا عزیز ہی کیوں نہ ہو، پس وہ اور میں جنت میں ایسے ہول گے جیسے بیدونوں انگلیاں ملی ہوئی ہیں اور جس نے تین بیٹیوں کی پرورش کی وہ جنت میں ہوگا اور اسے راہ خدا میں روز ہ داروں اور نمازی مجاہد کے برابر ثواب ملے گا۔ (3)

ابن ماجہ شریف کی حدیث ہے کہ جس شخص نے تین پنیموں کی پرورش کی ذمہ داری اٹھالی وہ اس شخص کی طرح تواب پائے گا، جورات کوعبادت کرتا ہے اور دن کوروزہ رکھتا ہے اور راہِ خدا میں جہاد کرنے کے لئے تلوارلیکرنکل کھڑا ہوتا ہے، میں اور وہ جنت میں ایسے دو بھائی ہوں گے جیسے یہ دوانگلیاں ملی ہوئی ہیں، پھر آپ نے اُنگشتِ شہادت اور درمیانی انگلی کو ملایا۔ (4)

تر مذی نے بسند صحیح روایت کی ہے کہ جس شخص نے کسی مسلمان بیتیم کی کھانے پینے کے معاملے میں کفالت کی تو

^{1}بخارى، كتاب الطلاق ، باب اللعان ، ٤٩٧/٣ ، الحديث ٤٣٠٤

^{2}مسلم ، كتاب الزهد والرقائق ، باب الاحسان الى الارملة ... الخ ، ص ٩ ٢ ٥ ١ ، الحديث ٢٤ ـ (٢٩٨٣)

 ⁽٨) ، الحديث ٩٦٨٩ و الترغيب والترهيب ، كتاب النكاح، الترغيب في النفقة...الخ ، فصل (٨) ،
 ٣٠٥٧ ، الحديث ٣٠٥٧

^{4}ابن ماجه، كتاب الادب، باب حق اليتيم، ٤/٤ ١، الحديث ٣٦٨٠

الله تعالیٰ اسے جنت میں بھیجے گا مگر یہ کہ وہ کوئی ایسا گناہ کرے جولائق سبخشش نہ ہو۔

تر ندی کی بسندهسن روایت ہے کہ جس کسی نے بیٹیم کی پرورش کی یہاں تک کہ وہ اپنے پیروں پر کھڑا ہونے کے لائق ہو گیا تواللہ تعالیٰ اس کے لئے جنت واجب کر دیتا ہے۔ (2)

ابن ماجہ کی حدیث ہے: حضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فر مایا کہ مسلمانوں کاسب سے بہتر گھروہ ہے جس میں کسی بیتم سے اچھاسلوک کیا جاتا ہے اور ایک مسلمان کا برا گھروہ ہے جس میں کسی بیتیم کود کھاور تکلیف پہنچائی جاتی ہے۔ (3)

ابویعلی نے بسند حسن روایت کی ہے، حضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فر مایا: میں پہلا شخص ہوں گا جس کیلئے جنت کا دروازہ کھلے گا مگر میں ایک عورت کو اپنے آ گے دیکھر پوچھوں گا کہتم کون ہواور مجھ سے پہلے کیوں جارہی ہو؟ وہ کہا گی میں ایسی عورت ہوں جو اپنے بیتیم بچوں کی پرورش کے لئے گھر بیٹھی رہی۔ (4)

طبرانی کی روایت ہے جس میں ایک کے سواسب راوی ثقہ ہیں اور اس کے باوجود بیروایت متر وکنہیں ہے۔ قسم ہے اس ذات کی جس نے مجھے حق کے ساتھ مبعوث فرمایا ہے، الله تعالی قیامت کے دن اس شخص پر عذاب نہیں کرے گا جس نے بیتم پر رحم کیا اور الله تعالی کے دیئے ہوئے مس نے بیتم پر رحم کیا اور الله تعالی کے دیئے ہوئے مال کی وجہ سے اسے اپنی پناہ میں لے لیا اور اس پر زیادتی وظم نہیں کیا۔ (5)

امام احمد رَضِیَ اللّهُ عَنْه وغیرہ کی حدیث ہے کہ جس شخص نے اللّه کی خوشنو دی کے لئے کسی بیتیم کے سر پر ہاتھ پھیرا تو اسے ہراس بال کے بدلہ میں جواس کے ہاتھ کے نیچ آیا، نیکیاں ملیں گی اور جس شخص نے کسی بیتیم سے نیکی کی یااس کی پرورش کی تو میں اور وہ جنت میں دوا فگلیوں کی طرح ہوں گے۔ (6)

محدثین کی ایک جماعت نے بیرحدیث روایت کی ہے اور حاکم نے اس کوچی کہا ہے کہ اللہ تعالی نے حضرتِ یعقوب عَلَيْهِ السَّلام سے فرمایا کہ تیری آئکھوں کی بینائی چلے جانے ، کمر جھک جانے اور پوسف عَلَيْهِ السَّلام کے ساتھ بھائیوں کے

- ۱۹۲٤ الجديث ۱۹۲۶ البر والصلة، باب ماجاء في رحمة اليتيم...الخ ، ۳۲۸/۳، الحديث ۱۹۲٤
- 2مسند احمد ، مسند الكوفيين، حديث مالك بن الحارث رضي الله تعالى عنه ، ٢٧/٧، الحديث ١٩٠٤٧
 - 3ابن ماجه، كتاب الادب ، باب حق اليتيم ، ٢٩٣/٤ ١ الحديث ٣٦٧٩
- 4مسند ابي يعلى، ٥/٠١٠، الحديث ٦٦٢١ المعجم الاوسط، ٢٩٦٦، الحديث ٨٨٢٨
 - 6مسند احمد ، مسند الانصار، حديث ابي امامة الباهلي، ٢٧٢/٨ ، الحديث ٥ ٢٢٢١

صَحِحَیْن نے حضرت ابو ہر برہ ورَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے روایت کی ہے کہ حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فر مایا کہ بیوہ ، یتیم اور مسکین کی پرورش کرنے والا ایسا ہے جیسے راہِ خدا میں جہاد کرنے والا ہوتا ہے۔ راوی کہتا ہے: غالبًا آپ نے بیھی فر مایا کہ وہ اس شخص کی طرح اَجر پاتا ہے جوراتوں کوعبادت کرتا ہے اور دن میں روزہ سے رہتا ہے۔ (2)

ابن ماجہ کی حدیث ہے کہ بیوہ اور مسکین کی تگہداشت کرنے والامجاہد فی سبیل الله ہےاوراس شخص کی طرح ہے جو را توں کوعبادت کرتا ہےاوردن کوروز ہ رکھتا ہے۔ ⁽³⁾

بزرگانِ سلف میں سے ایک سے منقول ہے کہ میں ابتدائی زندگی میں عادی شرابی اور بدکارتھا، میں نے ایک دن
کسی بیٹیم کودیکھا تواس سے نہایت اچھا برتاؤ کیا جیسے باپ اپنے بیٹے سے کرتا ہے بلکہ اس سے بھی عمرہ سلوک کیا۔ جب
میں سویا تو خواب میں دیکھا کہ جہنم کے فرشتے انہائی بے دردی سے مجھے گھیٹتے ہوئے جہنم کی طرف بیجار ہے ہیں اور
اچا تک وہ بیٹیم درمیان میں آگیا اور کہنے لگا: اسے چھوڑ دوتا کہ میں رب سے اس کے بارے میں گفتگو کرلوں مگرانہوں
نے انکار کردیا، تب ندا آئی: اسے چھوڑ دو! ہم نے اس بیٹیم پررحم کرنے کی وجہ سے اسے بخش دیا ہے، پھر میں جاگ پڑا
اوراسی دن سے میں تیموں کے ساتھ انہائی باوقار سلوک کرتا ہوں۔

سادات کے کھاتے پیتے گھر انوں میں سے ایک گھر میں سیدزادیاں رہتی تھیں، خدا کا کرناایسا ہوا کہان کا باپ فوت ہو گیااوروہ کم سن جانیں بیتیم اور فقر وفاقہ کا شکار ہو گئیں یہاں تک کہانہوں نے شرم کی وجہ سے اپناوطن چھوڑ دیا، وطن

- 1الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثامنة بعد مائتين، اكل مال اليتيم، خاتمة...الخ، ٢٨٦/١ والمستدرك للحاكم، كتاب التفسير، تفسير سورة يوسف، ٨٨/٣، الحديث ٣٣٨١ و الترغيب والترهيب، كتاب البر والصلة، الترغيب في كفالة...الخ، ٢٨٢/٣، الحديث ٣٨٩٢ من كلاهما ماحوذًا
 - 2 بخارى، كتاب الادب، باب الساعى على المسكين، ٢/٤، ١٠١٠ الحديث ٢٠٠٧
 - 3ابن ماجه، كتاب التجارات، باب الحث على المكاسب، ٧/٣، الحديث ٢١٤٠

سے نکل کر کسی شہر کی ویران مبجد میں تھہر گئیں، ان کی ماں نے انہیں وہیں بٹھایا اورخود کھانا لینے کے لئے باہر نکل گئ۔ چنانچہوہ شہر کے ایک امیر شخص کے پاس پینچی جومسلمان تھا اور اسے اپنی ساری سر گذشت سنائی مگروہ نہ مانا اور کہنے لگا: تم ایسے گواہ لاؤ جوتمہار سے بیان کی تصدیق کریں تب میں تمہاری امداد کروں گا اور وعورت یہ کہ کروہاں سے چل دی کہ میں غریب الوطن گواہ کہاں سے لاؤں؟ پھروہ ایک مجوتی کے پاس آئی اور اسے اپنی کہانی سنائی، چنانچہ اس مجوتی نے اس کی باتوں کو سیج سمجھ کرا ہے بیہاں کی ایک عورت کو بھیجا کہ اسے اور اس کی بیٹیوں کو میرے گھر پہنچا دو، اس شخص نے ان کی عزت اور احترام میں کوئی وقیقہ فروگز اشت نہ کیا۔

جب آ دھی رات گزرگی تواس مسلمان امیر نے خواب میں دیکھا کہ قیامت قائم ہوگئی ہےاور نبی کریم صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے اپنے سرمبارک پرلواءالحمد با ندھاہے اورا یک عظیم الشان محل کے قریب کھڑے ہیں اس امیر نے آ گے بڑھ کر يو چھانيادسول الله! بيل كس كا ہے؟ آپ نے فرمايا: ايك مسلمان مرد كے لئے ہے، امير نے كہا: ميں خدا كوايك ماننے والامسلمان ہوں ،حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے بين كرفر مايا كتم اس بات كے گواه لاؤكه واقعى تم مسلمان ہو۔وہ بہت پریشان ہوا تو حضور صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے اسے اس سيده عورت كى بات يا دولا كى جس سے اس نے گواہ ما نگے تھے۔ امیر بیاسنتے ہی احیا نک جاگ کھڑا ہوااورا سے انتہائی غم وائدوہ نے آگھیرا، وہ اس سیدہ عورت اوران کی بجیوں کی تلاش میں نکل کھڑا ہواا در تلاش کرتے کرتے اس مجوی کے گھر جا پہنچا اوراس سے کہا کہ بیسیدزادی اوراس کی بچیوں کو مجھے دے دومگر مجوی نے انکار کردیا اور بولا: میں نے ان کےسبب عظیم برکتیں یائی ہیں ،امیر نے کہا: مجھ سے ہزار دینار لےلواور انہیں میرے سپر دکر دولیکن اس نے پھر بھی انکار کر دیا۔ تب اس امیر کے دل میں اسے تنگ کرنیکا خیال آیا اور مجوسی اس کی بری نبیت دیکھ کر بولا: جنہیں تم لینے آئے ہو، میں ان کائم ہے زیادہ حقدار ہوں اور تو نے خواب میں جو کل دیکھا ہے وہ میرے لئے بنایا گیاہے، کیا تجھے اپنے مسلمان ہونے کا فخر ہے، بخدا! میں اور میرے گھر والے اس وفت تک نہیں سوئے جب تک کہ ہم سب اس سیدہ کے ہاتھ پر اسلام نہیں لائے اور میں نے بھی تیری طرح خواب میں دسول الله صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم كَى زيارت كى باورة پ نے مجھ سے فرمايا: كياسيدزادى اوراس كى ينيال تيرے ياس بين؟ ميس نعوض كيا: جي بان إيباد سول الله اآپ نے فرمایا: ميل تيرے اور تيرے گھر والوں كے لئے ہے۔ مسلمان اميريہ بات سنتہ ہی واپس لوٹ گیا اور اللہ تعالیٰ بہتر جانتا ہے کہ وہ کس حرمان ویاس کے ساتھ واپس ہوا ہوگا۔

اب (68)



فر مانِ الہی ہے

يَا يُنْهَا الَّذِينَ إُمَنُوْ الا تَأْكُلُو اَ أَمُوالكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ (1) اورتم ايك دوسر كامال ناحق فد كا و

اس آیت کے معنی میں اختلاف ہے لہٰذاا ہے سود، جُوا، عُصَب، چوری، خیانت، جھوٹی گواہی اور جھوٹی قسم کھا کر مال ہتھیانے کے معنوں میں لیا گیاہے، حضرتِ ابن عباس دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمّا کا قول ہے: اس ہے مرادوہ چیزیں ہیں جو انسان ناحق حاصل کرلیتا ہے۔ کہتے ہیں کہ جب بی آیت نازل ہوئی تولوگوں نے ایک دوسرے کے ہاں پچھ کھانا پینا بھی ممنوع سمجھ لیا، تب سور ہُ نور کی بی آیت نازل ہوئی:

''تم پرکوئی مضا نفینہیں ہے کہتم اپنے گھروں سےاوراپنے والدین کے گھروں سے کھاؤ۔''⁽²⁾

اوربعض نے کہا ہے کہ اس سے مراد غلط ہجے ہے اور حضرتِ ابن مسعود رَضِی اللّٰهُ عَنْه کے اس قول سے کہ 'بیآیت محکمات میں سے ہے جس کا تھم قیامت تک باقی رہے گا۔' اس سے مراد ہے کہ ناحق طریقہ سے کھا نا ہراس چیز کوشامل ہے جو غلط طریقے سے حاصل کی جائے ، چاہے وہ ظلم کر کے لی جائے جیسے فَصَب، خیانت اور چوری وغیرہ ، یا لَہُو ولَعِب سے حاصل کی جائے جیسے بُوایا کھیل کو د کے ذریعہ حاصل کریں ، یا مکر اور دھو کہ سے حاصل کی جائے جیسے نا جائز طور پر خرید وفروخت کی جائے جیسے نا جائز طور پر خرید وفروخت کی جائے اور میرے اس قول کی تائید میں بعض علاء کا قول بھی ہے کہ بیآییت انسان کے اپنے مال کو بھی نا جائز طریقوں سے حرج کرنے کی ممانعت پر دلالت کرتی ہے اور دوسروں کے مال کو مذکورہ بالاصور توں میں سے کسی صورت میں حاصل کرنے کی بھی ممانعت کرتی ہے۔

[•] انساء: ٢٩) من الايمان: الايمان: الساء: ٢٩) يس مين ايك دوسر عدك مال ناحق ندكها و (ب٥، النساء: ٢٩)

^{2}ترجمهٔ كنز الايمان: اورنتم ميس كى پر (مضائقه) كه كهاؤا پني اولاوك كريا بني باپ كرهم- (ب١٨، النور: ٦١)

مكاشفة القلوب

٤٧٤

اور فرمان الهي: "مگريه كه تجارت مو "(1)

اس میں اِستْنائے مُنْفَظِع ہے یعنی تجارت کے ذریعہ ممال لے سکتے ہو کیونکہ تجارت اس میں سے ہیں ہے جس کی ممانعت کردی گئی ہے، خواہ اس کو کسی معنی پڑھمول کیا جائے اور اس کی تاویل سبب سے کرنا تا کہ اِستْناءُ مُنْفِل بن جائے ، درست نہیں ہے اگر چہ تجارت بنادلہ کے عقد کے ساتھ خاص ہے گردوسرے دلائل کی روشی میں اس کا اطلاق قرض و جائے ، درست نہیں ہے اگر چہ تجارت بنادلہ کے عقد کے ساتھ خاص ہے کہ خوش دلی اور جائز طریق پر ہو، کھانے کا جبہ پر بھی ہوتا ہے اور فر مانِ اللی: عَنْ تَدَافِن مِنْ اللّٰ مُنْ اس لئے ہے کہ عام طور پر کھانا ہی مقصود ہوتا ہے، یہ بالکل اس خصوصی ذکر کرنا قیدلگانے کے لئے نہیں ہے بلکہ صرف اس لئے ہے کہ عام طور پر کھانا ہی مقصود ہوتا ہے، یہ بالکل اس طرح ہے جیسے:

اِتَّ الَّذِيْثَ يَاكُلُوْنَ آمُوالَ الْيَتْلَى ظُلُمَّا اِنَّمَا يَأَكُلُوْنَ فِي بُطُوْنِهِمْ نَامًا اللهِ عَل

اس سلسلہ کے دلائل کثیر اور احادیث مقدسہ میں اس کے متعلق وارد شدہ تنبیہات بیثار ہیں جن میں سے ہم بعض کا ذکر کئے دیتے ہیں۔

مسلم وغیرہ میں حضرت ابو ہر ریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا:اللّٰه تعالیٰ پاک ہے، وہ پاک چیزوں کو قبول فر ماتا ہے اور اس نے مومنوں کو وہی حکم دیا ہے جو اس نے رسولوں کو دیا ہے، چنانچہ فر مانِ الٰہی ہے:

اے رسولو! پا کیزہ چیز وں میں سے کھا وَاورا چھے ممل کرو۔

يَا يُّهَاالرُّسُلُ كُلُوْامِنَ الطَّيِّلِتِ وَاعْمَلُوْاصَالِحًا لِلْ

اوردوسری آیت میں فرمایا:

ا مومنو ہمارے دیئے ہوئے رزق میں سے یا کیزہ چیزیں کھاؤ۔

يَاكَيُّهَا الَّنِ يُنَ إَمَنُوا كُلُوْا مِنْ طَيِّلْتِ مَا مَرَوَ قُنْكُمُ (⁽⁵⁾

①ترجمهٔ كنز الايمان: ممريككوكي سووا (ب) _ (ب٥، النساء: ٢٩)

^{2}ترجمهٔ كنز الايمان: (سريكونى سودا) تهمارى با جمى رضا مندى كا مورب، النساء: ٢٩)

انساء: ١٠) من الايمان: وه جونيتيمون كامال ناحق كھاتے ہيں وه تواپنے پيٹ ميں نرى آگ بھرتے ہيں۔(پ٤، النساء: ١٠)

المؤمنون:١٥) عنز الايمان: اعيغمرو! يا كيزه چيزي كهاؤاورا چهاكام كرو-(ب١٠١٠ المؤمنون:١٥)

البقرة: ۱۷۲)

پھرآپ نے ایسے آ دمی کا تذکرہ فرمایا جوطویل سفر کے بعد بکھر ہے بالوں اور غبار آلود چیرے کے ساتھ آتا ہے اور آسمان کی طرف ہاتھ اٹھا کرا ہے اللہ! اے اللہ! کہتا ہے حالا نکہ اس کا کھانا پینا، لباس اور غذاسب حرام ہوتا ہے، اس صورت میں اس کی دعارتِ جلیل کیسے قبول فرمائے گا۔ ⁽¹⁾

> طبرانی نے اسنادِ حسن سے بیروایت کی ہے کدرز قِ حلال تلاش کرنا ہر مسلمان پرواجب ہے۔ (2) طبرانی اور بیہق کی روایت ہے کہ فرائض نماز کے بعدرز قِ حلال طلب کرنا بھی فرض ہے۔ (3)

تر مذی اور حاکم کی حدیث ہے کہ جس نے حلال کھایایا سنت کے مطابق عمل کیا اور لوگ اس کے شریعے محفوظ رہے، وہ جنت میں جائے گا۔ صحابہ کرام نے عرض کی نیاد سول الله! بیر چیز تو آج آپ کی اُمت میں بہت ہے، آپ نے فرمایا میرے بعد کچھوفت ایساہی ہوگا۔ (4)

احمد وغیرہ نے اسنادِ حسن کے ساتھ روایت کی ہے: جب تیرے اندر جار چیزیں ہوں تو دنیا کی کوتا ہیاں تخجے نقصان نہیں دیں گی ،امانت کی نگہبانی ،راست گوئی ،حسنِ خُلق اور رزقِ حلال ۔ (5)

طبرانی کی حدیث ہے:اس کے لئے خوشخبری ہے جس کا کسب عدہ، باطن سیحے، ظاہر باعزت اور لوگ اس کے شر سے محفوظ ہوں،اسے خوشخبری ہوجس نے علم کے ساتھ ممل کیا، زائد مال راہِ خدا میں خرچ کیا اور غیر ضروری باتیں کرنے سے اجتناب کیا۔

طبرانی میں ہے:حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا اے سعد! حلال کا کھانا کھا، تیری دعا نیں قبول ہونگی ہتم ہے اس ذات کی جس کے قبضہ و قدرت میں محمد (صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم) کی جان ہے جب آ دمی اپنے پیٹ میں حرام کالقمہ ڈالٹا ہے تو اس کی وجہ سے اس کی حیالیس دن کی عبادت قبول نہیں ہوتی، جو بندہ حرام سے اپنا گوشت بڑھا تا ہے (جہنم کی)

^{1}مسلم ، كتاب الزكاة ، باب قبول الصدقة ... الخ ، ص ٢ . ٥ ، الحديث ٦٥ ـ (١٠١٥)

^{2}المعجم الاوسط، ١/٦٢٦ الحديث ٨٦١٠

^{3}المعجم الكبير، ١٠٤/٠ الحديث ٩٩٩٣

^{4} ترمذی ، کتاب صفة القیامة ، باب ۲۰ ، ۲۳۳/٤ ، الحدیث ۲۵۲۸

^{5}مسند احمد ، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، ١/٢ ٥٩ ، الحديث ٦٦٦٤

^{6}المعجم الكبير،٥/٧١، الحديث ٢٦١٦

آگاس کے بہت قریب ہوتی ہے۔(1)

مند برزاز میں بسند منکر روایت ہے کہ اس کا دین نہیں جس میں امانت نہیں اور نہ اس شخص کی نماز اور زکو ہے جس نے حرام کا مال پایا اور اس میں سے قیص پہن لی ،اس کی نماز قبول نہیں ہوگی ، جب تک کہوہ اسے اتار نہیں ویتا کیونکہ شانِ الٰہی اس چیز سے بلندو بالا ہے کہوہ ایسے خص کی نماز قبول کرے یا کوئی اور عمل قبول کرے کہ جس کے جسم پر حرام کالباس ہو۔ (2)

احمدنے حضرت ابن عمردَ عِن اللهُ عَنهُمَا سے روایت کی ہے: انہوں نے فر مایا: جس شخص نے دس درہم کا کپڑاخریدا اوراس میں ایک درہم حرام کا تھا، جب تک وہ کپڑااس کے جسم پر رہتا ہے، اللّٰہ تعالیٰ اس کی نماز قبول نہیں فر ماتا، پھرانہوں نے اپنے دونوں کا نوں میں دوانگلیاں داخل کر کے فر مایا کہ اگر میں نے نبی کریم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کو بیفر ماتے ہوئے نہ سناہ وتو یہ دونوں بہرے ہوجا کیں۔

بیہ ق کی روایت ہے کہ جس نے چوری کا مال خریدا حالانکہ وہ جانتا ہے کہ یہ چوری کا مال ہے تو وہ بھی اس کی رسوائی اور گناہ میں شریک ہوگا۔ (4)

حافظ منذری نے قابلِ حسن اسنادیا موقوف سند کے ساتھ اور احمد نے بہ سندِ جید بید حدیث قتل کی ہے کہ حضور صَلَّی اللہ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا جسم ہے اس کی جس کے دستِ قدرت میں میری جان ہے کہم میں سے کوئی اپنی رسی لے کر پہاڑ کی طرف نکل جائے اور کٹریاں اکٹھی کر کے بیٹھ پرلا دکر لے آئے اور انہیں نیچ کر کھائے وہ اس سے بہتر ہے کہ وہ اپنے منہ میں حرام کالقمہ ڈالے۔ (5)

ا بن خزیمہ اور ابن حبان نے اپنی تیجے میں اور حاکم نے بیرحدیث نقل کی ہے کہ جس نے حرام کا مال جمع کیا ، پھر

^{1}المعجم الاوسط ، ٥/٥ ، الحديث ٥ ٦٤٩

^{2} مستد البزار، ۱/۳ ، الحديث ۸۱۹

^{3}مسند احمد، مسند عبدالله بن عمر بن انخطاب، ٢/٢ ١٤، الحديث ٧٣٦ ٥

^{4} شعب الايمان ، الباب الثامن والثلاثون...الخ ، ٤/٩٨٤ ، الحديث . . ٥٥

^{5}مسند احمد، مسند ابي هريرة ، ٦٨/٣، الحديث ٧٤٩٣

الصصدقة كرديا تواسے كوئى أجرنہيں ملے گااوراس كا گناہ أسى پررہے گا۔ (1)

طبرانی کی حدیث ہے کہ جس نے مالِ حرام حاصل کر کے اس سے کسی کوآ زاد کیا اور صلہ رحمی کی ، یہ اس کے لئے تواب کی بجائے عذاب اور گناہ کا موجب ہوگا۔ (2)

احمد وغیرہ نے بیحدیث نقل کی ہے جس کی سند کو بعض محدثین نے حسن کہاہے کہ الله تعالی نے جیسے تہمارے در میان رزق تقسیم کر دیا ہے ایسے ہی عادات تقسیم کر دی ہیں۔

الله تعالی ہرانسان کو،خواہ وہ دنیا کواچھا ہمحھتا ہویا بُرا، دنیادیتا ہے اور دین اسے دیتا ہے جودین کو پبند کرتا ہے اور الله تعالی جے دین دیتا ہے اسے محبوب رکھتا ہے، بخدا! بندہ اس وفت تک کامل مسلمان نہیں بنیآ جب تک کہ اس کی زبان اور دل سے لوگ سلامت ندر ہیں اور اس وقت تک بندہ مؤمن نہیں بنیآ جب تک اور دل اسلام ندلائے اور اس کی زبان اور دل سے لوگ سلامت ندر ہیں اور اس وقت تک بندہ مؤمن نہیں بنیآ جب تک اس کے ہمسائے اس کے کینے اور ظلم سے محفوظ نہ ہوں اور بندہ حرام کی کمائی سے جو پچھے حاصل کرتا ہے اس میں سے اس کا صدقہ قبول نہیں ہوتا اور نہ ہی راہِ خدا میں اس کو دینے سے اس کے مال میں برکت ہوتی ہے اور جو مال وہ اپنے بیچھے کو شرخ جا تا ہے وہ اس کے لئے جہنم کا سامان ہوتا ہے، بے شک الله تعالی برائی سے برائیوں کو نہیں مٹا تا بلکہ نیکیوں سے برائیوں کومٹا تا ہے ، بے شک خبیث چیز سے خبیث چیز نہیں مٹا ہی ہوتی ۔ (3)

تر مذی نے حسن جیجے اور غریب قرار دے کریے حدیث نقل کی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے ان چیزوں کے بارے میں پوچھا گیا جن کی وجہ سے اکثر لوگ جہنم میں جائیں گے، آپ نے فر مایا: منہ اور شرمگاہ، اور ان چیزوں کے متعلق سوال کیا گیا جن کے سبب اکثر لوگ جنت میں جائیں گے، آپ نے فر مایا: خوف خدا اور حُسنِ خُلق۔ (4) متعلق سوال کیا گیا جن کے سبب اکثر لوگ جنت میں جائیں گے، آپ نے فر مایا: خوف خدا اور حُسنِ خُلق۔ (4) تر مذی نے بسند صحیح میے حدیث روایت کی ہے کہ بندہ اس وقت تک قیامت کے دن نہیں ملے گا جب تک کہ اس سے چار چیزوں کا سوال نہیں ہوجائے گا، اس نے اپنی عمر کیسے پوری کی، اپنی جوانی کن کا موں میں صرف کی، مال کیسے

- 1 صحيح ابن حبان، كتاب الزكاة، باب صدقة التطوع، ٢٥٢/٤ ، الجزء الخامس، الحديث ٣٣٥٦
- الترغيب والترهيب ، كتاب البيوع وغيرها، الترغيب في طلب الحلال...الخ ، ۲/۰ °۲، الحديث ٢٦٨٣ و المعجم الكبير للطبراني ، ٠/١٠ ١ الحديث ١٠١١ ١
 - 3مسند احمد ، مسند عبدالله بن مسعود، ۳۳/۲ الحديث ۳٦٧٢
 - 4.....ترمذي، كتاب البروالصلة، باب ماجاء في حسن الخلق، ٤٠٤/٣ ، الحديث ٢٠١١ بالتقديم والتاخير

حاصل کیااور کہاں خرچ کیااوراینے علم پر کتناممل کیا۔ (1)

بیہ ق کی حدیث ہے کہ دنیا سر سبز اور شیریں ہے، جس شخص نے اس میں حلال طریقہ سے مال کمایا اور اسے سیجے طور پرخرچ کیا،اللّٰہ تعالی اسے اس کا تواب دے گا اور اسے جنت میں داخل فرمائے گا اور جس نے اس میں ناجا ئز طریقوں سے مال کمایا اور ناجا ئز طریقوں سے اسے خرچ کیا،اللّٰہ تعالیٰ اسے جہنم میں بھیجے گا اور ان بہت سے لوگوں کے لئے جو مال کمایا اور ناجا ئز طریقوں سے اسے خرچ کیا،اللّٰہ تعالیٰ اسے جہنم میں بھیجے گا اور ان بہت سے لوگوں کے لئے جو مال کی محبت میں اللّٰہ اور اس کے رسول کو بھول جاتے ہیں، قیا مت کے دن جہنم ہوگا۔ (2)

الله تعالى فرما تاہے:

كُلَّهَا خَبَتْ زِدُنْهُمُ سَعِيْرًا ۞ (3)

جب وہ بچھنے لگے گی ہم اس کی سوزش اور زیادہ کردیں گے۔

ابن حبان نے اپنی صحیح میں بیرحدیث نقل کی ہے کہ جو گوشت اور خون حرام کے مال سے پیدا ہوااس پر جنت حرام ہے اور جہنم اس کی زیادہ مستحق ہے۔ ⁽⁴⁾

تر فدی کی روایت ہے کہ جو گوشت مال حرام سے پرویش پاتا ہے، آگ اس کے لئے زیادہ مناسب ہے۔ ایک روایت میں ہے کہ جو گوشت ناجائز طریقوں سے حاصل کردہ مال سے پرورش پائے ،اس کے لئے آگ نیادہ مناسب ہے۔ (5)

ایک اور روایت میں بسند حسن نقل کیا گیاہے کہ وہ جسم جنت میں نہیں جائے گا جس نے حرام مال سے غذا حاصل کی ہو۔

.....☆.....☆......☆

^{1} ترمذي، كتاب صفة القيامة، باب في القيامة، ٤ / ١٨٨/ ، الحديث ٢٤٢٥

^{2} شعب الايمان، الباب الثامن والثلاثون...الخ ، ٢٩٦/٤، الحديث ٧٢٥٥

[•] استرجمهٔ کنز الایمان: جب بھی بچف پرآئے گی ہم اے اور بھڑ کادیں گے۔ (پ ۱۰ بنی اسرائیل: ۹۷)

^{4} صحيح ابن حبان، كتاب الحظر والاباحة، ذكر الاخبار بايجاب النار...الخ، ٢٣٦/٧، الحديث ٤٥٥

^{5}ترمذي ، كتاب السفر ، باب ما ذكر في فضل الصلاة ، ٢ / ١١ ٨ ، الحديث ٢١٤

^{6} المعجم الاوسط ، ٢٧١/٤ ، الحديث ٩٦١

X

اب 69

ممانعت سود خوری

سودخوری کی ممانعت میں کافی آیات نازل ہوئی ہیں اور بہت سی احادیث بھی اس سلسلہ میں وارد ہوئی ہیں، چنانچہ بخاری اور ابوداؤ دکی حدیث ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے جسم پرنقش گود نے والے اور نقش گدوانے والے، سود دینے والے اور سود لینے والے پرلعنت کی ہے اور کتے کی قیمت لینے اور بدکاریوں سے منع فرمایا اور تصویر بنانے والوں پرلعنت فرمائی ہے۔ (1)

احمد، ابویعلی میچ ابن خزیمه اور میخ ابن حبان نے حضرت ابن مسعود رَضِی اللّهُ عَنُه سے روایت کی ہے: انہوں نے فر مایا: سود لینے والا ، سود دینے والا ، اس پر گواہ بننے والے ، اس کی تحریر کرنے والے پر جبکہ اسے معلوم ہوکہ بیتح بر سود کے لئے ہور ہی ہے ، جسم پر پھول گود نے والے ، پھول گدوانے والے پر جواپی خوبصورتی کے لئے ایسا کرتا ہے ، صدقہ سے انکار کرنے والا اور بدوی جو بجرت کے بعد پھر مرتد ہوا ، سب محمد صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی زبان مبارک سے ملعون قراریائے ہیں۔ (2)

حاکم نے بسند صحیح روایت کی ہے: حضور صَلَّى اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ چار شخص ایسے ہیں جن کے لئے الله تعالیٰ نے لازم کردیا ہے کہ انہیں جنت میں داخل نہیں کرے گا اور نہ ہی وہ اس کی نعمتوں سے لطف اندوز ہوں گے، شرابی، سودخور، ناحق بیتیم کا مال کھانے والا اور والدین کا نافر مان۔ (3)

حاکم کی ایک روایت ہے جسے تیجے قرار دیا گیا ہے کہ سود کے تہتر دروازے ہیں جن میں سے سب سے کمتر ریہ ہے کہ جیسے کوئی شخص اپنی ماں سے نکاح کر لے۔ ⁽⁴⁾

^{1}بخارى، كتاب الطلاق ، باب مهر البغي ... الخ ، ٩/٣ ، ٥ ، الحديث ٧٤٧٥

^{2}مسند احمد، مسند عبدالله بن مسعود، ۲۱/۲ ا، الحديث ۹۰ ٤

٣٣٨/٢، المستدرك للحاكم ، كتاب البيوع ، باب اربى الربا...الخ ، ٣٣٨/٢ الحديث ٢٣٠٧

^{4}المستدرك للحاكم ، كتاب البيوع ، باب اربي الربا...الخ ، ٢٣٨/٢ ، الحديث ٢٣٠٦

بزاز نے بسند صحیح روایت کی ہے کہ سود کے کچھاو پرستر اُقسام ہیں،ای طرح شرک بھی ہے۔ ⁽¹⁾ بیہ قی کی روایت ہے کہ سود کے سَتَّر درواز ہے ہیں اور سب سے اد فیٰ بیہ ہے کہ انسان اپنی ماں سے بدکاری ہے۔ ⁽²⁾

طبرانی کبیر میں حضرت عبدالله بن سلام دَضِیَ اللهُ عَنه سے روایت کی ہے کہ دسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: وہ درہم جوانسان سود میں لیتا ہے،الله کے نز دیک حالت اسلام میں تینتیں 3 مرتبرز ناکرنے سے بھی بدتر ہے۔ (3)

اس روایت کی سند میں انقطاع ہے اور ابن ابی الدنیا اور بغوی نے اسے موقوقاً حضرتِ عبد الله بن سلام دَضِیَ الله عَنه سے روایت کیا ہے اور یہ حدیثِ موقوف بھی حدیثِ مرفوع کے حکم میں ہے کیونکہ ایک سودی درہم کا فدکورہ بالا تعداد میں زنا کرنے سے بھی الله تعالیٰ کے ہاں بہت بڑا گناہ ہونا، وحی کے بغیر معلوم ہونا ناممکن ہے، گویا کہ انہوں نے بیحدیث حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے تنی ہوگی۔

حضرتِ عبد الله دَخِیَ اللهٔ عَنْهُ کا کہنا ہے، سود کے بہتر ⁷² گناہ ہیں، اس کاسب سے اونی گناہ حالت إسلام میں کسی کا اپنی ماں سے زنا کرنے کے برابر ہے اور ایک سودی درہم کچھاو پر تمیں مرتبہ زنا کرنے سے بدتر ہے اور انہوں نے یہ بھی کہا کہ الله تعالی قیامت کے دن ہر نیک اور بَد کو کھڑے ہونے کی اجازت دے گا مگر سودخور کھڑ انہیں ہوگالیکن جیسے وہ خض کھڑا ہوتا ہے جسے شیطان نے آسیب سے باؤلا کردیا ہو۔ ⁽⁴⁾

احد نے بسندِ جید حضرتِ کعب احبار رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے روایت کی ہے کہ میں تینتیں قی مرتبہ زنا کرنے کو ایک درہم سود کھانے سے اچھا سمجھتا ہوں ، جب میں سود کما وُل توالله ہی جانتا ہے کہ میں کیا کھار ہا ہوں۔ (⁵⁾

¹ ۹۳۵ البزار، ۱۹۳۵، الحديث ۱۹۳۵

^{2} شعب الايمان، الباب الثامن والثلاثون... الخ، ٤/٤ ٣٩، الحديث ٢٠٥٥

الحديث ٩٧٧٧ و المعجم الكبير للطبراني، ١١٤/١، الحديث ٩٧٧٧ و المعجم الكبير للطبراني، ١١٤/١،
 الحديث ١١٢١٦

٢٠٤٧ الحديث ٢٠٤٧ البيوع، باب وعيد آكل الربا، ٢٣٩/٤ الحديث ٢٠٤٧

٢٢٠١٧ ، الحديث عبدالله بن حنظلة...الخ ، ٢٢٣/٨ ، الحديث ٢٢٠١٧ .

احمد نے بسند صحیح اورطبرانی نے بیرحدیث نقل کی ہے کہ حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: انسان کا جان ہو جھ کر ایک درہم سودکھانا تینتیں ³³مرتبہزنا کرنے سے بدتر ہے۔ ⁽¹⁾

ابن انی الدنیا اور بیمبی کی روایت ہے کہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے صحابہ کرام کوخطبہ دیا اور سوداوراس کی برائیاں بیان کرتے ہوئے فرمایا کہ ایساایک درہم جسے آ دمی بطور سود لیتا ہے،اللّٰہ تعالیٰ کے ہاں انسان کے بینتیس مرتبہ زنا کرنے سے زیادہ بُرا ہے اور سب سے بڑا سود مسلمان کے مال میں سے بچھ لینا ہے۔ (2)

طبرانی نے صغیراوراوسط میں روایت کی ہے: حضور صَلَّى اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ جس شخص نے ناجائز طور پر کسی ظالم کی اعانت کی تا کہ وہ کسی کا مال دبالے تو ایبا شخص الله اوراس کے رسول کی ذمہ داری سے بری ہے اور جس نے ایک درہم سود کھایا وہ تینتیں مرتبہ زنا کرنے کے برابر ہے اور جس کا گوشت مالِ حرام کھا کر بڑھا، جہنم ایسے شخص کا زیادہ مستحق ہے۔ (3)

بیہ قی کی روایت ہے کہ سود کے پچھاو پرستر دروازے ہیں،اس کا سب سے کمتر گناہ حالت اسلام میں ماں سے زنا کرنے کے برابر ہے اور سود کا ایک درہم تربیر ن⁵ مرتبدزنا کرنے سے زیادہ براہے۔⁽⁴⁾

طبرانی نے اوسط میں عَمْرُ و بن راشد رَضِیَ اللّهُ عَنْه سے روایت کی ہے کہ سود کے بہتر دروازے ہیں ،ان میں سے ادفیٰ دروازہ (گناہ) آ دمی کا اپنی مال سے زنا کرنے کے برابر ہے اور سب سے بُر اسود سے کہ انسان اپنے بھائی کے مال کی طرف ہاتھ لمبا کرے (5) (سود میں مسلمان بھائی کا مال کے)۔

ابن ماجداور بیہ فی نے اَلِی مَعْشَر سے ، انہوں نے ابوسعید مَقْبُرِی سے اور انہوں نے حضرت ابو ہر ریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے روایت کی ہے کہ حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: سود میں ستر گناہ ہیں ،سب سے اونیٰ گناہ بیہ کہ جیسے آ ومی

- ❶مسند احمد، مسند الانصار، حديث عبدالله بن حنظلة...الخ، ٢٢٣/٨، الحديث ٢٢٠١٦
- 2موسوعة ابن ابي الدنيا ،كتاب الصمت وآداب اللسان، باب الغيبة وذمها ، ٢٧/٧ ، الحديث ١٧٥
 - 3المعجم الاوسط ، ٢ / ١٨٠ الحديث ٤٤٢
- ۱۷۱۵ من الرابع و الاربعون من شعب...الخ ، فصل فيماورد من الاخبار...الخ ، ۲۹۹/۵ الحديث ۲۷۱۵ و الترغيب و الترغيب و الترغيب من الغيبة...الخ ، ۳۹۷/۳ الحديث ٤٣٣٨
 - 6المعجم الاوسط، ٥/٢٢٧، الحديث ٧١٥١

اینی ماں سے نکاح کرلے۔⁽¹⁾

حاکم نے سند سیجے کے ساتھ حضرتِ ابن عباس رَضِیَ اللّهُ عَنْهُمَا ہے روایت کی ہے کہ حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے کی اللّه عَنه کی ہے کہ حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے کی اللّه کے سے بہلے بیچنے سے منع فرمایا ہے اور فرمایا: جب کسی شہر میں زِنا اور سود عام ہوجائے تو انہوں نے گویا خودہی اللّه کے عذاب کو وعوت دیدی ہے۔ (2)

ابویعلی نے سند جید کے ساتھ حضرتِ ابن مسعود رَضِیَ اللّهُ عَنُه ہے روایت کی ہے: انہوں نے حضور صَلَّی اللّهُ عَدَیْهِ وَسَلَّم کی حدیث بیان کرتے ہوئے فر مایا کہ سی قوم کا زنااور سود خوری ظاہر نہیں ہوتے مگر وہ لوگ عذابِ الٰہی کواپنے لئے حلال کر لیتے ہیں (3) (یعنی جوقوم زنااور سود خوری میں مبتلا ہے اس نے گویاعذابِ الٰہی کودعوت دی ہے)۔

احمد نے بیرحدیث نقل کی ہے: الی کوئی قوم نہیں جس میں سود چل نگے مگر وہ قحط سالی میں مبتلا کی جاتی ہے اور جس قوم میں زنا کی کثرت ہوجاتی ہے ،الله تعالیٰ اسے خوف اور قحطِ عام میں مبتلا کر دیتا ہے جیا ہے بارش ہی کیوں نہ ہوجائے۔(4)

احمدنے ایک طویل حدیث میں ، ابن ماجہ نے مختصراً اور اصبها نی نے اس حدیث کو بیان کیا ہے کہ حضور صَلَّہ اللهٰ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ جب مجھ معراج میں سیر کرائی گئی اور ہم ساتویں آسان پر پہنچ تو میں نے اوپر دیکھا تو مجھ بحلی کی کڑک اور گرج چیک نظر آئی ، پھر میں نے الیی قوم کو دیکھا جن کے پیٹ مکانوں کی طرح تھے اور باہر سے ان کے کڑک اور گرج چیک نظر آئی ، پھر میں نے الیی قوم کو دیکھا جن کے پیٹ مکانوں کی طرح تھے اور باہر سے ان کے

^{●}ابن ماجه، كتاب التجارات، باب التغليظ في الربا، ٧٢/٣، الحديث ٢٢٧٤

^{2}المستدرك للحاكم ،كتاب البيوع، باب اذا ظهر الزنا والريا...الخ ٣٣٩/٢ الحديث ٢٣٠٨

^{3}مسند ابي يعلى ٤/٤ ، ٢١ الحديث ٤٩٦٠

البيوع وغيرها، الترهيب من الربا، ٢/٧٠٤، تحت الحديث ٢٨٨٩ منداحمد كى روايت مين زناك ، بجائلفط" الرشا" البيوع وغيرها، الترهيب من الربا، ٢/٧٠٤، تحت الحديث ٢٨٨٩ منداحمد كى روايت مين زناك ، بجائلفط" الرشا" يجرس كامعنى برشوتين، يعنى جس قوم مين رشوتين عام بوجا كين به وسكتا بمترجم دَحْمَةُ اللّهِ تَعَالَى عَلَيْه كي پاس جونسخ بهواس مين "الرشا" كربجائ "الزنا" كما بو والله تعالى اعلم علميه

پیٹوں میں چلتے پھرتے سانپ نظر آ رہے تھے، میں نے پوچھا: جبریل! بیکون ہیں؟ انہوں نے جواب دیا کہ بیسودخور بیں (1)

اصبهانی نے حضرت ابوسعید خدری رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے روایت کی ہے کہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ جب مجھے آسانوں کی طرف معراج کرائی گئی تو میں نے آسانِ دنیا میں ایسے آدمیوں کو دیکھا جن کے پیٹ بڑے جب مجھے آسانوں کی طرف معراج کرائی گئی تو میں نے آسانِ دنیا میں ایسے آدمیوں کو دیکھا جن کے پیٹ بڑے ہوئے سے بڑے گھڑوں جیسے تھے، ان کے پیٹ بھکے ہوئے تھے اور وہ فرعون کے پیروکاروں کے راستوں میں پڑے ہوئے سے اور وہ ہرضج وشام جہنم کے کنارے کھڑے ہوکر کہتے: اے اللّٰہ! قیامت بھی قائم نہ کرنا، میں نے پوچھا: جبریل! بیکون ہیں؟ جبریل نے عرض کی کہ بیآ پ کی امت کے سودخور ہیں۔ وہ نہیں کھڑے ہوں گئر جیسے وہ خض کی کہ بیآ ہوتا ہے جسے شیطان آسیب سے باؤلا کردیتا ہے۔ اُصبہانی کا قول ہے کہ آلِ فرعون جوسج وشام آگ پر پیش کئے جاتے ہیں، انہیں روند تے ہوئے گزریں گے۔

طبرانی نے سند صحیح سے روایت نقل کی ہے، آپ نے فرمایا: قیامت سے پہلے زنا، سود اور شراب عام ہوجائے گا۔ (3)

طرانی نے قاسم بن عبد الله وَرَّاق رَضِیَ الله عَنه سے روایت کی ہے کہ میں نے حضرتِ عبد الله بن اَئِی اَوْفَی رَضِیَ اللهُ عَنه سے روایت کی ہے کہ میں نے حضرتِ عبد الله بن اَئِی اَوْفَی رَضِی اللهُ عَنه کوصیار فد (جہاں سود وغیرہ کا کاروبار ہوتا ہے) کے بازار میں دیکھا، وہ اہل بازار سے کہدرہے تھے اے اہل صیار فد! تنہیں خوشخبری ہو! انہوں نے کہا: الله آپ کو جنت کی خوشخبری دے، اے ابو محد! آپ ہمیں کس چیز کی خوش خبری دے مہیں ؟ آپ نے کہا: میں نے رسول الله صَدِّی اللهُ عَلیْهِ وَسَدَّم کوصیار فدے لئے فرماتے ساہے کہ انہیں آگ کی بشارت دے دو۔ (4)

طرانی کی حدیث ہے کہا ہے آپ کوان گناہوں سے بچاجن کی مغفرت نہیں ہوتی خیانت ایساہی ایک گناہ

^{1}مسند احمد ، مسند ابي هريرة ، ٣/٦٦ ، الحديث ٨٦٤٨

^{2} الترغيب والترهيب ، كتاب البيوع وغيرها ، الترهيب من الربا ، ٤٠٧/٢ ، الحديث ٢٨٩١

^{3}المعجم الاوسط، ٥/٦٨٦، الحديث ٥٩٦٧

^{4....}الترغيب والترهيب ، كتاب البيوع وغيرها، الترهيب من الربا، ٢٨٩٢ ، الحديث ٣٨٩٣

ہے، جوجس چیز میں خیانت کرتا ہے قیامت کے دن اسے اسی کے ساتھ لایا جائے گا، سودخوری، جوسود کھا تا ہے وہ قیامت کے دن اسے اس کے ساتھ لایا جائے گا، پھرآ پ نے بیآ بیٹر بھی:

جوسود کھاتے ہیں وہ اس شخص کی طرح کھڑ ہے ہوں گے جے شیطان آسیب سے باؤلا کردیتا ہے۔

اَصهانی کی حدیث ہے کہ قیامت کے دن سودخور پاگل کی طرح اپنے دونوں پہلو تھینچتا ہوا آئیگا، پھرآپ نے میہ آیت پڑھی:

''ووهاس شخص کی طرح کھڑے ہول گے جے شیطان آسیب سے پاگل کردیتا ہے۔''(2)

ابن ماجداور حاكم كى حديث ہے: حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمايا كد جوبھى سود سے اپنامال برُ ھاليتا ہے، آخر كاروہ تنگدتى كاشكار بنتا ہے۔ (3)

حاکم نے بسند سی پیشنگی ہے کہ سودخواہ کتنا ہی بڑھ جائے آخر کارقلت پر مُنْتَی ہوتا ہے۔

ابوداؤداورا بن ماجہ نے حسن رَضِیَ اللّهُ عَنْه ہے، انہوں نے حضرتِ ابو ہر برہ رَضِی اللّهُ عَنْه ہے روایت کی ہے

(محدثین نے حضرتِ ابو ہر یہ ہے حسن کے ساع حدیث میں اختلاف کیا ہے، جمہور کا قول ہے کہ ساع ثابت نہیں ہے) حضور صَلَّی

اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: لوگوں پر ایساز مانہ آئے گا کہ ان میں کوئی بھی ایسانہ ہوگا جوسود نہ کھا تا ہواور جوسود نہیں کھائے گا سود کا غباراس تک ضرور پہنچ جائے گا۔

(5)

عبد الله بن احمد نے زوائدالمسند میں بیرصد بیٹ نقل کی ہے کہ تم ہے اس ذات کی جس کے دست قدرت میں میری جان ہے، البتہ میری امت کے لوگ برائیوں میں رات گزاریں گے، عیش وعشرت کریں گے اور لہو دلعب میں

اتر جمه كنز الايمان: وه جوسودكهات بي، قيامت كدن نه كور يهول عَيْمَر جيسي كور ابهوتا بوه جي آسيب ني چُهوكر خجوط بناديا بهو (پ۳، البقرة: ۲۷۰).....المعجم الكبير، ۲۰/۱۸، الحديث ۲۰۰

الترغيب والترهيب، كتاب البيوع وغيرها، الترهيب من الربا، ٤/٨ : ١٠ الحديث ١٩٩٤

³ الحديث ٢٢٧٩ التجارات، باب التغليظ في الربا ، ٧٤/٣، الحديث ٢٢٧٩

^{4} المستدرك للحاكم ، كتاب البيوع ، باب الرباوان كثر...الغ ، ٣٣٩/٢ ، الحديث ٢٣٠٩

^{5} ابن ماجه، كتاب التجارات، باب التغليظ في الربا ،٧٤/٣، الحديث ٢٢٧٨

مشغول ہوں گے، جب مبح ہوگی تواللّٰہ کی حرام کردہ چیز وں کوحلال کرنے ،عورتوں سے گانا بجانا سننے، شراب پینے ،سود کھانے اور ریشم پہننے کے سبب سور ّاور ہندر بن جائیں گے۔ ⁽¹⁾

احمداور بیہی کی حدیث ہے: حضور صَلِّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: اس امت کا ایک گروہ کھانے پینے اور لہوولعب میں رات گزارے گا، جب شی کریں گے تو ان کی صور تیں شنے ہو چکی ہوں گی، وہ بندراور خنز بر ہوں گے اور البتہ وہ زمین میں دھنسیں گے اور ان پر پیتر برسائے جائینگے یہاں تک کہ لوگ کہیں گے، فلاں گھر اور فلاں لوگ زمین میں دھنس گئے ہیں اور بلا شبہدان پر پیتر وں کی بارش کی جائیگی جیسے قوم لوط پر کی گئی تھی، ان کے قبائل پر ان کے گھروں پر بیا ہتلاء، ان کے شراب پینے، ریشمی لباس پہنے، گانے بجانے کی محفلیس منعقد کرنے، سود کھانے اور قطع رحمی کے سبب ہوگا اور ایک خصلت کو بیان کرنا راوی بھول گئے۔ (2)

تنكدستي كاعلاج

ز بردست محدث حضرت سِیدُنا بُدْ به بن خالد عَدَیه رَحْمَهُ الْمَاجِد کوخلیفه بغداد مامون رشید نے اپنی بال مدعو

کیا، طعام کے آخر میں کھانے کے جودانے وغیرہ گر گئے تھے، محدث موصوف پُن پُن کر تناول فر مانے لگے۔
مامون نے جیران ہوکر کہا: اے شخ اکیا آپ کا ابھی تک پیٹ نہیں بھرا، فر مایا: کیوں نہیں! دراصل بات یہ ہے کہ
مجھ سے حضرت سِیدُ ناحماد بن سلمہ رَضِی الله عُنه نے ایک حدیث بیان فر مائی ہے: جو محض دستر خوان کے نیچ گر سے
ہوئے مگر ول کو پُن پُن کر کھائے گا وہ تنگدی سے بخوف ہوجائے گا۔ میں ابی حدیث مبارک پڑمل کر رباہوں۔
یہن کر مامون بے حدمت اثر ہوااور اپنے ایک خادم کی طرف اِشارہ کیا تو وہ ایک ہزار دیناررومال میں باندھ کر لایا۔
مامون نے اس کو حضرت سِیدُ نامد بین خالد عَدَیْه رَحْمَهُ الْمَاجِد کی حدمت میں بطوی نذران پیش کر دیا۔ حضرت سید بر بر بین خالد عَدَیْه رَحْمَهُ الْمَاجِد کی حدمت میں بطوی نذران پیش کر دیا۔ حضرت سید بر بر بین خالد عَدَیْه رَحْمَهُ الْمَاجِد نَدْ مَا مَا اِلْ اِلْمَاجِد نَدْ مَا مَا اِلْ وَرَافَ اللّٰ وَالْمَاجِد نَدْ مَا اِللّٰ اِلْمَاحِد بِعُلْ کی ہاتھوں ہاتھ برکت ظاہر ہوگئی۔

مدیب بن خالد عَدَیْه رَحْمَهُ الْمَاجِد نَدْ مَا بَا الْمَاحَةُ لِلْمَاحِد بِهُ مَارِ کہ پُمُل کی ہاتھوں ہاتھ برکت ظاہر ہوگئی۔

(شرات الاوراق ، جا ۱۰ ص ۸)

۱۱۸۵ و مجمع الزوائد ، کتاب الأشربة ، باب فيمن
 ۱۲۸۵ و مجمع الزوائد ، کتاب الأشربة ، باب فيمن
 یستحل الخمر، ۱۱۸/۵ ، الحدیث ۸۲۱۵

^{2}شعب الايمان ، التاسع والثلاثون، من شعب...الخ ، ه/١٦ ، الحديث ١٦/٥

اب 70



ہرانسان پر بیلازم ہے کہ جب وہ دوسرے سے ملے تواسے سلام کہے، جب وہ اسے مدعوکر بے تواس کی دعوت قبول کرے، جب اسے چھینک آئے تواسکا جواب دے، جب وہ بیار ہوتواس کی عیادت کو جائے تو اسکا جواب دے، جب وہ بیار ہوتواس کی عیادت کو جائے ، جب وہ مرجائے تو اس کے جنازہ میں حاضر ہو، جب وہ تتم دلائے تواس کی قتم کو پورا کرے، جب وہ نصیحت کا خواستگار ہوتو اسے نصیحت کرے، اس کی عدم موجودگی میں اس کی بیٹے کی حفاظت کرے یعنی اس کی غیبت نہ کرے اور اس کے لئے وہی کچھ پہند کرے جوابے لئے پہند کرتا ہے اور ہروہ چیز جسے وہ اپنے لئے ناپہند سجھتا ہے اس کے لئے بھی مکروہ سمجھے۔

میتمام اَ حکام اَ حادیث میں وَ ارِ دہوئے ہیں چنانچہ حضرتِ اَنس دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے روایت کرتے ہیں: آپ نے فرمایا: تجھ پر مسلمانوں کے جارتی ہیں: ان کے نیک کی امداد کر، بُرے کے لئے طلب مغفرت کر، ان میں سے جانے والے (مرنے والے) کے لئے دُعا ما نگ اور ان میں سے توبہ کرنے والے کے ساتھ محبت رکھ۔ (۱)

حضرت ابن عباس رَضِى الله عَنهُ مَا اس فر مانِ اللهى: ''وه آپس ميس رحم كرنے والے بيس ''(2) كى تفسير ميس فر ماتے بيس كہ ان كے نيك بُر وں كے لئے ، بُر نيكوں كے لئے وعاكرتے بيں، جب كوئى بدكاراً مت محمد (صَلَّى الله عَليْه وَسَلَّم) كے نيك مردكود كي اسے تو كہتا ہے: اے الله! تو نے اسے جو بھلائى مرحمت فر مائى ہے اس ميس بركت وے، اسے ثابت قدم ركھا ورجميں اس كى بركتوں سے نواز، اور جب كوئى نيك سى بدكاركود كيتا ہے تو كہتا ہے: اے الله اسے ہدايت و سے اس كى نغرشوں كومعاف فر مادے۔

مسلمان پرمسلمان کابیبھی حق ہے کہ وہ جو کچھا پنے لئے پیند کرتا ہے، دوسرے بھائی کے لئے بھی وہی پیند کرےاور جو چیزا پنے لئے بری سمجھتا ہے دوسرے مسلمان کے لئے بھی اسے بُراسمجھے۔

^{1}فردوس الاخبار، ١/٥١٦، الحديث ١٥٠٢

^{2}ترجمهٔ كنز الايمان: اورآ يس مين زم دل _ (ب٢٦، الفتح: ٢٩)

حضرت ِ نعمان بن بشير دَحِنَ اللَّهُ عَنْهُ كَتِمَ بِين كه مين نے رسول الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کو بيفر ماتے ہوئے سنا ہے كہ ايك دوسرے سے محبت كرنے اور باہم مشقت كرنے ميں مسلمانوں كى مثال ايك جسم جيسى ہے، جب جسم كاكوكى عضوت كليف ميں ہوتا ہے تو تمام جسم اس كے احساس اور بخار ميں مبتلا ہوتا ہے۔ (1)

حضرتِ ابوموں کی دَضِی اللّٰهُ عَنْه ،حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے روایت کرتے ہیں: آپ نے فرمایا کہ مسلمان ، مسلمان کے لئے دیوار کی طرح ہے جس کا ایک حصد دوسرے کو تقویت دیتا ہے۔ (2)

علمان کے سے دیواری سرے ہے، ن6ایک مصدور مرحے و تقویت دیا ہے۔ مسلمان کے حقوق میں یہ بھی ہے کہ وہ اپنی زبان اور کسی فعل سے دوسرے مسلمان کو دکھ نہ پہنچائے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ سلمان وہ ہے جس کے ہاتھ اور زبان سے مسلمان محفوظ رہیں۔(3)

ا یک طویل حدیث ہے جس میں حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے لوگوں کواچھی عادات اپنانے کے متعلق حکم فرمایا ہے، فرمایا:اگرتم پینیں کر سکتے ہوتو لوگوں کواپنے شر سے محفوظ رکھو، یہ تمہارے لئے صدقہ ہے جوتم نے اپنی ذات کے لئے دیا ہے۔ (4)

اور فرمایا: افضل مسلمان وہ ہے جس کے ہاتھ اور زبان سے مسلمان محفوظ رہیں۔(5)

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فرمايا: جانت ہومسلمان کون ہے؟ صحابہ کرام نے عرض کیا کہ الله اوراس کارسول

بہتر جانتے ہیں، آپ نے فرمایا: مسلمان وہ ہے جس کے ہاتھ اور زبان سے دوسرے مسلمان محفوظ رہیں۔ صحابہ نے عرض کی: مومن کون ہے؟ آپ نے فرمایا: جس نے اپنی طرف سے مسلمانوں کوان کے مال اور جانوں میں بے خوف

َ وَ قَاعِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ ك كرديا، يوچيها گيا: مهاجركون ہے؟ آپ نے فرمایا: جس نے برائيوں کوچيور ٌديا اوران سے کنار ہ کش رہا۔ ⁽⁶⁾

ا يك شخص في عرض كيا: يادسول الله! اسلام كياب؟ آب في ما يا: بيكة ول سے الله كوشليم كرلے اور تيرے

- 1 بخارى، كتاب الأدب، باب رحمة الناس والبهائم ، ٢٠٢٤، الحديث ٢٠١١
 - 2بخارى، كتاب الصلاة، باب تشبيك الاصابع...الخ ، ١٨/١، الحديث ٤٨١
 - 3بخارى، كتاب الصلاة، باب المسلم من سلم...الخ، ١/٥/١، الحديث ١٠
 - 4بخارى، كتاب العتق، باب اى الرقاب افضل ، ٢/٠٥١، الحديث ١٥١٨
 - 5 بخارى، كتاب الايمان، باب ايّ الاسلام افضل، ٦/١، الحديث ١١
 - 6المعجم الاوسط ، ٢٥٣/٢ ، الحديث ٣١٨٨

ہاتھ اور زبان سے دوسرے مسلمان محفوظ رہیں۔

حضرت مجاہد رَضِی اللهٔ عَنْه کا قول ہے کہ جہنمیوں پرخارش مسلط کردی جائیگی جو تیزی سے ان کا گوشت ختم کر کے ان کی ہڈیاں نمایاں کردے گی ، تب ندا آئے گی اے فلاں! کیا پیخارش تجھے تکلیف دیتی ہے؟ وہ کہے گا: ہاں! آواز آئے گی ، پیمسلمان کو تکایف دینے کا تیرے لئے بدلہ ہے۔

فرمانِ نبوی ہے: میں نے ایک ایسے خص کو جنت میں چلتے کھرتے دیکھا ہے جس نے مسلمانوں کے راستہ سے ایک ایسے درخت کو کاٹ دیا تھا جوانہیں تکلیف دیا کرتا تھا۔ ⁽²⁾

حضرتِ ابو ہریرہ وَضِیَ اللّٰهُ عَنْه نے عرض کیا: یا رسول الله! مجھے ایساعمل بتلایئے جس سے میں نفع حاصل کروں، آپ نے فر مایا: مسلمانوں کے راستے سے تکلیف دینے والی چیزوں کو دور کیا کرو۔ (3)

فر مانِ نبوی ہے کہ جو مسلمانوں کے راستے ہے ایسی کسی چیز کودور کردیتا ہے جو انہیں تکلیف دیتی ہے تواللہ تعالیٰ اس کے بدلہ میں اس کے لئے نیکی لکھ دیتا ہے اور جس کے لئے اللہ تعالیٰ نیکی لکھ دیتا ہے اس کے لئے جنت کو واجب کر دیتا ہے۔ (4)

فرمانِ نبوی ہے: کسی مسلمان کے لئے جائز نہیں ہے کہوہ اپنے مسلمان بھائی کی طرف ایبالِ شارہ کرے جسےوہ ناپیند کرتا ہے۔ (⁵⁾

> فر مانِ نبوی ہے: کسی مسلمان کے لئے بیجائز نہیں ہے کہ وہ کسی مسلمان کوخوف زدہ کرے۔ (⁶⁾ نیز ارشاد فر مایا کہ اللہ تعالی مومن کی تکلیف کونا پیند فر ما تاہے۔ ⁽⁷⁾

^{1}مسند احمد، مسند الشاميين، حديث زيد بن خالد الجهني، ٥٨/٦، الحديث ٢٤٠٢٤

^{2}مسلم، كتاب البر...الخ، باب فضل ازالة الأذى عن الطريق، ص ١٤١٠، الحديث ١٢٩ (١٩١٤)

^{3}المرجع السابق، ص ١٤١١، الحديث ١٣١، (٢٦١٨) راوي ابوبرزه

^{4.....}مسند احمد، ومن حديث ابي الدرداء عويمر ، ٠ /٦/١ ، الحديث ٩ ٤ ٢٧٥.

^{5}الزهد لابن المبارك، ص ٢٤٠، الحديث ٦٨٩ و كشف الخفاء ٢٠/٣٣٧، الحديث ٣٠٩٦

^{6}المعجم الاوسط، ١٦٧٥، الحديث ١٦٧٢

^{7}الزهد لابن المبارك ، ص ٢٤١، الحديث ٦٩٢

حضرت رَبِيع بن غَيْثُمُ رَضِيَ اللّهُ عَنْه كا قول ہے كہ لوگوں كى دوشميں ہيں، اگر تيرا مخاطب مومن ہے تواسے إيذاء نه دے اور اگر جاہل ہے تواس كى جہالت ميں نه پڑواور بندے پرمسلمان كايہ بھى حق ہے كہ وہ ہرمسلمان سے تواضع سے پیش آئے اور تکبر سے پیش نہ آئے كيونكہ الله تعالى ہر إثرانے والے متكبر كونا پيند فرما تا ہے۔

فر مانِ نبوی ہے:اللّٰہ تعالٰی نے مجھے وحی فر مائی ہے کہ تم تواضع کر واورا یک دوسرے پرفخر و تکبر نہ کر و،اگر کوئی دوسرا تم سے تکبر سے پیش آئے تو بر داشت کر و۔⁽¹⁾

چنانچه الله تعالى نے اپنے نبی صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے ارشا دفر مايا ہے:

خُذِالْعَفْوَوَأُ مُرْبِالْعُرْفِ وَأَعْدِضْ عَنِ الْمُهِلِينَ ﴿ (2) دَرَّزَرُوا پنائِيَ نَيْ كَاحَكُم سِجِيَ اور جا ہلوں سے منه بھير ليجرّ ـ

حضرت ابن آفِی آوفی رضی الله عنه سے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم برمسلمان سے تواضع سے پیش آتے اور بیوہ اور مسکین کے ساتھ چل کران کی حاجت رَوائی کرنے میں عار محسوس نہ فرماتے اور نہ تکبر سے کام لیتے۔(3)

حقوق العباد میں بیہ بات بھی داخل ہے کہ لوگوں کی باتیں ایک دوسرے کو نہ بتلائی جائیں اور کسی کی بات سن کر کسی دوسرے کو نہ سنائی جائے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ پخل خور جنت میں نہیں جائے گا۔(4)

خلیل بن احمد رَضِیَ اللّهُ عَنْهُ کا قول ہے: جو تیرے سامنے دوسرے لوگوں کی چغلیاں کھا تا ہے وہ تیری چغلیاں دوسرے لوگوں کے سامنے کھا تا ہوگا اور جو تجھے دوسرے لوگوں کی باتیں بتا تا ہے وہ تیری باتیں دوسرے لوگوں کو بتا تا ہوگا۔ ایک حق یہ بھی ہے کہ غصے کی حالت میں اپنے کسی جاننے والے سے تین دن سے زیادہ ترکی تعلق نہ کرے۔

- ❶ابن ماجه، كتاب الزهد،باب البراءة من الكبر والتواضع، ٤/٩٥٤، الحديث ١٧٩٤
- **2**.....ترجمهٔ كنز الايمان: اح محبوب معاف كرنااختيار كرواور بهلائى كاحكم دواور جابلول سے مند پيمبرلو۔ (پ ٩، الاعراف: ١٩٩)
- ③ شعب الايمان، السابع والخسمون من شعب الإيمان ، باب في حسن الخلق ، فصل في لين الجانب و سلامة الصدر، ٢٦٩/٦ ، الحديث ١١١٤ و المعجم الكبير ، ٢٨٧/٨ ، الحديث ٨١٠٨
 - 4.....بخاري، كتاب الإدب، باب مايكره من النميمة، ٤/٥١، الحديث ٢٠٥٦

حضرت ابوابوب انصاری رَضِیَ اللّهُ عَنْه سے مروی ہے: رسول الله صَلّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّم نے فرمایا: کسی مسلمان کے لئے بیجا ترنبیں ہے کہ وہ اپنے بھائی سے تین دن سے زیادہ قطع تعلق کرے، دونوں ایک دوسرے کے سامنے آئیں، بیادھر منہ پھیرک گزر جائے اور وہ ادھر منہ پھیرے چلا جائے، ان میں سے بہتر وہ ہے جو سلام کرنے میں پہل کرے۔ (1)

فرمانِ نبوی ہے: جس نے کسی مسلمان بھائی کواس کی لغزش کے سبب چھوڑ دیااللّٰہ تعالیٰ اسے قیامت میں چھوڑ دےگا۔ ⁽²⁾

عکرمہ سے مروی ہے: الله تعالی نے بوسف عَلَيْهِ السَّلام سے فرمایا: بھائيوں سے تير عفوو درگزر کی وجہ سے ميں نے دوعالم ميں تيراذ کر بلند کرديا ہے۔

حضرت عائشہ رَضِیَ اللهُ عَنهَا سے مروی ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے اپنی ذات کی خاطر بھی کسی سے انتقام نہیں لیا، ہاں جب حدودالله کی بات ہوتی تقی تو آپ الله کی رضا جوئی کی خاطر بدلہ لیا کرتے تھے۔ (3)

حضرتِ ابن عباس رَضِیَ اللَّهُ عَنُهُمَا کا قول ہے: کوئی شخص کسی غلطی سے درگز رنہیں کرتا مگراس کے بدلہ میں الله تعالی اس کی عزت بلند کرتا ہے۔ (4) (یعنی جوشخص کسی غلطی سے درگز رکرتا ہے، الله تعالی اس کی عزت بلند کرتا ہے)

فرمانِ نبوی ہے کہ صدقہ سے مال کم نہیں ہوتا عفوو درگز رسے الله تعالیٰ انسان کی عزت بڑھا تا ہے اور جو شخص الله کی خوشنو دی کے لئے تواضع کرتا ہے الله تعالیٰ اسے بلند مرتبہ عطافر ما تا ہے۔ (5)

......☆.....☆......

^{1}مسلم، كتاب البر...الخ ، باب تحريم الهجر...الخ ، ص١٣٨٥ الحديث ٢٥٨_ (٢٥٦٠)

^{◘}شعب الايمان ، السابع والخمسون من شعب ...الخ ، فصل في ترك الغضب ...الخ ، ٣١٤/٦ ، الحديث ، ٨٣١

^{3}بخارى، كتاب المحاربين...الخ، باب كم التعزير والاداب، ٢٥٢/٤، الحديث ٦٨٥٣

 ^{4.} ١٠٠٠ شعب الايمان، السابع والخسمون من شعب الإيمان، باب في حسن الخلق، فصل في التواضع...الخ، ٢٧٤/٦،
 الحديث ٨١٣٤ رواه ابو هريره مرفوعاً

^{5}مسلم، كتاب البر...الخ، باب استحباب العفو والتواضع، ص١٣٩٧، الحديث ٦٩ _ (٢٥٨٨)

(71) <u>-!</u>)

$\left\langle \overbrace{\mathtt{acar}}, \mathtt{acar} \right\rangle$ مذمت ہوائے نفس ووصف زھد

الله تعالى ارشاد فرما تاہے:

كيا تونياس كونبين ديكها كهجس نه اين خواجش كومعبود بناليا

ٱفَرَءَيْتَمَنِ اتَّخَذَ الهَدُهُولِهُ وَأَضَلَّهُ اللهُ عَلْعِلْمِ

ہےاوراسےاللہ نے علم پر گمراہ بنادیا ہے۔

حضرت ابن عباس رَضِیَ اللّه عَنهُمَا کا قول ہے کہ اس سے مرادوہ کا فرہے جس نے اللّه تعالیٰ کی جانب سے عطا کردہ کسی ہدایت اور دلیل کے بغیر خواہشات کو اپنا دین بنالیا ہے۔ اس کا مطلب بیہ ہے کہ وہ خواہشات نفسانی کا پیرو ہے اور وہ ہرایسا کا م کرنے پر تیار ہوجا تا ہے جس کی طرف اس کی خواہشات اشارہ کرتی ہیں اور اللّه تعالیٰ کی کتاب کے مطابق عمل نہیں کرتا گویا کہ وہ اپنی خواہشات کی عبادت کرتا ہے۔ فرمانِ اللّی ہے:

اوران کی خواہشات کی انتاع نہ کر۔

وَلاتَتَبِعُ الْهُوَ آءَهُمُ (2)

اورارشادِر بانی ہے: ''اورخواہش کی پیروی نہ کریہ تھے الله کےرہتے سے ہٹادے گی۔''(3)

اسی کے حضور صَدَّی الله عَدَیهِ وَسَدَّم اِن الفاظ میں الله سے دعاما نگا کرتے: اَللَّهُمَّ اِنِّی اَعُو دُبِکَ مِنُ هَوًی مَ اَسِی کے حضور صَدَّی الله عَلیهِ وَسَدَّم اِن الفاظ میں الله سے دعاما نگا کہ وں اس خوا ہش سے جس کی اطاعت کی جاتی ہے اور اس بخل سے جس کا اِتباع کیا جاتا ہے۔ اور آپ نے فرمایا کہ تین باتیں انسان کے لئے مہلک ہیں ، اطاعت کردہ خوا ہش ، انباع کردہ بخل اور انسان کا ایٹ آپ کو بہت ہڑ اسمجھنا اور بیاس لئے ہے کہ ہرگناہ کا باعث نفسانی خواہشات ہیں اور

....4

[•] سترجمه كنز الايمان: بهلاد كيموتووه حسن إني خوابش كواپنا خدائه براليا اور الله في أسه با وصف علم كراه كيا- (ب٥٧ الحاثية: ٢٣)

^{2} ترجمهٔ كنز الايمان: اوران كى خواتشول پرنه چل (٢٠ المائده: ٩٠)

^{3} ترجمهٔ كنز الايمان: اورخوابش كے يتي نه جانا كه تخصالله كى راه سے بهكاو كى - (٢٣٠ ، سَ: ٢٦)

یمی انسان کوجہنم کی طرف کیجاتی ہیں۔⁽¹⁾الله تعالیٰ ہمیں ان سے بنادے۔ آمین!

ایک عارِف کا قول ہے کہ جب دوباتیں تیرے سامنے ہوں اور تجھے پتہ نہ چلے کہ ان میں سے کوئی بات عمدہ ہوگ تو بید دکھے کہ ان دومیں سے کوئی بات عمدہ ہوگ تو بید دکھے کہ ان دومیں سے کوئی بات تیری خواہش کے قریب ہے تو اسی کوچھوڑ دے اور دوسری کو پائی تکمیل تک پہنچا۔ اسی نکتہ کی طرف اشارہ کرتے ہوئے امام شافعی دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه نے فرمایا ہے ۔

اذا حال امرك في معنيين ولم تدرحيث الخطا والصواب

فخالف هواک فان الهوی يقود النفوس الى مايعاب

﴿1﴾ جب تيرا كام دوباتوں كے درميان حاكل مواور تجفي ان ميں سے اليجھے اور برے كى خبر نہ گئے۔

﴿2﴾ تواس بات کے مطابق کام کرجو تیری خواہش کے مخالف ہو کیونکہ خواہشات انسان کو ہُرے کاموں کی طرف لے جاتی ہیں۔

حضرت عباس رَضِيَ اللهُ عَنهُ كا قول ہے كہ جب تو دوسو چوں ميں گھر جائے تو جوسوچ تحقيے زيادہ پيند ہوا سے جيمور ا

دے اور جو نابیند ہوا سے بیند کرلے، اس کی وجہ بیہے کہ عمولی کام آسانی سے ہوجائے گا، اس میں محنت مشقت نہیں کرنی پڑتی ،کسی سے تعاون کی درخواست نہیں کرنی پڑتی ،اس لئےنفسِ انسانی اس کے کرنے کا تھکم دیتا ہے اور اس کی

طرف اسے أكساتا ہے مرمشكل كام مشكل ہى سے سرانجام دياجاتا ہے، تكليف اٹھانى پر تى ہے، كوئى تعاون نہيں كرتا،

خود بڑی مشکل سے انسان اسے پورا کرتا ہے اس لئے نفسِ انسانی اسے کرنے میں پس وپیش کرتا ہے اور محنت ومشقت

كويُر المجھتاہے (پس تھے يہي كام اختيار كرنا جاہئے)۔

حضرت عمر دَحِت اللَّهُ عَنْه كاارشاد ہے كہا ہے نفسوں كوروكو كيونكه بيابيا ہُرَاوَل دستہ بيں جوتمہيں برائی كی آخری سرحدتك ليجا تا ہے، حق كر وااور گراں ہے، باطل سَبُك اور تباہ كن ہے، تقید کے علاج سے بہتر يہى ہے كہا نسان گنا ہوں ہى كوچھوڑ دے بہت مى نگا ہوں نے شہوت كى كاشت كى اورا يك لمحه كى لذت ان كوطويل غم كى ميراث دے گئے۔

حضرت ِلقمان دَضِیَ اللّٰهُ عَنُه نے اپنے بیٹے سے کہا کہ اے بیٹے! میں سب سے پہلے مجھے تیر نے نس سے ڈرا تا موں کیونکہ ہرنفس کی خواہشات اور آرز وئیں ہیں ،اگر تو ان کو پورا کر دے گا تو وہ اپنی خواہشات کوطویل کردے گا اور تجھ سے تمام خواہشات کو پورا کرنے کی طلب کریگا، بلاشبہ شہوت دل میں اسطرح پوشیدہ ہوتی ہے جیسے پھر میں آگ!اگر

1 شعب الايمان، الحادي عشر من شعب الايمان...الخ ١٠/١/٤٠ الحديث ٥٤٧

كاشفة القلوب ك

تو پھر پر چُھْماق مارے گاتو آگ نکلے گی ور نہیں۔ کسی شاعر کا قول ہے ہے

اذا ما اجبت النفس في كل دعوة دعتك الى الامر القبيح المحرم

💨 جب تونفس کی ہر یکار پر لبیک کہا تو وہ تخصے مَنْہیتات کی طرف بلائے گا۔

ایک اور شاعر کہتا ہے:

واعلم بانک لن تسود لن تری طرق الرشاد اذا اتبعت هواک سازگرتونے اپنی خواہشات کی پیروی کی تونہ مجھے سیدھاراستہ ملے گااور نہ تو سرداری حاصل کر سکے گا۔

ایک اور شاعر کہتا ہے:

ونيل الذي ترجوه من رحمت الرب لا عدى واردى من هوى الحب هوى الحب مهما عف بعدا عن الذنب خلاف الذي تهواه ان كنت ذا لب

اذا شئت اتيان المحامد كلها فخالف هوى النفس المسيئة انه هما سببا حتف الهوى غير ان في وجل المعاصى في هوى النفس فاعتمد

﴿1﴾ جب توتمام اوصاف جميده كاحصول اورالله كى رحمت سے اپني مرادوں كابر آنا جا ہتا ہے۔

﴿2﴾ تواس بُر نفس كى خواہشات كى مخالفت كركيونكد بيعشق ہے بھى زياد و ديمن اورمہلك ہے۔

﴿3﴾ وه دونول خواہشات كوہلاك كرنے كاسب بين البيته عاشق جب پاكدامن ہوتو گناه سے ﴿ جاتا ہے۔ اور

﴿4﴾ نفسانی خواہشات بُر آنے کی آرز وؤں کوڑک کردے،اگر توعقلمندہے تو وہ کام کرجو تیریے نفس کی خواہشات کے خلاف ہو۔

ایک اور شاعر کہتا ہے۔

و عقل عاصى الهوى يزداد تنويرا

انارة العقل مكسوف بطوع هوي

مكاشفة القلوب

ہے۔.... خواہشات کی پیروی میں عقل کا نور جھپ جاتا ہے اور خواہشات کی مخالفت کر نیوالے کی عقل کی نورانیت برابر بڑھتی رہتی ہے۔ فَضْل بن عباس دَضِيَ اللّٰهُ عَنْه کا کہنا ہے: _

لقد ترفع الايام من كان جاهلا ويردى الهوى ذاالرأى وهولبيب

وقد تحمد الناس الفتي وهو مخطئ ويعذل في الاحسان وهو مصيب

﴿1﴾....زمانه جابل کوبلندمقام دے دیتا ہے اورخواہشات کی پیروی تقلمند، ذی رائے کواس کے مقام سے پھیردیتی ہے۔

﴿2﴾كھى لوگ ايسے جوان كى تعريف كرتے ہيں جو خطا كار ہوتا ہے اور احسان كر نيوا لے خض كوملامت كى جاتى ہے حالانكہ وہ

بامرادہوتاہے۔

نبی اکرم صَلَّی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَّم کافر مان ہے کہ الله تعالیٰ نے عقل کو پیدافر مایا اور اسے فر مایا: سامنے آ! تو وہ سامنے موئی، پھر فر مایا: پیچھے ہے! تو وہ پیچھے ہے گئی۔ رب تعالیٰ نے فر مایا: مجھے اپنی عزت وجلال کی قتم! میں تجھے اپنی سب سے زیادہ پیندیدہ مخلوق میں رکھوں گا۔ پھر الله تعالیٰ نے حمافت کو پیدا فر مایا: ورجال کی قتم! میں رکھوں گا۔ پھر الله تعالیٰ نے فر مایا: مجھے اپنی عزت اور جلال کی قتم! میں تجھے بدترین مخلوق میں رکھوں گا۔ تب الله تعالیٰ نے فر مایا: مجھے اپنی عزت اور جلال کی قتم! میں تجھے بدترین مخلوق میں رکھوں گا۔ (1) بیتر مذی کی روایت ہے۔

مسی نے کیا خوب کہا ہے:۔

وقد اصاب رايه عين الصواب من استشار عقله في كل باب

وقد راى ان الهوى مهما يجب يدعوالي سوء العواقب والعقاب

﴿ 1 ﴾اس شخص کی رائے جو ہر بات میں عقل ہے مشورہ کرتا ہے صواب کو پالیتی ہے۔

﴿2﴾اوراس نے دیکھا کہ جب بھی خواہشات کی پیروی کی جائے وہ بُرےانجام اور عذاب میں مبتلا کرتی ہے۔

ایک دوسراشاعرکہتاہے: _

اذا شئت ان تخطى وان تبلغ المنى فلا تسعد النفس المطيعة للهوى

وخالف بها عن مقتضى شهواتها واياك ان تحفل بمن ضل اوغوى

1 كشف الخفاء ، ١١/١، تحت الحديث ٧٢٢

كاشفة القلوب 🕒 🕒 🔾 ٥ ٩ ــ

ودعها وماتدعو اليه فانها لامارة بالسوء من هم او مدى لعلك ان تنجو من النار انها لقاطعة الامعاء نزاعة الشوى

﴿1﴾ جب تو جاہے کہ امیدوں سے بہرہ ور ہوتو نفس کوخوا ہشات کی بیروی سے بچا۔

﴿2﴾اوراس كى خوامشات يورى نه كراور گمراه اور باغيوں كى رونق نه بن _

﴿3﴾نفس اوراس کی خواہشات کوترک کردے کیونکہ یہ ہراس شخص کو جواس کی طرف قدم بڑھا تاہے، برائیوں کا حکم دیتا ہے۔

﴿4﴾ شايد كة واس طرح جهنم سے نجات يالے جوآ نتيں كاٹنے والى اور كھال اتار نيوالى ہے۔

داناؤں کا قول ہے کہ خواہش ایک بُری سواری ہے جو تحقیے مصیبتوں کی تاریکیوں میں لے جاتی ہے اور ناموافق چراگاہ ہے جو تحقیے مصیبتوں کی تاریکیوں میں لے جاتی ہے اور ناموں کی چراگاہ ہے جو تحقیے دکھوں کا وارث بناتی ہے لہٰذاخبر دار ہو کہ تحقیے نفس کی خواہش برائیوں پر سوار نہ کر ہے اور گناہوں کی اندھیر مگری میں خیمہ زن نہ کرے کسی دانا ہے کہا گیا کہ اگرتم شادی کر لیتے تو خوب تھا، تو اس نے برجتہ جواب دیا اگر میں طلاق دے سکتا تو اینے نفس کو طلاق دے دیتا، اور بیشعر پڑھا: _

تجرد من الدنيا فانك انما سقطت الى الدنيا وانت مجرد

💨 ونياسے تنها ہو جا کيونکہ تو تنها ہي دنيا ميں بھيجا گيا تھا۔

دنیا نینداور آخرت بیداری ہے اور ان کا درمیانی فاصلہ موت ہے اور ہم پرا گندہ خوابوں میں ہیں، جس نے خواہش کی ہیروی کی اس نے ظلم کیا اور جس نے طویل امیدیں خواہش کی ہیروی کی اس نے ظلم کیا اور جس نے طویل امیدیں رکھیں اس نے انتہا کونہ یایا اور نہ ہی کسی دیکھنے والے کے لئے نہایت ہے۔ (طول الل کی کوئی انتہا نہیں)

کسی دانا نے ایک شخص کو وصیت کی کہ میں تجھے خواہشاتِ نفسانی سے مقابلہ کرنے کا تھم دیتا ہوں کیونکہ خواہشات برائیوں کی کلیداور نیکیوں کی رشمن ہیں، تیری ہرخواہش تیری رشمن ہے اور سب سے بری خواہش ہیہ ہے جو گناہوں کو تیر سے سامنے بطور نیکی پیش کرتی ہے۔ جب بید رشمن تجھ سے جھڑا کریں گے تو تو ان کے پنج سے نے ہستی سے مبراہوشیاری، جھوٹ سے مبراہج ، تساہل سے پاک مشغولیت، جزع فزع سے پاک صبراورالی نیت جو برکاری سے آلودہ نہ ہو، کی موجودگی ہی میں نجات یا سکے گا۔

اے ربے ذوالجلال! ہماری عقل کو ہماری خواہشات پر غالب فر مادے، ہمیں نقصان اور سبکساری سے بچا، ہمیں

_ [2]

آ خرت کی بجائے دنیامیں مشغول نہ کراور ہمیں اپناذ کر کرنے والا اورا پنی نعمتوں کاشکر کرنے والا بنادے،سید ناومولا نا

محمد صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَي نبوت كَطْفِيل جمير سعاوت وارين عطافرما! والحمد لله رب العلمين ـ

فر مانِ نبوی ہے کہ تہمارادین بہترین پر ہیز گاری ہے۔

اور فرمایا: پر ہیز گاری اَعمال کی سَروَری ہے۔⁽²⁾

اور فرمایا: پر ہیز گاربن، سب لوگوں سے زیادہ عبادت گزار بن جائے گااور قناعت کر کہ سب لوگوں سے زیادہ شکر گزار بن جائے گا۔ (3)

فرمانِ نبوی ہے کہ جس میں پر ہیز گاری موجو دنہیں (جواے الله تعالیٰ کی نافر مانی ہے رو کے تو) اس کے سی عمل کی الله تعالیٰ کو پر وانہیں ہے۔

حضرت ابراہیم بن اوہم رَضِیَ اللّهُ عَنه کا فر مان ہے کہ زُمد کے تین مرتبے ہیں ، ایک زمد فرض ہے اور وہ اللّه تعالی کی حرام کردہ چیزوں کوترک کردینا، تیسرا زمد فضیلت کی حرام کردہ چیزوں کوترک کردینا، تیسرا زمد فضیلت کے حصول کے لئے ہے اور وہ ہے اللّٰہ تعالیٰ کی حلال کردہ اشیاء کوبھی چھوڑ دینا اور بیز بدکا بہت ہی اعلیٰ مرتبہ ہے۔

ابن مبارک رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ زمد ، زمد کو چھپانے کا نام ہے ، جب زامدلوگوں سے دورر ہے تواس کی جشچو رکھواور جب زامدلوگوں کی تلاش میں سرگر دال ہوتواس سے کنار ہکشی اختیار کرلو۔

کسی نے کیا ہی خوب کہاہے:

انى وجدت فلا تظنن غيره ان التورع عند هذا الدرهم فاذا قدرت عليه ثم تركته فاعلم بان تقاك تقوى المسلم

﴿1﴾ میں نے اس راز کو پالیا ہے، اسکے سوااور کچھنیں ہے کہ پر جیز گاری دنیااور دولت دنیا کوچھوڑ دینے کا نام ہے۔

﴿2﴾ جب تو دولت يا كراسي ترك كرد يقسمجھ لے كه تيراتفوى ايسے ہے جيسے ايك مسلمان كاتفوى ہے۔

- 1 ١٧٠٣ شعب الايمان، السابع عشر من شعب الايمان ... الخ ٢٠ / ٢ ٦ ، الحديث ١٧٠٣
- 2 كنزالعمال، كتاب الاخلاق ، باب الخوف والرجاء ، ٢/٠٦، الجزء الثالث، الحديث ٥٨٦٩
- € شعب الايمان، التاسع والثلاثون من شعب الايمان، الفصل الثالث...الخ ،٥٣/٥، الحديث ٠٥٧٥
 - 4فردوس الاخبار، ٢ /٨٠٤، الحديث ٤٧٦١

5.6

زاہدوہ نہیں ہے جود نیا کے نہ ہوتے ہوئے اس سے کنارہ کش ہوا بلکہ زاہدوہ ہے کہ جس کے پاس دنیاا پنی تمام تر حشر سامانیوں کے ساتھ آئی گراس نے اس سے منہ پھیرلیااور بھاگ گیا، جبیبا کہ ابوتمام کہتا ہے:

جب آ دمی نے زبداختیار نہ کیا اور دنیا پنی تمام تر رعنائیوں کے ساتھ جلوہ گر ہوئی تو وہ زاہز نہیں کہلائے گا۔

بعض حکماء کا قول ہے کہ کیا وجہ ہے کہ ہم دنیا سے کنارہ کشی نہیں کرتے حالانکہ اس کی عمر گنی پُخی ،اس کی بھلائی معمولی ،اس کی صفامیں تلچھٹ ،اس کی امیدیں دھو کہ اور فریب ہیں ، آتی ہے تو دکھ کیکر آتی ہے اور جب جاتی ہے تو معمولی ،اس کی صفامیں تلجھٹ ،شاعر کہتا ہے: _

تبا لطالب الدنيا لا بقاء لها كانما هي في تصريفها حلم

صفاءها كدر سرورها ضرر امالها غرر انوارها ظلم

شبابها هرم راحتها سقم لذاتها ندم وجدانها عدم

لايستفيق من الانكاد صاحبها لوكان يملك ماقدضمنت ارم

فخل عنها ولا تركن لزهرتها فانها نعم في طيها نقم

واعمل لدارنعيم لانفدلها ولايخاف بها موت ولاهرم

﴿1﴾ونیا کے طالب کے لئے ہلاکت ہے،اس کو بقانہیں اوراس کی گروش خواب وخیال ہے۔

﴿2﴾اس كاصاف گدلا،اس كى خوشى نقصان،اس كى اميدىي يرفريب اوراس كى روشنياں تاريكى ميں _

﴿3﴾اس کی جوانی بڑھا یا،اس کی راحت بیاری،اس کی لذتیں شرمندگی اوراس کو پانانہ پانے کے برابر ہے۔

﴿4﴾ دنیا دارا گرچه شداد کی بهشت (آرام دومقام) جتننی نعمتیں پالیں ، تنب بھی اس کے مصائب سے نہیں چھوٹے گا۔

﴿5﴾اس سے روگر دانی کر،اس کی رونق کو باوقار نہجھ کیونکہ اس کی نعمتیں ایسی ہیں جن میں عتاب مضمر ہے۔

﴿ 6﴾اس دائمی انعامات کے گھر کے لئے عمل کرجس کی نعمتیں کبھی نہ ٹیں گی اورجس میں موت اور بڑھا پے کا کوئی اندیشہ نہ ہوگا۔

یجیٰ بن معافر َ مِنِسیَ اللّٰهُ عَنْه کاایک دانشمندانہ قول ہے کہ دنیا کوعبرت کی نگاہ ہے دیکھی،اے اپنی پیندے چھوڑ ،اس

کے حصول میں مجوری ہے کوشش کراور آخرت کو توجہ سے طلب کر۔

.....☆.....☆.......

جنت اور مراتب اهل جنت

قبل آنِیں آپ جس گھر کے غم واندوہ اور محنت و آلام کا حال پڑھ چکے ہیں، اس گھر کے مقابلہ میں ایک اور گھر ہے، پہلے گھر کو جہنم کا نام دیا گیا تھا اور اس دوسر ہے گھر کا نام جنت ہے، اب ذرا اس گھر کی نعمتوں اور مسرتوں پر نظر ڈالنے کیونکہ یہ بات تو طے شدہ ہے کہ جوایک گھر سے محروم ہوگا اسے دوسر ہے گھر میں جانا ہوگا خواہ وہ جنت ہو یا جہنم، لہذا ضروری ہے کہ جہنم کی ہلاکت خیزیوں سے بہنے کے لئے اپنے دل میں طویل غور وفکر کیجئے تا کہ کسی طرح اس سے نجات حاصل ہوجائے اور دل کوخوف خدا کا گہوارہ بنا سے اور جنت کی دوامی نعمتوں کے متعلق طویل سوج بچار کرتے ہوئے اللہ تعالی کی رحمت سے امیدر کھئے کہ وہ ہمیں بھی اس کا مکین بنائے گا جس کا اس نے اپنے صالے بندوں سے وعدہ فر مایا ہے۔

اپنے نفس کوخوف ِ الٰہی کا جا بک ماریخ اوراُ مید کی مَهار ڈال کرسید ھے راستہ پر گامزن رکھئے ،اسی صورت میں ہی تو آپ ملک عظیم (جنت) کو پائیں گے اور در دنا ک عذاب ہے محفوظ رہیں گے۔

اب ذرااہلِ جنت کے بارے میں غور سیجے، اُن کے چہروں پرعطائے ربانی کی تازگی اور شکفتگی ہوگی مہر کردہ شراب طہور کے جام ان کے ہاتھوں میں ہول گے اور وہ سرخ یا قوت کے منبروں پر جلوہ افروز ہول گے جن کے اوپر سفید بڑاتی موتوں کے سائبان سے ہوں گے، نیچ بے مثال سنرریشم کے فرش ہوں گے، وہ شہدوشراب کی نہروں کے کنار نے نصب شدہ تختوں پر ٹیک لگائے ہوں گے جنہیں غلمان ونونہالانِ بہشت اور انتہائی حسین وجمیل حورانِ بہشتی نیار نے ، جوموتی اور موگوں کی طرح ہوگی (جنہیں اس سے پہلے سی انسان اور جن نے ہاتھ نہیں لگا یہ وگا) یہ سب انہیں گھیر نے ، جوموتی اور موگوں کی طرح ہوگی (جنہیں اس سے پہلے سی انسان اور جن نے ہاتھ نہیں لگا یہ وگی ایک چلنے پر مائل ہوگی تو ہوں گے ، جوحوریں جنت کے درجات میں سئب خرا می کررہی ہوں گی ، جب ان میں سے کوئی ایک چلنے پر مائل ہوگی تو ستر ہزار بہشتی بچاس کے لباس اٹھائے ہوں گے ، ان پر سفیدر لیشی لباس ہوگا جس کو دیکھ کرلوگ شششدر رہ جا کیں گئر کو کو اور مرجان سے مرضع تاج ان کے زیبا سر ہوں گے ، وہ انتہائی ناز وانداز والی شیریں اداعطر بیز اور بڑھا ہے اور

د کھ سے بے نیاز ہوں گی ، وہ یا قوت سے تیار کر دہ محلات میں فر وکش ہوں گی اور جنت کے باغوں کے درمیان آ تکھیں نیجی کئے آ رام فر ماہوں گی ، پھران جنتیوں اور حوروں پر آ بخورے آ فتا بے اور شرابِ طہور کے پیالے لئے غلان پھریں گے جن میں انتہائی سفید، لذت بخش مشروب ہوگا اوران کے اردگر دجنتی خادم اوراً مرد،موتیوں کی طرح پھررہ ہو نگے بیان کے آعمال کی جزا ہوگی کہ وہ امن والے مقام میں چشموں، باغوں اور نہروں کے درمیان رہے قدیر کے نز دیک سیجے مقام میں ہوں گے، وہ ان میں بیٹھ کرر ہے کریم کا دیدار کریں گے،ان کے چیروں پر اللہ کی نعمتوں کی تازگی کے آ ثارنمایاں ہوں گے،ان کے چہرے ذلت ورسوائی ہے آلودہ نہیں ہوں گے بلکہ وہ اللہ کےمعزز بندے ہوں گے، ربِ کریم کی جانب سے انہیں تخفے عطاموں گے، وہ اپنی اس پیندیدہ جگہ میں ہمیشہ رہنے والے ہوں گے، نہاس میں انہیں کوئی خوف ہوگا نہم ، وہموت کی تکلیف سے بےخوف ہوں گے، وہ جنت میں نعمتیں یا ئیں گے، جنت کےلذیذ کھانے کھا ئیں گے، دودھ،شراب،شہداورصاف یانی کی ایسی نہروں سے اپنی پیاس بچھا کیں گےجن کی زمین جاندی کی ، کنگریاں موتیوں کی اورمٹی مشک کی ہوگی ،جس ہے تیز خوشبوآ ئے گی ، وہاں کا سبز ہ زعفران کا ہوگا ، وہ کا فور کے ٹیلوں پر بیٹھیں گےاوران پر پھولوں کےعطر کی بارش ہوگی اوران کی خدمت میں جاندی کے پیالے جن پرموتی جڑ ہے ہوں گےاور جو یا قوت ومرجان سےمُرصَّع ہوں گے، لائے جائیں گے،کسی پیالے میں سلسبیل کے ٹھنڈےاور میٹھے یانی میں مہر بند شراب ملی ہوئی ہوگی اور ایسا پیالہ جس کی صفائی کی وجہ ہے اس میں موجود شراب کارنگ وروپ باہر ہے نظر آ رہا ہوگاء آ دمی اس جبیبا مُرشَّع مُصَفَّا برتن بنانے کا تصور ہی نہیں کرسکتا، وہ پیالہ ایسے خادم کے ہاتھ میں ہوگا کہ آ دمی اس کے چیرہ کی چیک دمک کو یا دکر ہے گالیکن سورج میں اس کی دکنش صورت،حسین چیرہ اور بےنظیر آئٹ تھے ہیں کہاں؟ تعجب ہے ایسے محض برجواس گھریرا بمان رکھتا ہے،اس کی تعریفوں کوسیاجا نتا ہے اوراس بات کا لیقین کامل رکھتا ہے کہ اس میں رہنے والے بھی بھی موت ہے ہمکنا رنہیں ہوں گے، جواس میں آجائے گا سے د کھ در دنہیں ستائیں گے، اس میں رہنے والوں پر بھی بھی تغیر نہیں آئے گا اور وہ ہمیشہ امن وسکون سے رہیں گے، بیسب کچھ جاننے کے باوجودوہ ا یسے گھر میں دل لگا تا ہے جوآ خر کاراجڑنے والا ہے،جس کاعیش زوال پذیر ہے، بخدا!اگر جنت میں صرف موت ہے بخوفی ہوتی،انسان بھوک، پیاس اور تمام حواد ثات سے بےخوف ہی رہ سکتا اور دیگر انعامات نہ ہوتے تب بھی وہ جنت اس لائق تھی کہاس کے لئے دنیا کوچھوڑ دیا جائے اوراس پرالیمی چیز کوتر جیج نہ دیجاتی جولٹ جانیوالی اورمٹ جانے والی مكاشفة القلوب]----

ہے چہ جائیکہ جنت میں رہنے والے بے خوف بادشا ہوں کی طرح ہوں، رنگارنگ مسرتوں، راحتوں سے ہمکنار ہوں، ہرخوا ہش کو پانیوالے ہوں، ہر روزعرشِ اعظم کے قرب میں جانے والے ہوں، ربِ ذولمنن کا دیدار کرنے والے ہوں، ہرخوا ہش کو پانیوالے ہوں، ہرروزعرشِ اعظم کے قرب میں جانے والے ہوں کہ جس نگاہ سے وہ جنت کی نعمتوں کوئمیں دیکھا کرتے تھے وہ ان نعمتوں سے پھرنے والے نہوں، ہمیشہ انہیں نعمتوں میں رہیں اور ان کے زوال سے امن میں ہوں۔

حضرتِ الو ہر رره رَضِى اللهُ عَنه ہے مروى ہے: حضور صَلَى اللهُ عَليه وَسَلَم نے فر مایا: منادى پکارے گا: اے جنت کے رہنے والو! تم ہمیشہ تندرست رہو گے، ہمیشہ جوان رہو گے، ہمی بڑھا پانہیں آئے گا اور تم ہمیشہ اِنعام و اِکرام میں رہو گے، ہمی نا اُمیز نہیں ہو گے (۱) اور یہی فر مانِ اللی ہے: وَنُودُ وَ اَانْ تِلْکُمُ الْجَنّةُ اُوْسِ ثَنْهُ وَ هَا بِمَا كُنْتُمُ اللهِ اَنْهُ اللهِ اللهُ ال

اورتم جب جنت کی صفات جانتا جا ہوتو قر آ نِ مجید پڑھو کیونکہ اللّٰہ تعالٰی کے بیان سے عمدہ کسی کا بیان نہیں ہےاوراللّٰہ تعالٰی کے اس فرمان سے کہ

وَلِمَنْ خَانَ مَقَامَ مَن بِهِ جَنَّ لُنِ ۞ وَجِنتِي بِي ـ دوجنتي بي ـ

سورۂ رحمٰن کے آخر تک پڑھو،سورۂ واقعہاور دوسری سورتوں کا مطالعہ کرو(ان میں جنت کی نعمتوں کا تذکرہ ہے)۔

- 1مسلم ، كتاب الجنة .. الخ ، باب في دوام نعيم .. الخ ، ص ٢١ ٥١ ، الحديث ٢٢ ـ (٢٨٣٧)
- **2**.....تو جمهٔ کنو الایمان: اورنداموئی که بیرجنت تمهیس میراث ملی صلهٔ تمهارے اعمال کا ـ (پ۸ ، الاعراف: ٤٣)
- 3توجمهٔ کنز الایمان: اور جواینے رب کے حضور کھڑے ہونے سے ڈرےاس کے لئے دوجنتیں ہیں۔ (پ۲۷، الرحلن: ٤٦)

اور جنت عدن میں لوگ اور بخلی الہی کے درمیان صرف رب کی کبریائی کا پردہ ہوگا۔

رہے جنت کے دروازے تو وہ بہت بے شار ہوں گے جسطر ح گناہوں کی اقسام کے مطابق جہنم کے علیحدہ علیحدہ دروازے ہیں، اسی طرح عباوت کی اقسام کے مطابق جنت کے علیحدہ دروازے ہیں، اسی طرح عباوت کی اقسام کے مطابق جنت کے علیحدہ دروازے ہیں، اسی طرح عباوت کی اقسام کے مطابق جنت کے علیحدہ دروازے ہیں جو شخص الله عَنْه سے مروی ہے: حضور صَلَّی الله عَنْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ جس نے اپنے مال سے راہِ خدا میں خرج کیا، وہ جنت کے تمام دروازوں سے بلایا جائے گا اور جنت کے آٹھ دروازے ہیں جو شخص نمازی ہوگا وہ نماز کے دروازہ سے بلایا جائے گا، روزہ دارروزہ والے دروازہ سے، صدقہ کرنے والاصدقہ کے دروازے سے اور مجامد جہاد کے دروازہ سے بلایا جائے گا۔ حضرتِ ابو بکر صد ایق دَضِیَ الله عَنْه نے عرض کی :یادسول الله! (صَلَّی الله عَنْه وَسَلَّم) بخد الله پردشواز نہیں کہ بندے کو کس درواز دے پر بلایا جائے، کیا مخلوق میں سے کوئی شخص ایسا بھی ہوگا جسے تمام دروازوں سے بلایا جائے؟ آپ نے فرمایا: ہاں! اور جمھے امید ہے کہ تم انہی میں سے ہوگے۔ (2)

حضرت ِعاصم بن ضمر ہ،حضرت ِعلی _{دَخِ}ے اللّٰهُ عَنْه ہے روایت کرتے ہیں ،انہوں نے جہنم کا بہت زیادہ تذکرہ کیا جے میں بھول گیا ہوں ، پھرانہوں نے کہا:

اور جولوگ اینے رب سے ڈرے وہ جنت کی طرف جوق در

وَسِيْقَ الَّذِيثِيَ التَّقَوْاسَ بَيَّهُمُ إِلَى الْجَنَّةِ زُّ صَرًا الْ(3)

جوق لے جائے جائیں گے۔

جب وہ جنت کے درواز وں میں سے ایک درواز ہے پر پہنچیں گے تو وہ ایسا درخت پائیں گے جس کے پنچ پانی کے دو چشمے جاری ہوں گے وہ علم کے مطابق ایک چشمہ پر جائیں گے اور پانی پئیں گے جس کے پیتے ہی ان کے جسم سے مراب کے دو چشمے جاری ہوں گے وہ علم کریں گے، تب سے تمام دکھ درواور تکلیفیں زائل ہوجائیں گے، پھر وہ دوسر ہے چشمہ پر جاکراس سے طہارت حاصل کریں گے، تب ان پر اللّٰہ بتعالیٰ کی نعمتوں کی تازگی آ جائے گی ،اس کے بعد بھی بھی ان کے بال منتشر نہیں ہوں گے اور نہ ہی ان کے سرکھی بھی درواز سے پر پہنچیں گے تو جنت کے دربان انہیں کہیں درومند ہوں گے، جیسے انہوں نے تیل لگالیا ہو، پھر وہ جنت کے درواز سے پر پہنچیں گے تو جنت کے دربان انہیں

- 1بخاري، كتاب التفسير، باب ومن دو نهما جنتان ، ٣٤٤/٣، الحديث ٤٨٧٨
- 2شعب الايمان، باب الثاني والعشرين...الخ ، فصل في الاختيار...الخ ، ٢٥٤/٣ ، الحديث ٣٤٦٨
- الزمر: ۳۲ مان درجوا پنے رب سے ڈرتے تھان کی سواریاں گروہ گروہ جنت کی طرف چلائی جائیں گی۔ (ب۲۰ الزمر: ۷۳)

مكاشفة القلوب

کہیں گے: ''تم برسلامتی ہوتم خوش حال ہوئے لہذااس میں ہمیشہ رہنے کے لیے داخل ہوجاؤ۔ ''⁽¹⁾

جنت میں داخل ہوتے ہی انہیں ولدان گھیرلیں گے جیسے دنیا میں اپنے کسی دور سے آنے والے کسی عزیز بیچ کو گھیر لیتے ہیںاوروہ اس سے کہیں گے تجھے خوشخبری ہو،الله تعالیٰ نے تیرے لئے فلاں فلاں عزت وکرامت رکھی ہے، پھران ولدان میں سےایک امر داس جنتی کی بیویوں میں سے سی بیوی کی طرف جو کہ جنت کی حور ہوگی ، جائے گا اورا سے کے گا کہ فلاں آ دمی جود نیامیں فلاں نام سے بلایا جاتا تھا، آیا ہے۔حور کے گی: تونے اسے دیکھا ہے، وہ أمرد کے گا: ہاں! میںاسے دیکھے کے آ رہا ہوں اور وہ بھی میرےعقب میں آ رہاہے،تب وہ خوثی سے از رفتہ ہوکر دروازے کی دہلیز یر فرطِ اشتیاق سے کھڑی ہوجائے گی۔ جب وہ جنتی وہاں پہنچے گا اوراس گھر کی بنیادیں دیکھے گا جوموتیوں کی ہوں گی اور دیواریں سرخ، سبزاوریلے ہررنگ کےموتیوں سے بنی ہوئی ہوں گی، تب وہ حیجت کودیکھے گا، وہ بحلی کی طرح ایسی خیرہ کن ہوگی کہا گراللّٰہ تعالیٰ اسے قدرت نہ دیتا تواس کی آنکھیں زائل ہو جاتیں ، پھر سر جھکا کرینچےنظر کرے گا تواسے حوریں قطار در قطار آبخورے لئے ،صف باندھے تکیے اور بچی ہوئی مسندیں نظر آئیں گی اور وہ ان سے تکبیر لگا کر کہے گا: ''سب تعریفیں الله تعالیٰ کے لیے ہیں جس نے ہمیں اس کی ہدایت کی اگر الله ہمیں بیراہ نہ دکھا تا تو ہم ہدایت نہ یاتے۔''⁽²⁾ پھر پکارنے والا بکارے گا کہتم زندہ رہوجھی نہیں مرو گے،اس میں ہمیشہ رہوجھی کوچے نہیں کرائے جاؤ گےاور سلامت وتندرست رہو بھی بیار نہیں ہو گے اور حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: میں قیامت کے دن جنت کے دروازے برآ کراہے کھلوانا جا ہول گا، جنت کا دربان (رضوان) یو چھے گا: کون ہو؟ میں کہوں گا محمد (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) در بان کہے گا: مجھے یہی حکم دیا گیاہے کہ آپ سے پہلے کسی کے لئے دروازہ نہ کھولوں۔(3)

پھر جنت کے بالا خانوں اور بلند و بالا مختلف طبقات کے متعلق غور کرو بیشک آخرت بہت بڑے درجات اور بہت بڑی عظمت دینے والی ہے، جبیبا کہ لوگوں کی ظاہری عبادات اوران کی باطنی صفات بظاہر مختلف ہیں اسی طرح دار الجزاء میں جنت کے بھی مختلف درجات ہیں، اگرتم جنت کا اعلیٰ درجہ حاصل کرنا چاہتے ہوتو کوشش کرو کہ کوئی دوسرا

الزمر: ۷۳) الزمر: ۷۳ ، الزمر غوب رئم خوب رئم خوب رئے ، الزمر: ۷۳)

^{2}توجمهٔ كنز الايمان: سبخوبيال الله كوجس ني جميل اس كى راه دكھائى اور جم راه ندياتے اگر الله نه دكھا تا - (پ٨، الاعراف: ٣٠)

^{3}مسلم ، كتاب الايمان، باب في قول النبي صلى الله عليه وسلم انا اوّل الناس...الخ،ص١٢٨ ،الحديث٣٣٣_ (١٩٧)

M

عبادت كرنے ميں تم سے سبقت نہ لے جائے ،الله تعالى نے بھى اپنى اطاعت ميں مقابلے اور ايک دوسرے سے سبقت يجانے كائكم فر مايا ہے چنانچے فر مانِ اللى ہے:

ایخ رب کی جخشش کی طرف سبقت حاصل کرو۔

سَابِقُوَّ اللَّهُ مَغُفِهَ لَاِ مِّنْ مَّ بَبِّكُمُ (1) ایک اور مقام پرارشاوفر مایا:

اوراسی میں چاہئے کہ رغبت کرنے والے رغبت کریں۔

وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَا فَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ اللهَ الْمُتَافِسُوْنَ اللهَ اللهَ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ ال

تعجب کی بات توبیہ ہے کہ اگرتمہار ہے دوست یا ہمسائے تم سے روپے پیسے یا مکانات کی تعمیر میں تم سے سبقت لے جا کیں تو تم کو بہت افسوس ہوتا ہے، تمہارا دل ننگ ہوتا ہے اور حسد کی وجہ سے زندگی میں ہے کیفی پیدا ہوجاتی ہے مگرتم نے بھی جنت کے حصول کے لئے بہتر بناؤ اور تم جنت میں اپنے حالات کو جنت کے حصول کے لئے بہتر بناؤ اور تم جنت میں ایسے لوگوں کو یاؤگے جوتم سے سبقت لے گئے ہوں گے، ایسے مقامات پر رونق افر وز ہوں گے کہ تمام دنیا بھی جس کے برابر نہیں ہو گئی۔

حضرت ابوسعید خُدری رَضِیَ اللهٔ عَنهُ سے مروی ہے کہ حضور صَلَی الله عَلیْهِ وَسَلَم نے فرمایا: بلاشبہ ختی اپنا اور بلندو بالا بالا خانوں میں رہنے والوں کوا یسے دیکھیں گے، جیسے تم دور مشرق یا مغرب کے افق میں بہت بنچ کسی چمکدارستار ہے کو کیھتے ہو، یان کے درمیان بلندیوں کی وجہ سے ہوگا۔ صحابہ کرام نے عرض کیا: یارسول الله (صَلَی اللهُ عَلَیْکَ وَسَلَم)! کیا یہ انبیائے کرام کے مقامات ہوں گے جہاں اور لوگنہیں پہنچ پا کیں گے؟ آپ نے فرمایا: ہاں قتم ہے اس ذات کی جس کے قبیت کرام کے مقامات ہوں گے جہاں وہ لوگ ہوں گے جوالله پرایمان لائے اور جنہوں نے رسولوں کی تصدیق کی اور آپ صَلَی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَم نے ارشاوفر مایا: جنت کے بلندور جات والے نیچے سے ایسے دکھائی ویں گے جیسے تم دور مشرق یا مغرب میں آسان کے اُفق پر طلوع ہونے والاستارہ دیکھتے ہوا ور ابو بکر وعرد خیر قی اللهُ عَنْهُ مَا انہی جنتوں میں سے ہیں اور دونوں خوب ہیں۔ (3)

^{•}ترجمهٔ كنز الايمان: بره ركر چلواية ربّ كى بخشش اوراس جنت كي طرف _ (٢٧، الحديد: ٢١)

^{2}ترجمهٔ كنز الايمان: اوراس برجائي كرليا تيل الجاني والـ (ب · ٣ ، المطففين: ٢٦)

الحديث ١١ ـ (٢٨٣١) وترمذي، كتاب المناقب، الخ، ص ١٥١٨، الحديث ١١ ـ (٢٨٣١) وترمذي، كتاب المناقب،
 باب مناقب ابي بكر الصديق... الخ، ٣٧٢/٥، الحديث ٣٦٧٨

حضرت جابر رَحِن اللهُ عَنه كہتے ہيں : حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم نے بهم لوگوں سے فر ما يا كہ كيا ميں ته بہيں جنت كے بالا خانوں كے متعلق نہ بتاؤں؟ ميں نے عرض كيا: آپ پر بهارے ماں باپ قربان ہوں يادسول الله (صَلَى اللهُ عَلَيْکَ وَسَلَم)! ضرورار شاوفر ما ہيں ! آپ نے فرمایا: جنت ميں موتيوں جيسے بالا خانے ہيں جن كا ندروالا حصہ باہر سے اور باہر كا حصہ اندر سے ديكھا جاسكتا ہے اوران ميں الي تعمين، لذتيں اور مسرتيں ہيں جنہيں نہ كسى آئى نے ديكھا ، نہ كى كان نے سنااور نہ كسى آئى ہے ول الله (صَلَى اللهُ عَلَيْکَ وَسَلْم)! بيہ بالا خان نے سنااور نہ كسى آ دمى كے دل ميں ان كا تصور گزرا۔ ميں نے پوچھانيا دسول الله (صَلَى اللهُ عَلَيْکَ وَسَلْم)! بيہ بالا خان نے سناور نہ كسى آئى ہوں گے؟ آپ نے فرمايا: اس خفص كے لئے جوسلام كو پھيلا تا ہے ، كھا تا كھا تا ہے ، ہميشہ روز ہے سے رہتا ہے اور رات ميں جب كہ لوگ سوتے ہيں وہ نماز پڑھتا ہے۔ ميں نے عرض كی نيادسول الله (صَلَى اللهُ عَلَيْکَ وَسَلْم)! ان اعمال كو پورا كرنے كى طاقت كون ركھا ہے؟ آپ نے فرمايا: ميرے امتی اس كی طاقت ركھے ہيں اور ميں تم كواس كی تفصيل بتا تا ہوں ، جو شخص اپنے مسلمان بھائى سے ملا اور اسے سلام كيا تو گويا اس نے سلام كو پھيلا يا، جس نے ابل وعيال كو فوب سير كرا كر كھا نا كھلا يا تواس نے كھا نا كھلا يا، جس نے ما ورمضان كے كھمل اور ہر مہينے ميں تين روز ہے ركھا س نے دائى روز ہے ركھے ، جو نماز عشاء پڑھ كرسويا اور اس نے جنح كی نماز جماعت سے اوا كي تو گويا اس نے سارى رات عبادت كی اورلوگ يعنی يہود ، نصار كی اور چوس سے تر ہے۔ (1)

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم _ اس فر مانِ الله :

عدن کے باغ میں یا کیزہ رہنے کی جگہیں ہیں۔

وَمُلكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّتِ عَدْنٍ الْأُلْ

کی تفسیر پوچھی گئی تو آپ نے فرمایا کہ وہ موتیوں کے محلاّت ہوں گے، ہر محل میں سرخ یا قوت کے ستر گھر ہوں گے، ہر گھر میں سبز زمر د کے ستر مکان ہوں گے، ہر مکان میں ایک تخت ہوگا، ہر تخت پر قسم قسم کے ستر بچھونے ہوں گے، ہر بچھونے پراس کی بیوی حور میں ہوگی، ہر مکان میں ستر دسترخوان ہوں گے، ہر دسترخوان پرسترفسم کے کھانے ہوں گے، ہر مکان میں ستر خادم ہوں گے اور مومن ہر مہم ان تمام دسترخوانوں پر بیٹھ کرکھا کیں گے۔ (3)

^{1}حلية الاولياء ، ٤٠٤/٢ ، الحديث ٢٧٣٩

^{2}ترجمهٔ كنز الايمان: اور بإكيزه مكانول كالجيخ كي باغول ميل (ب١٠، التوبة: ٧٧)

^{3} كتاب العظمة ، باب الامر بالتفكر...الخ، ذكر الجنات وصفتها، ص ٢١٨، الحديث ٦١١

L

اب 13

مبر، رضا اور قناعت ﴿

رضا كى فضيلت آيات قرآنى سے ثابت ہے چنانچار شاوالهى ہے:

الله تعالیٰ ان ہےراضی ہوااورو ہاللہ سےراضی ہوئے۔

ى خِيَ اللهُ عَنْهُمْ وَى ضُوْاعَنْهُ مُ

نیزارشاد ہوتاہے:

نہیں ہے بدلہ احسان کا مگراحسان۔

هَلُجَزَآءُالُإِحْسَانِ إِلَّاالُإِحْسَانُ أَنَّ

احسان کامنتھی ہے ہے کہ الله تعالی اپنے بندے سے راضی ہواور یہ مقام بندے کوراضی بررَ ضائے الہی ہونے سے ملتا ہے۔ نیز ارشا دِالٰہی ہوتا ہے:

عدن کے باغوں میں پاکیزہ رہنے کی جگہیں ہیں اور الله کی طرف

وَ مَلْكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّتِ عَدْنٍ ۖ وَرِضُوانٌ مِّنَ اللَّهِ

سے بہت بڑی رضامندی ہے۔

الله تعالی نے اس آیت میں رضا کو جنت عدن ہے بالا ذکر کیا ہے جیسے کہ ذکر کونماز پرفوقیت دی ہے،

چنانچەفرمایا:

اِنَّ الصَّلُوةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكُرِ ﴿ وَلَذِكُمُ اللَّهِ بِهِ اللَّهِ كَارَبُ مَازِ بِحِيلَى اورنامعقول باتوں ہے منع كرتى ہے آئے يَع اللهِ كاربہت برسى چزے ہے۔

يس جبيها كه نماز معبود عقيق (الله تعالى) كى شان بهت بلند ہے اس طرح جنت ہے ربِ جنت كى رضااعلى وار فع

-ترجمهٔ كنز الايمان: الله ان براضي اوروه الله سراضي (پ٧، المائده: ١١٩)
 - 2توجمهٔ كنز الايمان: يَكَى كابدله كيا عِمْريكي _ (٢٧، الرحمن: ٦٠)
- التوجمة كنز الايمان: اوريا كيزه مكانول كابنے كے باغول ميں اور الله كى رضاسب سے بڑى (ب٠١٠ التوبة: ٧٧)
- **4**.....توجمهٔ کنوالایمان: بینک نماز منع کرتی ہے بے حیائی اور بُری بات سے اور بینک الله کا فرکرسب سے بڑا۔ (پ ۲۱، العنکبوت: ۵۰)

ہے بلکہ یہی چیز ہرجنتی کامقصودوطح نظر ہوگی چنانچہ حدیث شریف میں ہے کہ اللّٰہ تعالیٰ مومنوں پر جُلی فر مائے گا اور کہے گا کہ مجھ سے مانگوتو مومن کہیں گے اے اللّٰہ! ہم جھے سے تیری رضا جا ہتے ہیں۔ ⁽¹⁾ تو گویا کمالِ فضیلت کو پا کربھی وہ رب کی رضا جا ہیں گے۔

بندے کی رضاطلی کی حقیقت کا ہم ذکر ضرور کرتے ، بندے سے اللّٰہ تعالیٰ کی خوشنودی کا جومطلب ہے وہ اس معنٰی سے زیادہ قریب ہے جس کا ذکر ہم بندے کے لئے خدا کی محبت کے شمن میں کر چکے ہیں ، چونکہ لوگوں کے نہم اس معنٰی کی حقیقت کو نہیں پاسکتے اس لئے اس حقیقت کے ذکر کا کوئی جواز نہیں ہے اور کون ہے جواپنے نفس کے ادراک سے اس حقیقت کو پالے۔

حقیقت تو یہ ہے کہ دیدار الہی سے بڑھ کرکوئی اور چیز نہیں ہے مگر مومنوں کی دیدار کے وقت رَضائے الہی کی خواہش اس وجہ سے ہوگی کہ یہی چیز دائی دیدار کا سبب ہے پس گویا جب انہوں نے انتہائی بلند مرا تب اوراً میدوں کی آخری حدوں کو چھولیا اور دیدار کی لذت سے لطف اندوز ہو گئے تو انہوں نے مزید پچھ سوال کرنے کے جواب میں دائی دیدار کوہی مانگ لیا اور یہ جان گئے کہ رضائے الہی ہی دائی طور پر جابات کے اٹھ جانے کا سبب ہے اور فرمانِ الہی ہے:

ہمارے نزد یک اس سے بھی زیادہ ہے۔

بعض مفسرین کا کہنا ہے،اس سے زیادہ کے بیمعنی ہیں کہ جنتیوں کورب العالمین کی جانب سے تین تخفے ملیں گے، پہلے بیر کہ انہیں جنت میں ایساتحفہ دیا جائے گا جو پہلے سے ان کے پاس موجو زنہیں ہوگا، چنانچے فر مانِ الٰہی ہے:

یس کوئی نفس نہیں جانتا کہاس کے لیے کونی آئھوں کی ٹھنڈک

چھيائي گئي ہے۔

دوسرے مید کہ انہیں ان کے رب کی طرف سے سلام ہوگا جواس تحفہ سے فزوں ہوگا، جیسا کہ ارشا والہی ہے:

(2) وَلَكَيْنَامَزِيْدٌ ۞

فَلاَتَعْلَمْنَفْسُمَّا أُخْفِي لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ (3)

الحديث ٢٥ ٢٥ مسند البرار، ١٤ ١٩ ٦ مسند البزار، ١٩/١ ٦ ، الحديث ٢٥ ٢٥ ٧

².....توجمهٔ كنز الايمان: اور بمارك پاس اس سيجمي زياده بـ (ب ٢٦، ق: ٣٥)

^{3}توجمهٔ کنز الایمان: توکی جی کوئیس معلوم جوآ نکھی شنڈک ان کے لئے چھیارکی ہے۔ (ب ۲ ، السحدة: ۱۷)

_ [7]

رب رحيم كي طرف سے انہيں سلام كہا جائے گا۔

(1) سَلُمُّ قَوُلًا مِِّنْ مَّ بِّ مَّحِيْمٍ ۞

تیسرایه که الله تعالی فرمائے گا: میں تم سے راضی ہوں اور میہ بات سلام اور تحفہ ہے بھی بہتر اور اعلیٰ ہے، چنانچہ فرمانِ الہی ہے:

> وَيِهِ ضَوَاتٌ مِنِّ اللهِ اَكْبَرُ (2) وَيهِ ضَوَاتٌ مِنِّ اللهِ اَكْبَرُ (2)

یعنی ان نعمتوں سے بھی افضل ہے جن کوانہوں نے حاصل کرلیا ہے، پس یہی الله تعالی کی مقدس رِضا ہے جو بندے کی رَضا جوئی کا پھل ہے۔

ابرہی اَحادیث مقدسہ سے رَضا کی فضیلت تواس سلسلہ میں بہت ہی اَحادیث واردہوئی ہیں چنانچے حضور صَلَّی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے مروی ہے کہ آپ نے صحابہ کی ایک جماعت سے بوچھا: تم کون ہو؟ انہوں نے کہا: مومن ، آپ نے فرمایا: تبہارے ایمان کی کیاعلامت ہے؟ انہوں نے کہا: ہم مصائب پرصبر کرتے ہیں، فراخی میں شکرا داکرتے ہیں اور اللّٰه کی قضا پر راضی رہے ہیں۔ آپ نے فرمایا: ربِّ کعبہ کی قشم تم مومن ہو۔ (3)

فرمانِ نبوی ہے کہ حکماءاورعلاءا پنی فقہ کی وجہ سے اس امر کے قریب ہوئے کہ نبی ہوجا کیں۔ ⁽⁴⁾ حدیث شریف میں ہے کہ اُس شخص کے لئے خوشخبری ہے جسے اسلام کی ہدایت ملی اور وہ اپنی معمولی گزراوقات • (5)

فرمانِ نبوی ہے کہ جو شخص الله تعالی ہے معمولی رزق پرراضی ہو گیاالله تعالیٰ اس کے اعمال پرراضی ہوجا تا ہے (6) اور فرمایا: جب الله تعالیٰ سی بندہ پرراضی ہوجا تا ہے تو اس کو آزمائش میں ڈال دیتا ہے اگروہ صبر کرے توالله تعالیٰ

ان يرسلام بوگامبر بان رب کافرمايا بوا- (پ۲۳، يست: ۵۸)

^{2}ترجمهٔ كنز الايمان: اورالله كي رضاسب سي برس ١٠٠٠، التوبة: ٧٢)

^{3}المعجم الاوسط، ٦/٧٦، الحديث ٩٤٢٧

^{◘.....}كنزالعمال،كتاب الايمان والاسلام، الفصل الاول، ١٤٨/١، الحزء الاول، ١٣٥٩

^{5} ترمذي، كتاب الزهد، باب ماجاء في الكفاف...الخ ، ١٥٦/٤ ، الحديث ٢٣٥٦

العبان، السبعون من شعب الايمان، الخ، فصل في ذكر مافي الوجاع...الخ، ٢٠٤/٧، الحديث ١٠٠٠٣

اس بندے کو پیند کر لیتا ہے اورا گروہ آ زمائش پر راضی ہوجائے تواللّٰہ اسے (اپنے خاص بندوں میں) چن لیتا ہے۔ (1)

فر مانِ نبوی ہے: جب قیامت کا دن ہو گااللّٰہ تعالیٰ میری اُمت کے ایک گروہ کے پر پیدا فر مائے گا اور وہ ان
پُروں سے اُڑ کر قبروں سے نکلتے ہی سید ہے جنت میں جا پہنچیں گے، وہ جنت کی نعمتوں سے لطف اُ ندوز ہوں گے اور
جہاں جا ہیں گے آ رام کریں گے ،فرشتے ان سے کہیں گے: کیاتم حساب دیکھ آئے ہو؟ وہ کہیں گے کہ ہم نے حساب
نہیں دیکھا،فرشتے پوچھیں گے: کیاتم پل صراط عبور کر آئے ہو؟ وہ کہیں گے: ہم نے صراط کونہیں دیکھا۔ فرشتے کہیں
گے: کیاتم نے جہنم کودیکھا ہے؟ وہ کہیں گے: ہم نے کسی چیز کونہیں دیکھا۔

تب فرشتے کہیں گے: ہم تہمیں الله کی شم دیتے ہیں یہ بتاؤتم دنیا میں کیا کہ محم حمد (صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَم) کی امت ہیں، فرشتے کہیں گے: ہم تہمیں الله کی شم دیتے ہیں یہ بتاؤتم دنیا میں کیا عمل کیا کرتے تھے؟ وہ کہیں گے کہ ہم میں دوعا دتیں تھیں جنہوں نے ہمیں الله کی شم دیتے ہیں یہ بتاؤتم دنیا میں جنہوں نے ہمیں اس منزل تک پہنچایا ہے اور الله کافضل ورحت ہمار سے شاملِ حال ہے، فرشتے کہیں گے: وہ دو عادتیں کوئسی تھیں؟ وہ کہیں گے: ہم جب تنہا ہوتے تو گناہ کرتے ہمیں شرم آتی تھی چہ جائیکہ ہم علی الاعلان گناہ کرتے اور ہم الله تعالیٰ کے عطا کردہ معمولی رزق پر راضی ہوگئے تھے، فرشتے یہ سی کر کہیں گے، تب تو تمہارا یہی بدلہ ہونا چاہئے تھے۔ فرشتے یہ سی کر کہیں گے، تب تو تمہارا یہی بدلہ ہونا چاہئے تھے۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فرما يا: الصَّروةِ فقراء! تم دل كى گهرائيوں سے الله كى عطا پر راضى ہوجا وُ تو اپنے فقر كا تُواب يالوگے ور ننہيں۔ (3)

موسی عَدَیْهِ السَّدَه کے واقعات میں ہے کہ بنی اسرائیل نے ان سے کہا:اللّٰه تعالیٰ سے ہمارے لئے کوئی ایساعمل دریافت سیجئے جس کے باعث وہ ہم سے راضی ہوجائے۔موسی عَدَیْهِ السَّدَم نے بارگا والٰہی میں عرض کی:اے اللّٰه تو نے ان کی گزارش من کی،انہوں نے کیا کہا ہے؟ رب تعالیٰ نے فرمایا:اے موسی!ان سے کہد و کہ یہ مجھے سے راضی ہوجا کیں ایسی میرے دیئے ہوئے کم وبیش پر راضی ہوجا کیں، میں ان سے راضی ہوجا وَل گا۔

^{1}فردوس الاخبار، ١٥١/١، الحديث ٩٧٦

^{2}قوت القلوب، ذكر احكام مقام الرضا ، ٢٥/٢

^{€}فردوس الاخبار ، ٤٧٥/٢ ، الحديث ٨٢٤٢

رہے صبر کے فضائل تو رب تعالی نے قرآنِ مجید میں نوّے سے زیادہ مقامات پر صبر کا ذکر فرمایا ہے اور اکثر درجات اور بھلائیوں کو صبر سے منسوب کیا ہے اور انہیں صبر کا پھل قرار دیا ہے اور صابروں کے لئے ایسے انعامات رکھے ہیں جوکسی اور کے لئے نہیں رکھے، چنانچے ارشا دِ الہی ہے:

اُولَيِّكَ عَكَيْهِمْ صَلَوْتٌ مِّنَ بَيْهِمْ وَمَرَحْمَةٌ "وَأُولَيِّكَ هُمُ ان لوگوں پران كےرب كى طرف سے درود بين اور رحمت (1) الْهُهَنَدُوْنَ ﴿ (1) الْهُهَنَدُوْنَ ﴿ اِللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الْحَالَا اللَّهُ اللّ

لہٰذا ثابت ہوا کہ ہدایت،رحمت اور صلوات تین چیزیں صابرین کے لئے مخصوص ہیں۔

چونکہاس میں تمام آیات ِ ربانی کا لانا ناممکن ہے لہٰذااس سے صرف نظر کرتے ہوئے صرف چندا حادیث درج کی جاتی ہیں۔فر مانِ نبوی ہے کہ صبر آ دھاا بمان ہے۔ (2)

مزید فرمایا کہ تھوڑی ہی وہ چیز جو تہہیں یقین اور پختہ صبر سے ل جائے اور جس شخص کوان میں سے پچھ حصہ مرحمت کردیا جائے اس سے اگر رات کی عبادت اور دن کے روز ہے فوت ہوجا ئیس تو کوئی پروانہیں۔ (واضح رہ کہ یہاں عبادت اور دوز وں سے مراد فل عبادت اور دوز ہیں)۔ اور تمہارا معمولی رزق پرصبر کرنا مجھے اس بات سے زیادہ پسند ہے کہ تم میں سے ہرایک تمام کے اعمال پر کار بند ہوکر آئے لیکن میں تم پرخوف کرتا ہوں کہ میرے بعد تم پردنیا کھول دی جائے گی، پس تم ایک دوسرے کوا چھانہ بیھنے لگو اور اس سبب سے فرشتے تمہیں اچھانہ بیھنے لگیں، جس نے صبر کیا اور ثواب کی الی ویالیا، (3) پھر آپ نے بی آیت پڑھی:

مَاعِنُكُمُ مِنْفَدُ وَمَاعِنُكَ اللهِ بَاقِ ﴿ وَلَنَجُزِينَ الَّذِينَ جَوَجَهُمُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى الله عَلَى اللهُ عَلَى ا

-توجمهٔ كنز الايمان: ياوگ بين جن بران كرب كي درودي بين اور رحت اور يجي لوگ راه بر بين (ب٢، البقرة: ١٥٧)
 - 2 شعب الايمان، باب القول في زيادة الايمان...الخ ، ١/٤٧، الحديث ٤٨
 - ·····•
- ستو جمهٔ کنز الایمان: جؤتمهارے پاس ہے ہو چکے گااور جواللہ کے پاس ہے ہمیشدر ہنے والا اور ضرور ہم صبر کرنے والول کوان کا وہ صلہ
 ویں گے جوان کے سب سے اچھے کام کے قابل ہو۔ (ب٤١، النحل: ٩٦)

M

حضرت ِ جابر رَضِیَ اللهٔ عَنُه سے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللهٔ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے ايمان کے متعلق بوچھا گيا، آپ نے فرمايا ايمان ،صبر اور سخاوت کا نام ہے۔

اور فر مایا صبر، جنت کے خزانوں میں سے ایک خزانہ ہے۔

ایک مرتبہ آپ سے دریافت کیا گیا کہ ایمان کیا ہے؟ آپ نے فرمایا:صبر۔

اور رہ بات حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاس فر مان كَمثل ہے جس ميں حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے دریافت کیا گیا تھا كہ جج کیا ہے؟ تو آ بے نے فرمایا: وقو نے عرف ہے (^{4) یعنی} اہم رکن وقو نے عرفات ہے۔

. فرمانِ نبوی ہے کہ سب سے عمدہ عمل وہ ہے جسے نفس بُر اسمجھتا ہے۔ ⁽⁵⁾

مروی ہے کہ الله تعالی نے حضرتِ داؤد عَلَيْهِ السَّلام کووی فر مائی که میرے اخلاق جیسے اپنے اخلاق بناؤاور میرے اخلاق میں سے بیہ ہے کہ میں صَبُور ہوں۔

عطاء رَضِى اللهُ عَنه نے ابن عباس رَضِى اللهُ عَنهُمَا سے روایت کی ہے کہ حضور صَلَّى اللهُ عَنهُ وَسَلَّم جب اَنصار میں الله عنه نے ابن عباس رَضِی الله عنه بولے: ہال یارسول الله (صَلَّى الله عَلَی الله عَلَی الله عَنه بولے: ہال یارسول الله (صَلَّى الله عَلَیْکَ وَسَلَّم)! آپ نے فر مایا: تمہارے ایمان کی علامت کیا ہے؟ انہول نے عرض کی: ہم فراخ دسی میں الله کاشکرا دا کرتے ہیں، مصائب میں صبر کرتے ہیں اور قضائے اللی پر راضی رہتے ہیں، آپ نے بین کر فر مایا: ربِ کعبہ کی شم! تم مومن ہو۔ (6)

فرمانِ نبوی ہے: اپنی ناپسندیدہ چیزوں پرتمہاراصبر بہت عمدہ چیز ہے۔

- 🚹مكارم الاخلاق للطبراني، باب فضل اطعام الطعام ، ص ٧٠ ٣٧، الحديث ٥٥١
 -2
- ۱۰۸۳۷ عب الايمان ، الرابع و السبعون من شعب الإيمان ، باب في الجود و السخاء ، ۷/٥٢٤ ، الحديث ١٠٨٣٧
 - 4....ابن ماجه، كتاب المناسك، باب من اتى عرفة. . . الخ ، ٢٨/٣ ٤ ، الحديث ٢٠١٥
 - 5محاسبة النفس لابن ابي الدنيا ، باب الحذر على النفس . . . الخ ، ص١٢٣ ، الحديث ١١٣
 - 6المعجم الاوسط ، ٦/٧٦ ، الحديث ٢٧ ع ٩
 - 7 مسند احمد، مسند عبدالله بن عباس...الخ ، ١/٩٥١، الحديث ٢٨٠٤

011

حضرت عِيسى عَلَيْهِ السَّلام نے فر مایا جتم اپنی پسندیدہ چیزوں کونہیں پاسکتے جب تک کہ ناپسندیدہ چیزوں پرصبر نہ

کرو.

نیزارشا دفر مایا کہا گرصبر آ دمی ہوتا تو مہر بان آ دمی ہوتا اور الله صبر کرنے والوں کو دوست رکھتا ہے۔ ⁽¹⁾ صبر کے موضوع پر بیشار احادیث ہیں جنہیں ہم بخو ف طوالت چھوڑ رہے ہیں۔ اب قناعت کے متعلق دو حدیثیں بیان کی جاتی ہیں:

> حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيُهِ وَسَلَّم نے فر مایا: جس نے قناعت کی وہ معزز ہوااور جس نے لا کچ کیاوہ ذلیل ہوا۔ (2) نیز فر مایا کہ قناعت ایک ایسا خزانہ ہے جوفنانہیں ہوتا۔ (3)

> > اس موضوع پر پہلے بھی کیچھ کھاجا چکا ہے۔ والله اعلمہ۔

چارفرامينِ مُصطَفُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

﴿ ١ ﴾ بِوَحْض لوگوں ہے مُوال کرے حالانکہ ندائے قاقہ پہنچانداتنے بال بیتے ہیں جن کی طاقت نہیں رکھتا تو قیامت کے دن اسطرح آئے گا کہ اُس کے منہ پر گوشت نہ ہوگا۔ (شعب الایمان ،٣/ ۲۷٤، الحدیث ٢٥٦٦) ﴿ ٢ ﴾ بِحُوخُص بغیر حاجت سوال کرتا ہے گویاوہ انگار اکھا تا ہے۔ (المعجم الکبیر، ٤/د، الحدیث ٢٠٠٦) ﴿ ٣ ﴾ جو مال برد حانے کے لیے سوال کرتا ہے وہ انگارے کا سُوال کرتا ہے تو چاہے زیاوہ مانے یا کم کا سوال کرے۔ (مسلم ،ص ۸۱۵، الحدیث ۲۰۱۱)

﴿٤﴾ جوشخص لوگوں سے سوال کرے اس لیے کہ اپنے مال کو بڑھائے تو وہ جہنم کا گرم پھر ہے اب اسے اختیار ہے جاہے تھوڑ امائکے یازیاد وطلب کرے۔

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ، ١٦٦/٥ الحديث ٣٣٨٢)

....0

البيان، البقرة ،تحت الآية: ٧١، ١٦١/١ و بريقة محمودية في شرح طريقة محمدية و شريعة نبوية في سيرة أحمدية، ٣٣/٣

3 الزهد الكبير للبيهقي ، ص ٨٨، الحديث ١٠٤

74

<u>ۗ فضيلتِ توكّل ۗ</u>

فرمانِ اللی ہے:

بے شک الله تعالی تو کل کرنے والوں کومحبوب رکھتا ہے۔

إِنَّاللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّوَكِّلِينَ (1)

اوراس سے بلندمقام جس کا فاعل الله تعالیٰ کی محبت سے موسوم ہے اور جس کالباس وغیر والله تعالیٰ کی کفایت سے آراستہ ہے، کونسا ہے؟ بس و و شخص جسے الله کا فی ہو، نگہبانی کرنے والا ہو، البنة و عظیم کامیا بی پر فائز المرام ہوا کیونکه محبوب کونہ تو عذاب دیاجا تا ہے اور نہ اسے دھتکارا جاتا ہے اور نہ اسے دور کیاجا تا ہے۔

^{•}ترجمهٔ كنز الايمان: بشك توكل والحالله كوييار يين (ب٤٠ ال عمرن: ١٥٩)

^{2} الجزء السابع، الحديث ٢٠٥٢ الجزء السابع، الحديث ٢٠٥٢

مكاشفة القلوب

طرح رزق دیتا جوسج بھوکے نکلتے ہیں اور شام کوسیر ہوکر آتے ہیں۔

فر مانِ نبوی ہے: جوسب سے قطع تعلق کر کے الله تعالی سے تعلق جوڑ لیتا ہے،الله تعالی ہرمشکل میں اسے کافی ہوتا ہے اور اسے ایسے طریقے سے رزق دیتا ہے جواس کے وہم و گمان میں بھی نہیں ہوتا اور جو شخص دنیا کا ہوجا تا ہے الله تعالی اسے دنیا کے سپر دکر دیتا ہے۔ (2)

فرمانِ نبوی ہے: جو شخص اس چیز کو پسند کرتا ہے کہ وہ سب لوگوں سے زیادہ مالدار ہو، اسے جا ہے کہ موجو درزق سے زیادہ اعتماداس رزق پر کرے جواللہ کے ہاں موجود ہے۔ ⁽³⁾

مروی ہے:حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كے اہلِ خانہ جب فاقے سے ہوتے تو آپ فرماتے كەنماز كے لئے كھڑے ہوجاؤاور ميرے رب نے مجھے يہي حكم دياہے۔ (4)

اوراپنے گھر والوں کونماز کاحکم کرو اور اس پرصبر کرو۔

(5) وَأُ مُرْاَهُكَ بِالصَّلَاقِ وَاصْطَدِرْ عَلَيْهَا ﴿

فر مانِ نبوی ہے کہ جس شخص نے جنز منتز کیااور جسم کوداغا ،اس نے تو کل نہیں کیا۔ ⁽⁶⁾

مروی ہے کہ جب حضرتِ جبر میل عَلَیْہِ السَّالام نے حضرتِ ابراہیم عَلیْهِ السَّلام کو بخین سے آگ میں بھیلے جانے کے وقت کہا: کیا تمہاری کوئی حاجت ہے۔ آپ اس ہے۔ آپ اس عہد کو پورا کررہے تھے جوانہوں نے آگ میں بھیلے جانے کے لئے گرفتاری کے وقت کیا تھا کہ'' مجھے میرارب کافی ہے اور وہ اچھا کارساز ہے''اور الله تعالی نے بیآ بیت نازل فرمائی:

اورابراہیم (عَلَيْهِ السَّلام)جس نے اپنا قول پورا کیا۔

وَ إِبْرُهِ يُمَالَّنِي كُونَى ﴿ ثُلَّا إِنَّهُ اللَّهِ مُمَّالَّذِي كُونَ ۚ ﴿ 7

- 1ترمذي، كتاب الزهد، باب في التوكل على الله، ٤/٤ ٥١، الحديث ٢٣٥١
- 2شعب الايمان ، الثاني عشر من شعب...الخ ، فصل في انه كما ينبغي...الخ ، ٢٨/٢، الحديث ١٠٧٦
 - 3مكارم الاخلاق لابن ابي الدنيا، باب ماجاء في مكارم الاخلاق،ص ١٠الحديث ٥
 - 4....المعجم الاوسط، ١ / ٢٥٨ ، الحديث ٦٨٨
 - الايمان: اورايغ گروالول كونماز كاتمكم د_اورخوداس برثابت ره_(پ٦٠، ظه: ١٣٢)
 - 6مسند احمد، مسند الكوفيين، حديث المغيرة بن شعبة ،٦/٦، الحديث ١٨٢٢٥
- **7**.....توجمهٔ كنز الايمان: اورابراتيم كجوادكام يورب بجالايا- (ب٧٧، النحم: ٣٧)..... كشف الخفاء، ١ / ٣١، الحديث ١١٣٤.

الله تعالی نے حضرتِ داؤد عَدَیْهِ السَّلام پروحی نازل فرمائی: اے داؤد! میراایسا کوئی بندہ نہیں جو مخلوق کوچھوڑ کر میرا دامن رحمت تھام لیتا ہے اور زمین وآسان اس پر سختیاں لاتے ہیں مگر میں اس کی سب دشواریاں دور کر دیتا ہوں اوراس کے لئے راستہ نکال دیتا ہوں۔

حضرتِ سعید بن جُبیر رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کہتے ہیں کہ جُھے بچھونے ڈنگ ماراتو میری والدہ نے جُھے تیم دی کہ میں کسی جھاڑ پھونک کرنے والے کے پاس جا کر دَم کراؤں، چنانچہ منتر پڑھنے والے نے میراوہ ہاتھ پکڑا جونہیں ڈسا گیا تھااور بیآ یت پڑھی:

اوراس زندہ پرتو کل کر جسے موت نہیں آئے گی۔

(1) وَتَوَكَّلُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيثِ لِا يَمُوْتُ

اور کہا کہاس آیت کو سننے کے بعد کسی آ دمی کے لئے بیمناسب نہیں ہے کہ وہ اللہ تعالیٰ سے سواکسی اور کی پناہ تلاش کرے۔(2) ایک عالم سے خواب میں کہا گیا کہ جس نے اللہ پراعتما دکیا اس نے اپنارز ق جمع کرلیا۔ بعض علماء کا قول ہے کہ

یت کا حصول تجھے فرض کردہ اعمال سے غافل نہ کردے کیونکہ اس طرح تیری عاقبت خراب ہوجائیگی اور تجھے

وہی رزق ملے گاجو تیرامقدر ہو چکاہے۔ کی بن مُعاذرَ ضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ بندے کا بغیر طلب کئے رزق پالینااس

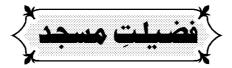
بات کی دلیل ہے کہ رزق کو بندے کی تلاش کا تھم دیا گیا ہے۔

ابراہیم بن ادہم دَ حُمَدُ اللهِ عَلَيْه فرماتے ہیں کہ میں نے ایک راہب سے پوچھا:تم کہاں سے کھاتے ہو؟اس نے کہا جھے اس کی خبرنہیں ہے،رہِ جلیل سے پوچھ کہوہ مجھے کہاں سے کھلاتا ہے۔

حضرتِ ہَرِم بن کتیّان نے حضرتِ اولیس قرنی رَضِیَ اللهُ عَنْه سے کہا: آپ مجھے کہاں جانے کا تھکم دیتے ہیں؟ انہوں نے شام کی طرف اشارہ کیا، ہرم بولے: وہاں گزراوقات کیسے ہوگی؟ حضرتِ اولیس نے فر مایا: ہلاک ہوجا تیں وہ دل جن میں خدایراعتا دنہیں ہے اور وہ شک میں بڑگئے ہیں، ایسے دلوں کوضیحت کوئی فائدہ نہیں دیتی ہے۔

ایک بزرگ کا قول ہے کہ جب سے میں الله تعالیٰ کواپنا کارسا زبنانے پر راضی ہوا ہوں ، مجھے ہر بھلائی کاراستدل گیا ہے۔اےالله! ہمیں بھی مُسنِ اوب عطافر مادے۔ (آمین)

- الفرقان: ۱۹ (پ۹۱ مان) اور پهروسه کرواس زنده پر چوبهی نمر کا (پ۹۱ ما الفرقان: ۱۹)
 - 2الجامع الصغير ، ص ١٦٥ ، الحديث ٢٧٨٣



فرمان الهي ہے:

الله كى مساجد كوصرف وہى لوگ آبا وكرتے ہيں جوالله اور

إِنَّهَا يَعْمُهُمُ مَلْجِدَاللَّهِ مَنْ الْمَنْ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِرِ الأخِر(1)

آخرت کے دن برایمان لاتے ہیں۔

فر مان نبوی ہے کہ جس شخص نےاللّٰہ کی رضا جو ئی کے لئے مسجد بنائی اگر چہوہ مسجد بھٹ تیتر ⁽²⁾ کے بیل کے برابر ہی کیوں نہ ہو،اللہ تعالی اس شخص کے لئے جنت میں محل بنادیتا ہے۔⁽³⁾

فر مان نبوی ہے: جبتم میں سے کوئی مسجد سے محبت رکھتا ہے الله تعالیٰ اس سے محبت رکھتا ہے۔ ⁽⁴⁾

فر مانِ نبوی ہے کہ جبتم میں سے کوئی شخص مسجد میں داخل ہوتو بیٹھنے سے پہلے دور کعت نماز اداکرے۔(5)

فر مان نبوی ہے کہ سچد کے ہمسایہ کی نما زمسجد کے سوا جا ئرنہیں ⁽⁶⁾

ایک اورارشادِ نبوی ہے کہتم میں ہے کوئی فر وجب تک جاءنماز برر ہتا ہے فرشتے اس کے لئے مغفرت و بخشش کی دعائیں کرتے ہیں اور کہتے ہیں:

'' اے الله! اس پرسلامتی نازل فرماء اے الله! اس پررهم فرما اوراے الله! اسے بخش دے۔'' یہ دعا ئیں اس وقت تک جاری رہتی ہیں جب تک کہ وہ کسی سے بات نہ کرے یا مسجد سے نکل نہ جائے۔ ⁽⁷⁾

- 1توجمهٔ كنز الايمان: الله كي مسجدين وي آباوكرت بين جوالله اورقيامت برايمان لات (بين) (ب. ١٠ التوبة: ١٨)
 - 2 خاکی بھورے رنگ کا تیتر علمیہ
 - 3 صحيح ابن حبان، كتاب الصلاة، باب المساجد، ٣/٩٦، الجزء الثالث، الحديث ١٦٠٨
 - 4المعجم الاوسط ، ٤٠٠/٤ ، الحديث ٦٣٨٣
 - 5 بخارى، كتاب الصلاة، باب اذا دخل المسجد...الخ ، ١ / ١ ٧ ١ ، الحديث ٤٤٤
 - 6المستدرك للحاكم ، كتاب الامامة ... الخ ، باب لاصلاة لجار .. . الخ ، ١٩/١ ٥ ، الحديث ٩٣٣
 - 7 بخارى، كتاب الاذان، باب من جلس في المسجد...الخ ، ٢٣٦/١، الحديث ٩٥٦

فر مان نبوی ہے کہ آخر زمانہ میں میری امت کے کھھ ایسے لوگ ہوں گے جومسجدوں میں آئیں گے اور گروہ بنا کرد نیاوی با تیں کرتے رہیں گےاور دنیا کی محبت کے قصے بیان کریں گے،ان کے ساتھ نہ بیٹھنا،الله تعالیٰ کوان کی کوئی ضرورت نہیں ہے۔⁽¹⁾

فرمانِ نبوی ہے کہ الله تعالی کابدارشاد بعض الہامی کتابوں میں موجود ہے کہ زمین پرمسجدیں میرا گھر ہیں اوران کی تعمیر و آبادی میں حصہ لینے والے میرے زائر ہیں، پس خوشخبری ہے میرے اس بندے کے لئے جوایئے گھر میں ا طہارت حاصل کر کے میرے گھر میں میری زیارت کو آتا ہے لہٰذا مجھ پرحق ہے کہ میں آنے والے زائر کوعزت ووقار

سرورِ کا نئات صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشاد ہے كہ جب تكتم كسى ايسے آدمى كوديكھو جومسجد ميں آنے كاعادى ب تواس کےا بیان کی گواہی دو۔⁽³⁾

جناب سعيد بن مسيّب رَضِيَ اللهُ عَنْه كا قول بي: جو خص مسجد مين بينه قتاب، كوياوه الله كي مجلس مين بينه قتاب لهذا اسے بھلائی کے سوا کوئی اور بات نہیں کرنا جا ہے۔

ایک حدیث میں بیجی آیا ہے کہ سجد میں دنیاوی باتیں نیکیوں کواس طرح کھا جاتی ہیں جیسے جانور حیارہ کھا جاتے

اما مَخْعَى رَضِيَ اللهُ عَنه كاقول ہے:سلف صالحین نے فرمایا كرات كى تاريكى میں مسجد میں آنے والے كے لئے جنت واجب ہوئی ہے۔

حضرتِ أنس بن ما لك رضي الله عنه كافر مان ہے كہ جو خص معجد ميں چراغ جلاتا ہے، جب تك اس چراغ كى

^{●}المستدرك للحاكم، كتاب الرقاق، باب من استحيى من الله...الخ، ٥/١٦، الحديث ٧٩٨٦

^{2} فيض القدير، ٢٤/٢ ٥، الحديث ٢٢٥٨ و الزهد لأبي داود، محمد بن كعب، ص٣٧٨، الحديث ٤٨٣ و المعجم الكبير، ٦/٥٥/، الحديث ٦١٤٥

^{3}ترمذي، كتاب التفسير، باب ومن سورة التوبة ، ٥١٤/٥ الحديث ٢١٠٤

^{4} كشف الخفاء ، ١/٥/٦ ، الحديث ١١١٩

017

روشنی ہے مسجد منور رہتی ہے، حاملین عرش اور تمام فرشتے اس کے لئے مغفرت کی دعا کرتے رہتے ہیں۔

حضرتِ على رَضِيَ اللَّهُ عَنُه فرماتے ہیں کہ جب آ دمی مرجا تاہے تواس کی نماز پڑھنے کی جگہ اور آسان کی جگہ،

جہاں ہے اس کے مل چڑھا کرتے ہیں،اس پرروتے ہیں پھرآپ نے یہ آیت پڑھی:

' دلیس ان بر نیز مین وآسان روئے اور نه بی نہیں ڈھیل دی گئی۔''(1)

(یعنی جب ایساشخص مرتاہے جس کی نماز پڑھنے کی جگہ نہیں ہوتی تواس پرز مین وآ سان نہیں روتے)

حضرت ابن عباس دَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا كا قول ہے كه نمازي پرجاليس شجبيں (2) زمين روتی ہے۔

حضرت ِعطاءالخراسانی َ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ بندہ جب زمین کے سی ٹکڑے پر سجدہ کرتا ہے تو وہ ٹکڑا قیامت کے دن اس کے ممل کی گواہی دے گااوراس بندے کی موت کے دن وہ ٹکڑار و تاہے۔

معن میں مالک رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ زمین کا ہروہ گلڑا جس پرنمازادا کی جاتی ہے یاذ کر خدا کیا جاتا

ہے وہ اِردگر د کے تمام قطعات پرفخر کرتا ہے اور اُوپر سے بینچ سانویں زمین تک وہ مسرت وشاد مانی محسوس کرتا ہے اور جب بندہ کسی زمین برنماز پڑھتا ہے وہ زمین اس برفخر کرتی ہے۔

اوریہ بھی کہا گیا ہے کہ کوئی جماعت ایسی نہیں ہے جو کہیں جا کر تھم سے مگر زمین کا وہ ٹکڑا جوان کی قیام گاہ ہے، یا تو ان برسلامتی بھیجتا ہے یاان برلعنت کرتا ہے۔

کتوں کی طرح کا شتے اور نوچتے ہوں گے

ایک بُڑرگ زخمَهٔ اللهِ تعالیٰ علیهٔ فرماتے میں کہ جب قیامت کادن آئے گا توالله عَوْدَ جَلَّ کی نافر مانی کے لئے مِل کر بیٹھنے والے اور گناموں پرایک دوسر کے کی مدد کرنے والے جمع ہوں گے، پھروہ کھٹنوں کے بل کھڑے ہوں گے اورایک دوسر کے کتوں کی طرح کا شنے اورنو چتے ہوں گے، یہوہ بدنھیب ہوں گے جو بغیر تو بہ کئے و نیا ہے رخصت ہوئے ہوں گے ۔ (بحرالدموع، ص ۱۸۵)

الدحان: ۹۱ الدحان: توان پرآسان اورز مین نهروئ اورانبیس مهلت نه دی گی (پ ۲۰ ۱ الدحان: ۲۹)

علميه اليس دن تك علميه

76 <u>-</u>!

رياضت و فضيلتِ أصحابِ كرامت كُ

یہ بات اچھی طرح ذہن شین کرلینی چاہئے کہ اللہ تعالی جب کسی بندہ کی بھلائی چاہتا ہے تو وہ بندہ اپنے عیوب پر مطلع ہوتا ہے نگاہ ڈالتا ہے، جس کی بصیرت کامل ہوجاتی ہے اس سے کوئی گناہ پوشیدہ نہیں رہتا لہذاوہ جو نہی اپنے عیوب پر مطلع ہوتا ہے اس کے لئے انکاعلاج ممکن ہوجاتا ہے لیکن اکثر جاہل اپنے عیوب سے ناواقف ہوتے ہیں وہ دوسرے کی آئکھ کا تکا تو دکھے لیتے ہیں گرانہیں اپنی آئکھ کا شہتر نظر نہیں آتا، جو تخص اپنے عیوب پر مطلع ہونا چاہے اس کے لئے چارطریقے ہیں:

مہملاطر بقتہ: ایسے شخ کامل کی صحبت اختیار کرے جو اپنے عیوب کا آشنا ہواور پوشیدہ نفسانی خواہشات خباشوں سے کما حقہ واقف ہو، وہ اسے اپنفس کا حاکم بنائے عبادات میں اس کے اشاروں پر چلے، یہی کچھ مرید کوشنے کے تکم پر اورشاگر دکواستاد کے تھم پر کرنا چاہئے تا کہ اس کا شخ اور استاداس کے باطنی عیوب اور ان کے علاج کی شخیص کرسیس ، ہمارے اورشاگر دکواستاد کے تصم پر کرنا چاہئے تا کہ اس کا شخ اور استاداس کے باطنی عیوب اور ان کے علاج کی تشخیص کرسیس ، ہمارے زمانہ میں اس طریقے کی بہت عزت ہے۔

دومراطر بقد: ایسے دوست کا ہم مجلس بے جوصاد ق،صاحب بصیرت اور دِین دار ہو، آدی اسے اپنفس کا مکہان بنائے تا کہ وہ دوست اس کے احوال وا فعال پر نظر رکھے اور ان میں سے جوعادت اور ظاہری و باطنی عیب نظر آئے ہوان بنائے تا کہ وہ دوست اس کے احوال وا فعال پر نظر رکھے اور ان میں سے جوعادت اور ظاہری و باطنی عیب نظر آئے وہ اسے اس پر تنبیہ کرے عقلمندا وراکا برعلاء دِین کا یہی طریق تھا، حضر سے عمر دَضِی الله عنه فرمایا کرتے تھے کہ الله تعالی اس جوان پر حم فرمائے جو مجھے میرے عیوب پر مطلع کرے اور آپ حضر سے سلمان دَضِی الله عنه سے اپنے عیوب پوچھا کرتے تھے، وہ جب بھی آتے آپ ان سے فرمات کیا آپ نے میرے اندر کوئی الیں چیز پائی ہے جسے آپ بر اس محصتے ہوں؟ حضر سے سلمان دَضِی الله عنه نے میر نوان پر دوسالن جع کرتے ہوا ور تمہارا رات اور دن کا علیحد ہ لباس ہے، نے کہا: مجھے معلوم ہوا ہے کہ آگے دہ نزوان پر دوسالن جع کرتے ہوا ور تمہارا رات اور دن کا علیحد ہ لباس ہے، حضر سے عمر دَضِی الله عنه نے ذرمایا کیا آپ نے اس کے سواکوئی اور بات بھی سی ہے؟ انہوں نے کہا: نہیں! تب آپ نے فرمایا کہ میں نے ان کور ک کیا۔ اور حضر سے صد یفہ دَضِی الله عنه سے فرمایا کرتے (آپ منافقوں کے بارے میں نبی نے فرمایا کہ میں نے ان کور ک کیا۔ اور حضر سے صد یفہ دَضِی الله عنه سے فرمایا کرتے (آپ منافقوں کے بارے میں نبی

M

کریم صَلَّی اللهٔ عَلَیهِ وَسَلَّم کے راز دان مِنے) فرمائے ! کہیں میرے اندر آپ کومنا فقت کی علا تیں تو نظر نہیں آ کیں ؟ آپ السی جلیل القدر اور عظیم الشان مرتبے کے باوجود اپنے نفس کی دیکھ بھال اور سرزنش سے عافل نہ ہوتے۔ جس کسی میں عقل وافر اور بلند ہوتی ہے وہ تکبر سے کنارہ کشی کر لیتا ہے اور اینے نفس کی سرزنش سے عافل نہیں

ایسے تخص کودوست نہ رکھو جوچشم پوشی سے کام لیتے ہوئے تہمیں تبہارے عیوب نہ بتلائے اورایک مقرر حدسے بڑھنے کی کوشش نہ کرتے ہوئے تمہیں اپنے متعلق اندھیرے میں رکھے، نیز ایسے لوگوں کو دوست بناؤ جو حاسد اور مطلب پرست ہوں تا کہوہ تبہاری نیکیاں بھی عیبوں کی صورت میں دکھا ئیں اورتم ان سے سبق حاصل کرواورایسے چشم مطلب پرست ہوں تا کہوہ تبہاری برائیوں کوخو بہاں کہے۔

اس لئے کہتے ہیں کہ جب حضرتِ داؤ دطائی رَحْمَةُ اللهِ عَليْه نے لوگوں سے عزلت نشینی اختیار فرمائی تو کسی نے بوچھا آپ لوگوں سے کیسے تعلقات رکھوں جو مجھ سے عیب بچھیا آپ لوگوں سے کیسے تعلقات رکھوں جو مجھ سے عیب جھیاتے ہیں۔

وین دارلوگ ابتداءِ حال ہی سے اس بات کے مُتمنی ہوتے سے کہ لوگ انہیں ان کے عیوب پرمطلع کریں اوروہ
اپنی اِصلاح کرلیں لیکن ہماری حالت ہے ہے کہ جوہمیں نصیحت کرتا ہے اورہمیں ہمارے عیوب بتاتا ہے،ہم اسے اپنا
سب سے بڑا دشمن سجھے ہیں اور یہی بات انسان کے ایمان کو کمز ورکر دیتی ہے کیونکہ بُری عادتیں سانپ بچھو کی طرح
ڈسنے والی ہیں، اگرہم سے کوئی شخص ہے کہ دے کہ تہمارے کپڑوں میں بچھو ہے تو ہم اس کے احسان مند ہوتے ہیں،
اس کا شکر بیادا کرتے ہیں، بچھو سے بچاؤ کی صورت اور اسے مارنے کی تدبیر کرنے لگتے ہیں حالانکہ اس کی تکلیف
صرف بدن محسوس کرتا ہے اور ایک دو دن سے زیادہ اس کا دُکھ بھی باقی نہیں رہتا مگر برے خصائل کی تکلیف دل کی
گہرائیوں میں محسوس کی جاتی ہے اور مجھے اُندیشہ ہے کہ بیددکھ موت کے بعد بھی باقی رہے گا، اگر ہمیشہ باقی نہ رہا ہیں۔ بھی

دوسری بات میہ ہے کہ ہم بجائے اس کے کہ ناصح کی نصیحت سن کراپنے ان عیوب کے اِزالہ کی فکر کریں، اپنے محسن، کا شکر میادا کریں، اُلٹان کے مقابلہ میں اُٹر آتے ہیں اوراس کی باتوں کے جواب میں یوں کہتے ہیں کہتم بھی ایساایسا

کام کر پیچے ہوہمیں اس کی وشنی پی با توں پڑل کرنے سے روک دیتی ہے اور بیسب پچھ دل کی تختی کا نتیجہ ہوتا ہے جو کشر سے گناہ سے پیھر سے بھی زیادہ تخت ہوجا تا ہے، ان کا مَثَنِع ومرکز ایمان کی کمز وری ہے لہذا ہم الله تعالی سے دُعاکر نے ہیں کہ اے ربِ ذُو الْحِلال! ہمیں راور است پر چلنے کی توفیق دے، ہمیں اپنے عیب دیکھنے، ان کا علاج کرنے کی ہمت دے اور ہمیں اپنی رحمت کے فیل ہر محض کا شکر بیا داکر نے کی توفیق دے، جوہمیں ہمارے عیبوں پر مطلع کرے۔ میں میں اسلام ریفتہ: اپنے دشمنوں سے اپنے عیوب سنے کیونکہ دشمن کی آئکھ ہر عیب کوظا ہر کردیتی ہے، جنگلندانسان کینہ

پروردشمن سے اپنے عیوب سن کرایسے چشم بوتی کرنے والے دوست سے زیادہ نفع حاصل کرسکتا ہے جواس کی تعریف و توصیف کرتار ہتا ہے اوراس کے عیب چھپا تار ہتا ہے مگر مصیبت سے کہ انسانی طبائع دشمن کی بات کوجھوٹ اور حسد پر منی خیال کرتی ہیں لیکن عظمند شمنوں کی باتوں سے بھی سبق سکھتے ہیں اور اپنے عیوب کی تلافی کرتے ہیں کہ آخر کوئی عیب تو ضرور ہے جواس کے دشمنوں کی زگاہ میں ہے۔

چوتھا طریقہ: لوگوں سے گھل مل جائے، ان کا جو نعل اسے اچھا گئے اسے اپنائے اور جو نعل اسے بُرا گئے اس میں غور وفکر کرے کہ بیں ایبا تو نہیں کہ اسے اپنے عیوب دوسرے کے آئینہ بین نظر آرہے ہیں کیونکہ مومن مومن کا آئینہ ہوتا ہے لہذا دوسروں کے عیوب کے آئینہ میں اپنے عیب تلاش کرے اور وہ جانتا ہے کہ نفسانی خواہش میں طبائع ایک دوسرے کے قریب ہیں، جو چیز ایک زمانہ کے لوگوں میں ہوگی وہ دوسرے زمانے کے لوگوں میں بھی ہوگی لہذا اسے اپنے نفس میں تلاش کرنا چاہئے۔ میں جھتا ہوں کہ ادب سکھانے کے لئے یہ گرکا فی ہے، اگر لوگ ان تمام چیز وں کورک کر دیں جن کووہ دوسروں سے محبوب ہمجھتے ہیں تو انہیں کسی دوسرے ادب کے سکھانے کے میں محبوب ہمجھتے ہیں تو انہیں کسی دوسرے ادب کے سکھانے کے میں محبوب ہمجھتے ہیں تو انہیں کسی دوسرے ادب کے سکھانے کی ضرورت ہی نہ بڑے۔

حضرتِ عِیسی عَلَیْهِ السَّدَم سے بوچھا گیا کہ آپ کوادب سے نے سکھایا؟ آپ نے فرمایا مجھے سی نے ادب نہیں سکھایا بلکہ میں نے جابل کی جہالت کو ہُر اسمجھتے ہوئے اس سے کنارہ کشی اختیار کرلی۔

مذکورہ بالا تمام طریقے ان لوگوں کے لئے ہیں جے شخ کامل، عقلمند، صاحب بصیرت، عیوب نفس پرانتہائی مشفقانہ طریقہ سے نصیحت کرنے والا، دِین کے معاملات کو سمجھانے والا، اپنفس کی تکمیل إصلاح کرنے والا اور ہندگانِ خداکی إصلاح کا بیڑا اُٹھانے والا رہبرنہ ملے، جس نے ایسے شخ کامل کو پالیااس نے طبیب حاذِق کو پالیالبذا

اسے اس کی صحبت لازم کرنی چاہئے کیونکہ یہی وہ شخصیت ہے جواسے اس کی بیاری سے نجات دلائے گی اوراس مُہْلِک مرض سے نجات دیے گی جواسے بتدرتج ہلا کت کی طرف لے جار ہی ہے۔

سمجھ لوکہ ہم نے جو پچھ ذِکر کیا ہے اگرتم اسے عبرت کی نگاہ سے دیکھوتو تمہاری بصیرت کمال پر پہنچ گی اور علم و
یقین کی وجہ سے تم پردل کی تمام بیاریاں ، تکلیفیں اوران کے علاج ظاہر ہوجا کیں گے ، اگرتم اس درجهٔ کمال کونہ پاسکے
تب بھی ضروری ہے کہ تمہاراایمان اور تصدیق قلبی فوت نہ ہونے پائے اور ہراس شخص کی تقلید کروجو قابل تقلید ہو کیونکہ
علم کی طرح ایمان کے بھی درّجات ہیں اور علم ایمان کے بعد حاصل ہوتا ہے چنا نچے فرمانِ الہی ہے:

يَرْفَعِ اللهُ الَّذِيْنَ المَنْوَامِنَكُمْ لَوَ الَّذِيْنَ أُوتُوا الْعِلْمَ الله تعالى ان لوگول كوجوتم ميں سے ايمان لائے بلندمر تبدد _ يَرْفَعِ اللهُ الَّذِيْنَ المَنْوَامِنَكُمْ لَوَ الَّذِيْنَ الْمُعَلِيْنِ الْمُعَلِيْنِ اللهِ الْبِيل درجات ديے جائيں گـــ _ گاورجنہيں علم ديا گيا ہے انہيں درجات ديے جائيں گـــ _

لہذا جس شخص نے بیجان لیا کنفس و شہوات نفسانی کی مخالفت ہی الله تعالی کی طرف جانے کاراستہ ہے اور وہ ان کے اسباب علل تک کما حَقَّہ رسانی حاصل نہ کرسکا، وہ ایما نداروں میں سے ہے اور جب کوئی شخص شہوات کے ان معاونین پرمُطَّع ہو گیا جن کا ہم نے ذکر کیا ہے وہ ان لوگوں میں سے ہے جنہیں الله تعالی نے علم دیا ہے اور جن سے الله تعالی نے جملائی کا وعدہ کیا ہے۔ اور جو شخص ان اُ مور کو مَدِّ نَظُر رکھتے ہوئے قرآن وسنت اور علمائے کرام کے اقوال سے وین کی حقیقت کو بھتا ہے اور ایمان کی پختگی جا ہتا ہے اس کا مرتبہ بلند و بالا ہے، فرمان الہی ہے:

اورجس نے نفس کوخواہش ہے روک دیا پس بے شک جنت

یمی وہلوگ ہیں کہ اللہ تعالیٰ نے جن کے دلوں کوتقو کی کے لیے

ہی اس کاٹھکا نہہے۔

وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى أَنْ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْبَادِي (2)

اورمز پدارشادفر مایا:

ٱولَيِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللهُ قُلُوبَهُمُ لِلتَّقُولِي (3)

خالص کرلیاہے۔

-توجمهٔ كنز الايمان: الله تمهار اليان والول كاوران ك جن كولم ويا كيا درج بلندفر مائ كار (ب ٢٨، المحادلة: ١١)
 - استرجمه کنز الایمان: اورنش کونوایش سے روکا توبشک جنت بی شکانا ہے۔ (پ۳۰، اکٹر غت: ۱،٤٠)
 - الحدات: ۳) الحدات: وه بين جن كاول الله في بر بيز گارى ك لئ بر كاليا ب (ب٢٦، الحدات: ٣)

۔ فرمانِ نبوی ہے کہ مومن پانچ مصائب میں گھرا ہوتا ہے، مومن اس سے حسد کرتا ہے، منافق اس سے عداوت رکھتا ہے، کا فراسے قبل کرنے کی کوششوں میں ہوتا ہے، شیطان اسے گمراہ کرتا ہے اورنفس اس سے جھگڑا کرتا ہے، ⁽¹⁾ لہٰذا ثابت ہوا کنفس جھگڑ الودیمن ہے جس سے مقابلہ کرناانتہائی ضروری ہے۔

مروی ہے کہ اللہ تعالی نے حضرت داؤد عَلَیْہِ السّالام کی طرف وحی فرمائی: اے داؤد! خود بچواور دوستوں کو بھی خواہشات کی پیروی کرنے سے ڈراؤ کیونکہ دل دنیاوی خواہشات میں مگن ہوتے ہیں، ان کی عقل مجھ سے دور ہوجاتی ہے۔ حضرت عِیسلی عَلَیْہِ السّالام نے فرمایا: اس شخص کے لئے بشارت ہے جس نے ان وعدہ کر دہ انعامات کی خاطر جوابھی نظروں سے عائب ہیں، ظاہری چیزوں کی خواہشات ترک کردی ہیں۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِ صَابِهِ كَالِي جَمَاعت سے جو جہاد سے آرہے تھے فرمایا: خوش آمدید! تم جہادِ اصغر سے جہادِ اکبر کی طرف واپس آئے ہو، عرض کیا گیا: یارسول الله! جہادِ اکبرکیا ہے؟ آپ نے فرمایا: نفس سے جہاد کرنا۔(2) فرمانِ نبوی ہے کہ مجاہدوہ ہے جوالله تعالیٰ کی عبادت میں نفس سے مقابلہ کرتا ہے۔(3)

فرمانِ نبوی ہے کہ اپنے نفس کے مصائب کوروک، اس کی خواہشات کی پیروی میں الله تعالیٰ کی نافر مانی نہ کر، جب قیامت کے دن تیر انفس تجھ ہے جھڑا کریگا تو تیرے وجود کا ایک حصد دوسرے پرلعنت کرے گا،الله تعالیٰ اگر تجھے بخش دے اور تیرے عیبوں کوڈھانپ لے توبیا وربات ہے۔ (4)

حضرت سُفیان توری رَضِیَ اللهٔ عَنُه کا قول ہے کہ میں نے نفس سے بڑھ کرکسی چیز کامشکل علاج نہیں کیا جس میں کبھی مجھے فائدہ اور بھی نقصان ہوا۔حضرت ابوعباس موصلی رَضِیَ اللهُ عَنْه فرمایا کرتے تھے:ا نے نفس! فہتو تو دنیا داروں کے ساتھ رہ کرعیاوت وریاضت کے ساتھ رہ کرعیش وعشرت کے مزے لیتا ہے اور نہ ہی تو آخرت کی طلب میں نیکوں کے ساتھ رہ کرعیاوت وریاضت کرتا ہے، گویا تو مجھے جنت اور دوزخ کے درمیان روک رہاہے مجھے شرم نہیں آتی۔

حضرت حِسن رَضِيَ اللَّهُ عَنْه كا قول ہے كنفس سركش جانور ہے بھى زيادہ لگام كامختاج ہے،حضرت يجيٰ بن معاذ

❶كنزالعمال، كتاب الايمان والاسلام، الباب الاول...الخ، الفصل السابع...الخ، ١/ ٩٤/ الجزء الاول، الحديث ٥٠٨

^{2}تاريخ بغداد ، واصل بن حمزة...الخ، ٣٦/١٣٤، الرقم٥٤٧٣

الحديث ١١١٢٣

^{4}طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٣٣٣/٦

رَضِیَ اللّٰهُ عُنُه کا قول ہے کہ نفس کاریاضت کی تلواروں سے مقابلہ کر ۔ ریاضت کی چارتشمیں ہیں بمعمولی کھانا ، معمولی سونا ، حاجت کے وقت بولنا اور تمام لوگوں سے دکھا ٹھانا ، کم کھانے سے شہوات مرجاتی ہیں ، کم سونے سے اراد بے پاکیزہ ہوتے ہیں ، کم بولنے سے سلامتی عطا ہوتی ہے اورلوگوں سے دکھا ٹھانے کی وجہ سے انسان اعلی مراتب تک پہنچ جا تا ہے کسی انسان کے لئے تلم کے وقت حوصلہ سے بڑھ کرعمہ چیز اور کوئی نہیں ہے ، تکالیف میں صبر کرنا بھی اسی طرح ہے ، جب بھی نفس گنا ہوں اورخواہشات کی طرف میلان کر ہے ، فضول گفتگو کرنے کے خوشگوارتصور کرنے لگے ، اس پر کم کھانے ، کم سونے اور بیداری کی تلواری کی تلواری کھی کراہے کم بولنے کی سزاو ہے ، پوشیدگی میں اس پر وَار کرا بیہاں تک کہ تو ظلم اور اِنتقام سے محفوظ ہوجائے ، تمام لوگوں کو اس کی آ فات سے امن حاصل ہو ، اس کی شہوات کی تاریکیوں کو زائل کر ، تاکہ اس کی گراہی کی مصیبت سے نجات پالے ، تب تو پاکیزہ اور رُوحانی ونورانی اَ سرار کا ما لک بن جائیگا بھر تو اس تیز رفتاری کے جو ہر دکھا تا ہے نیکیوں اور عبادت کی را ہوں میں اپنی سبک روی اور تیزگا می کے جو ہر دکھا نا ور باغ کے مالک کی طرح باغ کی رَوشوں پر چہل فقد می کرنا۔

آ پِدَحِبَ اللَّهُ عَنُهُ نِے مزیدِفر مایا کہانسان کے تین دشمن ہیں ، دنیا، شیطان اورنفس ، دنیا کوجھوڑ کراس سے محفوظ رہ ، شیطان کی مخالفت کراورخواہشات جھوڑ کرنفس کے شریعے محفوظ ہوجا۔

کسی حکیم کا قول ہے کہ جس شخص پراس کانفس غالب آجا تا ہے وہ شہوات کی محبت کا اسیر ہوجا تا ہے اور خواہشات کی جیل کا قیدی بن جا تا ہے ہفس کے ہاتھ میں اس کی باگیں ہوتی ہیں ، وہ اس پرظلم وتشد دکر تا ہے اور جہاں چاہتا ہے ، اسے گھیدٹ کر لے جا تا ہے لہٰذا اس کا دل تمام دینی فوائد ہے محروم کر دیا جا تا ہے۔

حضرت ِ جعفر بن حمید رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه فر ماتے ہیں کہ میں نے علاء و حکماء کواس امر پر متفق پایا ہے کہ دنیا وی نعمتیں چھوڑے بغیراُ خروی نعمتیں حاصل نہیں ہوسکتیں۔

حضرتِ ابو بحی الوَرَّاق رَضِیَ اللهُ عَنْه کا قول ہے کہ جس شخص نے اپنے اُعضاء کی خواہشات کو پورا کیا ،اس نے گویادل میں پشیمانیوں کے بیج بوئے۔حضرتِ وُہَیْب بن وَرُد رَضِیَ اللهُ عَنْه کا قول ہے کہ جو پچھ قُوْتِ لَا یَکُوت (1) سے زائد ہے وہ شہوت ہے،مزید فرمایا کہ جس نے دُنیاوی خواہشات کومجوب رکھاوہ رُسوائی کے لئے تیار ہوا۔

1اس قدرخوراك جس سے زندگی قائم رہے۔ (اردو لغت، ۲۵۹/۱۶ میر)

مكاشفة القلوب

عزیز مصر کی بیوی نے حضرت یوسف عَلَیْه السَّلام کو جب سلطنت مصر پر فائز پایا اور خود یوسف عَلیْه السَّلام کی گزرگاہ پر ایک بلند ٹیلے کے او پر بیٹھی ہوئی تھی، حضرت یوسف عَلیْه السَّلام تقریباً بارہ ہزاراً مراع مملکت کے ساتھ وہاں سے گزرر ہے تھے تواس نے کہا: پاک ہے وہ ذات جو گنا ہوں کے سبب بادشا ہوں کو غلام بنادیتی ہے، بیشک حرص اور خواہشات نفسانی نے بادشا ہوں کو غلام بنادیا ہے اور یہی مفسدین کی جزا ہے اور صبر وتقوی نے غلاموں کو بادشاہ کردیا ہے، حضرت یوسف عَلیْه السَّلام کو اللّٰه تعالیٰ نے جب عزیز مصر کی بیوی کی چالیس با تیں بتلا کیں تو وہ بے ساختہ کہا کے قرمانِ الہی ہے:

د بیشک جوتقوی اور صبر اختیار کرتا ہے اللّٰه تعالیٰ سکیاں کرنے والوں کے اجرکوضائع نہیں کرتا ہے۔''(1)

حضرت دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا کہنا ہے کہ ایک مرتبہ میں رات کو بیدار ہوکر عبادت میں مشغول ہوا مگر مجھے عبادت میں

[77] ·!

تعريف ايمان و ذمِّ منافقت ﴿

جان کیجئے کہ ایمان اللّٰہ تعالیٰ کی وَ حدانیت کی تصدیق اور رسولوں کے لائے ہوئے اَحکامات کی تا سُدوتصدیق اور اَعمال کے مجموعہ کا نام ہے، فر مانِ الٰہی ہے:

ایمان دارلوگ وہی ہیں جواللہ اوراس کے رسول پرایمان لائے

پھرانہوں نے شک نہیں کیااور راہ خدامیں اپنے مالوں اور جانوں

کے ساتھ جہاد کیا یہی لوگ سیے ہیں۔

ٳٮۧۜٵڵٮؙٷؙڝؚڹ۠ۏؽٵڷٙڹۣؿٵڡؘٮؙ۫ۏٳڽٳٮڷۨڡۣۅؘٮۜۺۏڸ؋ڞٛۜۥۧڵؗڡ ؽۯؾٵڹؙۏٵۅڂۿڒؙۏٳڽؚٲۿۊڶڸؚؠؙۄٵؘڶٛڡؙٛڛؚؠٟڡ۬۬ؿ۫ڛڽؽڸٳٮڷڡ

أُولِيِّكَ هُمُ الصَّدِقُوْنَ ﴿ (1)

دوسری آیت میں ارشادہے:

وَلكِنَّ الْبِرَّمَنُ امْنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاخِدِ وَالْمَلْلِكَةِ

وَالْكِتْبِ وَالنَّبِيِّنَ فَ(2)

کیکن بھلائی اس کے لیے ہے جوالے ہے اور قیامت کے دن اور

فرشتوں اور کتابوں اور نبیوں پرایمان لایا۔

ای طرح الله تعالیٰ نے بیس صفات مثلاً عہد کا پورا کرنا،مصائب برصبر کرنا وغیرہ،ایمان کامل کی شرطیس رکھی ہیں، پھرارشا وفر مایا: ''یہی لوگ ہیں جنہوں نے سچ کیا۔''⁽³⁾

ایک اورآیت میں فرمانِ الہی ہے:

(4) " الله تعالى ان لوگوں كو بلندكر _ گاجوتم ميں سے ايمان لائے اور جن كوعلم ديا كيا ہے انہيں ورجات . "

ایک اور مقام پرارشا دِالهی ہے:

- ستو جمهٔ کنز الایمان: ایمان والے توونی بیں جوالله اور اس کے رسول پرایمان لائے پھرشک نہ کیا اور اپنی جان اور مال سے الله کی راه بیں جہاد کیاوہ می سیچے بیں۔ (ب۲۶ مالحدات: ۱۵)
 - 2توجمهٔ كنز الايمان: بإن اصل نيكى بدكه ايمان لا عالله اورقيامت اورفرشتون اوركتاب اور پنجبرون پر (ب٢، البقرة ١٧٧٠)
 - 3ترجمهٔ كنز الايمان: يهي بين جنهول في اپني بات يچى كى (ب٢٠ البقرة: ١٧٧)
 - 4توجمهٔ كنز الايمان: الله تمهار اليان والول كاوران كجن وكلم ديا گيا درج بلندفر مائ گا- (ب٢٨، المحادلة: ١)

۲ ۲ ۵

''نہیں برابرتم میں ہے وہ خص کہ جس نے فتح مکہ سے پہلے خرج کیا اور لڑائی کی۔''(1) فرمانِ الٰہی ہے: ''یوگ الله تعالیٰ کے زدیک مراتب پر فائز ہیں۔''⁽²⁾ فرمانِ نبوی ہے کہ ایمان برہنہ ہے اور اس کالباس تقویٰ ہے۔⁽³⁾

اورارشا دفر مایا کہ ایمان کے کچھا و پرستر درجے ہیں اور کمترین درجہ راستہ سے تکلیف دہ چیز کودور کرنا ہے۔ (4)

یہی حدیث اس اَمرید دلالت کرتی ہے کہ کامل ایمان عمل سے مشروط و مربوط ہے اور ایمان کا نفاق سے برائت اور شرک خفی سے علیجدگی پر مربوط ہونا حضور صَدًی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَدَّم کے اس فر مان سے ثابت ہے، ارشا و ہوتا ہے جارچیزیں جس میں ہول وہ نمازی وروزہ دار ہونے کے باوجود خالص منافق ہے آگر چدوہ خود کومومن ہی سمجھتا رہے، جب وہ بات کر ہے تو جھوٹ بولے وعدہ کر کے وعدہ خلافی کرے، اس کے ہاں امانت رکھی جائے تو خیانت کرے اور جب جھاڑ ا

بعض روایتوں میں ہے کہ جب معاہدہ کرے تواسے تو ڑ ڈالے۔⁽⁶⁾

حفرت ابوسعیر خُدُری رَضِیَ اللّهُ عَنُه ہے مروی حدیث میں ہے: دل چار ہیں: دنیاوی خواہشات ہے منز ہول جس میں معرفت کا چراغ روش ہے اور یہی مومن کا دل ہے۔ ایسادل جس میں ایمان اور نفاق دونوں ہوں ایسے دل میں ایمان سبزے کی طرح ہے جو بیپ اور گندے خون سے میں ایمان سبزے کی طرح ہے جو بیپ اور گندے خون سے بھی ایمان سبزے کی طرح ہے جو بیپ اور گندے خون سے بھیلتا جاتا ہے، ان میں سے جو چیز غالب آ جاتی ہے دل پراسی کا تھم چلتا ہے۔ (7)

دوسری روایت کے الفاظ ہیں کہ جوان میں سے غالب ہوجا تاہے وہ دوسرے کو لے جاتا ہے۔

-توجمهٔ كنوالايمان: تم يس برابرنيس وهجنهول في تحكمد يقبل خرج اورجهادكيا- (ب٢٧ مالحديد: ١٠)
 - 2ترجمهٔ كنز الايمان: ووالله كيهال ورجه ورجه يل (ب٤ ال عمرن: ١٦٣٠)
 - 3مكارم الاخلاق لابن ابي الدنيا، ص ٤٨، الحديث ٦٧ ليس بمرفوع
 - 4ترمذي، كتاب الايمان، باب ماجاء في اضافة...الخ ، ٢٧٨/٤، الحديث ٢٦٢٣
- الحديث ٤٣ بالتقديم و التاخير و مسند احمد، مسند ابي هريرة، الحديث ٤٣ بالتقديم و التاخير و مسند احمد، مسند ابي هريرة، ١٠٩٧٪ الحديث ١٠٩٢٠ الحديث ١٠٩٢٠
 - المعجم الصغير للطبراني، ٢/٠/١ و مسند احمد بن حنبل،٣٦/٤، الحديث ٢١١١٩ملتقطا
 - 8قوت القلوب، ۲۰۰/۱

فرمانِ نبوی ہے کہ میری امت کے اکثر منافق قاری ہیں۔

ایک حدیث میں ہے کہ میری امت میں شرک ، صفا پہاڑ پر چلنے والی چیونٹ سے بھی زیادہ پوشیدہ ہے۔ (2)
حضرت ِحُذَیْفہ دَ ضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ فر مایا کرتے تھے کہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے عہد مبارک میں آ دمی ایک بات
الیسی کرتا تھا جس کے سبب مرتے وقت تک وہ منافق ہوجاتا تھا اور میں تم سے و لیسی دس با تیں روز اند سنتا ہوں۔
بعض علماء کا کہنا ہے کہ وہ شخص نفاق سے بہت قریب ہے جوخود کو نفاق سے برک سمجھتا ہے۔

حضرت حُذَ یُفه دَضِیَ اللّهُ عَنه فرماتے ہیں کہ آج حضور صَلَّی اللّهُ عَلیْهِ وَسَلَّم کے عبد مبارک سے زیادہ منافق ہیں تب منافق اپنانفاق پوشیدہ در کھتے تھے اور اب ظاہر کرتے ہیں، یہی نفاق کمال ایمانی اور صدق ایمان کی ضد ہے کیونکہ یہ پوشیدہ ہے، جواس سے خوفز دہ ہوتا ہے وہ اس سے دور ہوتا ہے اور اس سے قریب وہی ہوتا ہے جوخودکواس سے برک شہوت ہے جانچہ حضرت حسن دَضِی اللّهُ عَنه سے کہا گیا کہ لوگ کہتے ہیں: آج نفاق باقی نہیں رہا ہے، آپ نے فرمایا: اسے بھائی! اگر منافق باقی نہیں اور نے کہا کہ اگر منافقوں اے بھائی! اگر منافق بائی ہوجا کیں تو ہم زمین پرقدموں سے نہ چل پاکیس (ان کی کثرت کے باعت راہ چاناد شوار ہوجائے)۔

حضرت ابن عمر دَضِیَ اللهُ عَنْه نے ایک آ دمی کو جاج کو بُر ابھلا کہتے س کر فر مایا کہا گر جاج موجود ہوتا تو تم میہ باتیں کرتے ؟ اس نے کہا: نہیں! آپ نے بیسکر فر مایا کہ ہم اس چیز کو حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے زمانہ میں نفاق میں شار کرتے تھے۔

نبی کریم صلّی الله عَلیْهِ وَسَلّم فرماتے ہیں کہ جو شخص دنیا میں دوزبانوں والا ہوتا ہے آخرت میں الله تعالیٰ اسے دو زبانوں والا بنائے گا، مزید فرمایا: بدترین آ دمی دوچ پروں والا ہے جواس کے پاس ایک چبرے سے اور دوسرے کے پاس دوسرے چبرے سے جاتا ہے (یعنی منافقت کرتا ہے)۔

حضرت حسن بقرى رَضِيَ اللهُ عَنُه عَهُ مَ كَهَا كَيا: كَيْ اللَّهُ عَنُه عَهُ مَ كَهَا مِيا: عَفْر مايا:

 [■] ۱۷۲۱ مستد احمد بن حنبل، ۱۷۲۱ ۱ الحديث ۱۷۲۱ و شعب الايمان، الخامس والاربعون من شعب الايمان...الخ،
 ۳٦٣/٥ الحديث ۹۹۵۹

^{2}نوادر الاصول، الاصل السادس والسبعون والمائتان، ١٩٤/٢، الحديث ١٤٩٢

X

بخدا! مجھے زمین کی ہر بلندی کے برابرسونے کے مالک ہونے سے بیہ بات زیادہ پسندہ کہ مجھے معلوم ہوجائے میں نفاق سے بڑی ہوں۔

حضرت حسن رضى الله عنه كاقول ب: نفاق كى وجه سے زبان اور دل مختلف ہوتے ہيں، پوشيده اور ظاہر كااختلاف ہوتا ہے الله عنه كاقول بے افغال ہونے كاراستہ اور اور نكلنے كا اور ہوتا ہے كسى نے حضرت صد يفه رضى الله عنه سے كہا كہ ميں نفاق سے دُرتا ہوں ، آپ نے فرمایا: اگرتم منافق ہوتے تو تمہیں نفاق كاخوف نه ہوتا كيونكه منافق نفاق سے بے پروا ہوتا ہے۔

حضرتِ ابن اَبِي مُلَيَّلَه رَضِيَ اللَّهُ عَنْه نے فرمایا کہ میں نے ایک سوٹیس اور ایک روایت میں ایک سو پچپاس صحابہ کرام کو پایا ہے جوسب کےسب نفاق سے ڈرتے تھے۔

مروی ہے: حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم صحابہ کی ایک جماعت میں تشریف فرما سے ، صحابہ کرام عَلَیْهِمُ الرِّصُوان نے ایک آ دمی کا تذکرہ کیا اور اس کی بہت زیادہ تعریف کی ، سب حضرات اسی طرح تشریف فرما سے کہ وہ خض آیا اس کے چرے سے وضوکا پانی ٹیک رہا تھا، جوتا اس کے ہاتھ میں تھا اور اس کی آ تکھول کے درمیان مجدول کا نشان تھا، صحابہ کرام نے عرض کی بیاد سول الله صَلَّی الله عَلَیْکَ وَسَلَّم اِیوبی شخص ہے جس کی ہم نے آپ کے سامنے تعریف کی ہے، حضور صلّی الله عَلَیٰہِ وَسَلَّم الله عَلَیٰہِ وَسَلَّم نے فرمایا: مجھے اس کے چرے پر شیطان کا اثر نظر آتا ہے۔ وہ آدئی آکر صحابہ کے ساتھ میٹھ گیا اور حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم کوسلام کیا۔ آپ نے اسے دکھ کر فرمایا: میں مجھے الله کی قتم و بتا ہوں ، بتا کہ جب تو نے ان لوگوں کود یکھا تو تیرے دل میں بی خیال آیا تھا کہ تو ان سے اچھا ہے؟ وہ بولا: اے الله کے دسول! ہاں ، تب آپ نے لوگوں کود یکھا تو تیرے دل میں تجھ سے ہرائس بات سے جے جانتا ہوں یا نہیں جانتا، بخشش طلب کرتا ہوں۔ عرض کیا گیا: یادسول الله! آپ بھی خوفر دہ ہیں؟ آپ نے فرمایا: میں کسے بخوف ہوجاؤں حالا نکہ مخلوق کے دل اللہ تعالیٰ کی دو انگلیوں کے درمیان ہیں ، وہ جسے جا ہتا ہے انہیں بھیرتار ہتا ہے۔ (۱) فرمانِ خدائے درمیان ہیں، وہ جسے جا ہتا ہے انہیں بھیرتار ہتا ہے۔ (۱) فرمانِ خدائے کر درگوں جبرتے ج

^{1} شعب الايمان، السابع والخسمون من شعب الإيمان ، باب في حسن الخلق ، ٢/٦ . ٣ ، الحديث ٢٥٤ و مسند البزار، ١٤ / ، ٦ ، الحديث ٢٥١ و المعجم الكبير، ٢٥٢/٢ ، الحديث ٢٥٥ وكشف الخفاء، ٢٥٧/٢ ، تحت الحديث ٢١٤ و قوت القلوب ، ٢٣٢/٢

M

وَبَكَالَهُمُ مِّنَاللهِ مَالَمْ يَكُونُوا يَحْسَبِهُونَ ۞ (1)

اورظا ہر ہوجائے گاان کے واسطےاللہ کی طرف سے جس کووہ

گمان نہیں کرتے تھے۔

اس کی تفسیر میں کہا گیاہے کہ انہوں نے ایسے اعمال کئے جنہیں وہ اپنے گمان کے بموجب نیکیاں سبجھتے تھے مگروہ گنا ہوں کے بلڑے میں جاپڑے۔

حضرت ِسَرِی سَقَطَی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ اگر کوئی انسان ایسے باغ میں جائے جس میں ہوشم کے درخت ہوں اوران درختوں پر ہوشم کے پرندے ہوں جواسے دیکھ کریک زبان ہوکر کہیں:" اےاللّٰہ کے ولی! تجھ پرسلام ہو" اوراس کا دل سے بات س کرمطمئن ہوجائے تو گویا وہ ان پرندوں کا اُسیر ہے۔

یہ تمام اَ قوال واَحادیث تخفیے ان خطرات سے رُوشناس کرا کیں گے جو پوشیدہ نفاق اور شرک خفی پرُمُنْتَهٰی ہوتے ہیں اور کو کی بھی خفانداس سے غافل نہیں رہتا یہاں تک کہ حضرت عمر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ حضرت حُدَّ اَیْفہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ سے اپنے متعلق پوچھا کرتے۔(یدروایت پہلے بھی گزر چکی ہے)

حضرت سلیمان دارانی دَضِیَ اللهٔ عَنُه کا قول ہے کہ میں نے ایک امیر سے ایسی بات سی جو مجھے نا گوارگزری اور میں نے اسے ٹو کئے کا ارادہ کیا مگر مجھے اُندیشہ ہوا کہ کہیں یہ مجھے قبل کرنے کا حکم نہ دیدے، میں موت سے نہیں بلکہ اس بات سے ڈرا کفتل کے وفت لوگوں کے سامنے میرے دل میں یہ بات نہ آجائے کہ میں نے کیسائم کہ وکام کیا ہے لہذا میں اسے ٹو کئے سے رک گیا۔

ینفاق کی وہ شم ہے جوامیان کی اصل کے نہیں بلکہ اس کی صفائی ، کمال ، حقیقت اور صدق کے خلاف ہے۔ نفاق کی دوشمیں ہیں: ایک شم وہ ہے جو دین سے نکال کر کا فروں میں شامل کر دیتی ہے اور ان لوگوں کے ساتھ منسلک کر دیتی ہے جو ہمیشہ ہمیشہ کے لئے جہنم میں رہیں گے، دوسری قتم وہ ہے جواپنے رکھنے والے کو پچھ مُدت جہنم میں پہنچائے گی یااس کے بلند مراتب کو کم کردے گی اور اسے صدیقوں کے بلند ترین مقام سے ینچے گرادے گی۔

🕕 تو جمهٔ کنو الایمان: اورانہیں الله کی طرف سے وہ بات ظاہر ہوئی جوان کے خیال میں نتھی۔ (پ؟ ۲، الزمر: ٤٧)

X

اب 78

مُذَمَّتِ غيبت و چغلخوري

قرآنِ مجید میں الله تعالی نے غیبت کی مدمت فر مائی ہے اور غیبت کرنے والے کومر دار کا گوشت کھانے والے کی مثل قرار دیا ہے چنانچے فر مانِ الہی ہے:

اورتم ایک دوسرے کی فیبت نہ کروکیا تم میں ہے کوئی ایک میہ بات پیند کرتا ہے کہ وہ اپنے مردہ بھائی کا گوشت کھائے پس تم ۅٙڵٳؽؘڣٚؾۜڹ ڹؖۼڞؙڴؙؗؗ۫ؗؠڹۼڞۧٵٵؽؙڿؚڹؙۜٲؘؘۘۘۘڝؙۘڒؙڴؗؗۄٞٲڽؖؾؙؖٲڴڶ ڶڂ۫ؗمؘٲڿؿؙڡؚڡٙؿؾؖٵڨڰڕۿؾؙٮؙٷ؇

اسے براہمجھوگے۔

فر مانِ نبوی ہے کہ ہرمسلمان کا خون ، مال اور عزت حرام ہے۔ (2) غیبت عزت کو کھا جاتی ہے اور الله تعالیٰ نے اسے مال اور خون کے ساتھ کیجاذ کر کیا ہے۔

حضرت الوبرز درَضِیَ اللهٔ عَنهُ ہے مروی ہے:حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ ایک دوسرے پر حسد نہ کرو، بغض نہ کرو، دھوکہ نہ دو، بیٹھ بیچھے برائیاں نہ کرواور ایک دوسرے کی غیبت نہ کرو،اللّه تعالیٰ کے بندو! بھائی بھائی بن جاؤ۔ (3)

حضرت جابرا ورا بوسعیدرَ ضِیَ اللهٔ عَنْهُمَا سے مروی ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ غیبت سے بچو کیونکہ غیبت زنا سے بھی بُری ہے اس کئے کہ آ دمی زنا کرتا ہے اور تو بہرتا ہے توالله تعالی اس کی توبہ قبول فرمالیتا ہے مگر غیبت

- ستوجمهٔ کنز الایمان: اورایک دوسرے کی غیبت نه کروکیاتم پیل کوئی پیندر کھے گا کہا پیٹے مرے بھائی کا گوشت کھائے تو بیتہ ہیں گوارا نه
 ہوگا (پ ۲۶، الحمرات: ۱۲)
 - 2مسلم، كتاب البر...الخ، باب تحريم ظلم المسلم...الخ، ص ١٣٨٦، الحديث ٣٦_ (٢٥٦٤)
 - الحديث ١٦٣، راوى ابوهريرة و مسلم، الخ ،باب الغيبة وذمها، ١٧/٧، الحديث ١٦٣، راوى ابوهريرة و مسلم،
 كتاب البر و الصلة ، باب تحريم ظلم المسلم... الخ، ص١٣٨٦، الحديث ٣٦ ـ (٢٥٦٤)

کرنے والے کی توبہاس وقت تک قبول نہیں ہوتی جب تک کہ وہ مخص معاف نہ کرے جس کی غیبت کی گئی ہے۔ ⁽¹⁾ حضرت اَنس دَضِيَ اللَّهُ عَنْه ہے مروی ہے:حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر مایا کہ معراج کی رات میراالیں قوم پر ہے گزر ہوا جوا بنے چہرے ناخنوں سے نوچ رہے تھے، میں نے کہا: جبریل! بیکون ہیں؟ جبریل نے کہا: بیدہ اوگ ہیں کہ جولوگوں کی غیبت کرتے ہیں اوران کی عزت کو یا مال کرتے ہیں۔⁽²⁾

حضرت سلیمان بن جابر دَضِیَ اللّٰهُ عَنُه ہے مروی ہے کہ میں نے حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں حاضر ہوکرعرض کیا: مجھےابیا بھلاکام بتلایئے جس سے میں نفع اندوز ہوسکوں، آپ نے فرمایا کہ بھلائی کے سی کام کو تقیر نہ مجھ اگرچہ تخصےاپنے ڈول کا پانی پیاہے کے ڈول میں ہی ڈالناپڑےاور تیرا بھائی تجھ سے گرم جوثی سے ملے یا تجھ سے منہ موڑ لے، تواس کی غیبت نہ کر۔

حضرت براءر َضِي اللهُ عَنه عدم وي مع جضور صَلَّى اللهُ عَليه وَسَلَّم في مميل خطاب فرمايا جمد يرده تشين عورتول نے اپنے گھروں میں سنا، آپ نے فرمایا: اے وہ لوگو! جوزبان سے ایمان لائے ہو گر دلوں میں ایمان نہیں رکھتے ہو! مسلمانوں کی غیبت نہ کر واوران کی رسوائی کی جنتجو میں نہ رہو کیونکہ جوکسی بھائی کی رُسوائی کے دریے ہوتا ہے،اللّٰہ تعالیٰ اس کی رسوائی کے دریے ہوتا ہے اور الله تعالی جس کی رُسوائی کے دریے ہوتا ہے اسے اس کے گھر میں بعزت اور رسوا کرویتاہے۔⁽⁴⁾

كها كيا ہے كه الله تعالى في حضرت موسى عَلَيْهِ السَّلام كى طرف وحى فرمائى كه جوغيبت سے تائب ہوكر مراوه آخرى

^{◘}موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الصمت...الخ ، باب الغيبة وذمها، ١١٨/٧ ، الحديث ١٦٤ يشخ طريقت،اميرابلسنت، إني دعوت اسلامي حضرت علامه مولا ناابو بلال محمدالياس قادري دَامَتْ بَرَ حَاتُهُهُ العَالِيَه ايني شهره آ فاق تصنيف "غیبت کی تناه کاریاں" صفحہ 73 برفر ماتے ہیں:" غیبت میں حق العبد لعنی بند ہے کا حق اُس صورت میں شامل ہوگا جبکہ جس کی غیبت کی -ہےاُ س کو پتا چل جائے کہ فلاں نے میری غیبت کی ہےاورا ب غیبت کرنے والے کیلئے تو یہ کے ساتھ ساتھ اُس سے مُعافی مانگی بھی ضروری مےجس کی غیبت کی ہے ورنه خالی تو سکا فی تھی۔ " علمیه

^{2}مو سوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الصمت...الخ ، باب الغيبة و ذمها، ١١٨/٧ ، الحديث ١٦٥

الحديث ١٦٦ (راوى سليم بن جابر)
 الحديث ١٦٦ (راوى سليم بن جابر)

^{4}موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الصمت...الخ، باب الغيبة وذمها، ٧٠/٧، الحديث ١٦٧

ه .

شخص ہوگا جو جنت میں جائے گا اور جوغیبت کرتے کرتے مرگیاوہ پہلاشخص ہوگا جوجہنم میں جائے گا۔

حضرت اَنْسَ دَضِیَ اللّهٔ عَنْه ہے مروی ہے کہ حضور صَلْی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے لوگوں کوا یک دن کے روزے کا تھم دیا اور فر مایا کہ میری اجازت کے بغیر کوئی بھی روز ہ اِ فظار نہ کرے، یہاں تک کہ جب شام ہوگئ تو لوگ آ نا شروع ہوئے اور ہر خض حاضر ہوکرع ض کرتا نیار سول الله دَصَلُی اللّهُ عَلَیْکَ وَسَلّم ہا میں نے دن میں روز ہ رکھا جھے اجازت و بیجئے کہ میں اسے اِ فظار کروں ، آپ اسے اجازت فر مادیتے ۔ اسی طرح لوگ آتے گئے اور اجازت لیتے گئے تا آ نکہ ایک آ دمی نے آکرع ض کی نیار سول الله المیرے گھر کی دوجوان عور توں نے روز ہ رکھا ہے اور وہ آپ کی خدمت میں آتے ہوئے شرماتی ہیں ، اجازت و بیجئے تا کہ دہ روز ہ اِ فظار کریں ۔ حضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے منہ پھیر لیا ، اس نے پیمرع ض کی تو آپ نے فر مایا: انہوں نے روز ہ نہیں رکھا وہ خض کیسے روز ہ دار ہوسکتا ہے جس کا دن لوگوں کا گوشت کھاتے گزر جائے تم جا وَ اور انہیں جا کر کہو کہ اگر تم روز ہ دار ہوتو کسی طرح قے کروچنا نچے وہ ان کے باس گیا اور انہیں ساری بات بنا کر قے کر نے کو کہا ۔ انہوں نے قے کی اور ہرا یک نے خون کے اور عربی نے جون کے اور عربی کی قبل کی ہو محضور کی خدمت میں حاضر ہوا اور ساری روئیا دستائی ، آپ نے اس کی بات من کر فر مایا: بخدا! اگر یہ چیز ان کی ہو محضور کی خدمت میں موجود در ہی تو انہیں آگے جاتی ۔

ایک روایت کے الفاظ یہ بین کہ جب حضور رصّتی الله عَلیْهِ وَسَلّم، نے اس سے منہ پھیرلیا تو وہ کچھ در یا بعد دوباره حاضر ہوا اور عرض کی: یارسول الله ! وہ دونوں مرچکی بین یا مرنے کے قریب بین ، حضور صَلّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلّم نے فر مایا: انہیں میرے پاس لا وَ، جب وہ آگئیں تو آپ نے پیالہ منگوا کران میں سے ہرایک سے فر مایا کہ اس میں قے کر و چنا نچہ ایک نے بیپ، خون اور بد بودار موادسے پیالہ بھر دیا، پھر آپ نے دوسری سے بھی قے کرنے کو کہا تو اس نے بھی ولیی بی قے کی ۔ آپ نے فر مایا: ان دونوں نے الله کے حلال کردہ رزق سے روزہ رکھا اور الله تعالی کی حرام کردہ اشیاء سے افظار کیا، ان میں سے ایک، دوسری کے پاس جا بیٹھی اور یہ دونوں مل کرلوگوں کا گوشت کھاتی رہیں (ایدی نیب کرتی رہیں)۔

❶موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الصمت...الخ ، باب الغيبة وذمها، ٢٢/٧ ، الحديث ١٧٠

^{2}موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الصمت...الخ ، باب الغيبة وذمها، ٢٣/٧ ١، الحديث ١٧١

حضرت الله عنه عدم وى بكر حضور صلى الله عليه وسلم عن جم عض طاب فرما يا اوراس ميس سودكى برائیوں اور قباحتوں کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا کہ ایک سودی درہم انسان کے تینتیس ³³ مرتبدز ناکرنے سے بدتر ہے اور سب سے بڑاسودکسی مسلمان کی عزت برڈا کہ ڈالناہے۔⁽¹⁾



بیا یک انتہا کی بُری صفت ہے، فر مانِ الہی ہے: ''غیبت کرنے والالوگوں کے ساتھ چغلی کرنے والا ہے۔'،(⁽²⁾ کھر فر مایا: ''متکبراوراس کے بعد بدنصیب۔''(3)

حضرت عبد الله بن مبارك رَضِيَ اللهُ عَنْه كا قول ہے كه " زَنيم" ايسے ولد الزناكو كہتے ہيں جويا تيس يوشيده نهيس ر کھتا اور انہوں نے اس جانب اشارہ کیا ہے کہ جو تخص بات مخفی نہیں رکھتا اور چغلخو ری کرتا ہے اس کا یہ فعل اس امر پر دلالت كرناہے كہوہ ولدالزناہے كيونكہ فرمانِ الى ميں اسى جانب اشارہ ملتاہے:''گردن أكرُ اكر چلنے والا اوراس كے بعد ولدالزنا۔'' یہاں زنیم سے مراد جھوٹے نسب کا مدعی ہے۔

اور فرمانِ الهي ہے:

ومل (ہلاکت) ہے ہرغیبت کرنے والے همزَلا کے لیے۔

وَيُلُ لِّكُلِّ هُمَزَ تِإِلَّهُ وَ فِي ﴿ (⁴⁾

ایک تشریح کے مطابق همزّه کامعنی چغلخور بتایا گیاہے۔ اور ارشاد الهی ہے:

"جولكر يول كوا شانے والى ب_" (5)

کہتے ہیں کہ یہاں لکڑیوں ہے مراد چغلیاں ہیں کیونکہ وہ باتیں اٹھائے چغلیاں کرتی رہتی تھی۔

❶موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الصمت...الخ ،باب الغيبة وذمها، ١٢٧/٧، الحديث ١٧٥

^{2} هَمَّانٍ مُثَمَّا عِر بِنَويينيم (ب ٢٩ ، القلم : ١١) ترجمه كنز الايمان: وليل بهت طعن وين والا بهت إدهر كي أوهر ركاتا بهر في والا _

الله عَتْلُ بَعْدَاذٰلِكَ زَنْيُم ﴿ (ب٢٩، القلم: ١٦) توجمة كنز الايمان: ورشت خو (بدمزاج بدزبان) اسب برطروب كه الكي اصل مين خطار.

الهمزة:١) عنو الايمان: خراني إسك لئ جولوگول كمنه رعيب كرے پیش يجي بدى كرے (ب٠٣٠ الهمزة:١)

^{5}تو جمه كنو الايمان: لكريول كاكشماسر يراشمات - (پ ٣٠ اللهب: ٤)

ایک اور مقام پرارشادِ الہی ہے:

'' پس ان دوعورتوں نے ان کی خیانت کی اورانہوں نےاللہ کی طرف ان دونوں کی کفایت نہ کی ۔''(1)

کہتے ہیں کہاس آیت میں دوعورتوں کا تذکرہ ہےا یک حضرت لوط عَلَیْہِ السَّلام کی بیوی جوتو م کوحضرت لوط عَلَیْہِ السَّلام کے مہمانوں سے خبر دار کیا کرتی تھی اورنوح عَلَیْہِ السَّلام کی بیوی جوآ پ کومخبوط الحواس کہا کرتی تھی۔

فرمان نبوی ہے کہ چغلخور جنت میں نہیں جائے گا۔ ⁽²⁾

دوسری حدیث میں ہے کہ قباًت جنت میں نہیں جائے گا۔ ⁽³⁾ قباًت پُنغَلْخور کو کہتے ہیں۔

حضرتِ ابو ہر ریرہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے :حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فر مایا کتم میں سے اللّٰه تعالیٰ کوسب سے زیادہ محبوب وہ لوگ ہیں جو دنیا میں رہتے ہیں، وہ لوگوں سے مجبت کرتے ہیں اور لوگ انہیں محبوب سمجھتے ہیں اور اللّٰه تعالیٰ کے ہاں سب سے بدترین وہ لوگ ہیں جو چعلخو ریاں کرتے ہیں، بھائیوں کو باہم لڑاتے ہیں اور نیکوں کی لغزشوں کے خواہاں ہوتے ہیں۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فَر ما يا: كيا مِين تههيں بدترين آوميوں كے متعلق نه بتاؤں؟ صحابہ نے عرض كى: بتلا يئے ياد سول الله (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْکَ وَسَلَّم)! آپ نے فر مايا: وہ پخلخور كى كرنے والے، دوستوں ميں فساد بر پاكر نے والے اور صالح لوگوں پر جھوٹی تہمتيں لگانے والے ہيں (5) (يعنى بدترين لوگ يہ ہيں)۔

حضرت ابو ذَردَضِیَ اللّٰهُ عَنهُ سے مروی ہے: حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جو خص ناحق کسی مسلمان کے متعلق جھوٹی بات پھیلاتا ہے کہ اسے ذلیل ورسوا کر ہے توالله تعالی اسے قیامت کے دن جہنم میں ذلیل ورسوا کر ہے گا۔ (6)

- التحریم: ۱)
 انہوں نے ان سے دغاکی تو وہ اللہ کے سامنے انہیں کچھکام نہ آئے۔ (۱۸، التحریم: ۱۰)
 - 2مسلم، كتاب الايمان، باب بيان غلظ تحريم النميمة ، ص ٢٦، الحديث ١٦٨ _ (١٠٥)
 - 3 بخارى، كتاب الأدب ، باب مايكرد من النميمة ، ١١٥/٤ ، الحديث ٢٠٥٦
 - ₫.....موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الغيبة والنميمة ، باب (ماجاء في ذم النميمة) ٣٩٤/٤، الحديث ١١٨
 - €.....موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الغيبة والنميمة ، باب (ماجاء في ذم النميمة) ٢٠/٩٥، الحديث ١٢٠
- الحديث ١٢١ موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الغيبة والنميمة ، باب (ماجاء في ذم النميمة) ،٢٤ ٣٩٦/٤ الحديث ١٢١

حضرتِ ابُوالدَّر داء رَضِیَ اللَّهُ عَنُه ہے مروی ہے: حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جُوْخُص مسلمان کے لئے کسی الیی بات کو پھیلا تا ہے جو بالکل غلط ہواوروہ اس سے اس مسلمان کو دنیا میں رسوا کرنا جیا ہتا ہے ،اللّٰہ تعالیٰ کو ت ہے کہ وہ اسے قیامت کے دن جہنم میں رسوا کرے۔ (1)

حضرتِ ابو ہریرہ وَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے کہ حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جو کسی مسلمان پر جھوٹی گواہی و یتا ہے وہ اپنا ٹھکانہ جہنم میں سمجھے۔ (2)

اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ قبر میں ایک تہائی عذاب صرف چغل خوری کی بدولت ہوتا ہے۔ ⁽³⁾

حضرت ابن عمر دَضِیَ اللهٔ عنه سے مروی ہے: حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ جب الله تعالیٰ نے جنت کو پیدا فرمایا تواسے عظم دیا کہ مجھ سے بات کر، وہ بولی کہ جومیر ہے اندرآ گیاوہ سعادت مند ہوا، تب رہ جبار جَلَّ جَدَلهُ نے فرمایا مجھے اپنی عزت وجلال کی قتم! میں تیرے اندرآ ٹرفتم کے لوگ داخل نہیں کروں گا، عادی شرافی ، زانی ، چغلخور، بے غیرت، رذیل، پیجوا، (⁴⁾ قطع رحمی کرنے والا اور وہ شخص جو بہ کہتا ہے، میرا خدا سے عہد ہے کہ فلاں فلاں براعمل نہیں کروں گا مگریہ وعدہ پورانہیں کرتا۔ (⁵⁾



حضرت كعب أحبار رَضِيَ اللهُ عَنه سے مروى ہے كه أيك مرتبد بنى إسرائيل قحط ميں مبتلا ہوگئے ،موى عَليهِ السَّلام نے

^{1}موسوعة ابن ابي الدنيا ، كتاب الغيبة والنميمة ، باب (ماجاء في ذم النميمة) ٢٩٧/٤٠، الحديث :١٢٢ ليس بمرفوع

^{2}موسوعة ابن ابي الدنيا ، كتاب الغيبة والنميمة ، باب (ماجاء في ذم النميمة) ،٣٩٨/٤، الحديث ١٢٣

الحديث ١٩٠٠ الحديث ١٩٠٠ الصمت، باب الغيبة وذمها، ١٣٤/٧، الحديث ١٩٠٠

بیجڑے کوعر بی میں مخنث کہتے ہیں، مخنث وہ ہے جوحر کات وسکنات، گفتار ور فقار میں عور توں کی طرح ہوا گرفتدرتی بیرحالت ہوتو وہ کنہگار
نہیں اور اگر مرد ہے مگر عورت کی شکل بناتا ہے تو بفر مانِ حدیث ملعون ہے کہ حضور صَلَی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَم نے مرد بننے والی عور توں پر اور عورت
بننے والے مردوں پر لعنت فر مائی ۔ (مرآة المناجیح، ج۰، ص١٠) ۔ علمیه

العمال، كتاب الاذكار قسم الاقوال، ٢٣٨/١، الحز الاول، الحديث ٢٠٣٧ وشعب الايمان، الثانى والسبعون من شعب الإيمان، باب في الغيرة والمذاء، ٢/٧١٤، الحديث ٩٩١٠ او المعجم الكبير، ١٨/٢ ا، الحديث ٩٩١ وفردوس الاخبار، ٢١٨/٢ الحديث ٢٩٦١ وطبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٣٤١/٦ و بحر الدموع، الفصل السابع والعشرون، ص ١٠٠٠

M

متعدد باربارش کی دعا کی مگر بارش نہ ہوئی، تب الله تعالی نے موسیٰ عَدَنیهِ السَّدَم کی طرف وَ حی فرمائی کہ میں تیری اور تیرے ساتھیوں کی دعا کیسے قبول کروں حالا نکہ تم میں عادی چغلخو رموجود ہے؟ حضرتِ موسیٰ عَدینہ والسَّدَم نے عرض کی:
یا الٰہی! مجھے وہ چغلخو ربتا تا کہ میں اسے (اپنی جماعت ہے) باہر نکال دوں! رب تعالیٰ نے فرمایا اے موسیٰ! میں تمہیں چغلخو رب سے منع کررہا ہوں اور پھرخود چغلخو رب کروں؟ للبذا ان سب نے تو بہ کی اور بارش برسے گی۔

اورکہا گیا ہے کہ کس آ دمی نے سات سوفر سخ کا طویل سفر کر کے ایک دانا کی مجلس میں حاضری دی اورا ہے کہا کہ میں اتنی طویل مسافت طے کر کے آپ سے سات با تیں پوچھنے آیا ہوں ،اللّٰہ تعالیٰ نے آپ کوعلم دیا ہے ، مجھے یہ ہتلا یے کہ آسان سے بھاری چیز کیا ہے ؟ زمین سے فراخ چیز کیا ہے ؟ چٹان سے سخت چیز ، آگ سے گرم چیز ، زمہر رہے بھی مخت ٹی چیز ،سمندر سے بھی زیادہ بے نیاز ، پیتم سے بھی زیادہ فوار چیز کیا ہے ؟ اس دانا نے جواب دیا کہ پاکدامن پر بہتان آسان سے بھی بھاری ہے ، بق زمین سے زیادہ فراخ ہے ، قناعت پند دل سمندر سے زیادہ بے نیاز ہے ، حرص اور حسد آگ سے زیادہ گرم ہیں ،کسی عزیز سے کام ، جبکہ وہ پورانہ کر بے زمہر رہے نیادہ سرد ہے ،کافر کا دل چٹان سے زیادہ شخت اور چنانی ورسوا ہوتا ہے ۔ کسی شاعر نے کیا خوب کہا ہے : ۔۔ اور چنانی کو ر، جب اس کا کردار ظاہر ہوجائے بیتم سے بھی زیادہ ذیل ورسوا ہوتا ہے ۔ کسی شاعر نے کیا خوب کہا ہے : ۔۔

من نم في الناس لم تؤمن عقاربه على الصديق ولم تؤمن افاعيه كالسيل بالليل لايدري به احد من اين جاء ولا من اين ياتيه

الويل للعهد منه كيف ينقضه والويل للود منه كيف ينفيه

﴿1﴾.....جو چغلخو رلوگوں میں چغلخو ریاں کرتا ہے تو اس کے دوست کو بھی اس کے سانپوں اور پچھوؤں سے بےخوف نہ مجھ (یعنی دو دوستوں کی بھی چغلیاں کر ہے گا)

﴿2﴾....رات كوآنے والے سلاب كى طرح جس كے متعلق كوئى نہيں جانتا كه كہاں ہے آيا ہے اور كس كس تك پہنچاہے۔

﴿3﴾....اس کے عہد کے لئے ہلاکت ہے وہ اسے کیسے پورا کرے گا اوراس کی دوستی کے لئے ہلاکت ہے، وہ کیسےاس کی ففی کرے گا۔ ر

دوسراشاعر کہتاہے: _

يسعى عليك كما يسعى اليك فلا تامن غوائل ذى وجهين كياد

🕵و چغلخور جس طرح تیری حمایت کرتا ہے اس طرح تیری برائیاں بھی بیان کرے گا دو چیروں والے کے مکر وفریب سے غافل نہ ہو۔

اب 79)

عداوتِ شيطان ۗ

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے ارشاوفر مایا: دل میں اتر نے کی دوجگہیں ہیں، ایک جگہ فرشتے کے اتر نے کی وہ ہے جونیکی پر تنبیہ کرتی ہے اور حق کی تصدیق کی جانب رغبت دلاتی ہے لہذا جوآ دمی اپنے اندر یہ بات محسوس کرے وہ اسے الله تعالیٰ کی رحمت سمجھے اور خداوند جَلَّ وَعَلاَ کی تعریف وتوصیف کرے، دوسری جگہ دشمن کی ہے جوفتنہ وفساد کی جانب میلان پیدا کرتا ہوت کی تکذیب اور نیکیوں سے منع کرتا ہے، جوشخص اپنے دل میں یہ بات محسوس کرے وہ الله تعالیٰ سے شیطانِ رجیم کی شرار توں سے پناہ مائگے، پھر آپ نے یہ آیت تلاوت فرمائی:

شیطان تمہیں فقر کا وعدہ دیتا ہے اور برے کام کرنے کا حکم دیتا

اَلشَّيْظنُ يَعِنُ كُمُ الْفَقْرَو يَامُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ (1)

-4

حضرتِ حسن بصری رَضِیَ اللهٔ عَنه کا قول ہے کہ دوفکریں ہیں جوانسان کے دل میں گردش کرتی رہتی ہیں، ایک حق کی فکر اور دوسری دشمنی کی فکر ہوتی ہے، الله تعالیٰ اس بندہ پررتم کرے جواپنے عزائم کا قصد کرتا ہے، جو کام اسے الله تعالیٰ کی طرف سے نظر آتا ہے اسے پورا کرتا ہے اور جواسے دشمن کی طرف سے نظر آتا ہے اسے چھوڑ دیتا ہے۔

حضرت جابر بن عُبَيده عَدُوى رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه كَهِمْ بِين: مِين نے حضرت عَلاء بن زِياد رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه سے اپنے ول میں بیدا ہونے والے وسوسوں کی شکایت کی تو انہوں نے ارشاو فر مایا: ول کی مثال اس گھر جیسی ہے جس میں چوروں کا گزر ہوتا ہے، اگر اس میں کچھ موجود ہوتا ہے تو وہ اسے نکال لے جانے کے بارے میں سوچتے ہیں ورنہ اسے چھوڑ ویتے ہیں یونہ اسے جھوڑ ویتے ہیں یونہ اسے جھوڑ ویتے ہیں یعنی جودل خواہشات سے خالی ہوتا ہے اس میں شیطان داخل نہیں ہوتا۔

فرمانِ اللي ہے:

[•] سستوجمهٔ کنو الایمان: شیطان تهبین اندیشردلاتا بے مختاجی کا اور حکم ویتا ہے بے حیائی کا - (ب۳، البقرة: ۲۶۸) سسترمذی، کتاب تفسیر القرآن، باب و من سورة البقرة، ۶/۶ البحدیث ۹۹۹

M

یے شک میرے بندوں پر تیرے لیے کوئی غابۃ ہیں۔

اِنَّ عِبَادِئ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلُطْنُ (1)

لہذاہروہ انسان جوخواہشات کی پیروی کرتاہےوہ الله کانہیں بلکہ شہوت کا بندہ ہے اسی لئے الله تعالیٰ اس پر شیطان کو

مُسلّط كرويتا ب،ارشادِ اللهي ہے:

کیا تونے اس کونہیں دیکھاجس نے اپنی خواہش کومعبود بنالیا۔

ٱفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اللهَ هُوْمهُ (²⁾

اس آیت میں اس اَمری جانب اشارہ ہے کہ جس کامعبود اور خدااس کی خواہش ہووہ اللہ کا بندہ نہیں ہوتا۔

اسی کئے حضرت عَمْرُوبِ بن عاص رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه نے نبی کریم صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے عرض کی: یارسول الله دِصَلَّی اللّٰهُ عَلَیْکَ وَسَلَّم، اِشْیطان مِیرے اور میری نماز وقر اُت کے در میان حائل ہوجا تا ہے۔ آ پ نے فر مایا: یہ شیطان ہے جسے خِنْرُب (3) کہا جا تا ہے، تم جب بھی اس کے وسواس محسوس کروالله تعالی سے اس سے پناہ ما تکواور تین مرتبہ بائیں جانب تھوک دو۔ راوی کہتے ہیں چنا نچے میں نے ایسا ہی کیا اور الله تعالی نے مجھے اس سے دور کر دیا۔ (4)

حدیث شریف میں ہے وضو (میں نقص پیدا کرنے) کے لئے ایک شیطان ہے جس کا نام وَلہان ہے،اللّٰہ تعالیٰ کی رحمت سے اس سے بیخے کا سوال کرو۔ (⁵⁾

دل سے شیطانی وَساوِس اس صورت میں دور ہو سکتے ہیں کہ انسان ان وَساوِس کے خلاف با تیں سو چے بعیٰ ذِکر اللہ کرے کیونکہ دل میں کسی چیز کا خیال آتا ہے تو پہلے والی چیز کا خیال مث جاتا ہے کیکن ہراس چیز کا خیال جوذات بربانی اور اس کے فرامین کے علاوہ ہو، شیطان کی جو لا نگاہ بن سکتی ہے مگر ذکرِ خداالی چیز ہے جس کی وجہ سے مومن کا دل مطمئن ہوجا تا ہے اور جان لیتا ہے کہ شیطان کی طاقت نہیں جواس میں زور آز مائی کرے، چونکہ ہر چیز کا علاج اس کی ضد سے

¹....ترجمهٔ كنز الايمان: بشكمير عبندول پرتيرا كيحقالونييل - (ب١٠ الحجر:٤٠)

^{2}ترجمهٔ كنز الايمان: بهلاد يهوتوه جس نے اپن خوامش كوا پنا خداكشم اليا_(ب٥٠، الحاثية: ٢٠)

سیبال شیطان کا نام "خوب" لکھاتھا لیکن میچیمسلم کی روایت میں اس شیطان کا نام "خِنزَبْ" لکھا ہے لہذا کتابت کی تلطی برمحمول کرتے ہوئے بہم نے بہاں "خوب" کے بجائے صحیحمسلم کے مطابق" خِنزَبْ "کردیا ہے۔واللہ تعالٰی اعلمہ علمیه

^{4}مسلم ، كتاب السلام ، باب التعوذ من شيطان ... الخ ، ص ١ ٢ ٠ ١ الحديث ٦٨ ـ (٢٢٠٣) عن عثمان بن ابي العاص

القلوب ١٩٩/١ و حاشية البحيرمي على الخطيب ، كتاب الصلاة ، ١٥٥/٢ و ترمذي ، كتاب الطهارة ، باب
 ماجاء في كراهية الاسراف...الخ ، ١٢٢/١ الحديث ٥٧

M

کیاجاتا ہے، لہذاجان لیجئے کہ تمام شیطانی وَساوِس کی ضد فِر اِلٰہی ہے، شیطان سے پناہ چا ہناہے اور لاَحَوْلَ وَلاَقُوقَةَ اِلَّا بِالله سے رہائی پانا ہے اور تمہارے اس قول کا کہ میں الله سے شیطانِ رجیم سے پناہ مانگتا ہوں اور لاَحَوْلَ وَلاَقُوقَةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ کَا یَہی مَنْشاہے، اس مقام پروہی لوگ سرفراز ہوتے ہیں جوشقی ہوں اور ذکر خداجن کی رَگ رَگ میں رَج بس گیا ہوا ور شیطان ایسے لوگوں پر بخبری کے عالم میں اچا تک حملے کیا کرتا ہے، فرمانِ الٰہی ہے:

تحقیق وہ لوگ جو پر ہیز گار ہیں جب ان کوشیطان کی طرف ہے

وسوسلگتاہے تو وہ ذِ کرکرتے ہیں پھراچا نک وہ دیکھنے لگتے ہیں۔

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْ الدَّامَسَّهُ مُظِّيفٌ مِّنَ الشَّيْطِنِ تَكُنَّ وُا

(1) فَإِذَاهُمُ مُّبُصِمُ وَنَ (1)

مجامِد رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ اسْ فر مانِ اللَّهِ :

مِنْ شَرِّ الْوَسُوَاسِ أَلْخَنَّاسِ مِنْ (2)

کی تفسیر میں کہتے ہیں کہ وہ دل پر پھیلا ہوا ہوتا ہے، جب انسان ذکر خدا کرتا ہے تو وہ پیچھے ہٹ جاتا ہے اور سکڑ جاتا ہے اور جب انسان ذکر سے غافل ہوتا ہے تو وہ حسب سابق دل پر تَسلُّط جمالیتا ہے۔

ذکرِ الٰہی اور شیطان کے وَساوِس کا مقابلہ ایسے ہے جیسے نور اور ظلمت، رات اور دن اور جس طرح بیا یک دوسرے کی ضد ہیں۔ چنانچے فرمانِ الٰہی ہے:

إِسْتَحُوذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطِانُ فَأَنْسُهُمْ ذِ كُواللهِ ﴿ (3) اللهِ عَالَى اللهِ اللهِ عَالَى اللهِ اللهِ عَالَى اللهِ عَالَى اللهِ عَالَى اللهِ عَلَيْهِمُ الشَّيْطِانُ فَأَنْسُهُمْ ذِ كُواللهِ عَالَى اللهِ اللهِ عَالَى اللهِ اللهِ عَالَى اللهِ اللهِ عَالَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهُ اللهِ ا

حضرتِ اللهُ عَنهُ سے مروی ہے: حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ شیطان اِنسان کے دل پراپنی ناک لگائے ہوئے ہے، جب انسان الله قعالی کو یا دکرتا ہے تو وہ پیچھے ہٹ جاتا ہے اور جب وہ یا دِ اللہ سے عافل ہوجاتا ہے تو شیطان اس کے دل کونگل لیتا ہے۔ (4)

- 🕕 تسر جملهٔ کنز الایمان: بیثک وه جوڈروالے بیں جب انہیں کسی شیطانی خیال کی ٹیس لگتی ہے ہوشیار ہوجاتے ہیں اسی وقت ان کی آئیس کھل جاتی ہیں۔(پ۵، الاعراف: ۲۰۱)
 - **2**.....ترجمهٔ کنز الایمان: اس کے شرسے جودل میں برے خطرے ڈالے اور دبک رہے۔ (ب، ۳، الناس: ٤)
 - المحادلة: ٩١ المحادلة: ١٥ يرشيطان عالب آليا توانيين الله كى ياد يهلادى (١٦٨ ، المحادلة: ٩١)
 - 4موسوعة ابن ابي الدنيا ، كتاب مكائد الشيطان، الباب الثاني، ٢٢ ٥٣٦/٤، الحديث ٢٢

 \sum_{i}

ابن وصَّاح نے ایک حدیث نقل کی ہے جس میں کہا گیا ہے کہ جب آ دمی چالیس سال کو پہنچ جاتا ہے اور تو بہیں کر پاتا تو شیطان اس کے منہ پر ہاتھ پھیرتا اور کہتا ہے کہ مجھے اپنے ہاہے کہ قتم ایداس کا چبرہ ہے جو فلاح نہیں پائے گا۔ (1)

اور جیسے انسانی خواہشات و شہوات انسان کے خون اور گوشت پوست سے جدانہیں ہوتیں ، اسی طرح شیطان کی سلطنت بھی انسانی دل پر محیط ہے اور انسان کے خون اور گوشت و پوست پر جاری وساری ہے چنا نچے فر مانِ نبوی ہے:

سلطنت بھی انسانی دل پر محیط ہے اور انسان کے خون اور گوشت و پوست پر جاری وساری ہے چنا نچے فر مانِ نبوی ہے:

شیطان انسان کے وجود میں خون کی طرح گردش کرتا ہے لہذا اس کی گزرگا ہوں کو بھوک سے بند کرو۔ (2)

میس ہوات نفسانی کے دل کا گیر او کرنے کے متعلق ارشا والی ہے: جس میں شیطان کے قول کی خبر دی گئی ہے کہ اس شہوات نفسانی کے دل کا گیر او کرنے کے متعلق ارشا والی ہے: جس میں شیطان کے قول کی خبر دی گئی ہے کہ اس نے کہا: ''پھر البتہ میں ان کے پاس ان کے آئے سے ان کے دائیں سے اور ان کی بائیں طرف سے آوں گا۔''

فرمان نبوی ہے کہ شیطان انسان کے داستوں پر بیٹھ گیا، اس کے اِسلام کے داستے میں بیٹھ کرا ہے کہا: کیا تو اسلام قبول کرتا ہے اور اپنے اور اپنے باپ دادا کے دین کو چھوڑتا ہے مگر اس انسان نے اس کا کہا ماننے سے انکار کر دیا اور اسلام لے آیا پھر وہ ہجرت کر راستے میں بیٹھ گیا اور بولا: کیا تو ہجرت کرتا ہے اور اپنے وطن کو اور اسکے زمین و آسان کو چھوڑتا ہے؟ مگر اس انسان نے اس کی بات ماننے سے انکار کر دیا اور ہجرت کر گیا پھر اس کے جہاد کے داستے میں بیٹھ کر بولا: کیا تو جہاد کرنا جا ہتا ہے حالا نکہ اس میں جان و مال کا ضیاع ہے، جب تو جنگ میں جائے گا تو قتل ہو جائے گا اور تیری عور تو ل سے لوگ نکاح کر لیس گے، تیرا مال آپس میں بانٹ لیس گے مگر اس بندہ خدانے شیطان کی بات مانے سے انکار کر دیا اور جہاد میں شریک ہوا اور حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جس کسی نے ایسے کردار کا مظاہرہ کیا، پھر اسے موت آگئ تو الله تعالیٰ کے ذمہ کرم پر ہوگا کہ وہ اسے جنت میں داخل کرے۔ (5)

^{1 ----} المحرر الوجيز، سورة فاطر، تحت الآية٣٧، ١/٤٤ و طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٣٣١/٦

^{2}بخارى، كتاب الاعتكاف، باب هل يدرأ ... الخ ، ١ / ٧٠، الحديث ٢٠٣٩ وكشف الخفاء، ١٩٨/١ الحديث ٢٧٦

الاعراف:۷۱) گرضرور میں ان کے پاس آؤں گاان کے آگاور پیچیاوردا ہے اور بائیں سے (ب۸، الاعراف:۱۷)

الایمان: میں ضرور تیرے سید هے داسته پران کی تاک میں بیشوں گا۔ (ب۸، الاعراف: ۱٦)

^{5} نسائي، كتاب الجهاد، باب ما لمن اسلم...الخ، ص ٩ . ٥، الحديث ٣١٣١

igg<محبّت و محاسبهٔ نفس ig>

حضرت سفيان رَضِي اللهُ عنه كاقول مع: محبت إيتباع رسول صلّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم معدايك اور بزرك كاقول م کہ محبت دائی ذِکر کا نام ہے، ایک اور قول ہے کہ محبت محبوب کوخود برتر جیج دینا ہے اور بعض کا قول ہے کہ محبت نام ہے دنیا کے قیام کو بُراسیجھنے کا ،مَذ کورہ بالاسباَ قوال محبت کے ثمرات کی طرف اشارہ کرتے ہیں نفس محبت کوکسی نے نہیں چھٹرا بعض نے بیکھا کہ محبت نام محبوب کے ان کمالات کا ہے جس کے إدراک سے دل مجبوراور جس کی ادائیگی سے زبانیں مُسدود ہیں۔

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَا قُول بِي كَهِ اللهُ تعالى في ونيات تعلق ركفني والون يرمحبت كوحرام كرديا باورفر مايا:

اموت اذا ذكرتك ثم احيا ولو لا حسن ظنى ما حييت فاحيا بالمنى واموت شوقا فكم احيا عليك وكم اموت شربت الحب كاسا بعد كاس فما نفد الشراب وما رويت فليت خياله نصب لعينى فان قصرت فى نظرى عميت

﴿1﴾ مجھاس پرانتهائی تعجب بوتا ہے جو مجھ سے کہتا ہے تو نے میری محبت کو یا دکیا ہے، کیا میں اسکی محبت بھول گیا ہوں جواسے یاد کروں؟

﴿2﴾جب میں مجھے یاد کرتا ہوں تو مرجا تا ہوں بھرزندہ ہوجا تا ہوں ،اگر میراحسنِ ظن نہ ہوتا تو میں بھی زندہ نہ ہوتا۔

﴿3﴾ پس میں موت میں زندگی یا تا ہوں اور تیرے شوق میں موت یا تا ہوں ، کتنی مرتبہ میں تیرے لئے زندہ ہوتا ہوں اور مرتا ہوں۔

﴿4﴾ میں نے محبت کا جام کے بعد جام پیا، نہ شراب محبت کم ہوئی اور نہ ہی میں سیر ہوا۔

﴿5﴾.....اے کاش!اس کا خیال میرانصب العین ہو، جب بھی وہ میری نظروں سے دور ہو، میں اندھا ہوجا تا ہوں۔

حضرتِ رابعه عدویه رَضِیَ اللّهُ عَنْهَا نے ایک دن کہا: کون ہے جوہمیں اپنے محبوب کا پیتہ بتلائے؟ ان کی خادمہ بولی کہ ہمارامحبوب ہمارے ساتھ ہے لیکن دنیانے ہمیں اس سے جدا کر رکھا ہے۔

ابن الْجُلاء دَضِیَ اللهُ عَنْه ہے مروی ہے ،الله تعالیٰ نے حضرت عیسیٰ عَلَیْهِ السَّلام کی طرف وحی فر مائی کہ جب میں بندے کے دل کو دنیا اور آخرت کی محبت سے خالی پاتا ہوں تو اس کے دل کو اپنی محبت سے بھر دیتا ہوں اور اسے اپنی حفاظت میں لے لیتا ہوں۔

کہتے ہیں کہ حضرتِ جناب سَمْنُون رَحْمَهُ اللّهِ عَلَيْه نے ایک دن محبت کے متعلق گفتگوفر مائی توان کے سامنے ایک پرندہ اتر ااوروہ اپنی چونچے زمین پر مارنے لگایہاں تک کہ اس سے خون بہنے لگا اوروہ مرگیا۔

حضرتِ ابراہیم بن ادہم رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه نے کہا: اے اللّٰه توجانتا ہے کہ جنت تیرے ان انعامات کے مقابلہ میں جو مجھے دویعت ہوئے ہیں میرے زویک مجھر کے پر کے برابر وزن نہیں رکھتی ، تونے مجھے اپنی محبت سے سر فراز کیا ہے، این ذکر کی الفت بخشی ہے اوراپنی عظمت میں غور وفکر کرنے کے لئے فراغت مرحمت فرمائی ہے۔

حضرت ِسَرِی سَقَطَی رَضِیَ اللهٔ عَنْه کا قول ہے کہ جس نے الله سے محبت کی وہ زندہ جاوید ہوا، جس نے دنیا سے محبت کی وہ بے آبروہوا، احمق صبح وشام ذلت ورسوائی سے بسر کرتا ہے اور عقلمندا پنے عیوب تلاش کرتار ہتا ہے۔

الله تعالى في قرآن مجيد مين نفس كے مُحاسبه كا حكم ديا ہے، فرمان الهي ہے:

نَا يُنْهَا الَّذِيْنَ امنُوااتَّقُوااللَّهَ وَلَتَنْظُرْ نَفْسٌمَّا قَلَّمَتُ السَّادِ اللهِ عَدْرُواور بِرُفْس بِيدِ كَلِي كَالَ عَلَى كَالَّ مِنْ اللهِ عَدْرُواور بِرُفْس بِيدِ كَلِي كَالَ عَلَى كَالَّ مِنْ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَل

لیے کیا بھیجاہے۔

اس آیت کریمه میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ انسان اپنے گزشتہ اعمال کامُحاسَبہ کرے اس کئے حضرتِ عمر رَضِیَ اللهُ عَنْه نے فرمایا قبل اس کے کہتمہارامحاسبہ ہو،تم خود اپنامحاسبہ کرواور اس سے پہلے کہتمہارے اعمال تولے جائیں تم خود اپنے اعمال تول او۔

حدیث شریف میں ہے کہ ایک آ دمی نے حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے عَرض کیا: مجھے نصیحت سیجئے! آپ نے فرمایا: کیاتم نصیحت کی طلب میں آئے ہو؟ عرض کی: جی ہاں! آپ نے فرمایا: جب کسی کام کاارادہ کروتو اس کا انجام سوچ لو، اگراس کا انجام اچھا ہوتو کرلواور اگراس کا براانجام ہوتو اس ہے رک جاؤ۔ (2)

حدیث شریف میں ہے: عقلمند کے لئے مناسب ہے کہوہ چارگھڑیوں میں ایک گھڑی اپنے نفس کے محاسبہ میں خرچ کرے۔

فرمانِ اللي ہے:

اورتوبه كروالله كى طرف كمل توبدا بمومنو تاكهتم فلاح پاؤ۔

ۅؘؾؙۅٛڹؙۏۧٳٳؘڮؘٳٮڵۑڿؚؠؘؚؽعًٵڔۜؾؙۘ؋ٳڵؠؙٷ۫ڝڹؙۅؙڽؘڵڡؘڵۘڴؙۿ ؾؙڨ۫ڸؚڂۅٛڽؘ۞⁽⁴⁾

- السستوجمة كنز الايمان: الايمان والواالله و ورواور برجان وكيهي ككل ك لئ كيا آ كي بيجا (ب٢٨، الحشر: ١٨)
 - 2الزهد لابن المبارك، باب التخصيص على طاعة الله عزو جل، ص ١٤، الحديث ٤١
- 3شعب الايمان، الثالث و الثلاثون من شعب الإيمان، باب في تعديد نعم الله، فصل في فضل العقل الذي...الخ، الخ، عديد نعم الأفعال، فصل في مواعظ متفرقة لا ٦٠٤، الحديث ٢٦٤، الحديث ١٦٤، الحجرية السادس العاشر، الحديث ٢٣٠٤.
 - النور: ۳۱) النور: ۳۱ الله كى طرف توبكروا حصلمانو! سب كسب اس اميد يركم قلاح يا و (۱۸، النور: ۳۱) النور: ۳۱)

مكاشفة القلوب

اورتوبہاییافعل ہے جو کام کر چکنے کے بعد شرمندگی اور پشیمانی سے متصف ہوتا ہے۔ فرمانِ نبوی ہے کہ میں دن میں سومر تبہتو بہرتا ہوں اور الله سے بخشش طلب کرتا ہوں۔⁽¹⁾ فرمانِ الٰہی ہے:

'' بےشک وہ لوگ جو پر ہیز گار ہیں جب انہیں شیطان کی طرف سے وسوسہ آتا ہے تو وہ ذکر کرتے ہیں پس اچا تک وہ دیکھنے والے ہوتے ہیں۔''(2)

حضرتِ عمر رَضِیَ اللّٰهُ عَنُه جبرات تاریک ہوتی تواپ قدموں پرچا بک مارتے اور اپنفس سے کہتے کہ تونے آج کیا عمل کیا؟ حضرتِ میمون بن مہران رَضِی اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ آدمی اس وقت تک متعی نہیں بن سکتا جب تک وہ کام کے بعد اپنے شریک یا شریکوں کے محاسبہ سے بھی اپنے نفس کا سخت محاسبہ نہ کرے۔

حضرتِ عائشہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا سے مروی ہے کہ حضرتِ ابو بکر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه نے جُھے ہوت وصال فرمایا کہ ججھے لوگوں میں سے کوئی بھی عمر سے زیادہ مجبوب نہیں ہے، پھر آپ نے مجھے سے پوچھا کہ میں نے کیا کہا ہے؟ میں نے آپ کا فرمان دہرایا تو آپ نے فرمایا کہ میرے نزدیک عمر سے زیادہ باعزت کوئی شخص نہیں ہے، تو گویا آپ نے ایک بات کہہ کراس پرغور فرمایا اور اسے دوسرے جملہ میں تبدیل کردیا۔

حضرتِ ابوطلحہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ سے منقول ہے کہ جب انہیں ان کے باغ کے پرندے نے نماز سے ان کی توجہ ہٹادی تو انہوں نے اس کوتا ہی کے بدلہ میں انتہائی پشیمانی کے عالم میں وہ سارا باغ اللّٰہ کی راہ میں وقف کردیا۔

حضرت عبدالله بن سلام دَضِ الله عَنه كى حديث ميں ہے كه انہوں نے ككڑيوں كا كھا اٹھا يا تو لوگوں نے كہا: اب ابو يوسف! تيرے گھر ميں ككڑياں موجود تھے، تو نے بيكام كيوں كيا؟ تو انہوں نے جواب دیا كہ ميں اپنے نفس كا امتحان لے رہا تھا كہ كہيں بيان كاموں كو بُر اتو نہيں سمجھتا۔

حضرت حسن دَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كه مومن البيغ نفس كا حاكم ہوتا ہے اوراس كا محاسبه كرتار ہتا ہے ، ان لوگوں

^{1}ابن ماجه، كتاب الادب، باب الاستغفار، ٤/٦٥٦، الحديث ٥٨١٥

وقت ان کی آستو جمهٔ کنز الایمان: بینک وه جو ڈروالے میں جب انہیں کسی شیطانی خیال کی ٹھیں گئی ہے ہوشیار ہوجاتے ہیں اس وقت ان کی آسمیس کمل جاتی ہیں۔(پ۹۰ الاعراف: ۲۰۱)

کا قیامت میں حساب آسان اور ملکا ہوگا جود نیامیں اپنے نفسوں کا محاسبہ کرتے رہے ہیں اور قیامت میں ان لوگوں کا سخت محاسبہ ہوگا جود نیامیں اپنے نفسوں کا محاسبہ ہیں کرتے۔

پھر محاسبہ کی تفسیر میں فرمایا کہ اچا تک مومن کوکوئی چیز پیند آجاتی ہے اور وہ اسے دیکھ کر کہتا ہے بخدا! تو مجھے پیند ہے، تو میری ضرورت ہے کیئن افسوس ہیہ کہ تیرے اور میرے درمیان حساب حائل ہے، یہ حساب قبل ازعمل کی مثال ہے اور جب مومن سے کوئی لغزش سرز دہوجاتی ہے تو وہ خود سے کہتا ہے تیرااس فعل سے کیا مطلب تھا، بخدا! میں اس پر عذر پیش نہیں کروں گا۔ عذر پیش نہیں کروں گا۔

حضرتِ اللهُ عَنهُ اور میں مالک رَضِیَ اللهُ عَنهُ سے مروی ہے کہ ایک دن حضرتِ عمر دَضِیَ اللهُ عَنهُ اور میں مَدینه منورہ سے باہر نکلے یہاں تک کہ وہ ایک دیوار کے قریب پہنچ، میں نے سناوہ کہدرہے تھے اور میرے اور ان کے درمیان ایک دیوار حاکل تھی، واہ واہ ! عمر بن خطاب امیر المؤمنین ہے! بخداا نے نس !الله سے ڈر، ورنہ وہ مجھے عذاب کرے گا۔ حضرتِ حسن دَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه اس فرمانِ اللهی :

اورمیں ملامت کرنے والےنفس کی قتم کھا تا ہوں۔

وَلاَ أُقْسِمُ بِالنَّفُسِ اللَّوَّامَةِ ۞

کی تفسیر میں فرماتے ہیں کہ مومن سے جب کوئی غلطی ہوتی ہے تو وہ اپنے نفس کا تعاقب کرتا ہے کہ تیرااس بات سے کیا ارادہ تھا؟ تیرامیر سے کھانے اور پینے سے منشا کیا تھا؟ اور بدکار قدم بفذم آگے بڑھتار ہتا ہے مگر گنا ہوں پرمحاسبہ نفس نہیں کرتا۔

حضرتِ ما لک بن دینار دَضِیَ اللهٔ عَنْه کا قول ہے:الله تعالیٰ اس بندے پررحم کرے جس نے اپنے نفس سے بیکہا کرتو نے ایسا ایسا کام انجام نہیں دیا پھراس کی خدمت کی ،اس کی ناک میں تکیل ڈال کر کتاب الله کی پیروی کواس کے لئے لازمی قرار دے دیا،ایسا مخص اپنے نفس کا قائد ہوگا اور حقیقت میں یہی نفس کا محاسبہ ہے۔

حضرت ِمیمون بن مهران دَضِبَ اللَّهُ عَنْه كا قول ہے كَم قَيْ خُصْ اللَّهِ عَنْه كا فول ہے كُم قَيْ خُصْ اللَّهِ عَنْه كُم عَالَهُ عَنْه كَا مُعَالِم عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ كَا مُعَالِم عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ كَا مُعَالِم عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ كَا فُولُ ہے كُم قَيْ خُصُ اللَّهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ كَا فَعْلَم عَنْهِ عَنْهُ عَنْ عَنْهُ عِنْهُ عَنْهُ عَنْ عَنْهُ عَنْ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْ عَنْهُ عَنْ عَلْمُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْ عَنْهُ عَنْ عَلَاهُ عَنْ عَلَمُ عَلَا عَلَاهُ عَلَا عَلَا عَلَا عَلَمُ عَلَا عَلَا عَلَا عَ

القيمة: ٢) القياد: اوراس جان كوشم جوايخ أوير بهت ملامت كرے (ب ٢٩) القيامة: ٢)

حضرت ابراہیم بھی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ میں نے اپنے نفس کے سامنے جنت کی مثال پیش کی ،اس کے پھل کھانا،اس کی نہروں سے پانی پینا اوراس کی پاکیزہ عورتوں سے میل ملاپ رکھنے کی تفصیل بیان کی ، پھر میں نے اپنے نفس کو جہنم کی تفصیل سنائی یعنی اس کا تھو ہر کھانا،اس کی پیپ پینا اوراس کے بھاری زنجیر اورطوق گلے میں پہننے کا بتا کر کہا: مخضے ان دونوں میں سے کونی چیز پہند ہے؟ نفس بولا میر اارادہ ہے کہ دنیا میں جاکرنیک عمل کر کے آؤں، تب میں نے اسے کہا کہ فی الحال مجھے مہلت ملی ہوئی ہے، لہذا خوب نیک اعمال کر لے۔

حضرتِ ما لک بن وینار رَضی الله عنه کہتے ہیں کہ ہیں نے جاج کوخطاب کرتے ہوئے سناوہ کہدر ہاتھا ،الله تعالی اس بندے پر حم فرمائے جس نے اپنا حساب دوسرے کے پاس جانے سے پہلے خودہی اپنے نفس کا محاسبہ کر لیا ،الله اس بندے پر حم فرمائے جس نے اپنے عمل کی لگام پکڑ کر سوچیا کہ ہیں ایسا کام کیوں کر رہا ہوں ،الله تعالی اس بندے پر رحم فرمائے جس نے اپنی بھرتی کود یکھا ،الله اس بندہ پر رحم فرمائے جس نے اپنے اعمال کے میزان کود یکھا وہ اس بندہ پر رحم فرمائے جس نے اپنے اعمال کے میزان کود یکھا وہ اس کے مطالم اور سلحاء وابرار پر اس کی چیرہ دستیوں نے خود اس کو بھی اپنے نفس کے عاسبہ کا موقع نہیں دیا)۔

حضرتِ أحنف بن فيس رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه كِ الكِ ساتھى كى روايت ہے كه ميں ان كے ساتھ رہتا تھا، ان كى رات كى عبادت عمومى طور پر دعاؤں پر شتمل ہوتى تھى اوروہ چراغ كى طرف آتے اس كى لوميں اپنى انگل ركھ ديتے يہاں تك كه اس بر آگ كا اثر محسول كيا جاتا، پھر اپنے نفس سے خاطب ہوكر كہتے: اے اَحنف! مختبے فلال فلال دن كس چيز نے ایسے ایسے كام كرنے پراُ كسايا تھا، مختبے فلال روز كونى چيز نے ایسے بُرے مل پر آمادہ كيا تھا۔

.....☆.....☆.....☆

)

اب (81

آميزش حق و باطل

فرمانِ نبوی ہے: جسے مُعْقِل بن ئیکار رَضِی اللهٔ عَنه نے روایت کیا ہے کہ لوگوں پر ابیاز مانہ آئے گاجب لوگوں کے دلوں میں قر آ نِ مجید بدن کے کپڑوں کی طرح پرانا ہوجائے گاان کے تمام اَحکامات طبع پربنی ہوں گے، کسی کے دل میں خوف ِخدا نہیں ہوگا، اگران میں سے کوئی ایک نیکی کرے گا تو کہے گا: یہ مجھ سے قبول کرلی جائے گی اورا گربرائی کرے گا تو کہے گا: یہ بخش دی جائے گی ورا گربرائی کرے گا تو کہے گا: یہ بخش دی جائے گی حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے بتایا کہ وہ خوف ِخدا کی بجائے طبع کھیں گے۔ (1) کیونکہ قرآن مجید کی ان تنبیہات سے جن میں انسانوں کوعذاب سے خوف دلایا گیا ہے، ان کو بالکل علم نہیں ہوگا،

اسی عادت اوراس جیسی دوسری عادتوں کی وجہ سے الله تعالیٰ نے نصاریٰ کے متعلق ان الفاظ میں خبر دی ہے کہ

یں ان کی جگدان کے برے جانشین بیٹھے جو کتاب کے وارث

فَخَلَفَ مِنُ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِاثُوا الْكِتْبَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ

ہوئے وہ ناقص یعنی حرام اسباب کو لیتے ہیں اور کہتے ہیں البتہ

هٰ لَا الْاَدُنْ وَيَقُولُونَ سَيُغَفَّرُلَنَا ﴿ (2)

ہم کو بخش دیا جائے گا۔

اس کی تفسیر بیہ ہے کہ ان کے علماء کتابِ الٰہی کے وارث ہوئے مگر انہوں نے دنیا کی خواہشات سے مرصع مال کما نا نثر وع کر دیا خواہ وہ حلال ہویا حرام اور بیکہا کہ ہمیں الله بخش دے گا حالانکہ فرمانِ الٰہی ہے:

''اوراس شخص کے لیے جواپنے رب کے حضور کھڑ اہونے سے ڈراد دہنتیں ہیں۔''⁽³⁾

مزيد فرمايا:

❶.....فردوس الاخبار، ◊ /٤٤ ٤،الحديث ١ • ٨٧٠عن ابن عباس و تاريخ مدينه دمشق، ٨١/١٨ ماخو ذًا

صترجمهٔ کنز الایمان: پیران کی جگهان کے بعدوہ ناخلف آئے کہ کتاب کے دارث ہوئے۔اس دنیا کا مال لیتے ہیں اور کہتے اب ہماری بخشش ہوگی۔ (ب۹، الاعراف: ۱۶۹)

^{3}توجمهٔ کنز الایمان: اورجوایخ ربّ کے حضور کھڑے ہونے سے ڈرےاس کیلئے دوجنتیں ہیں۔ (پ۲۲، الرحسن: ٦٤)

'' یہ (جنت) اس شخص کے لیے ہے جومیرے حضور کھڑا ہونے سے ڈرااور میری تہدید سے خوف زدہ ہوا ہے۔''(1) قرآنِ مجید میں اُول سے آخر تک لوگوں کوخوف دلایا گیا ہے، انہیں ڈرایا گیا ہے اس میں جب کوئی سوچنے والا غور وفکر کرتا ہے تو اس کاحزن ومکال بڑھتا ہے،اگروہ مومن ہے تو اس کا اس میں غور وفکر کرنے سے خوف فزوں تر ہوتا ہے مگرتم لوگوں کود یکھتے ہو، اسے جلدی جلدی پڑھتے ہیں، اس کے حروف کے مخارج نکالتے ہیں، اس کے زبر زبر اور

بیش میں جھگڑتے ہیں جیسے کہ وہ عرب کے اُشعار پڑھ رہے ہوں ، وہ اس کے معانی میں غور وفکر نہیں کرتے اور نہ ہی اس بیش میں جھگڑتے ہیں جیسے کہ وہ عرب کے اُشعار پڑھ رہے ہوں ، وہ اس کے معانی میں غور وفکر نہیں کرتے اور نہ ہی اس

کے اُحکامات پڑمل کی سعی کرتے ہیں اور دنیا میں اس جیسا یا اس سے بڑھ کرکوئی دھوکہ ہے کہ لوگ نیکیاں اور گناہ کرتے ہیں ، ان کے گناہ نیکیوں سے زیادہ ہوتے ہیں مگر وہ اس کے باوجود بخشش کی تمنار کھتے ہیں اور گناہوں کے بلڑے کو

یں سے معت ہوئے بھی وہ نیکیوں کے بلڑے کو بھاری ہونے کی امیدیں لگائے بیٹھے ہیں، بیان کی جہالت کی انتہانہیں ۔ بھاری سجھتے ہوئے بھی وہ نیکیوں کے بلڑے کو بھاری ہونے کی امیدیں لگائے بیٹھے ہیں، بیان کی جہالت کی انتہانہیں ۔

تواور کیاہے؟

تم و یکھتے ہوآ دمی چند حلال وحرام کے ملے جلے روپے راو خدا میں دیتا ہے اور مسلمانوں کے مال اور مشتبہ مال

سے ان کے دوگنے چوگنے روپے کھرے کر لیتا ہے اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ اس کا راوِ خدا میں خرچ کیا ہوا مال بھی
مسلمانوں کے مال سے چھینا ہوا ہو۔ اور وہ یہ ممان کرتا ہے کہ کھائے ہوئے ہزار روپے کا یہ حرام یا حلال سے کمائے دس
روپے جن کو میں نے راوِ خدا میں دیا ہے، بدلہ بن جا کیں گے، ایسے خض کی مثال کچھ یوں ہے کہ ایک آ دمی تراز و کے
ایک پلڑے میں دس روپے اور دوسرے میں ایک ہزار روپے رکھ کریے توقع رکھے کہ دس روپے والا پلڑا ہھاری اور ہزار
والا ہلکا ہوجائے گا اور بیاس کی جہالت کی انتہا ہوگی، تم کو بعض ایسے شخص بھی نظر آ کیں گے جن میں سے ہرایک یہ سمجھے گا
کہ اس کی نیکیاں گنا ہوں سے زیادہ ہیں، ایسا شخص نفس کا محاسبہ بیس کرتا اور اپنے گنا ہوں کو تلاش نہیں کرتا ہے یادن
کوئی نیکی کرتا ہے، اس پر اعتاد کرتا ہے اسے گن لیتا ہے، ایسے شخص کی مثال ایسی ہے جوزبان سے استعفار کرتا ہے یادن
میں سومر تبہ اللّٰہ کی شبح کرتا ہے۔ پھر مسلمانوں کی غیبت کرتا ہے، ان کی عز تیں پا مال کرتا ہے اور سار ادن اُن گنت ایسی
با تیں کرتا ہے جن سے اللّٰہ تعالیٰ نا راض ہوجا تا ہے لیکن اس کی نگاہ میں وہ سوت بیجا ہے گردش کرتی ہیں اور سوبار

ںتو جمهٔ کنز الایمان: بیاس کے لئے ہے جومیر ے حضور کھڑے ہونے سے ڈرےاور میں نے جوعذاب کا حکم سنایا ہے اس سے خوف کرے۔ (پ۱۲ ، ابراهیہ: ۱۶) مكاشفة القلوب

اِستغفار کرنا گھومتار ہتاہے اور سارے دن کی کغویات سے غافل ہوجاتا ہے جن کواگروہ لکھتا تو وہ ہر سبیج سے سوگنایا ہزار گنازیادہ ہوتیں، جنہیں محافظ فرشتوں نے لکھ لیا ہے اور الله تعالیٰ نے بھی ہرایسے کلمہ پرعقاب کا وعدہ کیا ہے چنانچیار شادِ الہی ہے:

مَايَلْفِظُمِنْ قُوْ لِإِلَّالَالَكَ يُكِرَ قِيْبٌ عَتِيْكُ ۞ مَايَلْفِظُمِنْ قُوْ لِإِلَّالَالَكَ يُكِرَ قِيْبٌ عَتِيْكُ

و شخص تبیج و جہلیل کے فضائل میں تو غور کرتا ہے گران وعیدوں سے اپنی آئکھیں بند کر لیتا ہے جوغیبت کرنے والوں، جھوٹوں، پختلخو روں اور ایسے لوگوں کے متعلق وار دہوئی ہیں جو زبان سے پچھاور کہتے ہیں اور دل میں پچھاور کہتے ہیں اس کے علاوہ بھی طرح کی ایسی بہت ہی باتیں ہیں جن پر گرفت ہوگی اور بید دنیا تو محض وھو کہ ہی دھو کہ ہے۔

مجھے زندگی کی قسم! اگر محافظ لکھنے والے فرشتے اس سے ان لغوبا توں کے تحریر کرنے کی اجرت طلب کرتے جواس کی تسبیحات سے زیادہ ہیں تو وہ اپنی زبان کو بند کر لیتا اور ایسی اہم باتیں بھی نہ کرتا جواس کی ضروریات میں شامل ہوتیں اور نہ ہی وہ نا توانی میں کوئی بات کرتا وہ ہر بات کو گنتا، اس کا محاسبہ کرتا اور اپنی تسبیحات سے ان کا موازنہ کرتا کہ کہیں میری باتوں کی اجرت میری باتوں کی اجرت کے سبب میری باتوں کی اجرت میری انتہائی احتیاط کو پیش نظر رکھے مگر فر دوسِ اعلیٰ کے نہ پانے اور اس کی نعمتوں کے زوال کوکوئی اہمیت نہ دے۔

حقیقت توبیہ ہے کہ بیر چیز ہراس انسان کے لئے عظیم مصیبت ہے جوغور وفکر کرنے کا عادی ہو، ہمیں اللہ تعالیٰ کی طرف سے ایسے کام سوننے گئے ہیں کہ اگر ہم ان کا انکار کردیں تو نافر مان کا فروں میں سے ہوجا کیں اور اگر ان کی تصدیق کریں باوجود یکہ اعمال کا نام ونشان نہ ہوتو ہم فریب خوردہ بیوقوف کہلا کیں گے کیونکہ ہمارے اعمال ویسے نہیں جسے اعمال ایک ایسے محض کے ہونے چاہئیں جوقر آنِ مجید کے احکامات کی تصدیق کرتا ہے (اور ہم اللہ تعالی سے کافروں میں ہونے سے برأت چاہے ہیں)۔

🕕توجمهٔ کنز الایمان: کوئی بات وه زبان نے نہیں نکالٹا کہ اس کے پاس ایک محافظ تیار نہ بیٹا ہو۔ (پ۲۰ق:۸۸)

X

)

اب 82

رِ نماز باجماعت کی فضیلت

نی کریم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کہ تنہا نماز پڑھنے سے نماز باجماعت کوستا کیس وَ رَجِ فضیلت حاصل ہے۔ حضرتِ ابو ہر ریرہ دَضِی اللَّهُ عَنْه سے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے بعض لوگوں کو چند نمازوں میں جماعت میں نہ دیکھ کر فرمایا: میرا بید اِرادہ ہوا کہ میں کسی آ دمی کونماز پڑھانے کا حکم دوں اور میں ان لوگوں کے یہاں جاؤں جو جماعت سے رہ گئے ہیں اوران کواوران کے گھروں کوجلادوں۔ (2)

دوسری روایت میں ہے کہ پھر میں ان لوگوں کے گھروں کو لکڑیوں کے گھوں کے ساتھ ان پرجلانے کا حکم دوں جو جماعت میں شریک نہیں ہوئے ،اگران میں سے کسی کوعلم ہوتا کہ موٹی ہڈی یا جانور کے دوہاتھ (جماعت میں شریک ہونے ہے) ملیں گے تو وہ ضرور جماعت میں شامل ہوتے۔⁽³⁾

حضرت عثمان دَضِیَ اللّهُ عَنُه سے مرفوعاً مروی ہے کہ جوعشاء کی جماعت میں حاضر ہوا پس گویا اس نے آ دھی رات عبادت میں گزاری اور جوشج کی جماعت میں بھی شامل ہوا گویا اس نے ساری رات عبادت میں گزاری ۔ (4)

رسولِ آکرم صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا اِرشاد ہے کہ جس نے نماز با جماعت اوا کی پس گویا اس نے اپنے سینے کوعبادت سے بھرلیا۔ (5)

¹ ٤٠٠٠ الحديث ١٤٥ الأذان ، باب فضل صلاة الجماعة ، ٢٣٢/١ الحديث ١٤٥

^{2}مسند أبي داود الطيالسي، ص ٢٤، الحديث ٢١٦

الحديث ٢٥١ ـ (٢٥١) و بخارى ،
 كتاب المساجد...الخ ، باب فضل صلاة الجماعة ...الخ ،ص٣٢٧، الحديث ٢٥١ ـ (٢٥١) و بخارى ،
 كتاب الاذان، باب و جوب صلاة الجماعة ، ٢٣٢/١ الحديث ٦٤٤

^{4}مسلم، كتاب المساجد...الخ، باب فضل صلاة الجماعة...الخ،ص ٣٢٩، الحديث ٢٦٠ (٢٥٦)

القلم، تحت علية الاولياء، تكملة كعب الاحبار، ٣٠/٦، الحديث ٢٧٠٤ ليس بمرفوع و تفسير روح البيان، القلم، تحت الآية:٤٣٠، ٢٤/١، وقوت القلوب، ١٨٠/١

حضرت ِ سعید بن مُسیِّب رَضِیَ اللهٔ عَنه کا قول ہے کہ بیس برس سے متواتر میں اس وقت مسجد میں ہوتا ہوں جب مؤذن اُذان دیتا ہے۔ حضرتِ مِحمد بن واسع رَضِیَ اللهُ عَنه فرماتے ہیں کہ میں دنیا سے تین چیز وں کی خواہش رکھتا ہوں،ایسا بھائی کہا گرمیں ٹیڑھا ہوجاؤں تو وہ مجھے سیدھا کر دے، بغیر کاوش کے خضر رِزْق جس کی باز پرس نہ ہوا ورنما زباجماعت جس کی غلطیاں میرے لئے معاف کر دی جائیں اور جس کی فضیلت مجھے بخش دی جائے۔

حضرت ابوعُبَیدہ بن جَرَّاحَ رَضِیَ اللهُ عَنْه نے ایک مرتبہ کچھلوگوں کی اِمامت کی ، جب نماز سے فارغ ہوئے تو شیطان کے متعلق فر مایا کہ وہ مجھے بہکا تار ہا یہاں تک کہ میں نے بھی خودکودوسرے سے افضل سمجھ لیا، میں آج کے بعد اِمامت نہیں کرول گا۔

حضرتِ حِسن رَضِیَ اللّٰهُ عَنُه کا قول ہے کہ اِلیشخص کے بیجھے نماز نہ پڑھو جوعلماء کی مجلس میں نہ جاتا ہو۔حضرتِ نِخی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ جو بغیر کسی علم کے لوگوں کی اِمامت کرتا ہے وہ اس شخص کی طرح ہے جو سمندر میں رہ کراس کا پانی نا پتا ہے اور اسکی کمی زیادتی کونہیں سمجھتا۔

حضرت حاتم اَصم رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ کا قول ہے کہ میری ایک نماز باجماعت فوت ہوگئ تو صرف ابوا کل بخاری میری تعزیت کوآئے ،اگر میر ابچیفوت ہوجاتا تو دس ہزار ہے بھی زیادہ لوگ تعزیت کے لیے آتے کیونکہ لوگ دِین کے نقصان کو وُنیا کے نقصان سے بہت بلکا جانتے ہیں۔

حضرت این عباس رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا کا قول ہے کہ جس شخص نے اُذان من کراس کا جواب نہ دیااس نے بھلائی کا اِرادہ نہیں کیا اور نہ ہی اسے بھلائی نصیب ہوگی۔

حضرتِ ابوہر ری_{ٰ هٔ دَخ}هٔ کا قول ہے کہ پ<u>گھلے ہوئے سیسے سے انسان کے کا نوں کا بھر</u> دیا جانااس سے بہتر ہے کہ وہ اَ ذان بن کراس کا جواب نہ دے۔

منقول ہے کہ حضرتِ میمون بن مہران رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه مسجد مين آئة وَ آپ سے کہا گيا کہ لوگ تو وا پس لوٹ گئے ہیں (یعنی نماز ہو چک ہے) آپ نے بیتن کر فرمایا: إِنَّالِيْهِ وَ إِنَّا آلِكُيْهِ لَى جِعُونَ اور کہا کہ اس نماز کے پالینے کی فضیلت مجھے عراق کی حکومت سے زیادہ پیند تھی۔

Color of the Color of the Color of the Color

فرمانِ نبوی ہے کہ جس نے چالیس دن تمام نمازیں باجماعت اداکیں اور اس کی تکبیر تحریمہ فوت نہیں ہوئی ،الله تعالیٰ اس کی خاطر دوبراء تیں لکھ دیتا ہے،ایک نفاق سے برأت اور دوسری برأت جہنم سے۔(1)

سیمی کہا گیا ہے کہ جب قیامت کادن ہوگا تو قبروں سے ایک ایسی جماعت اُٹھے گی جن کے چہرے چمکدارستارے
کی طرح ہوں گے، فرشتے ان سے کہیں گے کہ تمہارے انتمال کیا تھے؟ وہ جواب دیں گے کہ جب ہم اُذان سنتے تھے تو
وضو کے لئے کھڑے ہوجایا کرتے تھے اور کسی اور کام میں مشغول نہیں ہوتے تھے۔ پھرایک ایسی جماعت آئے گی جن
کے چہرے چاند کی طرح ہوں گے، وہ فرشتوں کے سوال کے بعد کہیں گے کہ ہم وقت سے پہلے وضو کیا کرتے تھے، پھر
ایک الیسی جماعت آئے گی جن کے چہرے آفاب کی طرح وَرخشندہ ہوں گے اور وہ کہیں گے کہ ہم اُذان مسجد میں سنا
کرتے تھے (²⁾ (یعنی اذان سے پہلے مسجد میں پہنچ جاتے تھے)۔

مروی ہے کہ سلف صالحین تکبیراُولی کے فوت ہونے پرتین دن تک اپنی تعزیت کیا کرتے تھے۔

دل میں نور ایمان یانے کا ایک سبب

حدیث پاک میں ہے:" جس شخص نے عُصّہ صَبط کر لیابا وجود اس کے کہ وہ عُصّہ نافذ کرنے پر قدرت رکھتا ہے اللّٰہ عَزَوَ جَلَّ اُس کے دل کوسکون وا بمان سے بھردےگا۔"

(الجامع الصغير للسيوطي ص ٤١ ه حديث ٨٩٩٧)

یعنی اگریسی کی طرف ہے کوئی نکلیف پہنچ گئی اورغصہ آ گیا ہے بدلہ لے سکتا تھا مگرمحض رِضائے الٰہی عَدَّوَ حَلَّ کی خاطِر غُصّہ پی گیا تواللہ عَدُّوْ جَدًّ اس کوسکونِ قلب عطا فر مائے گا اوراس کا دل نورا بمان سے بھر وے گا۔ اس سے معلوم ہوا کہ بعض اوقات غُصّہ آنامفیر بھی ہے جبکہ ضبط کرنا نصیب ہوجائے۔

-ترمذي، كتاب الصلاة ، باب ماجاء في فضل التكبيرة الاولى، ٢٧٤/١ الحديث ٢٤١
 - 2تفسير روح البيان ، سورة النور، تحت الآية : ٣٨ ، ١٦١/٦

(83 <u>- !</u>

خ فضیلت نماز تهجد گ

قرآنِ مجيد كي متعدد آيات سے اس نماز كي فضيلت ثابت ہے، ارشادِ الهي ہے:

إِنَّى بَاكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدُنى مِنْ ثُلُقُ الَّيْلِ

فرمانِ اللي ہے:

إِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَعُالًّا أَقُومُ قِيلًا ١٠

بیٹک تیرارب جانتاہے کہ تو دوہہائی رات کے قریب کھڑا ہوتاہے۔

تحقیق رات کا اٹھنانفس کو کیلنے کے لیے بہت سخت ہے اور کام

کا بہت درست کرنے والاہے۔

فرمانِ اللِّي ہے:

تَجَافَجُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ

مزید فرمان ہوتاہے:

اَ مَّنْهُوَقَانِتُ انَا عِالَيْلِ (4)

ارشادِ الهي ہے:

رة) وَالَّذِنْ ثِنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمُ سُجَّمًا وَقِيَامًا ⊕

ان کی کروٹیں (پہلو) بچھونوں سے دور ہوتی ہیں۔

کیا جو څخص که وه رات کے وقت بندگی کرتا ہے۔

اور وہ لوگ جواینے رب کے لیے رات کوسجدہ کرتے ہوئے اور

قیام کرتے ہوئے گزارتے ہیں۔

مزیدارشاد ہوتاہے:

-توجمهٔ كنز الايمان: بشكتمهاراربّ جانتا بي كتم قيام كرتني بوبهي دوتبائي رات كقريب (ب٩٦، المزّمل: ٢٠)
 - السرّمان: بـ شكرات كالشاوه زياده دياؤ دالتا بـ الريات خوب سيرهى نكلى بـ (ب ٢٩ ١٠ السرّمان: ٦)
 - السجدة ۲۱ السجدة ۲۱ التيمان: الن كى كروئيل جدابوقى بين خوابگا بول سے (پ ۲۱ السجدة ۲۱)
 - الزمر: ٩)توجمهٔ كنز الايمان: كياوه جيفر ما نبرداري مي رات كي گهريال گزري (پ٣٠، الزمر: ٩)
 - الفرقان: ۱۶ کنز الایمان: اوروه جورات کا تے بین اپنے رب کے لئے سجدے اور قیام بین (پ۹۰، الفرقان: ۱۶)

_ [7]

اے ایمان والوصبراور نماز سے مدد حیا ہو۔

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِوَ الصَّلُوةِ (1)

کہا گیاہے کہاس نماز سے مرادرات کی نماز ہے جس پر مُدَاوَمَت کر کے فس سے جہاد کیا جاسکتا ہے۔

ا مادیث میں بھی اس نماز کی فضیلت وارد ہے چنانچہ فرمانِ نبوی ہے کہ جبتم میں سے کوئی ایک سوجا تا ہے تو شیطان اس کی گدی میں تین گانٹھیں دیتا ہے اور ہر گانٹھ میں وہ کہتا ہے کہ بہت طویل رات باقی ہے انجھی کچھ دیراور سولے، پس اگرانسان بیدار ہوکر ذکر خدا کرتا ہے تو ایک گانٹھ کھل جاتی ہے، جبوُضوکرتا ہے تو دوسری گانٹھ کھل جاتی ہے اور جب انسان نماز میں مصروف ہوجاتا ہے تو تیسری گانٹھ کھل جاتی ہے اور انسان اس حال میں صبح کرتا ہے کہ وہ خوثی ومسرت کا پانے والا اور ہلکا پھلکا ہوتا ہے ور نہ وہ ست اور بدمزاج ہوکراٹھتا ہے (2)

حدیث شریف میں ہے کہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں ایسے خص کا تذکرہ کیا گیا جوساری رات سوتا ہے یہاں تک کہ جس کے ناک میں شیطان نے پیشا ب کردیا ہے۔ (3) یہاں تک کہ جس کے ناک میں شیطان نے پیشا ب کردیا ہے۔ (3) حدیث شریف میں ہے کہ شیطان کے پاس ناک کی دَوا، چائے کی چیز اور چھڑ کنے کی چیزیں ہیں، جب وہ کسی انسان کے ناک میں دوائی ڈالٹا ہے تو وہ برخلق بن جاتا ہے جب کسی انسان کو چائے کی دَوادیتا ہے تو وہ انسان بدزبان ہوجا تا ہے اور جب کسی انسان پر دَوائی چھڑ کتا ہے تو وہ جب کسی انسان ہوجا تا ہے اور جب کسی انسان پر دَوائی چھڑ کتا ہے تو وہ جب کسی انسان ہوجا تا ہے اور جب کسی انسان پر دَوائی چھڑ کتا ہے تو وہ جب کسی انسان ہوجا تا ہے۔ (4)

حضورصَـلْـی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا اِرشاد ہے کہ آ دھی رات میں بند ہے کا دَ ورکعتیں نماز پڑھنا، دُنیااوراس کی تمام اشیاء ہے بہتر ہے،اگرمیری اُمت پردشوار نہ ہوتا تو میں بیدورکعتیں ان پرفرض کر دیتا۔⁽⁵⁾

صحیح بخاری میں حضرتِ جابر رَضِیَ اللّٰهُ عَنُه ہے مروی ہے:حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا کرات میں ایک الیم ساعت ہے کہ جب اس میں بندہ الله تعالی ہے بھلائی کا سوال کرتا ہے توالله تعالی اسے عطا کر دیتا ہے۔ (6)

^{1}ترجمهٔ كنز الايمان: اور صراور نماز سهد دچا بو - (پ۱، البقرة: ٤٥)

^{2}بخارى، كتاب التهجد، باب عقد الشيطان...الخ ، ٢٨٧/١ الحديث ١١٤٢

الحديث ٤٤ ١١ بأذن مكان أنف الله على ١١٤ بأذن مكان أنف ١١٤ ، الحديث ٤٤٤ بأذن مكان أنف

^{4}المعجم الكبير، ٢٠٦/٧، الحديث ٥٥٨٥

الحمال، كتاب الصلاة ، الباب السابع...الخ ، الفصل الثاني...الخ ،٤/٣٢٣، الجزء السابع ، الحديث ٢١٤٠١

^{6}مسند احمد ، مسند جابر بن عبدالله، ٥٨/٥ ، الحديث ١٤٣٦ ١

ایک روایت میں ہے کہ وہ دُنیا اور آخرت کی جو بھلائی مانگتا ہے اور بیساعت ہررات میں ہوتی ہے۔

حضرتِ مُغیرَہ بن شُغیمَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے کہ حضورصَلْی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَم (شب میں نمازے لئے) کھڑے ہوئے یہاں تک کہ آپ کے بیاے مبارک رات میں کھڑے ہوکرعبادت کرنے کے سبب سوج گئے ، آپ سے کہا گیا:

یارسول الله رصَلَی اللّٰهُ عَلَیْکَ وَسَلَم)! کیا الله تعالیٰ نے آپ کی اگلی پچھی خلاف اولی باتوں کو معاف نہیں فرماویا؟ آپ نے بیس کر اِرشاد فرمایا: کیا میں الله تعالیٰ کاشکر گزار بندہ نہ بنوں؟ (2) اس حدیث شریف سے یہ مطلب نکاتا ہے کہ اس سے آپ کی مرادمز بد اِنعاماتِ اِلٰہی کی طلب اور جُشتَوْتَی کیونکہ شکر زیادتی نعمت کا سبب ہے ، فرمانِ اللّٰہی ہے:

کین شکر تُوتو میں البتہ مہیں زیادہ دوں گا۔

آرتم شکر کروتو میں البتہ مہیں زیادہ دوں گا۔

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے حضرت ابوہریرہ رَضِیَ اللهُ عَنه سے فرمایا کہ کیاتم اس بات کو پسند کرتے ہو کہ تم پر زندگی، موت، قبراور حشر میں الله تعالی کی رَحمت کا نزول ہو، رات کا پچھ حصہ باقی ہواور تم رب کی رضا کے حصول کے لئے اُٹھ کو عبادت کرو! اے ابوہریہ! گھر کے کونوں میں نماز پڑھا کروہ تہارا گھر آسان سے ایسا چمکتا نظر آئے گا جیسے کہ زمین والوں کو چمکدارستار نظر آیا کرتے ہیں۔ (4)

فرمانِ نبوی ہے: تمہارے لئے لازم ہے کہ رات کوعبادت کیا کرو کیونکہ بیگر شتہ نیک لوگوں کا طریقہ ہے، بیشک رات کا قیام الله تعالیٰ کے قرب کا سبب، گناہوں کا کفارہ، جسمانی بیاریوں کو دُورکر نے والا اور گناہوں سے رو کنے والا ہے۔ (5) حضور صَدِّی الله عَدَیهُ وَمَدَّم کا ارشادِ گرامی ہے کہ ہروہ شخص جورات کوعبادت کا عادی ہواورا سے نیند آجائے تواس کے نامہ اعمال میں رات کی عبادت کا تواب کلے دیاجا تا ہے اور نیند کو اس پر بخش دیاجا تا ہے۔ (6) حضور صَدِّ اللهُ عَدَیهُ وَسَدَّم نے حضرتِ الودَّ رَضِیَ اللهُ عَنْه سے فرمایا: اے الودَ راجب تم سفر کا اِرادہ کرتے ہوتو زادِ

- 1 مسلم، كتاب صلاة المسافرين و قصرها ، باب في الليل ساعة...الخ ، ص ٣٨٠، الحديث٢٦٦_ (٧٥٧)
 - 2مسلم، كتاب صفة القيامة...الخ، باب اكتارا الاعمال...الخ، ص ١٥١٤، الحديث ٧٩_ (٢٨١٩)
 - ابراهیم:۷) الایمان: اگراحسان مانو گویس شهیس اوروو و گا (۱۳۰ ابراهیم:۷)
 - 4الفتو حات المكية لابن عربي، الباب الموفي ستين و حمسمائة في ...الخ ، ١٦/٨
- الحديث ٢٠٨٧، الحادى والعشرين من شعب...الخ، فصل الأذان والاقامة...الخ، ٢٧/٣، الحديث ٢٠٨٧
 - ١٣١٤ كتاب التطوع، باب من نوى القيام فنام ، ١/٢٥، الحديث ١٣١٤

راہ تیارکرتے ہو؟ عرض کی: جی ہاں! آپ نے فرمایا: قیامت کے طویل راستے کا سفر کیے کروگے؟ اے ابوذَر! میں تہہیں اللہ عنہ نے عرض کی: میں ہاں! آپ پر قربان، ضرور الیی چیز ہتلاؤں جوتم کو قیامت کے دن نفع وے؟ ابوذَر دَخِیَ اللّٰہ عَنْه نے عرض کی: میرے ماں باپ آپ پر قربان، ضرور ہتلائے! آپ نے فرمایا: قیامت کے دن کے لئے اندھیری ہتلائے! آپ نے فرمایا: قیامت کے دن کے لئے اندھیری رات میں نفل دور کعت پڑھ، اہم اُمورِ قیامت کی جمت کے لئے جج کر مسکین پر صدقہ کریاحق بات کہاور بری بات کہنے ہے خاموش رہ۔ (1)

روایت ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کِ زمانهٔ مبارک میں ایک آدمی تھا، جب لوگ اینے بسر ول پرسوجاتے اور آئکھیں سکون حاصل کرنے کے لئے بند ہوجا تیں تو وہ کھڑا ہو کرنماز پڑھتا قر آن مجید کی تلاوَت کرتا اور کہتا: اے خالقِ جہنم! مجھے جہنم سے بچا! حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی بارگاہ میں اس شخص کا تذکرہ کیا گیا تو آپ نے فرمایا: جب وہ الی حالت میں ہوتو مجھے خبر کردینا چانچ آپ وہال تشریف لائے اور اس کی تلاوَت ووُعا کیں سنیں، صَح ہوئی تو آپ نے اس عفر مایا: اے فلال! تو نے الله تعالی سے جنت کا سوال کیوں نہیں کیا؟ وہ آدمی بولا: پارسول الله رصَلَی الله عَلَیْک وَسَلَّم، امیں جنت کا سوال کیسے کروں، ابھی تو میرے اعمال اس کی طلب کے لائق نہیں ہوئے۔ اس گفتگو کو تھوڑی بی دیرگزری تھی کہ جبریل امین نازِل ہوئے اور عرض کی :یارسول الله رصَلَی اللهُ عَلَیْکَ وَسَلَّم، ! فلال آدمی کو بتلاد ہے کہ الله تعالی نے اسے جہنم سے محفوظ فرمالیا اور اسے جنت میں واخل کردیا ہے۔ (2)

روایت ہے کہ حضرتِ جبر میل امین نے حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم عِیْرِضَ کی کہ ابن عمر عُمد ہ آ دمی ہے، کاش وہ رات کوعباوت کرتا حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے حضرتِ ابن عمر دَخِی اللهُ عَنْهُمَا کواس بات کی خبر دی ، اس کے بعد حضرتِ ابن عمر دَخِی اللهٔ عَنْهُمَا ہمیشدرات کوعباوت کیا کرتے۔ (3)

حضرتِ نافع رَضِیَ اللَّهُ عَنْه کا قول ہے کہ آپ رات کوعبادت کرتے ہوئے مجھ سے کہا کرتے: دیکھوکہیں صبح تو نہیں ہوگئ ؟ میں کہتا نہیں ، آپ پھر عبادت میں مشغول ہوجاتے ، پھر فرماتے اے نافع! دیکھوضج ہوئی ؟ میں کہتا ہاں تو آپ

^{1}موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب التهجد و قيام الليل، ٢٤٧/١، الحديث ١٠

^{....2}

^{3}بخارى، كتاب التهجد، باب فضل قيام الليل، ٣٨٢/١، الحديث ١١٢٢

بیٹھ جاتے اور اِستغفار فر ماتے یہاں تک کے مجم خوب روثن ہوجاتی۔

حضرت علی تحرَّمَ اللَّهُ وَجُهَهُ سے مروی ہے کہ حضرتِ یجیٰ بن زکر یاعَلَیْهِ مَا السَّادُم نے ایک رات جو کی رو ٹی پیٹ بھر کر کھالی، رات کوان کی آئکولگ ٹی اور وہ صبح تک سوتے رہے، اپنے وظائف وعبادات میں مشغول نہ ہو سکے، تب الله تعالیٰ نے آپ کی طرف وَ می فرمائی: اے بچیٰ! کیا تو نے میرے تیار کر دہ گھر سے عُمد ہ گھریا میرے پڑوں سے عُمدہ پڑوں پالیا ہے؟ مجھے میرے عزت و جَلال کی قتم! اے بچیٰ! اگر تو نے جنت الفردوں کود کھولیا ہوتا تو اس کے شوق میں تیری چر بی پیکسل جاتی اور اُدوح نکل جاتی اور اگر تو جہنم کود کھے لیتا تو تیری چر بی پیکسل جاتی اور اُدوح نکل جاتی اور اگر تو جہنم کود کھے لیتا تو تیری چر بی پیکسل جاتی اور اُدوح نکل جاتی اور اگر تو جہنم کود کھے لیتا تو تیری چر بی پیکسل جاتی اور اُدوح نکل جاتی اور اگر تو جہنم کود کھے لیتا تو تیری چر بی پیکسل جاتی اور اُدوح نکل جاتی اور اگر تو جہنم کود کھے لیتا تو تیری چر بی پیکسل جاتی اور اُدوح نکل جاتی اور اگر تو جہنم کود کھے لیتا تو تیری چر بی پیکسل جاتی اور اُدوح نکل جاتی اور اگر تو جہنم کود کھے لیتا تو تیری چر بی پیکسل جاتی اور اُدوح نکل جاتی اور اگر تو جہنم کود کھولیا تو تیری چر بی پیکسل جاتی اور اُدوح نکل جاتی اور اگر تو جہنم کود کھی لیتا تو تیری چر بی پیکسل جاتی اور اُدوک نگل جاتی اور اگر تو جہنم کود کھی لیتا تو تیری چر بی پیکسل جاتی اور اُدر کو تھی سے بیتی بہتی ۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم عَيْم صَعْرَض كَى كَنْ : يبارسول الله! فلان آدمی رات کونماز برُّ هتا ہے، مجم ہوئی تواس نے چوری کرلی۔ آپ نے فرمایا :عنقریب اس کا نیک عمل اس کوان برائیوں سے روک دےگا۔ (1)

مزید اِرشادفر مایا کہ الله تعالیٰ اس بندے پر رخم فر مائے جورات کو کھڑا ہوکرعبادت کرتار ہا، پھراس نے اپنی عورت کو جگایا اوراس نے بھی اس کے ماتھ کھڑے ہوکرعبادت کی ،اگرعورت نے انکار کیا تواس بندے نے اس کے منہ پر پانی کے چھنٹے مارے اور آپ نے فر مایا:الله نے اس عورت پر رخم فر مایا جورات کو کھڑی ہوکرعبادت کرتی رہی پھراس نے اپنے خاوند کو جگایا اور وہ بھی اس کے ساتھ عبادت میں مشغول ہوگیا وگر نہ اس عورت نے اپنے خاوند کے منہ پر پانی کے چھنٹے مارے۔(2) فر مانِ نبوی ہے: جورات کو خود بیرار ہوا اور اپنی عورت کو بھی جگایا پھر دونوں نے کھڑے ہوکر دَور کعت نماز اداکی ،

الله تعالیٰ انہیں ذکر کرنے والے مردوں اور عورتوں میں سے کھودیتا ہے۔(3)

ں میں ہیں و سر رہے والے مرادوں اور وروں میں سے تھادیا ہے۔ فر مان نبوی ہے کہ فرائض کے بعد سب سے افضل نماز رات کی ہے۔⁽⁴⁾

حضرتِ عمردَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے:حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلّم نے فر ما يا كه اپنے وَ ظا نَف ياعبادت كرنے كے لئے جس كى رات كو آ نكھ نہ كھلى اوراس نے وہ وَ ظا نَف اور عبادَت صبح كى نماز اور ظهر كى نماز كے درميان ادا كئے تو

^{1}مسند احمد، مسند ابي هريرة ، ٢/٧٥٤، الحديث ٩٧٨٥

^{2}نسائي، كتاب قيام الليل، باب الترغيب في قيام الليل، ص ٢٨١، الحديث ١٦٠٧

^{3}ابوداود، كتاب الوتر، باب الحث على قيام الليل، ١٠٠/٢، الحديث ١٥٥١

^{4.....}مسلم ، كتاب الصيام، باب فضل صوم المحرم ، ص ٩١ ٥، الحديث ٢٠٢_ (١١٦٣)

مكاشفة القلوب

اس کے لئے پوری رات کی عبادت کا تواب لکھ دیاجا تا ہے۔

کہتے ہیں کہ امام بخاری رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه اکثریدا شعار پڑھا کرتے:

اغتنم في الفراغ فضل الركوع فعسى ان يكون موتك بغتة كم صحيح رأيت من غير سقم خرجت نفسه الصحيحة فلتة

﴿ 1 ﴾.....فراغت كـ أوقات ميس ركوع وتبحو د كوفنيمت جان ، عنقريب تختيح موت آجا يَكَل _

﴿2﴾ میں نے کتنے ایسے تندرست دیکھے ہیں جنہیں کوئی بیاری نہیں تھی اورا جا نک ان کی رُوحیں پرواز کر گئیں ۔

دل خوش کرنے کی فضیلت

1مسلم ، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب جامع صلاة الليل...الخ ، ص ٣٧٦، الحديث ١٤٢ ـ (٧٤٧)

اب 84

کُفقوبتِ عُلَمانے سُوءِ کُ

علائے سوء سے ہماری مراد وہ علاء ہیں جوعلم کے حصول سے وُنیا وی نعتوں کے کمانے کا اِرادہ رکھتے ہیں، وُنیا وی قدر ومَنزِلت جا ہتے ہیں اوروُنیا داروں کے ہم پلہ بنتا جا ہتے ہیں۔

سیدِ دوعالم صَدَّى اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کاارشادہے کہ قیامت کے دن تخت ترین عذاب اس عالم کوہوگا جے اللّه تعالیٰ نے اس کے علم سے نفع اَندوز نہیں ہونے دیا۔ (1)

فرمانِ نبوی ہے کہ آ دمی اس وقت تک عالم نہیں ہوتا جب تک کہ اپنے علم کے مطابق عمل نہ کرے۔(2) فرمانِ نبوی ہے علم کی دوشمیں ہیں: زبانی علم ، جولوگوں پرالله کی ججت ہے، قبی علم اور یہی علم لوگوں کو نفع دینے والا (3)

فر مانِ نبوی ہے کہ آخرز مانہ میں جاہل عبادت گز اراور فاسق عالم ہوں گے۔⁽⁴⁾

فرمانِ نبوی ہے کہ علماء پر تفاخر جتانے ، بیوتو فوں سے جنگ وجدال کرنے اورلوگوں کواپنی طرف متوجہ کرنے کے لئے علم حاصل نہ کرو ، جوبھی ایبا کرے گا ، چہنم میں جائیگا۔ ⁽⁵⁾

فرمانِ نبوی ہے کہ جواپناعلم چھپا تاہے الله تعالی اسے آگ کی لگام دےگا۔

نیز ارشاد فرمایا که میں دجال سے زیادہ اورلوگوں پرتمہارے لئے ڈرتا ہوں، پوچھا گیا: وہ کون ہیں؟ آپ نے

❶ شعب الايمان، الثامن عشر من شعب الايمان... الخ، فصل في انه ينبغي ان يكون... الخ، ٢/٥٨٢، الحديث ١٧٧٨

^{2}سنن الدارمي، باب من قال العلم الخشية وتقوى الله، ١٠٠/١، الحديث٢٩٣

^{3}تاريخ بغداد ، احمد بن الفضل بن سهل...الخ ، ٥٠ / ١٠ الرقم ٥٩ ٢٤

^{4}المستدرك للحاكم، كتاب الرقاق، باب اربع اذاكان فيك ...الخ ،٥/٥٤، الحديث ٥٩٥٣

ابن ماجه، كتاب السنة ، باب الانتفاع بالعلم والعمل به ، ١٦٩/١ ، الحديث ٢٥٩

^{6}المعجم الاوسط ، ٥/٠٣٠، الحديث ٧٥٣٢

فرمایا: گمراه کن إمام _ (1)

مزید فرمان ہوتا ہے کہ جو محف علم کو بڑھا نامگر ہدایت میں نہیں بڑھتا،اللّٰہ تعالیٰ سے اس کی دُوری بڑھتی رہتی ہے۔ (2) حضرت عیسیٰ عَلَیْہِ السَّلَام نے فرمایا:تم جو حیران و پریثان لوگوں کے ساتھ بیٹھنے والے ہو، اُندھیری رات میں آنے والوں کے لئے علم و حکمت کے راستے کیسے صاف کروگ۔

یہ اوران جیسی اور بھی بہت می اَحادیث ہیں جوعلم کے خطرات سے آگاہی بخشی ہیں، کیونکہ عالم یا تو دائمی ہلاکت پاتا ہے یا پھردائمی سعادت سے سرفراز ہوتا ہے اوراگر عالم علم کی جستجو میں سلامتی سے محروم ہوجائے تو سعادت کو بھی بھی نہیں پاسکتا۔

حضرت عمر رَضِیَ اللّهُ عَنهُ نے فرمایا: میں اس اُمت پرسب سے زیادہ منافق عالم سے خوف زَدہ ہوتا ہوں ، لوگوں نے کہا: منافق عالم کیسا ہوتا ہے؟ آپ نے فرمایا: اس کی زبان عالم ہوتی ہے گراس کا دل اور عمل جاہل ہوتا ہے۔ حضرت حضن دَضِیَ اللّهُ عَنهُ کا قول ہے کہ ان لوگوں میں سے نہ ہو جوعلاء کاعلم اور دانشمندوں کی حکیمانہ با تیں جمع کرتا ہے۔ ہے گرعمل بیوقو فول جیسے کرتا ہے۔

کسی شخص نے حضرتِ ابو ہر رہے ہ دَخِبیَ اللّٰهُ عَنْهُ ہے کہا: میں علم سیکھنا جا ہتا ہوں اوراس بات سے ڈرتا ہوں کہیں میں اسے ضائع نہ کردوں ، آپ نے کہا:علم کا چھوڑ دینا ہی بہت بڑا ضیاع ہے۔

حضرت ابراہیم بن عُیکینَهٔ دَحِب اللّهُ عَنه سے کہا گیالوگوں میں سے طویل شرمندگی پانے والاخض کون ہے؟ انہوں نے فرمایا: دُنیا میں توایسے شخص سے بھلائی کرنے والا جو کفرانِ نعمت کاعادی ہے اورموت کے وفت گنهگار عالم۔

حضرتِ خِليل بن أحمد رضِي اللهُ عَنه كا قول م كه حيا وشم كي وي بين:

ایک وہ جوجانتاہے اور یہ بھی جانتاہے کہ وہ علم رکھتاہے وہ عالم ہے،اس کی اِیّباع کرو۔

دوسرادہ جونلم رکھتا ہے مگراہے معلوم نہیں کہوہ علم رکھتا ہے، وہ سویا ہوا ہے اسے جگاؤ۔

تيسراوه جؤبين جانتااوروه سمجهتا ہے كہوہ كيجھنين جانتاوہ راہنمائی چاہنے والا ہےاس كى رہنمائی كرو۔

^{1}مسند احمد، مسند الانصار، حديث ابي ذر الغفاري، ٦٧/٨، الحديث ٢١٣٥٥

^{2}فردوس الاخبار،٣٠٣/٢ ، الحديث ٦٢٩٨ بزهد مكان هدى و طبقات الشافية الكبرى للسبكي،٢٨٩/٦

چوتھاوہ جونہیں جانتااور مجھتا ہیہے کہوہ بہت کچھ جانتا ہےوہ جاہل ہے،اس سے دور رہو۔

حضرتِ سفیان دَضِیَ اللهُ عَنهُ کا قول ہے کہ علم عمل سے بولتا ہے اگرانسان عمل کرے توضیح ور نیلم کوچ کر جاتا ہے۔ حضرتِ ابن مبارک دَضِیَ اللّهُ عَنهُ کا قول ہے کہ آ دمی جب تک علم کی تلاش میں رہتا ہے وہ عالم ہوتا ہے اور جو نہی وہ خودکو عالم سجھنے گتا ہے، جہالت کی تاریکیوں میں چلاجاتا ہے۔

حضرت فضيل بن عياض كاقول ہے كہ مجھے تين شخصوں پر بہت رحم آتا ہے، قوم كاسر دار جوذ كيل ہوجائے ، قوم كاغنى جوئتاج ہوجائے اور وہ عالم جسے دُنیاداری سے فرصت نہيں ہوتی۔

حضرت حضرت وضبی الله عنه کا قول ہے: علماء کاعذاب دل کی موت ہے اور دل کی موت آخرت کے بدلے دنیا کا حصول ہے۔

سی شاعرنے کیاخوب کہاہے: ۔

ومن يشتري دنياه با لدين اعجب

بدنیا سواه فهو من دین اعجب

عجبت لمبتاع الضلالة بالهدى

واعجب من هذين من باع دينه

﴿1﴾ مجھے ہدایت کے بدلے صلالت خریدنے والے پر تعجب ہوااور جو دین کے بدلے دُنیا خرید تاہے وہ اس سے زیادہ تعجب خیز بات کرتا ہے۔

﴿2﴾اوران سے زیادہ تعجب خیز بات میہ کہ انسان عَلَط دِین کے بدلے میں اپناصیح دین ﷺ دیتا ہے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ عالم کوجہنم میں ایساعذاب دیا جائے گا جس کی شدت سے وہ جہنمیوں میں گھومتار ہے گا،حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کی مرادایسے عالم سے فاجروفات عالم تھی۔⁽¹⁾

حضرت أسامه بن زيد رضى الله عنه سروايت م كميل في رسول الله صلّى الله عَليه وَسَلَّم سه ساء آپ

1طبقات الشافية الكبرى للسبكي،٦/٦/٢

۲۲ د}

فرمارہے تھے: قیامت کے دن ایک عالم کولایا جائے گا اور اسے جہنم میں ڈالا جائے گا،اس کی آنتیں نکل آئیں گی اور جہنم میں آنوں کے بل ایسے گھو مے گا جیسے گدھا چکی کے گردگھومتا ہے، جہنم والے اسے اپنے گردگھومتا دیکھ کر اس سے اس کے مل پوچیس گے: تب وہ عالم کہے گا کہ میں اُوروں کو تو نیکی کا حکم دیتا تھا مگرخود اس پر ممل نہیں کرتا تھا، لوگوں کو برائیوں سے روکتا تھا مگرخوذ نہیں رکتا تھا۔ (1)

عالم کو گناہوں کے سبب دوہراعذاب اس لئے دیا جائے گا کیونکہ وہ علم کے باوجود گناہ کرتار ہا، اس لئے فرمانِ البی بے کہ

منافقین بے شک جہنم کے نچلے طبقہ میں ہوں گے۔

إِنَّ الْمُنْفِقِينَ فِي الدَّمْ كِ الْأَسْفَلِ مِنَ التَّاسِ

اس کئے کہ انہوں نے علم کے باوجودحضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كى نبوت وصدافت كا إ تكاركيا۔

الله تعالی نے نصاریٰ کوالله کا بیٹااورا سے تین میں سے تیسرا کہنے کے باوجودیہودکوان سے بدتر قرار دیا کیونکہ یہود نے علم کے باوجودحضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی نبوت کاا نکارکر دیا تھا چینا نچہ

فرمانِ اللي ہے:

وه (يبود) آپ کو پېچانتے بيل جيسے کداپنے بيٹول کو پېچانتے بيں۔

يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ

مزيدارشادفرمايا:

پس جبان کے پاس وہ کچھ آیا جسے وہ پیچانتے تھے تو انہوں نے اس سے کفر کیا پس کا فروں پر اللہ کی لعنت ہے۔ فَلَتَّاجَآءَهُمْ مَّاعَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ فَلَعْنَةُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى الْكَفِرِيْنَ ﴿ (4) الْكَفِرِيْنَ ﴿ (4)

الله تعالى نے بَلْعَم بن باعُوراكے قصے ميں إرشا وفر مايا:

^{1}بخارى، كتاب بدء الحلق ، باب صفة النار و انها محلوقة ، ٣٩٦/٢ ، الحديث ٣٢٦٧

^{2}ترجمهٔ كنز الايمان: بشكمناقق دوزخ كسب سے ينچطقه ميں ميں - (ب٥٠ النساء: ١٤٥)

^{3}ترجمهٔ كنز الايمان: وواس ني كوايها يجيان بين جيئ ولي بيول كويجيا تا بربر، البقرة: ١٤٦)

⁴.....ترجمهٔ كنز الايمان: توجب تشريف لاياان كے ياس وه جانا بيجانااس سے منكر موبيتے توالله كى لعنت منكروں ير-(ب، البقرة: ۸۹)

اوران لوگوں پراس شخص کا قصہ بیان کر جسے ہم نے اپنی نشانیاں دیں پس وہ ان میں سے نکل گیا اور شیطان نے اسے پیچھے لگایا پس وہ گمرا ہوں میں سے ہوگیا۔

وَاتُلُّعَلَيْهِمْ نَبَا الَّذِي َ اتَيْنَهُ النِينَا فَانْسَلَحُ مِنْهَ افَا تُبَعَهُ اللَّهِ الْمُعَدُ الشَّيْطُ نُوعَ الْعَلِينَ هِ (1) الشَّيْطُ نُوكَ هِنَ هِ (1)

اور بيهجى إرشادفر ماياكه

پس اس کی مثال کتے کی مثال جیسی ہے اگر تواس پر ہو جھ ڈال دیتو وہ زبان لٹکا تا ہے اوراگراہے چھوڑ ویتو بھی زبان فَمَثُلُهُ كَمَثَلِ الْكُلْبِ ۚ إِنْ تَحْمِلُ عَلَيْهِ يَلْهَثُ اَوْتَتُوكُهُ يَلْهَثُ اللهِ اللهِ

لٹکا تاہے۔

اسی طرح فاسق وفاجر عالم کاانجام ہوتا ہے کیونکہ بعم کو کتاب الله کاعلم دیا گیاتھا مگراس نے خواہشات نفسانی کواپنالیا لہذااس کے لئے کتے کی مثال دی گئی یعنی اسے جاہے حکمت وعلم دیا گیا یا نہیں وہ ہرحالت میں شہوات کی طرف زبان لئکا تار ہتا ہے۔

حضرت عیسیٰ عَلَیْہِ السَّلام نے فر مایا بُر ےعلماء کی مثال ایسی چٹان کی سی ہے جونہر کے مند پر گرگئی ہو، نہ وہ خودسیر اب ہوتی ہے اور نہ ہی وہ یانی کوراستہ دیتی ہے کہ اس سے کھیتیاں سیراب ہوں۔

......☆.....☆......☆

2توجمهٔ کنزالایمان: تواس کاحال کتے کی طرح ہے تواس برجملہ کر نے دربان نکا لے اور چھوڑ دیوزبان نکا لے (ب٩٠ الاعراف:١٧٦)

^{•}تر جمهٔ کنز الایمان: اورا مے مجوب انہیں اس کا اُحوال سناؤ جسے ہم نے اپنی آیتیں دیں تو وہ ان سے صاف نکل گیا تو شیطان اس کے بیچھے لگا تو گراہوں میں ہوگیا۔ (پ۹، الاعراف: ۱۷۵)

باب 85

خُ فضیلت دسن خلق 🏅

الله تعالیٰ نے اپنے نبی اور حبیب صَلّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلّم کی تعریف فرماتے ہوئے اور اپنی نعتوں کا ان کے لئے اِظہار کرتے ہوئے ارشا دفر مایا:

بيشك آپ صاحب خلق عظيم بين ـ

وَ اِنَّكَ لَعَلَىٰخُلِقِ عَظِيْمٍ ۞

حضرت عائش صديقه رَضِى اللهُ عَنْهَا سے مروى ہے كه رسول الله صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم كاخلق قرآن تھا۔ (2) الك صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم سے صن خلق كم تعلق سوال كيا تو آپ نے بيآيت مباركه پڑھى:

(3) خُذِالْعَفْوَوْأُ مُدْبِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجِهِلِيْنَ ﴿ وَرَكَرَرَكَ النَّيَارِكُرُونِيكَى كَاتَكُم كرواور جابلول = منه يجيرلو_

پیر حضور صَلَی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: حسن خلق سے ہے کہ توقطع تعلق کرنے والوں سے صلد حمی کرے ، جو تخفیے محروم کریے تواسے عطا کرے اور جو تجھ برظلم کریے تواسے معاف کر دے۔ ⁽⁴⁾

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نَے فرمایا کہ میں اس کئے مبعوث کیا گیا ہوں کہ عمدہ اَخلاق کو پایئے بھیل تک پہنچاؤں۔ مزید اِرشاد فرمایا کہ قیامت کے دن میزان اَعمال میں سب سے بھاری چیز خوف خدااور سن خلق ہوگا۔ (6) ایک شخص حضور صَلَّى اللَّه اَدِین کیا ہے؟ آپ نے ا

- 1توجمهٔ کنز الایمان: اور بشکتمهاری خوبوبری شان کی ب- (۲۹ ، القلم: ٤)
- 2 كنزالعمال، كتاب الشمائل، الباب الرابع. . . الخ، شمائل متفرقة ، ٤ /٨٨، الجزء السابع ، الحديث ٤ ١٨٧١
- الدرالمنثور، سورة الاعراف، تحت الآية: ۸۰، ۳۰/۳۰
 - 4شعب الايمان، السادس والخمسون من شعب الايمان...الخ، ٢٢٢٦، الحديث ٩٥٩٠
 - الحديث ٢٠٧٨ ، ٣٢٣/١ ، الحديث ٢٠٧٨ ، باب بيان مكارم الإخلاق ... الخ ، ٣٢٣/١ ، الحديث ٢٠٧٨ ٢
 - 6.....ترمذي، كتاب البر و الصلة، باب ماجاء في حسن الخلق، ٤٠٤/٣ ، الحديث. ٢٠١

X

فرمایا: حسن خلق، پھروائیں طرف ہے آیا اور عرض کی: وین کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: حسن خلق، پھروہ ہائیں طرف سے آیا اور عرض کی: وین کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: حسن خلق، پھروہ شخص آپ کے عقب ہے آیا اور عرض کی: یادسول الله اوین کیا ہے؟ آپ نے اس کی طرف توجہ فرمائی اور فرمایا: اَمَا تَفُقَهُ هُوَ اَنُ لَا تَغُضَبُ (کیا تونہیں سجھتا؟ دین ہے کہ تو غصة مذکر ہے)۔

سر کارِ دوعالم صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے بِوچِها گيا کهٔ تُوسَت کيا ہے؟ آپ نے فرمايا: برخُلقی۔(2) ايک شخص نے حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے عرض کی کہ مجھے وصیت کیجئے! آپ نے فرمایا: جہاں بھی رہوالله تعالیٰ سے ڈرتے رہو،اس نے عرض کی: مزید اِرشا دفر ماہئے!

آپ نے فرمایا: ہر برائی کے بعد نیکیاں کرو، وہ اسے مٹادیں گی، اس نے پھرعرض کی: کچھاور فرمایئے! آپ نے فرمایا: لوگوں سے حسن سلوک کر واور حسن خلق سے پیش آؤ۔ (3) حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے بوچھا گیا کہ کونساعمل افضل ہے؟ آپ نے فرمایا: حسن خلق۔ (4) فی ان بندی ہے کی والی تدالی نے جس نہ سے کہ ریکش ان خلق کہ بہتریں جا اس میں جہنم میں نہیں

فر مانِ نبوی ہے کہ اللّٰہ تعالیٰ نے جس بندے کی پیدائش اورخلق کو بہترین بنایا ہے اسے وہ جہنم میں نہیں ڈالے 5)

ة) گار

حضرت فِضَيل رَضِيَ اللهُ عَنهُ ہے مروی ہے کہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے وَضَ کَی گئی کہ فلال عورت رات کوعبادت کرتی ہے، دن کوروز ہ رکھتی ہے مگر وہ بدخلق ہے، اپنی باتوں سے ہمسائیوں کو تکلیف ویتی ہے، آپ نے فر مایا: اس میں محلائی نہیں ہے وہ جہنیوں میں سے ہے۔ (6)

- 2 المعجم الاوسط ، ٤/٥٠٦، الحديث ٢٧٢٦
- €.....شعب الايمان، السابع والخمسون من شعب...الخ، ٢٤٤/٦، الحديث ٨٠٢٣
 - 4المعجم الكبير، ١٨٠/١، الحديث ٤٦٨
 - 5المعجم الاوسط ، ٥/ ١٢ ، الحديث . ٦٧٨
- المستدرك للحاكم ، كتاب البروالصلة، باب ان الله لا يعطى...الخ ، ١٣١/٥، الحديث ٧٣٨٤ (عن ابي هريره)

۱۱ سسالترغیب والترهیب، کتاب الادب وغیره، الترهیب فی الخلق الحسن وفضله...الخ ،۳۲۸/۳، الحدیث ۲۰۱۱ و تعظیم قدر الصلاة ، ۸۲٪ الحدیث ۸۷۸

X

حضرتِ ابوالدرواءرَضِىَ اللهُ عَنهُ سے مروى ہے كہ ميں نے دسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كوية رماتے سنا كه سب يہلے ميزان عمل ميں حُشنِ حُلْق اور سخاوت ركھى جائے گى ، جب الله تعالى نے ايمان كو پيدا فرمايا تواس نے عرض كى : اے الله ! مجھے قوت عطافرما، توالله تعالى نے اسے حُشنِ حُلْق اور بحت الله ! مجھے قوت بخش تواس نے عرض كى : اے الله ! مجھے قوت بخش تواس نے اسے جُل اور بدخُلقى سے تقویت بخشى ۔ (1)

فر مانِ نبوی ہے کہ الله تعالیٰ نے اس دین کواپنے لئے پیندفر مالیا ہے بتہارا بیدین سخاوَت اور حسنِ خُلق کے بغیر صحیح

نہیں ہوتا، ہوشیار! اپنے اَعمال کوان دو چیزوں سے زِینت بخشو۔ (2)

فرمانِ نبوی ہے کہ حسن خُلق الله تعالی کی عظیم ترین مخلوق ہے۔

حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے عرض كَى كَنُ كَهُونِسے مؤمن كالى يمان افضل ہے؟ آپ نے فرمایا: جس كاخلق سب سے بہتر ہوگا۔ (4)

حضور پُرنور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كا اِرشاد ہے كہ بلاشبهة ثم لوگوں كى مال ودولت كے ذريعے اِمْد ادنہيں كر سكتے للبندا ان كى خندہ بيثانی اور حسن خلق سے مَد دكرو۔ ⁽⁵⁾

فرمانِ نبوی ہے کہ برخُلقی اَعمال کواس طرح ضائع کردیتی ہے جیسے سرکہ شہد کوخراب کردیتا ہے۔ (6) حضرتِ جریرین عبد الله دَضِیَ اللهُ عَنْه سے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: بے شک تم ہوکہ الله تعالیٰ نے تمہاری خِلْقَت کو بہترین کیا ہے لہذاتم اپنا خُلق بہترین کرو۔ (7)

^{●} المعجم الكبير، ٢ ٢/٣٥٢، الحديث ٢٤٧ عن ام الدرداء و طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٣٣٢/٦

^{2}المعجم الاوسط ، ٦/ ١٤ ١ ، الحديث ٨٢٨٦

٨٣٤٤ الحديث ٢٥٢٥ الحديث ٨٣٤٤

^{4}المعجم الكبير، ١٧/ ٤٩/ الحديث ٥٠٥

^{5}مسند ابي يعلى ، ٥/٩ ٤ ، الحديث ٩ ٦٥١

^{6} كنزالعمال، كتاب الاخلاق، الباب الثاني . . . الخ ، الفصل الاول ، ١٧٨/٢ ، الجزء الثالث، الحديث ٤٤ ٧٣٤

^{7.....}فردوس الاخبار ،٩/٥، الحديث ٨٥٧٧

حضرت ِ براء بن عازِ ب دَضِیَ اللّٰهُ عَنُه ہے مروی ہے:حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم لوگوں سے زیادہ خوبصورت اور بہترین خلق والے تھے۔⁽¹⁾

حضرت ابومسعود بدری رضی الله عنه سے مروی ہے: حضور صلّی الله علیه وَسَلّم اپنی دعامیں بول عرض کرتے: اے الله اجیسے تونے میری خلیق کو بہترین کیا ہے ویسے ہی میری خلق کو بہترین فرما۔ (2)

حضرت عبد الله بن عمروضي الله عنه عمروى ب جضور صلّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم اكثر بيدعا فرمايا كرت:

اَللَّهُمَّ اِنِّي اَسْئَلُكَ الصِّحَةَ وَ الْعَافِيَةَ وَحُسُنَ الْخُلُقِ. (3)

ترجمه: اكالله إمين تجه سي صحت سلامتي اورحسن خلق كاسوال كرتا مول _

حضرت ابوہریرہ رَضِی اللهُ عَنُه ہے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: انسان کی شرافت اس کا دِین ہے، اس کی نیکی حُشن خُلق ہے اور اس کی مُرُوَّت اس کی عَقْل ہے۔ (4)

حضرت اسامه بن شریک رَضِیَ اللّهٔ عَنْه سے مروی ہے کہ میں اُعرابیوں کی مجلس میں حاضر ہوا، وہ حضور صَلّی اللّهٔ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے بوچ چھر ہے تھے کہ انسان کوعطاشدہ بھلائیوں میں سے کونسی بھلائی عُمْد ہ ہے؟ آپ نے فر مایا:حسن خلق _ (5)

فرمانِ نبوی ہے کہ قیامت کے دن مجھے سب سے زیادہ محبوب اور مجھ سے قریب تر وہ لوگ ہوں گے جوتم میں سے بہترین خلق رکھتے ہیں۔ (6)

حضرت ِ ابن عباس رَضِيَ اللَّهُ عَنُه ہے مروی ہے کہ حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: تين خصلتيں ہيں جس شخص

❶بخاري، كتاب المناقب، باب صفة النبي صلى الله تعالى عليه واله وسلم، ٤٨٧/٢، الحديث٩٥٩ ٣٥٠

^{2}مسند احمد، مسند عبدالله بن مسعود ٦٦/٢، الحديث ٣٨٢٣

[•] الحديث ١٨٥٢ ملتقطاً

^{₫} شعب الايمان ، الباب السابع والخمسون من شعب الايمان . . . الخ ، ٢ / ٦ ٢ ٢ ، الحديث ٨٠٣٠

^{5}المستدرك للحاكم، كتاب الطب، باب خير ما اعطى...الخ، ٥/ ٢٨، الحديث ٧٥٠٧

٢٠٢٥ ترمذي، كتاب البرو الصلاة، باب ماجاء في معالى الاخلاق ، ٣/٠١٤، الحديث ٢٠٢٥

میں وہ نتنوں میان میں سے کوئی ایک نہ پائی جائے ،اس کے سیمل کوشار میں نہ لاؤ!

پر ہیز گاری جواسے اللہ تعالی کی نافر مانی سے بازر کھتی ہے،

جِلْم جِس ہےوہ بیوقوف کوروک دیتاہے،

حُسنِ خُلق جس سے مُتَّصِف ہو کروہ زندگی بسر کرتا ہے۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نماز كَى إِبتداء ميں بيدعا فرما يا كرتے تھے كەاب الله ! مجھے بہترين خلق كى مدايت فرما، تير بے سواكون ہے جو حسنِ خلق كى مدايت د بے، مجھے بدخلقی سے نجات د بے، بدخلقی سے بچانے والا تير بے سواكون ہے؟ (2)

آپ سے دریافت کیا گیا کہ انسان کی زیب و نے بنت کس بات میں ہے؟ آپ نے فرمایا: کلام میں زمی ، کشادہ رُوئی اور خندہ پیشانی کا اِظہار۔ (3)

جو خص لوگوں سے احسان کرتا ہے اور حسن خلق سے معاملہ رکھتا ہے ، ایباانسان لوگوں کو گوارا ہوتا ہے اور لوگ اس کی تعریفیں کرتے ہیں۔

جبیها کهایک شاعرکہتاہے: _ب

اذا حويت خصال الخير اجمعها فضلا وعاملت كل الناس بالحسن

لم تعدم الخيرمن ذي العرش تحرزه والشكر من خلقه في السر والعلن

﴿ 1 ﴾ جب تونے بھلائی کی تمام عادات کوجع کرلیا اورسب لوگوں سے اچھا برتاؤ کیا،

﴿2﴾تو تو صاحب عرش سے اپن جمع کردہ نیکی و گمنہیں پائے گا اور نہ ہی الله تعالی کی مخلوق سے سامنے اور پیٹھ بیچھے اپنی تعریفوں کو گم یائے گا۔

- 1 المعجم الكبير، ٢٣/ ٩٩٥، الحديث ٩٤٤ عن ام سلمة رضي الله عنها
- 2نسائي، كتاب الافتتاح ، باب نوع آخر من الدعاء...الخ ، ص ٥٦ ، الحديث ٨٩٣
- الحديث ٦٧٤٣ ماخوذًا

(باب 86

خنده و گریه زاری

بعض مفسرین نے اس فرمانِ الہی:

کیا پس اس بات سے تعجب کرتے ہواور بنتے ہواور روتے

أَفَيِنُ هٰذَاالْحَوِيثِ تَعْجُبُونَ تَضْعُكُونَ وَلا

نہیں ہواورتم غفلت میں ہو۔

کی تفسیر میں فرمایا کہ ھلڈاالْ تحدیث سے مرادقر آن ہے بعنی تم اس قر آن پرتعجب کرتے ہواور جھٹلاتے ہواور باوجوداس کے کہ بیداللّه عَزُوَجَلًا کی طرف سے ہے پھر بھی تم اس کا ٹھٹھا کرتے ہواوراس میں جو وَعیدیں ہیں ان کو پڑھ کرتم خوف سے روتے نہیں اور تم سے جومطالبہ ہے اس سے عافل ہو۔

اس آیت کے نزول کے بعد حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم بھی نہیں بنسے ،صرف تَبَسُّم فرمایا کرتے تھے۔ (2) ایک روایت میں ہے کہ اس آیت کے نزول کے بعد حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کو بنتے اور مسکراتے ہوئے نہیں دیکھا گیا یہاں تک کہ آپ وُنیا سے تشریف لے گئے۔ (3)

حضرت ابن عمردَ ضِی اللهُ عَنهُ مَا ہے مروی ہے: ایک دن حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم مسجد ہے با ہرتشریف لائے تو آپ نے لوگوں کی الیمی جماعت دیکھی جوہنس ہنس کر با تیں کرر ہے تھے آپ ان کے پاس تھم رگئے، انہیں سلام کہااور فرمایا: وُنیاوی لذتوں کومنقطع کرنے والی (موت) کوا کثریا دکیا کرو۔ (4)

پھرایک مرتبہ آپ کا گزرایک ایسی جماعت سے ہواجوہنس رہے تھے، آپ نے انہیں دیکھ کرفر مایا بخداا گرتم وہ

- ---توجمهٔ کنز الایمان: توکیاس بات ہے تم تجب کرتے ہواور بنتے ہواورروتے نہیں اورتم کھیل میں پڑے ہو۔ (ب۲۷، النحم ،٥٩- ٦١)
 - الخاستان المنثور، سورة النجم، تحت الآية: ٥، ٦٦٦/٧ و مصنف ابن ابي شيبة، كتاب الزهد، ما ذكر عن نبيّنا...الخ، ١٣٣/٨
 - €....الدرالمنثور، سورة النجم، تحت الآية: ٥ م، ٦٦٦/٧ و الزهد لوكيع، الجزء الاول، ١٦٦/١، الحديث٣٦
- الحديث ١٣٤ و مسند الحادي عشر من شعب الإيمان، باب في الخوف من الله تعالى، ١٩٨/١ ، الحديث ١٣٤ و مسند البدار، ٣٥/١ ٣٥ الحديث ١٩٨٧ و كشف الخفاء، ١/٥٠ ، تحت الحديث ٥٠٠

جانتے جومیں جانتا ہوں توتم کم بنتے اور زیادہ روتے۔⁽¹⁾

جب حضرت ِخضر عَلَيُهِ السَّلَام سے حضرت ِموکیٰ عَلَيْهِ السَّلَام نے علیٰجد ہ ہونا جیا ہا تو انہوں نے کہا: مجھے نصیحت سیجے! حضرت ِخصر عَلَيْهِ السَّلَام نے کہا: اے موکیٰ خودکو جھگڑوں سے بچاہیے! ضرورت کے بغیر میں السَّلام نے کہا: اے موکیٰ خودکو جھگڑوں سے بچاہیے! ضرورت کے بغیر میں السَّلام نے کہا: ا

مت ہنسیے! گنا ہگاروں کوان کی خطاؤں کے سبب شرمندہ نہ کرواورا پی طرف سے رب کے حضور روتے رہو۔

رسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نَ فرمايا كه زياده بنسنا دل كوموت سے ہمكنار كرديتا ہے۔ (2) مزيد إرشاد فرمايا كه جو محض جوانی ميں بنستا ہے، موت كے وقت روتا ہے۔ (3)

اِرشادِنبوی ہے کہ قرآن پڑھواوررؤو،اگررونانہ آئے تورونے والے مخص جیساچہرہ بناؤ۔(4)

حضرت حسن رضى الله عنه في الله عنه الله عنه عنه الله عنه ا

پس چاہئے کہ تھوڑ اہنسواور زیادہ روؤ۔

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُواكَثِيْرًا ۚ (⁵⁾

کی تفسیر میں فرمایا ہے کہ دنیامیں کم ہنسوور نہ آخرت میں بہت رونا پڑے گااور بیتمہارے اعمال کی جزاہوگی۔

مزید فرمایا کہ مجھے اس بننے والے پر تعجب ہوتا ہے جس کے پیچھے جہنم ہے اور اس مسر وروشا دال پر تعجب ہوتا ہے جس کے پیچھے موت گلی ہوئی ہے۔

آ پ رَضِیَ اللّهُ عَنْهُ کا ایک ایسے جوان کے قریب سے گزر ہوا جوہنس رہا تھا۔ آپ نے پوچھا: اے بیٹے! کیا تو نے بل صراط کوعبور کر لیا ہے؟ اس نے کہا: نہیں! آپ نے فرمایا: تو کیا تجھے یہ معلوم ہوگیا ہے کہ تو جنت میں جائے گا؟ آپ نے پھر پوچھا: وہ جوان نہ بولا، آپ نے فرمایا: پھر کس لئے ہنس رہے ہو؟ اس کے بعد اس جوان کو بھی بھی ہنستے ہوئے نہیں دیکھا گیا۔

^{1}موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب صفة النار، ٤٣٣/٦، الحديث ١٥٧

^{2}ترمذي، كتاب الزهد، باب من اتقى المحارم...الخ ، ٤ ١٣٧، الحديث ٢٣١٢

^{.....}**③**

الفصل البزار، ٩/٤، الحديث ١٢٣٥ و كنز العمال، قسم الاقوال، الباب السابع في تلاوة القرآن وفضائله ، الفصل الثالث في آداب التلاوة ، ١٣٣٠/١ الجز الاول، الحديث ٢٧٩١

التوبة: ۸۲) التوبة: ۸۲)

كاشفة القلوب ك

حضرت ابن عباس رَضِيَ اللَّهُ عَنُهُمَا كافر مان ہے كہ جو مبنتے ہوئے گناہ كرتا ہے وہ روتے ہوئے جہنم میں جائے گا۔ الله تعالیٰ نے رونے والوں كی تعریف كی ہے چنانچه ارشا والہی ہے:

اوروہ روتے ہوئے ٹھوڑیوں کے بل گریڑتے ہیں۔

وَيَخِرُّ وُنَالِلاَ ذُقَانِيَبُكُونَ (1)

حضرت اوزاعي رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَسَ آيت:

كيابا اورنه برى بات حيور تى جيمونى بات اورنه برى بات

مَالِ هٰنَ الْكِتْبِ لَا يُعَادِرُ صَغِيْرَةً وَ لَا كَبِيْرَةً إِلَّا

مگراس کو گن لیاہے۔

اخطیا

کی تشریح میں فرماتے ہیں کہ چھوٹی بات سے مرا دنبشم اور بڑی بات سے مرا دفہ قبہ لگا ناہے۔

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کہ قیامت کے دن سب آئکھیں رونے والی ہوں گی مگر تین آئکھیں نہیں روئیں

گی، جوخوف ِخدا سے روئی، جوالله تعالی کی حرام کردہ چیزوں سے بند ہوگئ اور جوراہِ خدامیں بیدار ہوئی۔⁽³⁾

کہا گیا ہے کہ تین چیزیں دل کو سخت کرتی ہیں، بغیر کسی تعجب کے ہنسنا، بھوک کے بغیر کھانا اور بغیر کسی ضرورت کے یا تیں کرنا۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كوته بند، عِيا وَر قَمِيص ياجبه وغيره سے جو كِيرُ ابھى ميسر آجاتا، پہن ليتے تھے اور آپ كو سبزلباس پيند تقاليكن اكثر أوقات آپ سفيدلباس زيب تن فرمايا كرتے تھے اور فرماتے يہى لباس اپنے زندوں كو پہناؤ اور اسى ميں اپنے مردوں كو گفن دو۔ (4)

اتر جمهٔ کنز الایمان: اور شور گی کی بل گرتے ہیں روتے ہوئے۔ (پ٥١، بنی اسرائیل:٩٠)......یآیت تجدہ ہے اور آیت تجدہ پڑھنے یا سننے سے تجدہ واجب ہوجا تا ہے خواہ پڑھنایا سنا بالقصد ہویا بلاقصد اور ترجمہ کا بھی یہی تکم ہے۔علمیه

ترجمهٔ کنز الایمان: اس نوشته (تحریر) کوکیا بوانداس نے کوئی جھوٹا گناہ جھوڑا نہ بڑا جسے گھیر ندلیا ہو۔ (ب٥١٠ الكهف: ٤٩)

النحمال، كتاب المواعظ...الخ، الباب الاول...الخ، الفصل الثالث...الخ، ٣٥٦/٨، الحزء الحامس عشر،
 الحديث ٣٣٥٠٠

بيان المعجم الكبير، ٢٦/١٢، الحديث ٢٤٩٣ او اتحاف السادة المتقين للزبيدي، كتاب آداب المعيشة...الخ، بيان
 آدابه واخلاقه ...الخ، ٢٤٩/٨

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كى رئيتَى قباتِهى ، آپ كِجسم اَطهر پراس كاسبزرنگ بهت بھلالگتا تھا۔ آپ كے تمام كيڑك خنول كے اُوپر ہوتے تھے اور آپ كا تهبندان سے اوپر نصف ساق (پنڈلی) تك ہوتا تھا۔ (1)

آپ کے پاس ایک سیاہ کمبل تھا جوآپ نے کسی کو بخش دیا ،حضرتِ اُم سِلمہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا نے عُرض کی: یادسول الله! میرے ماں باپ آپ پر قربان ہوں ،سیاہ کمبل کا کیا ہوا؟ آپ نے فرمایا: وہ میں نے پہنا دیا ،حضرتِ اُم سلمہ دَضِیَ اللّٰه عَنْهَا بولیں:یادسول الله! میں نے آپ کے سفید جسم پراس کا لے کمبل سے زیادہ حسین چیز نہیں دیکھی۔(2)

حضورصَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم لباس كودا بنى طرف سے پہننا شروع فرماتے اور برا سے:

اَلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِی کَسَانِی مَآ اُوَارِی بِهِ عَوْرَتِی وَاتَجَمَّلُ بِهِ فِی النَّاسِ. حمه اس الله کوجس نے مجھے لباس دیا جس سے میں اپناجیم وَ هانپتا ہوں اور لوگوں میں زینت کے ساتھ جاتا ہوں۔

آ پ اپنالباس ہمیشہ بائیں طرف سے اتارتے تھے، جب نیا کیڑا زیب تن فرماتے تو پرانا کیڑا کسی مسکین کو دے دیتے اور فرماتے: جو کسی مسلمان کو اپنا پرانا کیڑا رضائے اللی کے حصول کے لئے پہنا تا ہے وہ اپنے اس عمل کی بدولت زندگی اور موت دونوں میں الله تعالی کی امان، پناہ اور رحت میں ہوتا ہے۔ (4)

- حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاليك جبه مبارك تھا، آپ جہال آرام فرماتے اسے ینچے دوتہوں میں بچھادیتے۔ (5) آپ چٹائی پر آرام فرمایا کرتے تھے، چٹائی کے بغیراورکوئی چیز آپ کے جسمِ اطہرواقدس کے پنچ نہیں ہوتی تھی۔ (6)
- المعيشة ... الخ، بيان آدابه و الحلاقه ... الخ، الحديث ٢٢٣ و اتحاف السادة المتقين، كتاب آداب المعيشة ... الخ، بيان آدابه و احلاقه ... الخ، المحب الإيمان ، الأربعون من شعب الإيمان ، باب في الملابس والزي والأواني وما يكرد منها، فصل فيمن اختيار التواضع في اللباس ، ٥/٥٥ / ، الحديث ٢١٧١ و سنن الكبرى للنسائي ، كتاب الزينة ، باب موضع الإزار ، ٥/٤٨٤ ، الحديث ٢٩٢٨
 - 2اتحاف السادة المتقين للزبيدي، كتاب اداب المعيشة...الخ، بيان آدابه واخلاقه...الخ، ٢٥٣/٨
 - الحديث ١٠ الماس والزنية، باب ما يقول الرجل اذا لبس...الخ ٩/٦،٥ الحديث ١
 - 4.....شعب الايمان، الاربعون من شعب الايمان، فصل فيما يقول اذا لبس ثوباً ، ١٨١/٥، الحديث ٦٨٦ ماخوذًا
 - الشمائل، كتاب الشمائل، قسم الافعال، باب شمائل الاخلاق،٤/٣٧،الجزء السابع، الحديث ١٨٦٠٨ و الشمائل
 الترمذي، باب ماجاء في فراش رسول صلى الله عليه و سلم ، ص١٨٨، الحديث ٣١٢
 - التساء، كتاب الصلاة، باب في الإيلاء واعتزال النساء، ص٧٨٧، الحديث ٣١_ (١٤٧٩)

X

اب 87

قرآن، علم اور علماء

نی آکرم صَلَّی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا اِرشادہے کہ جس نے قرآنِ مجید کی تلاوَت کی پھریہ مجھا کہ سی کواس سے بھی عُمدہ چیز دی گئی ہے تو گویا اس نے الله تعالیٰ کی عظمت کو معمولی سمجھا ہے۔ (1)

ارشادِ نبوی ہے کہ الله تعالیٰ کے پاس قر آنِ مجیدے زیادہ مرتبہ والا کوئی شفیے نہیں ہے۔ (²⁾ ایک اور فر مان ہے کہ میری اُمت کی بہترین عبادَت قر آنِ مجید کی تلاوَت ہے۔ ⁽³⁾

ایک اور اِرشادہے کہتم میں سے زیادہ بہتر وہ ہے جوقر آ نِ مجید پڑھے اور پڑھائے۔ ⁽⁴⁾

مزید فرمایا که دِلوں کوزَ نگ اس طرح لگ جاتا ہے جیسے لوہے کو،عُرض کیا گیا: اس کی چیک دَ مَک پھر کیسے لوٹی ہے؟ آپ نے فرمایا: تلاوت ِقر آن اور موت کو یا دکرنے سے۔ (⁵⁾

حضرت فضیل بن عِیاض دَضِی اللّه عَنه کا قول ہے کہ قرآن کریم کاعلم رکھنے والا إسلام کا جھنڈا اُٹھانے والا ہے لہزااس کے لئے بیمناسب نہیں کہ وہ لہوولعب میں مشغول لوگوں کے ساتھ لل کرلہوولعب میں مشغول ہوجائے ، بھولئے والے کے ساتھ بھولے نہیں اور بیہودہ لوگوں کے ساتھ لل کر بیہودگی نہ کرے کیونکہ بیقرآن بھید کی تعظیم کے خلاف ہے، آپ نے مزید فرمایا: جو بھی کرتے ہی سورہ حشرکی آخری آیات کی تلاقت کرتا ہے، اگروہ اُسی دن مرجائے تو اُسے شہداء میں تلاقت کرتا ہے، اگروہ اُسی تلاقت کرتا ہے اور جو شخص ان کورات کی ابتداء میں تلاقت کرتا ہے اور اس پر شہیدوں کی مہرلگائی جاتی ہے اور جو شخص ان کورات کی ابتداء میں تلاقت کرتا ہے اور

۱۳۱۰ المحرر الوجيز، باب ما ورد عن النبي صلى الله عليه وسلم، ۱/٣٦ و الزهد لابن مبارك ، باب ما جاء في ذم التنعم في
 الدنيا، ص ٢٧٥، الحديث ٢٩٩ و تذكرة الموضوعات للفتني، ص٧٧

المحرر الوجيز، باب ما ورد عن النبي صلى الله عليه وسلم، ٣٧/١ و المقاصد الحسنة، ص ٢١و كشف الخفاء، ١٧/١،
 تحت الحديث ٢١

٢٠٢٦ الحديث ٢٠٢٦ الحديث ٢٠٢٢ فصل في ادمان تالوة القرآن، ٢/٤٥٣، الحديث ٢٠٢٢

^{4}بخارى، كتاب فضائل القرآن، باب خير كم من...الخ ،٣/٣٠ ، ١٠/٣٠ . الحديث ٢٨ . ٥

^{5} عب الايمان، التاسع عشر من شعب الايمان...الخ ، فصل في ادمان تلاوة القرآن، ٣٥٣/٢، الحديث ٢٠١٤

اس سلسله میں بہت ہی کثرت ہے اُحادیث وارِد ہیں چنانچ جضور صَلَی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّم فرماتے ہیں که اللّه تعالیٰ جس شخص سے بھلائی کا اِرادہ فرما تا ہے۔ (1) شخص سے بھلائی کا اِرادہ فرما تا ہے۔ (1) نیز ارشادِ گرامی ہے کہ علماء، اَنبیاءِ کرام عَلَیْهِمُ السَّلام کے وارث ہیں۔ (2)

اور بیبدیمی بات ہے کہ اُنبیاءِ کرام سے بڑھ کرکس کا رُتبہ نہیں اور اُنبیاء کرام کے وارِثوں سے بڑھ کرکسی وارث کا مرتبہیں ہے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ سب لوگوں سے افضل وہ مومن عالم ہے کہ جب اس کی طرف رُجوع کیا جائے تو وہ نفع دے اور جب اس سے بے نیازی برتی جائے تو وہ بھی بے نیاز ہوجائے۔ (3)

نیز اِرشادفر مایا کهمریه به نبوت سے سب سے زیاد دقریب، عالم اورمجامد ہیں۔(4)

علاءاس لئے کہ انہوں نے رَسولوں کے پیغامات لوگوں تک پہنچائے اور مجاہداس لئے کہ انہوں نے اُنبیاءِ کرام کے اُحکامات کی پیروی کی ،مزید اِرشاد ہے کہ پورے قبیلہ کی موت ایک عالم کی موت سے آسان ہے۔ (5)

اور فرمایا کہ قیامت کے دن علماء کی سیاہی کی دَوا تیں شہداء کے خون کے برابرتو لی جائیں گی۔ (6) حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهُ وَسَلَّم کا فرمان ہے کہ عالم علم سے بھی سیر نہیں ہوتا یہاں تک کہ جنت میں پہنچ جاتا ہے۔ (7)

- 1المعجم الكبير، ٩١/ ٣٤٠ الحديث ٧٨٦
- 2 ترمذي، كتاب العلم، باب ماجاء في فضل الفقه...الخ ، ٢/٤ ٣١ الحديث ٢٦٩١
- الحديث ١٧٢٠ ماحوذًا
 - 4 كنزالعمال، كتاب الحهاد، الباب الاول...الخ، ١٣٢/٢، الجزء الرابع، الحديث ١٠٦٤٣
 - 5 شعب الايمان، السابع عشر من شعب الايمان...الخ ، فصل في فضل العلم...الخ ، ٢٦٤/٢، الحديث ٩٩٩.
 - الحزء العاشر، الحديث ١ ٢٨٧١.
 - 7فردوس الاخبار، ۲/۲ ٤٤، الحديث ٧٨٨٦

مزید فرمایا که میری اُمت کی ہلاکت دو چیزوں میں ہے، علم کا جیمور دینا اور مال کا جمع کرنا۔ (1) ایک اور اِرشاد ہے کہ عالم بن یامُتَعَلِّم، یاعلمی گفتگو سننے والا یاعلم سے محبت کرنے والا بن اور پانچوال یعنی علم سے بغض رکھنے والا نہ بن کہ ہلاک ہو جائیگا۔ (2)

اور فر مایا کہ تکبرعلم کے لئے بہت بڑی مصیبت ہے۔

ھُلَمُاء کا قول ہے کہ جوسر داری کے حصول کے لئے علم حاصل کرتا ہے وہ تو فیق اور رَعیت داری کا احساس کھودیتا ہے۔ فرمانِ الٰہی ہے:

سَاصُرِفُ عَنْ الْيَتِيَ الَّيْنِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْدِ البته بين اپني نشانيون سے ايسے لوگوں کو پھيردوں گاجود نيا بين الْحَقِّ (4) الْحَقِّ الْعَقِّ الْعَقِیْ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰ

حضرتِ شافعی رَضِیَ اللّهُ عَنْه کا قول ہے کہ جس نے قرآن کاعلم سیکھااس کی قیمت بڑھ گئی، جس نے علم فقہ سیکھا اس کی قدر بڑھ گئی، جس نے حدیث سیکھی اس کی دلیل قو کی ہوئی، جس نے حساب سیکھا اُس کی عقل پختہ ہوئی، جس نے ناور باتیں سیکھیں اس کی طبیعت نرم ہوئی اور جس شخص نے اپنی عزت نہیں کی اسے علم نے کوئی فائدہ نہ دیا۔

حضرت ِحسن بن علی رَضِی اللّه عُنهُ مَا كاارشاد ہے كہ جو تخص علماء کی محفل میں اَ كثر حاضر ہوتا ہے اس کی زبان کی رُكاوٹ وُ ور ہوتی ہے ، ذبین کی اُلجِسنیں کھل جاتی ہیں اور جو پچھوہ حاصل کرتا ہے اس کے لئے باعث مسرت ہوتا ہے۔ اس كاعلم اس کے لئے ایک ولایت ہے اور فائدہ مند ہوتا ہے۔

فر مان نبوی ہے کہ الله تعالیٰ جس بندے کورَ دکر دیتا ہے، علم کواس سے دور کر دیتا ہے۔ (5) ایک اور اِرشاد میں ہے کہ جہالت سے بڑھ کرکوئی فقرنہیں ہے۔ (6)

- المستطرف، الباب الثالث، ١/٩٤ و موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الورع ، باب الورع في الفرج، ٥/٩٥ ، الحديث
 ٣٦١ وموسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب قصر الأمل، ٣/٣ ، ١٠ الحديث ٥،٤٠٣
 - 2 كتاب الكبائر للذهبي، الكبيرة الحادية عشرة اللواط، فصل الحاق اتيان...الخ، ص ٦٧ ليس بمرفوع
- 3طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ١٩/٦ و تذكرة الموضوعات للفتني، ص٧٧ و المعجم الكبير، ٦٨/٣٠، الحديث ٢٦٨٨
 - الايمان: اوريس اني آيول سائيس كيير دول گاجوزين مين ناحق اني برائي جائي ويائي ميس (به، الاعراف: ١٤٦)
 - 5.....كنزالعمال، كتاب العلم، الباب الاول...الخ ، ٥/٨٨، الجزء العاشر، الحديث٣ ٢٨٨٠
 - الحديث ٤٦٤٧ الحديث ٤٦٤٧ أضال ، الباب الثالث و الثلاثون ... الخ ، فصل في فضل العقل ... الخ ، ٤١٥٧ م الحديث ٤٦٤٧

X

اب 88

فضيلت زكوة و صلوة

یہ بات سمجھ لیجئے کہ الله تعالی نے زکو ہ کواسلام کی بنیادوں میں سے شارکیا ہے اوراس کا ذِکر نماز کے ذِکر کے ساتھ ہے، نماز جو کہ اسلام کا بلندترین شِعارہے چنانچے فرمانِ الٰہی ہے:

اورنماز قائم كرواورز كوة اداكرو_

وَأَقِيبُمُواالصَّلُولَا وَالتُّواالزَّكُولَا (1)

فر مانِ نبوی ہے کہ اِسلام کی بنیا دیا پنج چیزوں پر ہے،الله کی وحدانیت، محمد صَلَّى اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَّم کی رسالت کی شہادت،نماز قائم کرنااورز کو قادا کرنا۔⁽²⁾ (الی آخر الحدیث)

اورالله تعالى نے دومیں تقصیر کرنے والوں كى وعيد شديدكى ہے چنانچ دالله تعالى ارشا دفر ما تاہے:

نَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ﴿ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلاَ تِهِمْ سَاهُوْنَ ﴿ (3) كِيلِ مِلْ اللَّهِ عَالِيْ مَا رَسِ لِنَعْ مِوا بَيْ مَا رَسِ لِنَا مُونَ وَلَيْ لِللَّهِ مِوا بَيْ مَا رَسِ لِنَعْ مِوا بَيْ مَا ر

اس بارے میں پہلے ہی مکمل بحث گزر چکی ہے اور الله تعالی نے اپنے کلام میں ارشاد فر مایا ہے:

اور جولوگ سونا چاندی جمع کرتے ہیں اوراسے الله کی راہ میں

وَالَّذِيْنَ يَكُنِزُ وْنَالذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِي سَبِيْلِ

خرچ نہیں کرتے ہیں انہیں در دناک عذاب کی خوشخبری دیجئے۔

اللهِ فَبَشِّرُهُمُ بِعَنَابِ اَلِيْمٍ ﴿

اس آیت کریمه میں راوخدامیں خرج کرنے سے مرادز کو قادا کرناہے۔

صدقہ دیتے وقت ایسے نیک افراد فقراء تلاش کئے جائیں جود نیاسے ترکی تعلق کر چکے ہوں اور آخرت سے کو

- البقرة: ٣٤)....توجمه كنز الايمان: اورنماز قائم ركواورز كوة دو-(ب١، البقرة: ٣٤).
- ١٦٠ الحديث ٢٦ ـ (١٦)
- 3ترجمهٔ كنز الايمان: توان نمازيول كى خراني م جواين نماز سے بھولے بيشے ہيں (ب ، ۳ ، الماعون: ٤٠٥)
- 4تو جمهٔ کنز الایمان: اوروه که جوڑ کرر کھتے ہیں سونا اور چاندی اور اسے الله کی راہ میں خرج نہیں کرتے انہیں خوشخری سناؤ در دنا ک ک

عذابكي - (پ١٠ التوبة: ٣٤)

لگائے ہوئے ہوں کیونکہایسے فقراءکوصد قہ دینا مال کو بڑھا ناہے، فر مانِ نبوی ہے کہ پر ہیز گار کا کھا نا کھا اور پر ہیز گار کو کھا نا کھلا۔⁽¹⁾

آپ نے بیہ بات اس لئے فر مائی کہ پر ہیز گاراس طعام سے پر ہیز گاری میں بڑھے گا تو بھی اس اعانت کی وجہ سے اس کی عبادت وریاضت میں نثر یک گنا جائے گا۔

ایک عالم کا قول ہے کہ صدفہ دیتے وقت صوفی فقراء کور ججے دے کسی نے اس عالم سے کہا کہ اگر آپ تمام فقراء کور ججے دے کہ کہ تہتر ہوتا ، عالم نے کہا نہیں! میصوفی فقیرا یک ایسا گروہ ہیں جن کی تمام توجہ اللہ تعالیٰ کی طرف مبذول رہتی ہے ، جب ان میں سے کسی کوفاقہ سے واسطہ پڑتا ہے تو ان کی ہمتیں پراگندہ ہوجاتی ہیں ، مجھے ان میں سے کسی ایک فقیر کی توجہ فاقہ سے ہٹا کر اللہ تعالیٰ کی طرف کر دینا ان ہزار فقیروں کو دینے سے زیادہ پہند ہے جن کی دلچ پیوں کا مرکز دنیا ہے ۔ کسی نے حضرت جندید رہنے اللہ کا ولیاء ہے ۔ کسی نے حضرت جندید رہنے اللہ کا فی مُدت سے اس جیسی بہترین بات نہیں سی تھی ۔ بچھ مد ت کے بعد حضرت جندید سے وردہ دکان چھوڑ نے کا ارادہ رکھتا ہے ۔ حضرت جند میں کا می گرگوں ہوگیا ہے اور وہ دکان چھوڑ نے کا ارادہ رکھتا ہے ۔ حضرت

بھی ہےاورصلہ رحمی کا اُجربے اِنتہا ہے جبیبا کہ صلہ رحمی کے باب میں اس کے فضائل مذکور ہوئے ہیں۔

یہ بھی ضروری ہے کہ انسان خفیہ طریقے پر صدقات دے تا کہ ریا کی نحوست سے پاک رہے اور لوگوں کے سامنے لینے والا رُسوائی ہے بیجے۔

فر مانِ نبوی ہے کہ خفیہ صدقہ الله تعالی کے غضب کو بھادیتا ہے۔

اوراس حدیث شریف میں جس میں ان سات آ دمیوں کا ذِکر ہے جنہیں اللّٰہ تعالیٰ عرش کے سابیمیں جگہ دےگا جبکہ عرش کے سابیہ کے سوا کوئی سابی نہ ہوگا ، بیکھی اِرشاد ہے کہ وہ آ دمی جس نے خفیہ صدقہ دیا یہاں تک کہاس کا بایاں ہاتھ پنہیں جانتا کہ دائیں نے کیادیاہے۔⁽²⁾

ہاں اگر صدقہ کے إظہار میں بیافائدہ ہوکہ اور لوگ بھی صدقہ دیں گے تو اس کے إظہار میں کوئی مضا كقة نہيں بشرطیکه رِیااوراحیان جتانے کااس میں دَخل نہ ہوجیسا کےفر مان خداوندی ہے:

لَاتُبُطِلُوْاصَى فَتِكُمُ بِالْمَنِّ وَالْاَ ذِي اللهِ (3) اینے صدقات کواحسان اور ریاسے باطل نہ کرو۔

صدقہ دے کراحسان جنانا بہت بڑی مصیبت ہے،اس لئے صدقہ کے خفیدر کھنے کوتر جیج دی گئی ہے اوراینی نیکی کو بھول جانے کا کہا گیا ہے جبیبا کہاس شخص کے لئے شکراور نیک جذبات کے إظہار کوضروری قرار دیا گیاہے جس پرکسی نے احسان اور نیکی کی ہوجیسا کہ حدیث شریف میں ہے: کلا یَشْکُرُ اللَّهَ مَنُ لَّا یَشُکُرُ النَّاسَ . ⁽⁴⁾

کسی نے کیاخوب کہاہے: _

تحملها كفور او شكور يد المعروف غنم حيث كانت

وعند الله ماكفر الكفور ففي شكر الشكور لها جزاء

﴿ 1 ﴾.... نیکی اورصد قات کا ہاتھ جہاں بھی ہوغنیمت ہےخواہ اسے بند ہُ شا کراٹھا تا ہے یا کفران نعمت والااٹھا تا ہے۔

﴿2﴾....شکر گزار کے شکر میں اس کے لئے جزا ہےاوراللہ تعالیٰ کے یہاں کا فرکے کفر کا بدلہ ہے۔

- 1 شعب الايمان، الثاني والعشرين... الخ، فصل في الاختيار... الخ، ٣٠ ٤٤/٣، الحديث ٢٤٤٣
 - 2بخارى، كتاب الاذان، باب من جلس في المسجد...الخ، ٢٣٦/١، الحديث ٦٦٠
 - البقرة: ٢٦٤) عنو الايمان: اينصدق باطل نه كردوا صان رهكراورا بذاد عكر (ب٣، البقرة: ٢٦٤)
 - 4ابوداود، كتاب الادب، باب في شكر المعروف، ٢٣٥/٤، الحديث ٤٨١١

اب 89

خُ حقوقِ اولاد و والدين ﴿

یہ بات ذہن شین رکھنی جا ہے کہ جہال عزیز وا قارب کے حقوق کی تاکید کی گئی ہے وہاں ذَوِی الارحام کوخصوصیت سے ذِکر کیا گیا ہے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ کوئی بیٹا اپنے باپ کاحق ادانہیں کرسکتا یہاں تک کہوہ باپ کوغلام پائے اور پھراسےخرید کر آ زاد کردے۔

فرمانِ نبوی ہے کہ والدین سے نیکی ، نماز ، روزہ صدقہ ، تج ، عمرہ اور راہِ خدا میں جہاد کرنے سے افضل ہے۔ (2)
حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا ارشاد ہے کہ جس شخص نے اس حال میں شبح کی کہ اس کے والدین اس سے راضی ہوں
اس کیلئے جنت کے دودرواز ہے کھول دیئے جاتے ہیں اور جواسی حالت میں شام کرتا ہے اس کیلئے بھی اسی طرح کے دو
درواز ہے کھول دیئے جاتے ہیں ، اگر والدین میں سے ایک زندہ ہوتو ایک دروازہ کھولا جاتا ہے اگر چہ والدین زیادتی
کریں ، اگر چہ وہ زیادتی کریں اور جس نے اس حال میں ضبح کی کہ اس کے والدین اس پرناراض ہوں تو اس کیلئے جہنم کے
دودرواز کے کھل جاتے ہیں اور جوشام اسی حالت میں کرتا ہے اس کیلئے بھی جہنم کے دودرواز کے کھل جاتے ہیں ، اگر چہ وہ زیادتی کریں ، اگر چہ وہ زیادتی کی خوشہویا ہے سوسال کے سفر کی دوری سے پائی جاتی ہے مگر والدین کا نافر مان اور قطع کری کرنے والا اس خوشبوکونہیں پائے گا۔ (4)

٢/ ٢٧١ ، الحديث ، ٣٢٦ ، ٢٦١ ٣

^{1}مسلم، كتاب العتق، باب فضل العتق، ص ١١٨، الحديث ٢٥ ـ (١٥١٠)

^{2}تذكرة الموضوعات للفتني، ص ٢٠١و مسند ابي يعلى، مسند أنس بن مالك ، ٦/٣، الحديث ٢٧٥٢

^{◙}شعب الايمان، الخامس والخمسون...الخ، فصل في حفظ حق...الخ، ٢٠٦/٦، الحديث ٢٩١٦ ماخوذًا

^{4.....}تذكرة الموضوعات للفتني، ص٢٠٢و روح البيان، سورة الأحقاف، تحت الاية:٩١،٨/٨،١٩ و فردوس الاخبار،

فرمانِ نبوی ہے کہ اپنے مال، باپ، بہن اور بھائی سے احسان کر، پھر قریبی پس قریبی (شخص اس کا مستحق) ہے۔ (1) مروی ہے کہ اللہ تعالی نے مولی عَدَیْہِ السَّلام سے فرمایا: اے مولی! جس نے والدین کی فرما نبر داری کی اور میری نافرمانی کی، میں نے اسے نیکوں میں تکھا ہے اور جو والدین کی نافرمانی کرتا ہے مگر میر افرمانبر دار ہوتا ہے میں نے اسے نافرمانوں میں تکھدیا ہے۔

روایت ہے کہ جب حضرت یعقو ب عَلَیْہِ السَّلام ،حضرت یوسف عَلیْہِ السَّلام کے ہاں تشریف لائے تو وہ ان کے استقبال کے لئے کھڑے نہ ہوئے چنا نچہ اللّٰہ تعالی نے حضرت یوسف عَلیْہِ انسَّلام کی طرف وحی کی کہ کیاتم اپنے والد کے لئے کھڑے ہوئے کو بہت بڑی بات سجھتے ہو؟ مجھے اپنے عزت وجلال کی قتم! میں تمہارے صلب میں سے نبی پیدا نہیں کرول گا۔(2)

فرمانِ نبوی ہے کہ جب کوئی شخص اپنے مسلمان والدین کی طرف سے صدقہ کرتا ہے تو اس کے والدین کواس کا اَجرماتا ہے اوران کے اَجرمیں کمی کئے بغیراس آ دمی کوبھی ان کے برابراَ جرماتا ہے۔⁽³⁾

حضرتِ ما لک بن رہیعہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے کہ ہم دسول الله صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے ساتھ بیٹھے ہوئے سے کہ بنوسلمہ کے ایک آ دمی نے آ کرعرض کی: یادسول الله! کوئی الیی نیکی ہے جو میں اپنے والدین کے لئے ان کی وفات کے بعد کروں؟ آپ نے فرمایا: ہاں! ان کے لئے وعاکر و، بخشش طلب کرو، ان کے کئے ہوئے وعدوں کو پورا کرو، ان کے دوستوں کی عزت کرواوران کے رشتہ داروں سے صلد حمی کرو۔ (4)

فرمانِ نبوی ہے:

- 1المستدرك للحاكم، كتاب البر والصلاة ، باب بر امك ثم اباك ... الخ ، ٥/٥ ، ٢ ، الحديث ٧٣٢٧
- 2 در منثور کی ایک روایت میں جو حضرت سیرناسفیان توری دَضِیَ اللّهٔ عَنه سے مروی ہے یوں ہے کہ جب حضرت سیرنا بوسف علی نبِینا وَ عَلَیْهِ السَّلام سے معانقہ عَلَیْهِ السَّلام ہے معانقہ عَلَیْهِ السَّلام ہے معانقہ فرمایا۔ اورایک روایت میں جو کہ حضرت سیرنا ثابت بنائی دَضِیَ اللّهُ عَنه سے مروی ہے یوں ہے کہ جب حضرت سیرنا یعتوب عَلیْهِ السَّلام فرمائی۔ اورایک روایت میں جو کہ حضرت سیرنا ثابت بنائی دَضِیَ اللّهُ عَنه سے مروی ہے یوں ہے کہ جب حضرت سیرنا یعتوب عَلیْهِ السَّلام حضرت یوسف عَلیْهِ السَّلام نَ آپ سے ملاقات کے لیے جلدی فرمائی۔ (الدر المنظور، ۱۸۶۷ و و اتحاف المسادة المنقین، ۱۸۸۷)
 - 3 كنز العمال، كتاب الزكاة، الباب الثاني ... الخ ، الفصل الثالث ... الخ ، ١٨٢/٣ ، الجزء السادس، الحديث ١٦٣٩٠
 - 4ابوداود، كتاب الادب، باب في برالوالدين، ٤٣٤/٤، الحديث ١٤٢٥

M

سب سے بڑی نیکی میہ ہے کہ انسان اپنے باپ کی وفات کے بعداس کے دوستوں سے حسن سلوک کرے۔ (1) مزید اِرشاد ہوا کہ بیٹے کا ماں سے نیکی کرنا دو ہرا اُجر رکھتا ہے۔ (2)

ایک اور إرشاد ہے کہ ماں کی دُعا جلد قبول ہوتی ہے، پوچھا گیا:یارسول الله! (صَلَّى اللهُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) ایسا کیوں ہے؟ آپ نے فر مایا: اس لئے کہ ماں، باپ سے زیادہ مہر بان ہوتی ہے اور رحم کی دعا بھی ضائع نہیں ہوتی ۔(3) ایک شخص نے حضور صَلَّى اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے سوال کیا کہ میں کس سے نیکی کروں؟ آپ نے فر مایا: اینے والدین

ایک سے معرف میں اللہ ایم سے حوال ہیں ہیں سے میں مرون البیاد ہے والدین ہیں آپ نے فرمایا: اپنی اولا دسے نیکی کر کیونکہ جس سے نیکی کر کیونکہ جس طرح والدین کا جھھ پرحق ہے اسی طرح اولا د کا بھی تجھ پرحق ہے۔ (4)

نبی کریم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا فر مان ہے کہ الله تعالیٰ اس باپ پررحم فر مائے جس نے اپنے بیٹے سے نیکی میں تعاون کیا (اسے نیک عمل پر اُبھارا) اور عمل بدکی صورت میں اوا ئیگی حقوق کا باراس پر نہیں ہے۔ (5) حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم فر ماتے ہیں کہ اولا دکوعطیات میں برابر کا شریک کرو۔ (6)

اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ تیرے لئے تیرا بیٹا گلِ ناز بوہے،سات برس تک وہ تیرا خادم ہے،اس کی خوشبوسونگھ، پھر وہ تیراشریک ہے یا تیرادشمن ہے۔⁽⁷⁾

حضرت الله عَنه عمروى م كحضور صلَّى اللهُ عَليه وَسَلَّم في مايا كرساتوي ون ي كاعقيق كياجائ،

- 1مسلم ، كتاب البر...الخ ، باب فضل صلة اصدقاء...الخ ، ص ١٣٨٢، الحديث ١٣ _ (٢٥٥٢)
- 2طبقات الشافية الكبري للسبكي، ١٧/٦ و بريقة محمودية في شرح طريقة محمدية ، ١٥٠/٤
- 3طبقات الشافية الكبري للسبكي، ٦ / ٣١٧ و بريقة محمودية في شرح طريقة محمدية ، ٤ / . ٥٠
 - 4 كنز العمال ، كتاب النكاح ، بر الاولاد، ٢٤٦/٨ ، الجزء السادس عسر، الحديث ٢٤٩٥٤
 - آسسموسوعة ابن ابي الدنيا ، كتاب العيال، باب في العطف...الخ ، ٤٤/٨ ؛ الحديث ، ١٥٠
 - 6ابن عساكر، ۲۱/۳۳۳
- المستطرف لشهاب الدين، الباب الخامس والأربعون...الخ، الفصل الثاني في الأولاد وحقوقهم...الخ، ١٨/٢ و بريقة محمودية في شرح طريقة محمدية ، ٤/٠٥٠

اس کا نام رکھاجائے اوراس کے بال وغیرہ دور کئے جائیں اور جب وہ چھسال کا ہوتو باپ اسے اُ دَب سکھائے ، جب وہ نوسال کا ہوتو اسے اُ درجب وہ سلطان کا ہوتو باپ نوسال کا ہوتو اسے نماز کے لئے مارے اور جب وہ سولہ سال کا ہوتو باپ اس کی شادی کردے ، چھر آ پ نے حضرتِ اَنس دَضيَ اللهُ عَنْه کا ہاتھ پکڑ کرفر مایا کہ میں نے تجھے ادب سکھایا تعلیم دی اور تیری شادی کردی ، میں دنیا کے فتنے اور آخرت کے عذاب سے تیرے لئے الله کی پناہ چا ہتا ہوں۔ (1)

نبی اکرم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کاارشاد ہے کہ باپ پراولا دکا بیش ہے کہ وہ انہیں بہترین ادب سکھائے اوران کے عمد ہ نام رکھے۔(2)

ایک اور فرمان ہے کہ ہرلڑ کا اور لڑکی عقیقہ سے گروی ہے، ساتویں دن ان کے لئے کوئی جانور ذیج کیا جائے اور اس کا سرمونڈ اجائے۔

حضرتِ قَاَّده وَضِیَ اللَّهُ عَنُه کا قول ہے کہ جب عقیقہ کا جانور ذَبِ کیا جائے تواس جانور کی اُون لے کراسے جانور کی رگوں کے سامنے کر دی جائے پھراُسے بچے کے سر پرر کھردیا جائے پہاں تک کہ دھاگے کی مثل خون اس سے بہہ نکلے اِس کے بعداُس کے سرکودھودیا جائے اور حلق کر دیا جائے۔ (4)

ایک آدمی نے حضرتِ عبدالله بن مبارک رَضِیَ الله عَنه کے سامنے اپنے کسی لڑ کے کی شکایت کی آپ نے فرمایا: کیا تم نے اس پر بددعا کی ہے؟ اس نے کہا: ہاں! آپ نے فرمایا: تو نے اسے برباد کر دیا ہے، اولاد کے ساتھ نیک سلوک اور نرمی کرنی جائے۔

❶.....طبقات الشافية الكبري للسبكي، ٣١٨/٦ و روح البيان، سورة النساء، تحت الاية: ١٧٣/٢،١١

الخار، ١٧٦/١ ، الحديث ١٤٥٠ و شعب الايمان، الستون من شعب الإيمان، باب في حقوق الأولاد...الخ،
 ١٠٤/٦ ، الحديث ٨٦٦٧

^{3}ابوداود، كتاب الضحايا، باب العقيقة، ٢/٣، الحديث ٢٨٣٨

^{4} بیز مانۂ جاہلیت میں تھارسول الله صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے اسے منسوخ فر مادیا اورخون کے بجائے زَعفران لگانے کا حکم ارشاوفر مایا۔
حضرت سیر تابر بیدہ وَضنی اللهُ عَنْه سے روایت ہے: زمانۂ جاہلیت میں جب ہم میں کسی کے یہاں بچہ بیدا ہوتا تو وہ بکری ذَنَ کرتا اور اس
کاخون بچے کے سر پرتھیڑویتا پھر جب اسلام کازمانہ آیا تو ہم بکری ذَنَ کرتے تھے اور بچے کا سرمنڈ اتے اور سر پرزَعفران لگاتے۔
(سنن ابی داوہ ، کتاب الضحایا، باب فی العقیقة ، ۱۹۶۲ ، الحدیث ۲۸۶۳)

حضرتِ آڤَرَع بن حالِس رَضِى اللهُ عَنُه نے حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کواپنے نواسہ حضرتِ حسن رَضِى اللهُ عَنْه کو چومتے ہوئے دیکھا تو کہا کہ میرے دس بیٹے ہیں مگر میں نے بھی کسی کونہیں چوما ، حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: بیشک جورحم نہیں کرتا اس پر حم نہیں کیا جاتا۔ (1)

حضرتِ عا كَشَه دَضِى اللَّهُ عَنْهَا سے مروى ہے كه ايك دن حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے مجھ سے فرما يا كه أسامه کا منددھو ڈالو، ميں نے كراہت سے اس كامنددھونا شروع كيا تو حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے ميرے ہاتھ ميرااور أسامه (2) كوپير كران كامنددھويا كھراسے چوما۔ (3)

حضرت حِسن دَحِنى اللهُ عَنْه (تم سَى مِين)لرُّ كَفِرُ اتْتِى ہوئے مسجد مِين داخل ہوئے اور حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم منبر پرتشریف فرمانتھ، آپ نے منبر سے اُنز کرانہیں اٹھایا اور بیرآ بیّر مبارکہ تلاوت فرما کی:

سوائے اس کے نہیں کہتمہارے مال اوراولا دفتنہ ہیں۔

حضرت عبدالله بن شَدَّا درَضِیَ اللهٔ عنه عده کی حالت میں آپ کی گردن پرسوار ہوگئے، آپ نے سجدہ طویل کردیا، لوگوں اچا تک حضرت الله عنه سجدہ کی حالت میں آپ کی گردن پرسوار ہوگئے، آپ نے سجدہ طویل کردیا، لوگوں نے سجدہ طویل کردیا، لوگوں نے سجھا شایدکوئی بات ہوگئ ہے، جب آپ نے نماز پوری کرلی تو صحابہ نے عرض کی: یاد سول الله! آپ نے بہت طویل سجدہ کیا، یہاں تک کہ ہم سمجھے کوئی بات واقع ہوگئ ہے، آپ نے فرمایا: میرابیٹا مجھ پرسوار ہوگیا تو میں نے جلدی کرنا مناسب نہ سمجھا تا کہ وہ اپنی خوشی (حاجت) پوری کرلے۔ (5)

اس حدیث میں کئی فوائد ہیں ،ایک یہ کہ جب تک آ دمی تجدے میں رہتا ہے اسے اللّٰہ تعالیٰ کا قرب حاصل رہتا ہے۔اس حدیث سے اولا و سے زمی اور بھلائی اور امت کی تعلیم ،سب با تیں ثابت ہوتی ہیں۔

- 1بخارى، كتاب الادب، باب رحمة الولد...الخ ،٤/٠٠، الحديث ٩٩٧ ٥
 - س. بي حضرت سيد نازيد بن حارثه رَضِى الله عَنه كے صاحبز اوے تھے۔

إِنَّمَا آمُوَالُكُمُ وَآوُلا دُكُمُ فِتُنَةً ﴿ (4)

- 3موسوعة ابن ابي الدنيا ، كتاب العيال، باب حمل الولدان...الخ ، ١٨٠٨، الحديث ٢٢٩
- الحمة كنز الايمان: تمهار عال اورتمهار عن يحجا في بن بي (پ۲۸، التغابن: ۱۰) ابو داو د، كتاب الصلاة ، باب
 الامام يقطع... الخ ، ۱ / ، ۲ ٤ ، الحديث ۱۱۰۹
 - الحديث ١٦٨ ١ ما حوذًا عند التطبيق، باب هل يجوز ان تكون...الخ ،ص ١٩٦ الحديث ١٦٨ ١ ما حوذًا

كاشفة القلوب 🕽 🥕 🔾

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاارشاد ہے كہاولا دكى خوشبوجنت كى خوشبو ہے۔

حضرتِ امیر معاویہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کے بیٹے یزیدنے کہا کہ مجھے میرے باپ نے حضرتِ احنف بن قیس کو بلانے کے لئے بھیجا، جب وہ آ گئے تو میرے باپ نے کہا: اے ابو بح ! اولا دکے بارے میں کیا خیال ہے؟ انہوں نے کہا: امیر المؤمنین! یہ ہمارے دلوں کے کچل اور پشت کے ستون ہیں، ہم ان کے لئے نرم زمین اور سایہ دار آسمان ہیں، ہم انہی کے سبب ہر بلند چیز تک پہنچتے ہیں، اگریہ کچھ مانگیں تو انہیں دیجئے اگریہ ناراض ہوں تو انہیں راضی کیجئے۔

ان پراتے قیل نہ ہوں کہ بیآپ کی زندگی کونالپند کرنے لگیں اور آپ کی موت کی آرزو کرنے لگیں ، آپ کے قرب کو براسجھے لگیں ، حضرتِ معاوید رَضِی اللّٰهُ عَنْه نے بیس کر فر مایا: بخدا! اے اُحنف! جب تم آئے ہوتو میں بزید پرغم وغصہ سے بھرا بیٹھا تھا چنا نچہ جب اُحنف چلے گئے تو حضرتِ معاوید رَضِی اللّٰهُ عَنْه بزید سے راضی ہو گئے اور بزید کو دو ہزار درہم اور ایک سوکیڑے حضرتِ اُحنف کے ہاں بھیج دیئے ، (2) گویا اس نے انہیں آ دھا آ دھا تقسیم کرلیا۔

حارضيحتين

حضرت ِسبِّدُ ناابرا ہیم بن اَ دہم عَلَيْهِ رَحْمَهُ اللهِ الْاَعْظَمُ فرماتے ہیں: میں کو وِلبنان میں کئی اولیائے کرام رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام کی صحبت میں رہا۔ان میں سے ہرایک نے مجھے یہی وصیت کی کہ جب لوگوں میں جاؤتوان عارباتوں کی نصیحت کرنا:

- ﴿١﴾ جوپيك بحركركهائ كاأے عبادت كى لذت نصيب نہيں ہوگى۔
 - ﴿٢﴾....جوزِیاده سوئے گا اُس کی عمر میں برکت نہ ہوگی۔
- ﴿٣﴾..... جوصرف لوگوں كى خوشنو دى جا ہے وہ رضائے الٰبى عَذَّوَجَلَّ سے مايوس ہوجائے گا۔
- ﴿٤﴾.... جوغيبت اورفُضُول كوئي زياده كرے كاوه دين اسلام پرنہيں مرے گا۔ (منهاج العابدين، ص١٠٧)

^{1}المعجم الاوسط ، ٤ /٢٤ ٢ ، الحديث . ٥٨٦

سسم کاشفة القلوب میں بہال عربی عبارت یول ہے: و بعث الیه بمائتی الف در هم ارسل یزید الی الاحنف بمائة الف
 در هم النح لیحیٰ یزید کودولا کودرہم اور دوسو کپڑے بھیجاور یزید نے ان میں سے ایک لا کودرہم اورایک سو کپڑے حضرت احنف
 کے بہال بھیج دیئے۔ ہوسکتا ہے مترجم رَحمٰ دُحمٰة الله عَلَيْه کے پاس جونسخہ ہواس میں دو ہزار درہم اورایک ہزار درہم کھا ہو۔ والله تعالی اعلم

اب 90

رُ حقوقِ همسايه اور مساكين پر احسان ﴿

ہمسائیگی اُخوت اسلامی سے زیادہ پچھ اور حقوق کی بھی مُقْتَفِی ہے لہذا ہر مسلمان ہمسایہ کے اُخوت اسلامی کے سلوک کے علاوہ بھی پچھ حقوق ہیں چنانچہ نبی کریم صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم کا فرمان ہے کہ ہمسائے تین ہیں، ایک ہمسایہ کا ایک تن، دوسر سے کے دوحق اور تیسر سے کے تین حقوق ہیں وہ رشتہ دار مسلمان ہمسایہ ہے، اس کا ہمسائیگی کاحق، اِسلام کاحق اور رشتہ داری کاحق ہے، جس ہمسایہ کے دوحق ہیں وہ مسلمان ہمسایہ ہے اس کے لئے ہمسائیگی کاحق ، اِسلام کاحق ہے اور جس ہمسایہ کا ایک حق ہے وہ مشرک ہمسایہ کے خور کیجئے کہ اسلام نے مشرک ہمسایہ کا حق ہمسائیگی دکھا ہے۔ (1)

فرمانِ نبی کریم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے کہ اپنے ہمسائیوں کے ساتھ اچھا برتا وُ کرتب تو مسلمان ہوگا۔ (2) اور فرمایا کہ جبریل مجھے ہمیشہ ہمسایہ کے متعلق وَصیت کرتے رہے یہاں تک کہ میں سمجھا کہ عنقریب ہمسایہ کو بھی وارث بنادیا جائے گا۔ (3)

حضور عَلَيْهِ الصَّلَوْةُ وَالسَّلَامِ فَ فِر ما ياكہ جُوخُص الله اور قيامت پر إيمان ركھتا ہے وہ اپنے ہمسايہ كى عزت كرے۔ (4) مزيد فر ما يا كہ بندہ اُس وفت تك مسلمان نہيں ہوتا جب تك كه اس كا ہمسايہ اس كى آفتوں سے محفوظ نہ ہو۔ (5) ايك اور فر مان ہے كہ قيامت كے دن سب سے پہلے جھگڑا كرنے والے دوہمسائے ہوں گے۔ (6) اور ارشا دفر ما ياكہ جب تونے ہمسايہ كے كتے كو مارا تو گويا تونے ہمسايہ كو تكيف دى۔ (7)

- 1حلية الاولياء، ٥/٥٦، الحديث ٦٩٤٨، بالتقديم والتاخير
- الحديث ٠٥٧٥. القاسع والثلاثون...الخ ، الفصل الثالث...الخ ، ٥٣/٥، الحديث ٥٧٥٠
 - 3 بخارى، كتاب الأدب، باب الوصاة بالجار، ٤/٤ ، ١ ، الحديث ٢٠١٤
 - 4بخارى، كتاب الأدب، باب من كان يؤمن...الخ ، ٤/٥٠١، الحديث ٦٠١٩
- 5المرجع السابق، باب اثم من لاياًمن...الخ،ص١٠٤ ،الحديث٢٠١٦ و ١٠٠٠ المعجم الكبير،٣٠٣/١٧ ،الحديث ٦٠١٦
 - 7طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٣١٨/٦ و بريقة محمودية في شرح طريقة محمدية ١٤٦١/٤٠

سامان واپس لے آ ؤ ، بخدا! میں پھرتمہیں کبھی نکلیف نہیں دوں گا۔ ⁽²⁾

مروی ہے کہ ایک آدمی نے حضرت ابن مسعود رَضِی الله عَنه ہے آکرکہا: میراایک ہمسایہ ہے جو مجھے تکایف دیتا ہے، گالیاں دیتا ہے اور تنگ کرتا ہے، آپ نے بیتن کر فر مایا: جا وُ! اگر وہ تمہارے متعلق الله کی نافر مانی کرتا ہے تو تم اس کے بارے میں الله کی اطاعت کرو حضور صَلَی الله عَلَیْهِ وَسَلَم ہے عرض کی گئی: یاد سول الله! فلاں عورت دن کوروزہ رکھتی ہے، رات کوعبادت کرتی ہے مگرا پنے ہمسائیوں کو دُکھ دیت ہے، آپ نے بیتن کر فر مایا: وہ جہنم میں جائے گی۔ (۱)

ایک شخص نے حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَم کی خدمت میں اپنے ہمسائیک اشکوہ کیا، حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَم نے اس ایک ایک عضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَم کی خدمت میں اپنے ہمسائیک اشکوہ کیا، حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَم نے اس سے فر مایا: میں کہا: مجھ ہمسایہ ستاتا ہے، لوگ و بال سے گزرت اس کے سامان کو باہر راستہ پر پڑاد کھا تو پوچھا: کیا بات ہے؟ اس نے کہا: مجھ ہمسایہ ستاتا ہے، لوگ و بال سے گزرت رہے، یو چھتے رہے اور کہتے رہے الله تعالیٰ اس ہمسانیہ پرلعت کرے، جب اس ہمسانہ نے بیات سی تو آیا اسے کہا: اپنا

زُ ہری نے روایت کیا ہے کہ ایک شخص نے حضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم کی خدمت میں ہمسایہ کی شکایت کی ۔حضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے حکم فر مایا کہ مسجد کے دروازہ پر کھڑ ہے ہوکر اعلان کر دو کہ ساتھ کے جپالیس گھر ہمسائیگی میں داخل ہیں۔
(3)
زُ ہری نے کہا: چپالیس ادھر، چپالیس اُدھر، چپالیس ادھراور چپالیس ادھراور چپاروں سمتوں کی طرف اشارہ کیا۔
(4)
فر مان نبوی ہے کہ عورت، گھر اور گھوڑ ہے میں برکت اور نحوست ہے۔
(5)

^{1}المستدرك للحاكم، كتاب البروالصلة، باب ان الله لايعطى...الخ ،٥/٢٣١، الحديث ٧٣٨٤

^{2}صحيح ابن حبان، كتاب البرو الاحسان، باب الجار، ١/٣٦٨، الحديث ٢١٥

^{3}المعجم الكبير، ٩ /٧٣/ الحديث ١٤٣

^{4} كشف الخفاء، ١ /٢٩٣ ، تحت الحديث ١٠٥٢

الحديث ١١٥ ـ (٢٢٢٥)

ہمسایہ کا حق صرف بنہیں کہ آپ اس سے اسکی تکلیفیں دُورکریں بلکہ ایسی چیزیں بھی اس سے دُورکر فی چاہئیں کہ جن سے اسے دُکھ کے علاوہ کچھ اور جن سے اسے دُکھ کے علاوہ کچھ اور جن سے اسے دُکھ کے علاوہ کچھ اور بھی حقوق ہیں ، اس سے زمی اور حسن سلوک سے پیش آئے ، اس سے نیکی اور بھلائی کرتا رہے اسی لئے کہا گیا ہے کہ قیامت کے دن فقیر ہمسایہ مالدار ہمسائے کو پکڑ کر اللہ سے کہے گا: اے اللہ! اس سے بوچھ ، اس نے اپنے عطایا مجھ سے کیوں روکے تھے اور اپنا دروازہ مجھ پر کیوں بند کیا تھا؟

اِبْنُ الْمُقَقَّع سے سے کہا کہ تمہارا ہمسایہ سواری کے قرض کی وجہ سے اپنا گھر نے رہا ہے، اِبْنُ الْمُقَفَّع ال شخص کی دیوار کے سایہ میں بیٹھتا تھا، اس نے بین کرکہا کہ اگر اس نے تنگدتی کی وجہ سے اپنا گھر نے دیا تو گویا میں نے اس کی دیوار کے سایہ کی عزت نہیں کی چنا نچے اس کے یاس رقم بھیجی اور کہلا بھیجا گھر کونہ بیچو۔

کسی شخص نے گھر میں چوہوں کی کثرت کی شکایت کی توسننے والے نے کہا کہتم ایک بلی رکھ لو، تو اس شخص نے جواب میں کہا: مجھے اس بات کا اُندیشہ ہے کہ چوہ بلی کی آ واز سن کر ہمسائیوں کے گھر وں میں بھاگ جا کیں گے تو گویا میں ایسا آ دمی بن جاؤں گا جوخود تو ایک تکلیف پسندنہیں کرتا مگر دوسروں کو وہی دکھ پہنچانا جا ہتا ہے۔

ہمسایہ کے حقوق میں سے یہ بھی ہے کہ اسے دیکھتے ہی سلام کرے،اس سے طویل گفتگونہ کرے،اس سے اکثر مانگانہ دہے،مرض میں اس کی عیادت کرے،مصیبت میں اسے سلی دے،اگراس کے بیبال موت ہوجائے تو اس کے ساتھ دہے، خوثی میں اسے مبار کباد کیے اور اس کی خوثی میں برابر کا شریک رہے، اس کی غلطیوں سے دَرگز رکرے، حجیت سے اس کے گھر میں نہ جھا تکے،اپئے گھر کی دیوار پر شہتر وغیرہ رکھنے سے نہ روکے،اس کے پرنالے میں پانی نہ انٹر یلے،اس کے گھر کے داستہ کو تنگ نہ کرے، وہ گھر کی طرف جو پچھ لے کرجار ہا ہواس کے گھر کے داستہ کو تنگ نہ کرے، وہ گھر کی طرف جو پچھ لے کرجار ہا ہواسے نہ گھورے،اس کی عدم موجودگی میں اس کے گھر کے داستہ کو تنگ نہ کرے، وہ گھر کی طرف جو پچھ لے کرجار ہا ہواست نہ گھورے،اس کی عدم موجودگی میں اس کے گھر کی دیکھ بھال سے عافل نہ ہو،اس کی غیبت نہ سے، اسکی عزت سے آئکھ بند کرے،اس کی لونڈی کو اکثر نہ دیکھتار ہے،اس کی اولاد سے نرمی سے گفتگو کرے، جن دِینی اور دُنیاوی اُمور سے دہ ناواتف ہوان میں اس کی رہنمائی کرے۔یہ وہ حقوق ہیں جو عام وخاص ہر مسلمان کے لئے ضروری ہیں۔ صود وہ ناواتف ہوان میں اس کی رہنمائی کرے۔یہ وہ حقوق ہیں جو عام وخاص ہر مسلمان کے لئے ضروری ہیں۔ حضور صَدًی الله عَدَیْہ وَسَدُم نے فرمایا: جانتے ہو ہمسایہ کا کیاحق ہے؟ جب وہ تجھ سے مدوطلب کرے اس کی مدد حصور صَدًی الله عَدَیْہ وَسَدُم نے فرمایا: جانتے ہو ہمسایہ کا کیاحق ہے؟ جب وہ تجھ سے مدوطلب کرے اس کی مدد

کر، اگروہ تیری امداد کا طالب ہواس کی امداد کر، اگروہ تجھ سے قرض مائے تو اسے قرض دے، اگروہ مفلس ہوجائے تو اس کی حاجت روائی کر، اگروہ بیمار ہوجائے تو اس کی حاجت روائی کر، اگر وہ بیمار ہوجائے تو اس کی حاجت روائی کر، اگر اسے خوشی حاصل ہو تو مبار کباد کہد، اگر اسے مصیبت پیش آئے تو اسے صبر کی تلقین کر، اس کے مکان سے اپنا مکان او نچا نہ بنا تا کہ اس کی ہوا ندر کے اگر وہ اجازت دے دے تو کوئی حرج نہیں، اسے تکلیف نددے، جب میو خرید کر لائے تو اس کے گھر بطور تحفیج ورنہ خفیہ لے کر آ، میو ہے اپنی اولاد کے ہاتھ میں دیکر باہر نہ بھیج وی نے ناراض نہ ہوں، ہانڈی کی خوشبو سے اپنے ہمسا میکو ایذ اند دے مگر یہ کہ ایک چلوشور با اسے بھی بھیج دے۔ پھر آپ نے فرمایا: جانے ہو ہمسا میکا حق کیا ہے؟ بخدا! ہمسا میکو ایذ اند دے مگر یہ کہ ایک چلوشور با اسے بھی بھیج دے۔ پھر آپ نے فرمایا: جانے ہو ہمسا میکا حق کیا ہے؟ بخدا! ہمسا میک حقوق کوکوئی پور انہیں کر سکتا مگر جس پر اللہ تعالی نے رحمت کی ہو۔ (1)

اسی طرح عَمْرُو بَن شُعَیبِ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه نے اپنے باپ اور دا داسے اور انہوں نے نبی کریم صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے روایت کی ہے۔

حضرت بجاہد رضی الله عنه کا کہنا ہے: میں حضرت عبد الله بن عمر رضی الله عنه کے پاس بیر الله عنه کا کہنا ہے: میں حضرت عبد الله بن عمر رضی الله عنه کے پاس بیر الله عنه کا کہنا ہے کہا اے غلام! جب بکری کی کھال اُ تار لے تو سب سے پہلے ہمارے یہودی ہمسایہ کو گوشت وینا، آپ نے یہی بات متعدد بار کہی تو غلام نے کہا: اب اور کتنی مرتبہ کہیں گے؟ تب آپ نے فرمایا: حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم ہمیں برابر ہمسائیوں کے متعلق وصیت فرمایا کرتے تھے یہاں تک کہ ہمیں اُندیشہ ہوا کہ کہیں ہمسائیوں کو وارث نہ بنادیا جائے (2)

حضرت ہشام رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ کا قول ہے کہ حضرت ِحسن رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اس بات میں کوئی حرج نہیں سمجھتے تھے کہ تم اپنی قربانی کا گوشت یہودی یا نصرانی ہمسایہ کو کھلاؤ۔

حضرتِ الووَّر دَحِنَى اللَّهُ عَنُه نِے فرمایا: مجھے میرے صبیب صَلَّى اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے وَصیت فرمانی که جب تم ہانڈی پکاوُ تواس میں زیادہ پانی ڈال دو، پھراپنے ہمسائیوں کے گھروں پرنگاہ دوڑاؤاورانہیں چُلّو بھرشور بابھیجے دیا کرو۔⁽³⁾

- 1 كنز العمال، كتاب الصحبة، الباب الرابع. . . الخ ، ٥/ ٢٦ ، الحزء التاسع ، الحديث ٢٤٩٣٠
 - 2شعب الايمان، السابع والستون...الخ ، ٧/٨٥، الحديث ٢٥٩٥ عن عبدالله بن عمرو
- 3مسلم، كتاب البر...الخ، باب الوصية بالجار...الخ، ص ١٤١٣، الحديث ١٤٣ (٢٦٢٥)

(91 <u>- !</u>

رُّ شرابی پر عذاب

الله تعالی نے شراب کے بارے میں جوآیات نازل فرمائیں ان میں سے پہلی یہ ہے:

آپ سے شراب اور جوئے کے بارے میں سوال کرتے ہیں فرما

دیجئے ان دونوں میں بڑا گناہ ہے اور (بظاہر) لوگوں کے واسطے

ؽۺؙٷؙڹڬۘٛٛۼڹؚٳڶۘڂؘؠڕۘۊٳڷؠؽڛڔٷڷۏؽڥؠۘٵٙٳؿ۫ۿڰؚؠؽڗۊ ڡؘٮؙٵڣٷڸڹۜٵڛۦ(١)

(2) يَا يُّهَا الَّن بِنَ امَنُوا لا تَقْرِبُوا الصَّلوةَ وَٱنْتُمْسُكُرِي

فائدے ہیں۔

یہ آیت س کر کچھلوگوں نے شراب پینا جھوڑ دیااور کچھاس طرح پیتے رہے یہاں تک کہ ایک آ دمی شراب پی کر نمازیڑھنے لگا تواس کی زبان سے نامناسب کلمات نکلے، تباللّٰہ تعالیٰ نے بیر آیت نازل فرمائی:

الےمومنونماز کے قریب مت جاؤاں حال میں کہتم نشہ میں ہو۔

پس به آیت من کرجس نے شراب پی اس نے پی اور جس نے اسے چھوڑ دیا اس نے چھوڑ دیا یہاں تک کہ حضرت عمر دَضِی الله عنه نے ایک بارشراب پی اوراً وزٹ کا جبڑ ااٹھا کر حضرت عبدالرحمٰن بن عوف دَضِی الله عنه کے سر پر مارااور ان کا سر پھوڑ دیا ، پھر پیٹھ کر بدر کے مقتولوں پر رونے گئے ، حضور صَلَّی الله عَلیْه وَسَلَّم کو جب بی جبر ملی تو آپ نے عصد کی حالت میں چا در کھیٹتے ہوئے با ہر قدم رَنْجه فر مایا اور اپنے پاس جو چیز تھی اس سے انہیں مارا، تب حضرت عمر دَضِی الله عنه بوئے با ہر قدم رَنْجه فر مایا اور اپنے پاس جو چیز تھی اس سے انہیں مارا، تب حضرت عمر دَضِی الله عنه بوئے با ہر قدم کے خضب سے بناہ ما نگتا ہوں اور الله تعالی نے بی آیت نازل فر مائی :

سوائے اس کے نہیں کہ شیطان ارادہ کرنا ہے کہ تمہارے درمیان

شراب اور جوئے کی وجہ ہے بغض وعداوت ڈ الے۔

إِنَّمَا يُرِينُ الشَّيْطُنُ أَن يُّوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ

فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ

- - 2ترجمهٔ كنز الايمان: اے ايمان والونشركى حالت مين نمازك پاس ندجاؤ (ب ه ، النساء: ٤٣)
 - ۱۵ سستر جمهٔ کنز الایمان: شیطان یمی چا بتا ہے کہ میں بیراور دشمنی ڈلوادے شراب اور جوئے میں (پ۷، السائده: ۹۱)

حضرت عمروضى الله عنه في بيرآيت كركها: بهم رك كت ، بهم رك كت .

شراب کی حرمت میں متفق علیہ اَ حادیث بھی ہیں چنانچے فر مانِ نبوی ہے کہ عادی شراب خور جنت میں نہیں جائے (1) -

نبی اکرم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ بتوں کی عبادت کی ممانعت کے بعد اللَّه تعالیٰ نے مجھے سب سے پہلے شراب پینے اور لوگوں پر لعنتیں بھیجنے سے روکا ہے۔ (2)

فرمانِ نبوی ہے کہ کوئی جماعت ایسی نہیں ہے جود نیامیں کسی نشد آور چیز پرجمع ہوتے ہیں مگر الله تعالی انہیں جہنم میں جمع کرے گا اور وہ ایک دوسر کے کو کہے گا اے فلاں !الله تعالی تجھے میری طرف سے بری جزاد بو نے ہی مجھے اس مقام تک پہنچایا ہے اور دوسر ااس سے اسی طرح کہے گا۔(3)

حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم نے فرمایا کہ جس نے دنیا میں شراب پی ،اللّٰه تعالیٰ اسے جہنمی سانپوں کا زہر بلائے گا جسے پینے سے پہلے ہی اس کے چہرے کا گوشت گل کر برتن میں گر جائیگا اور جب وہ اسے پٹے گا تو اس کا گوشت اور کھال اُدھر مائے گی جس سے جہنمی اَفِیت یا کیں گے۔

شراب پینے والے،کشید کرنے والے، نچوڑنے والے،اٹھانے والے،جس کے لئے لائی گئی ہواوراس کی قیمت کھانے والے، سب کے سب گناہ میں برابر کے شریک ہیں،الله تعالی ان میں ہے کسی کا نماز،روز ہاور حج قبول نہیں کھانے والے،سب کے سب گناہ میں برابر کے شریک ہیں،الله تعالی پرت ہے کہ انہیں شراب کے ہر گھونٹ کے وض جہنم کرتا تا آ نکہ وہ تو بہ کریں، پس اگروہ تو بہ کئے بغیر مر گئے توالله تعالی پرت ہے کہ انہیں شراب کے ہر گھونٹ کے وض جہنم کی بیپ پلائے۔یاور کھئے ہرنشہ آور چیز حرام ہے اور ہر شراب حرام ہے (خواہوہ کہ فتم کی ہو)۔

ابن البی الد نیادَ حِنی اللّٰهُ عَنْهُ ہے منقول ہے کہ ان کی نشہ میں دُھت ایک ایسے خص سے ملاقات ہو کی جو ہاتھ پر پیشا ب کرر ہاتھااور وضوکر نے والے کی طرح بیشا ب سے ہاتھ دھور ہاتھااور کہدر ہاتھا:

^{1 ---} ابن ماجه، كتاب الأشربة ، باب مد من الحمر، ٢٢/٤، الحديث٣٣٧٦

^{2}المعجم الكبير، ٠٠ /٨٣ ، الحديث ١٥٧

^{3}الكبائر للذهبي، الكبيرة التاسعة عشرة، ص ٥٩

الكبائر للذهبي، الكبيرة التاسعة عشرة، ص ٥٩

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَ الْإِسْلَامَ نُورًا قَالْمَاءَ طَهُورًا.

حدہ الله تعالی کی جس نے اسلام کونور بخشا اور پانی کو پاک فر مایا۔

عَبَّاس بن مِرْداس سے زمانۂ جاہلیت میں کہا گیا کہتم شراب کیوں نہیں پیتے، اس سے تمہارے اندر تیزی بڑھ جائیگی، اس نے جواب دیا: میں اپنے ہاتھوں سے جہالت کو پکڑ کرخودا پنے پیٹ میں داخل کرنے والانہیں ہوں اور نہ ہی میں اس بات پر راضی ہوں کہ میں صبح اپنی قوم کے سردار ہونے کی حیثیت سے کروں اور شام ان میں بیوقوف کی صفت سے مُتَّصِفْ ہوکر کروں۔

بیہ قی نے حضرت ابن عمر دَضِی الله عَنه سے روایت کی ہے کہ دسول الله صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: شراب سے بچو، تم سے بچو، تم سے بہلے لوگوں میں ایک عبادت گزار شخص تھا جولوگوں سے علیحہ ہ رہتا تھا، ایک عورت نے اس کا پیچھا کیا اور اپنا ایک خادم بھیج کراسے بلایا اور کہا کہ ہم مجھے گواہ می کے لئے بلانے آئے ہیں چنا نچہ عابدان کے گھر میں داخل ہوگیا، وہ جو نہی کسی دروازہ سے آگے بڑھتا وہ عورت اس دروازہ کو بند کردیتی، یہاں تک کہ وہ عورت کے پاس پہنچا، وہ بدکردار عورت بیٹھی ہوئی تھی، اس کے پاس ایک لڑکا تھا اور ایک برتن تھا جس میں شراب رکھی ہوئی تھی۔ اس عورت نے بہان میں نے تھے کسی گواہ می کے لئے نہیں بلکہ اس لڑکے کے قبل اور ایٹے ساتھ جماع کے لئے بلایا ہے، یا پھر شراب کا میا دیا ہے بیا لہ بی لے، اگر تو نے ازکار کر دیا تو میں چلا وُں گی اور تھے رُسوا کروں گی۔

جب اس عابد نے کوئی چارہ کارنہ دیکھا تو کہا: اچھا مجھے شراب بلادے، چنانچہ اس نے شراب کا پیالہ بلادیا۔
عابد پیالہ پی کر بولا: اور دیدے، یہال تک کہ شراب سے بدمست ہوکر اس نے عورت سے زنا کیا اور لڑکے کو بھی قتل
کر دیا۔ لہذا شراب سے بچو، پس بخدا! ایمان اور دائمی شراب نوشی کسی شخص کے سینہ میں بھی جمع نہیں ہوسکتے البتہ ان
میں سے ایک، دوسر کے دنکال دیتا ہے۔
(1)

احداورابن حبان في المي صحيح ميل حضرت ابن عمر رَضِيَ اللهُ عَنهُمَا سدوايت كي هے كمانهول في حضور صَلَّى اللهُ

^{1} شعب الايمان، التاسع والثلاثون...الخ، ٥/٠١، الحديث ٥٥٨٦ عن عثمان رضي الله عنه

عَلَيْهِ وَسَلَّم كُوبِهِ فرمات سناكه جب آدم عَلَيْهِ السَّلام كُوز مين برا تارا كيا تو فرشتوں نے كہا:

''اےرب تو زمین پراس شخص کواپناخلیفہ بنا کر بھیج رہا ہے جو فساد کرے گا اور خون بہائے گا اور ہم تیری حمد کے ساتھ تینج کرتے میں اور تیری پاکی بیان کرتے میں (لبذاہم اس منصب کے زیادہ مستحق میں) رہِّ جلیل نے فرما یا بے شک میں جانتا ہوں جوتم نہیں جانتے۔'،(1)

انہوں نے عرض کی: اے اللہ! ہم تیری بنی آ دم سے زیادہ اطاعت کرتے ہیں۔اللہ تعالی نے فرمایا: تم میں سے دوفر شتے آئیں تا کہ ہم دیکھیں کہوہ کیساعمل کرتے ہیں؟ انہوں نے عرض کی کہ ہاروت و ماروت حاضر ہیں۔

رب تعالی نے انہیں تھم دیا کہ تم زمین پر جاؤاوراللہ تعالی نے زُہرہ ستارے کوان کے سامنے حسین وجمیل عورت کے روپ میں بھیجاوہ دونوں اس کے ہاں آئے اوراس سے رَفافت کا سوال کیا: مگراس نے اِنکار کردیا اور کہا: بخدا! اس وقت تک نہیں جب تک تم دونوں یہ کلمہ شرک نہ کہو، انہوں نے کہا: بخدا! ہم بھی بھی اللہ تعالی کا شریک نہیں تھہرا کیں گے، چنا نچہوہ عورت ان کے پاس سے اٹھ کر چلی گئی اور جب واپس آئی تو وہ ایک بچواٹھائے ہوئے تھی۔ انہوں نے اس سے پھر وہی سوال کیا مگراس نے کہا: بخدا! اس وقت تک نہیں جب تک تم دونوں اس بچے کوئل نہ کرو۔ انہوں نے کہا: بخدا! میں عورت نے کہا: بخدا! میں عورت نے کہا: بخدا! میں عورت نے کہا: بخدا! اس وقت تک نہیں جب تک تم دونوں ان دونوں نے اسے دیکھ کر پھر وہی سوال دہرایا، عورت نے کہا: بخدا! اس وقت تک نہیں جب تک تم پیشراب نہ پی اور

چنانچہانہوں نے شراب فی اور نشہ کی حالت میں اس سے جماع کیا اور بچے کوتل کر دیا۔ جب ان کا نشہ اُترا تو عورت نے کہا: بخدا! تم نے ایسا کوئی کا منہیں چھوڑا جس کے کرنے سے تم نے انکار کر دیا تھا، نشہ کی حالت میں تم سب کام کرگز رے۔ تب انہیں دنیاوی عذاب اور آخرت کے عذاب میں سے کسی ایک کو اِختیار کرنے کا حکم دیا گیا اور انہوں نے دنیاوی عذاب کو پیند کرلیا۔ (2)

سستو جمهٔ کنز الایمان: کیاایسے کونائب کرے گاجواس میں فساد پھیلائے اور خوزیزیاں کرے اور ہم تجھے سراہتے ہوئے تیری تبیح کرتے اور تیری یا کی بولئے ہیں فرمایا مجھے معلوم ہے جوتم نہیں جانتے۔ (ب۱، البقرة: ۳۰)

شفرشة معصوم بین ان سے گناه نبیں ہوتا۔ ہاروت و ماروت عَلَيْهِ مَا السَّلام كے بارے میں اس طرح كے واقعات كى كو كى حقیقت نہیں چنا نچه
 مكتبة المدينة كى مطبوعه 524 صفحات يمشمل كتاب" صواط الجنان في تفسيد القد آن "جلداوّل مفحه 177 ير ہے:

M

حضرتِ اُمِسلمہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا فرماتی ہیں کہ میری بیٹی بیار ہوگئی تومیں نے پیالے میں نبیذ بنائی ،حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم میرے ہاں تشریف لائے تو وہ اُبل رہی تھی۔ آپ نے فرمایا: اُمِسلمہ بیکیا ہے؟ میں نے عرض کی کہ میری بیٹی بیار ہے،اس کی دوائی بنار ہی ہوں۔ آپ نے فرمایا کہ اللّٰہ تعالیٰ نے حرام کردہ اشیاء میں میری امت کے لئے شفانہیں رکھی۔ (1)

ایک روایت میں ہے کہ جب الله تعالیٰ نے شراب کوحرام فرمادیا تواس میں جینے بھی فوائد تھے،سب چھین لئے۔

بُرے خاتمے کے اُسباب

حضرت سیّدُ ناابوبکروَ رَاقَ دَحْمَهُ الله مَعَالَى عَلَيْهِ فرماتے ہیں: بندوں برظلم کرناا کشرسلب ایمان کا سبب بن جاتا ہے۔حضرت سیّدُ ناابوالقاسم حکیم دَحْمَهُ اللهِ مَعَالَى عَلَيْهِ ہے کسی نے پوچھا: کوئی ایسا گناہ بھی ہے جو بندے کوائمان سے محروم کردیتا ہے؟ فرمایا: بربادی ایمان کے تین اسباب ہیں: ﴿ اللهِ ایمان کی قعمت پرشکرنہ کرنا ﴿ ۲ ﴾ ایمان ضائع ہونے کا خوف نہ رکھنا ﴿ ٣ ﴾ مسلمان پرظلم کرنا۔

ہاروت، ماروت دوفر شنتے ہیں جنہیں بنی اسرائیل کی آ زمائش کیلئے اللّٰہ تعالیٰ نے بھیجاتھا۔ان کے بارے میں غلط قصے بہت مشہور ہیں اور وہسب باطل ہیں۔ (حازن، البقرة، تحت الآیة: ۲۰۱، ۷۰۱)

اعلی حضرت امام احمد رضاخان عَلَیْه وَ حُمَهُ الرُّحُون نے ہاروت اور ماروت کے بارے میں جو کلام فرمایا اس کا خلاصہ بیہ ہے کہ ہاروت اور ماروت کا واقعہ جس طرح عوام میں مشہور ہے آئمہ کرام اس کا شدیداور شخت انکار کرتے ہیں۔اس کی تفصیل شفاء شریف اوراس کی شروحات میں موجود ہے، یہاں تک کہ امام اجل قاضی عیاض دَّحُمهُ اللهِ تَعَالَى عَلَیْهِ نِے فرمایا: ہاروت اور ماروت کے بارے میں بیخبریں یہودیوں کی کتابوں اوران کی گھڑی ہوئی باتوں میں سے ہیں۔اورران جی کہ ہاروت اور ماروت دوفر شنے ہیں جنہیں الله تعالی نے مخلوق کی آز ماکش کے لئے مقرر فرمایا کہ جوجادو سی سے ایس اور اسے شیحت کریں کہ " اِقْمَا نَصُن فِلْلَهُ فَلَا تُلَفَّن ً " ہم تو آز ماکش بی تعالی نے مخلوق کی آز ماکش کی اس جائے ، یہ فرشتے اگر اسے جادو کے لئے مقرر مور نے ہیں نہ کہنا فرمانی کررہے ہیں۔

(الشفاء، فصل في القول في عصمة الملائكة، ص٥٧٠-١٧٦، الجزء الثاني، فتاوي رضويه، كتاب الشتي، ٣٩٧/٦٦)_علميه

1 كتاب الكبائر لذهبي، الكبيرة التاسعة عشرة ، ص ٩٤

(تنبيه الغافلين ، ص ٢٠٤)

اب 92

معراج شريف

بخاری نے قتا وہ ہے، انہوں نے انس بن مالک رضی الله عنه ہے، انہوں نے مالک بن صحّصَعہ رضی الله عنه سے روایت کی ہے کہ حضور صلّی الله عَلَیْهِ وَسَلّم نے انہیں معراج کی رات کا واقعہ سنایا اور فر مایا کہ میں حطیم کعبہ میں تھا اور یہ بی فر مایا کہ میں مقام حجر میں لیٹا ہوا تھا کہ رکا کی میرے پاس ایک آنے والا آیا اور اس نے پچھ کہا، میں نے سناوہ کہدر ہاتھا پھراس جگہ اور اس جگہ کے درمیان چاک کیا گیا (راوی کہتا ہے میں نے جارود رَضِیَ الله عنه سے پوچھا، وہ میرے قریب بیٹھے ہوئے تھے کہ اس جگہ اور اس جگہ سے کیا مراد ہے؟ انہوں نے کہا: حلقوم سے ناف تک) پھرانہوں نے میراول نکالا اور میں ایک سونے کا طشت لایا گیا جو ایمان سے لبریز تھا، اس کے بعد میرا دل وھویا گیا پھرا سے علم وایمان سے لبریز کرکے واپس رکھ دیا گیا پھرا سے علم وایمان سے لبریز کرکے واپس رکھ دیا گیا ہوا گیا۔

پھر میرے پاس ایک سفید جانو رلایا گیا جونچرسے بست اور گدھے سے اونچا تھا (جارود نے حضر سے انس وَجَلَی اللّٰهُ عَنْهُ نے ہوا بدیا: ہاں! وہ اپنا قدم مُنْجَائے نظر پر رکھتا تھا) میں عَنْهُ سے بوچھا کہا اللّٰهِ عَنْهُ نے ہوا بدیا: ہاں! وہ اپنا قدم مُنْجَائے نظر پر رکھتا تھا) میں اس پر سوار ہوا اور جبر یل جھے لیکر چلے یہاں تک کہ آسان و نیا تک بنتے، جبر یل نے اس کا دروازہ تھلوایا، بوچھا گیا:

کون ہے؟ انہوں نے کہا: جبر یل، کہا گیا اور تہمار سے ساتھ کون ہے؟ جبر یل نے کہا: محمد رصَلًى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلّم، بوچھا گیا۔

وہ بلائے گئے ہیں؟ جبر یل نے کہا: ہاں! کہا گیا انہیں خوش آمدید ہو، ان کا آتا مبارک ہو، پھر دروازہ کھول دیا گیا۔

جب میں وہاں پہنچا تو وہاں آدم عَلَيْهِ السَّدَم موجود تقے۔ جبر یل نے کہا: بیآ پ کے اَب (باپ) آدم ہیں، انہیں سلام کیجے! البندا میں نے سلام کیا، انہوں نے سلام کا جواب دیا اور کہا: صالح بیٹے اور جبر یل نے دروازہ کھلوایا، بوچھا گیا کیا وہ پھر جبریل میرے ساتھ اُوپر چڑھے یہاں تک کہ دوسرے آسان پر پہنچا اور جبریل نے دروازہ کھلوایا، بوچھا گیا کیا وہ بیا، کون ہے؟ کہا: جبریل میرے ساتھ اُوپر چڑھے یہاں تک کہ دوسرے آسان پر پہنچا اور جبریل نے دروازہ کھلوایا، بوچھا گیا کیا وہ بولائے گئے ہیں؟ جبریل میرے ساتھ اُوپر پڑھے گیا ان کا آنا مبارک ہوا ور دروازہ کھول دیا۔

بلوائے گئے ہیں؟ جبریل ہولے ایاں! کما آگیا ان کا آنا مبارک ہوا ور دروازہ کھول دیا۔

جب میں وہاں پہنچاتو میں نے حضرت عیسی اور حضرت یجی علیہ منا انسکام کووہاں پایا اور وہ دونوں آپس میں خالہ زاد بھائی ہیں، جبریل نے کہا کہ یہ بجی اور عیسی علیہ ہیں، انہیں سلام کیجئے! میں نے انہیں سلام کیا، انہوں نے سلام کا جواب ویا اور کہا: صالح بھائی اور صالح نبی کوخوش آمدید ہو۔

پھر جبریل مجھے تیسرے آسان پرلے گئے اور دروازہ کھلوانا جاہا، پوچھا گیا کون؟ کہا: جبریل، پوچھا گیا تہہارے ساتھ اور کون ہے؟ کہا: مجمد رصَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم، کہا گیا کیا وہ بلائے گئے ہیں؟ جبریل نے کہا: ہاں! کہا گیا خوش آمدید، ان کا آنا بہت اچھا اور مبارک ہے اور دروازہ کھول دیا گیا۔

جب میں وہاں پہنچا تو مجھے بوسف عَلَيْهِ السَّلام ملے، جبر مل نے کہا: یہ بوسف عَلَیْهِ السَّلام ہیں، انہیں سلام کیجئے! میں نے انہیں سلام کیا، انہوں نے سلام کا جواب ویا اور کہا: صالح بھائی اور صالح نبی کوخوش آمدید ہو۔

پھر جبریل مجھے چوتھے آسان پرلے گئے اور دروازہ کھلوانا جاہا، پوچھا گیا کہ کون ہے؟ انہوں نے کہا: جبریل! پوچھا گیا تمہارے ساتھ اور کون ہے؟ جبریل بولے محمد رصَلَی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم) کہا گیا کیا انہیں بلایا گیا ہے؟ جبریل نے کہا: ہاں! دربان نے کہا: خوش آمدید، ان کا آنا بہت مبارک ہے اور دروازہ کھول دیا گیا۔

جب میں وہاں پہنچا تو میں نے حضرتِ ادر ایس عَلَیٰہِ السَّلام کود یکھا، جبر میل نے کہا: بیادر ایس عَلَیٰہِ السَّلام ہیں، انہیں سلام سیجئے! میں نے انہیں سلام کیا، انہوں نے سلام کا جواب دیا اور کہا: صالح بھائی اور صالح نبی کوخوش آمدید ہو۔

پھر مجھے جبر میل ساتھ لیکر اوپر چڑھے یہاں تک کہ پانچویں آسان پر پہنچے، انہوں نے درواز ہ کھلوایا، پوچھا گیا

کون ہے؟ کہا: جبریل، پوچھا گیاتہ ہارے ساتھ کون ہے؟ کہا: محمد رصَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم، پوچھا گیا کیا انہیں بلایا گیا ہے؟ جبریل نے کہا: ہاں! کہا گیا انہیں خوش آمدید ہو، ان کا آنا مبارک ہو۔

جب میں وہاں پہنچاتو حضرت ہارون عَلَيْهِ السَّلام ملے، جبر مل نے کہا: یہ ہارون عَلَيْهِ السَّلام ہیں، انہیں سلام سیجے! میں نے انہیں سلام کیا، انہوں نے سلام کا جواب دیا اور کہا: صالح بھائی اور صالح نبی کوخوش آمدید ہو۔

پھر جبریل مجھے اوپر لے گئے یہاں تک کہ ہم چھٹے آسان پر پہنچے، انہوں نے دروازہ کھلوایا، پوچھا گیا کون ہے؟ کہا: جبریل، پوچھا گیاتمہارے ساتھ اور کون ہے؟ کہا: محمد رصَلًى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) کہا گیا کیا وہ بلائے گئے ہیں؟ جبریل نے کہا: ہاں! اس فرشتے نے کہا: انہیں خوش آمدید ہو، ان کا آنامبارک ہے۔

جب میں وہاں پہنچا تو حضرتِ موسیٰ عَدَیْہِ السَّلام سے ملاقات ہوئی، جبریل نے کہا: یہ موسیٰ عَدَیْہِ السَّلام میں انہیں سلام سیجئے، میں نے انہیں سلام کیا، انہوں نے سلام کا جواب دیا اور کہا صالح بھائی اور صالح نبی کوخوش آ مدید ہو، پھر ہم جب آ گے بڑھے تو وہ روئے، ان سے کہا گیا آ پ کیوں روتے ہیں؟ تو انہوں نے کہا: میں اس لئے رویا ہوں کہ میرے بعدایک نوجوان مبعوث کیا گیا ہے جس کی امت کے لوگ میری امت سے زیادہ جنت میں جا کیں گے۔ میرے بعدایک نوجوان مبعوث کیا گیا ہے جس کی امت کے لوگ میری امت سے زیادہ جنت میں جا کیں گیر جبریل مجھے ساتویں آ سان پر چڑھا لے گئے اور اس کا دروازہ کھلوایا، پوچھا گیا کون؟ کہا: جبریل، پوچھا گیا کون اور اس کا دروازہ کھلوایا، پوچھا گیا کون؟ کہا: ہاں! کہا گیا انہیں خوش تمہارے ساتھ اور کون ہے؟ کہا: ممر رصلی اللهُ عَدَیْهِ وَسَلَم، پوچھا گیا کیا وہ بلائے گئے ہیں؟ کہا: ہاں! کہا گیا انہیں خوش تمہارے ساتھ اور کون ہے؟ کہا: ممارک ہے۔

جب میں وہاں پہنچاتو حضرتِ ابراہیم عَلیْهِ السَّلام ملے، جبریل نے کہا: یہ آپ کے والدِ گرامی ابراہیم ہیں، انہیں سلام سیجئے، میں نے انہیں سلام کیا، انہوں نے سلام کا جواب دیا اور کہا: صالح بیٹے اور صالح نبی کوخوش آمدید ہو۔

پھر مجھے سِدْرہُ المنتہٰی تک بیجایا گیا،اس کے پھل مقامِ ہجر کے مٹکوں کی طرح اوراس کے پتے ہاتھی کے کانوں جیسے تھے،وہاں چار نہرین تھیں،دوظاہراوردو پوشیدہ، میں نے جبریل سے بوچھا: یہنہریں کیسی ہیں؟انہوں نے کہا:جودو پوشیدہ ہیں وہ جنت کی نہریں ہیں اور جودونہریں ظاہر ہیں وہ نیل اور فرات ہیں۔

پھر بیت المعمور میرے سامنے ظاہر کیا گیا جس میں ستر ہزار فرشتے ہرروز داخل ہوتے ہیں۔ پھر مجھے ایک شراب (شربت) کا برتن، ایک دودھ کا اور ایک شہد کا برتن دیا گیا، میں نے دودھ کا انتخاب کرلیا، جبریل نے کہا: یہی فطرت ہے۔ آپ اور آپ کی امت اس پر قائم رہیں گے، اس کے بعد مجھ پر ہرروز کی بچپاس بچپاس نمازیں فرض قرار دے دی گئیں۔

پھر جب میں واپس ہوا تو موسیٰ عَدَنهِ السَّلام نے کہا: آپ کوس بات کا تکم دیا گیاہے؟ میں نے کہا: ہر دن میں پچاس، نماز وں کا،موسیٰ عَدَنهِ السَّلام نے کہا: آپ کی امت روزانہ پچاس نمازیں نہیں پڑھ سکے گی، میں آپ سے پہلے لوگوں کو پھر میں موسیٰ عَلَیْہ السَّلام کے پاس آیا، انہوں نے پہلے ی طرح کہا، میں پھرلوٹ گیااور پھر دس نمازیں معاف کردی
گئیں ۔ میں پھرموسیٰ عَلَیْہ السَّلام کے پاس آیا، انہوں نے پہلے ی طرح کہا: ، میں پھرلوٹ گیااور پھروس نمازیں معاف کردی گئیں ۔ میں پھرموسیٰ عَلَیْہ السَّلام کے پاس آیا توانہوں نے اسی طرح کہا میں پھروا پس لوٹ گیااور مجھے روزاندس نمازوں کا حکم دیا گیا میں پھرموسیٰ عَلَیْہِ السَّلام کے پاس آیا توانہوں نے اسی طرح کہا میں پھروا پس لوٹ گیااور مجھے ہر روزیا نج نمازوں کا حکم دیا گیا۔

میں جب موسی عَلَیْہِ السَّلام کے پاس لوٹ کرآیا توانہوں نے پوچھا کہ آپ کو کیا تھم ملاہے؟ میں نے کہا: روزانہ پانچ نمازوں کا تھم ملاہے، انہوں نے کہا کہ آپ کی امت روزانہ پانچ نمازیں بھی نہیں پڑھ سکے گی، میں نے آپ سے پہلے لوگوں کا تجربہ کیا ہے اور بنی اسرائیل پر سخت برتاؤ کر چکا ہوں لہذا آپ پھر اپنے رب کے حضور جائیں اوراپنی امت کے لئے تخفیف کی درخواست کریں۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِ فرمايا كمين اپنزرب سے كُل بار درخواست كر چكا موں ، اب مجھے شرم آتى ہے لہذااب میں راضی موں اور رب كے تم كوتتا ہم كرتا ہوں۔

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فرمات بين كه جب مين آ گے برُ صانو كسى پِكار نے والے نے آ واز دى كه ميں نے اپنا حكم جارى كرديا اور اپنے بندوں سے تخفیف كردى ہے۔ (1)

^{1}بخارى، كتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ٥٨٤/٢، الحديث ٣٨٨٧

اب 93



جعد کا دن ایک عظیم دن ہے،الله تعالی نے اس کے ساتھ اسلام کوعظمت دی اور بیدن مسلمانوں کے لئے خاص کردیا،فرمانِ اللی ہے:

إِذَا نُوْدِىَ لِلصَّلُوةِ مِنْ يَتُومِ الْجُمُعَةِ فَالْسَعُوا إِلَى ذِكْمِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَل

وَذَكُنُ وَالنَّهِ يَعَ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى

اس آیت ہے معلوم ہوا کہ الله تعالیٰ نے جمعہ کے وقت دنیا وی شغل حرام قر اردیئے ہیں اور ہروہ چیز جو جمعہ کے لئے رکاوٹ بنے ممنوع قر اردے دی گئی ہے۔

حضورصَلَی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم کا فر مان ہے کہ تحقیق اللّٰہ تعالیٰ نے تم پر میر ہے اس دن اوراس مقام میں جمعہ کوفرض قرار دے دیاہے۔ (2)

ا یک اورار شاد ہے کہ جو شخص بغیر کسی عذر کے تین جمعہ کی نمازیں جھوڑ دیتا ہے اللّٰہ تعالیٰ اسکے دل پرمہر لگا دیتا ہے۔ ایک روایت کے الفاظ بہیں کہ''اس نے اسلام کو پس پیثت ڈال دیا''۔ (4)

ایک شخص حضرت ابن عباس رَضِیَ اللّهٔ عَنْهُمَا کے پاس متعدد بار آتار ہااورایک ایسے شخص کے متعلق بوچ سار ہاجو مرگیااور نمازِ جمعہ اور جماعتوں میں شریک نہیں ہونا تھا۔ حضرت ابن عباس رَضِیَ اللّهُ عَنْهُمَا نے فر مایا: وہ جہنم میں ہے، وہ شخص پوراایک مہینہ یہی بوچ سے اربااور آپ یہی گہتے رہے کہ وہ جہنم میں ہے۔

حدیث شریف میں ہے کہ اہلِ کتاب کو جمعہ کا دن دیا گیا مگرانہوں نے اس میں اختلاف کیا لہٰذا بیدن ان سے

-تو جمهٔ كنز الايمان: جبنمازكي اذان بوجمعه كون توالله كذكركي طرف دورٌ واورخريد وفروخت چهورٌ دو-(ب٨٠، الجمعة:٩)
 - 2 سنن الكبرى للبيهقي، كتاب الجمعة، ٣ ٤٤/٣ ، الحديث ٥٧٥٥
 - الحديث ١٤٦٥ الحديث ١٤٦٥ الحديث ١٤٦٥ الحديث ١٤٦٥
 - 4 فضل الجمعة ، ٣/٣ ، الحادي والعشرين...الخ ، فضل الجمعة ، ٣/٣ ، ١، الحديث ٣٠٠٦

واپس لےلیا گیا،الله تعالی نے ہمیں اس کی ہدایت کی ،اسے اس امت کے لئے مؤخر کیا اور ان کے لئے اسے عید کا دن بنایا لہٰذا ریاوگ سب لوگوں سے سبقت ایجانے والے ہیں اور اہل کتاب ان کے تابع ہیں۔⁽¹⁾

حضرت انس دَضِی الله عنه سے مروی ہے، حضور صلی الله عنیه وَسَلَم نے فرمایا: میرے پاس جریل آئے، ان کے بعد ہاتھ میں سفید آئینہ تھا، انہوں نے کہا: یہ جمعہ ہے، الله تعالی اسے آپ پرفرض کرتا ہے تا کہ یہ آپ کے اور آپ کے بعد آنے والے لوگوں کے لئے عید ہو، میں نے پوچھا: اس میں ہمارے لئے کیا ہے؟ جبریل نے کہا: اس میں ایک عمد ہماعت ہے، جو شخص اس میں بھلائی کی دعا ما نگتا ہے اگر وہ چیز اس شخص کے مقدر میں ہوتو الله تعالی اسے عطافر ما تا ہے ورنداس سے بہتر چیز اس کے لئے ذخیرہ کر دی جاتی ہے یا کوئی شخص اس ساعت میں الی مصیبت سے پناہ ما نگتا ہے جواس کا مقدر ہوچکی ہے تو الله تعالی اس مصیبت سے بھی بڑی مصیبت کوٹال دیتا ہے اور وہ ہمار سے زول کا سردار ہے اور ہما تک کے میں ایک یوم مزید ما نگتے ہیں، میں نے کہا: وہ کیوں؟ جبریل نے عرض کی: آپ کے رب نے جنت میں ایک وادی بنائی ہے جو سفید ہے اور مشک کی خوشہو سے لبرین ہے، جب جمعہ کا ون ہوتا ہے توالله تعالی عِلَیّین سے کرسی پر ایکی وادی بنائی کے دوسفید ہے اور مشک کی خوشہو سے لبرین ہے، جب جمعہ کا ون ہوتا ہے توالله تعالی عِلیّین سے کرسی پر (اپنی شان کے لائق) نزولِ إجلال فرما تا ہے یہاں تک کہ سب اس کے دیدار سے مشرف ہوتے ہیں۔ (2)

حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کہ سب سے عمدہ دن جس میں سورج طلوع ہوتا ہے، جمعہ کا دن ہے، اسی دن آرے دن آرم عَلَیْهِ السَّلَام کی پیدائش ہوئی، اسی دن وہ جنت سے زمین کی طرف اتارے گئے، اسی دن ان کی توبہ قبول ہوئی، اسی دن ان کا وصال ہوا۔ (3)

اسی دن قیامت قائم ہوگی اوروہ الله کے نز دیک یوم ِ مزید ہے، آسانی فرشتوں میں اس دن کا بہی نام ہے اور یہی جنت میں الله تعالیٰ کے دیدار کا دن ہے۔ (⁴⁾

^{1}بخارى، كتاب الجمعة، باب فرض الجمعة، ١/٣٠٣، الحديث ٨٧٦

^{2}المعجم الاوسط، ١/٦٦٥، الحديث ٢٠٨٤

^{3}الجامع الصغير، ص ٩ ٢ ٢، الحديث ٩ ٦ ، ٤ ، ٩ ٦ ما حوذًا

الجمعة ، عدم الاقوال، الباب السادس في صلاة الجمعة ،
 الحديث ٧٥ ٢٧ و كنز العمال، كتاب الصلاة، قسم الاقوال، الباب السادس في صلاة الجمعة ،
 ١٩٣/٤ ، الجزء السابع، الحديث ٥٩ - ٢١ ملتقطا و روح المعاني، سورة الجمعة، تحت الآية: ٩ - ٢١ ١/٢٨

حدیث شریف میں ہے کہ الله تعالی ہر جمعہ کے دن چھلا کھانسانوں کوجہنم سے آزاد کرتا ہے۔ (1) حضرتِ اَنس دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے، حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فرمایا کہ جب تونے جمعہ کوسالم کرلیا تو گویا تمام دنوں کوسالم کرلیا۔ (2)

حضور عَلَيْهِ الصَّلَوٰةُ وَالسَّلَامِ نِي فَرِ ما يا كَجْهَم هرروز ضحوة كبرى (نصف النهار) ميں زوال سے پہلے بھڑكا ياجا تا ہے يعنی سورج جب عين آسان كے ول ميں ہوتا ہے للہذااس ساعت ميں نمازمت پڑھومگر جمعہ كے دن يہ قيز نہيں ہے كيونكہ جمعہ سارے كاسارا نماز ہے اوراس دن جہنم نہيں بھڑكا ياجا تا۔ (3)

حضرت کعب دَضِیَ اللهٔ عَنْه کا فرمان ہے کہ الله تعالیٰ نے سب شہروں سے مکہ معظمہ کوفضیات بخشی ہے،سب مہینوں میں رمضان کوفضیات عطاکی ہے،سب دنوں میں جمعہ کے دن کوفضیات دی ہے اور سب را توں میں کیکئه القدر کوفضیات عطافر مائی ہے۔ (4)

کہا گیاہے کہ جمعہ کے دن حشرات الارض اور پرندے ایک دوسرے سے ملاقات کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہاس نیک دن میں سلام ہو، سلام ہو۔

نی اَ کرم صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کہ جو خص جمعہ کے دن اور جمعہ کی رات کوفوت ہوا ،اللّٰه تعالیٰ اس کے لئے سوشہیدوں کا ثواب لکھتا ہے اور اسے قبر کے فتنہ سے بچالیتا ہے۔ (⁵⁾

- ۱۱٤/۳ عليه وسلم...الخ ، فضل الصلاة على النبي صلى الله تعالى عليه وسلم...الخ ١١٤/٣ ،
 الحديث ٢٠٤٢
 - 2شعب الايمان، الباب الثالث والعشرون...الخ ، التماس ليلة القدر...الخ ،٣٤٠/٣، الحديث ٣٧٠٨ عن عائشة
- الحديث ١٠٨٣ وشرح سنن أبي داود الحمادة على المن المن المن المن ١٠٨٦ الحديث ١٠٨٣ وشرح سنن أبي داود للعيني، باب الصلاة يوم الجمعة قبل الزوال، ٢٢١٤٢١٤ ع، تحت الحديث ٢٥٥٤

شیخ عبدالحق محدث د ملوی " اشعة اللمعات " میں فرماتے ہیں که اس حدیث کے دوراویوں ، ابوالخلیل اورا ابوقیا وہ کی ملاقات ثابت نہیں۔

- 4حلية الاولياء، تكملة كعب الاحبار، ١٤/٦، الحديث ٥٦٥٠
 - ٣٦٢٩ الحديث ١٨١/٣، الحديث ٣٦٢٩

اب 94

کے حقوق کے حقوق کے

بیوبوں کے شوہروں پر بہت سے حقوق ہیں،ان میں سے ایک یہ بھی ہے کہ وہ ان سے حسن سلوک سے پیش آئیں، ان کی عقل کی کمزوری کومکہ نظرر کھتے ہوئے ان سے مہر بانی کاسلوک کریں اور ان کے دکھ در دکو دور کریں اور اللّٰہ تعالیٰ نے ان کے حقوق کی عظمت میں فرمایا ہے:

اورليا بانہوں نے تم سے قولِ مشحكم ۔

وَّاخَنُنَ مِنْكُمُ مِّيْثَاقًا غَلِيُظًا (1)

اور مزید فرمایا که 'اور کروٹ کے ساتھی پڑ' کہا گیاہے کہاس ساتھی سے مرادعورت ہے۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے ان تین باتوں کی اس وقت وصیت فرمائی جبکہ آپ کی زبانِ اقدس وِصال شریف کے وقت لڑ کھڑارہی تھی اور کلامِ اُنور میں ہاکا پن پیدا ہو چلاتھا۔ آپ نے فرمایا: نماز ، نماز اور وہ تمہارے ہاتھ جن کے مالک ہوئے انہیں وہ تکلیف نہ دوجس کے برداشت کرنے کی وہ طاقت نہیں رکھتے ،عورتوں کے متعلق الله تعالی سے ڈرو، الله سے ڈرو، وہ تمہارے ہاتھوں میں قید ہیں ، یعنی وہ ایسی قیدی ہیں جنہیں تم نے الله تعالی کی اَمانت کے طور پرلیا ہے اور الله کے کلام سے ان کی شرمگا ہیں تم پر حلال کردی گئی ہیں۔ (2)

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كا إرشاد ہے كہ جس شخص نے اپنی بیوی كی بَخَلَقی پرصبر كياالله تعالی اسے مصائب پر حضرتِ ايوب عَلَيْهِ السَّلام كے صبر كے أجر كے برابراً جرد ہے گا اور جس عورت نے خاوند كی بَدُخُلْقی برصبر كياالله تعالی اسے فرعون كی بیوی آسید كے ثواب كے مثل ثواب عطافر مائے گا۔ (3)

- 1توجمهٔ كنز الايمان: اوروهتم سے گاڑھا عبد لے چكيں _ (ب؟ النساء: ٢١)
- الحدیث ۹ ۲۹۷۱ و مسند احمد ، حدیث ام سلمة ، ۹/۱ ، ۱۰ ، الحدیث ۲ ۲۹۷۱ و مصنف عبد الرزاق ، باب ما ینال الرجل من مملو کة ، ۳۱۲۹ ، الحدیث (۳۹۹۱) _ ۲ ۸۲۵ و مصنف ابن ابی شیبة ، ۲۵/۶ ، الحدیث ۱۲ و مسند البزار ، ۲ ۹/۱۲ ، الحدیث ۲۱۳ ملتقطاً
 - الكبائر للذهبي، الكبيرة السابعة والأربعون، نشوز المرأة على زوجها، ص٢٠٦ والزواجر عن اقتراف الكبائر،
 الكبيرة الثمانون بعد المائتين: نشوز المرأة...الخ ، ٩٨/٢ و تذكرة الموضوعات للفتني، ص٢٠١

مكاشفة القلوب

بیوی سے حسن سلوک بینیں کہ اس کی تکالیف کو دور کیا جائے بلکہ ہرالیی چیز کواس سے دور کرنا بھی شامل ہے جس سے تکلیف چنچنے کا خدشہ ہواوراس کے غصہ اور ناراضکی کے وقت جلّم کا مظاہرہ کرنا اور اس معاملہ میں حضور صَدَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَدَّم کے اُسوهَ حَسَنہ کومدِ نظر رکھنا۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَى بعض ازواحِ مطهرات آپ كى بات كو (بتقاضائے قدرت) (صورۃً) نہ بھى مانىتى اوران میں سے كوئى ایک رات تک گفتگونه کیا کرتی تھی مگر آپ ان سے حسن سلوک ہی سے پیش آیا کرتے تھے۔ ⁽¹⁾

ایک مرتبه حضرت عمردَضِیَ اللّهُ عَنه کی بیوی نے آپ کی بات کونه ما نا تو آپ نے فرمایا که اے لونڈی! تو میرے سامنے بڑھ کر بات کرتی ہے! انہوں نے عرض کی کہ حضور صَلَّی اللّهُ عَلیْهِ وَسَلَّم کی از واج مطہرات انہیں و لیا کرتیں حالانکہ وہ آپ سے بہتر تھے۔حضرت عمردَضِی اللّهُ عَنه نے فرمایا: هُفَصَه خائب وخاسر ہوئی اگر اس نے حضور صَلَّی اللهُ عَنه کی بیٹی عَلیْهِ وَسَلَّم کی بات روکر دی پھر آپ نے حضرت حُقْصَه سے فرمایا: ابن الی قُافَه (حضرت صدیق اکبردَضِی اللهُ عَنه) کی بیٹی بیٹی وَسَلَّم کی بات کو بیٹی حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم کی بات کو بیٹی اور پھر آپ نے انہیں حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم کی بات کو روکر نے سے ڈرایا۔

مروی ہے کہ ان از واجِ مطہرات میں سے سی نے حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے سینۂ انور پر ہاتھ رکھ کرآپ کو پیچھے ہٹایا توان کی والدہ نے انہیں تہدید کی حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے ان کی مال کی با تیں سن کر فر مایا کہ ان سے درگز رکرو بیاں سے بھی زیادہ کچھ کیا کرتی ہیں۔(2)

ایک بارحضرت عائشہ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا اورحضور صَلًی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَم کے درمیان کچھ بات ہوگئی یہاں تک کہ حضرتِ ابوبکر رَضِیَ اللهُ عَنْه واخل ہوئے اور انہیں فیصل بنایا گیا جب انہوں نے بات سننا جاہی تو حضور سرور کا ننات صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے حضرت عائشہ سے فر مایا جم بات کروگی یا میں ، حضرت عائشہ رَضِیَ اللّهُ عَنْه بولیں کہ بات آ بہی کریں مگر درست ، یہن کر حضرت عائشہ رَضِیَ اللّهُ عَنْه نے ان کے منہ پر ایسا طما نچہ ما را کہ ان کے منہ سے خون جاری ہوگیا اور آ ب نے کہا: اے اپنی جان کی دیمن کیا حضور صَلَّی اللهُ عَنْهِ وَسَلَّم ناحق بات کہیں گے ، حضرت عائشہ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا نے آ ب نے کہا: اے اپنی جان کی دیمن کیا حضور صَلَّی اللهُ عَنْهِ وَسَلَّم ناحق بات کہیں گے ، حضرت عائشہ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا نے

^{1}مسلم، كتاب الطلاق، باب في الإيلاء و اعتزال النساء...الخ، ص٧٨٨، الحديث ١٤٧٩

^{2}التاريخ الكبير للبخاري، ١٦٧/٨

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كى پناه تلاش كى اور آپ كى پشت مبارك كے بيجھے بيٹھ سَّنيں حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے حضرت ابو بكر دَضِى اللَّهُ عَلَيْهِ سَالًا كه بم م نے تنہيں اس ليے نہيں بلايا تھا اور نه بى جمارا بيارا وہ تھا كہ بم تم سے بيہ بات حاميں ۔ (1) حيا بيں ۔ (1)

ایک مرتبه حضرت عائشه رَضِیَ اللهٔ عَنْهَاکسی بات میں حضور صَلَّی اللهٔ عَنَیْهِ وَسَلَّم سے خفا ہو گئیں اور کہا کہ کیا آپ وہی ہیں جو سجھتے ہیں کہ میں الله کا نبی ہول آپ صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم بیہ بات می کرمسکر اوی عام وکرم کی بنا پر بیہ بات برداشت کر گئے۔ (2)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم حضرتِ عا تَشهر وَضِى اللَّهُ عَنَهَا عَ فِر ما ياكرت كه مِين تنهارى ناراضكى اورخوشى يبجإنتا بهول و حضرتِ عا تَشهر فَعْ فَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم، اللَّهُ عَنْهُ اللَّهُ عَنْهَا فَعُرُ ما يا مِين مِين اللَّهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم، اللَّهُ عَنْهَا فَعُنُهَا فَعُرُ ما يا مِين مِين اللَّهُ عَنْهَا فَعْ فَر ما يا مين صرف كوشم! حضرت عا تشهر وَضِى اللَّهُ عَنْها فَعُمْ اللهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم، اللَّهُ عَنْها فَعُنُها فَعُنْها فَعْلَى اللّهُ عَنْها فَعُنْها فَعْلَامُ عَلَيْكُ فَعُنْها فَعُنْها فَعُنْها فَعُنْها فَعُنْها فَعْلَمْ عَنْها فَعُنْها فَعُلْها فَعُنْها فَعُنْهُ عَلَيْها فَعُنْها فَعُنْها فَعُنْها فَعُن

اور پیجھی کہا گیاہے کہ اسلام میں سب سے پہلی محبت حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کی حضرتِ عا نَشه دَضِیَ اللَّهُ عَنُهَا سے محبت تھی۔ ⁽⁴⁾

اور حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم حضرتِ عا مُشَهِ سے فرما یا کرتے تھے کہ میں تمہارے لئے ابیا ہوں جبیباابوز رعہ ام زرعہ کے لئے تھے مگر میں تم کوطلاق نہیں دوں گا۔ ⁽⁵⁾

اور آ پاین از واج مُطَهرات سے بیجھی فرماتے کہ مجھے عائشہ کے بارے میں تکلیف نہ دو، بخدااس کے سواتم

- العيال، باب العيال، باب محمد بن دينار، ۱ / ۳۹/۱ و موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب العيال، باب ملاعبة الرجل اهله، الجزء الثاني، ۲۲/۸ ، الحديث ۲۳٥
 - 2مسند ابي يعلى، مسند عائشة، ٤ / ١٨١ ، الحديث ١٥٦١ دون حلمًا و كرمًا
 - 3 بخارى، كتاب الادب، باب مايجوزمن الهجران...الخ ، ٢٠/٤ ، الحديث :٧٨ . ٣
- ◄ النبى: صلى الله تعالى عليه وسلم، باب قول النبى: صلى الله تعالى عليه و آله و سلم الله تعالى عليه و آله و سلم لو كنت متخذاً خليلًا ١٨/٢٥، الحديث ٣٦٦٦ ماخوذاً
 - 5 بخارى، كتاب النكاح، باب حسن المعاشرة مع الاهل ٩/٣، ٥ ٥ ، الحديث ٩١٨٩ و يس فيه جزء الاخر

میں ہے کسی کے بستر پر مجھ پروحی نازل نہیں ہوتی۔ ⁽¹⁾

حضرت ِ اَنْسَ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ہے مروی ہے کہ حضور صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم عورتوں اور بچوں برسب لوگوں سے زیادہ ربان تھے۔ (2)

ہرانسان کے لئے مناسب میہ ہے کہ وہ خوش طَبَعی ، مِزاح اور مُلاعَبَت سے اپنی عورتوں سے ان کی تکالیف کورَ فع کرے کیونکہ ان چیز وں سے عورتوں کے دل خوش ہوا کرتے ہیں۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اپنی اَزواجِ مُطَهِّرات سے مِزاح بھی فرمالیا کرتے تھے اور ان سے ان کی عقلوں کے مطابق اُ قوال واُ فعال فرمایا کرتے یہاں تک کہ حضور صَلْی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم حضرتِ عائشد دَخِبَ اللَّهُ عَنْهَا سے دوڑ میں مقابلہ کرتے ، بھی حضرتِ عائشہ آپ سے آگے نکل جاتیں اور بھی آپ سبقت لے جاتے اور فرماتے کہ یہاں دن کا بدلہ ہے۔

حدیث شریف میں ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّما بِنِی أَز واحِ مُطَّهِّرات سے سب سے زیادہ خوش طبعی فر مانے والے تھے۔(4)

حضرت عائشہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا فر ماتی ہیں میں نے جبشی اور دوسر ہے لوگوں کی آ وازیں سنیں جوعا شورہ کے دن کھیل رہے تھے، حضور صَلَّی اللّٰهُ عَنْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: اے عائشہ! کیاتم ان کا کھیل دیکھنا چاہتی ہو؟ میں نے عرض کی ہاں! آپ نے ان کی طرف آ دی بھیجا، جب وہ آ گئے تو حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم دودروازوں کے درمیان کھڑے ہوگئے اور اپنادست اَقدس دروازہ پر کھ دیااور ہاتھ لمبا کرلیا، میں نے اپنی ٹھوڑی آپ کے ہاتھ پر جمادی، وہ لوگ کھیلتے رہے اور میں دیکھتی رہی، رسولِ اکرم صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم مجھ سے پوچھتے: بس کا فی ہے؟ میں عرض کرتی: ذرا چپ رہئے، آپ نے دویا تین مرتبہ پوچھا پھر فرم مایا: عائشہ! اب بس کرو، میں نے عرض کی: ٹھیک ہے، تب حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نَے دویا تین مرتبہ پوچھا پھر فرم مایا: عائشہ! اب بس کرو، میں نے عرض کی: ٹھیک ہے، تب حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نَے دویا تین مرتبہ پوچھا پھر فرم مایا: عائشہ! اب بس کرو، میں نے عرض کی: ٹھیک ہے، تب حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نَے دویا تین مرتبہ پوچھا پھر فرم مایا: عائشہ! اب بس کرو، میں نے عرض کی: ٹھیک ہے، تب حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم فَلَیْهِ وَسَلَّم فَلَیْهُ وَسَلَّم فَلَیْهِ وَسَلَّم فَلَیْهِ وَسَلَّم فَلَیْهِ وَسَلَّم فَلَیْهِ وَسَلَّم فَلَیْه وَلَیْه فَلَیْه وَسَلَّم فَلَیْهُ وَسَلَّم فَلَیْه وَلَیْه فَلَیْهِ وَسَلَّم فَلَیْهِ وَسَلَّم فَلَیْه وَلَیْه فَلَیْه وَلَیْه وَلَیْه فَلَیْه وَلَیْه فَلَیْهُ وَلَیْه وَلَیْ فَلَیْه وَلَیْه فَلَیْه وَلَیْن فَلَیْه وَلَیْه فَلَیْه وَلَیْه وَلِیْ فَلَیْه وَلَیْ فَلَیْهُ وَلِیْ فِلْمِیْ فَلَیْهُ وَلَیْه وَلَیْه وَلَیْه وَلَیْ فَلَیْهِ وَلَیْ فَلَیْهِ وَلَیْ فَلَیْهِ وَلَیْ فَلَیْ فَلَیْ فَلِیْ فَلَیْ فَلَیْهُ وَلَیْهُ وَلَیْهُ وَلَیْم فَلَیْهِ وَلَیْ فَلَیْهِ وَلَیْ فَلَیْ فَلَیْهِ وَلَیْ فَلَیْ فَلَیْ فَلَیْ فَلِیْ فِلْمُولِیْ فَلَیْنُو وَلَیْ فِلْکُمْ وَلِیْ فَلِیْ فِلْمِیْ فِلْمِیْ فِلْم فَلَیْنِ فَلَیْ فَلَیْ فِلْمُولِیْ فَلِیْ فِلْمِیْ فَلَیْ فِلْمُلْمُیْ فَلَیْکُولُمْ وَ

^{1 ----} بخارى، كتاب الهبة... الخ، باب من اهدى الى صاحبه... الخ، ٢ / ٦٩ ١ ، الحديث ٢ ٥٨١

^{2 ----}ابن عساكر، ٨٨/٤

^{3}ابوداود، كتاب الجهاد، باب في السبق على الرجل ، ٢/٣، الحديث ٧٨ ٢

^{4.....}مصنف ابن ابي شيبة ، ٨٩/٦، الحديث ١٥ و مسند البزار، ٨٧/١٣، الحديث ٢٤٤١ فيه مع الصبي

.

انہیں اِشارہ فرمایا تو وہ واپس چلے گئے۔(1)

اورحضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: مومنوں میں کامل ترین ایمان والاوہ ہے جس کاخُلُق عمدہ ہواور جواپنے گھر والوں برنہایت مہر بان ہو۔ ⁽²⁾

نبی اکرم صَلّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّم کاارشاد ہے کہتم میں سے بہتر وہ ہے جواپی عورتوں سے بہتر ہےاور میں اپنی اَز واج کے ساتھ تم سب سے بہتر سلوک کرنے والا ہوں۔⁽³⁾

حضرت عمر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه نے فر مایا کہ غصے کے باوجودانسان کے لئے مناسب ہے کہ وہ اپنے گھر والوں کے ساتھ نیچ جبیبا ہواور جب گھر والے اس سے پچھ طلب کریں جواس کے پاس موجود ہوتو وہ اسے مرد پائیس (یعنی وہ مطلوبہ شے میں بخل نہ کرے)۔

حضرت ِلقمان نے فرمایا بتقلمند کے لئے مناسب ہے کہ وہ اپنے گھر والوں سے بچے کی طرح ہواور جب قوم میں ہو تو جوانوں کی طرح ہو۔

اس مدیث کی تفسیر میں جس میں حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نِفْر مایا ہے کہ الله تعالی ہر جَعْظَری جَوَّا ظ سے بغض رکھتا ہے۔

کہا گیا ہے کہاس سے مرادا پنے گھر والوں سے ختی کرنے والا اورخود بنی میں مبتلا ہے اور یہ انہیں معانی میں سے ایک معنی ہے جوفر مانِ الہی عُتُلِ کی تفسیر میں کہا گیا ہے کہاس سے مراد برخُلْق، زبان دراز، اپنے گھر والوں پر تشد دکرنے والا ہے۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِي حضرتِ جابر دَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ سِي فرما ياتم في باكره سي شاوى كيول نهى وه تم سي هياتى اورتم اس سے خوش طبعى كرتے _ (5)

- 1 مؤطا امام محمد، ابواب السير، باب النظر الى اللعب، ص ٣٢١، الحديث ٩٠٦
- 2ترمذي، كتاب الايمان، باب ماجاء في استكمال الايمان...الخ، ٢٧٨/٤، الحديث ٢٦٢١
 - 3ابن ماجه، كتاب النكاح، باب حسن معاشرة النساء، ٤٧٨/٢، الحديث١٩٧٧
 - 4 صحيح ابن حبان ، كتاب العلم، باب الزجر عن كتبة المره... الخ ، ١٤٥/١ ، الحديث ٧٢
 - 5بخاري، كتاب الجهاد والسير، باب استئذان الرجل الامام، ٢/ ٠٠٠، الحديث ٢٩٦٧

ایک بَدُویی نے اپنے مردہ خاوند کی ان الفاظ میں تعریف کی ، بخدا! جب وہ گھر میں داخل ہوتا تو سداہنستار ہتا ، جب وہ باہر نکاتا توجیپ رہتا ، جو کچھ ملتا کھالیتا اور جو کچھ موجود نہ ہوتا اس کے متعلق سوال نہ کرتا۔

انسان کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ وہ مُلاَعَبَت، مُشنِ خُلْق اوراس کی خواہشات کی موافقت میں اس حد تک نہ بڑھے کہ اس کی عاد تیں بگڑ جا کیں اوراس کے دل سے مرد کی ہیبت بالکل اُٹھ جائے بلکہ ہر معاملہ میں اِعتدال کو ملحوظ رکھے اوراپنی ہیبت اور دَبد بہ بالکلیہ ختم نہ کرے۔

مرو پرلازم ہے کہاس سے کوئی نامناسب بات نہ سے اور اسے بُرے کاموں میں دلچیبی نہ لینے وے بلکہ جب بھی ا اسے شریعت ومُرُوَّت کے خلاف گامْزَن پائے اس کی تَمْزَنْشِ کرے اور اسے راور است پرلائے۔

حضرت حِسن رَضِيَ اللهُ عَنُه نِے فرمایا کہ الله کی تتم! جو بھی مردا پنی بیوی کی نفسانی خواہشات کی پیروی کرتا ہے توالله تعالی اسے اوندھا جہنم میں ڈالے گا۔

حضرت عمردَ ضِيَ اللهُ عنه نے فرمایا:عورتوں کی مخالفت کرو کیونکدان کی مخالفت میں برکت ہے۔

اور رہیمی کہا گیا ہے کہان سے مشورہ کرواوران کی مخالفت کرو۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فرمايا: عورت كاغلام بلاك بوا_(1)

اور آپ نے بیاس لئے فر مایا کیونکہ مرد جب عورت کی خواہشاتِ نفسانی کی پیروی کرتا ہے تو وہ اس کا غلام اور بندہ بن جاتا ہے کیونکہ اللہ تعالی نے اسے عورت کا مالک بنایا مگراس نے عورت کو اپنامالک بنادیا، گویااس نے برعکس کا م کیا

اورخدائی فیصله کےخلاف شیطان کی إطاعت کی جیسا که اس نے کہا:

''اورالبتة حَلَم كروں گاان كوپس كيميرو اليس گےخدا كى پيدائش كو۔''⁽²⁾

اورمردکاحق بیہے کہوہ منٹوع ہو، تابع مُهمّل نہ بنے چنانچہ الله تعالیٰ نے مردوں کو بینام دیاہے کہ

مردعورتوں پرحکمران ہیں۔

الرِّجَالُ قَوْمُونَ عَلَى النِّسَآءِ (3)

- كشف الخفاء، ٢/٢، تحت الحديث ٧٢ه١ و تذكرة الموضوعات للفتني، ص١٢٨
- انساه: ۱۹: النساه: ۱۹ منرورانهیں کہول گا کہوہ الله کی پیدا کی ہوئی چیز بدل دیں گے۔ (ب۵، النساه: ۱۱۹)
 - 3ترجمهٔ كنز الايمان: مردافسر بين عورتول بر ـ (په ، النساء: ٣٤)

اورشو ہرکوسر دار کا نام دیا گیاہے چنانچ فرمانِ الہی ہے:

وَّٱلْفَيَاسَيِّدَهَالَدَاالُبَابِ (1)

ان دونوں نے اس کے سردار (خاوند) کودروازے کے قریب پایا۔

اور جب سر دارتا بع فرمان ہوجائے تو گویاس نے نعمت الہی کا گفران کیا۔

عورت کانفش بھی تیرنے نَفْس کی طرح ہے اگر تواہے معمولی ہی ڈِھیل دے دیگا تو وہ بہت زیادہ سرکش ہوجا تا ہے، اگر تواہے بھریورڈھیل دے دیگا تو وہ بالکل تیرے ہاتھ ہے نکل جائے گا۔

ا مام شافعی رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ تین ہستیاں ایسی ہیں كہ اگر توان كی عزت كرے گا تو وہ تجھے ذكيل كریں گے اورا گر توان كی إ ہانت كرے گا تو وہ تیرى عزت كریں گے، عورت، خادم اور گھوڑا۔

ان کی مرادیہ ہے کہ اگر تونے ان سے صرف زمی کا برتاؤ کیا اور زمی توختی سے نہ ملایا اور مہر بانی سے سَرزَلْش کو نہ ملایا تو یہ تجھے نقصان دیں گے۔

روٹی کے ٹکڑے کی حکایت

ایک مرتبہ حضرت سِیدً ناعبد الله بن عمر دَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا نے زبین پر روٹی کا کلڑا پڑا دیکھا تو غلام سے فرمایا: اِسے صاف کر کے رکھ دو۔ جب غلام سے شام کو افطار کے وقت وہ کلڑا ما نگا، اُس نے عرض کی: وہ تو میں نے کھالیا، فرمایا: جا تو آزاد ہے کیوں کہ میں نے تاجد ار مدینہ، راحت قلب وسینہ، فیض گنجینہ، صاحب منعظر پسینہ صلّی الله عَلَیْهِ وَسَلَم سے سُنا ہے: جوروٹی کا پڑا ہوا کلڑا اُٹھا کر کھالیتا ہے تو اُس کے بیٹ میں پہنچنے سے پہلے ہی الله عَزَّوَ جَلِّ اُس کی معفرت فرمادیت یا ۵) سطرح سے پہلے ہی الله عَزَّوَ جَلِّ اُس کی معفرت فرمادیت یا ۵)

ںتو جمهٔ کنوالایمان: اور دونو ل کوعورت کامیال دروازے کے پاس ملا (۲۰، یوسف:۲۰)

اب 95

خ حقوق شوهر بذمّهٔ زن 🗲

نکاح اِطاعت کی ایک قتم ہے لہذا بیوی خاوندگی مُطِع ہے اوراس پرلازم ہے کہ خاونداس سے جو پچھ طلب کرے وہ اس کی اِطاعت کی ایک قتم ہے اللہ تعالیٰ کی نافر مانی کا حکم نہ دے۔ بیوی پرخاوند کے حقوق کے متعلق بہت می اُصادیث وارد ہوئی ہیں ،ارشادِ نبوی ہے کہ جو عورت اس حالت میں مرے کہ اس کا خاونداس سے راضی ہووہ جنت میں جائے گی۔ (۱)

ایک شخص سفر پرروانہ ہوااوراس نے اپنی بیوی سے عہدلیا کہ وہ او پر سے نیچے نہ اترے، اس کا باپ نیچر ہتا تھا، وہ بیار ہوگیا، اس عورت نے حضور صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں آ دمی بھیج کر باپ کے پاس جانے کی اجازت طلب کی، حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ اپنے خاوند کی اِطاعت کر، پھر وہ مرگیااور عورت نے پھر اِجازت طلب کی تو حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: اپنے خاوند کی اِطاعت کی اجہے کو فن کر دیا گیااور حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے اسے خبر دی کہ الله تعالی نے اس کے خاوند کی اِطاعت کی وجہ سے اس کے باپ کو بخش دیا ہے۔

نبی کریم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا فرمان ہے کہ جبعورت نے پانچ نمازیں پڑھیں، ما ورمضان کے روزے رکھے، اپنی عِصْمَت کی حفاظت کی اورا پیخشو ہر کی اِطاعت کی ، وہ اپنے رب کی جنت میں داخل ہوئی۔⁽³⁾ اورسر کارعَلیْه الصَّلوٰهُ وَالسَّلام نے شوہر کی اِطاعت کواسلام کی مُبادِیات میں سے قرار دیا۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كى خدمت مين عورتوں كاتذكره ہواتو آپ نے فرمایا: حامِلہ ، بچہ جننے اور دودھ بلانے والى ، اپنى اولا دوں برمہر بانى كرنے والى عورتيں ، اگراپئے شوہركى نافر مانى نه كريں توان ميں جونماز برا صنے والى بيں وہ

^{🚹}ترمذي، كتاب الرضاع، باب ما جاء في حق زوج على المراة، ٣٨٦/٢، الحديث ١١٦٤

^{2}المعجم الاوسط، ٥/٢٧٢، الحديث ٧٦٤٨

^{3}مسند احمد، حديث عبدالرحمن بن عوف الزهري، ٢/١ .٤، الحديث ١٦٦١

جنت میں داخل ہوں گی۔(1)

رسولِ اکرم صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کاارشاد ہے کہ میں نے جہنم کودیکھااس میں رہنے والی اکثر عور تیں تھیں تو خواتین میں سے بعض نے عرض کیا: یادسول الله (صَلَّى اللَّهُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) !کس کی وجہ ہے؟ آپ نے فرمایا: کثرت سے لعنت کرتی ہیں اور خاوند کی نافر مانی کرتی ہیں۔ (2) بیعنی جوانہیں زندگی گزار نے میں مدودیتا ہے،اس کے شکر یے کی بجائے کفران کرتی ہیں۔

دوسری حدیث میں آیا ہے کہ میں نے جنت کو دیکھا،اس میں سب سے کم عور تیں تھیں، میں نے کہا:عور تیں کہاں ہیں؟ جبریل نے کہا:انہیں دوسرخ چیزوں نے مشغول کر دیا ہے،سونے اور زَعفران نے، بیعنی زیورات اور رنگین کپڑوں نے۔(3)

^{1}المعجم الكبير، ٨/٢٥٢، الحديث ٧٩٨٥

^{2}سنن الكبرى للنسائي، كتاب عشرة النساء ، باب ما ذكر في النساء ، ٣٩٨/٥، الحديث ٢٥٦٩

^{€.....}قوت انقلوب، ٢/٢ ٤١ و المعجم الكبير، ٢٣٦/٨، الحديث ٧٩٢٣ وكشف الخفاء، ١٥٥٥، تحت الحديث ١٢٨٨

M

اگراس نے ایسا کیا تو وہ بھوکی پیاسی رہی اوراس کاروزہ قبول نہیں ہوگا اورا گرگھر سے خاوند کی اجازت کے بغیر باہر نکلی تو جب تک وہ واپس نہ ہوجائے یا تو ہدنہ کرے، فرشتے اس پر لعنت کرتے رہتے ہیں۔⁽¹⁾

حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کہ اگر میں کسی کوئسی کے لئے سجدہ کا تھم دیتا تو عورت کو تھم دیتا کہ وہ اپنے خاوند کو تجدہ کرے۔(2) کیونکہ خاوند کے بیوی پر بہت حقوق ہیں۔

> فرمانِ نبوی ہے :عورت اس وقت رب تعالی سے زیادہ قریب ہوتی ہے جب وہ گھر کے اندر ہو۔ (3) اورعورت کا گھر کے صحن میں نماز پڑھنامسجد میں نماز پڑھنے سے افضل ہے۔ (4)

اورگھرکےاندرنماز پڑھناصحن میں نماز پڑھنے سےافضل ہےاورگھرکےاندروالےگھر میںاس کی نماز کمرے میں نماز سےافضل ہے۔⁽⁵⁾

یہ آپ نے مزید بردہ نشینی کے لئے فرمایا، اسی لئے فرمانِ نبوی ہے کہ عورت سراسر بَرَ ثِمَلَی ہے، جب وہ نکلتی ہے تو شیطان اسے جھانکتا ہے۔ (⁶⁾

نیز فر مایا کہ عورت کے لئے دس برَ ثِهَنگیاں ہیں جب وہ شادی کرتی ہے تو خاونداس کی ایک برَثِنگی ڈھانپ لیتا ہے اور جب وہ مرتی ہے تو قبراس کی تمام عریانیاں چھپالیتی ہے۔ ⁽⁷⁾

عورت پرخاوند کے بہت سے حقوق ہیں،ان میں سے دوبا تیں اہم ہیں،ان میں سے ایک گہبانی اور پردہ ہے، دوسرا حاجت کے علاوہ دیگر چیزوں کا مطالبہ نہ کرنا اور مرد کی حرام کی کمائی سے حاصل کردہ رزق سے پرہیز، گزشتہ

- €مسند ابي يعلي، ٤٣٨/٢، الحديث ٤٤٤٩ دون ذكر الصوم
- 2ابن ماجه، كتاب النكاح، باب حق الزوج...الخ ، ٢/١١٪، الحديث ١٨٥٢
 - 3 البزار، مسند عبدالله بن مسعود، ٥/٢٤، الحديث ٢٠٦١
 - 4مسند امام احمد ، حديث ام حميد ، ١٠/١ ، ٣١ ، الحديث ٢٧١ ٥٨
- 5سنن ابي داود، كتاب الصلاة، باب التشديد في ذالك...الخ، ١ / ٢٣٥، الحديث ٧٠٥
- 6ترمذي، كتاب الرضاع، باب ماجاء في كراهية الدخول...الخ ،٣٩٢/٢، الحديث ١١٧٦
 - 7فردوس الاخبار، ۲/۰۹، الحديث ٤٠٠٤

X

زمانے میں عورتوں کا یہی کر دارتھا چنانچیہ آ دمی جب گھرہے باہر نکاتا تو اس کی بیوی یا بیٹی اسے کہتی کہ حرام کی کمائی سے بچنا کیونکہ ہم د کھ در داور بھوک بر داشت کر سکتے ہیں مگر جہنم کی آگ بر داشت نہیں کر سکتے۔

گزشتہ لوگوں میں سے ایک آ دمی نے سفر کا ارادہ کیا تو اس کے ہمسائیوں نے اس کے سفر کو اچھا نہ ہمجھا اور انہوں نے اس کی بیوی سے کہا: تو اس کے سفر پر کیسے راضی ہوئی حالا نکہ اس نے تیرے لئے خرج وغیرہ نہیں چھوڑا، عورت نے کہا: میرا خاوند جب سے میں اسے جانتی ہوں میں نے اسے بہت کھانے والا پایا ہے، رزق دینے والانہیں پایا، میرا رب رزاق ہے، کھانے والا چلا جائے گا اور رزق دینے والا باقی رہےگا۔

حفرت رابعہ بنت آملعیل نے حضرت احمد بن ابی الحواری کو نکاح کا پیغام دیا مگر انہوں نے اپنی عبادت گر اری کی وجہ سے خصے عور توں سے مجبت اور اُنس وجہ سے شادی کو ناپیند کیا اور ان سے جواب میں کہا بخدا! عبادت کی مشغولیت کی وجہ سے مجھے عور توں سے مجبت اور اُنس نہیں رہا۔ رابعہ نے کہا: میں آپ کو اپنے شغل سے مخرف کرنے اور خواہ شات کی تکمیل کے لئے نکاح کا پیغام نہیں دے رہی ہوں بلکہ میں نے اپنے سابق خاوند کے ور شہ میں سے مالی کثیر پایا ہے، میں چاہتی ہوں کہ یہ مال آپ کے نیک بھائیوں پر خرج کروں اور آپ کے سبب مجھے آپ کے بھائیوں کا پیتہ چل جائے گا اور میں نیکوں کی خدمت کر کے اللّٰہ تعالیٰ کا راستہ یا لوں گی۔

 بیوی پر بی بھی لازم ہے کہ وہ خاوند کے مال کوضائع نہ کرے بلکہ اس کی حفاظت کرے، فرمانِ نبوی ہے:عورت کے لئے حلال نہیں کہ خاوند کے گھر سے اس کی اِجازت کے بغیر کچھ کھائے۔ (1) ہاں ایسا کھانا کھاسکتی ہے جس کے خراب ہونے کا اندیشہ ہو،اگر بیوی، خاوند کی رضامندی سے کھائے گی تو اسے خاوند کے برابر تواب ملے گاور نہ خاوند کی اجازت کے بغیر کچھ کھائے گی تو خاوند کو اجر ملے گا گر بیوی پر گناہ ہوگا۔

والدین پرق ہے کہ وہ اڑی کی بہترین تربیت کریں، اسے الی تعلیم دیں جس سے وہ عمدہ رہن ہن اور خاوند سے بہتر برتا و کے آ داب سیھ جائے جیسا کہ مروی ہے کہ اُساء بنت خارِجَہ فَزَ اری نے اپنی بیٹی کی شاد کی کے وقت اس سے کہا: اب تم اس شیمن سے نکل رہی ہو جو تہہارا انجاء و کامن تھا لیکن ا بہتم ایسے فراش پر جارہی ہو جس سے تہہارا کبھی واسطہ نہ پڑا اور ایسے شوہر کے پاس جس سے تم نے کبھی بھی الفت نہیں کی تو تم اس کے لئے زمین بن جاؤوہ تہہارا آسان ہوگا تم اس کا بچھونا بن جاؤوہ تہہارا آسان ہوگا تم اس کا بچھونا بن جاؤوہ تہہار ہے گئا رہ بوگا ، اس سے کنارہ کش نہ رہنا ور نہ وہ تجھ سے دور بوجائے گا، اس سے کنارہ کش نہ رہنا ور نہ ہوا ہوا ہے گا، اگر وہ تیرا قرب چا ہے تو اس کے قریب ہوا گروہ تجھ سے دور عمدہ وہو تھے بھول جائے گا، اگر وہ تیرا قرب چا ہے تو اس کے قریب ہوا گروہ تجھ سے دور عمدہ نوشبو کے علاوہ اور بچھ نہو کی حفاظت کرنا تا کہ وہ تجھ سے عمدہ خوشبو کے علاوہ اور بچھ نہ سونگھے، عمدہ بات کے سوااور بچھ نہ سے اور وہ تجھ بھیشہ خوبصورت ہی دیکھے۔ ایک شخص نے اپنی بیوی سے کہا:

خذى العفو منى تستديمي مودتي ولا تنطقي في سورتي حين اغضب

ولا تنقريني نقرك الدف مرة فانك لاتدرين كيف اغيب

ولا تكثرى الشكوى فتذهب بالهوى ويأباك قلبى والقلوب تلقب

فاني رايت الحب في القلب والاذي اذا اجتمعا لم يلبث الحب يذهب

﴿1﴾معاف كرنااختيار كرميري محبت دائم رہے گی اور جب مجھے غصه آجائے تو ميري شان ميں نه بولنا۔

﴿2﴾..... مجھے دَف کی طرح ٹھوکرنہ لگا نا کیونکہ تونہیں جانتی کہ میں کیسے غائب ہوجا تا ہوں۔

﴿3﴾اور شکایات زیادہ نہ کرنا کہ محبت ختم ہوجائے گی اور میراول تیراا نکار کردے گا اور دل توبد لتے رہتے ہیں۔

﴿4﴾ میں نے دل میں محبت اور عداوت دلیمھی ہے اور جب دونوں جمع ہوں تو محبت نہیں رہتی وہ چلی جاتی ہے۔

1قوت القلوب، ٢/٥/٢ و سنن الكبرى للبيهقى، كتاب الزكاة، باب من حمل هذه الأخبار، ٣٢٥/٤، الحديث ٧٨٥٧ و حامع الصغير، ص٢٢٧، الحديث ٣٧٣٧ و تاريخ مدينه دمشق، ٣٩٨/٢٧ الحديث ٣٢٤٩





خ فضیلتِ جہاد کے

الله تعالى ارشا دفر ما تاج:

بے شک مومن وہی لوگ ہیں جواللہ اوراس کے رسول پر ایمان لائے اوراس کے رسول پر ایمان لائے اوراس کے رسول پر ایمان لائے اوراپینے مالوں اور جانوں کے ساتھ اللہ کی راہ میں جہاد

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ امَنُوْ الِاللهِ وَمَسُولِهِ ثُمَّلَمُ يَرْتَا ابُوْا وَجْهَدُوْ الِاللهِ مُوَالِهِمُ وَا نَفْسِهِمْ فِي سَبِيْلِ اللهِ مُ أُولِيكَ هُمُ (1) الصَّدِقُونَ ۞

کیا یہی لوگ سیجے ہیں۔

حضرتِ نَعُمَان بَن بَشِيرُ دَضِيَ اللهُ عَنه كاكهنا ہے، ميں منبررسول كقريب تھا كه ايك آدى كويہ كہتے ہوئے سنا كہ جھے إسلام كے بعد اور سي عمل كى تمنانہيں مگريہ كہ ميں حاجيوں كو پانى پلاؤں، دوسرے نے كها: جھے اسلام كے بعد بيت الله كى خدمت كے سواكسى اور عمل كى تمنانہيں ہے، ايك اور بولا كه تمهارے ان كاموں سے جہادافضل ہے۔ حضرتِ عمر دَضِيَ اللهُ عَنهُ فَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَ قريب آوازيں بلندنه كرو، وہ جمعه كادن تھا۔ جب ميں نے جمعه كى نماز اواكر لى تو ميں حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كى خدمت ميں حاضر ہوااوراس بات كے متعلق بوجھا: جس ميں وہ إختلاف كررہے تھے، تب الله تعالى نے اپنايه فرمان نازِل فرمايا:

کیا حاجیوں کا پانی پلانا اور مجدحرام کی خدمت کرنا اس خف کے اعمال کی طرح ہے جواللہ اور آخرت کے دن پرایمان لاتا ہے اور اس کی راہ خدامیں جہاد کرتا ہے بیلوگ الله کے زودیک برابر

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِ وَعِمَا مَةَ الْسَّعِدِ الْحَرَامِ كَمَنُ الْمَعْدِ الْحَرَامِ كَمَنُ الْمَعْدِ الْمَعْدِ الْمَالِيَّةُ وَالْمَالِ اللَّهِ لَا لِللَّهِ مَنْ الْمُعْدِلِ اللَّهِ لَا لِللَّهِ مَنْ الْمُعْدِلِ اللَّهِ مُنْ الْمُعْدِلِ اللَّهِ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللْمُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللِمُ اللَّهُ مُنْ اللِمُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللِمُنْ اللِمُنْ اللَّهُ مُنْ اللْمُنْ اللَّهُ مُنْ اللْمُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهُ مُنْ اللْمُنْ اللْمُنْ اللّهُ مُنْ الللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ الْ

عِنْدَاللهِ لَوَاللهُ لا يَهْدِى الْقَوْمَ الظَّلِمِينَ (2)

نہیں ہوسکتے اورالله تعالیٰ ظالموں کی قوم کو ہدایت نہیں فرما تا۔

- س. تو جمه کنز الایمان: ایمان والے تو وی بین جوالله اوراس کے رسول پرایمان لائے پھرشک ندکیا اورا پنی جان اور مال سے الله کی راه میں جہاوکیا وہی سیچے بیں۔ (ب٢٦، الحجرات: ١٥)
- ستو جمهٔ کنز الایمان: تو کیاتم نے عاجیول کی سبیل اور سجر حرام کی خدمت اس کے برابر تظہر الی جوالله اور قیامت پرایمان لایا اورالله کی راہ میں جہاد کیاوہ الله کے نزویک برابر نہیں اور الله ظالمول کوراہ نہیں ویتا۔ (ب، ۱، النوبة: ۹).....مسلم، کتاب الامارة، باب=

حضرت عبدالله بن سلام رَضِيَ اللَّهُ عَنُه سے مروی ہے کہ ہم چندساتھی اکٹھے بیٹھے تھے۔ ہم نے کہاا گرہم جانت کہ کونساعمل افضل ہے اور الله تعالیٰ کوزیادہ محبوب ہے تو ہم وہی عمل کرتے ،اس پرید آیاتِ مبارکہ نازل ہوئیں:

سَبَّحَ بِللهِ مَا فِي السَّلُوْتِ وَمَا فِي الْأَنْ ضَ وَهُ وَالْعَزِيْرُ الْحَكِيْمُ ۞ يَاكَيُّهَا الَّذِينَ امَنُوْ الِمَ تَعُولُوْنَ مَالا تَفْعَلُوْنَ ۞ إِنَّ كَبُرَمَقُتَّاعِنُ مَا اللهِ اَنْ تَعُولُوْا مَا الا تَفْعَلُوْنَ ۞ إِنَّ الله كَيُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُوْنَ فِي سَمِيلِهِ صَفًّا كَانَّهُمُ بُنْيَانُ الله كَيُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُوْنَ فِي سَمِيلِهِ صَفًّا كَانَّهُمُ بُنْيَانُ مَّرْصُوْنُ ۞ (1)

الله کی پاکی بیان کرتی ہے جو چیز بھی آسانوں اور زمینوں میں ہے اور وہ غالب حکمت والا ہے اے ایمان والوہ ہات کیوں کہتے ہو جونییں کرتے الله کے نزد کی سے بات بہت ناپسندیدہ ہے کہتم وہ کچھ کہو جونییں کرتے خشیق الله تعالی ان اوگوں کو محبوب رکھتا ہے جواس کی راہ میں صف باندھ کراؤتے ہیں جیسے

وهسیسیه پلائی ہوئی د بوار ہوں۔

اور حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِي بَهميل بير**آيات** سنا تَين _ ⁽²⁾

ایک روایت میں ہے کہ ایک شخص نے عرض کی نیاد سول الله! مجھے ایسائمل بتلایئے جو جہاد کے برابر ہو، آپ نے فرمایا: میں ایسا کوئی عمل نہیں یا تا، پھر فرمایا: کیاتم اس بات کی تاب رکھتے ہو کہ جب مجاہد ہجاد کے لئے روانہ ہوں تو تم مسجد میں داخل ہوجا و اور ہمیشہ عبادت میں رہو، کبھی وقفہ نہ کرو، ہمیشہ روز سے سے رہو کبھی إفطار نہ کرو، اس نے عرض کی یارسول الله! کون ہے جواس کی طاقت رکھتا ہے۔ (3)

حضرت ابو ہر میرہ وَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے کہ حضور صَدَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَدَّم کے ایک صحابی کا الیم گھا ٹی سے گزرہوا جس میں میٹھے پانی کا چشمہ تھا، انہوں نے کہا: میں لوگوں سے گوشہ شنی اختیار کر کے اس گھا ٹی میں عبادت کروں گا اور یہیں قیام کروں گالیکن حضور صَدَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَدَّم کی اجازت کے بغیرایسا ہر گرنہیں کروں گا چنا نچیانہوں نے حضور صلّی

⁼ فضل الشهادة...الخ ، ص ٤٤ ، ١ ، الحديث ١١١ ((١٨٧٩)

[•] است تو جمهٔ کنز الایمان: الله کی پاکی بولتا ہے جو پھی آسانوں میں ہے اور جو پھیزیمن میں ہے اور وہی عزت وحکمت والا ہے۔اے ایمان والو کیوں کہتے ہووہ جونیس کرتے کتنی بخت نالپند ہے الله کووہ بات کہ وہ کہو جو نہ کرو ۔ بیشک الله دوست رکھتا ہے آئیس جواس کی راہ میں لائے ہور کہ باندھ کرگو یاوہ عمارت میں الگا کہ درسہ ۲۰ انصف: ۱ ۔ ٤)

^{2}ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة (الصف)، ۲۰۳٥ ،الحدیث ۳۳۲۰

^{3.} ۲۷۸۰ الحديث ۲۷۸۰

_ [7]

اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم كَى خدمت مِين آكريه بات عرض كى تو آپ نے فرمایا: ایسانه کروکیونکه تمهاراراو خدامیں جہاد کے گئرا ہونا، گھر میں سترسال كى نمازے افضل ہے، كیاتم اس بات كو پسندنہیں كرتے كه الله تمہیں بخش دے اور تمہیں جنت میں داخل كرے، راہ خدامیں جہاد كرو جو تخص أو ٹمنى كا دودھ دو ہنے كے وقفہ كے برابر بھى جہاد كرتا ہے اس كے لئے جنت واجب ہوجاتی ہے۔ (1)

جب حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے اپنے صحافی کوعبادت کے لئے مُرْزَلَت نَشِیْنی کی اجازت نہیں دی حالانکہ ان کاشوقِ عبادت مُسلَّم تھا اور نیکیوں میں ان کی موافقت شک وشہہ سے بالاتھی ، بلکہ انہیں جہاد کی ترغیب دی ، تو ہم جبکہ ہماری نیکیاں کم ہیں اور گناہ زیادہ ، ہم حرام اور مشتبہ غذائیں کھاتے ہیں اور ہمارے عزائم اور نیتیں فاسد ہیں ، ہمارے لئے جہاد کا ترک کرنا کس طرح مناسب ہوسکتا ہے۔

رسولِ اکرم صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کاارشاد ہے کہ راوِخدا میں جہاد کرنے والے کی مثال روزہ دار بخشوع وخضوع سے عبادت کرنے والے ، تُلوع کرنے والے اور جود کرنے والے جانتا ہے اور اللہ تعالی جانتا ہے کہ کون اس کی راہ میں جہاد کرنے والا ہے۔ (2)

فرمانِ نبوی ہے کہ جواللہ کے رب ہونے پر ،اسلام کے دین ہونے پر اور محمد صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کے رسول ہونے پر راضی ہوااس کے لئے جنت واجب ہوگی۔ حضرتِ ابوسعید خُدری دَضِیَ اللهُ عَنْه کویہ بات پسند آئی ،عرض کی نیاد سول الله! ایک باریہ بات مجھ سے پھر ارشا دفر ما دیجئے چنا نچہ آپ نے اسے مکر دفر مایا پھر فر مایا: ایک اور ممل ہے جس کے سبب الله تعالیٰ بندے کے سودرجات بلند کرتا ہے اور ہر دودرجات کا درمیانی فاصلہ زمین و آسان کے فاصلہ کے برابر ہوگا ، ابوسعید دَضِیَ اللهُ عَنْه نے عُض کی یاد سول الله! وہ کونساعمل ہے؟ آپ نے فر مایا: راہ خدامیں جہاد کرتا۔ (3)

.....☆.....☆......☆

¹ ٢٥٦٠ كتاب فضائل الحهاد، باب ماجاء في فضل الغدو ...الخ ٢٤٥/٣٠ الحديث ٢٥٦١

^{2}نسائي، كتاب الجهاد، باب مثل المجاهد...الخ، ص ٥٠٠ الحديث ٣١٢٤ بالتقديم و التاخير

^{3} مسلم، كتاب الامارة، باب بيان ما اعده الله تعالى ... الخ، ص ٥٥، ١، الحديث ١١٦ ـ (١٨٨٤)

X

[97 ·!

فريب كاري شيطان

کسی شخص نے حضرت ِ حسن رَ حُمَهُ اللهِ عَلَيْه مِ عَرْض کیا که کیا شیطان سوتا بھی ہے؟ وہ سکرائے اور کہا: اگروہ سوتا تو ہم راحت پاتے ،معلوم ہوا کہ مومن کو شیطان سے رہائی پانی دشوار ہے، ہاں اسے اپنے سے دور کرنے اور اس کی قوت کو کمز ورکرنے کی راہیں ہیں۔

فرمانِ نبوی ہے کہ مون شیطان کو گبلا کر دیتا ہے جیسے تم میں سے کوئی (طویل) سفر میں اُونٹ کو گبلا کر دیتا ہے۔ (1)
حضرتِ ابن مسعود دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ کا قول ہے کہ مومن کا شیطان لاغر ہوتا ہے۔ حضرتِ قَیْس بن حَبَّا ج دَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْه کا قول ہے کہ مومن کا شیطان لاغر ہوا تو اُونٹ کی طرح تھا اور اب میں چڑیا کی کا قول ہے کہ مجھ سے میرے شیطان نے کہا: جب میں تیرے اندر داخل ہوا تو اُونٹ کی طرح تھا اور اب میں چڑیا کی طرح ہوں، میں نے کہا: وہ کیوں؟ شیطان نے کہا: تو نے مجھے ذِ کر خدا سے لاغر کر دیا ہے۔

لہذائم تقی بندوں پر شیطان کے ظاہری دروازوں کا بند کرنا اوران راستوں کی تگہبانی کرنا جو گنا ہوں کی طرف لے جاتے ہیں کچھ دشوار نہیں تھا، ان کے لئے لغزش کا باعث وہ خفیہ شیطانی راستے بنتے تھے جن کی کھڑ کیاں دل میں تھلتی ہیں، وہ ان راستوں کی نگہبانی سے معذور تھے کیونکہ دل میں شیطان کے بہت سے راستے ہیں اور فرشتے کا صرف ایک دروازہ ہے اور یہا یک دروازہ مجمی ان بہت سارے دروازوں میں خَلَط مَلَط ہوگیا ہے۔

اور بندے کی مثال ایسی ہے جیسے کوئی مسافرایسے جنگل میں بھٹک جائے جس میں بہت سے راستے ہوں اور رات کی تاریکی نے ان سے راستوں پر سیاہ چا درتان دی ہوتو وہ بصیرت والی آئھ اور چیکدار سورج کے سوار استہ ہیں پاسکتا۔
یہاں بصیرت والی آئھ اور تقویٰ سے شفاف ول اور چیک وارسورج سے وہ مقدس علم مراد ہے جو کتا ب الله اور سنت رسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے حاصل کیا گیا ہو، انہی سے انسان ان اندھیرے راستوں پر چل سکتا ہے ور نہ رات اندھیری اور راستے بے شارین سے

^{1}مسند احمد، مسند ابي هريرة، ٣٢١/٣، الحديث ٨٩٤٩

حضرت عبدالله بن مسعود رَضِیَ اللهُ عَنه ہے مروی ہے کہ ایک دن حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے ہمارے سامنے ایک لکیر صینچی اور فرمایا: بیدالله عَذَّوَ جَلَ کاراستہ ہے پھراس کیبر کے دائیں بائیں بہت ہی کیبریں کھینچیں اور فرمایا:

یدوہ راستے ہیں کہ جن میں سے ہرایک پرشیطان ہے جواپی طرف بلاتا ہے، پھر حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے بیہ آپیت پڑھی:

وَأَنَّ هٰ ذَاصِرَاطِى مُسْتَقِيْمًا فَاللَّبِعُولُهُ ۚ وَلَا تَلَبِعُوااللَّبُلُ تَعْقِيْمَ اللَّبُلُ تَعْقِيْمً اللَّهُ اللَّبُلُ عَنْ سَمِيرُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَنْ سَمِيلُهِ اللهُ اللهُ اللهُ عَنْ سَمِيلُهُ اللهُ الل

اور بلاشبہ ہم مختلف راستوں میں جس چھپے ہوئے راستہ کی مثال ذکر کر چکے ہیں یہی وہ راستہ ہے کہ جس پرعلاءاور وہ بندے جو گنا ہوں سے رکنے والے اوراپنی خواہشات کی نگہبانی کرنے والے ہیں، دھو کہ کھا جاتے ہیں۔

اب ہم ایسے واضح راستہ کی مثال بیان کرر ہے ہیں جس پر چلنے کے لئے بعض اوقات آ دمی مامور ہوجا تا ہے اور وہ مثال ہیہ ہے جو نبی کریم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے بیان فر مائی کہ

بنی إسرائیل میں ایک راہب تھا، شیطان نے ایک لڑکی کا قصد کیا اور اسے آسیب میں مبتلا کردیا اور اس کے دل میں سے بات ڈال دی کہ اس کا علاج راہب کے پاس ہے چنانچہوہ لڑکی کو لے کر راہب کے پاس آئے گر اس نے لڑک کوساتھ رکھنے سے انکار کردیا لیکن انہوں نے بہت زیادہ اصرار کیا جس کی وجہ سے راہب لڑکی کوساتھ رکھنے پر رضا مند ہوگیا، جب وہ لڑکی علاج کے لئے راہب کے پاس گھری تو شیطان راہب کے پاس لڑکی کے قرب کو حسین انداز میں پیش کر رہا تھا یہاں تک کہ راہب نے لڑکی سے جماع کر لیا اور وہ حاملہ ہوگئی، تب شیطان نے راہب کے دل میں وسوسہ ڈالا کہ اب جب کہ اس کے گھر والے آئیں گوتو تو بہت شرمندہ اور رُسوا ہوگا لہٰذا اس کوتل کردے، اگر وہ تجھ سے پوچھیں تو کہددینا کہ وہ مرگئی، چنانچہ اس نے لڑکی کوتل کر کے فن کر دیا۔

ادھر شیطان نے لڑی کے گھر والوں کے دلوں میں بیوسوسہ ڈالا کہ لڑی راہب سے حاملہ ہوگئی ہے پھر راہب نے است قبل کر کے دفن کردیا ہے لہذا وہ لوگ راہب نے کہا:

است قبل کر کے دفن کردیا ہے لہذا وہ لوگ راہب کے پاس آئے اور اس سے لڑکی کے متعلق پوچھ کچھ کی ، راہب نے کہا:

است ترجمهٔ کنز الایمان: اور بیک بیہ ہیراسیدھاراست تو اس برچلواور اور راہیں نہ چلوکتہیں اس کی راہ سے جدا کردیں گی۔

(ب٨، الانعام: ١٥٣).....مسند احمد، مسند عبدالله بن مسعود، ٢/٢٢ ا الحديث ٢٤١٤

X

وہ مرگئی ہے چنانچے انہوں نے راہب کو پکڑلیا تا کہ وہ اسے لڑکی کے بدلہ میں قبل کردیں اس کمجے شیطان نے راہب کے پاس آ کرکہا: میں ہیں وہ ہوں جس نے لڑکی کو آسیب زدہ کیا تھا اور میں نے ہی لڑکی کے گھر والوں کے دل میں بیہ بات ڈالی ہے تو میری پیروی کر لے، میں مجھے ان سے رہائی اور نجات دِلا دوں گا، راہب بولا: کیسے کروں؟، شیطان نے کہا: مجھے دوسجد کر لئے، شیطان نے سجد کر اتے ہی کہا کہ اب میں تجھ سے بری ہوں۔ یہ وہی بات ہے جس کے متعلق فرمان الٰہی ہے کہ

''شیطان کی طرح جس وقت اس نے انسان سے کہا کفر کر پس اس نے کفر کیا تو شیطان نے کہا تحقیق میں تجھ سے بری ہوں۔''(1)

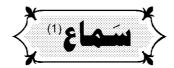
مروی ہے کہ شیطان نے امام شافعی دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے پوچھا تمہارااس ذات کے بارے میں کیا خیال ہے جس نے مجھا پنی پسند پر پیدا کیا، جیسے چاہا مجھے استعال کیا اور اس کے بعدا گرچا ہے تو مجھے جنت میں داخل کر سے اور چاہے تو جہنم میں داخل کر ہے، کیا وہ اپنے اس عمل میں عدل کرنے والا ہے ؟ امام شافعی دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ نے اس کی بعد اللّٰہ عَنْهُ نے اس کی بعد اللّٰہ عَنْهُ نے اس کی بات میں غور فر مایا اور کہا: اے شخص ! اگر اس نے تھے تیری منشا پر پیدا کیا ہے تو واقعی تجھ پرظلم کیا ہے اور اگر اس نے تھے تیری منشا پر پیدا کیا ہے تو واقعی تجھ پرظلم کیا ہے اور اگر اس نے تھے اپنی منشا پر پیدا کیا ہے تو وہ اس چیز کے تعلق نہیں پوچھا جا تا جو وہ کرتا ہے اور نہ اس سے سوال کئے جا سکتے ہیں ، یہ سنتے ہی شیطان بھر نے لگا یہاں تک کہ بالکل معدوم ہوگیا پھر کہا: بخدا! اے شافعی! میں نے اس سوال سے ستر ہزار عابدوں کو عُبُود بیت کے دفتر سے نکال کر بے دینی کی را ہوں پر دھیل دیا ہے۔

یہ میں مروی ہے کہ شیطان ملعون حضرت عیسی عکیہ السّالام کے سامنے آیا اور آپ کوکلمہ طیبہ پڑھنے کو کہا، آپ نے کہا: یہ کلمہ برحق ہے مگر میں تیرے کہنے سے نہیں کہوں گا کیونکہ برائیوں کی طرح نیکیوں میں بھی شیطان خلَط مَلَط کرتا رہتا ہے اور انہی اُفعال سے وہ عابد، زاہد بنی اور تمام تسم کے لوگوں کو ہلا کت میں ڈالٹار ہتا ہے، اس کی برائیوں سے وہی محفوظ رہتا ہے جے اللّٰہ تعالی محفوظ فرمالے۔

ا ہےرب ذوالجلال! ہمیں شیطان کے مکروں ہے محفوظ رکھتا کہ ہم ہدایت یافتہ لوگوں سے ملاقات کریں۔ آمین۔

س تو جمهٔ کنز الایمان: شیطان کی کہاوت جب اس نے آوی سے کہا کفر کر پھر جب اس نے کفر کرلیا بولا میں تجھ سے الگ ہوں۔ (پ۸۲ الحشر: ۱۲)

اب 98



قاضى أَبُوطَيِّ طِبَرَى رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه نِ حضرتِ امام شافعى ، امام ابوصیفه ، امام ما لک ، حضرتِ سُفیان رَضِ مَ اللهُ عَنَهُمُ اور علما عِکرام کی ایک جماعت سے ایسے الفاظ نقل کئے ہیں جواس امر پر دلالت کرتے ہیں کہ بید حضرات سَاع کے عدمِ جواز کے قائل تھے۔

امام شافعی رَضِیَ اللهُ عَنُه نے اپنی کتاب آ داب القصناء میں کہا ہے کہ غناایک نامناسب اور مکروہ چیز ہے جوایک لچر (بیہودہ) چیز کی طرح ہے، جو بکثرت اس میں مشغول ہووہ ہے سمجھ ہے اور اس کی گواہی روک دی جائے گی۔

قاضى اَ بُوطَيِّب رَحْمَهُ اللَّهِ عَلَيْه نِ كَهاہے كه شوافع حضرات نے كهاہے كه غيرمحرم عورت سے يجھ سننا خواه وه پرده ميں ہوياسا منے، وه آزاد ہويا باندى، ہرصورت ميں ناجائزہے۔

قاضی صاحب نے امام شافعی رضے اللّٰهُ عَنْه کا بی قول نقل کیا ہے کہ باندی کا مالک جب لوگوں کواس سے پچھ سننے کے لئے جمع کرے تو وہ بیوقوف ہے،اس کی گواہی مردود ہے۔

مزید کہا کہ ام شافعی دَضِیَ اللهُ عَنْه سے نقل کیا گیاہے کہ آپ دوٹہنیوں کو آپس میں مار کربھی ساز کی سی آواز نکالنے کو مکروہ جانتے تصاور فرماتے تھے کہ اسے بے دِینوں نے اِیجاد کیا ہے تا کہ اس کی وجہ سے لوگوں کی توجہ قرآنِ مجید سے ہٹ جائے۔

ا مام شافعی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ کا قول ہے کہ حدیث شریف میں نہی وار دہونے کے سبب میں دیگرتمام ساز ہائے نغمہ و طَرَب سے نَرْدکوزیا دہ مکروہ سمجھتا ہوں، میں شطرنج کھیلنے کو کمروہ سمجھتا ہوں اور میں ہر کھیل کو مکروہ سمجھتا ہوں کیونکہ یہ کھیل وغیرہ دِین دارا ورصاحب تقوی کالوگوں کا شیوہ نہیں ہے۔

ئےاس باب میں سماع کے جواز وعدم جواز ، دونوں کا بیان ہے جس سے ذہن میں اِشکال پیدا ہوسکتا ہے، انہذا جہاں عدم جواز کا بیان ہے دہاں آلات مِسیقی کے ساتھ اور جہاں جواز کا بیان ہے وہاں بلاساز ہائے نغمہ وطرب مراد لی جائے ۔واللّٰهُ ٱخْلَمہ ۔ امام مالک رَضِیَ اللهُ عَنْه نے عِنا سے منع فر مایا ہے اور ان کا قول ہے کہ جب کسی نے لونڈی خریدی اور اسے پتہ چلا کہ وہ مُغَنِّیہ ہے تواسے اور ایر اہیم بن سعد رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه کے علاوہ تمام اہل مَدینه کا کہ وہ مُغَنِّیہ ہے۔ یہ میں مذہب ہے۔

امام ابوصنیفه رَضِیَ اللهٔ عَنه بھی غنا کو مکر وہ جانتے تھے اور غنا کا سننا گنا ہوں میں شار کرتے تھے اور تمام اہل کوفیہ حضرت ِسُفیان توری، شخ مَثَاد، ابراہیم ، شعبی رَضِیَ اللهُ عَنهُمُ وغیر ہم کا یہی مسلک ہے۔ مذکورہ بالاتمام روایات قاضی اَبُوطَیِّب طَبَری نے فقل کی ہیں۔

حضرتِ ابوطالبِ مَيِّى نے ایک جماعت سے ساع کا جواز نقل کیا ہے اوران کا بیقول بھی ہے کہ صحابہ سے حضرتِ عبدالله بن جعفر،عبدالله بن زُبیر،مُ فِیْرہ بن شُغبَه اورمُعا وید رَضِی الله عَنْهُمْ سے ساع منقول ہے۔

ابوطالب مَلِّی رَحْمَهُ اللَّهِ عَلَیْه نے بی بھی کہاہے کہ سلف صالحین میں سے صحابہ اور تابعین کی کثیر جماعت نے اسے اچھاسم جھا ہے اور جمارے بہاں اہلِ حجاز مکه معظمہ میں سال کے بہترین اَیام میں ساع سنتے تھے۔

بہترین ایام سے مرادوہ ایام ہیں جن میں الله تعالی نے اپنے بندوں کوعبادت اور ذکر کا تھم دیاہے جیسے ایام آشریق وغیرہ اور ہمارے زمانہ تک اہلِ مدینہ بھی اہلِ مکہ کی طرح بمیشہ پابندی سے ساع سنا کرتے تھے۔

ہم نے ابومروان قاضی کواس حالت میں پایا کہان کے پاس چندلڑ کیاں تھیں جولوگوں کوخوش الحانی سے گا کر سناتی تھیں،قاضی صاحب نے انہیں صوفیاءِ کرام کے لئے تیار کیا تھا۔

مزید فرمایا کہ حضرتِ عطاء دَ حُمَةُ اللّٰهِ عَلَیْه کے ہاں وولڑ کیاں تھیں اور آپ کے بھائی ان سے ساع کیا کرتے

حضرت ابوطالب مَنِّى رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه نے يتول بھى نقل كيا ہے كە بولى كىن بن سالم رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه سے كہا گيا كهم ساع كاكيسے انكاركرتے ہوجالانكه حضرت جنيد، سَرِي سَقَطَى اور ذُوالتُون رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالَى اسے سنا كرتے تھے؟ انہوں نے كہا كہ بيس ساع كاكيسے انكاركروں گا حالانكه مجھ سے بہتر شخص نے اسے سنا اوراس كى اجازت دى ہے چنانچہ حضرت نے كہا كہ بيس ساع كاكيسے انكاركروں گا حالانكه مجھ سے بہتر شخص نے اسے سنا اوراس كى اجازت دى ہے چنانچہ حضرت

كاشفة القلوب

عبد الله بن جَعْفَرطَيَّار رَضِى اللهُ عَنه ساع سناكرتے تھانہوں نے ساع میں صرف لَہُوولَعِب کومنع فر مایا ہے۔ حضرتِ يجيلٰ بن مُعَا ذرَ حُمَةُ اللهِ عَليْه سے مروى ہے: انہوں نے کہا كہم نے تين چيزوں كوم كياہے، پھرہم نے

انہیں نہیں دیکھااور جوں جوں دن گزرتے جاتے ہیں،ان کا فُقدان فُزُوں ہوتا جاتا ہے،حسین چیرہ جو پا کباز ہو، سچی بات جس میں دیانت کی جھلک نمایاں ہواور بہترین بھائی جارہ جس میں وفاہی وفاہو۔

اور میں نے بعض کتابوں میں بعینہ یہ قول حضرتِ حارثِ مُحاسِّی سے منقول دیکھا ہے اوراس میں ایسی بات پائی جاتی ہے جواُن کے زہر، پا کبازی اور دینی معاملات میں ان کی جدوجہداور استمام کے باوجوداس امر پر دلالت کرتی ہے کہ وہ جوازِ ساع کے قائل تھے۔

حضرت ابن مجاہد رَضِی الله عنه کا طریقہ بیتھا کہ آپ کھی الی دعوت قبول نہیں فرماتے ہے جس میں سائ نہ ہواور کھرا یک سے زیادہ لوگوں نے یہ بات بیان کی ہے کہ وہ کی دعوت میں جمع ہوئے اور ہمارے ساتھ ابوالقاسم ابن بنت مُنِیْ ، ابو یکرا بن داؤ داورا بن مجاہد (رَحِمَهُ لهُ اللهُ تَعَالٰی) اپنے ہم مَشْرُ بول کے ساتھ موجود ہے، تب محفل سائ منعقد ہوئی ، ابن مجاہد ، ابن بنت مُنِیْ کواس بات پر برا چھنے تر لئے کہ دہ ابن داؤ دکواس کے سننے پر آ مادہ کریں ، ابن داؤد بولے ۔ ابن مجاہد ، ابن بنت مُنِیْ کواس بات پر برا چھنے تر لئے کہ دہ ابن داؤدکواس کے سننے پر آ مادہ کریں ، ابن داؤد بولے ۔ مجھے میرے والد مجھے میرے والد مجھے میرے والد مجھے میرے والد مجھے میں ابن بنت مُنِیْ نے کہا: میرے دادا احمد بین بنت منینے نے کہا: میرے دادا احمد بین بنت منینے نے جھے حصرتے صالح بن احمد کے بارے میں بنالیا کہ ان کے والد ابن دُنیازہ کا قول سنا کرتے تھے۔ یہن کر ابن مجاہد نے ابن داؤد دے کہا: مجھے چھوڑ دو ہم آ ہے باپ کی با تیں کرتے ہواور ابن بنت مُنینے سے کہا: مجھے چھوڑ دو ہم آ ہے باپ کی با تیں کر تے ہواور ابن بنت مُنیخ سے کہا: مجھے چھوڑ دو ہم آ ہے باپ کی با تیں کرتے ہواور ابن بنت مُنیخ سے کہا: مجھے چھوڑ دو ہم آ ہے باپ کی بات بناؤ کہا گرکسی نے شعر پڑھایا شعر کہا تو کیا وہ ناجائز ہے؟ ابن داؤد ہولے : نہیں! ابن مجاہد ہولے کہا گرشعر کہنے والا حسین آ واز والا ہوتواس کے لئے شعر کہنا حرام ہے؟ وہ ہولے : نہیں! ابن مجاہد نے کہا: ای جمل طور پراشعار پڑھتا ہے کہم درحرف کو تقصور اور مقصور کومرد دکرد بتا ہے تو کیا بیرحرام ہے؟ ابن داؤد د نے کہا کہ میں تو ایک شیطان پر قابوتیں یا سکا ، دوشیطانوں کا مقابلہ کیے کروں گا؟

حضرت ابوالحسن عسقلانی رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه جواولياء كے سردار تھے، سماع كاشوق فرمايا كرتے تھے اور بوقت سماع جذب وشوق سے آشنا ہوتے تھے، انہوں نے اس سلسله ميں ايك كتاب بھى كھى ہے جس ميں انہوں نے منكرين سماع كى ترديد كى ہے يونہى ايك جماعت نے سماع كے منكرين كے ددميں كتب كھى ہيں۔

مشائخ میں سے سی شیخ سے مروی ہے کہ انہوں نے ابوالعباس خِصْرَعَلَیْهِ السَّلام کودیکھا اور ان سے بوچھا کہ آپ کا ساع کے متعلق کیا خیال ہے؟ جس کے بارے میں ہمارے ساتھیوں میں اختلاف پایاجا تا ہے، حضرتِ خضرعَلیْهِ السّلام نے فرمایایہ شیریں اورصاف وخوشگوارہے، اس پرعلماء کے سواکسی کے قدم نہیں جم سکتے۔

حضرت ممثا دوینوری رَضِی الله عنه مع منقول ہے کہ میں نے خواب میں نبی کریم صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کی زیارت کی اور آپ سے پوچھا:یارسول الله (صَلَّی الله عَلَیْکَ وَسَلَّم)! کیا آپ اس ساع میں سے سی چیز کونا پیند فرماتے ہیں؟ آپ نے فرمایا کہ میں اس میں سے سی چیز کونا پیند نہیں کرتا لیکن انہیں کہددو کہ ساع کا افتتاح قر آ نِ مجید سے کریں اور اس کا اختتام بھی قر آ نِ مجید ہی پر کریں۔

حضرت طاہر بن بلال صدانی وَرَّاق رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه سے منقول ہے جوا کا برعلاء میں سے تھے، کہ میں سمندر کے کنار ہے جدہ کی جامع مسجد میں معتلف تھا کہ ایک دن میں نے الیی جماعت کو دیکھا جومسجد میں کچھا شعار پڑھ رہے تھے اور دوسر بے لوگ الله کے گھروں میں سے ایک گھر میں اُشعار پڑھ رہے ہیں۔
میں سے ایک گھر میں اَشعار پڑھ رہے ہیں۔

حضرت طاہر فرماتے ہیں کہ میں نے اسی رات خواب میں حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کی زیارت کی ، آپ اسی کو نے میں تشریف فرماتے ، آپ کے پہلو میں حضرت ابو بکر صدیق رضی اللهُ عَنْه بچھ کھے اور حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ساعت فرمانے کے اور آپ نے وجد کرنے والے کی طرح اپنا دست مبارک سین انور بررکھا ہوا تھا۔

Y

میں نے اپنے دل میں کہا: میرے لئے یہ مناسب نہ تھا کہ میں اس جماعت کونا پیند کرتا جو مخفلِ ساع منعقد کئے ہوئے سے مناسب نہ تھا کہ میں اس جماعت کونا پیند کرتا جو مخفلِ ساع منعقد کئے ہوئے تھے حالانکہ اسے حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ميرى طرف متوجہ ہوئے اور فرمایا: بیر ت کے ساتھ حت ہے یا بیر ت ہے، میں بیر بھول گیا ہوں کہ آپ نے ان دوبا توں میں سے کوئی بات ارشاد فرمائی تھی۔

حضرت ِ جبنيد رَضِيَ اللهُ عَنْه كا قول ہے كہ اس گروہ پر تين مواقع پر رحمت الهي كانزول ہوتا ہے:

﴿1﴾ كهانے كونت كيونكه يا بغير فاقد كئے يجينبيں كهاتے۔

﴿2﴾ ُنفتگو کے وفت کیونکہ وہ صدیقوں کے مقامات کے علاوہ اور کوئی گفتگونہیں کرتے۔

حضرتِ ابن جُرَنَ کَرَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سماع کی اجازت ویتے تھے،ان سے کہا گیا کہ بیغل قیامت کے دن نیکیوں میں شار ہوگا یا برائیوں میں؟ انہوں نے کہا: نه نیکیوں میں اور نه ہی گنا ہوں میں کیونکہ بیلغو بات کے مشابہ ہے اور فر مانِ الٰہی ہے:

نہیں مواخذہ کرے گاالله تعالی تمہارافضول قسموں پر۔

لايُؤَاخِذُكُمُ اللهُ بِاللَّغُوفِيُّ أَيْمَانِكُمُ (1)

اوپرہم نے جو پچھ قل کیا ہے یہ مختلف اقوال کا مجموعہ ہے، جو شخص تقلید میں رہ کر حق کو تلاش کرے گا تو وہ ان اقوال میں تعارض پائے گا جس کے سبب وہ مُتحکیر ہوگا، یا پنی خواہشات کے زیر اثر کسی قول کو پسند کرلے گا حالانکہ یہ دونوں باتیں غلط ہیں، بلکہ حق کو صحیح طریقہ سے تلاش کرے اور یہ خظر وابا حَث کے ابواب کی تلاش کرنے سے ہی معلوم ہوسکتا ہے۔

.....☆.....☆

البقرة: ٥٢٥) عنو الايمان: الله تمهين نهيس بكرتاان قسمول ميس جو إراده زبان سي فكل جائ - (ب٢، البقرة: ٥٢٥)

اب و

اتباع خواهشات وبدعت

نبی کریم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا فرمان ہے کہ ایٹے آپ کو نٹے اُمور سے بچاؤ کیونکہ ہرنیا کام بدعت ہے اور ہر بدعت گراہی موجب نارہے۔ (1)

فرمان نبوی ہے کہ جس نے ہمارے اس دین میں کوئی الی بات نکالی جودین میں نبیس ہے تو وہ بات مردود ہے۔ ایک اور ارشاد میں ہے کہ تم پر میرے طریقہ اور میرے بعد آنے والے خلفاءِ راشدین کے طریقہ کی پیروی لازم ہے۔

اناً حادیث سے یہ بات معلوم ہوئی کہ ہروہ بات جو کتاب وسنت اور اِ جماعِ ائمَہ کے مخالف ہو، وہ قابلِ تر دید بدعت ہے(یعنی بدعتِ سیرً)۔

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كاإر شاد ہے كہ جس نے عمدہ طریقہ جاری کیاا سے اس كا اَجر ملے گا اور قیامت تک جو بھی اس پڑعمل کرے گا، اس کو اس كا ثواب ملے گا اور جس نے برا طریقہ جاری کیا، اس کو اس كا اور قیامت تک اس پڑعمل کرنے والوں كا گناه ہوگا۔ (4)

حضرت قاده رَضِيَ اللَّهُ عَنَّه نِي السَّارِ مانِ اللَّهِ :

وَأَنَّ هٰذَاصِرَاطِي مُسْتَقِيبًا فَاتَّبِعُولًا ﴿ 5)

اور تحقیق بیمیراسیدهاراسته ہے پس اس کی اتباع کرو۔

کے بارے میں کہا: جان لوراستہ صرف ایک راستہ ہے جس کی جڑ ہدایت اور جس پر پھرنا جنت کی طرف ہے اور شیطان

نے متفرق راستے بنائے ہیں جن کااصل گمراہی اور جن پر پھر ناجہنم کی طرف ہے۔

-ابوداود، كتاب السنة، باب في لزوم السنة، ٤/٢٦٧، الحديث ٢٠٠٧
- 2بخارى، كتاب الصلح، باب اذا اصطلحوا على...الخ ، ١/٢ ، ١ ١١ ، الحديث ٢٦٩٧
 - ابوداود، كتاب السنة، باب في لزوم السنة، ٢٦٧/٤، الحديث ٢٠٠٤.
- 4 مسلم، كتاب العلم، باب من سن سنة حسنة ... الخ ، ص ١٤٣٧ ، الحديث ١٥ ـ (١٠١٧)
 - الانعام: ۵۰۰ اوربیکه بید میراسیدهاراسته تواسیر چلو (پ۸، الانعام: ۱۵۳)

حضرت ابن مسعود رَضِیَ الله عَنه سے مروی ہے کہ حضور صَدِّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَدِّم نے اپنے وست مبارک سے ایک کیر گئی فی اور فر مایا:

کیر کین فی اور فر مایا: یہ الله کی سید تھی راہ ہے، پھر آپ نے اس کیسر کے دائیں بائیں اور بہت کی کیسریں کھینچیں اور فر مایا:

پیراستے ہیں، ان میں کوئی راستہ ہیں ہے مگر ہر راستہ پر شیطان ہے جواپنی طرف بلاتا رہتا ہے، پھر آپ نے مذکورہ بالا آپت تلاوت فر مائی۔ (1)

حضرت ابن عباس دَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كاقول ہے كه يركمرا بى كراستے ہيں۔

حضرت ابن عَطِيَّه رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كا قول ہے يہي راستے جن كى حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے نشا ندى فرما كى ہے،
ان ميں يہوديت، نصرانيت، مجوسيت اور تمام پيروانِ مَذابب باطله، بدعتی، نفسانی خوابشات كى پيروى كرنے والے گراہ، اپنی الگ راہیں متعین كرنے والے وغیرہ سب شامل ہیں چاہے وہ جھگڑوں اور فتنہ وفساد میں ولچیبی لینے والے ہوں یا گفتگو میں بال كى كھال أتار نے والے ہوں، بهتمام لغزش كے ميدان اور بد اعتقادى كے مناظر ہیں۔ فرمانِ نبوى ہے كہ جس نے ميرى سنت سے إعراض كياوہ مجھ سے نہیں ہے۔ (2)

نیز فرمانِ نبوی ہے کہ الیمی کوئی امت نہیں ہے جواپنے نبی کے دین میں بدعات کوفر وغ دیتی ہے اوراس بدعت کے برابراس کی سنت ضائع ہوجاتی ہے۔⁽³⁾

فر مانِ نبوی ہے کہ وہ خواہش نفس کہ جس کی پیروی کی جائے اس سے بڑھ کر آسان کے پنچے اللّٰہ عَزَّوَ جُل کے نزدیک ایبا (جمونا) معبوز نہیں جس کی عبادت کی جاتی ہو۔ (4)

فرمانِ نبوی ہے کہ سب سے عمدہ بات الله کی کتاب ہے اور سب سے عمدہ ہدایت محمد (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) کی ہدایت محمد (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) کی ہدایت ہے اور سب سے بدترین اُمور بدعات ہیں اور ہر بدعت صلالت ہے، میں تم پر تمہاری پشتوں، شرمگا ہوں اور گراہ کن خواہشات کی شہوات سے ڈرتا ہوں، تم ہر بدعت سے بچو کیونکہ ہر بدعت گراہی ہے۔ (5)

- 1مسند احمد، مسند عبدالله بن مسعود، ۲/۲۳ ۱ ، الحديث ١٤١٤
- 2 بخارى، كتاب النكاح، باب الترغيب في النكاح، ٢١/٣، الحديث ٦٣.٥٠
- المعجم الكبير، ١٨/٩٩، الحديث ١٧٨ ١٩٩٠ الحديث ١٧٨ 🚭 ١٠٠٠
- الحمية، باب تخفيف الصلاة والخطبة، ص ٤٣٠، الحديث ٤٣٠ و مسند احمد، مسند البصرييين،
 ١٨١/٧ الحديث ٩٧٩ و مسند البزار، ٩٢/٩٠ الحديث ٤٣٨ و المعجم الكبير، ١٤٨/١٨ ؛ الحديث ٢٦٢

77

فرمان نبوی ہے کہ الله تعالی ہر بدئی سے تو بہ کو پوشیدہ کردیتا ہے (۱) یہاں تک کہ وہ بدعت کوترک نہ کردے۔
فرمانِ نبوی ہے کہ الله تعالی سی صاحب بدعت کا روزہ، جج ،عمرہ، جہاد، حیلہ اور انصاف کی پھر سی قبول نہیں کرتاوہ
اسلام سے ایسے نکل جاتا ہے جیسے آئے سے بال نکلتا ہے، میں تہہیں سفید اور واضح دین پر چیوٹر رہا ہوں، اس کا دن اور رات
برابر ہیں، اس سے وہی پھرے گاجو ہلاک ہوگا، ہر زندگی کیلئے ایک ہمت ہے اور ہر ہمت کیلئے ایک کمزوری ہے، جسکی ہمت
میری سنت کی طرف ہے وہ ہدایت پاگیا اور جسکی ہمت دوسری طرف راغب ہوئی وہ ہلاک ہوا، میں اپنی امت پر تین چیزوں
سے ڈرتا ہوں، عالم کی لغزش، قابلِ تقلید خواہشات اور ظالم حاکم، (۱) (میری امت کے لئے بیتن چیزیں بہت خطرناک ہوں گی)۔

بخاری شریف میں مروی ہے کہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جس شخص نے اپنے ساتھی سے کہا کہ آؤجوا کھیلیں، اسے جاہئے کہ صدقہ کرے۔ (3)

مسلم، ابوداؤ داورابن ماجه کی روایت ہے: حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جونر دیانر دشیر سے کھیلا، گویااس نے خزیر کے گوشت اور لہومیں ہاتھ کوڈیویا۔ (4)

احمد وغیرہ کی روایت ہے حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا ایسے خص کی مثال جوئر دکھیلتا ہے پھر نماز کے لئے کھڑا ہوتا ہے، الیی ہے جیسے کوئی شخص پیپ اور خزر کر کے خون سے وضو کرتا ہے اور پھر نماز کے لئے کھڑا ہوتا ہے (^{5) یع}نی اس کی نماز قبول نہیں ہوتی جیسا کہ دوسری روایت میں اس کی تصریح موجود ہے۔

بيہ في نے کيلى بن كثير دَضِى اللهُ عَنْه سے روايت كى ہے كہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كا السے لوگول كے پاس سے كزر

^{1}المعجم الاوسط ، ١٦٤/٣ ، الحديث ٢٠٠٤

ابن ماجه، كتاب السنة، باب اجتناب البدع والحدل، ۳۸/۱، الحديث ٤٩ و المرجع السابق، باب اتباع سنة الخلفاء...الخ، ٣٢/١، الحديث ٤٤ و شعب الايمان، الباب الثالث والعشرون...الخ، القصد في العبادة، ٣٠/٠٤، الحديث ٤٣٨٨ و مسند البزار، ٢/٤ ٣١، الحديث ٣٣٨٤

^{3}بخارى، كتاب التفسير، باب افرايتم...الخ، ٣٣٨/٣، الحديث ٢٨٦٠

^{4}ابو داو د، كتاب الادب، باب في النهي عن اللعب بالنرد ،٢٧١/٤، الحديث ٤٩٣٩

۲۳۱۹۹ من الحديث رجال من اصحاب النبي صلى الله عليه و سلم ، ۹/ ، ٥ ، الحديث ٩٩ ٢٣١٩

ہواجوئر دکھیل رہے تھے آپ نے فرمایا: دل غافل ہیں، ہاتھ کرنے والے ہیں اور زبانیں فضول بکنے والی ہیں۔ (1)
وَ یکمی نے روایت نقل کی ہے کہ حضور صَلّی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّم نے فرمایا: جبتم ایسے لوگوں سے گزرو جوان فال کے تیروں، شطرنج ، نرداوران سے مشابہ ہراس چیز میں جوحرام کردیا گیا ہے، لگے ہوں تو انہیں سلام نہ کرو،اگروہ تہہیں سلام کریں توان کے سلام کا جواب نہدو۔ (2)

فر مانِ نبوی ہے کہ تین چیزیں جواہیں،شرطیہ بازیاں، چھوٹے چھوٹے تیروں کو پھینک کر جواکھیلنااورسٹیاں بجا بچا کر کبوتر اڑانا۔⁽³⁾

حضرت علی رَضِیَ اللّه عَنه کاایسے لوگوں کے پاس سے گزرہوا جوشطرنج کھیل رہے تھے، آپ نے فرمایا: کیا بیوہ صورتیں ہیں جن کے واسطے تم اعتکاف کرنے والے ہو؟ تم میں سے کسی ایک کے ہاتھوں میں اَنگارے اٹھالینا یہاں تک کہوہ بجھ جا کیں، انہیں چھونے سے بہتر ہے، پھر فرمایا: بخدا! تم اس کے علاوہ کسی اور کام کے لئے پیدا کئے گئے ہو۔ مزیدار شادِ نبوی ہے کہ شطرنج کھیلنے والے بہت جھوٹے ہوتے ہیں، ان میں سے ایک کہتا ہے میں نے قل کردیا اور مارا حالانکہ اس نے نہ کسی کوتل کیا ہوتا ہے اور نہ مارا ہوتا ہے۔ (4)

حضرت ابوموی اُشعری رَضِی اللهٔ عَهُ نے فر مایا کہ شطر نج ہمیشہ خطاکارہی کھیلتا ہے۔ اور بیبات ذہن شین کر لیجئے
کہ آلات نِغہ وطرب یا تو حرام ہیں جیسے سار کی ، طنبورہ ، رَباب ، طبلہ ، بانسری اور ہر وہ ساز جوانفرادی طور پرگانے والے
کی آ واز سے ہم آ ہنگ ہو یا پھر مکر وہ ہیں اور وہ ایسے ساز ہیں جو غنا میں طربہ کیفیت کو نمایاں کرتے ہیں مگر انفرادی طور
پران سے نغمات کا کام نہ لیا جا سکے جیسے نرکل ، پُنگ وغیرہ ، ان کا غنا کے ساتھ سننا مکر وہ ہے ، بغیر نغمات کے نہیں اور جو
ساز جائز ہیں وہ ایسے ہیں جو نغہ وطرب کے لئے نہیں بلکہ إطلاع کے لئے بجائے جاتے ہیں ، جیسے بیگل ، طَبْلِ جنگ یا
مجمع اکھا کرنے کا طَبْل یا نکاح کے اعلان کے لئے وَف بجانا وغیرہ۔

الحديث ٢٠٩٣١، ٢٠٩٣١، ٢٠٩٣٢ ليس بمرفوع

❶.....شعب الايمان ، الثاني والاربعون من شعب...الخ ، ه/٢٤١، الحديث ٦٥١٦عن يحييٰ بن ابي كثير

^{2}فردوس الاخبار، ١٠/١، الحديث ١٠٥١

^{€} كنزالعمال، كتاب اللهو واللعب والتغني من قسم الأقوال، ٩٤/٨ ، الجزء الخامس عشر، الحديث ٢٣٢ ك

^{4}السنن الكبرى للبيهيقي، كتاب الشهادات، جماع ابواب من تجوز ...الخ ، باب الاحتلاف ...الخ ، ١٠٨٥،

باب 100)

خُفضائلِ ماه رجب

رجب، ترجیب سے شتق ہے جس کے معنی تعظیم کے ہیں، اسے اُصب بھی کہا گیا ہے کیونکہ اس میں تو بہ کرنے والوں پر تجو لیت کے انوار کا فیضان ہوتا ہے۔اسے اسم بھی کہا گیا ہے کونکہ اس میں قبہ کرنے والوں پر قبولیت کے انوار کا فیضان ہوتا ہے۔اسے اسم بھی کہا گیا ہے کیونکہ اس میں جنگ اور قبال وغیرہ محسوس نہیں کیا جاتا۔ ایک قول یہ ہے کہ رجب جنت کی ایک نہر کا نام ہے جس کا پانی وہی جنگ اور جب میں روز سے زیادہ صفید، شہد سے زیادہ میٹھا اور برف سے زیادہ ٹھنڈ اہے، اس کا پانی وہی پے گا جور جب میں روز سے رکھتا ہے۔

فر مانِ نبوی ہے کہ رجب الله کامہینہ، شعبان میر امہینہ اور رمضان میری امت کامہینہ ہے۔ (1) رمز شناس لوگوں کا کہنا ہے کہ رجب کے تین حروف ہیں: را، جیم اور با، راسے رحمتِ اللی، جیم سے بندے کے جرم اور غلطیاں اور باسے الله تعالیٰ کی مہر بانیاں مراد ہیں، گویاالله فر ما تا ہے کہ میں اپنے بندے کے گنا ہوں کواپنی رحمت اور مہر با نیوں میں سمولیتا ہوں۔

حضرت ابو ہر رره رَضِى الله عَنه سے مروى ہے: دسول الله صَلَى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرما يا كه جس نے رجب كى ستائيسويں كا روزه ركھا اس كے لئے ساٹھ ماہ كے روزوں كا ثواب لكھا جاتا ہے، يہ پہلا دن ہے جس ميں حضرت جبر يل عَلَيْهِ السَّلَام حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كے لئے پيغام الله عَلَيْهِ السَّلَام حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كے لئے پيغام اللهی لے كرنا زل ہوئے اوراسی ماہ میں حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كومعراج شريف كا شرف حاصل ہوا۔ (2)

فر مانِ نبوی ہے کہ باخبر ہوجاؤ،ر جب الله تعالیٰ کا ماواصم ہے،جس نے رجب میں ایک دن ایمان اور طلب ثواب

^{1} كنز العمال، كتاب الفضائل، الباب الثامن...الخ، الفصل الثاني...الخ، ١٣٩/٦، الجزء الثاني عشر، الحديث

ابن عساكر، ۲۳۳/٤۲ دون ذكر معراج

کی نبیت سے روزہ رکھا اس نے اللہ تعالی کی عظیم رضا مندی کواپنے لئے واجب کرلیا۔(1)

کہا گیاہے کہ اللّٰہ تعالیٰ نے مہینوں میں سے چارمہینوں کوزینت بخشی ہے، ذیقعدہ، ذی الحجہ بمحرم اور رجب اسی کئے فرمانِ الٰہی ہے کہ' ان میں سے چارمینے حرام ہیں۔'(²⁾

ان میں سے تین ملے ہوئے ہیں اورایک تنہا ہے اور وہ ہے ماور جب المرجب۔

بیت المقدس میں ایک عورت رجب کے ہردن میں بارہ ہزار مرتبہ قُل ہُوَاللّٰہُ اَحَدُی ﴿ بِرُ هَا کرتی تھی اور ما ورجب المرجب میں اد فی لباس بہنتی تھی ، ایک باروہ بیار ہوگئی اور اس نے اپنے بیٹے کو وصیت کی کہ اسے بکری کے پیشبیں لباس سمیت دفن کیا جائے۔ جب وہ مرگئی تو اس کے فرزند نے اسے عمدہ کیڑوں کا کفن پہنا یا، رات کو اس نے خواب میں مال کود یکھاوہ کہدرہی تھی ، میں تجھ سے راضی نہیں ہوں کیونکہ تو نے میری وصیت کے خلاف کیا ہے۔ وہ گھرا کر اکھ بیٹھا، اپنی مال کا وہ لباس اٹھایا تا کہ اسے بھی قبر میں دفن کر آئے ، اس نے جا کر مال کی قبر کھودی مگر اسے قبر میں کچھ نہ ملاء وہ بہت حیران ہوا تب اس نے بینداستی کہ کیا تجھے معلوم نہیں کہ جس نے رجب میں ہماری اطاعت کی ، ہم اسے تنہا اور اکیلا نہیں جھوڑ تے۔

روایت ہے کہ جب رجب کے اولین جمعہ کی ایک تہائی رات گزرتی ہے تو کوئی فرشتہ باقی نہیں رہتا مگرسب رجب کے روزہ داروں کے لئے بخشش کی دعا کرتے ہیں۔

حضرت انس رَضِیَ اللّهُ عَنُه ہے مروی ہے حضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جس نے ماو حرام (رجب) میں تین روز ہے رکھے، اس کے لئے نوسوسال کی عبادت کا تواب کھاجا تا ہے۔ حضرت انس رَضِیَ اللّهُ عَنْه نے فرمایا: میرے دونوں کان بہرے ہوں اگر میں نے حضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے بیربات نہنی ہو۔ (3)

٠٠٠٠٠٠فردوس الاخبار، ١٥/١، الحديث ٣٠٩٣

^{2}ترجمهٔ كنز الايمان: ان ميل سے جارحرمت والے بين - (پ١٠ التوبة: ٣٦)

^{3}اللآليء المصنوعة للسيوطي، كتاب الصلاة ، ٤٧/٢ ملتقطًا



ما وحرام جارین، افضل ترین فرشتے چارین، نازل کردہ کتابوں میں افضل کتابیں چارین، وضو کے اعضاء چار ہیں، افضل ترین کلماتِ تبیع چارین الله وَ الْحَمَّدُ لِلّٰهِ وَ الْحَمَّدُ لِلّٰهِ وَ الْاَهِ وَ الْحَمَّدُ لِلّٰهِ وَ الْاَهِ وَ الْحَمَّدُ لِلّٰهِ وَ اللهُ اللهُ وَ اللهُ وَ اللهُ وَ اللهُ وَ اللهُ وَ اللهُ وَ اللهُ اللهُ وَ اللهُ اللهُ وَ اللهُ اللهُ وَ اللهُ وَاللهُ اللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ الل

ویلمی نے حضرتِ عائشہ دَضِیَ اللّهُ عَنْهَا ہے ایک روایت نقل کی ہے کہ نبی اکرم صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فرمایا:اللّه تعالیٰ جارراتوں میں خیروبرکت کی بارش کرتا ہے،عیدالفخل کی رات،عیدالفطر کی رات، پندرہ شعبان کی رات اور رجب المرجب کی پہلی رات۔ (1)

دیلمی نے حضرت ابوا مامہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ سے بیروایت بھی نقل کی ہے کہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: پاپنچ را تیں الیی ہیں جن میں کوئی دعار دنہیں کی جاتی ، رجب کی پہلی رات ، پندرہ شعبان کی رات ، جمعہ کی رات اور دورا تیں عیدین کی ۔ (2)

باغ ياجهنم كأكرها

حضرت سیّدُ ناسفیان تُوری دَحْمَهُ اللّهِ عَلیّه فرماتے ہیں: جو شخص قبرکوا کثریا دکرتا ہے وہ مرنے کے بعد اپنی قبرکو جنت کے باغوں میں سے ایک باغ پائے گا اور جوقبر کو بھلادے گا وہ اپنی قبرکو جہنم کے گڑھوں میں سے ر ایک گڑھایائے گا۔(احیاء العلوم ، ج ٤ ، ص ۲۳۸)

- 1 كنز العمال، كتاب الفضائل، الباب الثامن...الخ، جامع الازمنه من الاكمال، ٢/٤٤١، الجزء الثاني عشر، الحديث
 - ٣٥٢١٠ بذكر ليلة عرفة مكان اول ليلة من رجب
 - 2فردوس الاخبار، ٧/٧٧/١ الحديث ٢٧٩٧

X

اب 101)

خُ فضائلِ شعبان المبارك ﴿

شعبان، شَعَب سے مُشَنَق ہے جس کے معنی ہیں گھاٹی وغیرہ کیونکہ اس ماہ میں خیروبرکت کاعمومی ورود ہوتا ہے۔
اس لئے اسے شعبان کہاجا تا ہے، جس طرح گھاٹی پہاڑ کاراستہ ہوتی ہے اسی طرح میم پینہ خیروبرکت کی راہ ہے۔
حضرت ابوا مامہ بابلی رَضِیَ اللهُ عَنْه سے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم فرمایا کرتے تھے کہ جب ما و شعبان
آ جائے تواسیے جسموں کو یا کیزہ رکھوا وراس ماہ میں اپنی نیشیں اچھی رکھو، انہیں حسین بناؤ۔ (1)

نسائی کی حدیث میں حضرتِ اسامہ رَضِی الله عنه سے مروی ہے کہ میں نے حضور صَلَّی الله عَلیْهِ وَسَلَّم سے عرض کی کہ میں نے آپ کوسال کے کسی مہینہ میں (رمضان کے فرض روزوں کے سوا) شعبان سے زیادہ روزے رکھتے نہیں درمیانی مہینے سے غافل ہوتے ہیں حالانکہ یہ ایسامہینہ ہے جس میں الله کے حضوراعمال لائے جاتے ہیں الہٰذا میں اس بات کو پہند کرتا ہوں کہ جب میراعمل الله کی بارگاہ میں لایا جائے تو میں روزہ سے ہوں۔ (3)

صحیحیین میں حضرت عاکشہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ہے مروی ہے کہ میں نے ماہِ رمضان کےعلاوہ اور کسی مہینے کے مکمل روز بے

....0

2بخاري، كتاب الصوم، باب صوم شعبان، ٢٤٨/١، الحديث ١٩٦٩

١٠٠٠ نسائي، كتاب الصيام، باب صوم النبي صلى الله تعالى عليه واله و سلم...الخ ، ص٣٨٧، الحديث ٤ ٢٣٥٠

ر کھتے ہوئے حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کُونِیس دیکھااور آپ کوشعبان کےعلاوہ کسی اور مہینہ میں بہت زیادہ روزے رکھتے نہیں دیکھا۔ ⁽¹⁾

ایک روایت میں ہے کہ آپ شعبان کے پورے روزے رکھا کرتے تھے۔(2)

مسلم کی ایک روایت ہے کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم شعبان کے چندون جیموڑ کرسارا ماہ روز ہے رکھا کرتے (3)

بیروایت پہلی روایت کی تفسیر ہے، پورے شعبان سے مرادا کثر شعبان ہے۔

کہا گیا ہے کہ آسان کے فرشتوں کے لئے دوراتیں عیداور مسرت کی ہیں جیسے دنیا میں مسلمانوں کے لئے دوعید کی راتیں عیدومسرت کی ہیں، خیستوں کی عیدرات برائت کی رات یعنی پندرہ شعبان کی رات اور لیلة القدر ہیں اور مومنوں کی عید الفطر اور عیدالانتی کی راتیں ہیں، اسی لئے پندرہ شعبان کی رات کو فرشتوں کی عیدرات کا نام دیا گیا ہے۔

علامہُ بنگی رَحْمَهُ اللهِ عَلَیْهِ نَے اس قول کی تفسیر میں کہاہے کہ بیرات سال بھر کے گنا ہوں کا کفارہ بنتی ہے، جمعرات ہفتہ کے گنا ہوں کا کفارہ اورلیلۃ القدر عمر بھر کے گنا ہوں کا کفارہ ہوتی ہے یعنی ان را توں میں الله تعالیٰ کی عبادت کرنا اور بادِ الله تعالیٰ کی عبادت کی رات اور بادِ اللهی میں ساری رات جاگ کر گزار دینا گنا ہوں کے کفارہ کا سبب ہوتا ہے اس لئے اس رات کو کفارے کی رات بھی کہا جاتا ہے اس لئے کہ مُثنزِ ری نے مرفوعاً بیحد بیٹ نقل کی ہے کہ جس نے دو عید راتیں اور پندرہ شعبان کی رات جاگ کر گزاردی تو ایسے دن میں جبکہ تمام دل مرجائیں گے، اس انسان کا دل نہیں مرے گا۔

(4)

اسے شفاعت کی رات بھی کہتے ہیں کیونکہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سے مروی ہے کہ آپ نے تیر ہویں کی رات

^{1}بخاري ،كتاب الصوم، باب صوم شعبان، ١٨٨١، الحديث ١٩٦٩

^{2}بخاري ، كتاب الصوم، باب صوم شعبان، ١ /٦٤٨، الحديث ١ ٩٧٠

③مسلم، كتاب الصيام، باب صيام النبي صلى الله تعالى عليه وآله وسلم...الخ ، ص٨٣٥، الحديث ١٧٦ ـ (١١٥٦)

^{4....} كنزالعمال، كتاب الصوم، الباب الاول...الخ، الفصل الثامن...٤/١٥٢، الجزء الثامن، الحديث ٢٤١٠٢

77

الله تعالیٰ سے اپنی امت کی شفاعت کی دعامانگی ،الله نے ایک تہائی امت کی شفاعت مرحمت فرمائی اور آپ نے چود ہویں کی رات پھرامت کی شفاعت کی دعامانگی ،الله تعالیٰ نے دو تہائی امت کی شفاعت کی اجازت مرحمت فرمائی ، پھر آپ نے بیرر ہویں کی رات اپنی امت کی شفاعت کی درخواست کی توالله تعالیٰ نے تمام امت کی شفاعت منظور فرمائی مگروہ شخص جورحمت الہی سے اونٹ کی طرح دور بھاگ گیا اور گنا ہوں پر اصرار کر کے خود ہی دور سے دور تر ہوتا گیا۔ (اس شفاعت سے محروم رہے گا)۔

اسے بخشش کی رات بھی کہتے ہیں۔ امام احمد رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: اللّٰه تعالی پندرہ شعبان کی رات اپنے بندوں پرظہور فرما تاہے اور دو شخصوں کے علاوہ دنیا میں رہنے والے تمام انسانوں کو بخش دیتا ہے، ان دومیں سے ایک مشرک اور دوسراکینہ پرورہے۔ (2)

اسے آزادی کی رات بھی کہا جاتا ہے جیسا کہ ابن آئی نے حضرت اِنس بن مالک رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه سے روایت نقل کی ہے کہ مجھے حضور صَلّی اللّٰهُ عَنْهُ وَسَلّم نے حضرت عاکشہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهَ اللّهُ عَنْهَ اللّهُ عَنْهَ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلْهُ الللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلَيْهُ الللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ اللّهُ عَلْهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ الللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللللّهُ عَلَيْهُ اللللللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللللّهُ الللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ال

حضرتِ عائشہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَانے جھے سے فرمایا: اے انس! بیٹے میں مجھے شعبان کی پندر ہویں رات کی بات سناؤں،
ایک مرتبہ بیرات میری باری کی رات تھی ، حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم تشریف لائے اور میرے ساتھ لحاف میں لیٹ گئے،
رات کو میں بیدار ہوئی تو میں نے آپ کو نہ پایا میں نے اپنے دل میں کہاشا پد حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ابنی لونڈی قبطیہ کی طرف تشریف لے گئے ہوں، میں اپنے گھرسے باہر نکلی ، جب میں مسجد سے گزری تو میرا پاؤں آپ پر پڑا، آپ فرمار ہے سے کہ ' میرے جسم اور خیال نے تجھے سجدہ کیا، میر اول تجھ پر ایمان لا یا اور بیمیر اہاتھ ہے، میں نے اس ہاتھ سے بھی اپنے جسم کو گناہ سے آلودہ نہیں کیا اے ربِ عظیم! تجھ سے بی ہر ظیم کام کی امید کی جاتی ہے، میرے بڑے گناہوں کو بخش ، میرے اس چرے نے تخفے سجدہ کیا جسے تو نے بیدا فرمایا، اسے صورت بخشی ، اس میں کان اور آ نکھ بیدا کی'۔

^{....0}

^{2}مسند احمد، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، ٥٨٩/٢ الحديث ٦٦٥٣ بقاتل مكان مشرك

پھر آپ نے سراٹھا کرکہا:اے اللہ! مجھے ڈرنے والا دل عطافر ماجوشرک سے بڑی اور مُنزَّ ہ ہو، کافراور بد بخت نہ ہو، پھر آپ سجدہ میں گر گئے اور میں نے سا آپ اس وفت فر مار ہے تھا ے الله! میں تیری رضا کے ساتھ تیری ناراضگی سے پناہ جا ہتا ہوں ، تیر عفو کے طفیل تیر کے عذا ب سے ،اور تیر لے طفیل تیری گرفت سے پناہ مانگتا ہوں ، میں تیری ممل تعریف نہیں کرسکتا جیسا کہ تو نے اپنی تعریف کی ہے ، میں وہی کچھ کہتا ہوں جو پچھ میر سے بھائی واؤ و عَلَيْهِ السَّدَم نے کہا: میں اپنا چہرہ اپنے آ قاکے لئے خاک آلود کرتا ہوں اور میرا آقا اس لائق ہے کہ اس کے آگے چہرہ خاک آلود کیا جائے۔

پھر آپ نے سراٹھایا تو میں نے عرض کی: میرے ماں باپ آپ پر قربان ہوں آپ یہاں تشریف فرماہیں اور میں وہاں تھی ، آپ نے سراٹھایا تو میں الله تعالیٰ بنوکلب میں وہاں تھی ، آپ نے فرمایا: احتمیرا! کیاتم نہیں جانتی کہ پندرہ شعبان کی رات ہے، اس رات میں الله تعالیٰ بنوکلب کے ریوڑوں کے بالوں کے برابرلوگوں کو آگ سے آزاد فرما تا ہے مگر چھ آدمی اس رات بھی محروم رہتے ہیں، شراب خور، والدین کا نافر مان ، عادی زانی ، قاطع رحم ، پچنگ ورباب بجانے والا اور چغل خور۔ (1)

اسے قسمت اور تقدیر کی رات کا نام بھی دیا گیاہے کیونکہ عطاء بن ئیبار سے مروی ہے کہ

ایک روایت میں رباب بجانے والے کی جگہ مصور کا لفظ ہے۔ ⁽²⁾

جب شعبان کی پندر ہویں شب آتی ہے تو ملک الموت کو ہراس شخص کا نام کھوا دیا جاتا ہے جواس شعبان سے آئندہ شعبان تک مرنے والا ہوتا ہے، آدمی بودے لگا تاہے، عور توں سے نکاح کرتا ہے، عمار تیں بنا تاہے حالا نکہ اس کا نام مُر دوں میں ہوتا ہے اور ملک الموت اس انتظار میں ہوتا ہے کہ اسے کہ جسم ملے اور وہ اس کی روح قبض کرے۔ (3)

......☆.....☆......☆

TAT9

^{•} شعب الايمان، الباب الثالث و العشرون، باب في الصيام، ماجاء في ليلة النصف من شعبان، ٣٨٥/٣، الحديث ٢٨٦٨ مختصرا والعلل المتناهية، حديث في صوم شعبان، ٢٨٥/٢، الحديث ٩١٨ دون مضرب

^{2}العلل المتناهية، حديث في صوم شعبان، ٢/٥٥٨، الحديث ٩١٨

 ^{3}لطائف المعارف لابن رجب، المجلس الثاني في نصف شعبان، ١/٠٠ او الدر المنثور، سورة الدخان، تحت آية :٤،
 ٢/٧ و كنزالعمال، كتاب الفضائل، باب فضل الازمنة الشتاء، ٧٩/٧، الجزء الرابع عشر، الحديث ٣٨٢٨٩ ،

اب 102

خُ فضائل رمضان المعظم ﴿

ارشادِ خداوندی ہے:

ا بے لوگوجوا بمان لائے ہوتم پر روز نے فرض کئے گئے ہیں جیسے

تم سے پہلے والے لوگوں پر فرض کئے گئے تھے۔

ؽٙٲؿؙۿٵڐؙڹؚؽؽٵؘڡؘٮؙؙۉٵڴؾؚٮ۪ۘعؘڵؽؙڴؙؙؙؙؗڡٵڶڝؚۜۧؽٵۿؙۘڴڡؘٵڴؾؚٮؚۘعؘٙؽ ٵؽؘڹؿؘڡؚڽٛ۬ۊؘڹٛڶؚڴمؙڵعؘڴڴؙؙؗۿؿڐؘڨؙۏؽ۞⁽¹⁾

حضرت سعید بن جُبیر رَضِیَ اللّهٔ عَنه کا قول ہے کہ ہم سے پہلے والے لوگوں پرعشاء سے لے کر دوسری رات کے آنے تک روزہ ہوتا تھا جیسا کہ ابتدائے اسلام میں بھی یہی دستورتھا۔

اہلی علم کی ایک جماعت کا قول ہے کہ نصار کی پراس طرح روزہ فرض کیا گیا تھا، کبھی تو روزوں کا مہینہ شدیدگری اور کبھی سخت سردی میں آ جا تا جس کی وجہ سے انہیں سفر اور اپنے کاروبار میں سخت دشواری پیش آتی چنانچیان کے بڑے اس کھے ہوئے اور باہم مل کریہ طے کیا گیا کہ روز سے سر دیوں اور گرمیوں کے علاوہ سال کے کسی اور موسم میں رکھے جا کمیں چنانچیا نہوں نے روزوں کے لئے بہار کا موسم مقرر کیا اور اپنے اس ہیر پھیر کے کفارہ کے طور پر دس روزوں کا اضافہ کردیا۔

پھران کا ایک بادشاہ بیار پڑ گیا،اس نے نذر مانی کہا گروہ اس بیاری سے تندرست ہو گیا تو ایک ہفتہ کے روزوں کا اضافہ کریگا چنا نچہ جونہی وہ تندرست ہوااس نے لوگوں کے لئے ایک ہفتہ کے روزے بڑھا دیئے۔

جب یہ بادشاہ مرااور دوسرابادشاہ ان کا حکمران بنا تواس نے لوگوں کو تکم دیا کہتم پورے بچپاس روزے پورے کرو، پھرانہیں دومونیں پہنچیں اور وہ جانوروں کی موت تھی تواس بادشاہ نے کہاا پنے روزوں کوزیادہ کروچنانچہ دس روزے ان روزوں سے پہلے اور دس بعد میں بڑھاد ئے گئے۔

السستوجمة كنز الايمان: اے ايمان والوتم پردوزے فرض كئے گئے جيسے اگلوں پرفرض ہوئے تھے كہيں تہميں پر ہيز گارى ملے۔

(ب٢، البقرة: ١٨٣)

نیز کہا گیا کہ کوئی امت الیی نہیں مگر الله تعالیٰ نے ان پر ما ورمضان کے روز بے فرض کئے تھے مگروہ اس سے برگشتہ ہو گئے ۔

بغوی کا قول ہے اور سیح بھی یہی ہے کہ رمضان ، مہینے کا نام ہے اور بدرَ مَضاء سے مُشْتَق ہے جس کے معنی گرم پیقر کے ہیں کیونکہ وہ شدید گرمی کے موسم میں روز ہے رکھا کرتے تھے۔عرب قبیلوں نے جب مہینوں کے نام رکھنا جا ہے تو ان ایام میں بیم ہینہ انتہائی گرمی کے موسم میں آیا چنا نچہ اس کا نام رمضان رکھا گیا۔ پچھ حضرات کا کہنا ہے کہ اس ماہ کو رمضان اس لئے کہتے ہیں کہ بیماہ مقدس گنا ہوں کوجلا و بتا ہے۔

روزے ہجرت کے دوسرے سال فرض کئے گئے، بیدین کا ایک اہم رکن ہے،اس کے وُجُوب کے مُثَرِّر کی تُثَافِیری جائے گی ،احادیث مقدسہ میں اس ماہ کے بہت سے فضائل منقول میں جن میں سے ایک حدیث بیہ ہے کہ

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فَر مایا: جب رمضان المبارک کی پہلی رات آتی ہے تو جنت کے تمام درواز سے کھول دستے جانے ہیں اور بورا ماور مضان ان میں سے کوئی درواز و بندنہیں کیا جاتا اور الله تعالیٰ پکار نے والے کو تکم دیتا ہے جو ندا کرتا ہے کہا ہے نکی کے طلب کرنے والے! متوجہ ہواورائے گنا ہوں کے طلب گاررک جا۔(1)

پھروہ کہتا ہے: کوئی بخشش طلب کرنے والا ہے جسے بخش دیا جائے؟ کوئی سائل ہے جسے عطا کیا جائے؟ کوئی تو بہکرنے والا ہے جسے بخش دیا جائے؟ اور شیح ہونے تک بیندا ہوتی رہتی ہے اور الله تعالی ہرعیدالفطر کی رات وس لا کھا یہے بندوں کو بخشا ہے جن پرعذاب واجب ہو چکا ہوتا ہے۔ (2)

حضرت سلمان فارس رَضِيَ اللهُ عَنهُ مصمروى م كه حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَي اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَاللهُ عَنهُ عَالَى كَآخرى دن خطبه ديا اور فرمايا:

ا بے لوگو! تم پرایک عظیم مہینہ سابیگن ہے جس میں لیلۃ القدر ہے جو ہزار مہینوں سے بہتر ہے،اللہ تعالیٰ نے اس

- ۱٦٤٢ الحديث ١٦٤٢
- النجان، الباب الثالث والعشرون من شعب الايمان... الخ ، التماس ليلة القدر في الوتر من العشر الاواخر... الخ،
 ٣٣٥/٣ الحديث ٩٦٩٥ بالتقديم والتاخير

کے روزوں کوفرض اوراس کی را توں میں عبادت کوسنت قرار دیا ہے، جو شخص اس ماہ میں کسی نیکی سے قرب حاصل کرتا ہے اسے دیگر مہینوں میں فرض کی ادائیگی کا ثواب ملتا ہے اور جس نے فرض ادا کیا وہ ایسے ہے جیسے اس نے دوسر سے مہینوں میں سنز فرائض ادا کئے۔

یے مبر کا مہینہ ہے اور صبر کا اجر جنت ہے، یہ بھائی چارے اور ہمدردی کا مہینہ ہے، یہ ایسا مہینہ ہے کہ جس میں مومن کا رزق زیادہ ہوتا ہے، جس شخص نے اس مہینہ میں کسی روزہ دار کا روزہ افطار کرایا اسے غلام آزاد کرنے کا ثواب ماتا ہے اور اس کے گناہ بخش دیئے جاتے ہیں۔

ہم نے عرض کی: یادسول الله دِصَلَی الله عَلَیْکَ وَسَلَم) اہم میں سے ہر خض الیں چیز نہیں پاتا جس سے وہ روزہ وارکاروزہ وہ وروزہ وارکاروزہ افطار کرائے، آپ نے فرمایا: الله نعالی بی تواب ہراس شخص کوعطا کرتا ہے جو کسی روزہ دارکاروزہ دودھ کے گھونٹ یا پانی کے گھونٹ یا گھور سے افطار کراتا ہے اور جس نے کسی روزہ دارکوسیر کیا تو یہ اس کے گنا ہوں کی بخشش ہوگی اور الله نعالی اسے میرے حوض سے ایساسیر اب کرے گا کہ وہ اس کے بعد بھی پیاسا نہ ہوگا اور اسے بھی روزہ دار کے بعد بھی پیاسا نہ ہوگا اور اسے بھی روزہ دار کے برابر اجر ملے گا کی میں کیا جائے گا اور یہ وہ مہینہ ہے جس کا اول رحمت، درمیان مغفرت اور آخر جہنم ہے آزادی ہے۔

جس نے اس مہینہ میں اپنے خادم سے تخفیف کی ،اللّٰہ تعالیٰ اسے جہنم سے آزادی دےگا۔اس میں چارکام بہت زیادہ کرو، دوکاموں سے تم اپنے رب کوراضی کرو گے اور دوکاموں سے تمہیں بے نیازی نہیں ہے، وہ دوکام جن سے تم اپنے رب کوراضی کرو گے وہ لاالله الا اللّٰه کی شہادت اور استِ خفار کرنا ہے اور وہ دوکام جن سے تمہارے لئے مَفَر نہیں ہے وہ استے رب سے جنت کا سوال اور جہنم سے پناہ ما نگنا ہے۔ (1)

ان احادیث فضائل میں سے ایک حدیث ہے بھی ہے کہ حضور صَلَّی اللَّهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا جس نے ایمان اور طلب ثواب کے لئے ماہِ رمضان کے روزے رکھے اس کے ا<u>گلے بچھلے</u> تمام گناہ بخش دیئے جاتے ہیں۔⁽²⁾

الباب صحيح ابن خزيمه، كتاب الصيام، باب فضائل شهر رمضان ، ۱۹۱/۳ ، الحديث ۱۸۸۷ و شعب الايمان، الباب
 الثالث و العشرون ، باب في الصيام، ما جاء في ليلة النصف من شعبان، ۳۰۰/۳ ، الحديث ۳٦٠٨

^{2}مسند احمد، مسند ابي هريرة، ٣٣٣/٣، الحديث ٩٠١١

M

نی کریم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں: رب تعالی فرما تا ہے کہ انسان کا ہڑمل اسی کے لئے ہے سوائے روزہ کے پس تحقیق روزہ میرے لئے ہے اور میں ہی اسکی جزاہوں اور تجھے الیی عبادت کا فی ہے جسے اللّٰه تعالیٰ نے اپنی ذات ہے منسوب کیا ہے۔ (1)

حضور صَدِّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَدَّم ارشاد فرماتے ہیں کہ ما ورمضان میں میری امت کو پانچ چیزیں دی گئی ہیں جواس سے
پہلے کسی امت کونہیں دی گئیں، روز ہ دار کے منہ کی ہو⁽²⁾ الله کے ہاں مشک سے زیادہ عمدہ ہے، ان کے افطار تک فرشت
ان کے لئے بخشش طلب کرتے ہیں، کہ اس ماہ میں سرکش شیطان قید کر دیئے جاتے ہیں، الله تعالی ہر دن جنت کوسنوار تا
ہے اور ارشاد فرما تا ہے کہ عنقریب میرے نیک بندے اس میں داخل ہوں گے، ان سے تکلیف اور اذبیت دور کر دی
جائے گی۔

اوراس مہینہ کی آخری رات میں انہیں بخشاجا تا ہے۔عرض کیا گیا:یارسول الله دصَلَّی اللهُ عَلَیْکَ وَسَلَّم)! کیااس سے مرادلیلة القدر ہے؟ آپ نے فرمایا بنہیں! لیکن کام کرنے والا کام پورا کرکے اپناا جریا تا ہے۔ (3)

76 ہزار نیکیاں

حضرت ِسيِّدُ ناابن مسعود رضى اللهُ عَنهُ سے روایت ہے کہ تا جدار مدینہ منورہ، سردار مکہ مکرمہ صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كافر مانِ فرحت نشان ہے: جو بسسم اللّهِ الموَّ حُملنِ الوَّ جِیْم پِرِّ سے گا الله تبارک وتعالی ہر حرف کے بدلے اُس کے نامہ آئمال میں چار ہزار نیکیاں ورج فر مائے گا، چار ہزارگناہ بخش وے گا اور چار ہزار رورجات بلند فرمائے گا۔ (فردوس الاحبار، ۲۶/۶، الحدیث ۵۷۳)

- 1بخارى، كتاب الصوم، باب هل يقول اني ... الخ ، ١٩٨١، الحديث ١٩٠٤
- واس سے بیمطلب ہر گزندلیا جائے کہ منہ اور وانت صاف کرنے سے ستی برتی جائے بلکہ رمضان میں مسواک کرنا دیگرایا م سے دس گناہ زیادہ ثواب کا موجب ہے۔
 - 3مسند احمد، مسند ابي هريرة، ٣٠٤٤، الحديث ٢٩٢٢ بالتقديم والتاخير

إب 103]

خُ فضائلِ ليلة القدر ﴿

حضرت ابن عباس رَضِى اللهُ عَنهُمَا سے مروی ہے: حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کے حضور مِيں بنی اسرائيل کے ایسے شخص کا تذکرہ کیا گیا جس نے ہزار ماہ راہِ خدا میں اپنے کندھے پر ہتھیا را گھائے تھے، حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے اس پر اِظہارِ تجب فر مایا اور اپنی اُمت کے لئے الین نیکی کی تمنا فر مائی اور کہا: اے رب! تو نے میری امت کوسب امتوں سے کم عمر والا بنایا اور اَعمال میں سب امتوں سے کم کیا ہے، تب الله تعالی نے آپ کولئیکہ القدر عطافر مائی جو ہزار مہینوں کی عبادت سے اُفضل ہے، جنتی مُدَّ ت بنی اِسرائیل کے اس آ دمی نے راہ خدا میں ہتھیا را گھائے تھے، آپ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کواور آپ کی امت کواس طویل مُدَّ ت کے مقابلے میں ایک رات بخشی گئی رہنمت عظمی (لَیکہُ القدر) اس اُمت کے خصائص میں سے ہے۔ (1)

ایک روایت میں ہے کہ اس شخص کانام شمعون تھا، اس نے کامل ایک ہزار ماہ وشمنوں سے جہاد کیا اور بھی بھی اس کے محلوڑ ہے کا نثمد ہو ان سے اللہ تعالی نے جوقوت اور ولیری عطافر مائی تھی اس کے بل ہوتے ہوراس نے وشینوں کو مغلوب کیا تا آئی ان کے ول بہت تنگ ہوئے اور انہوں نے اس کی عورت کی طرف ایک قاصد بھیجا اور وہ اس بات کے ضامن ہوئے کہ وہ عورت کوسونے کا بحرا ہوا تھال پیش کریں گے، اگر وہ اپنے شوہر کوقید کر لے تاکہ وہ اس مر وجاہد کواپ تیار کر وہ مکان میں قید کر دیں اور سب لوگ راحت وسکون پائیں چنانچہ جب وہ سوگیا تو عورت نے اسے مجور کے جھال سے بٹے ہوئے مضبوط رسوں سے باندھ دیا، جب وہ بیدار ہوا تو اس نے اپنے جسم کو حرکت فی جس سے اس نے رسیوں کو نکورٹ کی طرف ایک عورت ہوئی، عمر میں تہاری وقت کا اُندازہ لگانا جاہتی تھی۔ جب کا فروں کواس کی خبر ملی تو انہوں نے عورت کی طرف ایک موٹی آئیجر بھیجی، عورت نے قوت کا اُندازہ لگانا جاہتی تھی۔ جب کا فروں کواس کی خبر ملی تو انہوں نے عورت کی طرف ایک موٹی آئیجر بھیجی، عورت نے اسے بھر باندھ دیا اور اس مر وجاہد نے پہلے کی طرح اسے بھی تو ٹر دیا۔ تب المیس کا فروں کے پاس آیا اور انہیں ہے بات

^{1}تفسير بغوي، سورة القدر، تحت الآية: ٣ ، ٤٧٩/٤

^{2} وہ اُونی کیڑا جو گھوڑے پرزین کے نیچے رکھتے ہیں۔علمیه

سمجھانی کہ وہ عورت سے کہیں کہ وہ مرد ہی سے بوچھے کہ کوئی چیز ایسی ہے جس کے توڑنے کی وہ طاقت نہیں رکھتا، چنانچہ انہوں نے عورت کی طرف آ دمی بھیجا اور اسے یہی کہلا بھیجا چنانچہ عورت نے اس سے سوال کیا تو اس مر دِمجاہد نے کہا:
میر کے کیسو، اس کے اٹھارہ طویل گیسو تھے جوز مین پر گھٹے رہتے تھے۔ جب وہ سوگیا توعورت نے چار کیسوؤں سے میر کے کیسو، اس کے اٹھارہ طویل گیسو تھے باندھ دیئے، پھر کا فرآ گئے اور انہوں نے اسے پکڑلیا اور اسے اپنی قربان گاہ کی اس کے پاؤں اور چارسے اس کے ہاتھ باندھ کہ گرا تی بلندی اور فراخی کے باوجو داس میں صرف ایک ستون تھا، کا فروں نے اس کے کان اور ہونے کا فروں نے اس مر دِمجاہد نے اللّٰہ تعالیٰ سے سوال کیا کہ اسے ان بندھنوں کو توڑنے کی قوت بخشے اور ان کا فروں پریہ ستون مع سقف کے گرا دے اور اسے ان کے پخٹے گل سے نجات دے چنا نچہ توڑنے کی قوت بخشے اور ان کا فروں پریہ ستون مع سقف کے گرا دے اور اسے ان کے پخٹے گل سے نجات دے چنا خچہ اللّٰہ تعالیٰ نے ان سب کو ہلاک کر دیا اور اسے نجات بخشی۔ (۱)

جب صحابه کرام دَضِیَ اللهُ عَنْهُمُ نے بیہ بات سی تو انہوں نے کہا: یارسول الله (صَلَّی اللهُ عَلَیْکَ وَسَلَّم)! کیا ہم بھی اس جسیا تو اب پاسکتے ہیں؟ آپ نے فرمایا: مجھے اس کاعلم نہیں، پھر آپ نے اپنے رب سے سوال کیا تو الله تعالیٰ نے آپ کوئیکهٔ القدرعطاکی جسیا کہ پہلے فدکور ہوا ہے۔

حضرت ِانس رَضِیَ اللّٰهُ عَنُه ہے مروی ہے حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: جب لَیْکَةُ القدر آتی ہے تو جبریل عَلَیْهِ السَّلام فرشتوں کی ایک جماعت کے ساتھ نازل ہوتے ہیں اور ہراس بندے پر رحمت بھیجتے ہیں اور بخشش کی دعا کرتے ہیں جو کھڑے ہوکریا بیٹھ کراللّٰہ تعالیٰ کے ذِکر میں مشغول ومصروف ہوتا ہے۔(2)

ليلة القدر مين بشارر متون كانزول:

حضرتِ ابوہریرہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کہتے ہیں کہ کُیلَةُ القدر میں زمین پر بے شار فرشتے اُتر تے ہیں ⁽³⁾ اوران کے اُتر نے کے لئے آسان کے دروازے کھول دیئے جاتے ہیں۔

- 1 تاريخ الطبري، ارسال الله رسله الثلاثة ، ٢٢/٢
- 2شعب الايمان، الباب الثالث والعشرون...الخ، في ليلة العيد و يومهما، ٣٤٣/٣، الحديث ٣٧١٧
 - 3مسند البزار، ٦١/١٦، الحديث ٩٤٤٧

M

جبیبا کہ حدیث شریف میں وار دہوا ہے، تب اُنوار جیکتے ہیں، عظیم بُکِلَّ ہوتی ہے جس میں مُلکِ عظیم مُکُشِف ہوجا تا ہے، لوگ اس میں مختلف درجات پر فائز ہوتے ہیں، بعض ایسے ہوتے ہیں جن پر زمین وآ سان کے ملکوت مُکُشِف ہوتے ہیں اور جب اُن پر آ سانوں کے ملکوت منکشف ہوتے ہیں جن میں اور جب اُن پر آ سانوں کے ملکوت منکشف ہوتے ہیں تو وہ آ سانوں میں فرشتوں کوان صورتوں میں د کیھتے ہیں جن میں وہ مشغولِ عبادت ہوتے ہیں، بعض قیام میں، بعض قُعُو د میں، بعض رُکوع میں، بعض نَر کر میں، بعض شکر میں اور بعض شہر جن ہیں۔ شہیجے تہلیل میں مصروف ہیں۔

بعض لوگوں پر جنت کے اُحوال منکشف ہوتے ہیں اور وہ جنت کے محلات، گھر، حوریں، نہریں، درخت اور جنت کے پیمل وغیرہ و کیصتے ہیں اور عرشِ اُعظم کا نظارہ کرتے ہیں جو کہ جنت کی حبیت ہے، اُنبیاء، اُولیاء، شہداء اور صدیقین کے پیمل وغیرہ و کیصتے ہیں۔ بعض ایسے لوگ بھی ہوتے ہیں جن کی آئھوں سے جاب اٹھ جاتے ہیں اور وہ رب ذوالجلال کے مقامات دیکھتے ہیں۔ بعض ایسے لوگ بھی ہوتے ہیں جن کی آئھوں سے جاب اٹھ جاتے ہیں اور وہ رب ذوالجلال کے علاوہ اور کچھ ہیں۔ کیمی پاتے۔

حضرت عمردَ ضِى اللهُ عَنُه سے مروی ہے حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جس شخص نے ماور مضان کی ستائیسویں شب مہیج ہونے تک عبادت میں گزاری وہ مجھے آمضان کی تمام راتوں کی عبادت سے زیادہ پیند ہے۔ حضرتِ فاطمة الزہراء رَضِی اللهُ عَنْهَا نے عرض کی: اے ابا جان! وہ ضعیف مرداور عور تیں کیا کریں جو قیام پر قدرت نہیں رکھتے، آپ نے فرمایا: کیاوہ تکیے نہیں رکھ سکتے جن کا سہارالیں اوراس رات کے کھات میں سے پچھ کھات بیڑھ کر گزاریں اورالله تعالی سے دعا مانگیں مگریہ بات اپنی اُمت کے تمام ماور مضان کو قیام میں گزار نے سے زیادہ محبوب ہے۔ (1)

حضرت عائشه رَضِى اللهُ عَنُهَا سے مروی ہے:حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: جس نے لَيَكَةُ القدر بيدار ہوكر محضرت عائشه رَضِى الله عَنْهَا سے مروی ہے:حضور صَلّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے اسے بخش دیا، اسے اپنی رحمت میں جگہ دیتا ہے اور جبریل عَلَیْهِ السَّلام نے اس پر اسپے پر پھیرے وہ جنت میں داخل ہوا۔ (2)

.....0

.....2

اب 104

فضائل عيد الفطر فضائل

عیدنام ہے ماوِشوال کے پہلے دن اور فِی الحجہ کے دسویں دن کا، ان دونوں کوعیداس لئے کہتے ہیں کہ اس میں لوگ اِطاعت اللی یعنی ماوِر مضان کے فرض روز ہے اور جج سے فارغ ہوئے اور اِطاعت رسول صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کی طرف لوٹ آئے یعنی انہوں نے شوال کے چھروزے رکھے اور حضور صَلَّی اللّه عَلَیْهِ وَسَلَّم کی زیارت کی تیاری کی، یا انہیں عیداس لئے کہاجا تا ہے کہ یدن ہرسال لوٹ آئے ہیں، یااس لئے کہاس میں الله تعالی بار بارفضل وکرم کرتا ہے، یا اس لئے کہان کے کہان کے اس میں الله تعالی بار بارفضل وکرم کرتا ہے، یا اس لئے کہان کے آئے سے خوشیاں لوٹ آئی ہیں، بہر حال تمام توجیہات میں عود کامعنی پایاجا تا ہے۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نَ يَهِلَى نَمَا زِعِيد تَ هِ مِيلَ نَمَا زِعِيد الفطراداكي اور پھرا ہے بھی ترکنہيں فر مايا⁽¹⁾لہذا بيسنت مو كده ہے۔

حضرتِ ابو ہر رہ وَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ سے مروی ہے کہ اپنی عیدوں کو تکبیروں سے زینت بخشو۔ (2)
حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کہ جس شخص نے عید کے دن تین سومر تبہ سُبے حٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمُدِهٖ پرُ صا
اور مسلمان مُردوں کی رُ وحوں کواس کا ثواب ہدیہ کیا تو ہر مسلمان کی قبر میں ایک ہزاراً نوار داخل ہوتے ہیں اور جب وہ
مرے گاللّٰہ تعالیٰ اس کی قبر میں ایک ہزاراً نوار دَ اَخل فرمائے گا۔ (3)

حضرتِ وَهُب بن مُنَيِّه دَطِسَى اللَّهُ عَنْه كا كهناہے كه شيطان هرعيد برنو حه وزارى كرتاہے اورتمام شيطان اس كے اردگر دجع ہوكر پوچھتے ہيں: اے آتا ہے كيوں غضبناك اوراداس ہيں؟ وہ كہتاہے:الله تعالى نے آج كے دن امت

¹ ١٨٩/٢ صلاة العيدين، ١٨٩/٢ الرافعي الكبير للعسقلاني، كتاب صلاة العيدين، ١٨٩/٢

^{2}المعجم الاوسط ، ١٥/٣ ، الحديث ٢٢٧٦

۱۲۲۹/۱ محالس ومنتخب النفائس، باب فضل عرفة والعيدين والتكبير والأضحية، ١٢٩/١

X

مُحرصَلًى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كوبخش ديا بهالمذاتم أنهين لذتون اورخوا مشات نفساني مين مشغول كرو_

حضرتِ وَہُب بن مُنَيِّه دَضِیَ اللهُ عَنُه سے بہ بھی مروی ہے کہ الله تعالیٰ نے عیدالفطر کے دن جنت کو پیدا فر مایا اور درخت طوبیٰ عیدالفطر کے دن بویا، جبریل کا وَحی کے لئے عیدالفطر کے دن اِنتخاب کیا اور فرعون کے جادوگروں کی توبہ بھی الله تعالیٰ نے عیدالفطر کے دن قبول فر مائی۔

فرمانِ نبوی ہے کہ جس نے عید کی رات طلب ثواب کے لئے قیام کیا،اس دن اس کا دل نہیں مرے گا جس دن تمام دل مرجائیں گے۔⁽¹⁾

حضرت عمروضی الله عنه نے عید کے دن اپنے بیٹے کو پرانی تمیص پہنے دیکھا تورو پڑے، بیٹے نے کہا: اباجان! آپ کس کئے روتے ہیں؟ آپ نے فرمایا: اے بیٹے! مجھے اُندیشہ ہے کہ آج عید کے دن جب لڑکے تجھے اس پھٹے پرانے تمیں دیکھیں گے تو تیرا دل ٹوٹ جائے گا، بیٹے نے جواب دیا: دِل تو اس کا ٹوٹے جورضائے الہی کونہ پاسکایا اس نے ماں یاباپ کی نافر مانی کی ہواور مجھے امید ہے کہ آپ کی رضا مندی کے فیل الله تعالیٰ بھی مجھے سے راضی ہوگا۔ یہن کر حضر تے عمروضی الله عنه روپڑے، بیٹے کو گلے لگایا اور اس کے لئے دعا کی۔

کسی شاعرنے کیا خوب کہاہے: ۔

قالوا غدا العيد ماذا انت لابسه قلت خلعة ساق عبده الجرعا

فقر وصبر ثوبان بينهما قلب يرى ربه الاعياد والجمعا

العيد لي مأتما ان غبت يا املي والعيدان كنت لي مرأى و مستمعا

﴿1﴾انہوں نے کہاکل عید ہے تم کیا پہنو گے؟ میں نے کہاالی پوشاک جس نے بندے کورفتہ رفتہ بہت کچھ دیا۔

﴿2﴾.....فقراورصبر دو كپڑے ہیں اوران كے درميان دل ہے جس كواس كاما لك عيدوں اور جمعوں ميں ديكھاہے۔

﴿3﴾.....تب میری عیز نبیس ہوگی،اےامیدا گرتو مجھ سے غائب ہوجائے،اورا گرتو میرےسامنےاور کا نوں کے قریب ہوئی تو پھر

میری عیدہے۔

◘ معرفة السنن والآثار للبيهقي، كتاب صلاة العيدين، باب عبادة ليلة العيدين، ٦٧/٣، الحديث ١٩٥٨

یہ بات بھی وارد ہے کہ جب عید کی سے جواللہ تعالی فرشتوں کو بھیجنا ہے جوز مین پراُتر تے ہیں اوروہ گلی کو چوں اور راستوں میں کھڑ ہے ہوجاتے ہیں اور بلند آ واز سے کہتے ہیں جسے جن وانسان کے سواتمام مخلوق سنتی ہے، وہ کہتے ہیں: اے محمد رصَلًی اللّٰه عَلَیْهِ وَسَلّٰم، کی اُمت! اپنے ربِ کریم کی طرف آ وُ، وہ تہ ہیں عطائے عظیم دے گا اور تمہارے بہت بڑے گناہ معاف فر مائے گا اور جب لوگ عید گا ہوں میں آ جاتے ہیں تواللہ تعالی فرشتوں سے فر ما تا ہے: مزدوری کا بدلہ کیا ہے جب وہ اپنا کام مکمل کر لے؟ فرضتے کہتے ہیں: اس کا بدلہ ہیہ ہے کہ اسے پورا آجر دیا جائے ، تب اللّٰہ تعالی فر ما تا ہے: میں تمہیں گواہ بنا تا ہوں ، میں نے ان لوگوں کے لئے اپنی بخشش اور رضا کو ان کا اجر بنایا ہے۔ (۱)

عيادت كاعظيم الشان ثواب

شہنشاہ مدید، قرار قلب وسید، صاحب مُعطَّر پسینہ، باعث نزول سکینہ، فیض گنجینہ صَلَی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم فَعَر بِعِنْ بِهِ اللّهِ عَزْوَجَلُّ أَس پر پجھِتر ہزار ملائکہ کے فرمایا: ''جوا پنے کی مسلمان بھائی کی حاجت روائی کے لئے جاتا ہے اللّه عَزْوَجَلُّ اُس پر پجھِتر ہزار ملائکہ کے ذریعے سامیفرما تاہے، وہ فرشتے اس کے لئے دُعاکرتے ہیں اوروہ فارغ ہونے تک رَحمت میں نموط زن رہتا ہے اور جب وہ اس کام سے فارغ ہوجاتا ہے تواللّه عَزْوَجَلُّ اس کے لئے ایک جج اورایک عمرے کا تواب لکھتا ہے اور جس فی میا دت کی اللّه عَزْوَجَلُّ اس پر پجھِتر ہزار ملائکہ کے ذَیہ یعی سامیفر مائے گا اور اس کے ہر قدم اور گھر واپس آنے تک اس کے ہر قدم اٹھانے پر اس کے لئے ایک نیک کھی جائے گی اور اس کے ہر قدم رکھنے پر اس کا ایک گناہ مٹادیا جائے گا اور ایک ورجہ بلند کیا جائے گا، جب وہ مریض کے ساتھ ہیٹھے گا تورجت اسے ڈھانے پر اس کا ایک گناہ مٹادیا جائے گا اور ایک ورجہ بلند کیا جائے گا، جب وہ مریض کے ساتھ ہیٹھے گا تورجت اسے ڈھانے بر ہے گا۔ ''

(الترغيب والترهيب ١٦٥/٤٠ ، الحديث ١٣)

^{1}احبار مكه، ذكر صوم شهر رمضان بمكة، ٦/١ ٣١، الجزء الثاني، الحديث ٥٧٥ ١

باب 105

للمنظم فضائل عشرة ذِي الحِجّه ﴿

حضرتِ ابن عباس دَضِیَ الله عَنهُ مَا سے مروی ہے کہ حضور صَدَّی الله عَلیْهِ وَسَدَّم نے فرمایا: اور اَیام ایسے نہیں ہیں جن میں عمل الله تعالی کوان دنوں یعنی فی الحجہ کے دس دنوں کے مل سے زیادہ پبند ہو صحابہ کرام عَدَیْهِمُ الرِّصُوان نے عرض کیا: کیار او خدامیں جہاد بھی مگریہ کہ آدمی اپنامال وجان لے کر راو خدامیں نجہاد بھی مگریہ کہ آدمی اپنامال وجان لے کر راو خدامیں نکلا اور ان میں سے کھے بھی سلامت نہ لایا۔

حضرتِ جابر بن عبدالله رَضِى الله عَنه سے مروی ہے حضور صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم نے فرمایا کہ الله تعالیٰ کوان آیام سے زیادہ محبوب اور کوئی دن نہیں ہے اور ان دس دنوں سے افضل الله متعالیٰ کے ہاں کوئی دن نہیں ہے ، کہا گیا کہ راو خدا میں جہاد کے دن بھی ان جیسے نہیں مگر جس خض نے راو میں جہاد کے دن بھی ان جیسے نہیں مگر جس خض نے راو خدا میں اپنے گھوڑ ہے کوزخی کردیا اور خود بھی زخی ہوا۔ (2)

حضرتِ عائشہ دَضِیَ اللّهُ عَنْهَا ہے مروی ہے کہ ایک جوان جوا حادِیث رسول کوسنا کرتا تھا، جب نے کی الحجہ کا چا ندنظر
آیا تواس نے روزہ رکھ لیا، جب حضور صلّی الله عَلَیْهِ وَسَلّم کویی خبر لی تو آپ نے اسے بلایا اور پوچھا: تجھے کس نے اس بات
پرآمادہ کیا کہ تو نے روزہ رکھ لیا؟ اس نے عرض کی: پیارسول الله (صَلَّی اللهُ عَلَیْکَ وَسَلَّم)! میرے ماں باپ آپ پر قربان
موں، یہ جج و قربانی کے دن ہیں، شاید کہ الله تعالی مجھے بھی ان کی دعاوَں میں شامل فرما لے۔ آپ نے فرمایا: تیرے ہر
دن کے روزہ کا اجر سوغلام آزاد کرنے کے برابر، سواُونٹوں کی قربانیوں اور راوِخدا میں دیئے گئے سوگھوڑوں کے آجرک
برابر ہے۔ جب آٹھویں نے کی الحجہ کا دن ہوگا تو تجھے اس دن کے روزہ کا ثواب ہزار غلام آزاد کرنے، ہزاراُونٹ کی قربانی
کرنے اور راوِخدا میں سوار کی کیلئے ہزار گھوڑے دینے کے برابر حاصل ہوگا۔ جب نویں کا دن ہوگا تو تجھے اس دن کے روزہ کا ثواب دو ہزار غلام آزاد کرنے، دو ہزاراُونٹوں کی قربانی اور راوِخدا میں سوار کی کیا کے دو ہزار گھوڑوں

^{🕡}صحيح ابن خزيمه، كتاب المناسك، باب فضل العمل في عشر ذي الحجة، ٢٧٣/٤، الحديث ٢٨٦٥

الخصيص الايمان، الباب الثالث والعشرون من شعب الإيمان، باب في الصيام، تخصيص ايام العشر من ذي الحجة... الخ، ٣٥٣/٣٥٠،
 الحديث ٤٧٤٩ و كنز العمال، الباب الثامن في فضائل الامكنة والأزمنة، ٢/٦٤، الجز الثاني عشر، الحديث ٣٥١٨٦

کے اُجر کے برابر ہوگا۔ ⁽¹⁾

نبی اَ کرم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کاارشادہے کہ نویں فِی الحجبہ کاروزہ دوسال کے روزوں کے برابراورعاشورہ کا روزہ ایک سال کے روزہ کے برابر ہے۔(2) مفسرین کرام اس فرمانِ اللی:

اورہم نےموی کونیس رانوں کاوعدہ دیااوراس کودس سے بورا کیا۔

وَوْعَدْنَامُوْسَى ثَلْثِيْنَ لَيْلَةً وَّا تَهُمُنْهَابِعَشْرٍ (3)

کی تفسیر میں لکھتے ہیں کہان دس راتوں سے مراد ذی الحجہ کی پہلی دس را تیں ہیں۔

حضرت عبدالله بن مسعود رَضِى الله عَدُ هـ مروى ہے كہ الله تعالى نے دنوں ميں سے چاردن به بينوں ميں سے چارمہينے، عورتوں ميں سے چارعورتيں پيند فرمائى ہيں، چارا دمى جنت ميں سب سے پہلے جائيں گاور چارا دميوں كى جنت مشاق ہے، دنوں ميں سے پہلا جمعہ كادن ہے، اس ميں ايك ساعت ہے كہ جب كوئى بندہ اس ساعت ميں الله تعالى سے دنيايا آخرت كى كسى فعت كاسوال كرتا ہے توالله تعالى سے عطافر ما تا ہے۔ دوسرانويں ذى الحجہ (عرفه) كادن ہے، جب عرفه كادن ہوتا ہے توالله تعالى اسے عطافر ما تا ہے۔ دوسرانويں ذى الحجہ (عرفه) كادن ہے، جب عرفه كادن ہوتا ہے الله تعالى فرشتوں ميں فخر كرتا ہے اور فرما تا ہے : اے فرشتو! مير بندوں كود يكھو جو بھرے بال، غبارا آلود چرے لئے مال خرچ كرك اور جسموں كومشقت ميں ڈال كرحاضر ہوئے ہيں، تم گواہ ہوجاؤ ميں نے آئييں بخش ديا ہے۔ تيسرا قربانى كادن ہے۔ جب قربانى كادن ہے۔ جب قربانى كادن ہے۔ جب قربانى كادن ہے۔ جب قربانى كادن ہے دہ بھر بانى كادن ہوجا تا ہے۔ چوتھا عيدالقطر كادن ہے، جب بندے ماورمضان كردوز بركھ ليتے ہيں اورعيدى كماز بندے كہ ہركاہ كا كفارہ ہوجا تا ہے۔ چوتھا عيدالقطر كادن ہے، جب بندے ماورمضان كردوز بركھ ليتے ہيں اورعيدى كماز بين حدے باہر نكتے ہيں توالله تعالى فرشتوں سے فرما تا ہے كہ ہركام كرنے والا أجرت طلب كرتا ہے، ميرے بندوں نے مهميد بھر دونا تا ہوں كہ ميں نيات ہوں كہ ميں نيات ہوں كو ميں بندان ديا ہے، اور مضان كرد الله تعالى نيتہ ہارى برائيوں كوئيكيوں ميں بدل ديا ہے۔ اور والا پكار كے والا پكار كر دوالا پكار كر ہوتا ہے: الے امت محمد رصّلى الله عَلَى وَسَلَم ہو جاءَ الله تعالى نے تمہارى برائيوں كوئيكيوں ميں بدل ديا ہے۔

عار پسندیده مهینے بیر ہیں: رَجب المرجب، ذِی قَعد ہ، ذِی الحجہاور محرم الحرام <u>عورتیں بیر ہیں</u>: مریم بنت عمران، خدیجہ

- 1اللآليء المصنوعة للسيوطي، كتاب الصلاة، ٧١/٢
- 2مسند احمد، مسند الانصار، حديث ابي قتادة الانصاري، ١/٨ ٣٨١ الحديث ٢٢٦٧٩
- ان جمة كنز الايمان: اورجم نے مولی سے میں رات كاوعده فرمايا اور ان میں وس اور بڑھا كر يورى كيں (ب٩، الاعراف: ٢٤١)

N.

بنت خُوَيْلِد، جو جہان کی عورتوں میں سب سے پہلے الله اوراس کے رسول پرایمان لائیں ، فرعون کی بیوی آسیہ بنت مُرَاجِم اور جنتی عورتوں کی سروار فاطمہ بنت مجمد (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ورَضِيَ اللهُ عَنْهُنَّ)۔

ہرقوم میں سے ایک سبقت لیجانے والا ہے، عرب میں سے سبقت لے جانے والے ہمارے آقا و مولی محمد صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِیں، فارِس سے حضرت ِ سلمان، رُوم سے حضرت ِ صُنهَ بَیْب اور حبشہ سے حضرت ِ بلال رَضِیَ اللهُ عَنهُمُ اَجْمَعِیْن بیں۔ اور وہ جار جنت جن کی مشاق ہے یہ حضرت علی بن ابی طالب، حضرت ِ سلمان فارس، حضرت ِ عَمَّار بن یا سراور حضرت ِ مقداد بن اَ سوورَ ضِیَ اللهُ عَنهُمُ بیں۔ مقداد بن اَ سوورَ ضِیَ اللهُ عَنهُمُ بیں۔

نبی کریم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے مروی ہے: آپ نے فرمایا کہ جس نے یومُ التروییہَ (آ ٹھویں ذی الحجہ) کاروز ہ رکھا، اللَّه تعالیٰ اسے حضرتِ ابوب عَلیْهِ انسَّلام کے مصائب پرصبر کرنے کے برابر ثواب عطافر ما تاہے اور جس نے یومِ عرف (ذی الحجہ کی نویں) کاروز ہ رکھا،اللّه تعالیٰ اسے حضرتِ عیسیٰ عَلیْهِ السَّلام کے برابر ثواب عطافر ما تاہے۔ (1)

آ پ سے یہ بھی مروی ہے کہ جب عرفہ کا دن ہوتا ہے تواللہ تعالیٰ اپنی رحمت کو پھیلاتا ہے، اس دن سے زیادہ کسی دن میں بھی لوگ آ گ سے آزاد نہیں ہوئے اور جس نے عرفہ کے دن اللہ تعالیٰ سے دنیایا آخرت کی حاجت طلب کی تو اللہ تعالیٰ اس کی حاجت پوری کر دیتا ہے (²⁾ اور عرفہ کے دن کا روزہ ایک سال گزشتہ اور ایک سال آئندہ کے گنا ہوں کا کفارہ ہوتا ہے اور اس میں میں میں میں میں اللہ اعلم کہ بیدن دوعیدوں کے درمیان ہے اور عیدین مومنوں کے لئے مسرت کے دن ہوتے ہیں اور اس سے بڑھ کرکوئی مسر سے تاب کو کہ کہ کہ ان لوگوں کے گناہ بخش دیئے جا کمیں۔ (³⁾

عاشوراء کا دن عیدین کے بعد ہوتا ہے لہذااس کا روز ہ ایک سال کے گنا ہوں کا کفارہ ہے، دوسری وجہ یہ ہے کہ یوم عاشوراء موکی عَلیْہِ السَّدَم کے لئے ہے اور آپ کی عزت وعظمت دیگرا نبیاء عَلیْهِ مُ السَّدَم سے اَرفع واعلیٰ ہے۔

¹ ۱۱۹ مستذكرة الموضوعات للفتني ، ص۱۱۹

^{2}نزهة المجالس و منتخب النفائس، باب فضل عرفة والعيدين والتكبير و الأضحية، ٢٢٤/١

^{3}مسلم، كتاب الصيام، باب استحباب صيام ثلاثة ايّام، ص ٥٩٠ الحديث ١٩٧ _ (١١٦٢)

اب 106

فضيلتِ عاشوراء ﴿

حضرت ابن عباس دَضِی الله عَنهُ مَا سے مروی ہے کہ حضور صَلَّی الله عَلیه وَسَلَّم مَدینه مُنورة تشریف لائے تو آپ نے یہودکو عاشوراء کے دن کاروزہ رکھتے د کی کے کہ اس دن روزہ کیوں رکھتے ہو؟ انہوں نے کہا: یہ الیہ ادن ہے جس میں الله تعالیٰ نے موسی عَلیهِ السَّلام اور بنی إسرائیل کوفرعون اور اس کی قوم پرغلبه عطافر مایا تھالہذا ہم تعظیماً اس دن کا روزہ رکھتے ہیں ، اس پرحضور صَلَّی الله عَلیه وَسَلَّم نے فرمایا کہ ہم موسی عَلیْهِ السَّلام سے تہاری نسبت زیادہ قریب ہیں چنانچہ آپ نے بھی اس دن کاروزہ رکھنے کا تھم دیا۔ (1)

خصوصیاتِ بوم عاشوراء: ۗ

عاشوراء کے دن کے ساتھ بہت سی باتیں مخصوص ہیں، ان میں سے چند یہ ہیں:

اسساس دن حضرتِ آوم عَلَيْهِ السَّلام كى توبة بول كى گئى، اسى دن انهيس بيدا كيا گيا، اسى دن انهيس جنت ميس داخل كيا گيا۔

🖈اسی دن عرش ، کرسی ، آسمان ، زمین ، سورج ، چاند ، ستار بے اور جنت پیدا کئے گئے ۔

🖈اسی دن حضرتِ ابراہیم عَلَیْهِ السَّلام پیراہوئے،اسی دن انہیں ہ گ سے نجات ملی۔

🖈اسی دن حضرت ِموسیٰ عَلَیْهِ السَّلام اور آپ کی امت کونجات ملی اور فرعون اپنی قوم سمیت غرق ہوا۔

🖈اسى دن حضرت عيسى عَلَيْهِ السَّارِه پيدا كئے گئے ،اسى دن انہيں آسانوں كى طرف اٹھايا گيا۔

المساسى دن حضرت إوريس عَلَيْهِ السَّلام كومقام بلندكي طرف الثمايا كيا-

🖈اسى دن حضرت نوح عَلَيْهِ السَّلام كى تشتى كوه جودى برهم رى ـ

1مسلم، كتاب الصيام، باب صوم يوم عاشوراء ، ص ٥٧١، الحديث ١٢٧ _ (١١٣٠)

🦟اسى دن حضرت سليمان عَلَيْهِ السَّلام كومُلك عظيم عطا كيا كيا _

🖈اسی ون حضرت بونس عَلیْه السَّلام مجھلی کے بیٹ سے نکا لے گئے۔

🖈اسى دن حضرت يعقوب عَلْيه السَّلام كى بينا كى لوٹا كى گئ

السياسي دن حضرت بوسف عَلَيْهِ السَّادم كبر ع كنونيس سے تكالے كئے۔

🖈اسى دن حضرت ايوب عَليْهِ السَّلام كى تكليف رَفْع كى تني ـ

🖈 آسان سے زمین پرسب سے پہلی بارش اسی دن نازل ہوئی اور

🖈اسی دن کا روز ہ امتوں میں مشہور تھا یہاں تک کہ بیا تھی کہا گیا ہے کہ اس دن کا روز ہ ماہِ رَمضان سے

پہلے فرض تھا پھرمنسوخ کردیا گیااور حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے ہجرت سے پہلے اس دن کاروز ہ رکھا۔

جب آپ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مَد ينه منوره تشريف لا عُتو آپ نے اس دن کی جبتو کی تاکيد کی تا آنکه ، آپ نے آخر عمر شريف ميں فر مايا که اگر ميں آئنده سال تک زنده رہاتو آئنده نویں اور دسویں کاروزه رکھوں گا مگر آپ نے اس سال وِصال فر مايا اور دسویں کے علاوہ روزہ ندر کھ سکے مگر آپ نے اس دن يعنی نویں اور دسویں اور گيار ہویں محرم کے دنوں میں روزہ رکھنے کو پیند فر مایا۔ (1)

جبیبا که فرمانِ نبوی ہے:اس دن سے ایک دن پہلے اور ایک دن بعدروز ہر کھواور یہود کے طریقه کی مخالفت کرو کیونکہ وہ ایک دن ہی کاروز ہر کھتے تھے۔⁽²⁾

بیمُقی نےشعب الایمان میں روایت نقل کی ہے کہ جس نے عاشوراء کے دن اپنے گھر والوں اور اَہل وعیال پر وُسعت کی ،اللّٰہ تعالیٰ اس کے سارے سال میں وُسعت اور برکت عطافر ما تاہے۔⁽³⁾

طبرانی کی ایک منکرروایت میں ہے کہ اس دن میں ایک دِرہم کا صدقہ سات لا کھ درہم کے برابرہے (4)

- سسشرح معانى الآثار، كتاب الصيام، باب صوم يوم عاشوراء، ١٣٥/٢ ، الحديث ٢٢٢٤ ـ ٣٢٢٩ و فتح البارى لابن حجر، كتاب الصوم، باب صيام يوم عاشوراء، ٢١٣/٥
 - 2مسند احمد، مسند عبدالله بن العباس ... الخ ، ١٨/١ ٥، الحديث ٤ ٥ ٢ ٢
 - 3شعب الايمان، الباب الثالث والعشرون...الخ، صوم التاسع مع العاشر، ٣٦٦/٣، الحديث ٩٧٩٥
 - ·····••

K

اور وہ حدیث جس میں ہے کہ جس نے اس دن سرمہ لگایا وہ اس سال آئکھیں دکھنے سے محفوظ رہے گا اور جس نے اس دن عسل کیا وہ بیار نہیں ہوگا ،موضوع ہے۔ ⁽¹⁾

حاکمِ نے اس کی تصریح کی ہے کہ اس دن سرمہ لگا نابدعت ہے۔ (²⁾

ابن قیم نے کہا ہے کہ سرمہ لگانے ، دانے بھونے ، تیل لگانے اور عاشوراء کے دن خوشبو وغیرہ لگانے کی حدیث جھوٹوں کی وضع کر دہ ہے۔

واضح ہو کہ عاشوراء کے دن حضرتِ امام حسین رَضِیَ اللّهُ عَنْه کے ساتھ جو کچھ بیتی وہ اس دن کی عظمت، رَفعت، اللّهُ عَنْه کے ساتھ جو کچھ بیتی وہ اس دن کی رَفعت وعظمت کی بَیْن اللّٰہ ہے کے نز دیک اس کے دَ رَجہ اور اَہل بیت اَطہار کے مراتب سے اس دن کا تعلق اس دن کی رَفعت وعظمت کی بَیْن شہادت ہے لہذا جو شخص اس دن آپ کے مصائب کا ذِکر کرے اسے بیمنا سب نہیں کہ سوائے اِنَّا اِللّٰہِ وَ اِنَّا اَلْمَیْ اِللّٰہِ وَاللّٰہِ اِللّٰہِ اِللّٰہِ اِللّٰہِ اِللّٰہِ اِللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ کی مُتَا اِبْعَت اور فر مانِ اللّٰہی کی مُحافظت ہوگی جس میں ارشاد ہوتا ہے:

أُولَيِكَ عَكَيْهِمْ صَلَوْتٌ مِّنْ مَّ بِيْهِمْ وَمَحْمَةٌ وَأُولَيِكَهُمُ يَهِمْ مِن بِراللهِ تعالى كى طرف سے دروداور رحمت ہےاور

یمی لوگ مدایت یا فته بیں۔

(3) الْهُفَتَدُونَ

خاص طور پر خیال کرو کہ گہیں رَ وافض کی بدعتوں میں مشغول نہ ہوجاؤ جیسا کہ وہ لوگ اور ان کے ہم مثل رونا، پیٹنا اورغم کا إظہار کرتے ہیں کیونکہ بیکا م مومنوں کے اَ خلاق سے بعید ہیں، اگر بیچیزیں اچھی ہوتیں تو ان کے نا ناصَلٰی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کا يوم وِصال ان اُ مور کا بطریق اَ ولیٰ مستحق ہوتا اور ہمیں اللّٰہ کا فی ہے اور وہی عمدہ مَد دگارہے۔

......☆.....☆.......

البقرة: ۷۵ المیمان: بیاوگ بین جن بران کےرب کی ورودیں بین اور رحمت اور یہی اوگ راہ بر بین (پ۲، البقرة: ۷۵۱)

Z

^{1}واللآليء المصنوعة للسيوطي، ٩٣/٢

^{2}الصواعق المحرقة، ص١٨٤

اب 107

خُ فضیلتِ مهمانی فقراء ﴿

نبی اکرم صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کا فرمان ہے مہمان کے لئے تکلف نہ کرو، (1)

تم اسے دشمن مجھو گے اور جس نے اسے دشمن سمجھا اس نے اللّٰه کو دشمن سمجھا اور جس نے اللّٰه تعالیٰ کو دشمن سمجھا اللّٰه تعالیٰ نے اسے دشمن سمجھا۔ ⁽²⁾

فرمانِ نبوی ہے کہ اس شخص کے پاس خیر و برکت نہیں جس میں مہمان نوازی نہیں۔(3)

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كا السِيَّخُصُ سے گزر ہوا جس كے پاس بہت سے اُونٹ اور گائيں تھيں مگراس نے مہمانی نہ كی اور حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كا اليى عورت سے گزر ہوا جس كے پاس چھوٹی چھوٹی بكرياں تھيں اس نے حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كے لئے ايك بكرى ذرج كى تب آپ نے فرمایا: ان دوكود يھوالله تعالیٰ كے ہاتھ ميں اَ خلاق بيں۔ (4)

حضرت ابورافع رَضِیَ اللّهُ عَنْه جوحضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم کے عالم تھے، فرماتے ہیں کہ آپ کے ہاں ایک مہمان اُترا، حضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فرمایا: جاؤ! فلال یہودی ہے کہو کہ میرامہمان آیا ہے، مجھے رَجب کے مہینے تک کے لئے کچھ آٹا بھیج دو، یہودی یہ پیغام س کر بولا: بخدا! میں اُن کو پچھ نہیں دوں گا مگریہ کہ پچھ رہن رکھا جائے، میں نے جاکر حضور صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّم کو خبردی، آپ نے فرمایا: بخدا! میں آسانوں میں امین ہوں، زمین میں امین ہوں، اگروہ مجھے اُدھاردیتا تو میں ضروراداکردیتا، جاؤمیری زِرَه لے جاؤاوراس کے پاس رہن رکھ دو۔ (5)

-الجامع الصغير ، ص٨٦٥، الحديث ١٦٨٦ و تاريخ مدينه دمشق،١٢٦/١٣
 - 2طبقات الشافية الكبرى للسبكي، ٦/٦/٣
- الحديث ٤ ٢/٦ ١ ١ الحديث عقبة بن عامر الجهني، ٦ ٢/٦ ١ الحديث ٤ ١٧٤٢
- 4 شعب الايمان، الباب الثامن و الستون من شعب الإيمان، باب في إكرام الضيف، ٩٣/٧، الحديث٩٩٥٩
 - 5 مسند البزار، ٩/٥ ٣١، الحديث ٣٨٦٣

M

حضرت ابراہیم عَلَیْ السَّلام جب کھانا کھانے کا ارادہ فرماتے تو میل دومیل مہمان کی تلاش میں نکل جایا کرتے سے آج سے آج کی کنیت ابوالفَّیْفان تھی اور آپی صدقِ نیت کی وجہ سے آج تک ان کی جاری کردہ ضیافت موجود ہے، کوئی رات نہ گزرتی مگر آپ کے ہاں تین سے لے کردس اور سوکے درمیان جماعت کھانا نہ کھاتی ہو، ان کے گھر کے نگہبان نے کہا کہان کی کوئی رات مہمان سے خالی نہیں رہی ۔

حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے پوچھا گیا: ایمان کیا ہے؟ آپ نے فرمایا کہ کھانا کھلانا اور سلام کرنا۔
حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے کفارات اور در جات کے متعلق ارشا دفر مایا کہ کھانا کھلانا اور رات کونماز پڑھنا درانحالیکہ لوگ سوئے ہوئے ہوں۔(2)

حضور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ہے جج مبرور کے متعلق بوجھا گیا: تو آپ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِي مَايا كه كھانا كھلانا اور شيريں گفتارى ۔ (3)

حضرت ِانس دَضِیَ اللّٰهُ عَنُه فر ماتے ہیں کہ جس گھر میں مہمان داخل نہیں ہوتے اس گھر میں فرشتے بھی داخل نہیں -

> مہمان کی فضیلت اور کھانا کھلانے کی فضیلت کے بارے میں بے شارحدیثیں وارد ہوئی ہیں۔ کسی نے کیاخوب کہاہے:

> > لم لا احب الضيف او ارتاح من طرب اليه و الضيف ياكل رزقه عندى و يشكر ني عليه

﴿ 1 ﴾.....میں مہمان کو کیوں نہ محبوب سمجھوں اوراس کی خوشی سے راحت محسوس کیوں نہ کروں!

﴿2﴾ وهمير عياس اپنارزق كها تا باوراس پرميراشكر بيادا كرتا بـ

حکماء کا قول ہے کہ کوئی بھلائی ،خوش روئی ،خوش گفتاری اور خندہ پیشانی کے بغیریا یہ پیمیل کونہیں پہنچی ۔

^{1 ----}بخاري، كتاب الايمان، باب اطعام الطعام من الاسلام، ٦/١، الحديث ١٢

المستدرك للحاكم، كتاب الاطعمة، باب فضيلة اطعام الطعام، ١٧٨/٥، الحديث ٥٥٦٧.

^{3}المعجم الاوسط، ٥/٤/٥ الحديث ٦٦١٨

ایک اور شاعر کہتا ہے: _

اضاحک ضيفي قبل انزال رحله ويخصب عندى والمحل جديب وما الخصب للاضياف في کثرة القرى ولکنما وجه الکريم خصيب

﴿ 1 ﴾ میں اپنے مہمان کا کجاوہ اتار نے سے پہلے اسے ہنسا تا ہوں ، وہ میر سے پاس شاداب ہوتا ہے حالانکہ قبط سالی ہوتی ہے۔

﴿2﴾.....ا كثر مهماني ميں شادا بي نهيں ہوتی ليكن كريم كاچېرہ پھر بھى شاداب رہتا ہے۔

دعوت کرنے والے! مناسب بیہ ہے کہ تواپنے کھانے میں پر ہیز گاروں کو بلائے اور فاسقوں سے احتر از کرے چنانچ چضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فرماتے ہیں کہ جب تم سیجھ لوگوں کو کھانے کی دعوت دوتو نیکوں کواپنے کھانے میں بلاؤ۔ (1)

فرمانِ نبوی ہے کہ نیک کے کھانے کے علاوہ کسی کا کھانا نہ کھا اور نیک پر ہیز گارکو کھلانے کے علاوہ کسی اور کو نہ کھلا۔

دعوت میں مالداروں کی بجائے فقراء کو بلاؤ چنانچیہ نبی کریم صلّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلّم کاارشادہے کہ بدترین کھاناوہ ولیمہ ہے جس میں فقیروں کی بجائے امراء کو بلایا جائے۔ (3)

نیز دعوت کرنے والے کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ وہ ضیافت میں اپنے رشتہ داروں کونظر انداز نہ کرے کیونکہ انہیں نظر انداز کرنا ویرانی اور قطع حمی ہے اسی طرح اپنے دوستوں اور جان پہچان والوں کی ترتیب کا بھی خیال رکھے کیونکہ اس میں بعض کُوخُشُ کرنا دوسروں کے دلوں کے لئے وَحْشُت ہوتی ہے۔

نیزیہ بھی ضروری ہے کہ دعوت کرنے والا اپنی دعوت فخر اور خود بینی جیسی برائیوں کے لئے نہ کرے بلکہ اس سے اپنے بھائیوں کے دلوں کا میلان اور کھانا کھلانے اور مومن بھائیوں کے دلوں میں خوشی ومُسَرَّت کے دخول کیلئے نبی کریم

^{●} شعب الايمان،التاسع والثلاثون من شعب الإيمان،الدعاء لرب الطعام ،٥/٥ ٢١، الحديث: ٦٠٤٨

۲۹۸/٦، الحديث ۲۹۸۲ من شعب الإيمان، السادس و الستون من شعب الإيمان، باب في مباعدة الكفار...الخ، ۲/۷، الحديث ۹۳۸۳ و شعب الايمان، السادس و الستون من شعب الإيمان، باب في مباعدة الكفار...الخ، ۲/۷، الحديث ۹۳۸۳

^{3}بخارى، كتاب النكاح، باب من ترك الدعوة...الخ ،٣/٥٥٤، الحديث ١٧٧٥

مكاشفة القلوب }

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَى سنت كَى پيروى كرے۔ايسے آدمى كودعوت نهدے جس كے متعلق اسے معلوم ہوكہ اس كا آناباعث تكليف ہوگايا اس كا آنا مُدعُوثِين كے آنے كے لئے كسى سبب سے باعث رنج ہوگا۔

اور یہ بھی مناسب ہے کہ وہ اس شخص کو دعوت دے جس کے تعلق معلوم ہو کہ وہ اسے قبول کرلے گا۔

حضرت ِسفیان دَخِهَ اللّهُ عَنْه کا قول ہے کہ جس نے کسی ایسے خض کودعوت میں بلایا جواسے ناپسند کرتا ہے تواس نے خطاکی اورا گریڈعُونے اس کی دعوت قبول کر لی تواس نے دو خطائیں کیس کیونکہ اس دعوت کرنے والے نے مدعوکو ناپسندیدگی کے باوجود لا گھسیٹا ہے ،اگراسے اس بات کی خبر ہوتی تو وہ بھی بھی اسے کھانا نہ کھلا تأمین کی کوکھانا کھلا نااس کی اطاعت میں اعانت اور بدکار کوکھلا نااس کی بدکاری کو تقویت دینا ہے۔

حضرت ابن مبارک رَضِیَ اللهٔ عَنُه سے ایک درزی نے کہا: میں بادشاہوں کے کپڑے سیتا ہوں ،کیا آپ کومیرے متعلق اندیشہ ہے کہ میں طُلْم وعُدُوَان کے مددگاروں میں گنا جاؤں؟ آپ نے فرمایا: نہیں طلم کے مددگارتو وہ ہیں جو تیرے ہاتھ کپڑا بیچتے ہیں اور سوئی وغیرہ، بہر حال تم توبہ کرو۔

دعوت قبول کرنا سنت مؤ کدہ ہے: }

وعوت کوقبول کرناسنت مو کدہ ہے، بعض مواقع پرتواسے واجب بھی کہا گیا ہے۔ نبی اکرم صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ارشاوفر ماتے ہیں کہا گر جھے گائے یا بکری کی بتلی می پنڈلی کی بھی دعوت دی جائے تو میں اسے قبول کرلوں گااورا گر مجھے جانور کا دست ہدیہ کیا جائے گا تو میں قبول کرلوں گا۔ ⁽¹⁾ دعوت قبول کرنے کے لئے پانچ آ داب ہیں جو" احیاء علوم الدین" وغیرہ میں مذکور ہیں۔

......☆.....☆......☆

1بخارى، كتاب الهبة...الخ، باب القليل من الهبة ، ٢٦٦/٢، الحديث ٢٥٦٨

اب 108

خِنازه اور قبر

جنازے، دیکھنے والوں کے لئے سامانِ عبرت ہوتے ہیں، اس میں عقمندوں کے لئے یاد دِ ہانی اور تنبیہ ہوتی ہے گر عافل اس سے عافل ہی ہوتے ہیں، ان کا مُشاہدہ ان کے دلوں کی تختی کوزیادہ کرتا ہے کیونکہ وہ یہ ججھتے ہیں کہ ہم ہمیشہ دوسروں کے جنازے دیکھتے رہیں گے اور پہیں سجھتے کہ انہیں بھی ایک دن لامحالہ اس طرح اٹھایا جائے گایا وہ اس پرغور وفکر کریں لیکن وہ قرب کے باوجو دغور وفکر نہیں کرتے اور نہ ہی بیسوچتے ہیں کہ آج جولوگ جنازوں پراٹھائے جارہے ہیں بیہ بھی ان کی طرح گنتی وشار میں لگر ہتے تھے گران کے سب حساب باطل ہو گئے ہیں اور عنقریب ان کی میعاد ختم ہوگی لہذا کوئی بندہ جنازے کو نہ دیکھے گرخود کو اس حالت میں دیکھے کیونکہ عنقریب وہ بھی اس طرح اٹھا کر بیجایا جائے گا، وہ اٹھ گیا، پیکل یا پرسوں اس دنیا سے اٹھ جائے گا۔

حضرت ابو ہر ریر ہ دَ ضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ سے مروی ہے کہ آپ جب جناز ہ دیکھتے تو فر ماتے: چلو! ہم بھی تمہارے پیچھے آنے والے ہیں۔

حضرت مِنْکُول دِ مَشْقَى رَضِیَ اللّهُ عَنهُ جب جنازه دیکھتے تو فرماتے :تم صبح کوجا وَاور ہم آئندہ شام کوآنے والے ہیں،
یہ زبردست نصیحت اور تیز غفلت ہے، پہلا چلاجا تا ہے اور دوسرااس حال میں رہتا ہے کہ اس میں عقل نہیں ہوتی۔
حضرت ِ اُسید بن حُضَیر دَضِیَ اللّهُ عَنه کا کہنا ہے میں کسی جنازہ میں حاضر نہیں ہوا مگر میر نے شم نے مجھے ایسی باتوں
میں لگائے رکھا جواس کے انجام کاراور جو بچھ میر ہے ساتھ ہوگا اس سے علاوہ تھیں۔

جب حضرتِ ما لک بن دینار رَضِیَ اللّهٔ عَنْه کا بھائی فوت ہوا تو آپ روتے ہوئے اس کے جنازہ میں نکلے اور فرمایا: بخدا! اس وقت تک میری آئکھیں ٹھنڈی نہیں ہوں گی جب تک کہ مجھے معلوم نہ ہوجائے کہ میراٹھ کا نہ کونسا ہے؟ اور میں زندگی بھراسے جان نہیں سکوں گا۔

حضرتِ اَعْمَش رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کا قول ہے کہ ہم جنازوں میں جاتے اور تمام کو دیکھ کرید نہ جانتے کہ ہم کس سے تعزیت کریں۔

حضرتِ عَابِت بُنَانی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه فر ماتے ہیں کہ ہم جنازوں میں جاتے تو ہر شخص کو کپڑ البیٹے روتاد کیھے ، واقعی وہ لوگ موت سے انتہائی خوفز دہ ہوتے تھے مگر آج ہم ایسے لوگوں کو دیکھتے ہیں جو جنازوں میں شامل ہوتے ہیں مگران میں سے اکثر بیشتے رہتے ہیں ، اُہُوولَعِب میں مشغول ہوتے ہیں اور اس کی میرُ اٹ کی با تیں کرتے اور اس کے وُرُ عاء کی باتیں کرتے ہیں اور اس کے وُرُ عاء کی باتیں کرتے ہیں اور مرنے والے کے عزیز وا قارِب ایسی راہوں کی جبتی میں ہوتے ہیں جس کے ذریعہ وہ اس کے چھوڑے ہوئے مال سے کچھ حاصل کرسکیں اور ان میں سے کوئی بھی اپنے جنازے کے متعلق نہیں سوچتا اور جب وہ بھی اسی طرح اٹھایا جائے گا اس بارے میں وہ غور وَاکْرنہیں کرتا۔

اس خفلت کا سبب ان کے دلوں کی تختی ہے جو گنا ہوں اور نافر مانیوں کی کثر ت سے پیدا ہوئی ہے یہاں تک کہ ہم الله تعالیٰ، قیامت اور ان وَحْشَت نا کیوں کو بھی بھول گئے ہیں جو ہمیں پیش آنے والی ہیں، ہم اُہُوولَعِب میں مشغول ہو گئے جو ہمارے لئے بیکار ہیں۔

پس ہم الله سے اس غفلت سے بیداری کا سوال کرتے ہیں کیونکہ جناز وں کے حاضرین کی سب سے عمدہ صفت بیہ ہے کہ وہ جناز وں میں میت پرروئیں حالانکہ اگرانہیں عقل ہوتی تو وہ میت کی بجائے اپنی حالت پرروتے۔

حضرتِ ابراہیم رُیَّات رَضِیَ اللهُ عَنه نے ایسے لوگوں کود یکھا جومُردہ پر اِظہارِ رحم کررہے تھے، آپ رَضِیَ اللهُ عَنه نے ایسے لوگوں کود یکھا جومُردہ پر اِظہارِ رحم کررہے تھے، آپ رَضِی اللهٔ عَنْه نے ایسے لوگوں سے عَنْه نے فرمایا: اگرتم میت کی بجائے اپنے آپ پررحم کرتے تو تمہارے لئے بہترتھا کیونکہ وہ تین وَحشت نا کیوں سے نجات پا گیا ہے، اس نے عزرائیل کا چہرہ دیکھ لیا ہے، موت کے ذا کفتہ کی ٹیکھ چکا ہے اور خاتمہ کے خوف سے با اُمن ہوگیا ہے۔

حضرتِ ابوعَمْرُ و بن عَلاء رَحْمَهُ اللهِ عَلَيْه كا قول ہے كہ ميں جرير كے ہاں بيٹھا ہوا تھا اور وہ اپنے كا تب سے شعر كھوا رہے تھے، تب ایک جنازہ آیا تو وہ رُک گئے اور کہا كہ بخدا! مجھے ان جنازوں نے بوڑھا كر دیا ہے اور انہوں نے بیشعر پڑھے:

تروعنا الجنائز مقبلات ونلهو حين تذهب مدبرات كروعة ثلة لمغار ذئب فلما غاب عادت را تعات

﴿1﴾ جنازے ہمیں آتے ہوئے خوف زدہ کردیتے ہیں اور جب چلے جاتے ہیں تو ہم ان کے بیٹھ پھیرتے ہی اَنہو ولَعب میں لگ جاتے ہیں۔ جاتے ہیں۔

﴿2﴾ بھیڑوں کے گلد کی طرح جو بھیڑئے کے غارمیں خوف زوہ ہوتا ہے اور جب بھیڑیا غائب ہوجا تا ہے تو وہ چرنے گئی ہے۔

جنازے کے آ داب میں سے نَقُلْ ، عَنْمِید ، مُسْتَعِدی اور مُتَوَاضِع ہوکراس کے آگے چلنا ہے جبیبا کہ فقہ میں اس کے آ داب اور طریقے ندکور ہیں۔

ان آ داب میں سے بیجھی ہے کہ آ دمی سب سے حسن طن رکھے اگر چہوہ فاسق ہی کیوں نہ ہواور بُرے خیالات کواپنی طرف سے سمجھے کیونکہ اگر چہوہ فلا ہری طور پر اچھا کیوں نہ ہو، خاتمہ الیسی چیز ہے جس کا خطرہ جاری وساری رہتا ہے اسی لئے حضرت عمر بن ذردَ جنبی اللهُ عَنْه سے مروی ہے کہ

ان کا ایک ہمسایہ فوت ہو گیا جو بدکر دار تھا تو بہت سے لوگ اس کے جناز سے سے رک گئے، آپ اس کے جنازہ میں شریک ہوئے ، اس کی نما نے جنازہ ہیں میں شریک ہوئے ، اس کی نما نے جنازہ پڑھی ، جب اسے قبر میں اتاراجانے لگا تو آپ نے اس کی قبر پر کھڑے ہوکر کہا:

ا بے پدرِ فلاں!اللہ تجھ پررتم کرے ، یقیناً تو نے اپنی زندگی تو حید میں بسر کی اور اپنے چہرے کو بجدوں سے غبار آلود کیا اور اگر لوگوں نے تجھے گنہگار اور بدکر دار کہا تو ہم میں سے ایسا کون ہے جو گنہگار اور بدکر دار نہیں۔

ایک آدمی جو گناہوں میں مُنْہُمِک رہتا تھا، مرگیا، وہ بھرہ کے قریب رہتا تھا مگر جب وہ مرا تواس کی عورت نے ایسا کوئی آدمی نہ پایا جو جنازہ اٹھانے میں اس کا ہاتھ بٹاتا کیونکہ اس کے ہمسائے اس کے کثر تے گناہ کے سبب کنارہ کش ہوگئے چنانچہ اس نے دومزدوراُ جرت پر لئے اور وہ اسے جنازہ گاہ میں لئے گئرکسی نے اس کی نمازِ جنازہ نہ

پڑھی اوروہ اسے صُحر امیں وہن کرنے کیلئے لے گئے۔

اس علاقے کے نزدیک پہاڑ میں ایک بہت بڑا زاہدر ہتا تھا،عورت جب اپنے شوہر کا جنازہ اٹھوا کر لے گئی تو زاہد کو ہنتظر پایا چنا نچہ زاہد نے اس کی نمازِ جنازہ پڑھانے کا ارادہ کیا تو شہر میں یہ خبر پھیل گئی کہ زاہد پہاڑ سے اتر اسے تا کہ فلاں شخص کی نمازِ جنازہ پڑھائے چنا نچہ شہر کے سب لوگ وہاں روانہ ہو گئے اور انہوں نے زاہد کی اِقتِدَ امیں اسکی نمازِ جنازہ پڑھی۔ جنازہ پڑھی۔

لوگوں کوزامد کے اس فعل سے سخت حیرت ہوئی ، زاہد نے کہا کہ مجھ سے خواب میں کہا گیا ہے کہ فلاں جگہ جاؤ ، وہاں تہہیں ایک جناز ہ نظر آئے گا جس کے ساتھ صرف ایک عورت ہوگی ، تم اس شخص کی نماز جناز ہ پڑھو کیونکہ وہ مَغْفُور ہے ، یہ بات سن کرلوگوں کے تعجب میں اوراضا فہ ہوا۔

زاہدنے عورت سے اس مرد کے حالات دریافت کئے اوراس کی بخشش کے اسباب کی تحقیق کرنا جا ہی تو عورت نے کہا جیسا کہ شہور ہے اس کا سارا دن شراب خانے میں گزرتا اور شراب میں مست رہتے گزرتا تھا۔

زاہد نے کہا کہ کیاتم اس کی کسی نیک عادت کو بھی جانتی ہو؟ عورت نے کہا: ہاں تین چیزیں جانتی ہوں، جبوہ صبح کے وقت مَد ہو تی سے اِفاقد پاتا تو کیڑے تبدیل کرتا، وُضوکرتا اور شبح کی نماز جماعت سے پڑھا کرتا تھا پھرشراب خانہ میں جاتا اور بدکاریوں میں مشغول رہتا۔

دوسرے بیرکہاس کے گھر میں ہمیشہ ایک یا دویتیم رہا کرتے تھے،ان سےوہ اولا دیے بھی زیادہ مہر بانی سے پیش آیا کرتا تھا۔

تیسرے بیکہ جب وہ رات کی تاریکی میں نشر کی مکد ہوتی سے إفاقہ پاتا تو روتا اور کہتا: اے ربِّ کریم! جہنم کے کونوں میں سے کونسے کونے کی اور اس کی بخشش کا راز کونوں میں سے کونسے کونے کومیرے اس خبیث نفس سے تو پُر کرے گا؟ زامد ربیضتے ہی لوٹ گیا اور اس کی بخشش کا راز کھل گیا۔

حضرت ضِحًّا ک دَضِیَ اللَّهُ عَنْه کا قول ہے کہ ایک خص نے حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم سے بوچھا کہ سب سے بڑا زاہد کون ہے؟ آپ نے فرمایا: جو قَبَرُاور مَصائِب کونہ بھولا، دنیاوی زیب و نِینت کی عمدہ چیزوں کو ترک کردیا، فانی چیزوں پردائمی چیزوں کوتر جیح دی، آئندہ کل کواپنی زندگی میں شارنہ کیا اورخود کواہل قبور میں سے شار کیا۔⁽¹⁾

حضرت علی کرَّمَ اللَّهُ وَجُهَهُ سے پوچھا گیا کیا وجہ ہے کہ آپ قبرستان کے قریب رہتے ہیں آپ نے فرمایا: میں نے انہیں عمدہ ہمسایہ یایا ہے، سیچے ہمسا ہے جوز بانیں بندر کھتے ہیں اور آخرت کی یا دولاتے ہیں۔

حضرت عثان بن عَقَّان رَضِیَ اللَّهُ عَنْه جب قبروں پر کھڑے ہوتے تو رویا کرتے یہاں تک کہ آپ کی داڑھی آنسوؤں سے تر ہوجاتی آپ سے اس کے متعلق پوچھا گیا اور کہا گیا کہ آپ جنت اور جہنم کا تذکرہ کرتے ہیں اور نہیں روتے لیکن قبروں پر کیوں روتے ہیں؟ آپ نے فرمایا:

میں نے حضور صَلَی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کو بیفر ماتے ہوئے سنا ہے کہ قبر آخرت کے مَنا زِل میں سے پہلی منزل ہے، اگر صاحب قبراس سے نجات پالیتا ہے تو بعد کی منزلیں اس کے لئے آسان ہوجاتی ہیں اور اگراس سے نجات نہیں پاتا تو بعد کی منزلیں اور زیادہ سخت ہوتی ہیں۔⁽²⁾

کہا گیا ہے کہ حضرت عمرو بن عاص رَضِیَ اللهُ عَنه نے قبرستان کو دیکھا توسواری سے اتر پڑے اور دور کعت نماز ادا کی، پھران سے کہا گیا کہ پہلے تو آپ ایسے نہیں کیا کرتے تھے، آپ نے فرمایا: میں نے قبرستان والوں کواوراس چیز کو یا جوان کے اور میرے درمیان حاکل کی گئی ہے تو میں نے اس بات کو پسند کیا کہ دور کعتیں ادا کر کے میں رب کا قرب چاہوں۔

حضرت ِمجاہد َضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ فرماتے ہیں کہ سب سے پہلے قبر اِنسان سے پیکلام کرتی ہے کہ میں کیڑوں، تنہائی ،غربت اور اندھیرے کا گھر ہوں، میں نے تیرے لئے یہی کچھ تیار کیا ہے ، تو میرے لئے کیا تیار کر کے لایا ہے؟۔ حضرتِ ابوذَر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ کا قول ہے کہ کیا میں تنہیں اپنے فقر کا دن بتاؤں؟ بیوہ دن ہوگا جب مجھے قبر میں رکھا جائے گا۔

| ☆ | ☆ | ☆ |
|-------|---|---|
| | | |

^{1} شعب الايمان، الحادي والسبعون...الخ ، ٧/٥٥٥، الحديث ١٠٦٥

^{2}ترمذي، كتاب الزهد، باب ماجاء في ذكر الموت، ١٣٨/٤، الحديث ٥ ٢٣١

اب 109

﴿عذاب جهنم كا خوف ۗ

بخاری شریف کی حدیث ہے کہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم اكثرید دعا فرمایا كرتے تھے: (1)

اَبُويَعْلَىٰ کی روایت ہے کہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے ایک دن خطبہ دیا اور فر مایا: دو ظیم چیزوں جنت اور جہنم کو نہ مجولو پھر آپ روئے یہاں تک کہ آنسو جاری ہوگئے یا آپ کے مبارک آنسوؤں نے آپ کی ریش مبارک کے دونوں پہلوؤں کو ترکر دیا اور آپ نے فر مایا: اگرتم جانتے جو پھھ آخرت کے بارے میں میں جانتا ہوں تو تم مٹی پر چلتے اور اینے سروں پرخاک ڈالتے۔ (3)

طبرانی نے اُوسط میں بیروایت نقل کی ہے کہ جبر یل عَلَیْهِ السَّلام ایسے وقت میں حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے پاس آئے جس وقت میں وہ جھی نہیں آیا کرتے تھے چنا نچے حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم جبریل کے لئے کھڑے ہوئے اور پوچھا: جبریل! کیابات ہے کہ میں تمہارارنگ مُتَغَیَّر وی کھتا ہوں جبریل نے کہا: میں آپ کے پاس اس لئے آیا ہوں کہ الله تعالی نے جہنم کومزید و ہمانے کا حکم ویا ہے۔حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: اے جبریل! مجھے جہنم کی حقیقت بتلاؤیا جہنم کے اُوصاف بیان کرو۔

جبر میل عَلیْهِ السَّدَم نے کہا:الله تعالی نے جہنم کود ہکانے کا تھم دیا اور اسے ایک ہزار سال روشن کیا گیا اور بھڑ کا یا گیا یہاں تک کہوہ سفید ہوگئ پھر تھم ہوا اور اسے پھرایک ہزار سال تک بھڑ کا یا گیا دی کہ وہ سرخ ہوگئی، پھر مزید ایک

- 1بخاري، كتاب الدعوات، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم ربنا اتنا...الخ، ٤/٤ ٢١، الحديث ٦٣٨٩
- س...تو جمهٔ کنز الایمان: اےربؓ ہمارے ہمیں ونیا میں بھلائی وے اور ہمیں آخرت میں بھلائی دے اور ہمیں عذاب دوزخ سے بچا۔ (پ۲۰ البقرة: ۲۰۱۷)
 - الحديث ١٠٢ الحديث ١٠٢

ہزارسالاسے بھڑ کانے کا حکم ملایہاں تک کہوہ تاریک ہوگئی،اب وہ سیاہ وتاریک ہے،اس میں کوئی چنگاری بھی روشن نظرنہیں آتی اور نہ ہی بھی اس کا بھڑ کناختم ہوتا ہے۔

قتم ہے رتِ ذوالجلال کی جس نے آپ کوٹ کے ساتھ نبی بنا کر مبعوث فر مایا ہے! اگر جہنم کوسوئی کے سوراخ کے برابر کھول دیا جائے تواس کی گرمی سے دنیا کی تمام مخلوق مرجائے ، بخدا! جس نے آپ کوٹ کے ساتھ مبعوث فر مایا ہے، اگر جہنم کے فِگہ ہان فرشتوں میں سے کوئی فرشتہ دنیا میں ظاہر ہوجائے تو تمام اہل دنیااس کی بدصورتی دیکھ کر اوراس کی بدیوسوئھ کر مرجا کیں۔ بخدا! جس نے آپ کوٹل کے ساتھ مبعوث فر مایا ہے اگر جہنم کی زنجیروں کا ایک حلقہ جن کا الله تعالیٰ نے اپنی مقدس کتاب میں ذکر کیا ہے دنیا کے پہاڑوں پر رکھ دیا جائے تو وہ فیصل جا کیں اور وہ حلقہ سب سے فیلی زمین پرجا گھہرے۔

حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے بين كرفر مايا: اے جبريل! مجھے اتنابى كافى ہے مير اجگر گلڑے نہ كروكہ ميں انتقال كرجاؤں تب آپ نے جبريل عَلَيْهِ السَّلام كوديكھا، وہ رور ہے تھے، آپ نے فر مايا: جبريل تم روتے ہو حالانكہ تمہار الله كے ہاں ایک خاص مرتبہہ، جبريل نے كہا: ميں كيسے نہ روؤں حالانكہ ميں رونے كازيادہ فق دار ہوں، شايد كہيں الله تعالى كے علم ميں اس حال ہے كى دوسر ہے حال ميں كھا گيا ہوں اور ميں نہيں جانتا كہيں مجھے بھى آزمائش ميں ڈال كرذكيل ورسوا كرديا گيا ہے، وہ بھى تو فرشتوں ميں تھا اور ميں نہيں جانتا كہ مجھے بھى كہيں ہاروت و ماروت كى طرح مصائب ميں مبتلانہ كرديا جائے۔

راوی کہتے ہیں کہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم بیتن کررونے لگے اور جبریل عَلیْهِ السَّلام بھی رونے لگے دونوں حضرات برابرروتے رہے تا آئکہ نداکی گئ: اے جبریل اوراے محمد الله تعالی نے تہ ہیں مامون کردیا ہے تم اس کی نافر مانی نہیں کروگے جبریل عَلیْهِ اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم انصارے ایسے لوگوں کے پاس نہیں کروگے جبریل عَلیْهِ السَّلام بیسنتے ہی پرواز کر گئے اور حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم انصارے ایسے لوگوں کے پاس سے گزرے جو بَدْ لَسَّنْجیوں میں (1) مصروف تھے اور نہیں رہے تھے۔ آپ نے فرمایا: کیا تم جنتے ہوا ور تبہارے پیجھے جہنم ہے، پس اگرتم جان لیتے جو میں جان چکا ہوں تو تم کم جنتے اور زیادہ روتے ، کھانا پینا چھوڑ دیتے اور بلندیہاڑوں کی طرف

1 مزاق منخریوں میں ۔ علمیه

نکل جاتے تا کہ الله کی رضامندی کے لئے خود پر ریاضت و محنت کومُسَلَّط کرسکو۔ تب ندا کی گئی کہ اے محمد! (صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمِ) میرے بندوں کو ناامید نہ کرو، میں نے آپ کوخوشنجری دینے والا بنا کر بھیجا ہے آپ کومَشَقتُّوں میں ڈالنے والا بنا کرنہیں بھیجا، تب حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: اینے اَعمال درست کرواور قرب الہی حاصل کرو۔ (1)

مروی ہے کہ حضور صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے جبر بل عَلَیْهِ السَّلام سے فرمایا: کیابات ہے میں نے میکا کیل (عَلَیْهِ السَّلام) کو بھی ہنتے ہوئے نہیں و یکھا جبر بل نے عرض کیا کہ جب سے آگ کو پیدا کیا گیا ہے، میکا کیل (عَلَیْهِ السَّلام) کبھی نہیں بنے۔ (2)

ابن ماجداور حاکم کی حدیث ہے جسے حاکم نے سیح کہا ہے کہ تمہاری بیآ گجہنم کی آگ کاسٹر وال جز ہے اور اگر وہ دومر تبدر حمت کے پانی سے نہ بجھائی جاتی تو تم اس سے فائدہ حاصل نہ کر سکتے اور بیآ گ الله تعالیٰ سے دعا ما مگتی ہے کہ مجھے دوبارہ جہنم میں نہ بھیجنا۔(3)

بيهي في روايت كى بى كەحضرت عمرد ضِي الله عنه في بيآيت برهى:

جب گل جائیں گے ان کے چرے تو ہم بدل دیں گے ان

كُلَّهَا نَضِجَتُ جُلُودُهُ مُ بَدَّالْنُهُ مُجُلُودًا غَيْرَهَا

کے لیے دوسرے چیڑے تا کہ وہ عذاب چکھیں۔

لِيَذُوْقُوا الْعَنَابَ (4)

اور حضرتِ كَعْبَ رَضِى اللهُ عَنُه ہے كہا كہ مجھے اس كى تفسير بتلاؤ اگر آپ نے بھے كہا تو ميں آپ كى تفسد بن كرول گاور نہ آپ كى بات ردكر دول گا۔ حضرتِ كَعْبَ رَضِى اللهُ عَنُه بولے كها نسان كا چمڑا جلے گا اور اسى لمحہ نيا ہوجائے گا يا ہر دن ميں چيھ ہزار مرتبہ نيا ہوگا ، حضرتِ عمر دَضِى اللهُ عَنْه نے كہا: واقعی آپ نے بھے كہا۔ (5)

^{1}المعجم الاوسط ، ٧٨/٢، الحديث ٢٥٨٣

^{2}مسند احمد، مسند انس بن مالك بن النضر، ٤٤٧/٤، الحديث ١٣٣٤٢

^{€.....}المستدرك للحاكم، كتاب الاهوال ، باب ما من مسلمين...الخ ، ٥/٥ ٨١، الحديث ٨٧٩١

من توجمهٔ کنز الایمان: جب بھی ان کی کھالیں پک جائیں گی ہم ان کے سوااور کھالیں انہیں بدل ویں گے کہ عذاب کا مزولیں۔ (پ۵، النساء: ۵)

البعث والنشور للبيهقي، ص١٨، الحديث ٧٧٥.

مسلم شریف کی ایک حدیث میں ہے کہ دنیا میں سب سے زیادہ دنیاوی نعمتیں پانے والے جہنمی کو لا یا جائے گا،
اسے جہنم میں ایک غوطہ دیکر پوچھا جائے گا کہ اے انسان! تو نے بھی عیش بھی دیکھی ہے یا تچھ پر بھی انعامات کی بارش
بھی ہوئی ہے؟ وہ کہے گا: نہیں! بخدا! اے اللّٰه بھی بھی نہیں۔ پھر دنیا میں سب سے زیادہ مصائب برداشت کرنے والے
جنتی کو لا یا جائے گا اور اسے جنت کا چکر لگوا کر پوچھا جائے گا: اے انسان! تو نے بھی تنگدستی دیکھی ہے یا تچھ پر بھی
مصائب بھی آئے تھے؟ وہ کے گا: نہیں! بخدا! اے اللّٰه بھی بھی میں نے تنگدستی اور دکھ تکلیف نہیں دیکھے۔ (2)

ابن ماجہ کی روایت ہے کہ جہنمیوں پررونا مسلط کیا جائیگا وہ روئیں گے یہاں تک کہان کے آنسوختم ہوجائیں گے، پھروہ خون روئیں گے یہاں تک کہان کے چہروں میں گڑھوں جیسے گڑھے ہوں گے کہا گران میں کشتیاں چھوڑ دی جائیں تو وہ چلنے لکیں۔(3)

ابویعلی کی حدیث ہے اے لوگو! روؤ، اگر تمہیں رونانہیں آتا تو رونے کی سی صورت بناؤ، کیونکہ جہنم میں روئیں گئیں گئیں گئیں کے دخیار نہریں ہول، پھر آنسوختم میں کے جیسے ان کے رخیار نہریں ہول، پھر آنسوختم ہوجا کینگے اور وہ خون روئیں گئا آئکدان کی آئکھیں زخموں سے کَہُولُہَان ہوجا کینگے اور وہ خون روئیں گئا آئکدان کی آئکھیں زخموں سے کَہُولُہَان ہوجا کینگے اور وہ خون روئیں گئا آئکدان کی آئکھیں ذخموں سے کَہُولُہَان ہوجا کینگ

❶شعب الايمان، التاسع من شعب الايمان . . الخ ، فصل في ان الجنة . . الخ ، ٢٥٢/١، الحديث، ٣٩٢ملتقطاً

^{2}مسلم، كتاب صفة القيامة...الخ، باب صبغ انعم اهل الدنيا...الخ، ص٨٠٥، الحديث٥٥ _ (٢٨٠٧)

٤٣٢٤ الحديث ٤٣٢٤.....ابن ماجه، كتاب الزهد، باب صفة النار، ٤/٢٥، الحديث ٤٣٢٤

^{4}مسند ابي يعلى، ٦/٣ . ٤ ، الحديث . ٢ ١ ٤

اب 110)

ميزان اور صراط

ابوداؤد نے حضرت حسن سے انہوں نے حضرتِ عائشہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا سے قال کیا ہے کہ وہ رو کیں تو حضور صَلَّی اللّٰهُ عَنْهُ وَسَلَّم نے بوچھا: عائشہ! کیوں روتی ہو؟ انہوں نے عرض کی کہ میں جہنم کو یا دکر کے روئی ہوں ، کیا آپ قیامت کے دن اپنے گھر والوں کو یا در گیس گے؟ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا کہ تین مقامات پرکوئی کسی کو یا دہیں کر بے گا، میزان عمل کے وقت یہاں تک کہ وہ یہ جان لے کہ اس کا میزان ملکا ہوا یا بھاری ، نامہ اُ عمال کے اُڑنے کے وقت یہاں تک کہ وہ یہ جان لے کہ اس کا میزان ملکا ہوا یا بھاری ، نامہ اُ اعمال کے اُڑنے کے وقت ، (1) یہاں تک کہ وہ یہ جان کے کہ اس کا حدیث آتا ہے یا با کیں ہاتھ میں یا پیڑھ کے پیچھے ، اور جب پل صراط کو جہنم پر رکھا جائے گا یہاں تک کہ وہ یہ نہ جان لے کہ وہ اسے بورکرسکتا ہے یا ہیں ۔ (2)

تر مذی شریف میں ہے کہ حضرتِ انس رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه نے کہا: میں نے نبی کریم صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ہے سوال کیا کہ آپ قیامت کے دن میری سفارش فرما کیں گے؟ آپ نے فرمایا: میں ان شآ ء اللّٰه ایسا کروں گا میں نے عرض کی : میں آپ کو کہاں تلاش کروں؟ آپ نے فرمایا: پہلے مجھے بل صراط پر تلاش کرنا، میں نے عرض کی کہ اگر میں بل صراط پر آپ کونہ پاسکوں تو پھر کہاں تلاش کروں؟ آپ نے فرمایا کہ پھر مجھے میزان کے قریب تلاش کرنا، میں نے عرض کی کہ اگر میں آپ کومیزان کے قریب تلاش کرنا، میں ہے حوض کے قریب تلاش کرنا کرنا کے قریب تلاش کرنا کے میں ان کین مقامات کے علاوہ کہیں نہیں ہوں گا۔ (3)

حاکم کی روایت ہے کہ قیامت کے دن میزان رکھا جائے گا، اگراس میں وَزن کیا جائے یاز مین وآسان اس میں رکھدیئے جا کیں تو وہ رکھے جا سکیں گے، تب فرشتے عرض کریں گے: اے الله! اس میں کس کے اعمال کا وزن کیا جائے

^{1} يعنى تقسيم بوت وقت علميه 2 ابو داو د، كتاب السنة، باب في ذكر الميزان، ٢١٧/٤، الحديث ٥٧٥٥

^{3}ترمذي، كتاب صفة القيامة، باب ماجاء في شان الصراط، ١٩٥/٤ ، الحديث ٢٤٤١

گا؟رب تعالی فرمائے گا: اپنی مخلوق میں سے جس کے لئے جا ہوں گا۔ فرشتے عرض کریں گے:

سُبُحنَكَ مَا عَبَدُنكَ حَقَّ عِبَادَتِكَ، پاك باق، بم تيرى كماحة عبادت نبيس كرسك

اور بل صراط رکھا جائے گا جواُستر ہے کی دھار جیسا ہوگا۔فر شتے عرض کریں گےاہے کون عبور کرے گا؟ رب تعالیٰ فرمائے گا کہ میری مخلوق میں ہے جس کومیں چا ہوں گا ،فر شتے عرض کریں گے:

سُبُحٰنَکَ مَا عَبَدُنْکَ حَقَّ عِبَادَتِکَ (1) ایک ہے قو، ہم تیری کما حقہ عبادت نہیں کر سکے۔

حضرت ِعبد الله بن مسعود دَ ضِيَ اللهُ عَنْه ہے مروی ہے کہ مل صراط کوجہنم کےاوپر رکھا جائے گا جو نیکی تلوار کی دھار کی طرح ہوگی جو پیسلنے کی جگہ ہوگی ،اس پرآگ کے کانٹے ہول گے جن ہے وہ لوگوں کواُ چک لے گی ،اس برر کنے والا اس میں گرے گااور کچھ تیز جلنے والے ہوں گے جن میں ہے بعض بجلی کی طرح گزریں گےاوروہ اس ہے گزر کر ہی رکیس گے، بعض اس سے ہوا کی طرح گزریں گے یہاں تک کہ وہ نجات یالیں گے، بعض گھڑ سوار کی طرح جائیں گے، پھر بعض لوگ دوڑتے ہوئے آ دمی کی طرح ، پھراس سے پچھ کم رفتار میں دوڑتے ہوئے ، پھر پیدل چلنے والے آ دمی کی طرح لوگ گزریں گے، پھران میں سب کے آخر میں ایبا آ دمی گزرے گا کہ جسے آگ نے حجلسادیا ہو گا اور تکلیف اُٹھا کر آیا ہو گا، تب الله تعالیٰ اسے اپنی رحمت اور نصل وکرم کے فیل جنت میں داخل کرے گا اور اسے کہا جائیگا کہ آرز وکر اور مانگ، و چھف کہے گا كەتورب العزت بهوكر مجھ سے مِزاح كرتا ہے؟ پھرا سے كہاجائے گا كەتمنا كراور مانگ، يہاں تك كەاس كى تمام تمنائيں یوری ہوجا ئیں گی ،رب تعالیٰ فرمائے گا: تیرے لئے وہ بھی ہے جوتو نے مانگااوراس کے برابراور بھی اس کے ساتھ ہے۔ مسلم شریف کی روایت ہے:حضرت ام مبشر اَنصار بدرَضِی اللّه عنها فرماتی ہیں کہ میں نے حضرت ِحَفْصَہ دَضِیَ اللَّهُ عَنْهَا كَ بِالرحضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم سِيسًا، آپ فرمار ہے تھے:ان شآء الله تعالى ان لوگوں ميں سے، جنہوں نے ورخت کے نیجے بیعت کی تھی ،کوئی بھی جہنم میں نہیں جائے گا ،حضرتِ مَفْصَد رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا نے عرض کی: ہال یارسول الله! آپ نے انہیں چپ کروادیا تووہ بولیں:

^{₫.....}المستدرك للحاكم،كتاب الاهوال ، باب ذكر وسعة الميزان، ٥٠٧/٥، الحديث ٨٧٧٨

(ا وَ إِنُ مِّنْكُمُ إِلَّا وَابِ دُهَا

تم میں ہے کوئی نہیں مگراس پر دار دہونے والا ہے۔

ال پر حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نِ فرمايا كه الله تعالى ارشادفر ما تا ب:

پھرنجات دیں گے ہم ان کوجو پر ہیز گاری کرتے ہیں اور حیھوڑ

ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَّنَدَى الظَّلِمِينَ فِيهَا

دیں گےاس میں ظالموں کوگرا ہوا۔

جِثِيًّا۞

حضرتِ احمد َ طِنِیَ اللّٰهُ عَنْه ہے مروی ہے کہ ایک جماعت نے جہنم میں داخل ہونے والے لوگوں کے بارے میں اِ ختلاف کیا ہے۔ بعض کا کہنا ہے کہ اس میں مومن داخل نہیں ہو نگے اور بعض نے کہا ہے کہ تمام لوگ اس میں وارِ دہوں گے، پھر اللّٰہ تعالیٰ ان لوگوں کو نجات دے گا جوتقو کی رکھتے ہیں۔

بعض لوگوں نے حضرتِ جابر بن عبد الله دَ رَجِي الله عَنهُ ہے ہو چھا تو انہوں نے کہا کہ تمام لوگ اس میں وارد ہوں گے۔ پھراُ نگلیوں کو کا نوں کے قریب لے جاکر کہا کہ بید دو بہرے ہوں اگر میں نے حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کو بی فرمات ہوئے نہ سنا ہو کہ وُ رُوْد سے مراد دُخول ہے ، کوئی نیک اور برابا تی ندر ہے گا مگر سب اس میں داخل ہوں گے ، تب وہ جہنم مومنوں پر حضرتِ إبرا جیم عَلَيْهِ السَّلام کی طرح مُحندُ ااور سلامتی والا ہوجائے گا یہاں تک کہ اس آگ یا جہنم کے لئے آپ نے فرمایا: مومنوں کی سردی کی وجہ سے فریاد نکلے گی پھر الله تعالی ان لوگوں کو نجات دے گا جو پر ہیز گاری کرتے ہیں اور ظالموں کو جہنم میں گرا ہوا جھوڑ دے گا۔ (3)

حاکم کی روایت ہے کہ لوگ جہنم میں وارد ہوں گے اور اپنے اُنگال کی بدولت اس سے نکلیں گے، پہلے بجلی کی چہک کی طرح، پھر گھڑ سوار کی طرح، پھر اُونٹ سوار کی طرح، پھر دوڑتے ہوئے آ دمی کی طرح اور پھر پیدل آ دمی کی طرح نکلیں گے۔(4)

الايمان: اورتم مين كونى اييانيين جس كاگزردوزخ پرند ، ١٦٠ مريم: ٧١)

^{2}ترجمهٔ كنز الايمان: پيرېم دُروالول كوبچاليل گاورظالمول كواس ميل چيورُ دي گهنول كيل گرے - (پ٦١، مريم: ٧٢) مسلم، كتاب فضائل الصحابة رضى الله عنهم، باب فضائل اصحاب الشحرة ... الخ،ص ١٣٥٦، الحديث ١٦٣- (٢٤٩٦)

^{3} مسندا حمد، مسند جابر بن عبدالله، ٥٠/٥، الحديث ٢٥٢٧ عن ابي سمية

^{4}المستدرك للحاكم، كتاب التفسير، باب مرور الناس...الخ، ١٢٨/٣، الحديث ٣٤٧٣ ملخصًا

(ابط)

خصور صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَا وَصَالِ مِبَارِكَ ﴾

حضرت الله عَنه کے خدمت میں حاضر ہوئے جب جدائی کی گھڑی قریب تھی ،حضور صَلَّی الله عَنه وَسَلَّم نے ہمیں ویکا ،آپ
عَلیٰهِ وَسَلَّم کی خدمت میں حاضر ہوئے جب جدائی کی گھڑی قریب تھی ،حضور صَلَّی الله عَنیٰهِ وَسَلَّم نے ہمیں ویکھا، آپ
کی آسکویں ؟ نمناک ہوگئیں ، پھر فر مایا :تمہیں خوشخری ہو ،تمہیں الله تعالیٰ نے زندگی دی ،الله نے تمہیں پناہ دی الله تعالیٰ نے تمہاری مدوفر مائی ، میں تمہیں الله تعالیٰ سے ڈرتے رہنے کی وصیت کرتا ہوں اور تمہیں الله تعالیٰ سے متعلق کرتا ہوں ،
میں تمہارے لئے الله تعالیٰ کی طرف سے کھلا ہوا نذیر ہوں ، (۱) میک دالله تعالیٰ کے شہروں اور بندوں میں الله تعالیٰ کی سرکشی نہ کرو، موت قریب آئی اور الله تعالیٰ ،سدرۃ المنتہیٰ ، جنت الماویٰ اور لبریز جاموں کی طرف پلٹنا ہے ہیں تم اپنے نفسوں پر اور اس شخص پر جو میرے بعد تمہارے دین میں داخل ہو میری طرف سے سلام کہو۔ (۱)

مروی ہے کہ حضور صَلّی الله عَلَیْهِ وَسَلّم نے وصال کے وقت جبر یل عَلیْهِ السَّلام سے فرمایا کے میرے بعد میری اُمت کا کون ہے؟ الله تعالی نے حضرت جبریل عَلیْهِ السَّلام کی طرف وحی فرمائی کہ میرے حبیب (صَلّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلّم) کوخوشخبری دے دو کہ جب لوگ دے دو کہ میں انہیں اُمت کے بارے میں شرمندہ نہیں کروں گا اور انہیں اس بات کی بھی خوشخبری دے دو کہ جب لوگ محشر کے لئے اٹھائے جا کیں گے تو وہ سب سے جلدی آٹھیں گے، جب وہ جمع ہوں گے تو میرا حبیب ان کا سردار ہوگا اور بے شک جنت دیگراُمتوں پراس وفت تک حرام ہوگی جب تک کہ آپ کی اُمت اس میں داخل نہ ہوگی ہیں کر حضور صَلّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلّم نے فرمایا کہ اب میری آئے تھیں شھنڈی ہوئی ہیں۔ (3)

^{1} ڈرسنانے والا۔ علمیه

^{2}المعجم الاوسط ، ٢/٣٠ الحديث ٩٩٦

^{3}المعجم الكبير، ٣/٣٢، الحديث ٢٦٧٦ ماخوذًا

حضرتِ عائشہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَ فر ماتی ہیں: حضور صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے ہمیں حکم دیا کہ مجھے سات کنوؤں کے سات پانیوں سے خسل دو چنانچہ ہم نے ایسا ہی کیا تو آپ نے راحت پائی، پھر باہرتشریف لے گئے، لوگوں کونماز پڑھائی، شہدائے اُحد کے لئے بخشش کی دعاکی ، اُنصار کے لئے وصیت کی اور فرمایا:

امابعد! اے گردومہاجرین! تم بڑھتے جاتے ہواور اُنصاراس دن والی ہیئت پر باقی ہیں، وہ نہیں بڑھے ہیں، اُنصار میرے راز دار ہیں جن کی طرف میں نے پناہ لی ہے لہذا اُن کے کریم یعنی نیک کی عزت کرو، اُن کے برے سے درگز رکرو۔ پھر فر مایا: بے شک بندہ کو دنیا اور الله تعالی کے قرب کے درمیان اِختیار دیا گیا تو اس نے اس چیز کو پہند کرلیا جوالله کے ہاں ہے۔

حضرت ابو بکر رَضِیَ اللّهُ عَنْه رود یَنِ اور بیجه گئے کہ اس بندہ سے مرادخود حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم بیں۔ تب حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم بیں۔ تب حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فرمایا: اے ابو بکر اتسلی رکھو، ابو بکر کے دروازے کے سوامسجد کی طرف کھلنے والے تمام گھروں کے دروازے بند کر دوکیونکہ میں ایسا کوئی آ دمی نہیں جانتا جودوی میں میرے نزدیک ابو بکرسے افضل ہو۔ (1)

حضرتِ عائشدَ مَضِى اللهُ عَنْهَا كافر مان ہے كہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم في مير عالم اللهُ عَنْهُ كافر مان ہے كہ حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مواك كَلَّم مير عالمان وصال فر ما يا اور الله تعالى في موت كے وقت مير عاور آپ كے لعاب و بهن كوجع كيا ، مير عالم مير ابھائى عبد الرحمٰن آيا اس كے ہاتھ ميں مسواك تھى ، حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مسواك كى طرف و كيھے لگے ، ميں سمجھ گئى كہ آپ مسواك پيند فر ماتے ہيں لہذا ميں نے كہا ہے آپ کے لیے لوں؟ آپ نے سرسے اشار و فر ما يا ہاں! چنا نچہ ميں نے عبد الرحمٰن سے مسواك لے لى اور حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كو بهن اقد س ميں و دى مگروہ آپ و تخت محسوس ہوا تو ميں نے کہا كہ ميں اسے آپ کے لئے نرم كردوں؟ آپ نے سركے اشار سے سے ہاں فر ما يا چنا نچہ ميں نے اسے نرم كيا اور حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كے سامنے پانى كابرتن ركھا تھا، آپ اس ميں ہاتھ داخل كرتے تھا اور فر ماتے : لَا إِلٰهُ اللهُ ، البَّهُ مُوت كے لئے سكر ات ميں ، پھر آپ نے نہيں ترجي نہيں دى ہے۔ (2)

^{....0}

^{2}بخاري، كتاب المغازي ، باب مرض النبي صلى الله تعالى عليه وآله و سلم ووفاته ، ١٥٧/٣ ، الحديث ٤٤٩

حضرت سعید بن عبد الله رَضِیَ اللهٔ عَنه نے اپنے والد سے روایت کی ہے کہ جب اَنصار نے دیکھا کہ نی کریم صلّی اللهٔ عَلیٰهِ وَسَلَّم کی طبع شریف میں گرانی بوشی جارہی ہے تو وہ معجد کے اردگرد آئے ، حضرت عباس رَضِی اللهٔ عنه حضور صَلّی اللهٔ عَلیٰهِ وَسَلّم کے پاس حاضر ہوئے اور انہیں اُنصار کے ارادہ اورخوف کے متعلق بتایا پھر حضرت فضل رَضِی الله عنه نے اللهٔ عَنه منی روئی بات عرض کی چو پہلے آپ سے وہی بات عرض کی پھر حضرت علی رَضِی الله عنه گھر میں داخل ہوئے اور آپ نے بھی وہی بات عرض کی جو پہلے کر چکے سے چنانچ حضور صَلّی الله عَلیٰهِ وَسَلّم نے اپناہاتھ مبارک لمبا کیا اور فرمایا: اسے پکڑو، پس انہوں نے آپ کو تقام الیا اور آپ نے بوچھا: تم کیا کہتے ہو؟ انہوں نے عرض کی: ہمیں ڈر ہے کہ آپ وصال فرما جا کیں گے۔ ان کی عورتیں الله علیٰهِ وَسَلّم کے پاس جمع ہونے کی وجہ سے ایک دوسرے کو بلائے گئیں، چنانچ حضور صَلّی الله عَلیٰهِ وَسَلّم مرا نور لیٹے ہوئے کا مہارا لے کر چلے ، حضرت عباس رَضِی اللهُ عَلیٰهِ وَسَلّم مرا نور لیٹے ہوئے نکلی آپ کے پیر مبارک گھٹے جاتے تھے یہاں تک کہ آپ منبرشریف کی سب سے نجل سیر شی پرتشریف کی سب سے نجل سیر شیل ہوئے ، اوگ آپ کی طرف اُٹھ آ کے ، آپ نے اللہ کی حمد و نا کے بعد فرمایا:

ا بولوگو! مجھے معلوم ہوا ہے کہ تم میری موت سے خوفز دہ ہو، گویا تم موت کونہیں پہچانتے اور تم اپنے نبی کی موت کو اچھا نہیں سجھتے ، کیا میں نے اور تہ ہار نفسوں نے تہہیں موت کی خبر نہیں دی؟ کیا مجھ سے پہلے مبعوث ہونے والے انبیائے کرام میں سے کوئی نبی ہمیشہ رہا کہ میں بھی ہمیشہ رہوں؟ باخبر ہوجاؤ ، میں اپنے رب سے ملنے والا ہوں اور تم بھی اس سے ملنے والد ہوں اور تم میں تہمیں مہاجرین اوّ لین کے متعلق نیکی کی وصیت کرتا ہوں اور میں مہاجرین کو ایک دوسر کی وصیت کرتا ہوں اور میں مہاجرین کو ایک دوسر کی وصیت کرتا ہوں کیونکہ فر مانِ الٰہی ہے :

قتم ہے زمانہ کی تحقیق انسان نقصان میں ہے مگروہ لوگ جوایمان لائے۔الآیۃ ⁽¹⁾ اور تمام اُمور الله تعالیٰ کی منشا سے یائی تکمیل کو پہنچتے ہیں ،تمہیں کسی کام کی دیر ، مُجلَت پسندی پر آ مادہ نہ کرے کیونک

^{1}توجمهٔ كنز الايمان: اس زمانه مجبوب كفتم بشك آدى ضرورنقصان ميں بمرجوايمان لائے - (ب٠٣، العصر: ٣٠١)

__ الله تعالی کسی کی عُجْلَت سے عُجْلَت نہیں کرتا اور جس نےاللہ تعالی کوغالب مانا وہ خودغالب ہوا اور جس نےاللہ تعالیٰ سے فریب کیااس نے خود سےفریب کیا۔

پستم اس بات کے قریب ہو کہ اگر تہہیں والی بنایا جائے تو تم زمین میں فساد کر واور قطع رحمی کرو۔

(رصت دوعالم صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے انسار کے بارے میں فرمایا:) اور میں تمہیں انسار سے نیکی کی وصیت کرتا ہوں کیونکہ وہی ہیں جنہوں نے (مدینظیب میں) ججرت کے گھر میں ٹھکا نہ بنایا ہے اور تم سے پہلے ایمان لائے ہیں بتم ان سے احسان کرو، کیا انہوں نے تمہار سے لئے بچلوں کو دو حصنہیں کیا؟ کیا انہوں نے اپنے گھروں کو تمہار سے لئے بچلوں کو دو حصنہیں کیا؟ کیا انہوں نے تہہیں خود پر ترجیخ نہیں دی حالا نکہ وہ خود تنگدست سے ؟ باخبرر ہو جو تحض اس بات کا والی بنایا جائے کہ وہ دوآ دمیوں میں فیصلہ کر سے بس چاہئے کہ وہ ان کے نیک کو قبول کر سے اور ان کے بر سے سے درگز رکر سے باخبر ہو جا وَ ان پرخود کو ترجیخ میں فیصلہ کر سے بہر ہو جا وَ ان پرخود کو ترجیخ میرا حوض نہ خرر ہو میں تمہار سے انہ کی اور اس کی خود میں اور شہد سے زیادہ میٹھا ہے، جس نے اس سے پی لیا وہ بھی بھی بیا سا جو دود وہ سے زیادہ سفید کی اور اس کی زمین مُشک کی ہے ،کل کھڑ ہے ہونے کے دن جو اس سے محروم رہاوہ ہر بھلائی سے محروم رہا۔

باخبر ہوجاؤ! جو بید پسند کرتا ہے کہ کل میرے پاس آئے اسے جاہئے کہ وہ ناجائز با توں سے اپنی زبان اور ہاتھ کو روکے۔

حضرت عباس رَضِیَ اللهُ عَنُه نے عرض کی نیانبی الله! قریش کے لئے وصیت سیجئے تو آپ نے فرمایا: میں اس بات کے لئے قریش کے لئے اوران کا بُراان کے بُرے کے لئے قریش کو وصیت کرتا ہوں لوگ قریش کے تابع ہیں ، ان کا بھلا ان کے بھلے کے لئے اوران کا بُراان کے بُرے کے لئے ہے۔اے آلِ قریش! لوگوں کے ساتھ بھلائی کرو،اےلوگو! گناہ نعمتوں کو تبدیل کردیتے ہیں اور قسمت کو بدل

🕕توجههٔ كنوالايهان: توكياتمهارك بيلچصن (انداز)نظراً تي بيل كهاگرتمهين حكومت مليتوزيين مين فساد پهيلاؤاوراپيزشت كاك

وو_(پ٢٦، محمد:٢٢)

دیتے ہیں لہذا جب لوگ نیک ہوتے ہیں توان کے حاکم بھی نیک ہوتے ہیں اور جب لوگ نافر مانیاں کرتے ہیں تووہ نافر مان قراریاتے ہیں ⁽¹⁾ یعنی ان کے حاکم ظالم ہوتے ہیں ،فر مانِ الٰہی ہے کہ

''اوراسی طرح ہم بعض ظالموں کو بعض ظالموں کا ولی بنادیتے ہیں بسبب ان کے اعمال کے۔''⁽²⁾

حضرت ابن مسعود رَضِیَ اللّهُ عَنه سے مروی ہے حضور صَلّی اللّه عَلَيْهِ وَسَلَّم فَ حَضرت ابوبكر رَضِیَ اللّهُ عَنه سے فرمایا: ابوبكر پوچھو! حضرت ابوبكر رَضِیَ اللّهُ عَنه فرمایا: بال وقت قریب آگیا ہے؟ آپ نے فرمایا: بال وقت قریب آگیا ہے اور بہت ہی قریب آگیا ہے۔ حضرت ابوبكر رَضِیَ اللّهُ عَنه فے عرض كی: اے اللّه کے نبی! جو کچھ اللّه کے بال ہے آپ کومبارک ہو، كاش ہم اپنے ٹھكانے کوجانے ، حضور صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم فَ فَر مایا: اللّه کی طرف، شرابِ طهور سے بھرے ہوئے بیالے اور میں رفیق الله کی طرف، شرابِ طهور سے بھرے ہوئے بیالے اور رفیق الله کی طرف، شرابِ طهور سے بھرے ہوئے بیالے اور رفیق الله کی امان ہیں۔

حضرت ابو بکر دَخِی الله عنه نے بوچھا: اے الله کے بی! آپ کے مسل کے لئے انظام کس کا ہوگا؟ فر مایا میرے قریبی، پھران کے برخصیں کے بہر الله عنه نے بوچھا: ہم آپ پر نماز کیسے پڑھیں، چنا نچہ ہم مرو پڑے اور وہ بھی رود یے۔ پھر حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا: چھوڑ و، الله تعالیٰ تمہیں بخشے اور تمہارے نبی (کی طرف) سے تمہیں بہتر جز اور دے۔ جب تم مجھے شل و سے لو، کفن پہنا لوتو مجھے میر سے اسی گھر میں میری چار بائی پرمیری قبر کے کنار سے رکھو دینا، پھرتم کچھوٹر کے لئے مجھے تنہا چھوڑ کر باہر نکل جانا، سب سے پہلے الله عَوْوَ جَلْ مجھ پر دحت بھیج گا، پھر فرشتوں کو مجھ پر درود کی اجازت دی جائی اور سب سے پہلے الله تعالیٰ کی مخلوق میں سے جبر بل عَلَیْهِ السَّدم میر سے پاس آ کیں گے اور وہ مجھ پر درود پڑھیں گے، پھر میکا کیل پھر اسرا فیل اور پھرا کیک ٹیر جماعت کے ساتھ عزر را کیل رعک بیاس آ کیل میں وہ دور پڑھیں گے، پھر میکا کیل پھر اسرا فیل اور پھرا کیک ٹیر جماعت کے ساتھ عزر اکیل رعک کے اسکر میک میں میں مجھ پر صلو ق پڑھنا اور خوب سلام بھیجنا اور مجھے گھر بھر کر، آوازیں بلند کر کے، چیخ و رکار سے تکلیف ند دینا اور چا ہئے کہ تم

^{●}اتحاف السادة المتقين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الشطر الاول، الباب الرابع، ٤ /٣٣/

^{2}توجمهٔ کنز الایمان: اوریونهی ہم ظالمول میں ایک کودوسرے پرمسلّط کرتے ہیں بدلہان کے کئے کا-(ب۸، الانعام: ۱۲۹)

_ [2]

میں سےامام سب سے پہلے آئے اور میرے قریبی گھر والے، پھران سے قریب والے، پھرعورتوں کی جماعتیں اور پھر بچوں کی جماعتیں آئیں۔

حضرتِ ابوبکر رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ نے عرض کی کہ آپ کوقبرا نور میں کون اتارے گا؟ فرمایا: میرے انتہائی قریبی گھر والوں کی جماعت، پھران سے قریبی، فرشتوں کی کثیر تعداد کے ساتھ، تم انہیں نہیں دیکھتے ہومگر وہ تمہیں دیکھتے ہیں، کھڑے ہوجاؤاور میرے بعد آنے والوں تک پہنچادو۔ ⁽¹⁾

حضرت عائشہ رَضِیَ اللهٔ عَنْهَا سے مروی ہے کہ جس دن حضور صَلَی اللهٔ عَلَیْهِ وَسَلَم نے وصال فر مایا ، لوگوں نے دن کے ابتدائی حصہ میں آپ کی طبیعت کو ہلکا پایا چنا نچہ وہ خوشی خوشی اپنے گھر وں اور کا موں کے لئے لوٹ گئے اور آپ کو عور توں کے درمیان تنہا چھوڑ گئے ، ہم اس طرح خوشی ومسرت میں سے کہ اتنی خوشی ہمیں پہلے بھی نہیں ملی تھی ، اچپا تک حضور صَلَّی اللّٰه مُعَلَیْهِ وَسَلَّم نے فر مایا : تم سب عور تیں باہر چلی جاؤ کیونکہ بیفر شتہ مجھ سے اندر داخل ہونے کی اجازت مانگ رہاہے ، چنا نچہ گھر سے میر سے سواسب عور تیں باہر چلی گئیں اور آپ کا سرمبارک میری گود میں تھا، آپ بیٹھ گئے اور میں گھر کے ایک کونے میں ہوگئی۔

اس فرشتہ نے طویل سرگوشی کی ، پھر حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے مجھے بلایا اور اسی طرح سرمبارک میری گودمیں رکھ دیا اور عور توں سے فرمایا کہ اندر آجاؤ، میں نے حضور صَلَّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم سے عرض کی کہ مجھے بیہ آئے جریل کی نہیں کی تو آپ نے فرمایا: ہاں عائشہ! بیملک الموت تھا جومیر نے پاس آیا تھا اور اس نے کہا کہ الله تعالی نے مجھے بھیجا ہے اور فرمایا ہے کہ میں آپ کی اجازت کے بغیر آپ کے پاس نہ آؤں، اگر آپ اجازت دیں تو اندر آؤں اور الله تعالی نے مجھے بیشی خصور مقدس کو بھی سے کہ آپ کی اجازت کے بغیر روح مقدس کو بھی نہ کروں۔ اب آپ کی کیار ائے ہے؟ چنا نچہ میں نے کہا: ابھی تھم ونا آئکہ میرے یاس جریل آجائے، یہ جریل کے آنے کا وقت ہے۔ (2)

^{1} المعجم الاوسط ، ٢/٣٠ ، ١ ، الحديث ٩٦ و ٣٩ و الطبقات الكبرى لابن سعد، ذكر ما أوصى به رسول الله...الخ ،

السادة المتقين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الشطر الاول، الباب الرابع، ١٤٠/١٤ و المعجم الكبير،
 ١٢٩/٣

حضرت عائشہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا نے فرمایا کہ ہم پرایسا اُمروارِ دہوا کہ جس کے بارے میں ہمارے پاس کوئی جواب ختھااور نہ ہی اس بارے میں کوئی رائے تھی ،ہم سب خوفز دہ ہوکر خاموش تھے، گویا اہل بیت میں سے کوئی ایک بھی اس عظیم امر کی وجہ سے بول نہیں سکتا تھا،اس کی ہیبت نے ہمارے جسموں کوخون سے بھردیا تھا۔ (1)

حضرتِ عائشہ رَضِیَ اللهٔ عَنها فرماتی ہیں کہ اس ساعت میں جبریلِ امین حاضر ہوئے، میں نے ان کی آ ہے کہ آپ لیا، گھروالے باہرنکل گئے، جبریل اندرداخل ہوئے اور عرض کی: اے نبی !الله آپ پرسلام فرما تا ہے اور فرما تا ہے کہ آپ کی عزت و این آپ کو کیسا پاتے ہیں حالا نکہ وہ آپ کے متعلق آپ سے زیادہ جانتا ہے کیان الله کا ارادہ میہ ہے کہ آپ کی عزت و وقار میں اضافہ فرمائے اور گلوق پر آپ کی عزت و وقار پایئے پیمیل کو پہنے جائے اور آپ کی امت میں مثال ہوجائے۔

آپ نے فرمایا کہ میں رنج وورد پاتا ہوں، جبریل نے عرض کی آپ کوخوشخری ہو کہ الله تعالی نے ارادہ فرمایا ہوت نے کہ آپ کوان انعامات میں پہنچائے جواس نے آپ کے لئے تیار کئے ہیں۔ آپ نے فرمایا: جبریل ! امک الموت نے جبریل نے عرض کی اے تھر! آپ کا رب آپ کے دیدار کا مشاق ہے۔ کہ کیااس نے آپ کونییں بتایا کہ الله تعالی آپ سے سی چیز کا ارادہ فرما تا ہے، بخدا! امک الموت نے ہرگز کسی سے بھی بھی اجازت طلب نہیں کی ،اور نہ ہی وہ آئیدہ کسی سے اجازت طلب کرے گا، باخبر ہوجا ہے!الله تعالی آپ کے عرب ویشرف کو یورافر مانے والا ہے اور وہ آپ کا مشاق ہے۔

آپ نے فرمایا: تب تو میں اس وقت تک چین نہیں پاؤں گا جب تک کہ الله تعالی کے حضور نہ بہنج جاؤں ، آپ نے عور توں کو اندر آ نے کی اجازت دے دی اور حضرتِ فاطمہ دَضِی الله عُنهٔ اسے فرمایا: میر نے قریب آ وُ چنا نچہ وہ آپ پر گئیں، حضور صَدِّی الله عَلیْه وَسَلَّم نے ان سے سرگوثی فرمائی۔ جب انہوں نے سراٹھایا توان کی آ تکھیں نمنا کے تھیں اور وہ شدتِ غم سے کلام نہ کر سکتی تھیں، پھر فرمایا: اپناسر میر سے قریب کر و چنا نچہ حضرتِ فاطمہ دَضِی الله عَنها پھر آپ سے لیٹ گئیں، آپ نے ان سے سرگوثی فرمائی اور جب انہوں نے سراٹھایا تو ہنس رہی تھیں اور بات کرنے کی تاب نہھی۔ (2) ہم نے جب بے جیب بات دیکھی تو ہم نے بعد میں حضرتِ فاطمہ دَضِیَ الله عَنهَا سے اس کے متعلق پوچھا تو انہوں ہم نے جب بے جیب بات دیکھی تو ہم نے بعد میں حضرتِ فاطمہ دَضِیَ الله عَنهَا سے اس کے متعلق پوچھا تو انہوں

¹ ١٤٠/١٤ الباب الرابع، ١٤٠/١٤ أسادة المتقين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الشطر الاول، الباب الرابع، ١٤٠/١٤

الطبقات لابن سعد، ذكر وفاة رسول الله صلى الله عليه وسلم، ١٩٩/٢، ما حوذًا (عن انس)

نے بتایا کہ مجھے حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے جب بی خبر دی کہ میں آج وصال کرنے والا ہوں تو میں رودی اور پھر جب فرمایا میں نے اللہ متعالی سے دعا کی کہوہ تجھے میرے گھر والوں میں سے سب سے پہلے مجھے سے ملائے گا اور تہہیں میرے ساتھ رکھے گا تو میں ہنس بڑی۔ (1)

پھر آپ نے حضرتِ فاطمہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا کے دوہ پیوُں کو بلایا اور انہیں پیار کیا، حضرتِ عائشہ دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا فرماتی ہیں پھر مَلک الموت آئے، انہوں نے اجازت مانگی تو آپ نے اسے اجازت دیدی۔ مَلک الموت نے عُض کی کہ میرے لئے کیا تھم ہے؟ آپ نے فرمایا کہ مجھے اب میرے رب کے پاس لے چلو۔ مَلک الموت نے عُرض کی کہ آئ میرے لئے کیا تھم ہے؟ آپ نے فرمایا کہ مجھے اب میرے رب کے پاس لے چلو۔ مَلک الموت نے عُرض کی کہ آئ آپ کی اجازت ہے) ایسا ہی ہوگا اور آپ کا رب آپ کا مشاق ہے اور میں نے آپ کے سواکسی اور کے پاس بار بار آپ کی اجازت لینے کا تھم ملالیکن آپ کی ساعت آپ کے سامنے ہے اور وہ نکل گئے۔ (2)

حضرت عائشہ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا فرماتی ہیں کہ پھر جبر یل عَلَیْہ السَّلام آئے اور عرض کی :السلام علیك یادسول اللّٰه!

یر آخری پیغامات تھے جوز مین پر بھیج گئے، اب ہمیشہ کے لئے سلسلۂ وحی منقطع کردیا گیا ہے اور دنیالپیٹ دی جائے گی اور زمین میں میرے لئے آپ کے بغیر اور کوئی حاجت نہیں اور زمین میں آپ کے پاس آنا ہی میری ضرورت تھی اور اب میں ایس میرے لئے آپ کے بغیر اور کوئی حاجت نہیں اور زمین میں آپ کے پاس آنا ہی میری ضرورت تھی اور اب میں ایس میں ایس میں ایس میں آپ کے باس آنا ہی میری ضرورت تھی اور اب میں ایس میں ایس میر موں گا اور وہاں سے کہیں نہیں جاؤں گا، بخدا! جس نے محمد صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلّٰم کوئی کے ساتھ معوث فرمایا ہے۔

حضرت عائشہ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا فرماتی ہیں: پھر میں حضور صَدَّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَدَّم کے پاس گی اور آپ کاسرِ اَنوراپنے سینہ پررکھ کراسے تھام لیا اور آپ پرغنودگی سی طاری ہونے لگی اور آپ کی بیشانی مبارک سے پسینہ ٹیکنے لگا۔ میں نے اس سے زیادہ عمدہ خوشبوکسی چیز میں ایسا پسینہ کسی انسان کی بیشانی پنیشانی پنیشانی جیز میں ہونی آپ کو إفاقہ ہوا میرے مال باپ اور جان وگھر آپ پر قربان ہوں، آپ کی بیشانی میں کہنے لگا جو نہی آپ کو إفاقہ ہوا میرے مال باپ اور جان وگھر آپ پر قربان ہوں، آپ کی بیشانی

يُشَ ش مطس المدنية شالع لمية دووت اسلاي)

۱۰۳۰ مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزهد، ما ذکر عن نبیّنا...الخ، ۲۷/۷ د، الحدیث ۲ و المعجم الکبیر، ۲۲/۲۲ ـ ۲۱ ۲۱ ۲۱ ۲۱ الحدیث ۱۰۳۰ ـ ۱۰۳۹ ما خو ذًا

^{2} طبقات ابن سعد ، ۱۹۹/۲

مبارک سے بسینہ کیوں جاری ہے؟ آپ نے فرمایا: عائشہ! مومن کانفس بسینہ میں نکلتا ہے اور کافر کی جان دونوں باچھوں سے گدھے کی طرح نکلتی ہے۔ پھرہم لوگ گھبرا گئے اور اپنے گھر والوں کی طرف آ دمی بھیجے، پس سب سے پہلا آ دمی جو ہمارے پاس آیا اور حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کونہ پایا، میرا بھائی تھا جسے میرے باپ نے میری طرف بھیجا تھا، چنانچ چضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم نے سے بل وصال فرمایا۔ (1)

الله تعالی نے مردوں کواس لئے روک دیا تھا کہاس وقت جبریل ومیکا ئیل حضور صَلَّی الله عَلَیْهِ وَسَلَّم کی خدمت میں تھے، گویا آپ کواختیار دیا جارہا تھا، اور جب آپ کلام کرتے تو فرماتے نماز، نماز، تم ہمیشہ ایک دوسرے کے معاون رہوگے جب تک تم سب پڑھتے رہوگے نماز، نماز، (2) گویا حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم بیوصیت کرتے ہوئے جہان سے تشریف لے گئے کہ نماز نہیں جھوڑ نا۔

حضرت عائشه رَضِيَ اللَّهُ عَنُهَا كا قول ہے كه حضور صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم نے سوموار كے دن چاشت اور عين وو بهر كه در ميانی وقت ميں وصال فرمايا۔

حضرتِ فاطمه رَضِيَ اللهُ عَنْهَا كا قول ہے كہ ميں نے سوموار كے دن تنها مصيبت نہيں ديكھى بلكه بخدا!اس دن امت كو بہت مصائب ملے ہيں۔

❶المعجم الكبير، ٨/٣٥، الحديث ٢٦٧٦ و ١٠٤١٠، الحديث ٢٨٩٠ و ١٠٤١٠، الحديث:١٠٤١٧

^{2}اتحاف السادة المتقين، كتاب ذكر الموت وما بعده،الشطر الاول،الباب الرابع، ٤ ٢/١ ١

انہیں توفیق مرحمت فرمائی اور گفتار وکر دار کی راستی بخشی اورلوگ حضرت ابو بکر دَضِیَ اللّٰهُ عَنْه کے قول سے بہت گھبرا گئے بہاں تک کہ حضرت عباس دَخِی اللّٰهُ عَنْه آئے اور کہا جشم ہے اس ذات کی جس کے سواکوئی معبود نہیں البتہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَنْهُ آئے اور کہا جشم ہے اس ذات کی جس کے سواکوئی معبود نہیں البتہ حضور صَلَّی اللّٰهُ عَنْهُ وَسَلَّم نے موت کا ذاکتہ چھولیا ہے اور آپ نے تہمیں اپنی موجودگی میں کہد یا تھا:

ئة عِنْ تَعَقِق تو بَهِي فوت هو نيوالا ہے اور تحقیق وہ بھی مرنے والے ہیں ۔ منابع

ٳڽٞ۠ڰڡؘڽؚۜٮ ۜٛٷٙٳٮٛۧۿؙؠٛڡۧۜڽؚؾۘٷڽؘ۞ؙڞؙۘٵؚڶۜڴؙؙؙؙؙؠؽۏۛڡؘ۩ڶڠڶۣڡؘۊؚٙۼٮ۬ۘ ؆ڽڴؙؙؙؙۿؾؘۛڠٛڝۜؽؙۅڽؘ۞⁽¹⁾

پر خقیق تم قیامت کے دن اپنے رب کے نز دیک جھگڑ وگے۔

اور حضرت الوبكر رَضِى اللهُ عَنْه كوي خبر ملى درانحاليكه وه بنوالحارث بن حُرْثُرَح كے ہاں تھے، وه آئے اور حضور صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كے پاس داخل ہوئے، آپ كی طرف ديكھا پھر آپ كی طرف ديكھا اور آپ پر جھك گئے، چو ما اور عرض كى:
يارسول الله ! ميرے مال باپ آپ پر قربان ہول، الله تعالی آپ كو دومر تبهموت كاذا تَقْنَهِ بِس چُھائے گا بِس البته بخدا،
رسولِ خداصَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم رِحلت فرما گئے ہِيں پھر آپ لوگول كی طرف آئے اور كہا: اے لوگو! جو شخص محمد صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّم كی عبادت كرتا ہے ہِس بِ شَلْ مُحمد صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم رِحلت فرما گئے ہِيں اور جو شخص محمد صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم کے عبادت كرتا ہے ہوان كارب زندہ ہے، وہ بھی نہيں مرے گا، فرمان اللی ہے:

اور بین محمد (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) مگررسول تحقیق گزرے بین اس سے پہلے بہت پینمبر پس اگروہ فوت ہوجائے یافل کیا جائے تو وَمَا مُحَمَّدُ إِلَّا مَسُولُ قَلْ خَلَتُ مِنْ قَبْلِعِ الرُّسُلُ لَّ اَفَايِنُ مَّاتَ اَوْقُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى اَعْقَا بِكُمْ (2)

کیاتم پھرجاؤگےاپنی ایڑیوں پر۔

گویالوگوں نے اس دن سے پہلے بیآ بیت نہیں سی تھی۔

ایک روایت میں ہے کہ جب حضرت ابوبکر رَضِیَ اللهُ عَنْه کو بی خبر ملی تو وہ حضور صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے گھر داخل ہوئے درانحالیکہ وہ نبی کریم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم پردرود بھیج رہے تھے اوران کی آئکھوں سے آئسو بہدر ہے تھے،ان کی بیکی بندھی

- 🗨تو جمهٔ کنز الایمان: بے شکتمہیں اِنقال فر مانا ہے اوران کو بھی مرنا ہے پھرتم قیامت کے دن اپنے ربّ کے پاس جھگڑو گے۔
- وں ۔۔۔۔۔ تو جمهٔ کنز الایمان: اور محمد توایک رسول ہیں ان سے پہلے اور رسول ہو چکے تو کیا اگروہ انتقال فرمائیں یا شہید ہوں تو تم الٹے پاؤں پھر جاؤگے۔ (ب٤٠١ عدن: ١٤٤)

ہوئی تھی جیسے پانی سے بھراہوا گھڑ اا جھلتا ہے اور انہوں نے اس کے باوجود قول وقعل میں صبر کا دامن نہ چھوڑا، پس وہ حضور صنّی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّم پر جھک گئے اور آپ کے چہرہ انور سے کپڑا ہٹایا، آپ کی پیشانی اور رُخساروں کو چوما، آپ کے چہرہ اقدس پر ہاتھ بھیرااوررونا شروع ہو گئے اور کہنے گئے میر ہے ماں باپ، جان اور گھر بار آپ پر قربان ہو، آپ زندگی اور موت دونوں میں طاہرو پاکیزہ ہیں، آپ کے وصال سے وہ سلسلہ منقطع ہوگیا ہے جود بگرا نبیائے کرام سے منقطع نہیں ہوا تھا، آپ ہروصف سے بالاتر اوررونے دھونے سے برتر ہیں، آپ تسلی کا باعث ہوگئے، آپ کا جودو کرم سب کوعام ہوا تھا، آپ ہروصف سے بالاتر اوررونے دھونے سے برتر ہیں، آپ تسلی کا باعث ہوگئے، آپ کا جودو کرم سب کوعام ہو اگر آپ کا وصال آپ کے اپنے ایثار سے نہ ہوتا تو ہم مرجاتے اورا گر ہمارے رونے سے بچھ ہوسکتا تو ہم آپ پر اپنی آپ تکھوں کا پانی خشک کردیتے ۔ بہرحال ہم جس چیز کوا پنے سے الگنہیں کر سکتے وہ تم اور آپ کی یاد ہے جو ہمیشہ برقرار

ربیں گے، اے الله اجمارا به بیغام اینے صبیب صلّی اللهُ عَلیْهِ وَسَلَّم کی بارگاه میں پہنچادے۔

اے محراصلی الله علیٰ کوسلم آپ اسپنار بسی ماری شفاعت فرما کیں اورا پنے ول میں ہمارا خیال رکھیں ، آپ اگرسکون کے آسباب مہیا نہ فرماتے تو وحشت کی وجہ ہے ہم میں سے کوئی اپنی جگہ سے نہ اٹھ سکتا۔اے الله التوا پنے نبی کی خدمت میں ہمارے بیجنی اوران کا فضل و کرم ہمارے شاملِ حال فرما۔ بیہ وہ جو ہماری طاقت میں ہمارے بین ہمارے جذبات واحساسات ،خدا کرے کہ ہم رسولِ اکرم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے اُسوہُ حسنه طاقت میں ہمارے بین ہمارے جذبات واحساسات ،خدا کرے کہ ہم رسولِ اکرم صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم کے اُسوہُ حسنه بیم الله سے امریہ کرتے ہیں کہ وہ ہماری خطاو کی کوئیکیوں میں تبدیل فرمائے گا اور ایمان کے ساتھ بارگا و نبوت میں شرف باریا بی عطافر مائے گا۔ (1) خالق عالم کی ذات کرا می بہترین مسئول اور اعلیٰ ترین امیدوں کا مکلجا و نبوت میں شرف باریا بی عطافر مائے گا۔ (1) خالق عالم کی ذات گرا می بہترین مسئول اور اعلیٰ ترین امیدوں کا مکلجا و کا ہے۔ والحمد للله دب العلمین۔

الحمد لله كه كتاب مستطاب "مكاشفة القلوب" از إفادات علامه فهامه امام بهام حضرت الم مغز الى رَضِى الله عنه كاتر جمه آح لارجب المهرجب ١٣٩٦ هو ياية تكيل كو پنج الله دب العلمين اس معى كوقبول فرمائ ،مترجم، ناشراورمح كوجز ائے فيرعطافر مائے۔ آمين بجاہ سيد المرسلين صلى الله تعالى عليه وسلم

^{1}بخارى، كتاب الجنائز، باب الدخول على الميت...الخ، ١/١١، الحديث ١٢٤١ ملخصًا



مَا خذومرا جع كم

(مطبوعات

داراحياءالتراث العربي ١٣٢٠ما دارالفكر١٩٢٠ه دارالكتب العلميه بيروت ١٣٢٠ه دارالكتب العلميه بيروت ١٣١٧ه داراحیاءالتر اثالعر نی ۴۲۱ اھ دارالفكر بيروت ٢٠٠٣اھ داراحهاءالتراث العربي ٥٠١٨م المكتبة العصرية دارالكتپالعلميه بيروت ۱۳۲۳ اھ دارالفكر بيروت دارالكتبالعلميه بيروت١٩١٥ه دارالكتبالعلميه بيروت ۴۸ اھ مكتبة المدينة ١٣٣٢ ه پىرېھائى كېنى،لا ہور دارالكتب العلميه ١٩١٩ ١ دارابن حزم ۱۹۶۱ اه دارالفكر بيروت ١٣١٣ماه دارالمعرفه بيروت ١٣٢٠ه داراحیاءالتراثالعر بی ۱۴۲۱ھ دارالكتك العلميه ١٩٢٧م

مصنفين

فخرالدين مجمد بن عمر بن الحسين رازي شافعي متو في ٢٠١ هـ علامها بوعيدالله بن احمدانصاري قرطبي متوفي ا ٢٧ ھ مينخ ناصرالدين عبدالله متوفى او كره ابوځرخسین بن مسعودالبغو ی متوفی ۵۶۱ ه ابوالفضل شهاب الدين سيرمحمودآ لوي بغدا ديمتو في • ١٢٧هـ امام جلال الدين عبدالرطن بن ابي بكرسيوطي متوفى ٩١١ هـ شيخ اساعيل حقى متوفى ١٣٤٤ اه امام الحافظ ابومجمه عبدالرحمٰن بن ابي حاتم الرازي متوفى ٣٢٧ هـ احد بن محر بن المهدى بن عجيبه متوفى ١٢٢٨ ه ابوالليث نصربن محمربن إبراهيم سمرقندي متوفى ٣٧٣ه بربان الدين الى الحسن إبراهيم بن عمراليقاع متوفى ٨٨٥ ھ ابوڅه عبدالحق بن غالب بن عطية الاندلسي متو في ۵۴۶ ه صدرالا فاضل مفتى نعيم الدين مرادآ بإدى متو في ٦٧ ٣١ هـ حكيم الامت مفتى احمه بارخان تعيى متو في ١٣٩١ هـ امام محربن اساعيل بخاري متوفى ٢٥٦ ه امام مسلم بن حجاج قشيري نبيثا بوري متوفى ٢٦١ امام محمد بن عيسي تر مذي متو في ٩ ١٢٧ ه امام محربن يزيدالقزوني ابن ماحه متوفي ١٤٧٣ هـ ابوداودسليمان بن الاشعث السجستاني متوفى ١٤٧٥ ه امام احد بن شعیب نسائی متوفی ۳۰۳ ه

لتب

التفسير الكبير تفسير قرطبي تفسيرالبيضاوي تفسير البغوى روح المعاني در منثور تفسير روح البيان تفسیر ابن ابی حاتم بحر المديد بحر العلوم نظم الدرر المحرر الوجيز خزائن العرفان نور العرفان بخاري مسلم تر مذی ابن ماجه ابوداؤد سنن النسائي

امام ما لك بن انس متو في 9 ساھ

سليمان بن داود بن الحارودمتو في ۴ ۲۰ هـ

ابوبكر محمربن إسحاق بن خزيمة متوفى ااساھ

حافظ سليمان بن احمر طبراني متوفى ١٠٠٠ ه

احمد بن على بن المثنى ابو يعلى الموصلي متو في ٢٠٠٧ هـ

امام ابوبكراحمه بن حسين بيهقي متوفي ۴۵۸

امام ابوعبد الله محربن عبد الله نيشا بورى متوفى ١٠٠٥ ص

ابوبكرعبدالرزاق بن هام الصنعاني متوفى اا ٢ ه

امام عبد الله بن محدابن الى شيبكوفى متوفى ٢٣٥ ص

ابن ابي الدنيامتو في ٢٨١ ه

امام ابوبكراحمه بن حسين بيهقي متو في ۴۵۸ ھ

عبدالله بن عبدالحل ابوتد الداري متوفى ٢٥٥ ه

الموطأ

مسند الطيالسي

صحيح ابن حبان

صحيح ابن خزيمة

المعجم الكبين

المعجم الأوسط

مكارم الاخلاق

المسند

مسند ابی یعلی

شعب الإيمان

مسند البزار

المستدرك

الأدب المفرد

مصنف عبد الرزاق

مصنف ابن ابی شبیه

مشكل الآثار

كتاب الزهد

الزهد

الزهد الكبير

سنن الدارمي

سنن الدارقطني

مجمع الزوائد

دارالمعرفة بيروت ۴۲۰اھ

المكتب الاسلامي

داراحياءالتراث٢٢٢١

دارالكتب العلميه ٢٠١٠ماھ

دارالفكر بيروت ١٩١٧ه

دارالكت علميه المهااه

مكتبة العلوم والحكم ٢٢٣ اه

دارالمعرفة بيروت ١٩١٨مه

مَدينة الإولياءملتان تثريف

دارالفكر، بيروت ١٣١٨م

دارالكتبالعلميه بيروت

دارابن کثیر بیروت ۴۲۰اه

دارالجان بيروت ۴۰۸ ه

مؤسسة الرسالة ، بيروت

دارالكتاب العربي، بيروت ٧٠٠٠١١٥

دارالكتب العلميه بيروت المهاره

دارالكتبالعلميه بيروت ١٣٢٥ه

دارالكتب العلميه بيروت المهاره

دارالكتبالعلميه بيروت ١٩١٨م

مکتبه حسینه، قذا فی روڈ، گوجرانواله

دارالكت العلميه بيروت ١١٨ه

محمد بن حیان بن احمد ابوحاتم انتمیمی متوفی ۳۹ سے ھ

حافظ سليمان بن احمر طبراني متوفى ١٠٦٠ ه

حافظ سليمان بن احمر طبراني متوفى ١٠ ٣٠هـ

امام احربن خنبل متوفى ٢٨٧ھ

ابوبكراحمه بن عمرو بن عبدالخالق البز ارمتو في ۲۹۲ ه

امام محمد بن اساعيل بخاري متوفى ٢٥٦ ه

امام الوجعفراحمه بن محمد بن سلامة طحاوي متو في ٣٢١ هـ

عيدالله بن المهارك متوفى ا ١٨ اه

على بن عمرا بوالحسن الدارقطني البغد ادى متو في ٣٨٥ هـ

نورالدین علی بن ابی بکر میثمی متوفی ۷۰۸ھ

دارالفكر، بيروت ١٣٢٠ه

دارالكتبالعلميه بيروت ١٩١٨ه مكتبة الإمام بخاري، قاہرہ دارالفکر، بیروت ۱۸۴۸ه مركز الحذمات والابحاث الثقافية ، بيروت دارالكتبالعلميه ببروت اانهاره دارالكتبالعلميه ١٨٢٨ماه دارالكتب العلميه ببروت ١٩٢٧ماھ دارالكتبالعلميه ١٨١٨مه دارالكتب العلميه ١٩١٩ ه دارالكتب العلميه ١٩٢٧ماه دارالكتب العلميه ٢٠٠١ اه مؤسوسة الرساله بيروت ۴۰،۸۱۵ دارالكتب العلميه ببروت ١٩٢٢ماه دارالفكر، بيروت ١٩١٨م دارالكتبالعلميه ١٨٢٥ماه دارابن حزم/المكتبة العصربية ٢٦١١ه المكتنة العصريه ٢٦ ١١ه دارالكتبالعلميه بيروت٢٦ ١٩٢٢ه المكتبة العصريه ٢٦٨ماه دارالكتب العلميه المهماه مكتنة الرشدالقابر ومص دارالصحابهالتراث۸۴۰۱ه

ابوالسعا دات المبارك بن محمد جزري ابن الاثير متوفى ٢٠١ه محربن على بن حسن ابوعب الله الكيم التريذي متوفى ١٠ ٣٠ه عبدالعظيم بن عبدالقوى المنذ ري متوفى ١٥٦ه امام ابوبكراحمه بن حسين بيهقي متو في ۴۵۸ ھ امام احمد بن شعيب نسائي متوفي ٣٠٣٠ ه امام ابوبكراحمه بن حسين بيهقي متو في ۴۵۸ ھ ابوم حسين بن مسعودالبغوي متوفى ٥٦١ ه امام حافظ ابونعيم احمد بن عبد الله اصفهاني متوفى وسهم ص علامه علاؤالدين على بن حسام الدين متى ہندى متوفى ٥٤٥ه علامه محمرين عبدالله خطيب تبريزي متوفى اس محصر حافظ شير و په بن شهر داربن شير و په ديلمي متو في ۹ • ۵ ھ حافظ سليمان بن احمر طبراني متوفى ١٠٦٠ ه شيخ اساعيل بن محر محبلوني متوفى ١٦٢ اله امام عبدالرخمن جلال الدين سيوطي متو في اا 9 ھ امام عبدالرحمن جلال الدين سيوطي متو في اا 9 ھ عبدالله بن محمه بن عبيد بن سفيان ابن ابي الدنيامتو في ٢٨١ هـ عبدالله بن محمد بن عبيد بن سفيان ابن ابي الدنيا متوفى ٢٨١ ه عبدالله بن محد بن عبيد بن سفيان ابن الى الدنيامتوفى ٢٨١ه عبدالله بن محد بن عبيد بن سفيان ابن الى الدنيامتوفى ٢٨١ه عبدالله بن محمد بن عبيد بن سفيان ابن ابي الدنيامتوفي ١٨١هـ انی بکر محمد بن جعفر خراکطی متو فی ۳۲۷ ھ احدين محربن زيادابن الاعرابي متوفى بههاره

جامع الاصول في احاديث الرسول نوادر الاصول في احاديث الرسول الترغيب و الترهيب البعث والنشور سنن الكبرى السنن الكبرى شرح السنة حلية الا ولياء كنزالعمال مشكاة المسند الفردوس مسند الشاميين كشف الخفاء جامع الاحاديث جامع الصفير قصر الأمل موسوعة ابن ابى الدنيا التواضع والخمول ذكر الموت مكارم الاخلاق مكارم الاخلاق الزهد وصفة الزاهدين

الزهد

الاموال

الاحاديث المختارة

معرفة السنن والآثار

الورع الكبائر

J .

جامع العلوم والحكم مسند الشهاب

اخبار مكة

كتاب العظمة

بستان الواعظين

رسالة قشيريه

المقاصد الحسنة

الخصائص الكبرى

السيرة النبويه

السيرة الحلبية

الاسماء والصفات

الشفا

الجوهر المنظم

المواهب اللدنية

دلائل النبوة

المغنى عن حمل الاسفار

نسيم الرياض

ہنادین السری الکوفی متوفی ۲۴۲ ھ

ابواحمة حميد بن مخلد الخرسانی المعروف بابن زنجو بيمتونی ٢٥١ هـ حافظ ابوعبد الله محمد بن عبد الواحد حنبلی مقدسی متوفی ٦٣٣ هـ

امام ابوبکراحمہ بن حسین بیہجق متوفی ۴۵۸ ھ من

امام احمد بن عنبل متوفى اله7ه

محمد بن احمد بن عثان الذهبي متو في ۴۸ کھ

ابوالفرج عبدالرحمٰن بن احمد بن رجب حنبلي متو في ٩٥ ٧ هـ

محد بن سلامة بن جعفر ابوعبد الله القصاعي متوفى ٢٥٨ هـ

ابوعبد الله مُمرين اسحاق بن العباس مَلى فاكهي متو في ٢٧٢هـ

عبدالله بن محمد بن جعفر بن حيان الاصبها في متوفى ٣٦٩ هـ ابوالفرج عبدالرحمن ابن الجوزي متوفى ٥٩٧ هـ

امام ابوالقاسم عبدالكريم هوازن قشيري متوفى ٢٥٦ ه

امام شخصش الدين محمد عبدالرحلن سخاوى متو فى ٩٠٢ هـ

امام عبدالرطمن جلال الدين سيوطى متو في 911 هـ ابر

عبدالملک بن هشام بن ایوب جمیری متوفی ۲۱۳ هه علی بن بر مان الدین کهلهی متوفی ۴۸۴ و ه

امام ابوبكراحمه بن حسين بيهقي متوفى ۴۵۸ ه

قاضی ابوالفضل عیاض بن موتی بن عیاض مالکی متوفی ۵۴۴ ه

محدث الجليل احمد بن حجر بيتمي مکي متو في ۴۷ ه ه شهاب الدين احمر قسطلاني متو في ۹۲۳ ه

امام ابوبكراحمه بن حسين بيهقي متوفى ۴۵۸ ه

ابوالفضل العراقي متوفى ٨٠٦هـ

شهاب الدين احد بن محمر متوفى ١٩٠١ه

دارالخلفاءلكتابالإسلامي×مهاره

رياض

دار خضر للطباعة والنشر والتوزيغ ١٩٢١هـ

دارالكتبالعلمية بيروت ۴۲۲ماھ دارالكتبالعلمية بيروت

يثاور ۱۹۸۵ء

مكتبه فيصليه مكه كرمه

مؤسسة الرسالة بيروت

دارخصر بيروت لبنان ۱۴۱۹ھ

دارالکتبالعلمیه بیروت ۱۳۱۳ هد دارالکتبالعلمیه بیروت ۱۳۲۴ ه

. دارالکتبالعلمیه بېروت ۱۸۱۸ماھ

دارالكتب العلميه وكتاب العرني ١٩٢٥ اه

. دارالکتبالعلمیه بیروت

دارالفجرقامره ۴۵مماه

دارالكتبالعلميه بيروت١٩٢٢ه

المكتبة الاز هربيلتراث مركزابلسنت بركات دضا ہند

مكتبه قادريهمركز الاولياءلا بهور

دارالكتب العلميه بيروت

دارالكتب العلميه ١٩٢٣م

مكتبة طبرية ١٩١٥ه دارالكتب العلميه بيروت

681

يْشُ ش: مجلس ألمد فِيدَ شُالعِ لهي الله والروت اسلام

شخ عبدالحق محدث د ملوی متو فی ۵۲۰ اهر فاروق اكبڈى ضلع خيريور زين الدين محمد عبدالرؤف مناوي ۲۱ ۱۰ اه دارصادر بيروت مدينة الاولياء،ملتان علامهاحمر بن على العسقلا في متو في ٨٥٢ ه مركز ابلسنت بركات رضا شاه عبدالحق محدث دبلوي متوفى ۵۲ •اھ دارالكتن العلميه شهاب الدين احمر بن محد متو في ١٩٩٠ ه دارالكتب العلميه ببروت علامه شخ عبدالرحن سخاوي متو في ٩٠٢ هر دارالكتب العلميه بيروت ٢٠٠٨ ١١ه امام عبد الله بن احمر بن محمر بن قيرامه مقدسي متو في ١٢٠ هـ علامهابن حجرمیثمی متوفی ۴۷ ه دارالمعرفه بيروت٩١٩١ه شهاب الدين محمر بن احمراني الفتح ابشيهي متو في ٨٥٠ هـ دارالفكر بيروت لبنان ۱۹۹۸ء محد بن على بن عطيه ابي طالب المكي متو في ٣٦٨ هـ دارالكتب العلميه ببروت ٦٢ ١٣ اھ دارالكتب العلميه بيروت ٢٩٣٩ه امام محمد بن محمد غز الي متو في ٥٠٥ ھ دارالكتب العلميه بيروت علامەسىدمجە بن مجمد يني زېږي ۲۰۵ ھ ابوالفرج عبدالرحل بن احمد بن رجب منبلي متو في ٩٥ ٧ هـ دارابن حزم مكتبه شامه ابوالفرج عبدالرحمٰن بن احمر بن رجب صنبلي متو في ٩٥ ٧ هـ مكتبة دارالبيان ومشق دارالكتبالعلميه ببروت ابوالعياس احدين عبدالله طبري شافعي متوفى ٦٩٨ هـ دارالفجر دمشق ۱۳۲۴ه امام ابوالفرج عبدالرحل بن جوزي متوفى ٥٩٧ هـ مطبعة خلبي ١٣٨٨ إه ابوسعىدخادى محمر بن محمر بن مصطفى بن عثمان متو في ٢٧١١هـ النشر والتوزيع سابهاه تاج الدين بن على بن عبد كا في سبكي متو في الحاسر دارالكتب العلميه بيروت ١٨١٨م محمر بن سعد متو في ۲۳۰ ھ حافظ احمد بن حجر کی پیتمی متو فی ۴۷ و ه مدينة الاولياء،ملتان امام احمد بن على الشعراني متوفى ٣٤٩ هه دارالكتنبالعلميه ببروت دارانعلم للملايين بيروت خيرالدين بن محمودالزركلي ١٣٩٦هـ ابوبشرمجر بن احمه بن حماد الدولا بي متو في ١١٠٠ هـ دارا بن حزم

(أخبار الأخيار الكواكب الدرية نزهة النظر مدارج النبوة نسيم الرياض المقاصد الحسنة التوابين الزواجرعن اقتراف الكبائر المستطرف قوت القلوب احياء علوم الدين اتحاف السادة المتقين لطائف المعارف التخويف من النار الرياض النضرة بحر الدموع بريقة محمودية طبقات الشافيه الطبقات الكبرى الصواعق المحرقة اليواقيت والجواهر الاعلام الكنى والاسماء

دارالمعرفه بيروت اسهماه مكتبة الدارالمدينة المنورة دارالكتب العلميه بيروت دارالفكر بيروت ١٥١٥ماه دارالغرب الاسلامي ١٣٢٢ دارالكت العلميه بيروت ٢٢٢اه دارالمعارف مصر داراحياءالتراث العربي دارالكتپالعلميه ١٣١٥ دارالكتب العلميه بيروت دارالكتب العلميه ٢٢ ١٣١ه دارالسلام دارالكتبالعلميه بيروت ٢٢٢اھ دارالبشائر بيروت ١١٨١ه دارالكتب العلميه بيروت دارالفكر بيروت ١٨١٨م دارالكت العلميه بيروت ٣٢٢ اه كوئية استاه دارالفكر بيروت ١١٨١٥ ضياءالقرآن يبلى كيشنز لاهور دارالكتبعلميه بيروت دارالكتبالعلميه بيروت ١٩١٩مه

محمطی بن محمر بن علان متو فی ۵۷۰اھ محمد بن نصر بن الحجاج مروزي متو في ۲۹۴ ه علامهاحمر بن على العسقلاني متوفى ٨٥٢ ه ابن عسا كرابوالقاسم على بن حسن شافعي متوفى ا ٥٤ ه حافظا بوبكرعلى بن خطيب بغدادي متوفى ٣٦٣ ه امام محمد بن اساعيل بخاري متوفى ٢٥٦ ه ابوجعفرمجربن جربرطبري متوفى •ا٣١ھ امام ابوالحس على بن محمد الجزرى متو في ٨٥٢ هـ امام حافظا بن حجر عسقلانی شافعی متوفی ۸۵۲ ھ امام ابواحمه عبد الله بن عدى جرجاني متوفى ٣٦٥ ه ابوعمر يوسف عبدالله بن محمر قرطبي متوفي ٦٦٣ ١٠ ه علامها بوعيد الله بن احمرانصاري قرطبي متو في ا٢٤ هـ ابونيم احمر بن عبد الله بن احمر الاصبها ني متو في مهام ه امام محمد بن حسن شیبانی متوفی ۱۸۹ ه امام احد بن على عسقلاني متو في ٨٥٢ ه امام بدرالدین ابوڅه محمودین احد عینی متو فی ۸۵۵ھ عبدالرؤف المناوي متوفى ا٣٠اھ شيخ محقق عبدالحق محدث دہلوی متو فی ۵۲•اھ علامه ملاعلى بن سلطان قارى متو في ١٠١٠ هـ مفتى احمه بإرخان نعيمي متو في ١٣١٩ھ علامه سعدالدين تفتازاني متوفى ا 9 2 ھ الحافظ يوسف بن عبدالله بن مُحدمتو في ٦٣ م شيخ نظام وجماعية ٢٩٥/۵٩٢ ھ

دليل الفالحين تعظيم قدر الصلاة تلخيص الحبير في تخريج تاریخ مدینه دمشق تاريخ بغداد تاريخ كبير تاريخ طبري اسد الغابة الإصابة الكامل في ضعفاء الرجال الاستيعاب التذكره معرفة الصحابة كتاب الكسب فتح البارى عمدة القاري فيض القدير أشعة اللمعات مرقاة المفاتيح مرآة المناجيح شرح المقاصد التمهيد فتاوى الهندية

دارالفكر بيروت اامهاره

دارالمعرفه بيروت دارالكتب العلميه بيروت ١١٧١ه دارالمعرفه ببروت مكتبد بركات المدينه رضا فا وَ نِدْ يَشِن ، لا ہور مكتبه جمال كرم لا هور مكتبة المدينة كراجي مكتبهالمدينهكراجي دارالفكر بيروت ١٩١٧ماھ دارالفكر بيروت داراحياءالتراث العربي كتاب خانه كمي ايران دارالكتبالعلميه ببروت ملتان بإكستان دارابن کثیر بیروت دارالكتب العلميه بيروت ١١١٨ه دارالكتب العلميه بيروت دارالكتب العلميه بيروت المهماره دارالكتاب العربي بيروت ١٩٢٠ه دارالكتبالعلميه بيروت ١٩١٩ماھ مدينة الاولياءملتان شريف مكتبة المدينه بابالمدينه كراحي

علا وُالدين مُحمِّه بن على حسكفي متو في ٨٨٠ اص حاشية البجيرهي على الخطيب اليمان بن عمر بن محر بجير مي متوفى ١٢٢١ه سيدمجمدامين ابن عابدين شامي متوفى ١٢٥٢ ه مفتى شريف الحق امجدى متو في ١٣٢١ ھ اعلى حفزت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٣٠هـ اعلى حفزت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٣٠ه اعلى حضرت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٨٠هـ مفتى محمدا مجدعلى اعظمي متوفى ١٣٦٧ اھ شيخ ابوعبدالله مُمرِحي الدين ابن عربي متوفى ٦٣٨ ه امام ابوالفد اءاساعیل بن عمرا بن کثیر۴ کے ھ احدشهاب الدين ابن حجربيتمي مكي متوفي ٣٧٣ هـ شيخ مشرف بن مصلح سعدي شيرازي متوفي ٦٩۴ ھ ا بوسعد منصور بن الحسين الآني طاہر بن علی ہندی پٹنی متو فی ۹۸۹ھ محمد بن انی بکرابن قیم جوزیه متوفی ۵۱ س امام جلال الدين عبدالرحمان بن ابي بكرسيوطي متوفي اا ٩ هـ بهاءالدين محمر بن حسين العاملي متوفى ٣٠١١ ه ابوالحس على بن محمد بن العراق الكناني متو في ٩٦٣ هـ ابوالليث نصربن محمربن إبراهيم سمر قندي متوفى ٣٨٣ ه عبدالرحمٰن بن عبدالسلام صفوري شافعي متوفي ٨٩٨ه احد بن محمد بن على بن حجر بيتى ٩٤١ ه اعلى حضرت امام احمد رضاخان متوفى مهمهااه

در مختار رد المحتار فتاویٰ شارح بخاری الفتاوى الرضوية الامن والعلى احكام شريعت بهار شریعت الفتوحات المكية البداية والنهاية فتاوى حديثيه بوستان سعدى نثر الدر تذكرة الموضوعات عدة الصابرين اللآليء المصنوعة الكشكول تنزيه الشريعة المرفوعة تنبيه الغافلين نزهة المجالس الصواعق المحرقه حدائق بخشش

مجلس المدينة العلمية كى طرف سے پيش كرده 273 كُتُب ورسائل

﴿شعبه كُتُبِ اعلى حضرت ﴾

أردو كُتُب:

3 0....فضأئل دعا

04....عبدين ميں گلے ملنا كيبيا؟

07.....ولايت كا آسان راسته (تصور شخ)

08.....اعلى حضرت سيسوال جواب

09.....حقوق العباد كسےمعاف ہوں

10....ثبوت ہلال کے طریقے

11....اولاد کے حقوق

06.... ثمر بعت وطريقت

0 1راو خدا مين خرج كرنے كف الله (رَادُ الْقَحْطِ وَالْوَبَاء بِدَعُوةِ الْجِيْرَان وَمُواسَاةِ الْفُقَرَاء) (كل صفات: 40)

20.....كُرِنَى نُوتْ كَثِرَى احكامات (كِفُلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِي أَخْكَام قِرْطَاسِ اللَّرَاهِمِ) (كُلُ شَخَات: 199)

(اَحُسَنُ الْوَعَاء لِآدَاب الدُّعَاء مَعَة ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِآحُسَن الْوَعَاء) (كُلُ شَخَات:326)

(وشَاحُ الْجِيدُفِي تَحْلِيل مُعَانقَةِ الْعِيد) (كُل صْخَات:55)

05والدين، زوعين اوراساتذه كے حقوق (ألْحقُوق لِطَوْحِ الْعَقُوق) (كل صفحات: 125)

(مَقَالُ الْعُونَ فَاء بِإِعْزَازِ شَرُع وَّعُلَمَاء) (كُلُ صْفَات:57)

(ٱلۡيَاقُوٰتَهُ الۡوَاسِطَة) (كُلُصْخَات:60)

(إِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (كُلُ صَفَّات:100)

(أَعْجَبُ الْإِمْدَاد) (كُلُّ صْحَات:47)

(طُرُقُ إِثْبَاتِ هِلال)(كل شخات:63)

(مَشُعَلَةُ الْإِرْشَاد) (كُلْصْفَات 31)

12.....معاثى ترقى كاراز (حاشه وتشريح تدبير فلاح ونحات واصلاح) (كل صفحات 41:

13الملفوظ المعروف بهلفوظات اعلى حضرت (مكمل حيار حصے) (كل صفحات: 561)

14.....ايمان كى بېچان (حاشية تهيدايمان) (كل صفحات: 74)

15 أَلُوَ ظِينُفَةُ الْكُرِيمَة (كُلُ صَحَات: 46)

16 كنز الايمان مع خزائن العرفان (كل صفحات: 185)

17.....حدا كُلْ بخشش (كل صفحات:446)

18..... بياض ياك حجة الاسلام (كل صفحات: 37)

19.....تفسير صراط البحان (جلداول) (كل صفحات: 524)

20.....تفسيرصراط البحال (جلددوم) (كل صفحات:495)

26 أَلْفَصُلُ الْمَوْهِي (كُلُّ فَعَات:46)

28.....أجُلَى الْإعُلَام (كُلُ صَفّات:70)

عربي كُتُب:

21.....جَدُّ الْمُمُتَارِ عَلَى رَدِّ الْمُحْتَارِ (سات جلدين) (كُلُ صُحَات:4000)

22.....اَلتَّعُلِيْقُ الرَّضُوى عَلى صَحِيْح الْبُخَارِي (كُلُ صُحَات: 458)

24.....ألا بَجازَاتُ المُتينَة (كل صفحات:62) 23 كَفُلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ (كُلُ صَفّات:74)

25.....أَلزَّ مُزَ مَةُ الْقَمَريَّة (كُلُّ صَحَات:93)

27.....تَمُهِيُدُ الْإِيْمَانِ (كُلُّ فَحَات:77)

29.....اقَامَةُ الْقِيَامَة (كُلُ صَفِحات:60)

﴿شعبه تراجم كُتُب ﴾

(حلْيَةُ الْآوُلْيَاء وَ طَبَقَاتُ الْآصُفيَاء) بِيلى جِلد (كُلِ صَفَّات: 898) 1 0....الله والوں كى ماتيں

2 0....الله والول كي ما تيس (حِلْيَةُ الْأَوْلِيَاء وَ طَبْقَاتُ الْلَاصُفِيَاء) دوسرى جلد (كُلْ صُخات: 625)

3 0.....مدنی آقا کے روش فصلے (ٱلْبَاهِرِ فِي حُكُمِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمُ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِرِ) (كُلَّ فَات:112)

4 0....ماية عرش كس كس كو ملے گا...؟ (تَمْهِينُدُ الْفَرُشِ فِي الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرُشِ) (كُلُّ فَعَات: 28)

5 0....نیکیوں کی جزائیں اور گناہوں کی سزائیں (قُرَّةُ الْعُيُون وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُون) (كُلُّ شَات: 142)

6 0....نصیحتوں کے مدنی پھول بوسیلۂ احادیث رسول (اللَّهُوَ اعظ في الْآحَاديث الْقُدُسيَّة) (كُلُّ صْخَات:54)

7 0 جنت میں لے حانے والے اعمال

08 امام أعظم عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكُومِ كَي وصيتين (وَ صَايَااهَام اَعُظَم عَلَيْه الرَّحْمَة) (كُلُّ صَحَات:46)

09....جہنم میں لے جانے والے اعمال (جلداول)

10....نکی کی دعوت کے فضائل

11 فيضان مزارات اولياء

12 دنیا سے بے رغبتی اور امیدوں کی کمی

13راهکم

14.....حكايتين اور شيحتين

15.....احياءالعلوم كاخلاصه

16....اچھے پریے کمل

17....شكركے فضائل

(ٱلْمَتُجَوُ الرَّابِحِ فِي ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِحِ) (كُلُ صَحَاتِ 743)

(اَلَةً وَاجِهِ عَنُ اقْتِهَ اف الْكَبَائِي) (كُلُّ صَحَات:853)

(أَلْاَمُرُبِالْمَعُرُوف وَالنَّهُىٰ عَن الْمُنْكُو) (كُلُّ شَات:98)

(كَشُفُ النُّوُرِ عَنُ اَصُحَابِ الْقُبُورِ) (كُلُّ فَحَاتِ 144)

(أَلزُّهُ هُدوَ قَصْرُ الْأَمَلِ) (كُلُّ صَفَات:85)

(تَعُلِيهُ المُتَعَلِّم طَرِيقَ التَّعَلُّم) (كُل صَحات: 102)

(أَلَوَّ وُضُ الْفَائقِ (كُلِّ شَخَاتِ 649)

(لُبَابُ الْاحْيَاء) (كل صفحات: 641)

(رسَالَةُ الْمُذَاكَرَة) (كلصفحات:122)

(أَلْشُكُرُ لِللهُ عَزَّوْجَلٌ (كُلِّ صَفَّاتِ:122)

مكأشفة القلوب

| Z | |
|--|---|
| 18 ^{حس} نِ اخلاق | ﴿ مَكَا رِمُ الْاَخُلَا ق) ﴿ كُلِّ صَحَّاتِ 102) |
| 19آ نسوؤل كادريا | (بَىحُوُ الدُّمُوُ ع) (كل صفحات 300) |
| 20آ داب دين | (ٱلْاَدَبُ فِي الدِّيْنِ)(كُلُّ صَحَات:63) |
| 21ثا ہراہ اولیا | (مِنْهَا جُ الْعَارِفِيُن) (كُلُّ فَحَات:36) |
| 22 بيني كوفسيحت | (أَيُّهَاالُولَله)(كُلُّ صُخَات:64) |
| 23اصلاحِ اعمال (جلداول) | (اَ لُحَدِيْقَةُ النَّدِيَّة شَرُّحُ طَرِيُقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة)(كُلُّ صِحَات:866) |
| 24جہنم میں لے جانے والے اعمال (حبلد دوم) | (اَلزَّوَاجِرعَنُ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِرِ)(كُلُّ فَحَات:1012) |
| 25عاشقانِ حديث كي حكايات | (اً لرِّحُلَة فِي طَلُبِ الْحَدِيث)(كُلُّقَات:105) |
| 26احياءالعلوم (جلداول) | (اِحْيَاءُ عُلُوُم الدِّين) (كُلُّ فَات:1124) |

29غُيُونُ الْمِحكَايَات (مترجم،حصداول) (كل صفحات:412)

30 غُيُونُ الْحِكَايَات (مترجم، حصد وم) (كل صفحات: 413)

31ألدَّعُوةُ إلَى الْفِكُر (كُلُّفَات 148)

27....احياءالعلوم (جلددوم)

28احياء العلوم (جلدسوم)

32....قوت القلوب (اردو) (كل صفحات 826)

﴿شعبه درى كُتُب ﴾

(اِحْيَاءُ عُلُوْمِ الدِّين) (كل صفحات:1400) (احْيَاءُ عُلُوْمِ الدِّين) (كل صفحات:1286)

00..... مراح الارواح مع حاشية ضياء الاصباح (كل صفحات: 241) 02 الاربعين النووية في الأحاديث النبوية (كل صفحات: 155) 03 03 04 05 05 05 05 05 ...

مكأشفة القلوب

11.....مقدمة الشيخ مع التحفة المرضية (كل صفحات 119) 12.....نزهة النظر شرح نخبة الفكر (كل صفحات:175) 13نحو ميرمع حاشية نحو منير (كل صفحات:203) 15....نصاب النحو (كل صفحات 288) 14.....تلخيص اصول الشاشي (كل صفحات: 144) 71نصاب التجويد (كل صفحات 79) 16نصاب اصول حديث (كل صفحات:95) 18المحادثة العربية (كل صفحات: 101) 9 1 تعريفات نحوية (كل صفحات 45) 20خاصيات ايداب (كل صفحات: 141) 21شرح مئة عامل (كل صفحات: 44) 23....نصاب المنطق (كل صفحات: 168) 22....نصاب الصرف (كل صفحات: 343) 25نصاب الادب (كل صفحات: 184) 24.....انواد الحديث (كل صفحات 466) 27....قصيده برده مع شرح خريوتي (كل صفحات: 317) 26....خلفائے راشدین (کل صفحات: 341) 29....الحق المبين (كل صفحات: 128) 28 كافيه مع شرح ناجيه (كل صفحات: 252) 30 تفسير الجلالين مع حاشية انو ار الحر مين (كل صفحات: 364) 31.....فيض الادب (مكمل حصداوّل، دوم) (كل صفحات: 228) 32منتخب الابواب من احياء علوم الدين (عرلي) (كل صفحات: 173) ﴿شعبه تخ تح ﴾ 01.... صحابة كرام د ضُوانُ الله تعَالى عَلَيْهِمُ أَجْمَعِينَ كَاعْتُق رسول (كل صفحات: 274) 02.... بپارشريعت، جلداوّل (حصه 1 تا6) (كل صفحات 1360) 03..... بهارشر لعت جلد دوم (حصه 7 تا13) (كل صفحات 1304) 04..... بهارش بعت جلدسوم (حصه 14 تا20) (كل صفحات 1332) 05..... بهارشر بعت (سولهوال حصيه) (كل صفحات: 312) 06.....أوبهات المؤمنين رَضِهَ اللَّهُ تَعَالِمْ عَنْفُ (كُلَّ صَحَّات :59) 07....عائب القران مع غرائب القران (كل صفحات: 422) 08 جنت کے طلہ گاروں کے لئے مدنی گلدستہ (کل صفحات: 470) 09..... فيضان يلس شريف مع دعائے نصف شعبان المعظم (كل صفحات:20) 10..... التجھے ماحول کی پرکنٹن (کل صفحات:56) 11.....گلدسة عقائد داعمال (كل صفحات :244) 13..... جنتی زيور (کل صفحات:679) 12.....تحققات (كل صفحات 142) مكاشفة القلوب

| E CONTRACTOR DE CONTRACTOR | |
|--|----------------------------------|
| 14علم القرآن (كل صفحات 244) | 15موانح كربلا(كل صفحات 192) |
| 16اربعين حنفيه(كل صفحات:112) | 17کتاب العقا ئد(كل صفحات:64) |
| 18منتخب حديثين (كل صفحات 246) | 19اسلامی زندگی (کل صفحات :170) |
| 20آئينهُ قيامت(كل صفحات 108) | 21 تا27فآوی اہل سنت (سات ھے) |
| 28ثن وبإطل كافرق (كل صفحات:50) | 29بېشت كى ئىجيال (كل صفحات 249) |
| 30جبنم كے خطرات (كل صفحات:207) | 31کرامات ِ محابه (کل صفحات 346) |
| 32اخلاق الصالحين (كل صفحات:78) | 33سيرت مصطفیٰ (کل صفحات:875) |
| 34آئينه عبرت (کل صفحات 133) | 35فيضانِ نماز (كل صفحات:49) |
| 3619 ۇ رُودوسلام (كل صفحات:16) | |

﴿ شعبه فيضان صحابه ﴾

01حضرت طلحه بن عبيد الله وضى الله تعالى عند (كل صفحات:56)
02حضرت زبير بن عوام دصى الله تعالى عند (كل صفحات:70)
03حضرت سيد ناسعد بن البي وقاص دصى الله تعالى عند (كل صفحات:89)
04حضرت البوعبيده بن جراح دضى الله تعالى عند (كل صفحات:60)
05حضرت عبد الرحمان بن عوف دضى الله تعالى عند (كل صفحات:132)
06 فيضان سعيد بن زيد دضى الله تعالى عند (كل صفحات:32)

﴿ شعبه فيضان صحابيات ﴾

﴿ شعبه إصلاحي كُتُب ﴾

01.....غوث پاک رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ کَ حَالات (کل صفحات :90) 03.....فرامين مصطفیٰ صلّی اللهُ تَعَالَی عَنْهِ وَالِهِ وَسَلَم (کل صفحات :87) 05.....قبر میں آنے والا دوست (کل صفحات :11) 05.....فرامین صفحات :05) 07.....اعلی حضرت کی انفرادی کوششیں (کل صفحات :49) كأشفة القلوب

| 10ريا كارى (كل صفحات:170) | 09امتحان کی تیاری کیسے کریں؟ (کل صفحات:32) | | |
|--|---|--|--|
| 12عشر کے احکام (کل صفحات:48) | 11 قوم دِمَّات اوراميرا للسنّت (كلّ صفحات 262) | | |
| 14 فيضانِ زكو ة (كل صفحات :150) | 13قوبه كى روايات و دكايات (كل صفحات 124) | | |
| 16 تربيت إولا د (كل صفحات: 187) | 15احاديىثِ مباركەكےانوار(كل صفحات:66) | | |
| 18 ٹی وی اورمُو وی (کل صفحات: 32) | 17كامياب طالب علم كون؟ (كل صفحات: 63) | | |
| 20مفتى دعوت اسلامي (كل صفحات:96) | 19طلاق کے آسان مسائل (کل صفحات:30) | | |
| 22شرح شجره قا دربيه (كل صفحات:215) | 21 فيضان چېل احاديث (كل صفحات 120) | | |
| 24خوف ِ خداعزٌ وَ جَلَّ (كُلِّ صفحات:160) | 23نماز میں لقمہ دینے کے سائل (کل صفحات:39) | | |
| 26انفرادی کوشش (کل صفحات 200) | 25تعارف اميرا بلسنّت (كل صفحات 100) | | |
| 28 نیک بننے اور بنانے کے طریقے (کل صفحات 696) | 27آیاتِ قرانی کے انوار (کل صفحات: 62) | | |
| 30ضيائے صدقات (کل صفحات 408) | 29 فيضانِ احياء العلوم (كل صفحات: 325) | | |
| 32کامیاب استاذ کون؟ (کل صفحات: 4 4) | 31 جنت كى دوعيا بيان (كل صفحات 152) | | |
| 34 فح وعمره كالمختضر طريقه (كل صفحات: 4 4) | 33تنگ وی کے اسباب (کل صفحات:33) | | |
| 36قصیده برده سے روحانی علاج (کل صفحات 22) | 35جلد بازی کے نقصا نات (کل صفحات 168) | | |
| 38نتين اورآ واب (كل صفحات 125) | 37تذكره صدرالا فاضل (كل صفحات:25) | | |
| 40مزارات اولياء كى دكايات (كل صفحات: 48) | 39 بغض وكبينه (كل صفحات:83) | | |
| 42 فيضانِ اسلام كورس حصد دوم (كل صفحات 102) | 4 1 فيضانِ اسلام كورس حصه اوّل (كل صفحات: 7 9) | | |
| 44 بدشگونی (کل سفحات 128) | 43مجبوب عطار کی 122 حکایات (کل صفحات 208) | | |
| 46 فیضان پیرمهرعلی شاه (کل صفحات: 33) | 45 فيضانِ دا تا نَنْج بخش (كل صفحات:20) | | |
| (59 | 47حفرت سيدناعمر بن عبدالعزيز كي 425 حكايات (كل صفحات 90 | | |
| رائے مدنی قاعدہ)(کل صفحات:0 6) | 48اسلام کی بنیاوی با تین (حصه 1) (سابقه نام: مدنی نصاب بر | | |
| 49اسلام کی بنیادی با تیں (حصہ 2) (سابقہ نام:مدنی نصاب برائے ناظرہ) (کل صفحات 104) | | | |
| | 50اسلام کی بنیادی با تین (حصه 3) (کل صفحات:352) | | |
| 1 . lu .u *\ | | | |

﴿شعبهاميرابلسنت ﴾

01 ---- سركارصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم كا پيغام عطاركِ نام (كل صفحات:49) 02 ---- مقدس تحريرات كادب كي بارے ميں سوال جواب (كل صفحات:48) مكاشفة القلوب

| | 03اصلاح کاراز (مدنی چینل کی بہاریں حصد دوم) (کل صفحات: 32) |
|--|--|
| | 0425 كريچين قيد يول اور پادري كا قبولِ اسلام (كل صفحات:33) |
| | 05وعوت ِاسلامی کی جیل خانه جات میں خد مات (کل صفحات:24) |
| | 06وضوکے بارے میں وسوہے اوران کاعلاج (کل صفحات:48) |
| | 07تذكرةَ اميرا المسنَّت قبط موم (سنّت نكاح) (كل صفحات:86) |
| | 08 آ داب مرشدِ كامل (مكمل پانچ حصے) (كل صفحات: 275) |
| 10قبر كھل گئی (كل صفحات: 48) | 05بُنند آواز ہے ذکر کرنے میں حکمت (کل صفحات: 48) |
| 12 گونگامبلغ(كل صفحات:55) | 11 پانی کے بارے میں اہم معلومات (کل صفحات:48) |
| 14گشده دولها (كل صفحات: 33) | 13وغوت اسلامی کی مَدَ نی بهارین (کل صفحات 220) |
| 16جنوں کی دنیا(کل صفحات:32) | 15میں نے مدنی برقع کیوں پہنا؟(کل صفحات:33) |
| 18غافل درزی (کل صفحات:36) | 17 تذكرهَاميرالمِسنّت قبط(2)(كلصفحات:48) |
| 20مرده بول الثلا (كل صفحات: 32) | 19خالفت محبت میں کیسے بدلی؟ (کل صفحات:33) |
| 22كفن كى سلامتى (كل صفحات:32) | 21تذكرهٔ اميرا المسنّت قسط (1) (كل صفحات:49) |
| 24میں حیا دار کیسے بنی؟ (کل صفحات:32) | 23تذكرةَ اميرا المسنّت (قبط4) (كل صفحات:49) |
| 26 بدنصيب دولها (كل صفحات:32) | 25چل مدينه کی سعادت مل گئی (کل صفحات:32) |
| 28 بےقصور کی مدد (کل صفحات: 32) | 27معذور بچی مبلغه کیسے بنی؟ (کل صفحات:32) |
| 30ميرونځي کی توبه(کل صفحات:32) | 29عطاری جن کاغسلِ میّت (کل صفحات:24) |
| 32دىيخ كامسافر (كل صفحات: 32) | 31 نومسلم کی در د بھری داستان (کل صفحات:32) |
| 34فلمى ادا كاركى توبه(كل صفحات:32) | 33خوفناك دانتؤل والابچير(كل صفحات:32) |
| 36قبرستان کی چڑیل (کل صفحات:24) | 35ساس بهومیں صلح کاراز (کل صفحات:32) |
| 38حيرت انگيزحادثه(كل صفحات:32) | 37 فيضان اميرا بلسنّت (كل صفحات:101) |
| 40کرسچین کا قبولِ اسلام (کل صفحات:32) | 35 ما ڈرن نو جوان کی تو به (کل صفحات: 32) |
| 42کرتیجین مسلمان ہو گیا(کل صفحات:32) | 41صلوة وسلام كى عاشقه (كل صفحات:33) |
| 44نورانی چیرےوالے بزرگ (کل صفحات:32) | 43ميوزكل شوكامتوالا (كل صفحات:32) |
| 46ولى سے نسبت كى بركت (كل صفحات:32) | 45آنکھوں کا نارا(کل صفحات:32) |
| 48اغواشده بچوں کی واپسی (کل صفحات:32) | 47 بابر کت روٹی (کل صفحات:32) |

مكاشفة القلوب

| 50ثرا لي،مؤذن كيسے بنا(كل صفحات: 32) | 49ىين نىك كىيىے بنا(كل صفحات: 32) |
|---|---|
| 52غوثن نقيبي کى گرنيں (کل صفحات: 32) | 51 بد کردار کی تو به (کل صفحات:32) |
| 54میں نے ویڈیوسینٹر کیوں بند کیا؟ (کل صفحات: 32) | 53نا كام عاشق (كل صفحات: 32) |
| 56 نا دان عاشق (كل صفحات:32) | 55چکتی آنکھوں والے بزرگ (کل صفحات:32) |
| 58ىرُى سَنْكَت كاوبال(كل صفحات:32) | 57ىنما گھر كاشىدا ئى (كل صفحات: 32) |
| 60گلوكاركىسےسىدھرا؟ (كل صفحات:32) | 59ڈ انسرنعت خوان بن گیا(کل صفحات:32) |
| 62كالي كچھوكا خوف (كل صفحات:32) | 61 نشه باز کی اصلاح کاراز (کل صفحات:32) |
| 64عِيب الخلقت بِكَى (كُلْ صَخْات:32) | 63 بريك ۋانسركىيے سدھرا؟ (كل صفحات:32) |
| 66قاتل امامت کے مصلے پر (کل صفحات:32) | 65شرابی کی تو به(کل صفحات:33) |
| 68سينگوں والی دلہن (کل صفحات: 32) | 67 چنر گھڑ يوں کا سودا (کل صفحات:32) |
| 70خوفناك بلا(كل صفحات: 33) | 69 بهميا نک حادثه(کل صفحات:30) |
| 72شادی خانه بربادی کے اسباب اورا ٹکا حل(کل صفحات:16) | 71 پرامرار کتا(کل صفحات:27) |
| 74اسلىچ كاسوداگر (كل صفحات: 32) | 73 چېكداركفن (كل صفحات: 32) |
| 76جرائم کی د نیا ہے والیسی (کل صفحات:32) | 75بھنگڑے باز سدھر گیا(کل صفحات:32) |
| 78اجنبی کاتخفه(کل صفحات:32) | 77كنسركاعلاج (كل صفحات:32) |
| 80انوكلى كمائى(كل صفحات:32) | 79رسائل مدنی بهار(کل صفحات 368) |
| كل صفحات 102) | 81 علم وتعكمت كـ125 مدنى چھول (تذكره امير ابلسنت قسط 5) (|
| ت:47) | 82هوق العباد كي احتياطيس (تذكره امير ابلسنت قسط 6) (كل صفحايا |
| يا ت :23) | 83گونگے بہروں کے بارے میں سوال جواب قسط پنجم (5) (کل صفح |
| | |

\$===\$===\$